भीष्म-पर्व

हिंदी-अनुवादक

स्वर्गीय

पं० कालीचरण जी

चौरासिया गौड़

प्रकाशक

नवलकिशोर-प्रेस बुकडिपो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास

अर्थात्

महाभारत भाषा

भीष्मपर्व

जिसमें

भूगोल, खगोल आदि सृष्टि-विस्तार, नदी, पर्वतादि की संख्या, अर्जुन तथा श्रीकृष्णसंवाद, भगवद्गीता और अर्जुन, भीष्म-संग्राम आदि कथाएँ अति विस्तार के साथ वर्णन की गई हैं।

हिन्दी अनुवादक

कैनिंग कॉलेज, लखनऊ के भूतपूर्व संस्कृताध्यापक

स्वर्गीय पं० कालीचरणजी चौरासिया गौड़

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

चतुर्थावृत्ति २०००]

[सर्वाधिकार रक्षित

सन् १९२६ ई०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महाभारत भीष्मपर्व भाषा का सूचीपत्र।

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	मङ्गलाचरण	१
१	कौरव पाण्डवों के युद्ध में नियम	२
२	भयानक उत्पात वर्णन	४
३	भयानक उत्पात वर्णन	६
४	स्थावर जङ्गम का वर्णन	१२
५	जम्बूखण्ड वर्णन	१३
६	जम्बूद्वीप रूप स्थूल सूक्ष्म वर्णन	१५
७	मेरुपर्वत के उत्तरीय भाग के मालवन्त पहाड़ के मूलसमेत वृत्तान्त का वर्णन	१८
८	खण्ड और पर्वतवासियों का मूल समेत वर्णन	२०
९	नदी और देशादि का वर्णन	२२
१०	जम्बूखण्ड वर्णन	२५
११	शाकद्वीप वर्णन	२६
१२	जम्बूखण्ड वर्णन	२८
१३	भीष्ममृत्युश्रवण वर्णन	३१
१४	धृतराष्ट्र का संजय से भीष्म की मृत्यु का हाल पूछना	३२
१५	दुर्योधन दुश्शासनसंवाद वर्णन	३७
१६	सेना का वर्णन	३८
१७	सैन्यवर्णन	४०
१८	सेना का वर्णन	४२
१९	कौरवों की व्यूह रचना देखकर पाण्डवों का भी व्यूह रचना करना	४३
२०	सैन्य वर्णन	४६
२१	युधिष्ठिर अर्जुनसंवाद वर्णन	४७
२२	कृष्ण अर्जुनसंवाद वर्णन	४९
२३	कृष्णजी की आज्ञानुसार अर्जुन का दुर्गास्तोत्र पाठ करना	५०
२४	कौरव पाण्डवों के युद्ध में प्रसन्न व अप्रसन्न और किस ओर से प्रथम प्रहार इसका प्रश्नोत्तर वर्णन	५२
२५	भगवद्गीता प्रारम्भ, सैन्यदर्शन वर्णन अध्याय १	५३
२६	सांख्ययोग वर्णन .... ,, २	५६
२७	कर्मयोग वर्णन .... ,, ३	६३
२८	ब्रह्मार्पणयोग वर्णन .... ,, ४	६७
२९	संन्यासयोग वर्णन .... ,, ५	७१

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अध्याय	विषय		पृष्ठ
३०	अध्यात्मयोग वर्णन	अध्याय ६	७३
३१	विज्ञानयोग वर्णन	,, ७	७७
३२	तारकब्रह्मयोग वर्णन	,, ८	८०
३३	राजगुह्य वर्णन	,, ९	८३
३४	विभूति वर्णन	,, १०	८७
३५	विश्वरूपदर्शन	,, ११	९०
३६	विश्वरूपदर्शन	,, १२	९५
३७	जीव और ब्रह्म की एकता, क्षेत्रक्षेत्रज्ञ-विभाग वर्णन	,, १३	९७
३८	प्रकृतिगुणभेद वर्णन	,, १४	१०१
३९	पुरुषोत्तमयोग वर्णन	,, १५	१०४
४०	देवासुर सम्पद् विभाग वर्णन	,, १६	१०६
४१	श्रद्धावर्णन	,, १७	१०८
४२	संन्यासादि तत्त्व निर्णय योग	,, १८इति....	१११
४३	युद्ध में भीष्मादिकों का गमन वर्णन	....	११८
४४	कौरव वीरों का भीमसेन पर बाणवृष्टि करना	....	१२४
४५	सात्यकी और कृतवर्मा का घायल होना और कौल्ह करके अभिमन्यु के सारथी का गिराना व ध्वजा काटना और अभिमन्यु करके बृहद्बल का घायल होना	....	१२६
४६	संजय का धृतराष्ट्र से कौरवों व पाण्डवों का परस्पर युद्ध होना वर्णन		१३१
४७	श्वेतयुद्ध वर्णन	....	१३४
४८	श्वेतवध वर्णन	....	१३७
४९	प्रथम दिवस युद्ध वर्णन	....	१४४
५०	क्रौञ्चव्यूह निर्माण वर्णन	....	१४७
५१	संजय का धृतराष्ट्र से कौरवों व पाण्डवों का शङ्ख बजा बजाकर लड़ाई को तैयार होना वर्णन	....	१५०
५२	भीष्म और अर्जुन का व द्रोणाचार्य और द्रुपद का संग्राम होना वर्णन		१५२
५३	धृष्टद्युम्न का युद्ध वर्णन	....	१५६
५४	कलिङ्गवध वर्णन	....	१५८
५५	लक्ष्मण और अभिमन्यु व अर्जुन और द्रोणाचार्य का युद्ध वर्णन	....	१६४
५६	गारुड़ार्द्ध चन्द्रव्यूहनिर्माण वर्णन	....	१६७
५७	कौरवों व पाण्डवों का घोरयुद्ध वर्णन	.. ..	१६८
५८	भीमसेन व युधिष्ठिर करके कौरवों की सेना का भागना	....	१७०
५९	तृतीय दिवस का युद्ध वर्णन	....	१७३

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अध्याय	विषय	पृष्ठ
६०	चतुर्थ दिवस का युद्ध वर्णन	१८२
६१	अभिमन्यु की वीरता वर्णन	१८४
६२	भीमयुद्ध वर्णन	१८६
६३	भीमसेन की वीरता वर्णन	१८८
६४	चतुर्थ दिवस युद्ध वर्णन....	१९१
६५	पुत्रों के मारेजानेपर धृतराष्ट्र को विकल देखकर भीष्मजी का समझाना और सुलह करलेने की सलाह देना....	१९६
६६	श्रीनारायणजी की ब्रह्मा से की हुई स्तुति को सुनकर देवर्षि व गन्धर्वों का पूछना और उनका बताना	१९९
६७	भीष्मजी का दुर्योधन से नारायणजी की महिमा वर्णन करना	२०२
६८	ब्रह्मस्तव वर्णन	२०३
६९	अर्जुन करके भीष्म का घायल होना	२०४
७०	परस्पर युद्ध वर्णन	२०६
७१	दुर्योधन और शकुनी व द्रुपद और द्रोणाचार्य का युद्ध वर्णन	२०७
७२	भीमसेन और भीष्म इत्यादिक अनेक राजाओं का युद्ध होना व सात्यकी के सारथी को रथ से भीष्मजी का गिराना	२१०
७३	राजा विराट और भीष्म व अश्वत्थामा और अर्जुन व लक्ष्मण और अभिमन्यु का परस्पर युद्ध कर एक एक को घायल करना	२११
७४	सात्यकी के दश पुत्रों को भूरिश्रवा का मारना व अर्जुन का कौरवों की सेना में से पच्चीस हज़ार वीरों का वध करना	२१४
७५	पाण्डवों का मकरव्यूह व कौरवों का क्रौंच नाम व्यूह बनाकर युद्ध करना	२१६
७६	धृतराष्ट्र का सञ्जय से लड़ाई का हाल कहना और महात्मा विदुर के कहे हुये वचन पर विश्वास आवना....	२१८
७७	सञ्जय का धृतराष्ट्र को धिक्कारना और द्रोणाचार्य्य के तीक्ष्णबाणों करके पाण्डवों की सेना का भागना	२१९
७८	भीमसेन करके चित्रसेन व अन्य कई राजाओं का घायल होना	२२३
७९	द्रौपदी के पुत्रों करके दुर्योधन का घायल होना व भीष्मजी करके पाण्डवों की सेना का घायल होना	२२४
८०	भीमसेन का दुर्योधन व उसकी सेना को घायल करना व भीष्मजी का पाञ्चालों की सेना को यमलोक पहुँचाना	२२५
८१	भीष्म दुर्योधन संवाद वर्णन	२२९
८२	भीष्मजी का धृतराष्ट्र के पुत्रों का व्यूह बनाना व युधिष्ठिर का वज्रव्यूह बनाकर युद्ध करना	२३०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अध्याय	विषय	पृष्ठ
८३	दुर्योधन की आज्ञा से भीष्म व सुशर्मा का पाण्डवों से युद्ध व शंख का वध वर्णन	२३३
८४	धृतराष्ट्र का अपने पुत्रों की हार सुनकर सञ्जय से पूछना व सञ्जय का देवासुरसंग्राम की उपमा देकर युद्ध वर्णन करना	२३६
८५	युधिष्ठिर श्रुतायु के युद्ध को देखकर देवताओं का विस्मित होना व रणभूमि में आकर अर्जुन का महायुद्ध करना	२३९
८६	अर्जुन व भीष्म का युद्ध होना व अर्जुन की सहायता के लिये शिखण्डी इत्यादिक वीरों का रणभूमि में आकर युद्ध करना	२४२
८७	भीष्म युधिष्ठिर युद्ध में भीष्म विजय पुनः बिन्द अनुबिन्द धृष्टद्युम्न इत्यादिक राजाओं का युद्ध वर्णन	२४४
८८	दोनों सेनाओं का युद्धभूमि में शोभित होना व भगदत्त अश्वत्थामा आदि राजाओं का घोर युद्ध करना	२४७
८९	भीमसेन महोदर युद्ध व दुर्योधनादि का परास्त होकर उदासीनतापूर्वक भीष्म के पास जाना व भीष्मजी करके सम्बोधन	२४९
९०	पुत्र का मरण सुनकर धृतराष्ट्र का व्याकुल होके सञ्जय से पूछना पुनः अभिमन्यु अर्जुन घटोत्कच आदि राजाओं का भीष्मजीके सन्मुख जाना व भीम करके मत्तमातंगों का नाश	२५१
९१	इरावान् अर्जुन के पुत्र की उत्पत्ति व इरावान् करके दुर्योधन सैन्य परास्त पुनः दुर्मद करके इरावान् वध	२५३
९२	घटोत्कच और दुर्योधन का घोर युद्ध	२५८
९३	घटोत्कच और दुर्योधन का घोरयुद्ध देख के भीष्मपितामह के कहने से गुरु द्रोणाचार्य का दुर्योधन की रक्षा के लिये घटोत्कच से युद्ध करना	२५९
९४	दुर्योधन और घटोत्कच के युद्ध में दुर्योधन की सेना का भागना	२६१
९५	भीमसेन और अश्वत्थामा का घोर युद्ध	२६३
९६	पाण्डवों और भगदत्त का परस्पर युद्ध और अर्जुन के पुत्र इरावान् का वध	२६६
९७	अर्जुन के साथ भीष्मपितामह का छठेदिन का घोर युद्ध	२७०
९८	दुर्योधन का यह समझ के कि भीष्मजी पाण्डवों पर दया करते हैं इस से भीष्मजी के पास जाके यह आज्ञा मांगना कि कर्ण पांडवों से युद्ध करें	२७४
९९	भीष्मजी का क्रोधित होके दुर्योधन से यह कहना कि मैं शिखण्डी जो कि पहिले की स्त्री है उसको छोड़ के और सम्मुख आये हुये सब योद्धों से युद्ध करके आपको प्रसन्न करूंगा	२७६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्याय	विषय	पृष्ठ
१००	भीष्मजी की रक्षा के लिये सब कौरवों को युक्त होना व सब पाण्डवों को भी रण में उपस्थित होना तिसमें अर्जुन व भीष्मजी का परस्पर घोर युद्ध होना	२७९
१०१	अभिमन्यु व कौरवों के युद्ध से कौरवों की सेना पराजित देखके दुर्योधन की आज्ञा से अलम्बुष राक्षस का अभिमन्यु से घोर युद्ध करना	२८०
१०२	अभिमन्यु और अलम्बुष का घोर युद्ध व और भी कौरव पाण्डवों का परस्पर युद्ध	२८३
१०३	द्रोणाचार्य और अर्जुन का युद्ध व और भी कौरव पाण्डवों का घोर युद्ध	२८६
१०४	अर्जुन व भीष्म का युद्ध व शिखण्डी करके भीष्मजी को घायल करना	२८९
१०५	सुशर्मा व अर्जुन का महाघोर संग्राम होना व अर्जुन करके सुशर्मा की सेना का भागना	२९१
१०६	पाण्डवों से घिरे हुये भीष्म को देखके उसकी रक्षा के लिये दुर्योधन का दुश्शासन की सेना को भेजना व पाण्डवों करके उस सेना का परास्त होना	२९३
१०७	भीष्मजी करके पाण्डवों की सेना का व्याकुल न होना	२९५
१०८	भीष्मजी के पास युधिष्ठिर व अर्जुनादि का जाना और भीष्मजी की मृत्यु का उपाय पूछना व भीष्म से लड़ने के लिये श्रीकृष्णजी का अर्जुन को समझाना	२९९
१०९	शिखण्डी व पाण्डवों करके भीष्मजी का युद्ध करना	३०५
११०	दुर्योधन भीष्म संवाद वर्णन	३०८
१११	पाण्डवों का भीष्मजी के पास लड़ने के लिये जाना व दुश्शासन और अर्जुन का महाघोर संग्राम वर्णन	३११
११२	द्वन्द्वयुद्ध वर्णन	३१३
११३	भीष्म की रक्षा के लिये द्रोणाचार्य का अपने पुत्र अश्वत्थामा को भेजना	३१६
११४	भगदत्त, कृपाचार्य, शल्य, कृतवर्मा आदि व भीमसेन का महाघोर संग्राम वर्णन	३१९
११५	शिखण्डी को आगे करके अर्जुन का भीष्मजी से युद्ध करना	३२१
११६	दशवें दिन के युद्ध का वर्णन	३२४
११७	कौरवों व पाण्डवों का महाघोर युद्ध वर्णन	३२६
११८	अर्जुन की आज्ञा से भीष्मजी को शिखण्डी का मारना व दुश्शासन का भीष्म की रक्षा के लिये युद्ध करना व अर्जुन के बाणों करके भीष्मजी का मोहित होना	३३०
११९	भीष्मजी का दश हज़ार हाथी व सात महारथी व पांच हज़ार रथी	

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	व अन्य चौदह हज़ार मनुष्य व दश हज़ार घोड़े व राजा विराट के भाई शतानीक को मारना	३३४
१२०	शिखण्डी को आगे करके अर्जुन का भीष्मजी को मारना व महाघोर युद्ध होकर भीष्मजी का रथ से औंधे होकर गिरना व सब लोगों का उनके पास आना और विलाप वर्णन	३३७
१२१	भीष्मजी के पास कौरवों व पाण्डवों का आना व द्रोणाचार्य इत्यादिक का विलाप व भीष्मजी का अर्जुन से बाणों की तकिया माँगना	३४३
१२२	भीष्मजी के माँगने पर अर्जुन को बाणों की तकिया देना व भीष्मजी का अर्जुन की प्रशंसा करना व कौरवों पाण्डवों का भीष्मजी की परिक्रमा करना वर्णन	३४५
१२३	भीष्मोपदेश वर्णन	३४७
१२४	कर्ण का भीष्मजी के पास आना व उसको छाती में लगाकर प्रशंसा करना और पाण्डवों से सलाह करने के लिये कहना व कर्ण को वह बात न मानकर पाण्डवों से युद्ध करने के लिये आज्ञा लेना	३५१

इति भीष्मपर्व का सूचीपत्र समाप्त।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीगणेशाय नमः ।

महाभारत भाषा

भीष्मपर्व ।

मङ्गलाचरण ।

श्लोक

वाणीं बोधविधायनीं गजमुखं श्रीशङ्कराद्धीं शिवां नत्वा भारतभीष्मपर्व-तिलकं मूलार्थमुल्थामयम् । पूर्वेषां मतमाकलय्य तु कलौ सन्मानवीभाषया श्रीकालीचरणश्चकार चतुरो विज्ञः सतां सिद्धये ॥ १ ॥ उल्थास्त्वनेकविधबुद्धि-सुबोधदाः स्युर्नैतद्वयं मम ददामि न तेषु दोषम् । किन्त्वाऽवलोक्य मतिरङ्कमनुष्य-मौढ्यं तद्बुद्धिबोधविभवाय करोमि भाषाम् ॥ २ ॥ नाशङ्कनीयं पूर्वेषां मतमेतेन दूष्यते । किन्तु चक्षुर्मृगाक्षीणां कज्जलेनैव भूष्यते ॥ ३ ॥

दो० सुमति सुजन परभणितको, मन दृग दै सुनलेत ।
यथा कनककी कालिमा, अनल विमल कर देत ॥ १ ॥
भाषा तिलक प्रबोधयुत, कीन्हो कलिजन हेत ।
विविध ग्रन्थ संस्कृत गिरा, तदपि न ते सुखदेत ॥ २ ॥

सो० रक्ताम्बर विघ्नेश, एक दन्त सुन्दर परम ।
ऋद्धि सिद्धि सर्वेश, करौं प्रणाम सप्रेम तेहि ॥ १ ॥
तदनु विनययुत नौम्य, पादाम्बुज श्रीशारदा ।
वन्दौं गुरुपद सौम्य, ज्ञानप्रद अज्ञान हर ॥ २ ॥
भारतेश जगदीश, माधव श्रीरुक्मिणिरमण ।
वन्दौं धरि महि शीश, पार्थ रथस्थ स्वरूप को ॥ ३ ॥

दो० भारत कवि श्रीव्यास के, चरणकमल को ध्याय ।
भाषा में भारत करत, कालीचरण सचाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महाभारत भाषा

भीष्मपर्व ।

पहला अध्याय ।

जनमेजय उवाच ।

राजा जनमेजय बोले कि, महावीर योद्धा कौरव, पाण्डव, सोमक और अनेक देशों से आयेहुये बड़े २ महात्मा राजालोग कैसे २ युद्ध करते हुए, उस को वर्णन कीजिये। वैशम्पायन बोले कि हे राजन्, जनमेजय ! बड़े वीर शूर प्रतापी कौरव पाण्डव सोमक आदि अनेक राजा लोगों समेत महा उत्तम तीर्थ कुरुक्षेत्र में जैसे युद्ध करते हुये उसको मैं कहता हूं तुम चित्त लगाकर सुनो कि वह महाबली युद्ध में प्रशंसनीय विजय के चाहनेवाले वेदपाठी पाण्डव सोमकों समेत कुरुक्षेत्र में उतर कर कौरवों के सन्मुख वर्त्तमान हुए, और पराक्रम के द्वारा विजय की आशा रखनेवाले युद्धभूमि में वर्त्तमान दुर्य्योधन के उस दुःख से महाखेदित सेना के सन्मुख पहुँचकर कुरुक्षेत्र के पश्चिम भाग में सेनाओं के मनुष्यों समेत पूर्व्वाभिमुख हो स्थिरता से नियत हुए फिर कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर ने स्यमन्तपञ्चक से बाहर अपनी बुद्धि के अनुसार हजारों शिविर अर्थात् खेमे डेरे तम्बू तैयार किये और वृद्ध, बालक, स्त्री इनको छोड़कर सब पृथ्वी के मनुष्यमात्र हाथी, घोड़े, रथ इत्यादि समेत यहां तक इकट्ठे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हुए कि पृथ्वी के प्रदेश निर्जन से होगये, हे राजेन्द्र, जनमेजय! जहां तक कि सूर्य जम्बूद्वीप में प्रकाश करता हुआ सन्तप्त करता है उस पृथ्वीमण्डल के सब राजा लोग अपनी २ सेनाओं समेत आकर इकट्ठे हुये सब वर्णोंने देश, नदी, पर्वतों को और बहुत योजन के उस पृथ्वीमण्डल को उल्लंघन करके एक स्थानमें निवास किया, तब महाबुद्धिमान् राजा युधिष्ठिर ने उन श्रेष्ठ क्षत्रिय राजाओं से लेकर म्लेच्छपर्य्यन्त लोगों के निमित्त बहुत उत्तम२ प्रकारके भोजनों के बनवाने की आज्ञा दी और भोजनके अनन्तर रात्रि के समय सब लोगों को उत्तम स्वच्छ बिस्तरों समेत शय्या सोने को दीं इस प्रकार से इस बुद्धिमान् पाण्डवोंके बड़े भाई युधिष्ठिरने सबका यथोचित मान सम्मान करके युद्ध वर्त्तमान होनेके समयपर अपनी सेनाके मनुष्यों की पहँचान के लिये सबके चिह्न नाम और आभूषण रथ आदि में लगवा दिये, तब तो महासाहसी दुर्योधनने अर्जुनकी ध्वजा पताकाको देखकर सब राजाओं समेत अपनी सेनाको पाण्डवों से लड़ने के लिये युद्धमें सन्नद्ध किया और आर भी अपने श्वेतछत्रको धारण करके भाइयों समेत हज़ारों हाथी घोड़ों समेत उपस्थित हुआ। दुर्योधनकी इस धूमधाम और तैयारी को देखकर युद्धाभिलाषी प्रसन्नचित्त विजयके चाहनेवाले पाञ्चाल ने बड़े शब्दायमान शंख और मधुरवाणीवाली दुन्दुभी को बजाया तदनन्तर पाण्डव और श्रीकृष्णजी उस अपनी सेनाको प्रसन्नचित्त देखकर महाआनन्दित हुये फिर श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों वीरपुरुषों ने रथमें सवार होकर अपने दिव्य शंखों की ध्वनि करी इन दोनों सिंहवीर पुरुषों के पाञ्चजन्य और देवदत्त नाम शंखों की ध्वनिको सुनतेही कौरवी सेनाके वीरोंने मारे भयके मूत्र और विष्ठा कर दी जैसे कि सिंहकी गर्जनाको सुनकर अन्य मृगादि पशु भयभीत होकर मूत्र पुरीषादि करडालते हैं वैसीही कौरवी सेना भी शंखों के शब्दोंको सुनकर व्याकुल होगई और पृथ्वीकी धूलि आकाशको ऐसी उड़ी जिसके कारण सूर्य अस्तंगतसा होगया और कुछ नहीं जानागया और सूर्य को अस्तकी समान जानकर मांस रुधिरके बरसानेवाले बादलने उस समय सेनाके चारों तरफ़ के मनुष्यों पर मांस और रुधिरकी वर्षा करी यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ तदनन्तर नीचे की ओर से पृथ्वी के कङ्कड़ों का खींचनेवाला वायु बड़े वेगसे ऐसा प्रचण्ड हुआ कि जिसने संपूर्ण सेना के मनुष्यों को घायल कर दिया

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हे राजेन्द्र ! इसप्रकारसे पीड़ित होकर दोनों ओरकी सेनाओं के मनुष्य युद्ध करने के लिये अत्यन्त प्रसन्नचित्त कुरुक्षेत्रके मैदान में नियत हो सावधान और व्याकुल होकर शोभित सागर की समानता को प्राप्त हुये अर्थात् उन दोनों सेनारूपी समुद्रोंका ऐसा अपूर्व योग हुआ जैसा कि प्रलयके समय दोनों समुद्रोंका सम्पात होता है, और सब पृथ्वी जिसमें केवल बालक और वृद्धही शेष रहगये थे वह कौरवोंके बुलायेहुये उन सेनाओं के समूहोंके कारण घोड़े, मनुष्य, रथ और हाथियोंसे भी शून्य होगई तदनन्तर उन कौरव पाण्डव और सोमकों ने नियम करके युद्धके इन धर्मों को नियत किया कि इस नियत कियेहुये युद्धके समाप्त होनेपर हम सबकी प्रीति परस्पर में होवे, इस निमित्त कि फिर किसी के एक से मिलाप में भिन्नभाव न होनेपावे वचनरूप शस्त्रों से सन्मुख होनेवालों को वचनों ही से लड़ना योग्य है सेना से बाहर होजाने वालेको कभी न मारना चाहिये रथी रथी से हाथीका सवार हाथीके सवारसे अश्वारूढ़ अश्वारूढ़से पैदल पैदल से लड़ने को योग्य हैं अर्थात् जैसा कि उचित युद्ध होता है वैसाही अपने बलपराक्रम के साथ करना योग्य है और मुखसे बोल कर शस्त्रप्रहार करना चाहिये परन्तु विश्वासित और व्याकुल मनुष्य पर शस्त्र प्रहार करना अयोग्य है और एक के साथ भिड़ेहुये शरण में आयेहुये वा ऐसे व्याकुल लोग जो टूटे शस्त्र और विना बख्तरके हों उनको कभी न मारना चाहिये इनके सिवाय सोतेहुओं को शस्त्रों के लानेवाले वा बनानेवालों को भी न मारे और भेरी, शंख, नगाड़े आदि बाजों पर किसी दशामें भी शस्त्र न चलाना चाहिये इसप्रकार उन सब परस्पर देखनेवाले कौरव, पाण्डव और सोमकोंने नियम करके बड़ा आश्चर्य्य किया इसके पीछे वह सब महात्मा वीर युद्धभूमि में प्रवेश करके, अपने पराक्रमी सेना के प्रसन्नचित्त मनुष्यों समेत मनमें प्रसन्न हुए ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि युद्धनियमवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दूसरा अध्याय ।

वैशम्पायन बोले कि, युद्धके नियम होनेके पीछे सब वेदयज्ञोंमें श्रेष्ठ सत्यवतीके पुत्र भरतवंशियोंके पितामह आगे होनेवाले युद्धके वृत्तान्तके प्रत्यक्षदर्शी भूत, भविष्य, वर्त्तमानके ज्ञाता समर्थ भगवान् वेदव्यास ऋषि कौरव पाण्डवोंकी सेनाको दोनों ओर तैयार देखकर उस शोचग्रस्त अपने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुत्रोंके अन्याय के ध्यान करनेवाले राजा धृतराष्ट्र से गुप्त प्रयोजन के साथ यह वचन बोले कि हे राजन्! तुम्हारे पुत्र और अन्य तुम्हारे सहायक राजा लोग मृत्यु के वशीभूत हैं वह युद्धभूमि में एक २ दूसरेसे सन्मुख लड़कर नाशको पावेंगे, हे भरतवंशिन्! उन मृत्यु के वशीभूत और नाश होनेवालों में समय की विपरीतताको जानकर शोकग्रस्त मनको मत कर हे राजन्! जो तू इनको युद्ध में देखा चाहता है तो हे पुत्र! मैं तुझको नेत्र देताहूं तू उनके युद्धोंको देख, धृतराष्ट्र बोले कि हे ब्रह्मर्षियों में श्रेष्ठ! मैं अपने ज्ञाति, बन्धु और पुत्रों का मरना नहीं देखना चाहता हूं केवल यही चाहता हूं कि आपके तेज से युद्ध का सब वृत्तान्त सुना करूं, वैशम्पायन बोले कि जब व्यासजी ने धृतराष्ट्रको जाना कि यह युद्ध देखना नहीं चाहता किन्तु पूरा पूरा वृत्तान्त युद्ध का सुनना चाहता है तब महावरदायी होकर उन्होंने संजयको वर दिया और राजा से कहा कि हे राजन्! यह संजय तुमसे सब लड़ाई का वृत्तान्त कहेगा दिन में या रात्रि में गुप्त प्रकट कैसाही वृत्तान्त हो सब तुमसे वर्णन करेगा और यह संजय दूसरे के मनकी शोची हुई बातको भी जानेगा शस्त्रों से इसका घात नहीं होगा और यह परिश्रम से कभी खेदित भी नहीं होगा हे पुत्र, धृतराष्ट्र! यह गोलगनका बेटा इस युद्धसे अलग रहेगा और हे भरतर्षभ! मैं इन कौरव पाण्डव और सब राजाओं की कीर्ति को कथाओं के द्वारा विख्यात करूंगा हे नरोत्तम! ऐसाही होनेवाला है इसमें तुमको शोच करना अवश्य नहीं है, वह होनहार बात रोकने में नहीं आसक्ती जिधर धर्म है उधरही विजय है वैशम्पायन बोले कि वह कुरुवंशियों के पितामह महाभाग भगवान् व्यासजी ऐसा कहकर फिर धृतराष्ट्र से बोले कि हे महाराज! यहां इस युद्ध में बड़ी हानि होगी क्योंकि मैं यहां भयकारी कारण को देखता हूं बाज, गिद्ध, कौवे और कङ्क नाम पक्षी बगलों समेत वृक्षों की डालियों पर एक साथही गिरते हैं और इकट्ठे होजाते हैं यह सब पक्षी बड़े प्रसन्न होकर युद्ध को सन्मुख देखते हैं और कच्चा मांस खानेवाले जीव हाथी घोड़ों के मांस को खायँगे, भयानक और भय उत्पन्न करनेवाले कङ्क नाम पक्षी निर्दयता के शब्द करते हुये मध्य में से दक्षिण दिशा की ओर चले जाते हैं हे भरतवंशिन्! मैं पहली और पिछली दोनों संध्याओं में उदय और अस्त होनेवाले सूर्य्यनारायण को सदैव प्रतिदिन राहु से घिरा हुआ देखता हूं श्वेत लोहित रक्त

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इत्यादि अनेक रंग धारण करनेवाली बिजली ने संध्या के समय सूर्य्य को घेर लिया है यह मैं रात्रि दिन देखता हूं यह भयंकर उत्पात के सूचक लक्षण हैं और सूर्य्य, चन्द्रमा, नक्षत्रादि में से अग्नि के कण निकलते ज्ञात होते हैं यह भी महाअशुभसूचक उत्पात हैं, कार्त्तिक मासकी पूर्णमासी के दिन आकाश में लाल रंग चन्द्रमा प्रभारहित अपने कृष्ण चिह्न के विना अग्नि के समान वर्णवाला दिखाई दिया, इसका फल यह दिखाई दे रहा है कि परिघ के समान प्रलम्ब भुजावाले शूरवीर और मृतक राजा लोग वा राजकुमार पृथ्वी को आच्छादित करके सोवेंगे और अन्तरिक्ष में उछल २ कर लड़ते हुए वराह नाम सूकर और वृषदंश दोनों के भयकारी महाशब्दों को रात्रि के समय नित्य २ देखता और सुनता हूं और देवताओं की मूर्तियाँ कांपती हँसती हुई मुखों से रुधिर उगलती हैं और पसीनों में तर हो होकर पृथ्वीपर गिरती हैं और हे राजन्! दुन्दुभियां विना बजाये आप अच्छे प्रकार से बजती हैं और क्षत्रिय लोगों के बृहत् और उत्तम दिव्य रथ घोड़ों के विनाही चलते हैं कोकिल, शतपत्र, नीलकण्ठ, भास और तोते, सारस, मोर यह सब पक्षी भयानक शब्दों को करते हैं और घोड़ों की पीठोंपर बैठे हुये बाज अपने जिह्वारूपी शस्त्रों से शब्दरूपी आघातों को करते हैं और सूर्य्य के उदय होनेपर टीड़ियों के हज़ारों समूह देख पड़ते हैं हे भरतवंशिन्! दिग्दाहयुक्त दोनों संध्या प्रकाशमान होती हैं और बादलों से मांस और धूलि की वर्षा होती है और यह जो साधुओं की मानी हुई अरुन्धती तीनों लोकों में प्रसिद्ध है उसने भी वशिष्ठजी की ओर पीठ की है और यह शनैश्चर रोहिणी नक्षत्र को पीड़ित करता हुआ वर्त्तमान है चन्द्रमा का रूप ढक गया इन सब उत्पातों से महाभय उत्पन्न होगा और विना बादलों के आकाश में बड़ी भारी भयानक गर्जना सुनी जाती है और रोती हुई सवारियों के अश्रुपातों की वृष्टि पृथ्वी पर होती है ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भयानकउत्पातवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तीसरा अध्याय।

व्यासजी बोले कि हे राजन्! गधे गौओं के साथ विषय करते हैं और पुत्र माताओं के साथ रमण करते हैं और वन के अनेक वृक्ष विना ऋतु के फल फूलों को दिखलाते हैं गर्भवती पुत्र उत्पन्न करनेवाली स्त्रियां भयकारी बालकों को उत्पन्न करती हैं गधे आदि पशु कच्चे मांस खानेवाले पक्षियों के साथ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मिलकर परस्पर भोजन करते हैं, तीन सींग चार नेत्र पांच पैर दो लिङ्गेन्द्रिय दो शिर दो पूंछवाले असभ्य अशुभरूप मांसाहारी और निर्मांसाहारी पशु उत्पन्न होते हैं और तीन पंजे चोटी चार डाढ़ सींग धारण किये गरुड़ नाम पक्षी अशुभ और भयानक शब्दों को बोलते हुये उत्पन्न होते हैं ४ इसी प्रकार ब्रह्मवादियों की स्त्रियां भी विपरीत देखने में आती हैं तेरे पुर में गरुड़ पक्षी मोरों को उत्पन्न करते हैं हे राजन्! घोड़ी गौ के बछड़े को और कुतियां शृगाल को और तोते अशुभ बोलनेवाले कुक्कुट और करभों को उत्पन्न करते हैं कोई २ स्त्रियां चार २ पाँच २ कन्याओं को एक समय में उत्पन्न करती हैं आश्चर्य्य यह कि वह कन्या पैदा होते ही नाचती, गाती और हँसती हैं और सब नीच मनुष्यों के नातेदार भाई, बन्धु, काने, कुबड़े आदि भी होकर हास्य करते भय को दिखलाते हुये नाचते और गाते हैं यह शस्त्रधारी मूर्तियां काल के विपरीत होने से गिरती हैं और बालक लोग हाथों में दण्ड लिये हुये परस्पर में एक दूसरे के सन्मुख दौड़ते हैं और युद्धाभिलाषी होकर अपने बनाये हुये नगरों को परस्पर विध्वंस करते और स्थानों को ढाते हैं, पद्म, उत्पल, कुमुद और सूर्य्य के उदय में खिलनेवाले कमल वृक्षों पर पैदा होते हैं और संसार में चलनेवाले वायु भयानक चलते हैं और धूलियों का उड़ना शान्त नहीं होता है, पृथ्वी अत्यन्त प्रकाशित होती है और राहु सूर्य्य से मिलता है इसी प्रकार केतु भी चित्रा नक्षत्र को घेरे हुये नियत है यह अधिकतर कौरवों के नाशको देखता है और बड़ा घोर धूम्रकेतु पुष्य नक्षत्र को दबाये हुये उपस्थित है यह महाउग्र ग्रह दोनों सेनाओं के घोर अकल्याण को करेगा मंगल तिरछा होकर मघा नक्षत्र में और बृहस्पति श्रवण नक्षत्र में हैं और सूर्य्य के पुत्र शनैश्चर से पूर्वाफाल्गुनी वा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र दबकर पीड़ित किये जाते हैं और शुक्र पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में चढ़कर उसको दबाये हुये प्रकाश करता है और परिघनाम उपग्रह के संग होकर उत्तराभाद्रपद नक्षत्रकी ओर देखता है और केतुग्रह सधूम अग्नि के समान जल रहा है और महाप्रज्वलित भयकारी राहु इन्द्र से सम्बन्ध रखनेवाले तेजस्वी ज्येष्ठा नक्षत्र को व्याप्त करके वर्त्तमान है और अपसव्य होकर वर्त्तमान है वह कठिन ग्रह चित्रा और स्वाती के मध्य में वर्त्तमान रोहिणी नक्षत्र और दोनों सूर्य्य और चन्द्रमा को पीड़ा देता है और अग्नि के समान प्रकाश-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वान् मङ्गल वारंवार तिरछा होकर बृहस्पतिजी से दबायेहुये श्रवण नक्षत्र को पूर्णदृष्टि से बेधे हुये वर्त्तमान है, खेती से प्रशंसा पानेवाली पृथ्वी सबप्रकार के खेतों से आच्छादित होकर पांच शिखवाले जौ और सौ शिखवाले धानों को उत्पन्न करती है, संसार में पूज्य और जिनमें यह सब जगत् वर्त्तमान है ऐसी गौवें अपने बछड़ों के समीप होकर रुधिर को छोड़ती हैं, इस का यह फल है कि धनुषों से अग्नि निकले और खड्ग अत्यन्त अग्निरूप हों और शस्त्र व्यक्त होकर संग्राममें युद्धको प्रकट देखें और शस्त्रों की चमक का रंग अग्नि के समान है कवच और ध्वजाओं का बड़ा नाश होगा, हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र! पाण्डवोंके साथ कौरवों की शत्रुता होनेपर पृथ्वीपर रुधिरकी नदियां बहेंगी और ध्वजारूप नौकाओंसे व्याप्तहोकर व्याकुलहोंगी और अत्यन्त क्रोधरूप मुखसे पशु पक्षी बड़े भयको सूचित करते और अशुभको प्रकाश करते हुये दिशाओं में बोलते हैं, रात्रि के समय एकपक्ष एकनेत्र और एकही चरण का रखनेवाला अत्यन्त क्रोधी आकाशचारी पक्षी रुधिर को उगिलता हुआसा भयकारी शब्दोंको करता है, हे राजेन्द्र! शस्त्र अग्नि के समान वर्त्तमान हैं जिनसे महातेजस्वी सप्तऋषियोंके प्रकाश मन्द होकर ढकेहुयेसे विदित होते हैं और अत्यन्त तेजस्वी बृहस्पति और शनैश्चर दोनों वार्षिक गति में नियत होकर विशाखाके सन्मुख नियत नित्य दीखते हैं एकही दिन तेरस तिथिको दोनों सूर्य और चन्द्रमा ग्रसेगये और विना पर्व के राहुग्रह से मिलेहुये प्रजाके नाश को चाहते हैं, चारों ओर धूलिकी वर्षा से सब दिशा अशोभित होगईं और रात्रि के समय बड़े भयानक उत्पात और रुधिर को मेघ बरसाते हैं, और हे राजन्! राहु कृत्तिका को पीड़ा देता हुआ अपने कठिन कर्मों से भरा हुआ देखा गया है, धूमकेतु नाम उत्पात में नियत होकर वायु चलते हैं यह वायु महायुद्धकारी शत्रुता को उत्पन्न करते हैं, और हे राजन्! सब नक्षत्रों के मध्य रक्षा न करनेवाला पापग्रह बड़े भयको पैदा करता हुआ तीनों छत्रों में सबके शिरों के छत्रों कलशों पर गृद्ध पक्षी होकर गिरता है, एक मास की तेरस तिथि को विना पर्व के चन्द्रमा और सूर्य्य दोनों राहुग्रह से ग्रसे गये हैं यह दोनों प्रजा का नाश करेंगे इसलिये मैं चौदश पूर्णमासी और व्यतीत प्रतिपदा को जानता हूं परन्तु अमावस्या और तेरसके योगको नहीं जानता हूं वहां रुधिर से भरे हुए मुखवाले राक्षस लोगों की तृष्णा अधिक शोणित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पीनेकी होगी और नदियों में बड़ी नदियाँ तो विरुद्ध प्रवाहयुक्त होगईं और छोटी नदियाँ रुधिर समान जलको बहने लगीं कुएँ फेनोंसे भरेहुये बैलों के समान क्रीड़ा करते हैं और इन्द्र के वज्र के समान प्रकाशमान महाशब्दायमान उल्कापात होते हैं अब तुम प्रातःकाल अन्याय के फल को पाओगे और महर्षियों ने भी सब दिशाओं में अँधेरा देख मसालें बार घर से बाहर निकलकर परस्पर में एकत्र होकर कहा है कि पृथ्वी हजारों राजाओं के रुधिर को पीवेगी और हे समर्थ! इसी प्रकार कैलास मन्दराचल और हिमाचल पर्वतों से हजारों बड़े घोर शब्द शिखरों पर गिरते हैं, और पृथ्वी के कम्प से चारों समुद्र पृथक् २ अपनी २ मर्यादाओं को उल्लङ्घन और सब संसार को व्याकुल करतेहुए बड़ी वृद्धियुक्त हुए हैं और कङ्कड़ों से भराहुआ भयानक वायु ऐसा चलता है कि जिसके वेगसे बिजली से सताये हुये अनेक वृक्ष टूट २ कर गांवोंकी सीमाओं और नगरों के भीतर जाकर गिरते हैं और ब्राह्मणों से होमीहुई अग्नि नील रक्त और पीतरंग की होती है वह दुष्टगन्धा वामार्ची भयानक शब्दको करती विदित होती है हे राजन्! स्पर्श गन्ध और रस सब विपरीत हैं, बारम्बार कम्पायमान होकर ध्वजायें धूमको छोड़ती हैं और चारों दिशाओं में अच्छे फूले फले वृक्षों के ऊपर अग्निमण्डल में बैठेहुये काक भयकारी रोदन करते हैं और पक्षी पक्का पक्का अर्थात् नाश होनेवालोंका परस्पर युद्ध है ऐसे अत्यन्त शब्द करते हैं और राजाओं के नाश सूचन करने को ध्वजाओं की नोकों में छिप जाते हैं दुष्ट हाथी ध्यान करते हुए मूत्र विष्ठा को करते कम्पायमानहैं और गरीब हाथी और घोड़े पसीनों में चूर हैं अब तुम यहां यह बातें सुनकर समयके अनुसार निश्चय करो जिससे कि हे भरतवंशिन्! यह संसार नाश न होवे वैशंपायन बोले कि पिताके इन वचनों को सुनकर धृतराष्ट्र यह बोला कि हे पिता, व्यासजी! मैं इसको समीपही होनहार मानताहूं और मनुष्यों का नाश होगा, जो राजालोग क्षत्रियधर्म से युद्ध में मरेंगे वह सब वीरों के लोकों को पाकर मोक्षरूप सुखको पावेंगे, हे पुरुषोत्तम! भारी युद्ध में प्राणों को त्यागकर यहां तो कीर्त्ति और परलोक में बहुत कालतक महा सुखको पावेंगे वैशंपायन बोले कि हे राजेन्द्र, जनमेजय! वह कवीन्द्र व्यासदेव मुनि ऐसाही है यह कहकर अपने पुत्र धृतराष्ट्र के साथ चिन्ता में ग्रसित हुये और एक मुहूर्त्त पर्य्यन्त ध्यानावस्थित होकर यह वचन बोले कि हे राजन्!

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निस्सन्देह काल जगत् को नाश करता है और फिर उत्पन्न भी करता है यहां किसी को सदैवता नहीं प्राप्त है, तुम जातिवाले, कौरव, नातेदार और मित्रों के धर्मरूप मार्गों को उपदेश करो और तुम्हीं उनके रोकने में भी समर्थ हो ज्ञातिवालों का मारना नीचकर्म कहा जाता है इससे इस मेरी अप्रिय बात को मत कर हे राजन्! यह काल तेरे बेटे दुर्योधन के रूप से प्रकट हुआ है, मारनेवाले को वेद में अच्छा नहीं कहते हैं और किसी दशा में भी वह प्रियकारी नहीं है जो धर्म को मारता है वह धर्म उसी को मारता है कुल का धर्म अपना देह है, समर्थ होने पर इस कुलके और इसीप्रकार अन्य राजाओं के नाश के लिये काल से प्रेरित होकर तू आपत्तिकाल के समान कुमार्ग में चलता है, हे राजन्! तेरा अनर्थ राजरूप से उत्पन्न हुआ है तू अत्यन्त अधर्मी है अपने पुत्रों को धर्म का उपदेश कर, हे दुर्धर्ष! तुझको राज्य से क्या लाभ है? जिसके लिये तैंने पाप को बिसाया है अपने यश और धर्म का पालन कर जिससे कि तू स्वर्ग को पावेगा पाण्डवों को राज्य दो और कौरवों को शान्ति दो यह पिता के वचन सुनकर अम्बिका का पुत्र वचन का जाननेवाला धृतराष्ट्र पिता के इन शिक्षारूपी वचनों को तिरस्कार करके फिर यह वचन बोला कि जैसा आप जानते हैं वैसाही मैं भी जानता हूं और मुझको अपना और दूसरों का जीवन वा नाश ठीक २ विदित है हे तात! यह लोक अपने प्रयोजन में बड़े २ मोहों को पाता है आप मुझको भी लोकरूपही जानो, हे महाप्रभाववाले ! मैं आपको प्रसन्न करता हूं आप पण्डित होकर हमारी गति और उपदेश के करनेवाले हो परन्तु हे महर्षे! वह पुत्र मेरे स्वाधीन नहीं हैं और मैं बुद्धि से अधर्म करने को नहीं चाहताहूं आप भरतवंशियों के यश और कीर्ति के कारणरूप हो और कौरव पाण्डव दोनों के पितामह भी हो, व्यासजी बोले हे राजन्, धृतराष्ट्र! जो तेरे मनमें वर्तमान है उसको तू इच्छापूर्वक कह मैं तेरे सब सन्देह दूर करूंगा धृतराष्ट्र ने कहा कि युद्ध के बीच में विजय पानेवालों के जो चिह्न होते हैं उन सबको हे भगवन्! मैं आपसे मूलसमेत सुना चाहता हूं, व्यासजी बोले कि स्वच्छ अग्नि प्रकाशमान ऊंची ज्वालायुक्त प्रदक्षिणावर्त्ति निर्धूम हो और जिसमें आहुतियों की पवित्र सुगन्ध उठती होय तो विजय होनेवाले पुरुष का शुभ लक्षण है, और जहां शङ्ख मृदङ्गों की बड़ी गम्भीर ध्वनि हो और बड़े शब्द से बजते हों और सूर्य्य चन्द्रमा की स्वच्छ किरणें पड़ती हों उसको विजय होने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

का लक्षण जानो ६६ चलते हुये वा जाना चाहते काकों के बोले हुये चित्त-रोचक ऐसे वचन विदित हों जोकि पीठ की ओर से तेरी यात्रा को जल्दी करते हैं और आगे से तुझको निषेध करते हैं, जिस स्थानपर युद्धभूमि में राजहंस, तोते, क्रौंच और शतपत्र नाम पक्षी शुभ वचन बोलते हुये दक्षिण ओर को होयँ उस स्थानपर विजयका होना ब्राह्मण वर्णन करते हैं जिन क्षत्रियों की सेना अलङ्कारादि और कवच ध्वजा वा घोड़ों के हींसने के सुखदायी शब्दों से शोभायमान कष्ट से देखने के योग्य हो वे क्षत्रिय अवश्य शत्रुओं को विजय करते हैं, हे भरतवंशिन् ! जहां शूरवीरों के वचन प्रसन्नता से भरेहुये पराक्रम में तुलेहुये होते हैं और जिनकी माला कुँभलाती नहीं है वह पुरुष रणरूपी समुद्रको तरजाते हैं, शत्रु की सेना में प्रवेश करके देखने की इच्छा करनेवाले योद्धाओं के प्रसन्न मन सावधानी से संयुक्त हों उनके वचन विजय को धारण करते हैं और जो सन्मुख निषेध करनेवाले हैं वह भी मृत्यु से विदित करने-वाले हैं, रूप, रस, शब्द, गन्ध, स्पर्श यह शुभ और रूपान्तर दशासे रहित हों अर्थात् अपने मुख्यरूप में ही नियत हों और योद्धाओं में सदैव प्रसन्नता होय यह भी विजय पानेवालों के उत्तम चिह्न हैं, अनुकूल वायु हो इसीप्रकार बादल वा पक्षी भी हों अथवा बादल पीछे चलते हों और इन्द्रधनुष भी इसीप्रकार हो, हे राजन् ! यह सब विजयी लोगों के लक्षण हैं और यही सब लक्षण मरनेवालों के लिये विपरीत होते हैं थोड़ी वा बहुत सेना में योद्धा लोगों की केवल एक प्रसन्नता ही विजय की देनेवाली है एक भी भागा हुआ योद्धा बहुत बड़ी सेना को भी भागी हुई सी कर देता है उस भागे हुये के पीछे बड़े शूरवीर योद्धा भी भाग जाते हैं भागी हुई सेना बड़ी कठिनता से फिर लौट सक्ती है जैसे कि जलों के बड़े वेग और डरे हुये मृगों के समूह कठिनता से नहीं लौट सक्ते इसी प्रकार भागी हुई सेना को भी जानो, हे भरतवंशिन् ! बड़ी सेना को सन्मुख नियत करना असम्भव है क्योंकि भागे हुओं में बड़े बुद्धिमान् भी भाग जाते हैं, भयभीत और अलग २ होजानेवाले शूरवीरों को देखकर और भी भय बढ़जाता है हे राजन् ! अत्यन्त व्याकुल सेना अकस्मात् चारों ओरों को भागती है ऐसी बड़ी सेना शूरवीरों से भी नियत करनी कठिन है राजा अपनी चतुरङ्गिणी सेना को अच्छे प्रकार से ध्यान करके युद्ध करे युक्तियों से अर्थात् शत्रु के चाहने से वा कुछ धन देने से जो विजय होती

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

है वह उत्तम विजय कही जाती है और शत्रु के मनुष्यों के मध्य में विरोधता डलवाने से जो विजय होती है वह मध्यम विजय कहाती है और जो विजय युद्ध के द्वारा होती है उसको निकृष्ट विजय जानो क्योंकि युद्ध में बड़े २ दोष होते हैं उसका प्रथम फल तो नाश है, परस्पर में ज्ञाता प्रसन्न चित्त स्त्री आदि में मोह से रहित दृढ़ निश्चय रखनेवाले पचास शूरवीर पुरुष भी बड़ी भारी सेना को विध्वंस करते हैं अर्थात् ऐसे लड़ते हैं कि सबको मार कर विजय पाते हैं और मुख न फेरनेवाले पांच छः वा सात शूरवीर भी पूरी विजय को करते हैं, हे भरतवंशिन्! उत्तम पक्षधारी विनता के पुत्र गरुड़जी बड़ी सेना से भी हानि को देखकर बड़े भारी समूह को अच्छा नहीं कहते हैं सेना की आधिक्यता से बहुधा नित्य विजय नहीं होती है निश्चय करके विजय नाशवान् है इसमें प्रारब्ध भी मुख्य है क्योंकि प्रारब्धवाले ही पुरुष युद्ध में विजय प्राप्त करके अपने अभीष्ट को सिद्ध करते हैं ॥ ८४ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चौथा अध्याय।

वैशम्पायन बोले कि हे राजन्, जनमेजय! व्यासजी इस प्रकार की अनेक बातें बुद्धिमान् धृतराष्ट्र से कहकर चले गये और उनकी बातों को ध्यान करके धृतराष्ट्र भी चिन्तायुक्त हुआ और हे भरतर्षभ! उसने एक मुहूर्त्त पर्यन्त ध्यानावस्थित हो बारम्बार श्वास लेकर उस बुद्धिमान् संजय से पूछा कि हे संजय! इस स्थान पर यह युद्ध में प्रशंसनीय शूरवीर राजा लोग छोटे बड़े शस्त्रों के द्वारा परस्पर में मारते हैं, यह सब जीवन की आशा को त्यागे हुये बुद्धिमान् राजा लोग पृथ्वी के कारण मारते हुये शान्ति को नहीं पाते हैं और यमलोक को बढ़ाते हैं पृथ्वी सम्बन्धी ऐश्वर्यों को चाहते हुये परस्पर में क्षमा संतोष आदि नहीं करते हैं मैं जानता और मानता हूं कि पृथ्वी बहुत गुण धारण करनेवाली है हे संजय! इसको मुझसे कहो, कुरु और जाङ्गल देश में संसार के कोट्यवधि क्षत्रिय इकट्ठे हुये सो हे संजय! मैं उनके देश, नगर, ग्रामों की संख्या मूलसमेत सुनना चाहता हूं जहां जहां से यह आये हैं, तुम उन महातेजस्वी ब्रह्मऋषि व्यासजी के प्रभाव से दिव्य बुद्धिरूप दीपक और ज्ञानरूप नेत्रों से संयुक्त हो, संजय बोले कि हे भरतर्षभ, महाज्ञानिन्, धृतराष्ट्र! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार पृथ्वी के गुणों का वर्णन करूंगा तुम भी शास्त्ररूपी नेत्रों को धारण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

किये विचार करो मैं आपको नमस्कार करता हूं, यहां दो प्रकार के जीवधारी हैं एक स्थावर दूसरे जंगम अर्थात् नहीं चलनेवाले और चलनेवाले और सब जीवमात्र का उत्पत्ति स्थान तीन प्रकार से है अर्थात् अण्डज, स्वेदज, जरायुज से है और जंगमजीवों में जरायुज उत्तम हैं और जरायुजों में मनुष्य वा पशु हैं वह दोनों अत्यन्त उत्तम हैं वही अनेक प्रकार के रूप धारण करनेवाले हैं उनके प्रकार जो वेद में कहे गये हैं वह संख्या में चौदह हैं उन्हीं में यज्ञादि धर्म नियत हैं और ग्राम वा नगर के वासियों में मनुष्य श्रेष्ठ हैं और वनवासियों में सिंह उत्तम हैं सब जीवों का जीवननिर्वाह परस्पर में है पृथ्वी को फोड़कर उत्पन्न होनेवाले वृक्षादिक स्थावर कहे जाते हैं उनके पांच भेद हैं वृक्ष, गुल्म, लता, वल्ली, त्वचासार और तृणजाति, पंचमहाभूतों में उनके उन्नीस प्रकार हैं अर्थात् स्थावर जीव ५ और जंगम १४ और लोक में गायत्री भी चौबीस अक्षरों की उपदेश की जाती है सो हे राजन्! जो जीवधारियों में से उस सर्वगुण सम्पन्न गायत्री को मूल समेत जानता है वह इस संसार में नाश नहीं होता है, सब पृथ्वी में ही उत्पन्न होते हैं और पृथ्वीपर ही नाश हो जाते हैं पृथ्वी सब जीवों का निवासस्थान होकर बहुत प्राचीन है, इन जीवों में सात ग्रामवासी वा सात नगर निवासी हैं सिंह, व्याघ्र, वराह, भैंसा, हाथी, रीछ, वानर यह सात वनवासी कहे जाते हैं गौ, बकरी, भेड़, मनुष्य, घोड़ा, खच्चर, गधा इन सातों को साधूलोग ग्रामवासी कहते हैं और यही ग्रामवासी और वनवासी चौदह पशु हैं इन्हीं चौदह पशुओं में मनुष्य भी गिना जाता है जिसकी पृथ्वी है उसीका यह सब स्थावर जंगम जगत् है उसमें लोभी राजा लोग परस्पर में मारते हैं ॥ २१ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि संजयधृतराष्ट्रसंवादे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पांचवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि, हे संजय! नदी, पर्वत, देश और अन्य अन्य जो पृथ्वी पर नियत हैं उन सबके नामों को वर्णन करो, हे प्रमाण के भी ज्ञाता, संजय! पृथ्वी का प्रमाण जैसा कि सब ओर से है उस सबको मूलसमेत मुझसे वर्णन करो, संजय बोले कि, हे महाराज! पण्डित लोगों ने इन सब पञ्च महाभूतों को एकत्र होजाने से ब्रह्माण्डरूप और ब्रह्मरूप वर्णन किया है, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश यह पांचों क्रम से एक से दूसरा एक एक गुण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अधिक रखनेवाले हैं, मूल जाननेवाले ऋषियों ने पृथ्वी के शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध यह पांच गुण कहे जल में चार गुण हैं एक गन्ध गुण नहीं है अग्नि के तीन गुण शब्द, स्पर्श और रूप वायु में शब्द वा स्पर्श हैं आकाश में केवल एक शब्द ही गुण है, हे राजन्! पञ्च महाभूतरूप सब लोकों में यही पांच गुण वर्तमान हैं, उन्हीं में जीवधारी नियत हैं, निश्चय करके जब प्रलय, सुषुप्ति, समाधि, मोक्ष इन चारों में ब्रह्मभाव होता है तब वह भक्ष्य भक्षक परस्पर में सन्मुख नहीं होते और जब वह ब्रह्मभाव से गिरकर परस्पर भिन्न २ रूपों में प्रवेश करते हैं तब निश्चय करके जीव जीवों पर गिरते हैं क्रम से ही उत्पन्न होते हैं और क्रम क्रम से ही नाश होजाते हैं और वह सब असंख्य हैं इस कारण इन सबका ब्रह्मरूप है फिर प्रलय के पीछे पञ्चभूत सम्बन्धी भूगोल आदि धातु जहां तहां दृष्टिगोचर होते हैं उनके प्रमाणों को मनुष्य बुद्धि की तर्कणाओं से कहते हैं अर्थात् सिद्ध लोग ब्रह्माण्ड को भेदकर जाते हैं वहां भी वासनारूप धातु और पञ्चभूत सम्बन्धी प्रकटरूप धातु दिखाई देती हैं इस कारण वह असंख्य हैं, निश्चय करके जो ध्यान से भी बाहर हैं उनको तर्कणाओं से कैसे सिद्ध करसक्ते हैं, जो तीनों गुण और पञ्चभूतादि से पृथक् हैं वह ध्यान भी अगम्य ब्रह्म का लक्षण है, हे कौरवनन्दन! अब मैं सुदर्शन नाम जम्बूद्वीप का वर्णन करता हूं कि यह परिमण्डल नाम द्वीप चारों ओर देशरूप अथवा चक्र के समान नियत है, नदियों के जल से और बादलों के रूप पर्वतों से अथवा नानाप्रकार के रूपवाले पुर वा देशों से ढकाहुआ है और फूले फले वृक्ष, धन, धान्य आदि से संयुक्त खारी समुद्र से घिरा हुआ है, जैसे कि मनुष्य दर्पण में अपने मुख को देखता है उसी प्रकार सुदर्शन द्वीप ब्रह्माण्डस्वरूप चन्द्रमण्डलरूपी मन में दिखाई देता है, उस मनरूप चन्द्रमण्डल के एक सूक्ष्म वृत्तिनाम भाग में स्थूल, सूक्ष्म नाम दो रूप धारी संसाररूपी पीपल का वृक्ष है और मन के एकभाग में ईश्वर, जीव नाम दो रूप रखनेवाला परमात्मा ब्रह्म है अर्थात् स्थूल, सूक्ष्म संसार और जीव, ईश्वर यह चारों ब्रह्म के बीच में कहना केवल मन का संकल्प है वह सुदर्शनद्वीप सब औषधसमूहों का रखनेवाला सब ओर से समुद्र और देशों से घिरा है उस परमात्मा से जल आदि तत्त्व अर्थात् संपूर्ण संसार अन्य हैं और सब संसार की प्रलय होनेपर शेष रहनेवाला ईश्वर उस सब सृष्टि का सिद्धान्त कहाजाता है अर्थात् ऊपर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लिखीहुई प्रलय के क्रमानुसार सब ब्रह्माण्ड ईश्वर में लय होजाता है इसी कारण वह सब संसार का सिद्धान्त अर्थात् परिणामरूप है यह परमात्मा उस ईश्वर से भी अन्य शुद्ध ब्रह्म कहाजाता है इसको संक्षेप से सुनो तात्पर्य यह है कि यह जम्बूद्वीप ही स्थूल भूगोल है प्रथम इन्द्रादिक सब देवताओं ने इस पृथ्वीपर तप, यज्ञादिक करके अपने स्थूल शरीरों को त्याग सूक्ष्म शरीरों को पाकर अपने तपों के फल से स्वर्गादिक के राज्यों को पाया इसीप्रकार इस जम्बूद्वीप में शुभकर्म करनेवालों के कर्मफलों से शेष छः सूक्ष्मद्वीप ब्रह्माण्ड के बीच में प्रकट हुये इससे यह जम्बूद्वीप मनो क्षेत्रालय है इसमें वस्तुओं को उत्पन्न करके बाकी के छः द्वीपों और स्वर्गादिकों में उन वस्तुओं को भोगते हैं इस विषय का कुछ सिद्धान्त छठे अध्याय के ५५–५६ और बारहवें अध्याय के श्लोक इक्कीस में देखने में आवेगा ॥ १८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डवर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

छठवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि, हे बुद्धिमन्, संजय! तुमने अपनी बुद्धि के अनुसार जम्बूद्वीप का आशय वर्णन किया और तुम मुख्यता के भी जाननेवाले हो इससे इसको मूलसमेत ब्योरेवार वर्णन करो, शुद्धब्रह्म की जतलानेवाली माया प्रपञ्च से कल्पित व्यवहार में सच्चा जो सबल ब्रह्म उसके भीतर पृथ्वी के धरातलसी देख पड़ती है उसका प्रमाण मुझसे कहो तदनन्तर स्थूल भगवत्रूप वर्णन करने के पीछे संसाररूपी पीपल के वृक्ष का वर्णन करना योग्य है संजय बोले हे राजन्! अब जम्बूद्वीप का संपूर्ण ब्योरेवार वृत्तान्त सुनो कि पूर्व पश्चिम के समुद्र को स्पर्श करनेवाले यह छः खण्डों के पर्वत हैं जो दोनों ओर को पूर्व और पश्चिम समुद्र से मिलेहुये हैं, हिमवान्, हेमकूट, निषध, वैडूर्यनील, शशिप्रभ, श्वेत सर्वधातुमय, शृंगवान् पर्वत इन छहों पर्वतोंपर सिद्ध, चारण लोग निवास करते हैं, हे भरतवंशिन्! इन पर्वतों के मध्यस्थल का विस्तार हज़ारों योजन है और इनमें अनेक पवित्र २ देश हैं उन्हींका खण्ड नाम है उन खण्डों में नानाप्रकारके जातिवाले लोग निवास करते हैं यह भारतवर्ष है इससे दूसरा हेमवन्त नाम खण्ड है, और हेमकूट पर्वत से आगे हरिवर्ष नाम खण्ड है, नीलपर्वत के दक्षिण और निषध के उत्तर ओर से पूर्व और पश्चिम समुद्र को स्पर्श करनेवाला माल्यवान पर्वत है उस माल्यवान् से आगे गन्धमादन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पर्वत है और उन दोनों के मध्यमें सुनहरी और चारोंओर से मण्डलवर्त्ती मेरु पर्वतहै, वह तरुण सूर्य के समान प्रकाशमान और निर्धूम अग्नि के समान है और चौरासी हज़ार योजन ऊंचा है और नीचे की ओर भी उतना ही है वह ऊंचा, नीचा, तिरछा लोकों को व्याप्त करके वर्त्तमान है, हे समर्थ भरतवंशिन्, धृतराष्ट्र ! उस मेरुके अन्तर्गत यह चार द्वीप नियत हैं एक मुख्य जम्बूद्वीप और तीन उपद्वीप भद्राश्व, केतुमाल, कौरव नामसे पुण्यवान् पुरुषों के रचेहुये आश्रम हैं निश्चय करके जो सुमुख नाम गरुड़ पक्षी है उसने सुनहरे कौवों को देखकर विचार किया है जोकि मेरुपर्वत उत्तम और विस्तृत वा छोटे २ पक्षियों की भी मुख्यता को नहीं करनेवाला है इसकारण से मैं इसको त्याग करता हूं, प्रकाशों का स्वामी सूर्य सदैव उसकी परिक्रमा करता है और नक्षत्रोंसमेत चन्द्रमा और वायु भी उसकी परिक्रमा करते हैं, और वह दिव्य फल, फूल, मूलों से संयुक्त और सब स्वर्णमय स्थानों से व्याप्त है जिसपर देवताओं के समूह, गन्धर्व, असुर, राक्षस, अप्सराओं के समूहोंसमेत क्रीड़ा करते हैं, और उसपर ब्रह्मा, रुद्र और देवेन्द्र आदि देवता मिलकर बड़े २ यज्ञादिक करते हैं और तुम्बुरु नाम विश्वावसु, हाहा, हूहू नाम गन्धर्व उन देवताओं के सन्मुख जाके उनको अनेक स्तोत्रादिकों से प्रसन्न करते हैं, आपका कल्याण हो उस पर्वत पर महात्मा सप्तऋषि कश्यप प्रजापति सदैव पर्वपर्व में जाते हैं, और उसी पर्वत के मस्तक पर शुक्रजी भी राक्षसोंसमेत विहार करते हैं उन शुक्रजी के यह हेमरत्न हैं उन्हीं रत्नों केपहाड़ भी अनेक हैं और कुबेरजी उनके चौथे भाग को भोगते हैं उस धन के सोलहवें भाग को मनुष्यों के निमित्त देते हैं, उस मेरु के उत्तर भाग में कर्णिकार राजवृक्षों का वन है जोकि दिव्यरूप सब ओर से प्रफुल्लित मनोहर शिलाजालों से अत्यन्त ऊंचा है उस मेरु के ऊपर जीवों के उत्पन्नकर्त्ता कर्णिकार फूलों की चरणपर्यन्त माला को पहनेहुये सूर्य समान प्रकाशित तीन नेत्रधारी साक्षात् शिवजी महाराज अपनी उमादेवी समेत दिव्य जीवधारियों से व्याप्त रहते हैं, उग्रतपी सुन्दर व्रती सत्यवक्ता शुद्धलोग उनका दर्शन करसक्ते हैं वह महेश्वरजी कचाली पुरुषों से देखने के योग्य नहीं हैं हे राजन् ! उसी मेरुपर्वत के शिखर से दूध के समान धारा रखनेवाली विष्णुरूपा भयानक गम्भीर शब्दवाली वायु से टक्कर खातीहुई श्रीगङ्गाजी प्रकट हुई, वह पवित्र और पवित्र मनुष्यों से सेवित शुभ भागीरथी गङ्गा बड़ी शीघ्रता और

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तीव्रतासमेत चन्द्रमा के शुभ ह्रद में विलास करती हुई प्रकट हुई है उसीने वह समुद्रोपम पवित्र ह्रद अपनी तीव्रधारा से उत्पन्न किया है जो पहाड़ों से भी धारण नहीं की जाती थी ऐसी गङ्गा को शिवजी ने एक लाख वर्षपर्यन्त अपने शिर में धारण किया और मेरु के पश्चिमी कोण में जम्बूद्वीप के मध्य केतुमाल नाम खण्ड ही उसमें बड़ा देश है उसमें मनुष्यों की अवस्था सत्ययुगादि में दश हज़ार वर्ष की है वहां के मनुष्यों का सुवर्ण के समान वर्ण होता है और स्त्रियां अप्सराओं के समान होती हैं वहां के मनुष्य नीरोग, आनन्दी, सन्देहरहित स्वर्ण के समान वर्ण रखनेवाले, सुन्दर रूपवान् उत्पन्न होते हैं और गुह्य यक्षों के राजा कुबेरजी राक्षसोंसमेत अप्सराओं के समूहों से संयुक्त गन्धमादन के झुके हुए शिखरोंपर आनन्द करते हैं, गन्धमादन के दूसरेभाग के समीप अपरगण्डिका नाम छोटे२ पहाड़ हैं वहां के जीव ग्यारह हज़ार वर्ष की उमर के होते हैं, वहांके मनुष्य तेजस्वी और महाबली हैं और स्त्रियां उत्पल नाम कमल के समान सुन्दर अत्यन्त दर्शनीय हैं, नील पर्वत के आगे श्वेत पर्वत है और श्वेत से आगे हैरण्यक नाम खण्ड है और शृङ्गवान् पर्वत के आगे अनेक देशों से व्याप्त ऐरावत खण्ड है और दक्षिणोत्तर में भरतखण्ड और ऐरावतखण्ड यह दोनों धनुषसमान अर्थात् त्रिकोणरूप हैं और बीच में इलावर्त्तादि पांच खण्ड वर्त्तमान हैं, उनसे आगे के खण्ड गुणों में अधिक हैं और अवस्था वा नीरोगता भी एकसे दूसरे में उत्तरोत्तर है उन खण्डों में सब जीवधारी धर्म, काम, अर्थ से संयुक्त हैं हे राजन्! इसप्रकार से यह पृथ्वी पर्वतों से व्याप्त है, और बड़ा पर्वत हेमकूट नाम कैलास है जिसपर कुबेरजी गुह्यक, यक्षोंसमेत विलास करते हैं, कैलास पर्वत के उत्तर मैनाक पर्वत के सन्मुख दिव्य मुनिलोगों से भराहुआ हिरण्यशृङ्ग नाम बड़ा पर्वत है, उसके समीप स्वर्णरजयुक्त मनोहर और दिव्य बिन्दुसर नाम तड़ाग है जिसपर राजा भगीरथ ने भागीरथी गङ्गा को देखकर बहुत वर्षोंतक निवास किया था वहां मणिजटित यज्ञस्तम्भ और सुवर्णजटित वृक्ष ही यज्ञ की सीमा हैं वहीं बड़े यशस्वी इन्द्र ने भी यज्ञ को करके महासिद्धि को पाया, वहां ही सब संसार के स्वामी सबसे प्रथम महातेजस्वी शिवजी चारोंओर से पवित्रात्मापुरुषों से सेवा कियेजाते हैं और नरनारायण, ब्रह्मा, मनु, पांचवें स्थाणु नाम रुद्रजी भी वर्त्तमान हैं वहां ही प्रथम पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग के मार्ग में बहनेवाली दिव्यनदी श्रीगङ्गाजी नियत होकर ब्रह्मलोक से चलती

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हुई सातप्रकार से वस्वौक, सारा, नलिनी, पावनी, सरस्वती, जम्बूनदी, शीता-नदी, सातवीं गङ्गासिन्धु नाम ध्यान से अगम्य और दिव्यरूप से बहती है यह प्रभु ईश्वर की रचना है जहां २ हज़ार यज्ञों के चक्र में इन्द्र उपासना करते हैं वहां २ सरस्वती गुप्त और प्रकट होती हैं, यह सातों गङ्गा दिव्यरूपों से तीनों लोकों में वर्त्तमान हैं, हिमाचल में राक्षस, हेमकूट में गुह्यक, निषध में सर्प, गोकर्ण में तपोधन ऋषिलोग हैं, श्वेतपर्वत सब देवता और असुरों का कहा जाता है निषध में गंधर्व और नील पर्वत पर ब्रह्मऋषि लोग सदैव निवास करते हैं हे महाराज! शृङ्गवान् नाम पर्वत देवताओं का विहारस्थान है और यह सातोंखण्ड विभाग किये गये हैं उन सबमें स्थावर और जंगम जीव रहते हैं उनका देवसम्बन्धी और मनुष्य सम्बन्धी धन बहुत प्रकार का देखने में आता है हे राजन्! तुम जिस दिव्य विराट् स्वरूप को मुझसे पूछते हो उसकी संख्या का प्रमाण करना मुझसे असम्भव है परन्तु उसका सुनना ही श्रद्धा के योग्य है अर्थात् श्रद्धावान् पुरुष ही अदृष्ट पदार्थों के मिलने के लिये कर्मों को करता है अश्रद्धावान् नहीं करसक्ता है, विराट्पुरुष के दोनों ओर दो खण्ड कहे हैं दाहिने में भरतखण्ड अर्थात् कर्मभूमि और बायें में ऐरावतखण्ड अर्थात् योग भूमि और दोनों कानों में नागद्वीप अर्थात् सत्यलोक और काश्यपद्वीप अर्थात् यज्ञ में अमृत पान करनेवाले कर्मयोगियों का निवासस्थान स्वर्गलोक हैं परमेश्वर के स्थूल और सूक्ष्म दो दिव्यरूप हैं उनमें से यह सब कहा हुआ स्थूलरूप है और आगे के श्लोक में ईश्वर के वासनारूप सूक्ष्मरूप को कहते हैं, हे राजन्! मनरूप उत्तम बाग़ शोभा और लक्ष्मी से भरा हुआ रक्तवर्ण अन्न वस्त्रादि जिसके फल, फूल और पत्ते हैं उसमें नानाप्रकार के महलयुक्त यह जम्बूद्वीप अर्थात् परमेश्वर का स्थूलरूप दूसरा वासनारूप देख पड़ताहै ॥५६॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूद्वीपरूपस्थूलसूक्ष्मवर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सातवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि, हे बुद्धिमन्, संजय! प्रथम मेरु पर्वत के उत्तरीयभाग के मालवन्त पहाड़ के मूलसमेत वृत्तान्तों को वर्णन करो, संजय बोले कि, हे राजन्! नीलपर्वत के दक्षिण और मेरु के उत्तर भाग में उत्तर कुरुदेश हैं जोकि पवित्र और सिद्धियों से शोभित हैं वहांपर वृक्ष मधुर फल फूलों से सदैव शोभित रहते हैं और पुष्प अत्यन्त सुगन्धित और फल महारसीले

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होते हैं, हे राजन्! वहां कोई कोई वृक्ष तो सब अभिलाषाओं के पूर्ण करनेवाले हैं और अन्य बहुत से वृक्ष अमृत समान स्वादुयुक्त छः रस से युक्त दूधों के देनेवाले हैं और फलों में वस्त्राभरणों को उत्पन्न करते हैं वह दिव्य वृक्ष केवल महात्मा ऋषियों को ही देख पड़ते हैं संसारी लोगों को नहीं दिखाई देते हे राजन्! सब पृथ्वी मणियों की बनीहुई और दिव्य सुवर्ण की बालू रखनेवाली और सब ऋतुओं में सुखसे स्पर्श होनेवाली कीच आदि से रहित है यद्यपि पृथ्वी ऐसी भी है परन्तु प्रारब्धहीनों को वैसी देखने में नहीं आती, वहां पर देवलोक से पतितलोग उत्पन्न होते हैं वह सब विष्णुभक्तों से संग करनेवाले और अत्यन्त स्वरूपवान् होते हैं और अप्सराओं के समान स्त्रियां वहां जोड़ों को उत्पन्न करती हैं वह जोड़े उन दूध देनेवाले वृक्षों के अमृतरूपी दूधों को पीते हैं समय पर जोड़े उत्पन्न होते हैं और सदैव बढ़ते हैं और रूपगुणसंयुक्त सदैव एक सी पोशाकवान् होते हैं हे समर्थ! वह जोड़े चक्रवाकों के समान एक से रूपवाले भी होते हैं और नीरोगतापूर्वक सदैव प्रसन्नमन रहते हैं उनकी अवस्था ग्यारह हज़ार वर्ष की होती है और समान अवस्था होने के कारण कोई किसी को नहीं मारता है अर्थात् एकही समय में देहों को त्यागते हैं (यह बात उसी समय में थी अब नहीं है) यहां बड़े पराक्रमी और तीक्ष्ण दंष्ट्रावाले भारुण्ड नामपक्षी उन पुरुषों को पकड़कर गुफाओं में डालदेते हैं, हे राजन्! यह मैंने उत्तर कौरवदेश का संक्षेप से वर्णन किया अब उस मेरु के पूर्वीयभाग के वृत्तान्त को यथावस्थित कहता हूं हे राजन्! उस भद्राश्वखण्ड का मूर्द्धाभिषेक नाम महाराज और भद्रशाल नाम वन और कालाम्र नाम वृक्ष है वह कालाम्र नाम शुभ वृक्ष फूल फलयुक्त सिद्ध चारणों से सेवित एक योजन ऊंचा है, जिस स्थानपर श्वेत वर्ण पुरुष तेजसे भरे हुये महाबली और स्त्रियां कुमुद कमल के समान सुन्दर स्वरूपवान् चन्द्रमा के समान प्रभाव और पूर्णचन्द्रमा सा प्रकाशवान् मुखवाली और चन्द्रमा के ही समान शीतल देह नृत्य गान में प्रवीण वर्त्तमान हैं और वहां अवस्था दश हज़ार वर्ष की होती है वे कालाम्र का रस पीने से सदैव तरुणरूप ही रहते हैं, नीलपर्वत के दक्षिण और निषधपर्वत के उत्तर सुदर्शन नाम बड़ा जम्बूवृक्ष सनातन है वह सब अभीष्टों का दाता पवित्र सिद्ध चारणों से सेवित है अर्थात् मनुष्य उसको नहीं पासक्ते इसलिये कि वह भी दिव्य है इसीके नाम से यह सनातन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

से जम्बूद्वीप प्रसिद्ध हुआ है हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र ! उस वृक्षराज जम्बू वृक्ष की ऊँचाई आकाश की छूनेवाली ग्यारह सौ योजन है उस वृक्ष के पकेहुये फटनेवाले फलों का विस्तार ढाई हज़ार अरत्नी है अर्थात् कोई संख्या विशेष है वह फल जब पृथ्वीपर गिरते हैं तो बड़ेभारी शब्द को करते हैं और जहां जहां गिरते हैं वहां वहां चांदी के समान श्वेत रस को छोड़ते हैं हे राजन् ! उसी जम्बूफल के रस की नदी होकर मेरु को प्रोक्षण करके उत्तर कुरु-देशों को आती है हे राजन् वहां पिपासा लगने के कारण उन्हों के चित्त की शान्ति नहीं है परन्तु उस फलके रस पीने से उनको जरावस्था दुःखदायी नहीं होती है वहां ही जम्बूनद नाम कनक देवताओं का भूषण वीरवधूजव के समान रक्तवर्ण उत्पन्न होता है उसमें बड़ा तेज होता है वहां मनुष्य तरुण और सूर्यवर्ण उत्पन्न होते हैं इसी प्रकार माल्यवन्त के शिखर पर संवर्त्तक नाम अग्नि सदैव दिखाई देती है हे भरतर्षभ ! वह संवर्तक नाम कालाग्नि है और वैसे ही माल्यवान् के शिखरपर चारों ओर को छोटे २ पर्वत हैं और माल्यवान् पर्वत ग्यारहहज़ार योजन है वहां ब्रह्मलोक से गिरेहुये चांदी के समान श्वेत-वर्ण सबके सब साधु मनुष्य उत्पन्न होते हैं वह मनुष्य कठिन तपस्याओं को करतेहुये ऊर्ध्वरेता अर्थात् ब्रह्मचारी होते हैं और जीवों की रक्षा के निमित्त सूर्य में प्रवेश करते हैं वह संख्या में साठ हज़ार बालखिल्यऋषि सूर्य को घेरेहुये अरुण नाम सूर्य के सारथी के आगे २ चलते हैं वह सब छयासठ हज़ार वर्षतक सूर्य की ऊष्मा से तपेहुये होकर चन्द्रमण्डल में प्रवेश करते हैं अर्थात् सूर्यलोक में विराट् पुरुष की उपासना करके मन के स्वामी चन्द्रमा में प्रवेश करते हैं और सूत्रात्मभाव को पाते हैं ॥ ३२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

आठवां अध्याय ।

धृतराष्ट्र बोले, कि हे संजय ! तुमने खण्डों और पर्वतों का वर्णन किया अब पहाड़ों में जो वास करते हैं उनका वर्णन करो, सञ्जय बोले हे राजन् ! श्वेतपर्वत के दक्षिण और निषधके उत्तर रमणकखण्ड एक पृथ्वीका भागहै वहां ऐसे मनुष्य उत्पन्न होते हैं जोकि विष्णुभक्तों के साथ स्नेहरखनेवाले अत्यन्त स्वरूपवान् हैं उनमें कोई परस्पर में शत्रु नहीं होता है, नीलपर्वत के दक्षिण और निषध

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

के उत्तर भाग में हिरण्मय नाम खण्ड है वहां हिरण्वती नाम नदी है वहां ही पक्षियों में श्रेष्ठ गरुड़जी हैं उस स्थान के धनवान् स्वरूपवान् मनुष्य यक्षों के सेवक महाबली और प्रसन्नचित्त होते हैं और सदैव प्रसन्नतापूर्वक रहकर साढ़े ग्यारह हज़ार वर्षपर्यन्त अवस्था को भोगते हैं और कोई उनमें से साढ़े बारह हज़ार वर्षतक भी जीते हैं उस पर्वत के तीन बड़े विचित्र शिखर हैं उनमें एक तो मणियों का शिखर है दूसरा अत्यन्त सुन्दर सुवर्ण का अपूर्व शिखर है और तीसरा शिखर सब रत्नों से मिश्रित अनेक स्थानों से शोभित है वहां स्वयं प्रकाशवान् शाण्डिली देवी निवास करती है, हे राजन्! शिखर के उत्तर समुद्र के समीप ऐरावत नाम खण्ड है इसी कारण यह शृङ्गवान्पर्वत से घिरा हुआ उत्तम खण्ड कहाता है उसमें सूर्य किसी को संतप्त नहीं करते हैं मनुष्य वृद्ध नहीं होते और नक्षत्रों समेत चन्द्रमा ज्योतिरूप के समान घिरा रहता है वहां के मनुष्य कमल के समान कोमल वा सुन्दर रङ्गनेत्र और सुगन्धयुक्त उत्पन्न होते हैं हे राजन्! वह सब देवलोक से गिरेहुये प्रस्वेद से रहित अर्थात् देवताओं के समान इष्ट गन्धधारी निराहारी जितेन्द्रिय और रजोगुण से रहित हैं और उनकी अवस्था तेरहहज़ार वर्षतक की होती है इसी प्रकार दूध के समुद्र की उत्तरदिशा में अनेक मायाओं के स्वामी ज्योतिरूप श्रीहरिनारायणजी सुवर्ण के शकटपर निवास करते हैं वह सवारी आठ पहियों की है जिसमें एक पहिया तो पञ्चकर्मेन्द्रिय समूह दूसरा पञ्चज्ञानेन्द्रिय समूह तीसरा मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार का समूह चौथा पञ्चप्राण पांचवां पांचों सूक्ष्म तत्त्व छठा अविद्या सातवां काम आठवां कर्मधारी शुद्ध ब्रह्मयुक्त मन के समान शीघ्रगामी अग्नि वर्ण तेजस्वी जम्बूनद नाम सुवर्ण से शोभायमान है, हे भरतर्षभ! वह सब संसारमात्र का स्वामी व्यापक सबको अपने में लय करनेवाला और प्रकट करनेवाला जीवरूप से कर्त्ता और ईश्वररूप से कर्मकरनेवाला है हे राजन्! वही पञ्चतत्त्व वही सबका यज्ञ और मुख उसका अग्नि है, वैशंपायन बोले कि हे जनमेजय! यह सब बातें सञ्जय से सुनकर बड़े साहसी राजा धृतराष्ट्र ने अपने पुत्रों की चिन्ता करी और फिर भी बहुत सा विचार करके बोला कि, हे सञ्जय! निस्सन्देह काल जगत् को भक्षण करता है, और फिर सबको उत्पन्न करता है यहां कोई भी विनाशरहित नहीं है नरनारायण अर्थात् जीव ईश्वर भी दोनों रूपों से अविनाशी नहीं हैं अर्थात् दोनों एकरूप होकर अकेला ही सर्वज्ञ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और सर्व जीवों का मित्र है उसी समर्थ पुरुष को देवता और मनुष्यों ने माया-धीश और सर्वव्यापी वर्णन किया है ॥ २१ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वण्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

नववां अध्याय ।

धृतराष्ट्र बोले कि, यह भरतखण्ड जिसमें यह सब सेना भूली हुई है उसमें यह मेरा पुत्र दुर्योधन अत्यन्त लोभी होरहा है और जिसमें पाण्डव लोभी हैं और मेरा भी मन लगरहा है उसका मुख्य वृत्तान्त मुझसे कहो मैंने तुमको बुद्धिमान् मानाहै, संजय बोले कि हे राजन्! मेरेवचन को सुनो उसमें पाण्डव लोभी नहीं हैं इसमें केवल दुर्योधन और सौबल का पुत्र शकुनी ही लोभी हैं, नानाप्रकार के देशों के स्वामी अन्य क्षत्रियलोग जो भरतखण्ड में लोभी होकर परस्पर में ईर्षा करते हैं इस स्थानपर मैं भरतखण्ड का वर्णन तुमसे करता हूं कि यह भरतखण्ड इन्द्र देवता और सूर्य के पुत्र वैवस्वत मनु का अभीष्ट है हे राजन्, धृतराष्ट्र! इनके विशेष यह भरतखण्ड वैन्य पृथु तथा महात्मा इक्ष्वाकु, ययाति, अम्बरीष, औशीनर के पुत्र शिबि, ऋषभ, ऐल, नृग, कुशिक, महात्मा गाधि, सोमक, दिलीप आदि महापराक्रमी बहुत से क्षत्रियों का प्यारा है, हे शत्रुहन्ता ! यह भरत खण्ड कर्म भूमि होने के कारण सबका ही प्यारा है और महातेजस्वी खण्ड है इसको मैं कहता हूं महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिवान्, पारियात्र, ऋक्षवान् और विन्ध्याचल यह सातों पर्वत बड़े कुलवान् और प्रतिष्ठित हैं और इन्हीं सातों के समीप हज़ारों पर्वत उत्तम पदार्थों के रखनेवाले विस्तृत और पर्वत के निवासियों के निवास-स्थानरूप गुप्त हैं, इनसे अन्य छोटे २ पर्वत छोटी २ वस्तुओं के रक्षा-स्थानरूप सबके जाने हुये हैं हे कौरव्य, धृतराष्ट्र! जो आर्य मनुष्य अर्थात् वर्णाश्रमी धर्मवाले हैं वह म्लेच्छ अर्थात् वेद से विरुद्ध मतवाले हैं वह मनुष्य उन में निवास करते हैं और गङ्गा सिन्धु सरस्वती इत्यादि बड़ी २ नदियों के जल को पीते हैं और गोदावरी, नर्मदा और बाहुदा नाम महानदी, शतद्रु, चन्द्रभागा और महानदी, यमुना, दृषद्वती, विपाशा, विपापा, स्थूलबालुका, वेत्रवती, कृष्णवेणी जो नीचे को चलती है, इरावती, वितस्ता, पयोष्णी, देविका, वेद-स्मृता, वेदवती, त्रिदिवा, इक्षुला, कृमी, करीषिणी, चित्रवाहा नीचे चलने-वाली चित्रसेना, गोमती, धूतपापा, महानदी, गण्डकी, कौशिकी, त्रिदिवा, कृत्या, निचिता, लोहतारणी, रहस्या, शतकुम्भा, सरयू, चर्मण्वती, वेत्रवती

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हस्तिसोमा, दिशनदी, शरावती, पौषणी, वेणा, भीमरथी, कावेरी, चुलुका, वाणी, शतवली, नीवारा, महिता, सुप्रयोगा, अञ्जना, पवित्रा, कुण्डली, सिन्धु, राजनी, पुरमालिनी, पूर्वाभिरामा, अमोघवती, भीमा, पालाशिनी, पापहरा, महेन्द्रा, पाटलावती, करीषिणी, असिक्री, कुशचीरा, महानदी, मकरी, प्रवरा, मेना, हेमा, घृतवती, पुरावती, अनुष्णा, शैव्या, कापी, सदानीरा, अधृष्या, महानदी, कुशधारा, सदाकान्ता, शिवा, वीरवती, वस्त्रा, सुवस्त्रा, गौरी, कम्पना, हिरण्वती, वरा, वीरकरा, महानदी, पञ्चमी, रथचित्रा, ज्योतिरथा, विश्वामित्रा, कपिञ्जला, उपेन्द्रा, बहुला, कुवीरा, अम्बुवाहिनी, विनदी, पिञ्जला, वेणा, महानदी, तुङ्गवेणा, विदिशा, कृष्ण-वेणा, ताम्रा, कपिला, खलु, सुवामा, वेदाश्वा, हरिश्रवा, महोपमा, शीघ्रा, पिच्छिला, भारद्वाजी, निम्नगा, निम्नगाकौशिकी, शोणा, बाहुदा, चन्द्रमा, दुर्गा, मन्त्रशिला, ब्रह्मबोध्या, बृहद्द्युती, यवक्षा, अर्थरोही, जाम्बूनदी, सुनसा, तमसा, दासी, वसा, वरुणा, असमी, नीला, धृतिमती, महानदी, पर्णाशा, मानवी, वृषभा, ब्रह्ममेध्या, बृहद्वती आदि सब नदियों का जल पान करते हैं और हे राजन्! इनके सिवाय और भी बहुतप्रकार की महानदी हैं जैसे कि सदानीरा, आया, कृष्णा, मन्दगा, मन्दवाहिनी, ब्राह्मणी, महागौरी, दुर्गा, चित्रोपला, चित्ररथा, मञ्जुला, वाहिनी, मन्दाकिनी, वैतरणी, महानदी, कोशा, मुक्तिमती, अनिगा, पुष्पवेणी, उत्पलावती, लोहित्या, करतोया, वृषकानाम नदी, कुमारी, ऋषिकुल्या, मारिषा, सरस्वती, सुपुण्या, मन्दाकिनी, सर्वा, गङ्गा यह सम्पूर्ण नदी विश्व की माता और महाफल की देनेवाली हैं इसीप्रकार हज़ारों नदी और भी गुप्त हैं हे राजन्! यह नदियां मैंने स्मरण के अनुसार वर्णन कीं अब मैं देशों का वर्णन करता हूं वहां यह कुरुदेश, पाञ्चालदेश, शाल्व, माद्रेय, जाङ्गल, शूरसेनदेश, पुलिन्द, बोधा, माला, मत्स्यदेश, कुशादिदेश, सौशल्य, कुन्तीदेश, कान्ति, कोशलदेश, चेदि, मत्स्य, करूष, भोज, सिन्धु, पुलिन्दक, उत्तम दशार्णदेश, मेकल, उत्कल, पाञ्चाल, कोशल, नैकपृष्ठ, धुरन्धर, बोधा, मद्र, कलिन्द, काशय, परकाशय, जठरा, कुकुरा, दशार्णदेश, युक्त, कुन्त्य, अवन्त्य, अपरकुन्त्य, गोमन्त, मन्दक, खण्ड, विदर्भ, रूपवाहिक, अश्वक, उत्तर, गोपराष्ट्र, करीत, अधिराज्य, कुशाद्य, मल्लराष्ट्र, केवल, वारवास्य, अपवाह, वक्रवक्रात, शक,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विदेह, मगध, स्वक्ष्य, मलय, विजय, अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, यकृल्लोम, मल्ल, सुदेष्ण, प्रह्लाद, माहिक, शशिक, बाह्लीक, वाटधान, आभीर, कालतोयक, अपरान्त, परान्त, पाञ्चाल, चर्ममण्डल, अटवी, शिखर, मेरुभूत, मारिष, अपावृत, अनुपावृत, सौराष्ट्र, केकय, कुट्ट, परान्त, माहेय, कुक्ष्य, सामुद्रनिष्कुट, अन्ध और हे राजन्! इनके विशेष पर्वतों में अनेक देश और पहाड़ों के बाहर अङ्ग, मलज, मगध, मानवर्जक, मह्युत्तर, प्राविषेय, भार्गव, पौण्ड्र, लार्ग, किरात, सुदेष्ट, यामुन, शक, निषाद, निषध, आनर्त्त, नैर्ऋत, दुर्गाल, प्रतिमत्स्य, कुन्तल, कुशल, तीरग्रह, शूरसेन, ईजक, कन्यकागण, तिलभार, समीर, मधुमत्ता, सुकन्दक, काश्मीर, सिन्धु, सौवीर, गान्धार, दर्शक, अभिसार, उलूत, शैवल, बाह्लीक, दर्वी, नवांदर्वी, वातज, मर्थोरग, वाहबाद्य, कौरव्य, सुदामान, समुल्लिक, बध्ना, करीषक, कुलिन्द, उपत्यक, वानायु, दशार्ण, रूम, कुशबिन्द, कच्छ, गोपालकक्ष, जाङ्गल, कुरुवर्णक, किरात, वर्वर, सिद्धा, वैदेह, ताम्रलिप्तक, औण्ड्र, पौण्ड्र, सैसिकत, पार्वतीय, मारिष इसके विशेष दक्षिण में द्रविण, केरल, प्राच्य, भूषिक, वनवासिक, कर्णाटक, माहिषक, अविकल्य, मूषक, जिल्लिक, कुन्तल, सौहृद, नभकानन, कौकुट्टक, चोल, कौङ्कण, मालवानक, समङ्ग, कारक, कुरर, अङ्गार, मारिष, ध्वजन्युत्सव, संकेत, त्रिगर्त्त, शाल्वसेन, बक, कोकबक, प्रोष्ठ, समवेगवश, विन्ध्य, चुलिक, कल्कलसहित पुलिन्द, मालव, मल्लव, परवल्लभ, कुलिन्द, कालद, कुण्डल, करट, मूषक, तनवाल, सनीय, घटसृञ्जय, अलिंदाप, शिवाट, तनय, सुनय, ऋषिक, विदर्भ, काक, तङ्गण, परतङ्गण हे भरतर्षभ! इसीप्रकार अन्य उत्तर देशवासी कठोरचित्त और म्लेच्छनाम से प्रसिद्ध हैं, यवन, अर्थात् मुसल्मान आदि की जातें चीनी, काम्बोज, सकृद्ग्राह, कुलत्थ, आहूण, पारसियों समेत हूण यह सब म्लेच्छजाति के लोग भयकारी हैं रमण, चीन, दशमालिक जो कि क्षत्रिययोनि से उत्पन्न वैश्य और शूद्रों के कुल हैं शूद्र, आभीर, दरद, पशुओं समेत काश्मीर, खाशीर अर्थात् (खुरासानी) अन्तचार, पह्लव (जिनकी भाषा पहलवी प्रसिद्ध है) गिरिगह्वर, आत्रेय, भरद्वाज, स्तनपोषिक, प्रोषक, कलिङ्ग, किरातों की जातें, तोमर, हंसमार्ग, करभञ्जक यह और अन्य पूर्वीय और उत्तरीय देश हैं, हे समर्थ, धृतराष्ट्र! यह मैंने सब देश उद्देशमात्र से कहे मनोरथों के पूर्ण करनेवाले कामधेनुरूपी पृथ्वी श्रेष्ठ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पोषित गुण और बलके समान त्रिवर्ग अर्थात् (धर्म अर्थ काम) हिरण्यगर्भ-रूपी फलके भी देनेवाले धर्म और अर्थ में कुशलबुद्धि शूरवीर राजालोग उस पृथ्वी की इच्छापूर्वक लालसा करते हैं वह शीघ्रता करनेवाले धनके लोभी युद्धभूमि में अपने प्राणों को त्याग करते हैं, यह पृथ्वी इच्छानुसार देवता और मनुष्यों की देहों की रक्षा का स्थान है हे भरतवंशिन्! पृथ्वी के भोगने की इच्छा रखनेवाले क्षत्रियलोग परस्पर में एक एक को मारते हैं जैसे कि कुत्ते मांस के टुकड़े २ करते हैं इसी प्रकार से अबतक भी किसी की तृष्णा न्यून नहीं होती है हे राजन्! इसी कारण से कौरव,पाण्डव भी साम, दाम, भेद,दण्ड इन चारों नीतियों के द्वारा पृथ्वी के विजय करने में अनेक उद्योग करते ह, जिसको अच्छे प्रकार से पूरा छिद्र दर्शन है उसीकी पृथ्वी पिता भाई पुत्री आकाश और स्वर्गरूप भी होती है॥ ७४॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि नदीदेशादिनाम नवमोऽध्यायः॥ ९॥

दशवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि हे सूतपुत्र, सञ्जय! इस भरतखण्ड और हेमवतखण्ड की अवस्थाओं की संख्या बल शुभाशुभ भूत, भविष्य, वर्तमान को भी ब्योरेवार कहिये इसी प्रकार हरिखण्ड को भी कहिये सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ, कौरवों की वृद्धि चाहनेवाले, धृतराष्ट्र! भरतखण्ड में चार युग हैं सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग प्रथम सतयुग।फिर त्रेता फिर द्वापर और द्वापर के अन्त से कलियुग जारी होता है हे कौरवोत्तम, राजेन्द्र! सतयुग में चारहज़ार वर्ष की अवस्था होती है त्रेता में तीन हज़ार की द्वापर में दोहज़ार वर्ष की और हे राजन्! कलियुग में अवस्था की संख्या नहीं है इस कलियुग में उत्पन्न हुये बालक और गर्भ में वर्त्तमान बालक भी मरते हैं और सतयुग में बड़े बलिष्ठ पराक्रमी और बुद्धि आदि गुणयुक्त सैकड़ों व हज़ारों मनुष्य उत्पन्न होकर सन्तानों को उत्पन्न करते थे और धनी, प्रियदर्शन, तपोधन, मुनि उत्पन्न होकर सन्ततियों के उत्पन्नकर्त्ता हुये बड़े उत्साह मन धार्मिक सत्यवादी प्रियदर्शन उत्तम वर्ण महापराक्रमी धनुषधारी वर के योग्य शूरों में श्रेष्ठ क्षत्रिय उत्पन्न होते हैं और त्रेता में सब क्षत्रिय चक्रवर्त्ती होते हैं और बड़े अवस्थावाले शूरवीर युद्ध में धनुषधारियों में उत्तम राजाओं के आज्ञावर्त्ती उत्पन्न होते हैं द्वापर युग में सब वर्ण सदैव उत्साहचित्त पराक्रमी परस्पर में विजयाभिलाषी उत्पन्न होते हैं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और कलियुग में थोड़े पराक्रमी, क्रोधी, लालची, मिथ्यावादी मनुष्य उत्पन्न होते हैं और कलियुग में जीवधारियों में अहंकार, क्रोध, ईर्षा, छल, दूसरे की निन्दा और विषयों में प्रीति करनेवाले लालची उत्पन्न होते हैं और हे राजन्! इस द्वापर में गौओं की न्यूनता वर्त्तमान है परन्तु हेमवतखण्ड और हरिखण्ड गौओं के विषयों में सर्वोत्तम है ॥ १६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ।

धृतराष्ट्र बोले कि, हे संजय! तुमने जम्बूखण्ड अर्थात् जम्बूद्वीप का वर्णन यथार्थ कहा अब इसके केन्द्र और परिधि की संख्या को मूलसमेत वर्णन करो और समुद्र की संख्या को भी कहो और सब दृष्टिगोचर शाकद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलिद्वीप, क्रौंचद्वीप इन सबको राहु, चन्द्रमा और सूर्यसमेत वर्णन करो, संजय बोले कि हे राजन्! बहुत से ऐसे २ द्वीप हैं जिनसे यह युग बड़ा विस्तारयुक्त है अब मैं सूर्य, चन्द्रमा और राहुसमेत सातों द्वीपों का वर्णन करता हूं कि जम्बूद्वीप का केन्द्र और वृत्तफल अठारहहज़ार छःसौ योजन हैं इसका आशय यह है कि अठारहहज़ार छःसौ योजन में से पांचहज़ार नौसौ अठारह योजन व्यास और बारहहज़ार छःसौ बयासी परिधि है और वनपर्व में हनुमान्‌जी के कहे हुये के अनुसार पृथ्वी वन पर्वत समुद्रों समेत की संख्या युगों के अनुसार होती है तथा शास्त्र के अनुसार हरएक युग में प्रत्येक वस्तु का चतुर्थांश क्रमसे न्यून होता जाता है अर्थात् सतयुग में पृथ्वीमण्डल की संख्या ऊपर लिखे हुये के अनुसार थी त्रेता में नौहज़ार पांचसौ ग्यारह द्वितीयांश ३ याने डेढ़ योजन रहा और द्वापर में छःहज़ार तीनसौ इकतालीस रहा और कलियुग में तीनहज़ार एकसौसत्तर द्वितीयांश एक याने आध योजन रहा जो कि एक योजन चारकोस का होता है इस कारण चारसे गुणा करने से बारहहज़ार छःसौबयासी कोस हुआ इसके मील पच्चीसहज़ार तीनसौचौंसठ हुये और इंगलिस्तान के वासी भी अपने गणित की माप से इस पृथ्वी को पच्चीसहज़ार वर्गात्मक मील बताते हैं और खारी समुद्र का विस्तार इससे दूना कहा है वह समुद्र नानादेशों से युक्त मणि मूँगे आदि से शोभित नानाप्रकार की धातुओं से विचित्र पर्वतों से शोभायमान सिद्धचारणों से सेवित चारों ओर से मंडलाकार है हे राजन्! अब मैं शाकद्वीप को यथार्थ वर्णन करता हूं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हे कौरवनन्दन ! तुम भी न्यायपूर्वक मुझसे सुनो वह द्वीप जम्बूद्वीप के विस्तार से दूना है और समुद्र भी विभाग के अनुसार क्षीरोदनामी है हे राजन् ! जिस समुद्र से वह द्वीप चारों ओर को घिरा हुआ है उसमें पवित्र देश हैं वहां मनुष्य नहीं मरते हैं तौ वहां दुर्भिक्ष कैसे होसक्ता है ? वह क्षमावान् तेजधारी हैं यह तो शाकद्वीप का संक्षेप ठीक २ वर्णन किया अब दूसरी बात क्या सुनना चाहते हो ? धृतराष्ट्र बोले कि हे महाज्ञानिन् ! तुमने इस शाकद्वीप का संक्षेप तो ठीक कहा परन्तु उसको ब्योरेवार मूलसमेत वर्णन करो संजय बोले कि हे महाराज ! इसीप्रकार के सात पर्वत इसमें मणियों से भूषित वर्त्तमान हैं और नदियाँ भी अनेक रत्नों की आकर हैं इनके नाम मैं कहताहूं, वहां सब लोग पवित्र और गुणवान् हैं देवता गन्धर्व और ऋषिलोगों से संयुक्त प्रथम पर्वत मेरु कहा जाता है और पूर्व पश्चिम का स्पर्श करनेवाला दूसरा मलय पर्वत है उस पर्वत से सब बादल प्रकट होकर कर्म में प्रवृत्त होते हैं हे कौरव्य ! उससे पूर्व की ओर एक जलधारा नाम बड़ा पर्वत है जहांपर इन्द्र देवता उत्तम जल को ग्रहण करता है उसी जल से वर्षाऋतु में पृथ्वीपर वर्षा होती है और उससे भी बड़ा पर्वत रैवतक है वहां स्वर्ग में निवास करनेवाला रेवती नक्षत्र सदैव वर्त्तमान रहता है यह ब्रह्माजी की उत्पन्न की हुई रीति है और उत्तर ओर को श्याम नाम बड़ा पर्वत है वह नवीन बादल के समान प्रकाशवान् ऊंचा शोभायमान उज्ज्वलस्वरूप है हे राजन् ! उसीसे मनुष्यों ने श्याम वर्ण को पाया है धृतराष्ट्र बोले हे संजय ! अब तुमने यह मुझसे बड़ा सन्देहयुक्त वचन कहा हे सूतपुत्र ! संसार ने कैसे श्यामवर्ण को पाया, संजय बोले कि हे राजन् ! सब द्वीपों में गोरा नररूप जीव और काला नारायणरूप ईश्वर पक्षी है उन दोनों वर्णों में जिस हेतु से नारायण की कलारूप श्यामवर्ण प्रकट हुआ इसीसे उसका नाम श्यामगिरि विख्यात हुआ और उसमें निवास करने व शाक भोजन करने से मनुष्यों ने भी श्यामवर्ण को पाया हे कौरवेन्द्र ! उससे आगे बढ़कर महोदय दुर्गशैल है केशरी और केशरयुक्त पर्वत है उसीसे वायु उत्पन्न होती है उन दोनों के विस्तार की संख्या क्रम से एक से दूसरे की दूनी है हे राजन् ! इनके मध्यवर्ती ज्ञानियों ने यह सात खण्ड वर्णन किये हैं जिनके महामेरु, महाकाश, जलद, कुमुद, उत्तर, जलधार, सुकुमार यह सात नाम वर्णन किये हैं, रैवत पहाड़ का खण्ड कौमार और श्याम-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गिरि का खण्ड मणिकाञ्चन है केदार पर्वत का खण्ड मोदाकी है उससे परे महापुमान् है जो छोटे बड़ों को घेरे हुए है उस द्वीप में एक शाक नाम बड़ा वृक्ष जम्बूद्वीप के कारण प्रसिद्ध है अर्थात् जम्बूद्वीप के मनुष्य स्थूल शरीर को त्याग कर अपने कर्मफलों को भोगने के निमित्त सूक्ष्म शरीर के द्वारा शाकद्वीप में जाकर उस वृक्ष को पूजते हैं तब उसकी प्रसिद्धि होती है और सब प्रजा उसकी सेवा में तत्पर हैं इस द्वीप में सूक्ष्म देहधारी होने के कारण सब वर्ण अपने अपने धर्मों में प्रीति रखनेवाले बड़ी अवस्थावाले जरा मरण से रहित हैं बड़ी अवस्था कही इससे तो कभी मृत्यु न होनी चाहिये इसका यह उत्तर है कि जब उनके कर्मों का फल समाप्त होता है तब वह जम्बूद्वीप में आकर जन्म लेते हैं यही उनकी मृत्यु है जहां चोर नहीं दिखाई देते हैं वहां प्रजा लोगों की ऐसे वृद्धि होती है जैसे कि वर्षाऋतु में नदियों की वृद्धि होती है वहां नदियां पवित्र जलवाली हैं और बहुत रूपधारी गङ्गा भी वर्तमान हैं इनके सिवाय सुकुमारी, कुमारी, शीतासी, वेणिका, महानदी, मणिजला नदी, चक्षुवर्धनिका नदी इत्यादि लाखों नदियां पवित्र जलवाली हैं जहां से इन्द्र जल को लेकर वर्षा करता है उनके नाम विस्तार दैर्घ्य इत्यादि संख्या करने के योग्य नहीं हैं वह उत्तम नदियां पवित्रता और पुण्य की बढ़ानेवाली हैं वहां सब लोकों में प्रतिष्ठित पवित्र चार देश हैं वह मृग, मशक, मानस, मन्दग नाम से प्रसिद्ध हैं मृग नाम देश में बहुत से ऐसे ब्राह्मण हैं जो अपने कर्मों में सदैव प्रवृत्त हैं और मशक देश में ऐसे क्षत्रिय लोग हैं जो धर्मचारी और सब मनोरथों के देनेवाले हैं मानसदेशवासी वैश्य धर्म से निर्वाह करनेवाले हैं मन्दग देश के रहनेवाले शूद्रलोग धर्म के अभ्यासी हैं हे राजेन्द्र! उन देशों में न राजा है न दण्ड है न दण्डधारी हाकिम है वहां सब प्रजालोग ही धर्मज्ञ होकर अपने अपने धर्मों से परस्पर की रक्षा करते हैं उस बड़े प्रकाशवान् शाकद्वीप में इतना ही कहसक्के हैं और इतना ही सुनने के योग्य है॥३८॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि शाकद्वीपवर्णनं नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

बारहवां अध्याय ।

सञ्जय बोले कि, हे महाराज! वहां पूर्व कहे हुए उत्तर द्वीपों में जिस प्रकार से कथा सुनी जाती है उसको तुम मुझसे सुनो, कि वहां एक तो घृत का समुद्र है दूसरा दधिमण्डोदक नाम समुद्र, तीसरा मदिरारूप जल का समुद्र, चौथा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मिष्टजल का समुद्र है हे राजन्, धृतराष्ट्र ! सब द्वीप और पहाड़ परस्पर में दूने दूने समुद्रों से घिरे हैं और मध्यवर्ती द्वीप में गौर शिलारूप पर्वत है और पिछले द्वीप में कृष्ण नाम पर्वत नारायण का सखारूप है वहां आप केशवमूर्त्ति दिव्यरत्नों की रक्षा करते हैं और प्रसन्न होकर प्रजालोगों को सुख देते हैं और कुशद्वीप में कुशस्तम्भ देशों से युक्त है और शाल्मलिद्वीप में शाल्मलि वृक्ष पूजन किया जाता है और क्रौञ्चद्वीप में रत्नसमूहों का भण्डार महाक्रौञ्च पर्वत को सदैव सब वर्ण पूजते हैं हे राजन्! उसमें सब धातुओं का रखनेवाला बहुत बड़ा पर्वत गोमन्त नाम है जिसके ऊपर श्रीमान् कमललोचन विष्णु भगवान् सदैव निवास करते हैं वह प्रभु नारायण हरि सदैव मुक्त पुरुषों से मिले हुये रहते हैं और कुशद्वीप ही में एक पर्वत मुख्य मुख्य वृक्षों से आच्छादित है वह दुर्धर्ष पर्वत स्व नाम से प्रसिद्ध है, इससे दूसरा हेमपर्वत है, तीसरा द्युतिमान् कुमुद नाम गिरि है, चौथा पुष्पवान् नाम है, पांचवां कुशेशय नाम है छठा हरिगिरि नाम है यह छओं उत्तम पर्वत हैं इनका मध्यवर्ती विस्तारपूर्वक विभाग के अनुसार दूना है प्रथम खण्ड औद्भिद है, दूसरा वेणुमण्डल है, तीसरा रथाकार है, चौथा कम्बल है, पांचवां धृतिमत् खण्ड है, छठवां प्रभाकर नाम खण्ड है, सातवां कापिलखण्ड है यह सातों पर्वत खण्डों के विभाग करनेवाले हैं इन खण्डों में देवता गन्धर्व और प्रजालोग विहारपूर्वक आनन्द करते हैं उनमें मनुष्य नहीं मरता न चोर म्लेच्छ जाति आदि के लोग रहते हैं और सब प्रजा गौरवर्ण सुकुमार होते हैं इनके सिवाय शेषद्वीपों का भी तुमसे वर्णन करता हूं इसको आप सावधानी से सुनो कि क्रौञ्चद्वीप में क्रौञ्च नाम बड़ा पर्वत है और क्रौञ्च से परे वामन है वामन से परे अन्धकारक है अन्धकारक से परे मैनाक नाम उत्तम पर्वत है और मैनाक से परे गोविन्द नाम उत्तम पर्वत है गोविन्द से परे निविड़ नाम श्रेष्ठ पर्वत है इनका भी विस्तार द्विगुणित है, इनके देशों का भी वर्णन करता हूं उसको तुम सुनो कि क्रौञ्चद्वीप का देश कुशल है वामन का देश मनोनुग है, मनोनुग से परे उष्णदेश है, उष्ण से परे प्रावरक है प्रावरक से परे अन्धकारकदेश है अन्धकारक से परे मुनिदेश है मुनिदेश से परे दुन्दुभी स्थान बोला जाता है, हे राजन्! यह सिद्धचारणों का निवासस्थान बहुत गौरवर्णवाले मनुष्यों से पूरित यह सब देश देवगन्धर्वों के निवास और विहारस्थान हैं पुष्करद्वीप में पुष्कर नाम पर्वत मणि रत्नों का रखनेवाला है उसमें आप देवदेव ब्रह्माजी निवास

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करते हैं और हे राजन्! उन ब्रह्माजी को सब देवता और महर्षि योगमन से पूजन करते हुये सदैव चारों ओरसे उपासना करते हैं उन सब द्वीपों में प्रजाओं के अनेक प्रकार के रत्न जम्बूद्वीप से वर्तमान होते हैं तात्पर्य यह है कि जम्बूद्वीपवासी जो जो कर्म करते हैं उनके फल से नानाप्रकार के रत्न वहां वर्त्तमान होते हैं और अवस्था व्यतीत होने पर शरीर को त्याग कर अपने कर्मसम्बन्धी द्वीपों में जाकर अपने ही कर्मों से प्रकट हुये उन रत्नों को भोगते हैं ब्रह्मचर्य, सत्यता और प्रजाओं की शान्तचित्तता से नीरोगतापूर्वक एक से एक द्वीप की अवस्था दूनी दूनी है इन सब द्वीपों में केवल एक ही देश है उसी देश में सब देश कहे जाते हैं वह एक धर्मरूप देश देख पड़ता है अर्थात् धर्मफल भोगने के लिये छओं द्वीप हैं और जम्बूद्वीप कर्म और योग की भूमि है हे राजन्! आप प्रजापति ईश्वर दण्डधारण करके इन द्वीपों की रक्षा के लिये नियत रहता है वही राजा है, वही शिव है, वही पितापितामह आदि है, वही सब जड़ चैतन्य प्रजाओं की रक्षा करता है। हे कौरव! यहां के प्रजालोग स्वतः सिद्ध प्राप्त हुये भोजन को खाते हैं, इसके पीछे समा नाम लोकों की निवासभूमि देखपड़ती है हे राजन्! वह चतुर्मुख कमलरूप है और उसका मण्डल तेंतीस हजार योजन है (ऊपर अठारह हजार छःसौ परिधिव्यास वर्णन की है और केवल वृत्त तेंतीस हजार ही कहा) इसका हेतु यह है कि जो पर्वत गोल से ऊंचे हैं उनको वृत्त के भीतर लेकर मण्डल गणना की है हे राजेन्द्र! वहां लोकों के प्रधान चार दिग्गज वामन और ऐरावत आदि नाम से नियत हैं और इसी प्रकार तीसरा प्रतीक है चौथा प्रभिन्नकरट नाम मुख है उसका प्रमाण मैं वर्णन नहीं करसक्ता वह गजसमूह सदैव तिरछा ऊंचा नीचा है इससे गणना से बाहर है वहां पर सब ओर की वायु चलती है जो हाथी पृथक् और अन्य अन्य होते हैं वही गज उनको बड़ी प्रकाशवान् खिले कमलों की समान अपनी सूंड़ों से पकड़ते हैं और पकड़कर शीघ्र ही सौ भाग करके छोड़ते हैं वही गजों के श्वासों की छोड़ी हुई वायु यहां आती है उसीसे सब प्रजालोग जीवते रहते हैं धृतराष्ट्र बोले कि, हे संजय! यह तुम ने बहुत बड़ा विस्तार वर्णन किया और द्वीपों का भी रूप दिखाया अब हे संजय! इनके विशेष और और जो भाग हैं उनका वर्णन करो। संजय बोले हे राजन्! मैंने द्वीपों का वर्णन किया अब ग्रहों का वर्णन मूलसमेत सुनो हे कौरवेन्द्र! राहु ग्रह गोल सुना जाता है उसका

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

व्यास निश्चय करके बारहहज़ार योजन है और मण्डल छत्तीसहज़ार योजन है और बुद्धिमान् पौराणिकों ने उसको मुटाई में छःहज़ार योजन से अधिक कहा है और चन्द्रमा का व्यास ग्यारहहज़ार योजन कहा है उसका मण्डल तेंतीस हज़ार योजन है और मुटाई उंसठ योजन से अधिक है और हे राजन् ! सूर्य का व्यास दशहज़ार योजन है परन्तु मुटाई में तेरह सौ योजन से अधिक है इसी हेतु से इकतीस हज़ार तीन सौ योजन का मण्डल है यह शीघ्रगामी सूर्य बड़े उदार सुने जाते हैं। हे राजन् ! यह सूर्य का प्रमाण कहा और वह राहु अपने बड़े देह से समय पाकर दोनों सूर्य चन्द्रमाओं को ढक लेता है यही संक्षेप से वर्णन किया हे महाराज, धृतराष्ट्र ! मैंने शास्त्ररूप दृष्टि से यह सब वृत्तान्त यथावस्थित कहा यह जगत् समेत मैंने जैसा गुरु से सुना है उसीके अनुसार तुमसे वर्णन किया इससे आप शान्ति को पाओ इन अनेक कारणों से हे राजन् ! तुम अपने पुत्र दुर्योधन में शान्ति को पाओ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! इस चित्तरोचक भूमिपर्व को जो राजा सुनता है वह धनवान् हो अभीष्ट को प्राप्त करके साधुओं में प्रतिष्ठा को पाता है और उसकी आयु, बल, कीर्ति व तेज की वृद्धि होती है और श्रद्धापूर्वक नियम से जो राजा सुनेगा उसके पिता पितामहादि तृप्त होते हैं यह भरतखण्ड जिसमें हम सब वर्त्तमान हैं यह पूर्वजों से बड़ा पुण्य का बढ़ानेवाला नियत किया गया है इस सबको तुमने सुना है ॥ ५१ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

तेरहवां अध्याय ।

वैशंपायनजी बोले कि, हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे सबका वृत्तान्त प्रत्यक्ष देखनेवाले भूत, भविष्य, वर्त्तमान के ज्ञाता बुद्धिमान् संजय ने युद्धभूमि से आकर आकस्मिक ध्यान करनेवाले धृतराष्ट्र के समीप जाकर भरतवंशियों के पितामह का महाघायल होना वर्णन किया अर्थात् आकर कहा कि हे महाराज ! मैं संजय हूं आपको नमस्कार करता हूं अब इस वृत्तान्त को कहता हूं कि वह भरतवंशियों के पितामह शान्तनव भीष्मजी शस्त्रों के घात से बड़े घायल होगये जो सब युद्धकर्त्ताओं में ध्वजारूप और धनुर्धारियों में महातीव्र हैं अब वह कौरवों के पितामह शरशय्या पर सो रहे हैं जिनके पराक्रम के आश्रय को पाकर तेरे पुत्र ने पाण्डवों से जुवा खेला वही भीष्मजी शिखण्डी से विदीर्ण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घायल होकर शरशय्या पर विराजे हैं जिस महारथी ने काशीपुरी में एक ही रथ से महाभारी युद्ध में सब मिले हुये राजाओं को विजय किया था और वही महा-भयकारी युद्ध में यमदग्निजी के पुत्र परशुरामजी से लड़े और उनके हाथ से नहीं मारे गये अब वही भीष्मजी शिखण्डी के हाथ से मारे गये हैं जो शूरता में महाइन्द्र के समान और स्थिरचित्तता में हिमाचल पर्वत के समान और गम्भीरता में समुद्र के सदृश और क्षमा में पृथ्वी के तुल्य हैं अब वह बाणरूप दंष्ट्रा और धनुषरूप मुख, खड्गरूप जिह्वा, दुर्धर्ष नरोत्तम सिंहरूप तेरा पिता पांचाल देशी शिखण्डी के हाथ से पृथ्वीपर मारा गया पाण्डवों की सेना जिसको युद्ध में शस्त्र लिये उद्यत देखकर भय से व्याकुल होकर ऐसे कांपती थी जैसे कि सिंह को देखकर गौओं का समूह व्याकुल होकर थरथराता है वह वीरों का मारनेवाला उस तेरे पुत्र की सेना को दश दिन रात्रि रक्षा करके बड़े कठिन युद्धों को करता हुआ घायलों के समान अस्त होगया, जोकि हज़ारों बाणों को बरसाता हुआ इन्द्र के समान महाव्याकुलता से पृथक् है उसने अपने दश दिन के युद्धों में एक अर्बुद सेना को मारडाला । हे भरतवंशिन् ! वह तेरी बुरी सलाह के होने से वायु से गेरे हुये वृक्ष के समान पृथ्वी पर ऐसे सोता है जैसे कि कभी वह सोने के योग्य न था ॥ १३ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्ममृत्युश्रवणे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

चौदहवां अध्याय ।

धृतराष्ट्र बोले कि मेरा पिता भीष्म कैसे कैसे शिखण्डी के हाथ से घायल हुआ और कैसे रथ से गिरा हे संजय ! उस पराक्रमी देवता के समान अपने पिता शन्तनु के लिये ब्रह्मचारी होनेवाले गुरुरूप भीष्मजी के विना मेरे पुत्रों की कौन दशा हुई और ऐसे महाबली, धनुर्धारी, महाज्ञानी, शस्त्रवेत्ता, नरोत्तम, भीष्म के मारे जाने पर तेरा चित्त कैसा होगया ? जिस निर्भय कम्परहित कौरवेन्द्र पुरुषोत्तम वीर भीष्मजी को मृतक सुनकर मेरा चित्त महापीड़ा से व्याकुल होता है हे संजय ! कौन कौन क्षत्रिय इसके आगे और कौन इनके पीछे चलनेवाले हुये कौन स्थिर हुये और कौन लौट आये और कौन से क्षत्रिय सन्मुख वर्त्तमान हुये और कौन से शूर उस महारथी क्षत्रियोत्तम युद्ध में सेना के दबानेवाले भीष्मजी के पीछे की ओर को चले जिस बड़े प्रबल सेना के स्वामी सूर्य के समान तेजस्वी शत्रुहन्ता ने शत्रुओं की सेना के मनुष्यों को मार हटाया और

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शत्रुओं में महाभय को उपजाया और युद्ध में पाण्डवों के ऊपर महाकठिन कर्म किया और हे संजय! तुमने उसके सम्मुख होनेवाले युद्ध में कुशल दुःप्रधर्ष महाबली को भी देखा है जिसने कि इस सेना के निगलनेवाले महावीर धनुर्धारी भीष्म को मारकर हटाया हे संजय! पाण्डवों ने युद्ध के बीच में उन भीष्मजी को किस प्रकार से रोका और सेनाओं के काटनेवाले बाणरूप दंष्ट्रा रखनेवाले वेगवान् चापरूपी मुख फैलानेवाले खड्गरूप जिह्वाधारी दुर्धर्ष इस दशा के अयोग्य पुरुषोत्तम लज्जावान् अजित जितेन्द्रिय भीष्मजी को अर्जुन ने किस प्रकार से गिराया जो भीष्म कि भयानक धनुष बाणयुक्त उत्तम रथ में आरूढ़ बाणों से शत्रुओं के शिरों के छेदनेवाले होते थे उस काल-अग्नि के समान दुर्धर्ष शस्त्र धारण किये सन्नद्ध भीष्मजी को देखकर पाण्डवों की सेना सदैव मृतकप्राय के सदृश चेष्टा करती थी वह शत्रुहन्ता दश रात्रि सेना को खैंचकर महाकठिन युद्धकर्म को करके सूर्य के समान अस्त होगया जिसने दश दिन तक इन्द्र के समान अखण्ड बाणों को छोड़कर युद्ध में एक अर्बुद संख्या के शूरवीरों को मारडाला वह भरतर्षभ मेरे दुर्मंत्रों से युद्ध में पराजय होकर पृथ्वी में वृक्ष के समान गिरकर ऐसा घायल होकर सोता है जैसा कि वह कभी हो नहीं सक्ता ऐसे प्रतापी महाबली भीष्मजी को युद्ध में सन्नद्ध देख कर पाञ्चाल देशियों की सेना किस प्रकार से उनके ऊपर प्रहार करने को समर्थ हुई और पाण्डवों ने भीष्मजी के सन्मुख कैसे लड़ाई की और हे संजय! द्रोणाचार्यजी के जीते हुये होनेपर भीष्मजी ने कैसे विजय को नहीं पाया और प्रहारकर्त्ताओं में श्रेष्ठ भीष्मजी ने कृपाचार्य और भारद्वाज के पुत्र द्रोणाचार्य के वर्त्तमान होने पर कैसे मृत्यु को पाया और देवताओं से भी महादुर्धर्ष अतिरथी भीष्मजी युद्ध में उस पाञ्चालदेशीय शिखण्डी के हाथ से कैसे मारे गये जिन्होंने महाबली परशुरामजी को युद्ध में प्रसन्न किया अर्थात् उनसे ईर्षापूर्वक लड़ाई होनेपर भी उनके हाथ से नहीं मारा गया इन्द्र के समान प्रबल महारथियों में सूर्यरूप महावीर भीष्मजी युद्ध में जैसे मृतक हुये वह सब मुझसे वर्णन करो और हे संजय! मेरे कौन कौन से बड़े धनुर्धारी बाण फेंकनेवाले पुत्रों ने उस दुराधर्ष को त्याग नहीं किया और दुर्योधन के आज्ञावर्ती कौन कौन से वीरों ने शत्रुओं को न रोका जिससे कि वह सब पाण्डव जिनमें सबका अग्रगामी शिखण्डी था भीष्मजी के सम्मुख आये

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हे संजय ! उस अजितवीर को सब कौरवों ने तो त्याग नहीं किया मेरा निश्चय करके वज्र के समान हृदय है जो ऐसे पिता भीष्म पराक्रमी के मरनेपर भी नहीं फटता है वह भरतर्षभ दुराधर्ष सत्यवादी बुद्धि स्मरण में सावधान शास्त्रों का ज्ञाता होकर युद्ध में कैसे मरा है ? जिसका धनुषरूप बादल बाणरूप जलकण और धनुष की टंकार ही गर्जनायुक्त घोर शब्दवाले बड़े बादल ही के समान ऊंचा है और जैसे इन्द्र दैत्यों को मारता है उसी प्रकार शत्रु के रथियों को मारते हुये जिस वीरने पाण्डव और पाञ्चालदेशीय वा संजय लोगों पर वर्षा की उस बाण आदि अनेक भयानक अस्त्रों के समुद्र बाणरूपी ग्राहधारी दुराधर्ष धनुषरूप तरङ्गवाले अविनाशी निराधार नौकाओं से रहित गदा खड्गरूप मकर जीवों से व्याप्त घोड़ेरूपी आवर्तों समेत हाथियों से व्याकुल पदातीरूप मीनों से भरा हुआ शंख दुन्दुभियों से शब्दायमान युद्ध में अपने वेग से बहुत से हाथी घोड़े पैदलों को डुबानेवाले शत्रुओं के वीरों के हटाने वाले क्रोध से अग्निरूप तेज से शत्रुओं के संतप्त करनेवाले को कौन कौन से वीरों ने ऐसे रोक लिया जैसे कि समुद्र को उसकी किनारारूप मर्यादा रोक लेती है । हे संजय ! शत्रुहन्ता भीष्मजी ने युद्ध में दुर्योधन के अभीष्ट के लिये जो जो कर्म किये उस समय उनके सन्मुख कौन कौन हुए और कौन कौन से वीरों ने भीष्मजी के दाहिने पक्ष की रक्षा करी और पीछे की ओर से कौन से सावधान वीरों ने शत्रु के वीरों को हटाया और कौन कौन वीर भीष्मजी के समीप में जाकर रक्षा करते हुए आगे हुए और किन किन वीरों ने भीष्मजी के लड़ते समय उत्तरीयभाग की रक्षा करी और वामपार्श्व में होकर किस किस ने संजय देशियों को मारा और किस किस वीर ने उस दुर्धर्ष भीष्मजी की आगे से रक्षा की और चलते समय में किस किस ने चारों ओर से उन की रक्षा करी हे संजय ! उस समूह में से शत्रुओं के वीरों से युद्ध करनेवाले कौन कौन वीर थे वीरों से रक्षित भीष्मजी ने और भीष्मजी से रक्षित उन वीरों ने युद्ध के बीच वेग से वा दुःख से विजय होनेवाली राजाओं की सेनाओं को क्यों नहीं विजय किया ? हे संजय ! जो सब लोकों के ईश्वर प्रजापति के परमपद के मार्ग में नियत होता है उसके मारने के लिये वह पाण्डव लोग कैसे समर्थ हुए । कौरवलोग जिस रक्षा के स्थान पर भरोसा करके शत्रुओं से युद्ध करते हैं उस नरोत्तम भीष्मजी को हे संजय ! तुम डूबा हुआ कहते हो । जिसके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बल का आश्रय लेकर बड़ी सेना रखनेवाला मेरा पुत्र पाण्डवों को कुछ नहीं समझता था वह ऐसा प्रतापी भीष्म पाण्डवों के हाथ से कैसे मारागया, युद्ध में दुर्मद महाव्रती जिस मेरे पिता भीष्म को सहायता में करके देवता लोग दैत्यों के मारने के लिये उपस्थित हुये और संसार में विदित राजा शन्तनु ने पुत्रों में उत्तम बड़े पराक्रमी जिस भीष्म के उत्पन्न होने पर शोक, भय और दुःखों को अत्यन्त दूर किया और उसी पुत्र को रक्षा का स्थान बड़ा ज्ञानी और अपने धर्मों में अतिप्रवृत्त वेद वेदाङ्ग के मूलों का ज्ञाता महापवित्रात्मा वर्णन किया हे संजय ! ऐसे पुरुष को मरा हुआ कैसे कहता है उन सब अस्त्रों से शिक्षायुक्त शन्तनु जितेन्द्रिय उदारबुद्धि भीष्मजी को मृतक सुनकर मैं शेष बची हुई सेना को भी मृतक ही मानता हूँ कि जिस स्थानपर पाण्डव अपने वृद्ध गुरु को भी मारकर राज्य को चाहते हैं इससे यह मेरा मत है कि अधर्म धर्म से प्रबलतर होता है, पूर्वसमय में सब अस्त्र शस्त्रों के ज्ञाता अनुपम युद्ध में सन्नद्ध जमदग्निजी के पुत्र परशुरामजी को युद्ध में भीष्मजी ने विजय किया उस इन्द्र के समान कर्मकर्त्ता सब धनुषधारियों के ध्वजारूप भीष्म जी को मृतक कहता है इससे अधिक कौनसा दुःख होगा ? जिन परशुराम जी ने अनेक समय क्षत्रियों के समूहों को वारंवार विजय किया परन्तु बड़ा बुद्धिमान् मेरा पिता नहीं मारा गया सो अब वह शिखण्डी के हाथ से मारा गया इस हेतु से निश्चय करके द्रुपद का पुत्र शिखण्डी बड़ा पराक्रमी युद्ध में परशुरामजी से भी अधिक तेजस्वी बल पराक्रम में भी अधिक है जिसने शूरवीर पण्डित महाशास्त्रज्ञ धर्मअस्त्र के ज्ञाता भरतवंशियों के उत्तम प्रतापी वीर को मारा युद्धभूमि में उस शत्रुहन्ता भीष्मजी के पीछे कौन कौन वीर चले और जैसे पाण्डवों से और भीष्मजी से लड़ाई हुई यह सब मुझसे विस्तार समेत वर्णन करो। हे संजय ! मेरे पुत्र की वह सेना स्त्री के समान मृतक वीरवाली है और वही मेरी सेना इस प्रकार व्याकुल है जैसे कि विना गोप के गौओं का कुल होता है जिस भारी युद्ध में सब लोगों की बड़ी वीरता है अब उस भीष्मजी के मरने के पीछे सबका मन कैसा होगया। हे संजय ! अब लोक में धर्मवान् बड़े पिता को मरवा के हमारे पुत्रों में जीवन की क्या सामर्थ्य है, भीष्मजी के मरनेपर मेरे बेटे सदैव दुःख से ऐसे शोचते हैं जैसे कि पार पर खड़े हुए मनुष्य गहरे जल में डूबी हुई नौका को देखकर शोचते हैं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हे संजय ! निश्चय करके मेरा वज्र से भी अधिक कठोर हृदय है जो ऐसे पुरुषोत्तम भीष्मजी के मरनेपर भी नहीं फटता है जिस पुरुषोत्तम दुराधर्ष में अस्त्रबुद्धि और नीति अत्यन्त थी वह युद्ध में कैसे मारा गया कोई भी मनुष्य अस्त्रशूरता, तप, बुद्धि, धैर्य और तपस्या इत्यादि के द्वारा मृत्यु से नहीं छूटता है इससे निश्चय करके सब लोकों को दुःख से उल्लङ्घन करने के योग्य काल महाबली है उसको भी उन्होंने वशीभूत किया । हे संजय ! उन शन्तनु के पुत्र भीष्मजी को मृतक कहता है उन शन्तनुनन्दन भीष्मजी से मैं पुत्रों के शोक से दुःखी बड़े दुःखों को स्मरण करता हुआ रक्षा की आशा करता था हे संजय ! जब सूर्य के समान अस्त हुए भीष्मजी को दुर्योधन ने देखा तब मन में क्या विचार किया ? और मैं बुद्धि से चिन्ता करता हुआ सेना के मध्य में अपने पुत्रों को और अन्य राजाओं को कुछ भी नहीं समझता हूँ यह वह भय का कारण क्षत्रियधर्म ऋषिलोगों ने दिखाया है जहां पाण्डव लोग भीष्म जी को मारकर राज्य को चाहते हैं अथवा हम कौरवलोग महाव्रतवाले भीष्म जी को मरवाकर राज्य को चाहते हैं । क्षत्रिय धर्म में प्रवृत्त मेरे पुत्र पाण्डव भी कुछ अपराध नहीं करते हैं क्योंकि दुःख और आपत्तियों में उत्तम पुरुष को यह पराक्रम और महासामर्थ्य प्रकट करने के योग्य है उसमें ही वह सब पाण्डव नियत हैं । हे तात ! उन पाण्डवों ने उन लज्जावान् दुराधर्ष सेना के मर्द्दन करनेवाले भीष्मजी को कैसे रोका और जैसे जैसे सेना तैयार हुई और सब महात्माओं का युद्ध कैसे हुआ ? और मेरा पिता भीष्म दूसरों के हाथ से कैसे मारा गया ? भीष्मजी के मरनेपर दुर्योधन, कर्ण और सौबलके पुत्र शकुनी और छली दुश्शासन ने क्या कहा ? जिन देहों के बिछौनों से संयुक्त मनुष्य हाथी घोड़ोंसमेत बाण, बरछी और बड़े खड्ग तोमररूप पाशेवाले महाभयकारी सभा में प्रविष्ट हुये और वह युद्ध में कुशल नरोत्तम उस भयकारी प्राण देवत अर्थात् द्यूतरूप में खेले उनमें से कौन-सा विजयी जीतता है और जो भीष्मजी से युद्ध में मारे गये इन सबको हे संजय ! मुझसे कहो, यहांपर भयकारी कर्म और युद्ध में शोभा पानेवाले महाव्रत पिता भीष्मजी को मृतक सुनकर मेरे हृदय में शान्ति नहीं होती । हे संजय ! तुम पुत्र की हानि से उत्पन्न महापीड़ा को मेरे हृदय में ऐसे बढ़ाते हो जैसे घृत से अग्नि को बढ़ाते हैं, और सम्बन्धी लोग प्रसिद्ध महाभार को उठाकर और भीष्मजी को मृतक जानकर शोचते हैं और

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

में दुर्योधन के उत्पन्न किये हुए उन दुःखों को सुनूंगा इस कारण हे संजय! वहां का सब वृत्तान्त मुझसे कहो और जो युद्ध में अल्पबुद्धियों की निर्बुद्धिता से उत्पन्न वृत्तान्त न्याय वा अन्यायसम्बन्धी कैसाही हो वह सब मुझसे कहो और युद्धभूमि में शस्त्रज्ञ और शास्त्रज्ञ विजयाभिलाषी भीष्मजी ने जो अपने तेज से कर्म किया वह भी विस्तारपूर्वक सम्पूर्ण कहो और जब जिस क्रम से समय पाकर कौरव और पाण्डवों की सेना से परस्पर युद्ध हुआ उसमें जैसा जैसा जो काम जिस जिस का हुआ वह सब मुझसे कहो ॥ ७८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि धृतराष्ट्रप्रश्ने चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय।

संजय बोले कि हे महाराज! ये सब प्रश्न जो तुम पूछते हो सब ठीक हैं परन्तु आप इन दोषों को जो लगाते हो सो योग्य नहीं हैं जो मनुष्य अपने बुरे कर्म से दुःखादि को पावे वह उस पाप की शङ्का दूसरे पर करने के योग्य नहीं है। हे महाराज! जो मनुष्यों के मध्य में निन्दा के योग्य कर्म को करता है वह निन्दित कर्म करनेवाला सबलोकों से मारने के योग्य है। छलसंयुक्त दुर्योधन आदि ने निरादर किया और पाण्डवों ने मंत्रियों के द्वारा तेरी ओर को ध्यान करके बहुत कालतक वन के बीच बैठकर उस अपमान को क्षमा किया और मैंने प्रत्यक्ष में घोड़े हाथी और बड़े तेजस्वी राजाओं की जो दशा देखी और योगबल से भी जो निश्चय किया हे राजन्! उसको तुम मुझसे सुनो और शोक से चित्त को हटाओ यही होनहार प्राचीन है मैं आपके बुद्धिमान् पिता उन व्यासजी को नमस्कार करके कहता हूं जिनकी कृपा से मैंने दिव्यदृष्टि और अनुपम प्रज्ञा को प्राप्त किया, हे राजन्! ध्यान से पृथक् देखना वा दूरसे बात का सुनना अथवा दूसरे के मन का अच्छे प्रकार से जानना और भूत, भविष्य का ज्ञान होना, उठे हुए अस्त्र की उत्पत्ति का जानना, आकाश में शुभगमन, लड़ाइयों में अस्त्रों से बच जाना इत्यादि सब बातें महात्मा के वरदान से प्राप्त हैं इस अपूर्व विचित्र वृत्तान्त को ब्योरेवार तुम मुझसे सुनो जैसे कि वह भरतवंशियों का रोमहर्षण करनेवाला युद्ध हुआ। हे महाराज! जब ब्यूहरचना की रीति से उस सेना की तैयारियां हुईं तब दुर्योधन ने दुश्शासन से कहा कि हे दुश्शासन! भीष्मजी के रक्षा करनेवाले रथ शीघ्रही तैयार हों और तुम इस बात का सब सेना को शीघ्र उपदेश दो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कि सेना के मनुष्यों से पाण्डव और कौरवों का वह मिलाप वर्तमान हुआ है जो कि बहुत वर्षों से विचारा गया है, मैं युद्ध के बीच इन भीष्मजी की रक्षा से अधिक कोई बड़ा काम नहीं समझता हूं क्योंकि जो भीष्मजी की रक्षा होगी तो यह अकेले ही पाण्डव सोमक और संजयलोगों समेत सबको मारेंगे और इन सत्यवक्ता भीष्मजी ने कहा है कि मैं शिखण्डी पर बाण और शस्त्रप्रहार नहीं करूंगा इसका यह हेतु सुना जाता है कि यह पूर्व में स्त्री था इस कारण युद्ध में इसके ऊपर शस्त्र छोड़ना क्षत्रियों को निषेध है इस गुप्त कारण से भीष्मजी अधिक करके रक्षा करने के योग्य हैं इस मेरे मत से हमारी सब सेना के मनुष्य शिखण्डी के मारने में सावधानी से उद्युक्त होजायँ और इसी प्रकार से पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण इन चारों दिशाओं के सब शस्त्रधारी युद्ध में कुशल राजा लोगों को भी योग्य है कि सब मिलकर भीष्मजी की रक्षा करें। महाबली रक्षा से रहित सिंह को जैसे शृगाल मारे इसी प्रकार शृगाल के समान शिखण्डी के हाथ से हम लोगों को योग्य है कि सिंहरूप भीष्मजी को नहीं मरवावें, रथ के वामभाग का रक्षक युधामन्यु और दक्षिण भाग का उत्तमौजा यह दोनों अर्जुन के रक्षक हैं और अर्जुन शिखण्डी का रक्षक हुआ है वह अर्जुन से रक्षित शिखण्डी गङ्गा के पुत्र भीष्मजी को जिस रीति से मारने को समर्थ न हो हे दुश्शासन ! वही उपाय अवश्य करना चाहिये ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि दुर्योधनदुश्शासनसंवादे पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

सोलहवां अध्याय।

संजय बोले कि तदनन्तर रात्रि व्यतीत होनेपर जोड़ो, जोड़ो ऐसे राजा लोगों के कहे हुए महान् शब्द होते हुए और हे भरतर्षभ ! शंख और दुन्दुभियों के बड़े बड़े शब्द और बड़े बड़े वीर पुरुषों के सिंहनाद और घोड़ों के हींसने के शब्द और रथ के पहियों के महान् शब्दों से और हाथियों की चिंघाड़ों से वा मल्लों के क्रीड़ापूर्वक हाथ के और मुख के अनेक प्रकार के शब्दों के कारण चारों ओर से महातुमुल भयकारी शब्द हुए हे महाराज ! सूर्य के उदय होने पर सब ओर से तैयार कौरव और पाण्डवों की महाभारी सेना आन आनकर खड़ी हुई और तुम्हारे पुत्रों के और पाण्डवों के दुःप्रधर्ष शस्त्र अस्त्र और कवच भी बड़ी तीव्रता से तैयार हुए तिसके पीछे जब बड़ा प्रकाश हुआ उस समय तेरे पुत्रों की और पाण्डवों की सेना के वह मनुष्य दिखाई दिये जो बड़े महा[illegible] और

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शस्त्रों को धारण किये हुए थे, इसके विशेष वहांपर जाम्बूनद नाम सुवर्ण से अलंकृत हाथी और रथ भी ऐसे दृष्ट पड़े जैसे कि बिजली समेत बादल दिखाई देते हैं, रथपर सवार बहुत-सी सेनाएँ नगरों के समान दिखाई दीं उन सब प्रकार की सेनाओं में आपके पिता भीष्मजी पूर्ण चन्द्रमा से प्रकाशमान दिखाई देते थे और संपूर्ण सेनाभरमें युद्धकर्त्ता लोग धनुष, यष्टी, खड्ग, गदा, बरछी और तोमर आदि श्वेत शस्त्रों सहित नियत हुए, और हाथी, पैदल, रथ, घोड़े आदि हज़ारों पशु चारों ओर से जाल के समान घेरे हुए देख पड़ते थे, और अपने दूसरे लोगों की हज़ारों ध्वजा नानाप्रकार के चिह्नों की दिखाई दीं, वह सब ध्वजा सुनहरी अग्नि के समान देदीप्यमान मणियों से जटित ऐसी देख पड़ती थीं जैसे कि महाइन्द्र के भवनों में उसी महेन्द्र की श्वेत ध्वजा होती हैं उन युद्धाभिलाषी शस्त्रों से अलंकृत महाबलवानों ने परस्पर में एक एक को देखा आयुधों को उठाये हुए शस्त्रों से शोभित नल को बांधनेवाले धनुषधारी शुभ्र नेत्रों से प्रकाशमान राजा लोग सेना के मुखपर आकर सुशोभित हुए, सौबल का पुत्र शकुनी, शल्य, अवन्ती का राजा जयद्रथ, बिन्द, अनुबिन्द, केकयदेशीय राजा, काम्बोज, सुदक्षिण, श्रुतायुद्ध, कालिन्द, राजा जयत्सेन यह दशों महाशूरवीर पुरुषोत्तम परिघ समान भुजाधारी बृहद्दक्षिणा के यज्ञ करनेवाले अक्षौहिणियों के स्वामी, यह सब और अन्य बहुत से नीतिज्ञ महारथी राजा और राजकुमार जोकि दुर्योधन की स्वाधीनता में वर्त्तमान थे सब अपनी अपनी सेना में सावधानी से नियत भूषण शस्त्रादिकों से अलंकृत काले मृगचर्मधारी अर्थात् युद्ध में मरण दीक्षा करनेवाले महाबली युद्ध में कुशल प्रसन्न और दुर्योधन के निमित्त ब्रह्मलोक के अर्थ दीक्षित और समर्थ दश संख्या की सेना को लेकर स्थिर हुए और ग्यारहवीं कौरवी महाभारी दुर्योधनी नाम विख्यात सेना जिसके स्वामी भीष्मजी थे वह सेना सब सेनाओं के आगे वर्तमान थी हे राजन्! ऐसे महातेजस्वी असंख्य सेना में हमने श्वेत पगड़ी श्वेत छत्र और कवच को धारण किये दुराधर्ष चन्द्रमा के समान उदयरूप कौरवेन्द्र भीष्मजी को देखा। बड़े धनुर्धारी बाणविद्या में कुशल छोटे मृगों के समान वह संजय देशवासी जिनका अधिपति धृष्टद्युम्न था जंभाई लेते हुए इस महासिंहरूपी भीष्म को देखकर धृष्टद्युम्न आदि सबके सब महाभयभीत हुए हे राजन्! यह तेरी ग्यारह अक्षौहिणी सेना शोभायमान हुई और इसी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रकार पाण्डवों की सात अक्षौहिणी महापुरुष से रक्षित होकर तैयार हुईं और दोनों सेना ऐसी दिखाई देती थीं जैसे कि युग के अन्तवाले प्रलय में दोनों ओर से तरङ्ग उठते हुए महाभयानक मदोन्मत्त मकर ग्राहआदि जीवों से भरे हुए दो समुद्र व्याकुल होते हैं हे राजन् ! हमने कौरवों की इकट्ठी हुई सेना का ऐसा युद्ध प्रथम कभी न देखा था न सुना था ॥ २७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सैन्यवर्णने षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ।

संजय बोले कि, जिसप्रकार उन भगवान् कृष्ण द्वैपायन व्यासजी ने कहा है उसी प्रकार सब राजालोग युद्धभूमि में आपहुँचे उस दिन मघानक्षत्र के देश में नियत होकर चन्द्रमा प्राप्त हुआ और आकाश के मध्य में सात महाग्रह राहु केतु आदि महातेजधारी प्राप्त हुए और सूर्यदेवता उदय होने के समय दोरूप से दिखाई दिये फिर वह प्रकाशमान सूर्य अग्नि की ज्वाला के समान उदय हुआ और मांस रुधिर भोजन करनेवाले लोथों के चाहनेवाले काक और शृगालों के चारों दिशाओं में शब्द होने लगे शत्रुओं के विजयकर्ता सावधान चित्त सेनाओं के स्वामी कौरवों के पितामह वृद्ध भीष्मजी और भरद्वाज के पुत्र द्रोणाचार्यजी ने वारंवार यह कहा कि कुन्ती के पुत्र पाण्डव लोगों की विजय हो और तेरे निमित्त युद्ध करेंगे इसप्रकार से वचन कहकर नियम किया । तब सब धर्मों के जाननेवाले देवव्रत नाम आपके पिता सब राजाओं को बुलाकर यह वचन बोले कि हे क्षत्रियलोगो ! तुम्हारे स्वर्ग के निमित्त यह युद्धरूपी बहुत बड़ा द्वार खुला है उस द्वार के द्वारा तुम सब इन्द्र और ब्रह्माजी की सन्निकटता को पावो, यह सनातन मार्ग प्राचीन वृद्धों ने तुम सबलोगों के निमित्त नियत किया है तुम युद्ध में प्रवृत्तचित्त होकर अपनी बड़ी सावधानी से लड़ो, राजा नाभाग, ययाति, मान्धाता आदि बहुत से महात्मा ऐसे ही युद्धरूप कर्मों के द्वारा सिद्धरूप होकर उत्तम उत्तम स्थानों को गये । घर में रोगादि से जो क्षत्रियों का मरना है यह अधर्म है और जो युद्ध में शस्त्र के द्वारा मरता है वही इस क्षत्रिय का सनातन धर्म है । हे भरतर्षभ ! इसी प्रकार से भीष्मजी के समझाये हुए राजा लोग अपनी अपनी सेना उत्तम उत्तम रथों से शोभित और शस्त्रों से अलंकृत करके प्रस्थित हुए और वह सूर्य का पुत्र कर्ण अपने मन्त्री और भाई बन्धुओं समेत युद्ध में भीष्मजी के कारण शस्त्रों

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

का त्याग करनेवाला किया गया और आपके पुत्र और सब राजालोग कर्ण से पृथक् होकर सिंहनाद करते हुए दशों दिशाओं को चले वह सब सेना श्वेतछत्र और ध्वजा, पताका, हाथी, घोड़े, रथ और पदातियों से शोभायमान थी उस समय भेरी, पणव, दुन्दुभियों के शब्द और रथ के चक्रधाराओं की ध्वनि से पृथ्वी महाव्याकुल थी और महारथीलोग सुवर्ण के बाजूबन्द, केयूर और धनुषों से प्रकाशित होकर ऐसे शोभायमान थे मानो ज्वालामुखी पर्वत ही हैं और कौरवों की सेनाके रक्षक पञ्चताराधारी ताल वृक्ष के समान ऊंचे बड़ी ध्वजा समेत निर्मल सूर्य के समान नियत हुए। हे राजन्! जो बड़े धनुर्धारी शस्त्र के वेत्ता राजा लोग तेरी सहायता में आये हैं वह सब भी अपने अपने योग्य स्थानों पर भीष्मजी के समीप वर्त्तमान हुए। तदनन्तर गोवाशन शैव्य राजाओं के योग्य गजेन्द्रआदि चिह्नधारी ध्वजाओं से शोभित सब राजाओं समेत चला और राजा कमल-वर्ण सब सेना के आगे चला और महासावधान शस्त्रधारी अश्वत्थामा सिंह लाङ्गूलवाली ध्वजा से संयुक्त होकर गया और श्रुतायुध, चित्रसेन, पुरुमित्र, विविंशति, शल्य, भूरिश्रवा और महारथी विकर्ण यह सातों महारथी बाण-प्रहारी उत्तम कवचधारी हैं जिनमें मुख्य अश्वत्थामा रथ में सवार होकर भीष्मजी के आगे आगे चलनेवाले हुए उन सबको भी जाम्बूनद नाम सुवर्ण की प्रकाशित ध्वजायें शोभायमान हुईं और आचार्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य की ध्वजा जाम्बूनद सुवर्ण की वेदी और कमण्डलु से शोभित धनुषसमेत प्रका-शित हुई और बहुत-सी लाखों अनीकों समेत दुर्योधन की बड़ीभारी ध्वजा नागचिह्नयुक्त मणियों से जटित भी शोभित हुई और उसके आगे पौरव, कालिङ्ग, काम्बोज, सुदक्षिण, क्षेमधन्वा, शल्य यह सब महारथी नियत हुए और मगध के राजा वा कृपाचार्यजी बड़े मूल्य के रथ और वृषभचिह्नवाली ध्वजा समेत सेनामुख को खींचते हुए से चले और पूर्वीय राजाओं की बड़ी भारी सेना राजा अङ्ग और महाउदार कृपाचार्य से रक्षित शरदृऋतु के बादलों की समान शोभायमान हुई और बड़ा यशस्वी वाराह के चिह्नवाली श्रेष्ठ ध्वजा का रखनेवाला महाप्रकाशमान सेना के मुख पर शोभित जिसके आज्ञावर्ती एक लाख रथी थे वह राजा जयद्रथ आठ हज़ार हाथी और छः अयुत रथों से युक्त होकर सेना को शोभा देता था और सब कालिङ्ग देशों का ध्वजापति राजा साठि हज़ार रथ और दश हजार हाथियों समेत चला

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उसके बड़े बड़े रथ पहाड़ के समान शोभायमान हुए और वह अपने यन्त्र, तोमर, तूणीर, पताका आदि से भी महाशोभित था और राजा कलिङ्गक अग्नि का चिह्न रखनेवाली उत्तम ध्वजा और श्वेत छत्र माला व्यजन चँवर समेत शोभित था और हे राजेन्द्र! युद्ध में राजा केतुमान् भी विचित्र और महाउत्तम अंकुशवान् हाथी पर सवार ऐसा विदित हुआ जैसे कि बादल पर चढ़ा हुआ सूर्य देख पड़ता है और तेजसे प्रकाशमान उत्तम हाथी पर चढ़ा हुआ राजा भगदत्त भी ऐसा जाता था जैसे ऐरावतपर इन्द्र जाता हो और राजा बिन्द, अनुबिन्द और अवन्ती के राजा लोग भी हाथियों पर सवार होकर उस ध्वजाधारी भगदत्त के समीपवर्त्ती और आज्ञाकारी हुए वह रथों की अनीक रखनेवाला भयानक व्यूह जिसके अङ्गरूप हाथी राजारूप शिर और घोड़ेरूपी पक्ष हैं सब ओर को मुख किये हुए हँसता हुआ उग्ररूप होकर जो गिरता है उसको द्रोणाचार्य, राजा भीष्म, अश्वत्थामा, बाह्लीक और कृपाचार्य इन पांचों ने रचा है ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सैन्यवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अठारहवां अध्याय।

सञ्जय बोले कि, हे महाराज! इसके पीछे युद्धाभिलाषी महाशूरवीरों के कठिन भयङ्कर शब्द हृदय के कँपानेवाले सुने गये। शङ्ख, दुन्दुभियों के शब्द और हाथियों की चिंघाड़ वा रथों के पहियों के महाशब्दों से पृथ्वी कम्पायमान सी होगई तब तो घोड़ों के हिनहिनाहट और गर्जना करते हुए महामल्ल शूरवीरों के शब्दों से पृथ्वी और आकाश एक क्षणमात्र में शब्दों से भर गये और वह महादुर्धर्ष आपके पुत्र और पाण्डवों की सेना के मनुष्य परस्पर में सन्मुख होकर कम्पायमान हुए वहां जाम्बूनद नाम सुवर्ण से अलंकृत हाथी और रथ ऐसे दिखाई दिये जैसे बिजली समेत बादल दिखाई देते हैं और सुवर्ण के बाजूबन्द पहरे हुए आपके पुत्रों की ध्वजाओं में नाना प्रकार के रूपवाली अग्नि की ज्वाला अग्नि के समान प्रकाशमान हुई इसी प्रकार सब अपने और दूसरे लोगों की भी ध्वजा ऐसी दिखाई देती थीं जैसी कि महेन्द्र के भवनों में उसकी तेजस्वी ध्वजा वर्तमान हों। अग्नि और सूर्य के समान प्रकाशमान और सुवर्ण के कवचों से अलंकृत वीर लोग भी सूर्य और अग्नि के ही समान प्रकाशित देख पड़े। हे राजन्! कौरवों की सेना में श्रेष्ठ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विचित्र आयुध वा धनुषधारी आयुधोंसमेत उठाये हुए छत्र ताल और पिनाक नाम धनुषों के बाँधनेवाले सुन्दर नेत्रधारी बाणविद्या में कुशल सेना के मुख पर वर्त्तमान होकर शोभायमान हुए और हे राजन्! आगे कहे हुए आपके पुत्र भी भीष्मजी के रक्षक पीठ के पीछे की ओर हुए अर्थात् दुश्शासन, दुर्विषह, दुर्मुख, दुःसह, विविंशति, चित्रसेन, महारथी, विकर्ण, सत्यव्रत, पुरुमित्र, जय, भूरिश्रवा, शल और इसी प्रकार बीस हजार रथ इनके पीछे चलने वाले हुए। अभीषाह, शूरसेन, शिवय, वसातय, शाल्व, मत्स्य, अम्बष्ठ, त्रैगर्त्त, कैकय, सौवीर, कैतव और पूर्वीय, पश्चिमीय और उत्तरीय राजाओं के समूह इन बारह देशों के नाम से विख्यात सब शूरवीर देहों के त्यागने वाले राजाओं ने बहुत से रथोंसमेत पितामह की रक्षा की, और शीघ्रगामी हाथियों की एक लाख अनीक थी उस रथों की अनीक के साथ मगध का राजा चला और सेना के मध्यवर्त्ती रथों के पहियों की और हाथियों के पैरों की रक्षा करनेवाले साठ लाख धनुष खड्ग, ढाल धारण किये हुए नख और प्रास नाम आयुधों से लड़नेवाले लाखों पदाती आगे को चले। हे महाराज, धृतराष्ट्र! इस प्रकार से आपके पुत्र की ग्यारह अक्षौहिणी सेना ऐसी देख पड़ी जैसे कि गङ्गा में यमुना अन्तर्गत होकर दीखती है॥ १८॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सैन्यवर्णनं नामाष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

उन्नीसवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि, पाण्डव युधिष्ठिर ने व्यूहरची हुई ग्यारह अक्षौहिणी सेना को देखकर किस प्रकार से अपनी थोड़ी सी सेना से व्यूह की रचना की। हे संजय! जो युधिष्ठिर कि मनुष्य, देवता, गन्धर्व और असुरसम्बन्धी व्यूहों को जानता है उस कुन्ती के पुत्र ने किस प्रकार से अपने व्यूह को रचा। संजय बोले कि धर्मात्मा धर्मराज पाण्डव युधिष्ठिर दुर्योधन की व्यूह रची हुई सेना को देखकर अर्जुन से बोला कि हे तात, अर्जुन! बृहस्पति महर्षि के वचनों से हम जानते हैं कि थोड़ी सेना को मिलाकर लड़ावे और बहुतसी सेना को इच्छापूर्वक कहलावे बहुत से मनुष्यों से लड़ने में थोड़े मनुष्यों की सेना का सूचीमुख होय इसी प्रकार हमारी सेना थोड़ी है और शत्रुओं की अधिक है सो हे अर्जुन! महर्षि के इस वचन को जानकर सेना का व्यूह रच यह सुनकर अर्जुन युधिष्ठिर से बोला कि हे राजेन्द्र! मैं इस तेरी सेना

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

के व्यूह की वह रचना करता हूं जो इन्द्र की नियत करी हुई वज्ररूप अचल नाम है जो वह लड़ाई में वायु के समान उठा हुआ शत्रुओं से असह्य प्रहार करनेवालों में मुख्य और युद्ध के विचारों में कुशल पुरुषोत्तम भीमसेन सम्पूर्ण सेना के पक्षों को विदीर्ण करता हुआ हमारे आगे आगे चलेगा और सब कौरव लोग जिनका अग्रवर्ती दुर्योधन है वह सब कौरवी सेना भीमसेन को देखकर ऐसे लौटेगी जैसे कि सिंह को देखकर छोटे छोटे मृगों के यूथ भागते हैं हम सब निर्भय होकर उस प्रहारकर्ताओं में श्रेष्ठ परकोटारूप भीमसेन के समीपी होकर ऐसे रक्षा लेंगे जिस प्रकार से देवता इन्द्र की रक्षा में होते हैं ऐसा मनुष्य इस लोक में कोई नहीं है जो इस क्रोधरूप भयकारी भीमसेन को देख सके ऐसा कहकर उस महाबाहु अर्जुन ने इसी प्रकार से किया और बड़ी शीघ्रता से अर्जुन व्यूह की रचना करके चला गया तिस पीछे गङ्गाजी के समान पूर्ण और अचल पाण्डवों की सेना कौरवों को देख कर कुछ चलायमान हुई इस सेना के अधिपति भीमसेन, पराक्रमी धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव और राजा धृष्टकेतु थे उसके पीछे राजा विराट एक अक्षौहिणी सेना और भाई बन्धु पुत्रों समेत भीमसेन की रक्षा के निमित्त पीछे की ओर हुए और भीमसेन के रथ की रक्षा करने को नकुल और सहदेव दोनों भाई नियत हुए और उनके पीछे द्रौपदी के पुत्र अभिमन्यु, रक्षा करनेको उपस्थित हुए और पाञ्चाल देशीय महारथी धृष्टद्युम्न शूरों की सेना का और प्रभद्रकनाम रथों का रक्षक हुआ और हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! इन सबके पीछे अर्जुन से रक्षित भीष्मजी के मारने में कुशल शिखण्डी चला और अर्जुन के पीछे रक्षा के लिये महाबली युयुधान हुआ और रथ के पहियों की रक्षा के लिये पाञ्चाल देशीय युधामन्यु और उत्तमौजा यह दोनों हुए । केकयदेशवासी धृष्टकेतु और पराक्रमी चेकितान भी साथ हुए और भीमसेन वज्रसारमयी दृढ़ गदा को धारण किये बड़े वेग से चलता हुआ समुद्र को भी शोषण करनेवाला था । हे राजन् ! उसके पीछे अर्जुन भीमसेन से यह वचन बोला कि हे भाई, भीमसेन ! तुम्हारे देखने को मन्त्रियों समेत धृतराष्ट्र के पुत्र वर्तमान होकर नियत हैं तुम इनको अपना अतुल पराक्रम दिखाओ ऐसे वचनों के कहनेवाले अर्जुन को युद्धभूमि में देखकर सब सेना ने अपने अनुकूल वचनों से उसको पूजा और कुन्ती का पुत्र शू[illegible] युधिष्ठिर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सेना के मध्य में चलायमान पर्वत के समान मतवाले हाथियों से संयुक्त था इन सबके पीछे पाञ्चालदेशीय बड़ा साहसी पराक्रमी यज्ञसेन राजा एक अक्षौहिणी सेना समेत राजा विराट के पीछे चला जिसके रथों पर सूर्य, चन्द्रमा के समान प्रकाशित उत्तम सुवर्ण के आभूषणों से अलंकृत अनेक प्रकार की चिह्नवाली बड़ी बड़ी ध्वजा वर्तमान थीं तदनन्तर महारथी धृष्टद्युम्न ने सेना को हटाकर भाई बेटों समेत युधिष्ठिर को रक्षा में किया और हे धृतराष्ट्र! तेरे पुत्रों के और अन्य राजाओं के रथोंपर जो बड़ी बड़ी ध्वजा थीं उन सबको तिरस्कार करके अर्जुन की ध्वजा पर श्रीहनुमान्‌जी अपने अनेक भारों को लिये वर्तमान हुए बरछी, यष्टि आदि के रखनेवाले लाखों पदाती रक्षा करने के लिये भीमसेन के आगे आगे चले और गण्डस्थलों से मद डालनेवाले बली महाबली सुनहरी जालों से शोभित अकम्पी बादल से मद बरसानेवाले बहुमूल्यवाले वर्षाकालीन मेघों के रूप कमल की सी गन्धवाले दश हज़ार मदोन्मत्त हाथी राजा के पीछे चले उस काल महासाहसी दुराधर्ष परिघ के समान भयानक गदा को धारण किये हुए बड़े प्रबल भीमसेन ने बड़ी भारी सेना को खैंचा तब उस सूर्य के समान दुःख से देखने योग्य सेना के तपाने वाले भीमसेन के सन्मुख आकर वह सब सेना समीप से उसके देखने में असमर्थ हुई और वह वज्र नाम निर्भय सब ओर को मुख रखनेवाला भयंकर व्यूह बड़ी भारी ध्वजारूप बिजली से संयुक्त गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन से रक्षित हुआ हे राजन्! तेरी सेना के सन्मुख पाण्डव लोग जिस व्यूह को रचकर वर्तमान हैं वह व्यूह चारों ओर पाण्डवों से रक्षित होकर इस लोक में महादुर्धर्ष है अर्थात् उसका विजय करनेवाला कोई नहीं दिखाई देता है, सूर्योदयी संध्या के समय सब सेना के नियत होने पर विना बादल आकाशीय जलकण रखनेवाला महाप्रचण्ड वायु का वेग चला। कङ्कड़ों की खींचनेवाली पृथ्वीसम्बन्धी महावायु चली उसके कारण बड़ीभारी धूल ऐसी उड़ी कि जिससे सम्पूर्ण संसार आच्छादित होगया उस समय महाशब्द वाले पूर्व को मुख किये उग्र उल्कापात हुए और उदय होनेवाले सूर्य को घात करके फैल गये इसके पीछे फिर सब सेना के तैयार होने के समय सूर्य का उदय प्रकाश से रहित हुआ और शब्दों के कारण पृथ्वी कम्पायमान हुई और अनेक प्रकार से हिलझुल कर जहां तहां फट भी गई और सब दिशाओं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

में हवाओं के परस्पर टक्करखाने से बड़े बड़े भयानक शब्द हुए ऐसी भारी कठिन धूल उड़ी कि कुछ भी नहीं जान पड़ता था फिर अकस्मात् वायु से कम्पायमान सुनहरी माला वा उत्तम वस्त्रों समेत क्षुद्रघण्टिकावाले जालों से मण्डित प्रकाशमान ध्वजाओं का ऐसा झंझणी शब्द हुआ जैसा कि ताल-वृक्ष के वन में होता है। हे भरतर्षभ ! इस प्रकार से वह युद्ध को शोभा देने वाले पुरुषोत्तम हाथ में गदा लिये हुए भीमसेन को आगे नियत देखकर आपके पुत्र की सेना सन्मुख में व्यूह को रचकर हमारे वीरों की मज्जा को निगल जानेवालों के समान नियत हुई ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वण्येकोनविंशतितमोऽध्यायः ॥ १९ ॥

बीसवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि, हे संजय! सूर्योदय होने पर भीष्मजी के आज्ञावर्ती मेरे पुत्र अथवा भीमसेन से रक्षित पाण्डव लोगों में से युद्धाभिलाषी सेना के सन्मुख लड़ने को कौन कौन प्रसन्न मन हुए किसके पीछे तो वायुसमेत सूर्य और चन्द्रमा हुए और किनकी सेना को फाड़नेवाले श्वान आदि पशुओं ने भूंका और कौन से वीरों का प्रसन्न मुख था यह सब यथातथ्य संपूर्णता के साथ मुझ से कहो संजय बोले कि हे महाराज, भरतवंशिन्! बराबर सन्मुख जानेवाली दोनों व्यूहित सेना प्रसन्नरूप चित्रित वन की पङ्क्ति के समान प्रकाशित हाथी घोड़े रथों से युक्त महाभयानक और क्षमारहित क्रोधाग्निरूप स्वर्ग के विजय के लिये उत्पन्न सत्पुरुषों से सेवित अर्थात् सत्पुरुषों के निवासस्थान थीं उस समय धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव तो पश्चिमाभिमुख और युद्धाभिलाषी पाण्डवलोग पूर्वाभिमुख नियत हुए इन दोनों में कौरवों की सेना तो दैत्येन्द्र की सेनाके समान थी और पाण्डवों की सेना देवेन्द्र की सेना के समान थी उस समय में पाण्डवों के तो पीछे की अनुकूल वायु चली और धृतराष्ट्र के बेटों की सेना को कुत्ते भूंकते थे और हे धृतराष्ट्र ! तुम्हारे पुत्रों के हाथी गजेन्द्रों की उत्कटमदवाली गन्ध को न सहसके और कौरवों के मध्य में वन्दी मागधों से स्तुतिमान कमलवर्णरूप सुनहरी अम्बारी और जालवाले मदोन्मत्त हाथी पर दुर्योधन सवार हुआ, जिसके शिर पर चन्द्रमा के समान प्रकाशित छत्र और सुवर्ण की माला प्रकाशमान थी और गन्धार का राजा शकुनी सब गन्धारियों और पहाड़ियों समेत उसको सब ओर से घेरे हुए जाता था, और

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्वेतछत्र श्वेतधनुष श्वेतखड्ग और श्वेत ही पगड़ी पहरे हुए श्वेतपर्वत के समान श्वेत ही घोड़ों समेत पाण्डुवर्ण की ध्वजायुक्त होकर वृद्ध पितामह भीष्मजी सब सेना के आगे जाते थे उनकी सेना में आपके सब बेटे बाह्लीकों का एक देश, शल, अम्बष्ठ, सिन्धु के राजा लोग, सौवीर और पञ्चनद के सब शूरवीर थे और महाबली धनुष हाथ में लिये महात्मा गुरु द्रोणाचार्यजी लाल घोड़े के लाल ही रथपर सवार पर्वत के समान अचल कौरव पाण्डव और अन्य बहुधा राजाओं के गुरु पीछे पीछे जाते थे और सब सेना के मध्य में वार्धक्षत्री, भूरिश्रवा, पुरुमित्र, जय, शाल्व, मत्स्य और केकयदेशवासी सब भाई और युद्धाभिलाषी सेना हाथियोंसमेत चली, तब महात्मा धनुर्धारी चित्रयोधी गौतम कृपाचार्यजी, शकजाति, किरात, यवन अर्थात् यूनानी राजा लोगों समेत सेना के उत्तर ओर को रक्षा करते हुए जाते थे और संसप्तक नाम दश हज़ार रथी जो कि अर्जुन की मृत्यु वा विजय करने के लिये उत्पन्न किये थे वह त्रिगर्त देशीय अस्त्रज्ञ शूरवीर लोग जिधर की ओर अर्जुन था उस दिशा की ओर जाते हुए । हे भरतवंशिन् ! आपके हाथी भी एक लाख से ऊपर थे और हर एक हाथी के साथ सौ रथ और प्रत्येक रथ के साथ सौ सौ घोड़े और हर घोड़े के पीछे दश दश धनुषधारी और हर एक धनुषधारी के साथ दश दश मनुष्य थे । हे भरतवंशिन् ! इस प्रकार से भीष्मजी ने आपकी सेना को तैयार किया, शन्तनु के बेटे प्रभु भीष्मजी ने प्रतिदिन की विद्यमानता में मानुष, दैव, गान्धर्व, आसुर नाम चारों प्रकार के व्यूहों को अच्छी रीति से रचकर युद्ध के बीच धृतराष्ट्र के पुत्रों का व्यूह बड़े बड़े रथों के समूहों से समुद्र के समान विस्तृत और शब्दायमान पूर्व की ओर को रचा । हे महाराज ! आपकी सेना बहुत रूप और ध्वजासंयुक्त होने से ऐसी महाभयानक है जिस का मैं केशवजी और अर्जुन की सहायतावाली पाण्डवों की सेना से भी बड़ी कठिनता से धर्षणा के योग्य समझता हूं ॥ १६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सैन्यवर्णनं नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ।

संजय बोले कि कुन्ती के बड़े बेटे राजा युधिष्ठिर ने दुर्योधन की बड़ी सेना को अत्यन्त उद्यत जानकर बड़ी व्याकुलता को पाया और भीष्मजी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

के रचे हुए अभेद्य व्यूह को जानकर कि यह अभेद्य है महाभयभीत रूपान्तरदशा में होकर अर्जुन से कहा कि हे महाबाहो, अर्जुन! युद्ध में धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ हम लोग युद्ध करने को कैसे समर्थ हो सक्ते हैं जिनकी ओर से युद्ध करनेवाले भीष्मपितामह हैं इन महातेजस्वी शत्रुहन्ता भीष्मजी ने शास्त्रोक्त देखी हुई विधि के अनुसार बड़ी सावधानी से इस अभेद व्यूह को रचा है हे शत्रुहन्ता, अर्जुन! हम सब सेनासमेत व्याकुल होते हैं इस महाभारी व्यूह से हमारी कैसे विजय होगी। हे राजन्, धृतराष्ट्र! आपकी सेना के देखने से व्याकुल हुए युधिष्ठिर की इस बात को सुनकर अर्जुन बोला कि हे राजन्, युधिष्ठिर! थोड़े से भी बुद्धिमान् शूरवीर गुणी पुरुष बहुत भारी सेना को विजय करते हैं ऐसा निश्चय जानो हे राजन्! वहां एक एक के छिद्रों को देखता है इसका भेद मैं तुमसे कहूँगा इस कारण को नारद ऋषि, भीष्मपितामह, द्रोणाचार्यजी यह तीनों जानते हैं हे निष्पाप, युधिष्ठिर! पूर्व समय में देवता और असुरों के युद्ध में ब्रह्माजी ने इस प्रयोजन को मानकर महेन्द्र आदि देवताओं से कहा है कि विजय के चाहनेवाले पराक्रमी पुरुष बल पराक्रम से ऐसी विजय नहीं कर सक्ते जैसी कि सत्यता, दया और एक धर्म से विजय करते हैं। धर्म, अधर्म और लोभ को जानकर उत्तम धर्मयुक्त अहंकाररहित होकर युद्ध को करो जहां धर्म है वहां ही विजय है हे राजन्! जैसा कि नारदजी ने कहा है उसी प्रकार चित्त में सदैव जानो कि हमारी ही विजय होगी अर्थात् नारदजी ने कहा है कि जिधर श्रीकृष्णजी हैं उधर ही विजय होगी क्योंकि विजय श्रीकृष्णजी के पास दासरूप होकर पीठ की ओर से सन्मुख होकर स्तुति करती है जिस रीति से इनकी विजय है उसी प्रकार नम्रता आदि उसके दूसरे गुण हैं श्रीगोविन्दजी अत्यन्त तेजस्वी शत्रुओं के समूहों से अधर्ष सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्यापक सनातन सच्चिदानन्दरूप हैं इससे जिधर श्रीकृष्ण हैं उधर ही विजय निश्चय है कि पूर्व समय में यह माया से पृथक् अच्छेद्य आयुध रखनेवाला हरिरूप प्रकट होकर देवता और असुरों को अपनी वज्रसमान वाणी से चेताकर यह वचन बोला था कि कौन विजय करता है उसके उत्तर में जिन्होंने यह कहा कि श्रीकृष्णजी की सहायता से विजय करते हैं वहां उन्हीं लोगों ने विजय की और इन्द्रादि देवताओं ने उसकी कृपा से तीनों लोकों को पाया। हे भरतवंशिन्! ऐसी पीड़ा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

में तुझमें नहीं देखता हूँ जिसकी विजय को विश्व का भोक्ता और स्वर्ग का ईश्वर चाहता है ॥ १७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि युधिष्ठिरअर्जुनसंवादे एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

बाईसवां अध्याय ।

संजय बोले कि हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! इसके पीछे भीष्मजी के सन्मुख राजा युधिष्ठिर ने अपनी व्यूहित सेना को उपस्थित किया, फिर धर्मयुद्ध से उत्तम स्वर्ग के चाहनेवाले कौरवों के पोषण करनेवाले पाण्डवों ने गुरु की आज्ञा के अनुसार सेना को यथायोग्य स्थान पर नियत किया । मध्य में अर्जुन से रक्षित शिखण्डी की सेना हुई और आगे चलता हुआ धृष्टद्युम्न भीमसेन से रक्षित हुआ और इन्द्र के समान धनुषधारी श्रीमान् युयुधान से दक्षिण की सेना रक्षित हुई और राजा युधिष्ठर हाथियों की सेना में महेन्द्र की सवारी के स्वरूप सुन्दर सामग्रीवाले सुवर्ण और रत्नों से जटित सुनहरी कलशयुक्त रथ पर नियत हुआ इसका श्वेतछत्र हाथीदांत की यष्टि पर शोभित अत्यन्त ऊंचा देदीप्यमान था महर्षि लोग स्तुति को करते हुए इस महाराज के दक्षिण चलनेवाले हुये। पुरोहित लोग और शास्त्रज्ञ ब्रह्मऋषि अथवा सिद्ध पुरुष मन्त्र जप और बड़ी बड़ी ओषधियों समेत इसका स्वस्त्ययन पढ़ते हुए शत्रु के मरण को उच्चारण करते हैं तदनन्तर वह कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर सुन्दर वस्त्र, गौ, फल, फूल और सुवर्ण मुद्रा को ब्राह्मणों के अर्थ दान और भेटों को करता हुआ देवेश्वर इन्द्र के समान चला और अर्जुन का रथ मणियों के जटित होने से हजारों सूर्य के समान प्रकाशमान और सैकड़ों घण्टालियों से चिह्नित उत्तम जाम्बूनद नाम सुवर्ण से मढ़ा अग्नि के समान किरणों से युक्त श्वेत घोड़े और सुन्दर पहियों से शोभित है वह गाण्डीव धनुषधारी हाथ में बाण रखनेवाला कपिध्वज जिसकी समान धनुषधारी पृथ्वी में न कोई है न होगा वह अर्जुन केशवजी को पकड़े हुए रथ पर विराजमान है। वह तेरे पुत्र की सेना को मर्दन करता हुआ बड़े भयकारी रूप को धारण करता है और जो कि अशस्त्र भी सुन्दर भुजदण्डयुक्त युद्ध के मध्य में अपनी महाभुजाओं से ही मनुष्य और हाथियों को मर्दन करता है वह वृकोदर भीमसेन अपने छोटे भाई नकुल सहदेव समेत शूरवीर अर्जुन के रथ का रक्षक है, उस महासिंहरूप चाल [illegible]नेवाले लोक में महेन्द्र के समान दुराधर्ष सेना के आगे वर्तमान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महाबली भीमसेन को देखकर तुम्हारी सेना के मनुष्य ऐसे कम्पायमान हुए जैसे कि कीच में फँसे हुए हाथी भयभीत होते हैं उस गजेन्द्र के समान गर्व से भरे हुए भीमसेन को देखकर आपके शूरवीर लोग चित्त से भयभीत होकर मन से हार गये और हे राजन् ! तब सेना में वर्तमान दुराधर्ष अजेय राजकुमार अर्जुन से जनार्दन श्रीकृष्णजी यह वचन बोले कि, हे अर्जुन ! जिस भीष्म ने अपने क्रोध से सेना को संतप्त किए हुए बल में नियत सिंहरूप होकर हमसे बचाया है वह भी भीष्म कौरव-कुल की ध्वजा है जिसने कि तीनसौ अश्वमेध यज्ञ किये, यह सब सेना इस को ऐसे घेरे हुए है जैसे कि सहस्रकिरणवाले सूर्य को बादल घेर लेते हैं। हे पुरुषों में बड़े वीर, अर्जुन ! तुम इन सेनाओं को मारकर भरतवंशियों में श्रेष्ठ भीष्मजी के साथ युद्ध करने की इच्छा करो ॥ १७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि कृष्णार्जुनसंवादे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

तेईसवां अध्याय ।

संजय बोले कि हे राजन् ! युद्ध के निमित्त सन्मुख वर्त्तमान दुर्योधन की सेना को देखकर श्रीकृष्णजी अर्जुन के अभीष्ट सिद्ध करने के लिये यह वचन बोले कि हे महाबाहो, अर्जुन ! तुम युद्ध के सन्मुख वर्तमान होकर बड़ी पवित्रता से शत्रुओं की पराजय के लिये श्रीदुर्गाजी के स्तोत्र का पाठ करो। संजय बोले कि इस प्रकार वासुदेवजी की आज्ञा को सुनकर पाण्डव अर्जुन ने रथ से उतरकर हाथ जोड़कर युद्धभूमि में आगे लिखे हुए दुर्गाजी के स्तोत्र को पढ़ा ॥

स्तोत्र ।

अर्जुन उवाच—ॐ नमस्ते सिद्धसेनानि आर्ये मन्दारवासिनि ।
कुमारिकालिकापालि कपिले कृष्णपिङ्गले ॥ १ ॥
भद्रकालि नमस्तुभ्यं महाकालि नमोस्तु ते ।
चण्डिचण्डे नमस्तुभ्यं तारिणि वरवर्णिनि ॥ २ ॥
कात्यायनि महाभागे करालि विजये जये ।
शिखिपिच्छध्वजधरे नानाभरणभूषिते ॥ ३ ॥
अट्टशूलप्रहरणे खड्गखेटकधारिणि ।
गोपेन्द्रस्यानुजे ज्येष्ठ नन्दगोपकुलोद्भवे ॥ ४ ॥
महिषासृक्प्रिये नित्यं कौशिकि पीतवासिनि ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अट्टहासे कोकमुखे नमस्तेस्तु रणप्रिये ॥ ५ ॥
उमे शाकम्भरि श्वेते कृष्णे कैटभनाशिनि ।
हिरण्याक्षि विरूपाक्षि सुधूम्राक्षि नमोस्तु ते ॥ ६ ॥
वेदश्रुतिमहापुण्ये ब्रह्मण्ये जातवेदसि ।
जम्बूकटकचैत्येषु नित्यं सन्निहितालये ॥ ७ ॥
त्वं ब्रह्मविद्या विद्यानां महानिद्रा च देहिनाम् ।
स्कन्दमातर्भगवति दुर्गे कान्तारवासिनि ॥ ८ ॥
स्वाहाकारः स्वधा चैव कला काष्ठा सरस्वती ।
सावित्री वेदमाता च तथा वेदान्त उच्यते ॥ ९ ॥
स्तुतासि त्वं महादेवि विशुद्धेनान्तरात्मना ।
जयो भवतु मे नित्यं त्वत्प्रसादाद्रणाजिरे ॥ १० ॥
कान्तारभयदुर्गेषु भक्तानां पालनेषु च ।
नित्यं वससि पाताले युद्धे जयसि दानवान् ॥ ११ ॥
त्वं जम्भनी मोहिनी च माया ह्रीः श्रीस्तथैव च ।
संध्या प्रभावती चैव सावित्री जननी तथा ॥ १२ ॥
तुष्टिः पुष्टिर्धृतिर्दीप्तिश्चन्द्रादित्यविवर्द्धिनी ।
भूतिर्भूतिमतां संख्ये वीक्ष्यसे सिद्धचारणैः ॥ १३ ॥
संजय उवाच—ततः पार्थस्य विज्ञाय भक्तिं मानववत्सला ।
अन्तरिक्षगतोवाच गोविन्दस्याग्रतः स्थिता ॥ १४ ॥
देव्युवाच—स्वल्पेनैव तु कालेन शत्रूञ्जेष्यसि पाण्डव ।
नरस्त्वमसि दुर्धर्ष नारायण सहायवान् ॥ १५ ॥
अजेयस्त्वं रणेऽरीणामपि वज्रभृतः स्वयम् ।
इत्येवमुक्त्वा वरदा क्षणेनान्तरधीयत ॥ १६ ॥
लब्ध्वा वरं तु कौन्तेयो मेने विजयमात्मनः ।
आरुरोह ततः पार्थो रथं परमसङ्गतम् ।
कृष्णार्जुनावेकरथौ दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः ॥ १७ ॥
य इदं पठते स्तोत्रं कल्ये उत्थाय मानवः ।
यक्षरक्षः पिशाचेभ्यो न भयं विद्यते सदा ॥ १८ ॥
न चापि रिपवस्तेभ्यः सर्पाद्या ये च दंष्ट्रिणः ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

न भयं विद्यते तस्य सदा राजकुलादपि ॥ १६ ॥
विवादे जयमाप्नोति बद्धो मुच्येत बन्धनात्।
दुर्गं तरति चावश्यं तथा चौरैर्विमुच्यते ॥ २० ॥
संग्रामे विजयो नित्यं लक्ष्मीं प्राप्नोति केवलम्।
आरोग्यबलसंपन्नो जीवेद्वर्षशतं तथा ॥ २१ ॥ इति।
एतदृष्टं प्रमादात्तु मया व्यासस्य धीमतः।
मोहादेतौ न जानन्ति नरनारायणावृषी ॥ २२ ॥

मैंने बुद्धिमान् व्यासजी की कृपा से यह देखा है लोग अपने मोह से इन दोनों नर, नारायण ऋषियों को नहीं जानते हैं आपके सब पुत्र दुरात्मा और अभिमानी हैं यह वचन समय के अनुसार हैं कि वह सब काल के फन्दे में फँसे हुए हैं। व्यासजी, नारद, कण्व, परशुराम, नभ इन सब ऋषियों ने आपके पुत्र को बहुत निषेध किया परन्तु इसने उस बात को स्वीकार नहीं किया। जहां धर्म है वहीं तेज की कान्ति है और जहां काम है वहां लक्ष्मी है। इसीप्रकार जिधर मुनि लोग हैं उधर ही धर्म है और जिधर श्रीकृष्ण हैं उधर ही विजय है ॥२८॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि दुर्गास्तोत्रं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

चौबीसवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि, हे संजय! उस युद्धभूमि में किधर के शूरवीर अतिप्रसन्न मन होकर लड़ते हुए स्थिरचित्त हैं और किधर के दुःखी मन होकर उद्विग्न-चित्त हैं और युद्ध के बीच मेरे पुत्रों में से अथवा पाण्डवों में से प्रथम किसने हृदय का कँपानेवाला प्रहार किया। हे संजय! इसको मुझसे वर्णन करो और किसकी सेनाओं में सुगन्धयुक्त पुष्पमालाओं के उदय में अत्यन्त गर्जना करनेवाले शूरों के वचन उत्तम साहस प्रकट करनेवाले हैं। संजय बोले कि वहां दोनों सेनाओं के शूरवीर प्रसन्न हैं और बराबर माला हैं और दोनों सेनाओं में सुगन्धता फैल रही है। हे भरतर्षभ! व्यूहरचित परस्पर मिली हुई मिलाप से बड़ा रूप धारण करनेवाली सेनाओं का रंग रूप बदल गया और शङ्ख और भेरियों से मिले हुये परस्पर के शब्द और युद्धभूमि के बीच परस्पर गर्जनेवाले शूरवीर पुरुषों के भी शब्द सब स्थान में फैल गये। हे धृतराष्ट्र! दोनों सेनाओं के बीच परस्पर देखनेवाले शूरवीर और गर्जनेवाले हाथी और प्रसन्नचित्त सेना के चित्तों में बड़ा खेद हुआ ॥ ७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि धृतराष्ट्रसंजयसंवादे चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पचीसवां अध्याय ।

श्रीमद्भगवद्गीता प्रारम्भ ।

श्रीगणेशजी को नमस्कार करके, ब्रह्मादि देवताओं को प्रणाम करके अपने सद्गुरु के चरणों को नमस्कार करता हूँ जिनकी कृपा वा अनुग्रह से इस भगवद्गीता का अपनी बुद्धि के अनुसार भाषानुवाद करता हूँ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय ! धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में मिले हुए युद्धाभिलाषी मेरे पुत्रों ने और पाण्डवों ने क्या क्या काम किये । संजय बोले कि हे राजन्, धृतराष्ट्र ! उस समय राजा दुर्योधन पाण्डवों की व्यूह रची हुई सेना को देख कर द्रोणाचार्यजी से यह वचन बोला कि हे आचार्यजी ! द्रुपद के बेटे आपके शिष्य धृष्टद्युम्न से व्यूह रची हुई पाण्डवों की बड़ी सेना को देखो, इस सेना में बड़े धनुषधारी युद्ध में कुशल भीमसेन और अर्जुन के समान जो जो वीर हैं उनके नाम यह हैं युयुधान, विराट, महारथी द्रुपद, धृष्टकेतु, चेकितान, पराक्रमी काशिराज, पुरुजित, कुन्तिभोज, नरोत्तम शैब्य, पराक्रमी युधामन्यु, विक्रान्त तथा उत्तमौजा सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु, द्रौपदी के पांचो पुत्र यह सब महारथी हैं ।

जो शस्त्रविद्या में कुशल धनुषधारी अकेला ही ग्यारह हज़ार शूरवीरों से युद्ध करे वह महारथी कहाता है और जो अकेला असंख्य वीरों से युद्ध करे वह अतिरथी है और जो एक ही से लड़े वह रथी कहाता है इससे कम को अर्धरथी कहा है—और हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! हमारे जो विशिष्ट लोग हैं उनके भी नामों को सुनो । आप, भीष्म, कर्ण युद्ध के विजय करनेवाले कृपाचार्य, अश्वत्थामा, विकर्ण, सोमदत्त का पुत्र भूरिश्रवा, जयद्रथ आदि अनेक शूर हैं वह सब मेरे निमित्त जीवन के त्यागनेवाले नाना प्रकार के शस्त्रों के धारण करनेवाले सबके सब युद्ध में बड़े कुशल हैं और चारों ओर से भीष्मजी से रक्षित हमारी सेना अधिक होने के कारण दुराधर्ष है और भीमसेन से रक्षित पाण्डवों की सेना न्यून होने के हेतु से धर्षणा के योग्य है अपने आपही सब लोग अपने अपने सब मोरचों पर यथाविभाग स्थित होकर भीष्मजी की ही चारों ओर से रक्षा करते हैं और कौरवों में वृद्ध प्रतापवान् भीष्मजी ने सिंहनाद के समान शंखध्वनि को किया । तदनन्तर शंख, भेरी, ढोल, आनक, गोमुख इत्यादि बाजे चारों ओर से बजे और महाशब्द हुए उसके पीछे श्वेत घोड़ों

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

से जुते हुए बड़े रथ पर सवार होकर माधवजी और पाण्डव अर्जुन ने दिव्य शंखों को बजाया अर्थात् हृषीकेश श्रीकृष्णजी ने पाञ्चजन्य नाम शंख और अर्जुन ने देवदत्त नाम शंख को बजाया और कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर ने अनन्तविजय नाम शंख को और नकुल, सहदेव इन दोनों ने सुघोष और मणिपुष्पक नाम शंखों को बजाया और बड़े धनुषधारी काशिराज, महारथी शिखण्डी और धृष्टद्युम्न, विराट और विजयी सात्यकी, द्रुपद और द्रौपदी के पांचो पुत्र, महाबाहु अभिमन्यु इन सबोंने सब ओर से पृथक् पृथक् शंखों को बजाया इन सब शंखों के महाशब्दों से धृतराष्ट्र के पुत्रों के हृदय विदीर्ण से होगये और पृथ्वी से आकाशपर्यन्त शब्द व्याप्त होगया तदनन्तर वानरध्वज अर्जुन धृतराष्ट्र के पुत्रों को व्याकुल और अच्छे प्रकार से नियत देख कर शस्त्रों के प्रहार जारी होने के समय धनुष को उठाकर सब जगत् के स्वामी हृषीकेश श्रीकृष्णजी से यह वचन कहने लगा कि हे अविनाशिन्, कृष्णजी ! मेरे रथ को दोनों सेनाओं के मध्य में नियत करो प्रथम मैं इन युद्ध में स्थिर शूरवीरों को देखूं कि इस युद्ध के आरम्भ में मुझको किससे वा किसको मुझ से लड़ना उचित है जो यह राजा लोग इस दुर्बुद्धि दुर्योधन की सहायता करने को यहां आये हैं इन सब युद्धाभिलाषियों को मैं देखूं संजय बोले कि इस प्रकार से अर्जुन के वचनों को सुन कर श्रीकृष्णजी अर्जुन के रथ को दोनों सेनाओं के मध्य में नियत कर भीष्म, द्रोणाचार्य आदि सब राजाओं के सन्मुख यह वचन बोले कि हे अर्जुन ! इन मिले हुए कौरवों को देखो वहां पर अर्जुन भूरिश्रवा आदि पितारूप और भीष्मपितामहादिक पितामहस्वरूप और आचार्य और शल्य आदि मामा आदि और दुर्योधन आदि भाई और लक्ष्मण आदि पुत्र और लक्ष्मण के पुत्र आदि प्रपौत्रों को और अश्वत्थामा आदि मित्रों को और कृतवर्मा आदि श्वशुर और सुहृदों को दोनों सेनाओं के मध्यवर्ती इन सब बान्धवादि को अपने नेत्रों से देख कर बड़ी करुणा से यह वचन बोला कि हे श्रीकृष्णजी ! इन युद्धाभिलाषी सुजन, सुहृद्, पिता, पितामह, गुरु, भाई, बन्धु और पुत्र, पौत्रादिकों को अपने सन्मुख युद्ध करने के निमित्त नियत देखकर मेरे अङ्ग शिथिल होते हुए मुख में शुष्कता होकर शरीर में कम्प और रोमाञ्च खड़े होते हैं हाथ से गाण्डीव धनुष गिरा पड़ता है और शरीर की त्वचा भस्म हुई जाती है यहां

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खड़े होने को भी असमर्थ होकर मेरा चित्त चलायमान होता है और हे कृष्णजी ! मैं विपरीत शकुनों को भी देखता हूं युद्ध में अपने सुजन लोगों को मारकर पीछे से अपना कल्याण नहीं देखता हूं हे श्रीकृष्णजी ! मैं विजय करके राज्य-सम्बन्धी सुखों को नहीं चाहता हूं राज्य से हमको क्या लाभ है ? और जीवन करके भोगों से क्या फल होगा ? हम जिन लोगों के लिये राज्यसुख और भोगों को चाहते हैं वही सब लोग अपने प्राण धन आदि सुखों का त्याग करके इस युद्ध में वर्त्तमान हैं अर्थात् आचार्य, पिता, पितामह, मामा, श्वशुर, पोते, साले, बहनोई इत्यादि अनेक नातेदार लोग युद्ध में जीवन की आशा छोड़े हुए वर्तमान हैं । हे मधुसूदनजी ! मैं त्रिलोकी के भी राज्य के लिये इन मारने वालों को भी नहीं मारना चाहता हूं तो क्या पृथ्वी के लिये इनको मारूंगा, हे जनार्दनजी ! धृतराष्ट्र के भी पुत्रों को मारकर हमको क्या सुख होगा ? इन आततायियों को भी मारने से हमको पाप ही होगा (अग्नि लगानेवाला, विष देनेवाला, धन का चुरानेवाला, क्षेत्र का हरनेवाला, स्त्री का हरनेवाला, यह सब आततायी होते हैं इनके विषय में लिखा है कि इन आततायियों को विना ही विचार के मारडालना योग्य है इन आततायियों के मारने में कुछ पाप नहीं होता है परन्तु अर्जुन कहते हैं कि ऐसों के भी मारने में हमको पाप ही होगा सो यह अर्थशास्त्र का वचन है और धर्मशास्त्र का यह वचन है कि किसी जीवमात्र को न मारे और अर्थशास्त्र से धर्मशास्त्र अधिक बलवान् है) इस कारण हम अपने बान्धव धृतराष्ट्र के पुत्रों के मारने को योग्य नहीं हैं हे माधवजी ! हम सुजनों को मारकर कैसे सुखी होंगे ? यद्यपि लोभाकर्षित चित्त होकर यह लोग कुल के नाशरूप दोष को और मित्रों के साथ शत्रुता करने के पातक को नहीं देखते हैं । हे जनार्दनजी ! कुल के नाश होने से उत्पन्न दोषी देखनेवाले हम लोगों को इस पाप से अलग रहना क्यों नहीं चाहिये ? कुल के नाश में कुल के परम्परासम्बन्धी कुलधर्म भी नष्ट होते हैं और धर्म के नष्ट होने से सम्पूर्ण कुल अधर्मी होजाता है और अधर्म अधिक होने से कुल की स्त्रियां दोषयुक्त होजाती हैं । हे वृष्णिवंशिन्, श्रीकृष्णजी ! दुष्ट स्त्रियों में वर्णसंकर उत्पन्न होता है कुल के नाश करनेवालों के घराने का वर्णसंकर नरक ही के लिये है उनके पितृलोग पिण्ड जल आदि क्रिया के लुप्त होजाने से स्वर्ग से गिरते हैं तात्पर्य यह है कि वेद के अनुसार दूसरे का उत्पन्न हुआ पुत्र कभी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मन से भी अपना न मानना चाहिये कुल के नाश करनेवाले पुरुषों के इन वर्ण-संकर करनेवाले दोषों के कारण प्राचीन कुलधर्म जाते रहते हैं। हे श्रीकृष्णजी! जिनके कुलधर्म लोप होगये हैं उन मनुष्यों को सदैव नरक का निवास होता है यह बड़े लोग कहते आये हैं बड़े दुःख और पश्चात्ताप की बात है कि हम उन बड़े पाप करने के निश्चय करनेवाले हुये जो राजसुख के निमित्त अपने सुजनों को लोभ से मारने को उद्यत हुये जो धृतराष्ट्र के पुत्र शस्त्रधारी होकर मुझ अशस्त्रधारी सन्मुखता से रहित को मारें तो मेरा बड़ा कल्याण होवे संजय बोले कि इस प्रकार शोकग्रस्तचित्त अर्जुन युद्ध में ऐसे करुणा-पूर्वक वचनों को कहके धनुष बाण को रखकर रथके पृष्ठभाग में बैठगया॥

इति श्रीभीष्मपर्वणि भगवद्गीतासूपनिषत्सु श्रीकृष्णार्जुनसंवादे प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

भगवद्गीता

दूसरा अध्याय।

संजय बोले कि स्नेहयुक्त कृपा से भरे हुये अश्रुपातसमेत व्याकुल और दुःखी अर्जुन को जानकर मधुसूदन श्रीकृष्णजी यह वचन अर्जुन से बोले कि हे अर्जुन! इस युद्ध में ऐसा मोह तुझको काहे से उत्पन्न हुआ यह मोह स्वर्ग रोकनेवाला और अपकीर्ति का प्रकट करनेवाला है ऐसे मोहको नपुंसक लोग करते हैं इससे हे अर्जुन! तू नपुंसक मत हो यह तुझको उचित नहीं है हे शत्रुहन्ता, अर्जुन! हृदय की इस क्षुद्र दुर्बलता को त्याग करके खड़ा होजा यह सुनकर अर्जुन बोले कि हे मधुसूदनजी! मैं युद्ध में द्रोणाचार्य और भीष्म-पितामह के सन्मुख उनसे शस्त्रों के द्वारा कैसे लड़ूं हे शत्रुघ्न, कृष्ण! वह दोनों मेरे पूज्यतम हैं बड़े प्रभाववाले गुरुओं को न मारकर इस लोक में भिक्षा का ही अन्न खाना उत्तम है और अर्थ के चाहनेवाले गुरुओं को मारकर इस लोक में रुधिर से भरे हुये भोगों को भोगेंगे और यह भी हम नहीं जानते कि हम गुरुओं को विजय करेंगे वा गुरु हमको विजय करेंगे और हम जिनको मार-कर जीवन के इच्छावान् नहीं हैं वह धृतराष्ट्र के बेटे सन्मुख वर्त्तमान हैं हे कृष्ण! मैं दीनतायुक्त दूषित प्रकृतिवाला धर्म में असावधानचित्त होकर आप से पूछता हूं कि जो आपने मेरे निमित्त कल्याण निश्चय किया है उसको कृपा करके मुझसे कहिये क्योंकि मैं आपका शिष्य हूं आप अपनी शरणा-गतता में मुझको उपदेश कीजिये। पृथ्वी पर वृद्धियुक्त निर्विभाग शत्रुतारहित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथवा धन आदि से परिपूर्ण राज्य को और देवताओं की प्रभुता को भी पाकर इन्द्रियों का सुखानेवाला जो मेरा शोक है उसके दूर होने का मैं कोई भी उपाय नहीं देखता हूं शत्रुओं का संतप्त करनेवाला अर्जुन श्रीकृष्णजी से यह वचन कहकर कि युद्ध नहीं करूंगा मौन होगया। यह दशा देखकर दोनों सेनाओं के मध्य में हँसते हुये श्रीकृष्णजी अर्जुन को अत्यन्त दुःखी जान कर यह वचन बोले कि अर्जुन, जो शोक के योग्य ही नहीं हैं उनको तू शोचता है और पण्डितों के वचनों को कहता है परन्तु पण्डित लोग उन पुरुषों को जिनके कि शरीर छूट गये अथवा शरीर में प्राण नियत हैं अर्थात् आत्मा के अविनाशी होने से नहीं सोचते हैं मैं कभी नहीं हुआ और तुझ समेत यह सब राजा लोग भी कभी नहीं हुये न इसके पीछे हम सब उत्पन्न होंगे यह बात नहीं है क्योंकि हम सब अविनाशी आत्मारूप तीनों कालों में वर्तमान हैं जैसे कि शरीरवान् चैतन्य आत्मा के स्थूल शरीर में बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था यह तीनों दशा होती हैं इसी प्रकार से स्थूल शरीर के सिवाय सूक्ष्म और कारणरूप अन्य शरीर की प्राप्ति है वहां ज्ञानी पण्डित मोह को नहीं पाता है अर्थात् आत्मा को शरीर से पृथक् अविनाशी और आदि अन्त से रहित जानता है। हे कुन्तीपुत्र, अर्जुन! इन्द्रियों की वृत्तियों के शब्दादि विषय देखना, खाना, सूंघना और शीतोष्णता आदि सुख दुःख के देनेवाले उत्पत्ति नाशयुक्त सब विनाशवान् हैं इस से हे भरतर्षभ! तू इनको क्षमाकर हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! जिस सुख दुःख में एक से रहनेवाले ध्यानी और योगी पुरुष को यह पीड़ा नहीं देते हैं वह मोक्ष के योग्य समझा जाता है, अभावरूपी जड़ चैतन्य जगत् का सम्भव होना भी नहीं है और सत्‌रूप ब्रह्म का अभाव वर्त्तमान नहीं है तत्त्वदर्शी अर्थात् मूलवस्तु के ज्ञाताओं ने इन दोनों का तत्त्व अर्थात् असली सिद्धान्त यही देखा है कि सिवाय आत्मा के और कुछ भी नहीं वर्त्तमान है और यह जो जगत् देख पड़ता है वह स्वप्न के समान मिथ्या है, उस सत् अर्थात् सत्य को जिससे कि यह जगत् व्याप्त हो रहा है अविनाशी जानो इस न्यूनतारहित आत्मा के नाश करने को कोई भी समर्थ नहीं है, यद्यपि इस लोक में असत् अर्थात् मिथ्यारूप जगत् को विनाशवान् वर्णन किया परन्तु अब व्यवहार में अर्जुन की कर्म में प्रवृत्त होने के लिये एक को अविनाशी और दूसरे को

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विनाशवान् कहते हैं अति प्राचीन निरवधि अविनाशी आत्मा के यह सब शरीर नाशवान् कहे हैं इस कारण से हे अर्जुन! तुम युद्ध में प्रवृत्त होजाओ अर्थात् अपने धर्म को मत त्यागो। जो पुरुष इस आत्मा को मारनेवाला समझता है और जो इसको मरा हुआ मानता है वह दोनों अज्ञानी हैं यह कभी न मरता है न कोई इसका मारनेवाला है अर्थात् जब कि श्लोक १६ वें के अनुसार केवल एकही अकेला आत्मा है तब द्वैतता न होने के कारण कर्ता-पन और कर्मपन उसमें कैसे सम्भव होसक्ता है। यह आत्मा न कभी उत्पन्न होता है न मरता है और न पहले उत्पन्न हुआ है न पीछे उत्पन्न होगा अर्थात् बारम्बार जन्म मरणादि से रहित है यह अजन्मा, आत्मा, नित्य और प्राची-नता के कारण सदैव एकरूप है अर्थात् रूपान्तररहित नाशवान् आकाशादिकों से प्रथम पुराणपुरुष है यह अनित्य देहों के मरने में नहीं मरता है, जो इस आत्मा को अविनाशी, नित्य, अजन्मा और न्यूनता से रहित जानता है वह सब शरीरों में पूर्ण आत्मारूप पुरुष कैसे किसी को मरवावेगा और किसको मारेगा अर्थात् जब पूर्व कहे हुये विशेषणों के अनुसार एकही आत्मा वर्त्त-मान है तब मारनेवाला और मरनेवाला कहांसे होसक्ते हैं, जैसे कि मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग करके नवीन वस्त्रों को धारण करता है इसी प्रकार आत्मा भी पुराने देहों को त्याग करकेदूसरे नवीन शरीरों को प्राप्त करलेता है जैसे कि वस्त्र देह से पृथक् होते हैं इसी प्रकार आत्मा सब मिथ्यारूप शरीरों से अलग है। इस आत्मा को न शस्त्र छेदसक्ते न अग्नि जलासक्ती, न जल गलासक्ता, न वायु सुखासक्ती है, क्योंकि यह आत्मा न छेदने के योग्य, न जलाने के योग्य, न गलाने के और न सुखाने के योग्य है। यह नित्यरूप सर्वत्र वर्त्तमान सदैव एकदशा में अचलरूप, प्राचीन, सनातन और अखण्ड है। यह गुप्त-रूप ध्यान से अगम्य और रूपान्तरदशा से पृथक् कहा जाता है इन हेतुओं से इसको ऐसा जानकर तुम शोच करने के योग्य नहीं हो अर्थात् भीष्म आदि तुम्हारे गुरु और अन्य सब लोग आत्मारूप हैं और उनके शरीर देह के वस्त्रों के समान आत्मा से पृथक् नाशवान् हैं इससे तू शोच मतकर तू इसको सदैव मरनेवाला और मारनेवाला मानता है। हे महाबाहो! जन्म लेनेवाले की मृत्यु भी अवश्य है और मरनेवाले का जन्म भी निश्चय है इस कारण अवश्य भावी है इसका कोई भी उपाय नहीं है इसमें तेरा शोच करना वृथा है, हे भारतवंशिन्!

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आकाशादि तत्त्व और उनकी रूपान्तरदशा जरायुज आदि अज्ञानरूप हैं अथवा आत्मारूप हैं और बीच ही में दृष्ट आकर आत्मा में ही लय होनेवाले हैं अर्थात् उनका आदि अन्त आत्मा है केवल बीच में ही स्वप्न के समान मिथ्यारूप देख पड़ते हैं ऐसे स्थान में विलाप क्यों करना चाहिये ? कोई तो उसको आश्चर्यरूप से मानता है और कोई आश्चर्य के समान देखता और कहता है और कोई उसको आश्चर्य के ही समान सुनकर नहीं जानता है अर्थात् वह आत्मा देखने, सुनने और कहने में नहीं आता है वह अपने को अक्षय मानता है हे अर्जुन ! यह आत्मा सबके शरीरों में नित्य और अवध्य है अर्थात् मर नहीं सक्ता है इस कारण हे तात ! तुम सब जीवधारियों के शोचने के योग्य नहीं हो, अपने धर्म को देखकर कांपना छोड़ दो क्योंकि धर्मयुद्ध के सिवाय क्षत्रिय का दूसरा कल्याणकारी नहीं है, हे अर्जुन ! विना इच्छा किये स्वर्ग का द्वार खुला हुआ वर्त्तमान है स्वर्गका सुख पानेवाले क्षत्रिय ऐसे युद्ध को पाते हैं, जो तू इस धर्मरूप युद्ध को नहीं करेगा तो अपने धर्म और कीर्ति को त्याग कर पापका भागी होगा । बहुत समय तक नियत रहनेवाले सब जीव तेरी अपकीर्ति को कहेंगे और प्रतिष्ठावान् पुरुष की अपकीर्ति मरण से भी अधिक दुःखदायी होती है और सब महारथीलोग तुझको भय के कारण युद्ध से हटा हुआ मानेंगे उन सब लोगों के आगे तू महान् स्तुतिमान् होकर निन्दायुक्त छुटाई और तुच्छता को पावेगा, और तेरे शत्रु तेरे पराक्रम की निन्दा करते हुये कहने के अयोग्य अनेक अनुचित बातों को कहेंगे । लज्जावान् को इससे अधिक और क्या दुःख होगा इसमें दोनों हाथ लड्डू हैं कि मरकर तो स्वर्ग को और विजय करके पृथ्वी के भोगों को भोगेगा हे अर्जुन ! इस कारण से तू युद्ध के निमित्त निश्चय करके उठ खड़ा हो । हानि, लाभ, जय, विजय समान करके युद्धके निमित्त तैयारी कर इसरीति के युद्ध में तू कभी पापका भागी नहीं होगा हे अर्जुन ! यह मैंने उपनिषद् और सांख्यसम्बन्धी ब्रह्मज्ञान तुझ से कहा अब इसी ज्ञान को कर्मयोग में वर्णन करता हूं इस ज्ञान में प्रवृत्त होकर हे अर्जुन ! तू कर्मबन्धन को त्याग करेगा, इस कर्मयोग में प्रारम्भ कर्म का नाश नहीं है और पाप भी नहीं है इस फल की इच्छारहित कर्मरूपी धर्म का थोड़ा भी करना बड़े भारी संसारी भय से रक्षा करता है, हे कौरवनन्दन ! इस कर्मयोग में तत्त्व के निश्चय करनेवाली बुद्धि एक ही है और

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जिनको तत्त्व का निश्चय नहीं है उनकी बहुत शाखा रखनेवाली अनेक बुद्धियां हैं हे अर्जुन ! वह तत्त्व निश्चय से रहित वेदवाद में प्रीति रखने वाले इच्छा से जीते हुये चित्त से स्वर्ग को उत्तम जाननेवाले अज्ञानी लोग पुष्पित वचनों के समान चित्तरोचक भोग ऐश्वर्य की प्राप्ति में साधनरूप जन्म, कर्म और फल के देनेवाले अथवा अग्निहोत्रादि की मूलक्रिया को अधिक रखनेवाले वेद के वचनों को कहते हैं और यह भी कहनेवाले हैं कि कर्म से उत्तम दूसरा मोक्ष और ज्ञान नहीं है भोग और ऐश्वर्य में प्रवृत्त चित्त और उस वचन से हरे हुये चित्त उन पुरुषों की समाधि में तत्त्व की निश्चयात्मिका बुद्धि नहीं होती है अर्थात् जो विरक्त हैं उन्हीं की बुद्धि समाधि में चिन्मात्राकार होती हैं, तीनों गुणों का कार्य जो उत्तम, मध्यम और निकृष्ट गति हैं वही हैं विषय जिनके ऐसे कर्मकाण्ड को कहनेवाले वेद हैं हे अर्जुन ! तू तीनों गतियों से विरक्त है सुख, दुःख, मित्र, शत्रु, शीतोष्णता आदि द्वन्द्व गुणों से पृथक् सर्वत्र समबुद्धिवाला होकर सदैव धैर्यवान् वा शुद्ध सतोगुणवृत्तिवाले हो और मनोरथों की प्राप्ति और रक्षा से जुदा आत्मवान् हो जैसा कि बड़ी नदी वा सरोवर आदि में जितना जिसका प्रयोजन होता है उतना ही प्रयोजन विज्ञानी ब्राह्मण का सब वेदों में होता है अर्थात् वेद में कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड हैं, ब्रह्मज्ञानी को केवल ज्ञानकाण्ड से प्रयोजन होता है, ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिये कर्म में ही तेरा अधिकार है कर्म के फलों में कभी तेरा अधिकार न हो और तू कर्मफल का कारण भी मत हो और कर्म न करने में तेरा संग मत हो, कर्मों की सिद्धि और असिद्धि में समानबुद्धि होकर तू योग में नियत हो और अन्य अकर्मियों के संगों को छोड़कर कर्म को कर ऐसी समता को योग कहते हैं हे अर्जुन ! फल की इच्छा से किया हुआ कर्म ज्ञानयोग से अत्यन्त लघु है, बुद्धि में रक्षा वा शरण को चाहो जिनके जन्म मरण का कारण कर्मों का फल है वह दीन अर्थात् दुःखी होते हैं, इस लोक में बुद्धि से संयुक्त होकर पुण्य और पाप को त्याग करता है इस हेतुसे समतारूप बुद्धियोग में उपाय कर क्योंकि ज्ञानयोग ही कर्मों में चातुर्यता है शमता नाम बुद्धि से संयुक्त मन का निग्रह करनेवाला पुरुष कर्मजन्य फलों का त्याग करके जन्मबन्धन से छूटता है और निरुपाधि मोक्षपद को पाता है, जब तेरी मोहरूपी बुद्धि शुद्ध होगी तब तू

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुने हुए और सुनने के योग्य शास्त्रों से वैराग्य पावेगा और नानाप्रकार के शास्त्रों को सुनकर संदेहों से भरी हुई तेरी बुद्धि असादृश्य ब्रह्म में नियत होकर निर्विकल्प समाधि में अचल वर्तमान होगी तब विवेकरूप योग को पावेगा। अर्जुन बोले कि हे केशवजी! जिसकी बुद्धि शुद्ध ब्रह्म में नियत है और समाधि में वर्तमान है उसको लोग क्या कहते हैं? यह प्रथम प्रश्न है और वह बुद्धि में नियत होकर कैसे बोलता है? यह दूसरा प्रश्न है और कहां बैठता है? यह तीसरा प्रश्न है और कैसे विषयों को भोगता है? यह चौथा प्रश्न है, श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन! जब यह योग मन में वर्तमान होता है और सब इच्छाओं को त्याग करता है और आत्मा करके अपने ही में तृप्त होता है तब स्थिरबुद्धि कहा जाता है। दुःखों में व्याकुलतारहित मन और सुःखों में अनिच्छावान् राग, भय, क्रोध से पृथक् स्थिरबुद्धि मुनि कहा जाता है। अब दूसरे प्रश्न का उत्तर कहते हैं जो सर्वत्र धन, स्त्री, देह आदि में प्रीति न रखनेवाला शुभ पदार्थ को पाकर उस शुभ प्राप्त करने वाले की हर्ष से प्रशंसा नहीं करता है और उस अशुभ को पाकर दुःखी होकर अशुभ प्राप्त करनेवाले की निन्दा नहीं करता है उसकी बुद्धि स्थिर अर्थात् निश्चल है। अब तीसरे प्रश्न का उत्तर कहते हैं जब यह पुरुष सब प्रकार से इन्द्रियों को इनके शब्दादि विषयों से कछुवे के अङ्गों के समान खींचता है तब उसकी बुद्धि स्थिर समझी जाती है। निराहार अर्थात् इन्द्रियों से विषयों को न ग्रहण करनेवाले देहाभिमान से तो अत्यन्त दूर होजाते हैं परन्तु उनके विषयों का अनुराग निवृत्त नहीं होता इस निराहार अर्थात् विषयों के ग्रहण न करनेवाले की वह विषय-सम्बन्धी प्रीति भी परब्रह्म को देखकर अर्थात् अपरोक्ष ज्ञान के द्वारा दूर होजाती है। हे अर्जुन! शास्त्र और आचार्यलोगों से शिक्षित समाधि में उपाय करनेवाले पुरुष अर्थात् ज्ञानी मनुष्य की इन्द्रियाँ भी लुटेरों के समान चित्त को अत्यन्त चुराती हैं उन सबको अपने वशीभूत करके सावधान मन से मुझ जगत् के आत्मा को अत्यन्त प्रियतम माने और इन्द्रियों को आधीन करे उसकी बुद्धि स्थिर है। विषयवासनावालों के विषय ध्यान करने का संग इन्द्रियों पर होता है उसी संग से काम उत्पन्न होता है। काम से क्रोध, क्रोध से संमोह, संमोह से विभ्रम, स्मृति के भ्रंश से बुद्धि का नाश और बुद्धि के नाश से मरण होजाता

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

है। मनको स्वाधीन रखनेवाला योगी उन राग द्वेषों से पृथक् मन के स्वाधीन होनेवाली इन्द्रियों से विषयों के समीप घूमता है। वह अपने संकल्प विकल्परूपी कीचड़ के धोने से चित्त की शुद्धि को पाता है उस शुद्धि के होने से उसके सब दुःखों का नाश होता है और उस शुद्ध चित्तवाली बुद्धि मे वह ब्रह्म और आत्मा को एक जानता है तब उसकी बुद्धि अत्यन्त दृढ़ होकर स्थिर नियत होजाती है। संशय और विचार से रहित पुरुष की बुद्धि ब्रह्म और आत्मा की एकता जाननेवाली नहीं है अथवा जिसका चित्त सावधान नहीं है उसकी ब्रह्माकार अन्तःकरणवृत्ति प्रभावरूप भावना नहीं है और जिसके सब दुःख दूर नहीं हुये उसको ब्रह्मानन्दरूपी सुख कैसे होसक्ता है जिसकारण से मन उन विषयों में जानेवाली इन्द्रियों के पीछे पीछे चलकर कर्म में प्रवृत्त होता है उसी कारण से उसकी ब्रह्मसम्बन्धी बुद्धि को ऐसे हर लेता है जैसे कि जल में नौका को वायुदेवता हर लेता है ६७ हे महाबाहो! इस कारण से जिसकी इन्द्रियां सब प्रकार करके विषयों से पृथक् होती हैं उसकी बुद्धि स्थिर कहाती है, सब जीवों की जो ज्ञाननिष्ठारूप रात्रि है उसमें जितेन्द्रिय ज्ञानी जागता है और जिस रात्रि में सब अज्ञानी जीव जागते हैं वह ब्रह्मतत्त्व के देखनेवाले मुनि लोगों की रात्रि है अर्थात् ब्रह्मज्ञानी सदैव समाधि का अनुष्ठान करता हुआ परम गति को पाता है। पूर्व में विषयों का त्याग और इन्द्रियों को विषयों से अलग करना वर्णन किया उससे तो उसकी आत्मा से पृथक्ता सिद्ध हुई परंतु वेद में लिखा है कि यहाँ नानाप्रकार का कुछ नहीं है केवल एक है उसीको अब सिद्ध करते हैं जैसे कि चारों ओर जल से न्यूनाधिकता से रहित होने से अचल रहनेवाले समुद्र में उसीसे उत्पन्न होनेवाले जल प्रवेश करते हैं इसीप्रकार सब प्रकार की इच्छा जिस ब्रह्मज्ञानी में प्रवेश करती हैं वह शान्ति को पाकर ब्रह्मानन्द को पाता है परन्तु विषयों का चाहनेवाला नहीं पासक्ता है। अब चौथे प्रश्न का उत्तर कहते हैं—जो ज्ञानी पुरुष सब इच्छाओं को त्यागकर ममता और अहंकार से रहित होकर विषयों को भोगता है अर्थात् केवल देह के निर्वाह के निमित्त खान पान करता है वह ब्रह्मानन्दरूपी शान्ति को पाता है। हे अर्जुन! यह ब्रह्मज्ञानियों की निष्ठा है इसको प्राप्त करके कभी नहीं भूलता है इसमें स्थित होकर अन्तसमय में ब्रह्म को प्राप्त होता है, और जिसमें देवयान, पितृयान-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रूप गति नहीं होती है वह ब्रह्मज्ञानी भी ब्रह्मरूप होकर ब्रह्मपद को पाता है अर्थात् एकता के भाव को पाता है ॥ ७२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतासूपनिषत्सु श्रीकृष्णार्जुन-संवादे सांख्ययोगोनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तीसरा अध्याय।

अब सोलह अध्यायों में इस अध्याय की टीका करते हैं ॥

अर्जुन बोले कि, हे जनार्दनजी ! जो निष्काम कर्म से बुद्धि की उत्तमता आप मानते हैं तो मुझ भिक्षावृत्ति में प्रसन्न होनेवाले को भाई बन्धु आदि के मारनेवाले कर्म में क्यों लगाते हो ? आप कभी तो कहते हो कर्म कर और कभी कहते हो कि कर्मों को त्याग करके ज्ञानी और त्यागी हो इन मिले हुये वचनों से आप मेरी बुद्धि को मोह में डालते हो सो आप इन दोनों में से एकको निश्चय करो जिसके द्वारा मेरा कल्याण हो, श्रीभगवान् बोले कि हे निष्पाप ! मैंने प्रथम अध्याय में एक ही निष्ठा कही है वह ब्रह्मनिष्ठा इसी लोक में दो प्रकार की है माया और ब्रह्मविवेक के जाननेवाले अथवा आत्मा और अनात्मा के विवेक को जाननेवालों की निष्ठा ज्ञानयोग नाम के सहित है और सिद्धि वा असिद्धि समबुद्धिवाले योगियों की निष्ठा कर्मयोग नाम प्रकार के साथ है अर्थात् कर्मयोग नाम निष्ठा का फल ज्ञानयोग है, क्योंकि यज्ञादि कर्मों का प्रारम्भ करने से पुरुष ज्ञाननिष्ठा को नहीं पाता है और कर्मयोग से उत्पन्न चित्तशुद्धि के विना केवल त्याग अर्थात् संन्यास से ही मोक्षरूप सिद्धि को नहीं पाता है, कर्मजनित सिद्धि के विना मन का न जीतने वाला कोई पुरुष समाधि में भी बुरी वासना को करके एक क्षणमात्र भी नियत नहीं रहसक्ता है निश्चय करके सबलोग योगप्रकृति के सत्त्वादि गुणों से अर्थात् स्वभावजन्य राग द्वेष के कारण देह, मन, वचनसम्बन्धी कर्म करते हैं, जो रागादि भरे हुये चित्त से कर्मेन्द्रियों को स्वाधीन करके मन से इन्द्रियों के विषयों को स्मरण करता हुआ ध्यान के बहाने से एकान्त में बैठा है वह मिथ्या आचारवाला कहाजाता है अर्थात् कर्म करने के विना संन्यास-युक्त ध्यान से भी चित्त की शुद्धि नहीं होती है। हे अर्जुन ! जो पुरुष मन से ज्ञानेन्द्रियों को स्वाधीन करके निष्काम कर्मी हो कर्मेन्द्रियों से कर्मयोग का प्रारम्भ करता है वह पूर्व से भी श्रेष्ठ नर है तू नियम करके संध्योपासनादि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कर्मों को कर सब कर्मेन्द्रियों के रोकने और कर्म के विना चित्तशुद्धि न होने से कर्म ही श्रेष्ठ है और चित्तशुद्धि होनेपर भी तुझ कर्म न करनेवाले क्षत्रिय की शरीरयात्रा भी सिद्ध नहीं होसक्ती क्योंकि भिक्षा मांगने में क्षत्रिय का अधिकार नहीं है और स्मृतियों में लिखा है कि ब्राह्मण के चार आश्रम हैं, क्षत्रिय के वान-प्रस्थ तक तीन आश्रम हैं और वैश्य के गृहस्थतक दो आश्रम हैं। एक परमेश्वर के पूजन के लिये जो कर्म किया जाता है उससे स्वर्गादि की इच्छारूपी अन्य कर्मों में प्रवृत्त होकर यह लोक कर्मबन्धन में फँसनेवाला है। हे अर्जुन ! उस ईश्वर के आराधन के लिये तू निष्काम कर्मों को करके वर्णाश्रम के योग्य बातों को अच्छी रीति से कर। पूर्व समय में ब्रह्माजी ने सब सृष्टि को यज्ञों समेत उत्पन्न करके कहा कि इस यज्ञकर्म के द्वारा देवताओं को तृप्त करो और वह देवतालोग तुम्हारी वृद्धि करें और तुम परस्पर में वृद्धि पातेहुए परमकल्याण को पाओगे, निश्चय करके यज्ञों से पूजित और तृप्त किये हुए देवता तुमको तुम्हारी रुचि के अनुसार भोजन वस्त्रादि भोग देंगे। जो पुरुष उन देवताओं के दिये हुए भोगों को उन देवताओं के अर्पण न करके अर्थात् पञ्चयज्ञादिक कर्मों को न करके भोगता है वह निश्चय चोर है। वैश्वदेव आदि यज्ञों में शेष बचे अन्नादिको भोजन करते हुए उन सब हत्यारूप पापों से छूट जाते हैं जोकि स्मृतियों के अनुसार प्रति-दिन ओखली, चक्की, चूल्हा, जल रखने की पलहंडी और घरकी बुहारी आदि से होते हैं और जो केवल अपने ही निमित्त से भोजन को बनाते हैं वह पापी अपने पापों को भोजन करते हैं। वीर्यरूप अन्न से जीव उपजते हैं अथवा अन्न की उत्पत्ति वर्षा से है और वर्षा यज्ञों से होती है और मनुस्मृति में भी लिखा है कि अग्नि में होमी हुई आहुति सूर्य के समीप जाती है और सूर्य से वर्षा होती है, वर्षा से अन्न और अन्न से सृष्टि उपजती है और यज्ञ कर्मों से पैदा होनेवाला है, कर्म वेद से और वेद अविनाशी ईश्वर से उपजा जानो इस हेतु से सब देश काल में वर्तमानरूप ईश्वर में सब नियमों समेत वेद और यज्ञ नियत हैं अर्थात् गुणों का आलय ईश्वर है, सब जीवों के प्रारम्भ में वेद की प्रकटता उससे कर्म-ज्ञान और कर्मों के ज्ञान से कर्मों का अनुष्ठान और अनुष्ठानों से देवताओं की तृप्ति उससे वर्षा उससे अन्न, अन्न से जीवों की उत्पत्ति और उनको वेदों की प्राप्ति इस प्रकार से सदैव जारी रहनेवाले चक्र में जो नियत नहीं होता अर्थात् यज्ञादि कर्म नहीं क-रता है हे अर्जुन ! वह पापरूप जीवनसे इन्द्रियों में क्रीड़ा करनेवाला निरर्थक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जीता है, परन्तु जो मनुष्य आत्मा में प्रीति रखनेवाला आत्मा में तृप्त और आत्मा ही में संतुष्ट रहता है उसको निष्कामता के सिवाय कोई दूसरा कर्म करने के योग्य नहीं है। उस आत्मा में प्रीति रखनेवाले ज्ञानी का प्रयोजन किये हुए कर्मों से कुछ भी नहीं है क्योंकि उसको स्वर्ग आदि की इच्छा नहीं है और इसके विपरीत कर्म से भी उसको नरक आदि भी कुछ नहीं है अर्थात् उसको न पुण्य से कुछ फल की इच्छा है न पाप से नरक का भय रहता है और उसके सुखभोग रूप प्रयोजन का कोई सम्बन्ध किसी जीवमात्र से नहीं है इसी हेतु से तू कर्मफलों से पृथक् होकर सदैव करने के योग्य कर्मों को कर। फल की इच्छारहित कर्म करनेवाला पुरुष अन्तःकरण की शुद्धता से मोक्षपदार्थ को पाता है, युद्ध आदि कर्म करके ही लोग ज्ञाननिष्ठाको प्राप्त हुए कर्म के ही द्वारा जनकादि ने सिद्धि को पाया अर्थात् धर्म में लोक की संग्रह को देखता हुआ कर्म करने को योग्य है क्योंकि उत्तम पुरुष जो जो कर्म करते हैं उसी उसी कर्म को दूसरे मनुष्य भी करते हैं और वह श्रेष्ठ पुरुष जिस जिस बात को प्रमाण करते हैं उसीको संसार करता है। हे अर्जुन! तीनों लोक में मुझको कोई बात करने के योग्य नहीं है अथवा प्राप्त और अप्राप्त होनेके भी योग्य नहीं है परन्तु तौभी मैं कर्म ही को करता हूं। जो कदाचित् मैं आलस्य से कर्मों को न करूं तो हे अर्जुन! सब मनुष्य सब रीति से मेरे ही अनुसार चलने लगें अर्थात् कर्म करना छोड़ दें। जो मैं कर्मों को नहीं करूं तो यह सब लोक भ्रष्ट होजायँ और मैं भी वर्णसंकरोंका ईश्वर कहलाऊँ औरइन सब प्रजाओं का नाश करदूं। हे भरतवंशिन्! जैसे कि कर्मफल के चाहनेवाले अज्ञानी लोग कर्म को करते हैं उसी प्रकार कर्मफल के न चाहनेवाले ज्ञानीलोग लोकसंग्रह अर्थात् संसार को धर्म में नियत करने के लिये कर्म को करें। विद्वान् लोग कर्म में प्रवृत्त पुरुषों की बुद्धि को कर्म से पृथक् न करें अर्थात् कर्म करने से न हटावें, योगी होकर अच्छी रीति से आचरण करता हुआ सब कर्मों को करे और दूसरे से करावे सब प्रकार से प्रकृति के सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण से किये हुए कर्म होते हैं जो अहंकार से अज्ञानबुद्धि है अर्थात् आत्मा को असंग और रूपज्ञ नहीं देखता है और अपने को ही कर्त्ता मानता है। हे महाबाहो! वह पुरुष गुण और कर्म के विभाग की मुख्यता का जाननेवाला है अर्थात् आत्मा को इन सबसे पृथक् वा असंग वा ज्ञानरूप जानता है और यह मानकर कि इन्द्रियां विषयों में वर्तिनी हैं इससे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वह अपने को कर्मका कर्त्ता नहीं मानता है। प्रकृति के अहङ्कारादि गुणों से अज्ञानी पुरुष शरीरादिक गुण और कर्मों में आसक्त हैं उन आत्मज्ञान से रहित अल्पज्ञ शास्त्रार्थज्ञान में असमर्थ पुरुषों को आत्मज्ञानी कर्मनिष्ठा से न हटावे तो अज्ञानी वा मोक्ष का चाहनेवाला विवेकबुद्धि से सब कर्मों को मुझ सब के अन्तर्यामी में अर्पण करे इससे हे अर्जुन ! तू कर्मफल में आशा रहित और प्राप्तवस्तु को अपनी न माननेवाला होकर शोक से विगत होके युद्ध कर। जो मनुष्य मेरे इस मतपर काम करते हैं और श्रद्धावान् होकर उसमें दोषदृष्टि नहीं करते वह भी धर्म अधर्मरूप कर्मों से छूटजाते हैं। जो दोष लगानेवाले इस मेरे मतपर कर्म नहीं करते हैं उनको ब्रह्मज्ञान में अत्यन्त अज्ञानी, विवेक-रहित, स्वर्ग और मोक्ष से भ्रष्ट हुए जानो। ज्ञानवान् भी अपने पूर्वजन्म के धर्म अधर्मरूप संस्कारजन्य प्रकृति के अनुसार चेष्टा करते हैं सब जीवमात्र अपने स्वभाव के अनुसार कर्मकर्त्ता होते हैं और मैं भी पूर्वकर्म के अनुसार उन से कर्म कराता हूं परन्तु यह बात संभव है कि जो दोनों प्रकार की इन्द्रियों के विषयों में राग द्वेष अधिकता से नियत हैं तो उन दोनों के स्वाधीन न होवे। निश्चय है कि वह दोनों राग द्वेष इस मोक्ष चाहनेवाले के शत्रु हैं अपने धर्माश्रम के अनुसार अपना धर्म और गुण भी अच्छीरीति से किये हुए दूसरों के धर्म से श्रेष्ठ हैं अपने युद्धादि कर्मों में मरना बहुत उत्तम है और दूसरे का भिक्षावृत्ति आदि धर्म महाभयकारी है दूसरा अभिप्राय यह भी है कि सत्त्वादि गुणों से रहित अपना धर्म अच्छेप्रकार से किये हुए परधर्म से अर्थात् इन्द्रियों के धर्म से श्रेष्ठतर है अपने ज्ञाननिष्ठारूप धर्म में मरना उत्तम है और इन्द्रियों का धर्म भय का देनेवाला है। अर्जुन बोले कि हे श्रीकृष्णजी ! फिर किससे संयुक्त किया हुआ यह पुरुष पापों को करता है और अनिच्छावान् होकर अपने बल से कर्म में प्रवृत्त हुआ ज्ञात होता है। श्रीभगवान् बोले कि यह इच्छा रजोगुण से उत्पन्न है यही क्रोधरूप होजाती है और यही इच्छारूप काम महाभोक्ता वा उग्ररूप भयकारी है इसको इस देह में महाशत्रुरूप ही जानो ३७ जैसे कि अग्नि धुएं से और दर्पण मैल से ढकजाते हैं और गर्भ जेर से ढका रहता है इसी प्रकार इस इच्छारूप काम से यह ज्ञान भी ढका हुआ है। हे अर्जुन ! इस ज्ञानियों के पुराने शत्रु और अग्नि के समान पूर्ण होने के अयोग्य इच्छारूप काम से ज्ञान ढका हुआ है, इस इच्छा का निवासस्थान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इन्द्रियां, मन, बुद्धि हैं और यह इच्छारूपी काम उन सबके साथ ज्ञान को ढककर देहाभिमानी पुरुषको अत्यन्त मोह और भ्रान्ति में डालता है इस कारण हे अर्जुन ! तुम प्रथम इन्द्रियों को स्वाधीन करके इस अत्यन्त भयकारी ज्ञान विज्ञान के नाश करनेवाले काम को मूल से नाश करो, इन्द्रियों को उत्तम कहा है इन्द्रियों से उत्तम मन, मन से उत्तम बुद्धि और जो बुद्धि से भी उत्तम है वह आत्मा कहाजाता है इस प्रकार परमात्मा को बुद्धि से श्रेष्ठ जान कर बुद्धि के द्वारा मन को नियत करके कठिनता से भी नाश न होनेवाले कामरूप शत्रु को मारडाल ॥ ४३ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु श्रीकृष्णार्जुन-संवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चौथा अध्याय।

श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन ! यह दो प्रकारवाला अविनाशी ज्ञान मैंने सूर्यदेवता से कहा था और सूर्य ने मनुजी से कहा और मनु ने इक्ष्वाकु से कहा। इसप्रकार से परंपरापूर्वक प्राप्त हुए इस योग को राजऋषियों ने जाना है हे शत्रुहन्ता, अर्जुन ! वह योग इस लोक में बहुत काल से गुप्त है उसी प्राचीन योग को अब मैंने तुझसे कहा है क्योंकि तू मेरा भक्त और सखा है। निश्चय करके यह उत्तमयोग गुप्त करनेके योग्य है अर्थात् अपने पुत्र को अथवा प्रीति से आकाङ्क्षी साधक को बताना और पढ़ाना चाहिये। अर्जुन बोले कि हे कृष्णजी ! आपका जन्म तो पीछे हुआ है और सूर्य का जन्म बहुत पहले हुआ है तो मैं यह कैसे जानूं कि आपने सृष्टि की उत्पत्ति के प्रारम्भ में कहा है। श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन ! मेरे और तेरे अनेक जन्म हुए हैं उन सब को मैं जानता हूं तू नहीं जानता है। मैं अजन्मा, अविनाशी, सब जीवमात्रों का आत्मा और ईश्वर भी होकर अपनी प्रकृति को स्वाधीन करके अपनी ही माया के साथ प्रकट होता हूं अर्थात् जिस प्रकार से जीव अपने कर्मों के अनुसार अविद्या और त्रिगुणात्मकरूप प्रकृति के स्वाधीन होकर जन्म धारण करते हैं इसप्रकार से मेरा जन्म नहीं है क्योंकि मैं कर्मबन्धन से छुटा हुआ त्रिगुणात्मिका माया से पृथक् हूं। हे भरतवंशिन् ! जब जब धर्म की न्यूनता और अधर्म की वृद्धि होती है तब मैं निराकार ज्योतिरूप अपने को प्रकट करके साधुओं की रक्षा और कुकर्मी पापात्माओं का नाश और धर्म के नियत करने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को प्रत्येक युग में प्रकट होता हूं। मेरा जन्म और कर्म दिव्य है अर्थात् बनावट का नहीं है जो इस प्रकार से मूलसमेत जानता है हे अर्जुन ! वह पुरुष शरीर को त्यागकर फिर जन्म नहीं लेता है अर्थात् मुझको प्राप्त होकर मुझी में लय होता है और जिनलोगों की विषयों में प्रीति वा अपने मरण का भय, अपने पराये दुःख से क्रोध इत्यादि बातें दूर होगई हैं और मुझी को श्रेष्ठ मानकर मेरी शरणागत होकर ज्ञानरूप तप से पवित्र हैं ऐसे अनेक योगी मेरे भाव को प्राप्त हुए हैं अर्थात् मुझ में लय हो गये हैं, जो पुरुष मुझ सर्वव्यापी को मित्रता वा शत्रुता के भाव से प्राप्त होते हैं मैं भी उनको उसी रीति से सन्मुख होता हूं। हे अर्जुन ! सब मनुष्य मेरी भक्ति और ध्यान आदि पर चलते हैं उन अपने रूपों को मैं सब रीति से प्राप्त होता हूं, दूसरा आशय यह है कि जो जैसे भाव से जिस जिस दशा में मुझको भजते हैं मैं उसी उसी प्रकार से उनपर अनुग्रह करता हूं क्योंकि वह सब प्रकार से मेरे ही मार्गपर चलते हैं अर्थात् अन्य देवताओं के भी भक्त मेरे ही भक्त हैं, इस नरलोक में कर्मों से उत्पन्न लक्ष्मी, धन, पुत्रादि सिद्धि शीघ्र होती है इस निमित्ति यहां कर्मों की सिद्धि जाननेवाले पुरुष जो देवताओं को पूजते हैं वह भी मेरे ही भक्त हैं, मैंने चारों वर्णों के अभीष्ट देनेवाले शम दमादि कर्म और शूरता आदि धर्म और खेती वा सेवा पालनादि कर्म और सत्त्वादि तीनों गुणों में सतोगुण प्रधान ब्राह्मण, सतोगुण के भाग संयुक्त और रजोगुण प्रधान क्षत्रिय, तमोगुण के भाग से संयुक्त और रजोगुण प्रधान वैश्य, रजोगुण के भाग से युक्त और तमोगुणप्रधान शूद्र इन चारों वर्णों को उन के गुण विभागों समेत उत्पन्न किया माया के योग से मुझको उनका भी स्वामी जानो और वास्तव में अविनाशी और अकर्त्ता जानो, क्योंकि कर्म मुझको स्पर्श नहीं करते हैं और न मेरी कर्मफल में इच्छा है जो पुरुष मुझको इस प्रकार से जानता है वह कर्मबन्धन को नहीं पाता है पूर्वसमय के मोक्ष चाहनेवाले ज्ञानियों ने इसीप्रकार से जानकर कर्मों को किया है इस कारण हे अर्जुन ! तूभी इस प्राचीन वृद्धों के किये हुए कर्म को कर। कर्म क्या है ? और अकर्म क्या है ? इसके जानने में पण्डितलोग भी मोह को प्राप्त होते हैं उन दोनों कर्म और अकर्मों को मैं तुझसे कहता हूं। जिनके जानने से तू इस अशुभ संसार से छूटजायगा। शास्त्रोक्त कर्म की गति भी जानने के योग्य है और शास्त्र से विरुद्ध कर्म भी जानने उचित हैं और अकर्म अर्थात् न करने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

की भी गति जाननी चाहिये क्योंकि कर्म की गति कठिन है, कर्म विकर्मरूप शरीर और इन्द्रियों का कर्म अविद्या से चैतन्य आत्मा में नियत करने पर जो पुरुष इस आत्मा में अकर्तापन को देखे वा सदैव कर्म करनेवाले त्रिगुणात्म देह और इन्द्रियों में आत्मा के अकर्त्ता होने पर जो पुरुष कर्मनाम प्रपञ्च को देखता है वह मनुष्यों में बुद्धिमान् महायोगी और सब कर्मों का करनेवाला है अर्थात् उसको कोई करना बाक़ी नहीं है और ज्ञानयोग का भी अधिकारी है, जिसके सब प्रारम्भ कर्म इच्छा और संकल्प से रहित हैं और ज्ञानरूप अग्नि से कर्मों को भस्म करदिया है उसको ज्ञानीलोग पण्डित कहते हैं कर्मफल को त्याग करके सदैव आत्मलाभ से सन्तुष्ट अहंकारादि से रहित है वह कर्म में अत्यन्त प्रवृत्त भी कुछ नहीं करता है; जो स्त्री आदि परिग्रहों से पृथक् योग ऐश्वर्यों को नहीं चाहता देह, मन, बुद्धि और सब इन्द्रियों का जीतनेवाला है वह केवल शरीर सम्बन्धी भिक्षादि कर्मों को करता हुआ पाप से रहित होता है बिना याचना के मिले हुए शिलोञ्छसे संतुष्ट, हर्ष शोक से रहित, दूसरे के लाभ में प्रसन्न होनेवाला और सिद्धि असिद्धि में रूपान्तरदशाके बिना कर्म करके भी बन्धन को नहीं प्राप्त होता है, असंग अर्थात् अपने को अकर्त्ता माननेवाले कर्मफल की इच्छा से रहित यज्ञादिक कर्मों को ईश्वरार्पण करनेवाले ज्ञाननिष्ठ लोगों के संपूर्ण कर्म नष्ट होजाते हैं, जिसमें सब कर्म लय होते हैं उसको विकल्प समाधिसमेत वर्णन करते हैं, अर्पण के साधनमन्त्रादिक ब्रह्मरूप ही हैं और अर्पण के हव्य घृतादिक भी ब्रह्म हैं जो होम किया गया है वह ब्रह्म में ही है जो अग्नि में होमा है वह ब्रह्म में है होम करनेवाला और करानेवाला दोनों ब्रह्म हैं जो यजमान ने हवन किया वह ब्रह्मने ही किया है, जो ब्रह्मकर्मरूप समाधि के द्वारा उस कर्म का फल मिलनेवाला है वह भी ब्रह्म ही है। कोई योगी दर्श वा पूर्णमास आदि देवयज्ञ की उपासना करते हैं १ कोई जीव यज्ञ को निरुपाधिरूप के द्वारा ब्रह्मरूप अग्नि में हवन करते हैं यह उत्तम ज्ञानयज्ञ है २ कोई योगी श्रोत्रादि इन्द्रियों को संयमरूप अग्नियों में हवन करते हैं ३ कोई शब्दादि विषयों को इन्द्रियरूप अग्नियों में हवन करते हैं ४ कोई योगी इन्द्रियों के सब कर्मों को वा प्राणों के सब कर्मों को मन और बुद्धि की उस संयमरूप अग्नि में जो ब्रह्मज्ञान से प्रकाशमान है हवन करते हैं अर्थात् लय करते हैं ५ इसीप्रकार वापी, कूप, तड़ाग, बाग, मन्दिर आदि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बनवाने यह द्रव्ययज्ञ हैं ६ और कृच्छ्रचान्द्रायण व्रतादि तपयज्ञ है और कर्मफल की इच्छा न करके संध्या आदिक कर्म करना निर्विकल्प समाधितक ७ अथवा यम, नियम, आसन, प्राणायाम, धारणा, ध्यान, समाधिरूप अष्टाङ्ग योग ये योग यज्ञ हैं ८ और सदैव वेदपाठन पठन में प्रीति रखना स्वाध्याययज्ञ है ९ और वेद के अर्थ को अच्छी रीति से समझकर ब्रह्म में तदाकार रहना यह ज्ञान है। इन यज्ञों के करनेवाले अथवा उपाय करनेवाले तेजव्रत हैं १० इसी प्रकार कोई कोई योगी अपान में प्राण को हवन करते हैं अर्थात् रेचक करते हैं और प्राण अपान की गति को रोक कर प्राणायाम में प्रवृत्त हैं ११ विषयों को स्वाधीन करनेवाले अर्थात् विषयों के आधीन न होनेवाले कोई कोई योगी मन इन्द्रिय को मन, चित्त, अहंकार में क्रमपूर्वक हवन करते हैं १२ तब इनकी समाधि सिद्धि होती है इन सब यज्ञों के प्राप्त करनेवाले भी अपने अपने यज्ञों के द्वारा पापों से निवृत्त होते हैं अर्थात् इन यज्ञों का फल पापों से पृथक् होना है पञ्चमहायज्ञ में शेष बचे हुए अमृत नाम अन्न के भोजन करनेवाले चित्तशुद्धि के द्वारा सनातन ब्रह्म को पाते हैं। हे कौरवों में श्रेष्ठ, अर्जुन ! यज्ञ न करनेवाले पुरुष का जब यही लोक नहीं है तो दूसरे परलोक आत्मलोक कहां से होसक्ते हैं ? इस प्रकार करके वेद के मुख से फैले हुए अनेक यज्ञ हैं उन सब कर्मों को देह, मन और वाणी से उत्पन्न हुआ जानकर तत्त्वज्ञान के द्वारा तू मुक्ति को पावेगा। हे शत्रुतापिन् ! जो द्रव्यमय यज्ञ देह इन्द्रिय आदि से होते हैं उनसे ज्ञानयज्ञ बड़ा श्रेष्ठ है क्योंकि सब कर्म अपने फलों समेत संपूर्णतापूर्वक ज्ञान में ही समाप्त होजाते हैं, उस ब्रह्मज्ञान को जानकर शास्त्र जाननेवाले वा अनुभव करनेवाले ज्ञानी तेरी दण्डवत् वा सेवा और पूरे प्रश्न के द्वारा उपदेश करेंगे । हे पाण्डव ! उस ब्रह्मज्ञान को जानकर फिर इसप्रकार मोह को नहीं पावेगा तदनन्तर उस ब्रह्मज्ञान के द्वारा ब्रह्मा से लेकर तृणपर्यंत जीवमात्र को अपने में और फिर मुझमें देखेगा, मोक्ष के चाहनेवाले का धर्म भी फल की इच्छा से पाप ही कहा जाता है जो सब पापों से भी अधिक पाप का करनेवाला है तौ भी ज्ञानरूपी नौका के द्वारा पापरूपी सब समुद्रों को तर जायगा, जैसे महाप्रबल अग्नि इन्धन को भस्म करदेती है उसीप्रकार ज्ञानरूपी अग्नि सब प्रारब्धादि कर्मों को मूलसमेत भस्म करडालती है, इसलोक में ज्ञानके सिवाय कोई पवित्रता वर्त्तमान नहीं है संध्या

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आदि निष्काम यज्ञों से पूरी शुद्धता पाकर उस ज्ञानको बहुत समय में अपने में पाता है, श्रद्धावान् वा उसमें प्रवृत्तबुद्धि अच्छा जितेन्द्रिय उस ज्ञान को पाता है और ज्ञानको पाकर प्रारब्धादि कर्मों के समाप्त होने में कैवल्य मोक्षरूप परा शान्ति को पाता है अज्ञानी श्रद्धा से रहित मन में सन्देह रखनेवाले नाशको पाते हैं चित्त में सन्देह रखनेवालों का न यह लोक है न परलोक है और न सुख है। हे अर्जुन! योग से कर्मफल के त्यागनेवाले अथवा कर्म को ही त्यागनेवाले ज्ञानसंशय से रहित शम दमादि के करनेवाले आत्मवान् को कर्म बन्धन नहीं करसक्ते हैं। हे भरतवंशिन्! इसीकारण इस अज्ञान से उत्पन्न हृदय में नियत अपने संशय को ज्ञानरूपी खड्ग से काटकर निष्काम कर्मयोग में नियत हो अर्थात् युद्ध के निमित्त खड़ा होजा॥ ४२॥

इति श्रीभीष्मपर्वणि भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मार्पणयोगोनाम चतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

पांचवां अध्याय।

अर्जुन बोले कि, हे श्रीकृष्णजी! आप सब कर्मों के त्याग को कहकर फिर योगकर्म करने को कहते हो इन दोनों में से कौनसा आपने श्रेष्ठतम निश्चय किया है? उसको मुझे समझाइये। श्रीभगवान् बोले कि कर्मों का त्याग और कर्मों का करना यह दोनों ज्ञान की उत्पत्ति के कारण हैं परन्तु इन दोनों में कर्म करने से कर्म का त्याग करना श्रेष्ठ है क्योंकि इसके द्वारा चित्त शुद्धि और वैराग्य दोनों प्राप्त होते हैं। हे महाबाहो! वह सदैव नियत रहने वाला संन्यासी जानने के योग्य है जो न इच्छा करता है, न अलग होता है और सत्य, मिथ्या व आत्मा, अनात्मा के विभाग व स्त्री आदि द्वन्द्वों से पृथक् है वह सुखपूर्वक माया के बन्धन से छूटता है। अज्ञानी पुरुष ब्रह्मज्ञान-रूप सांख्य और कर्म के अनुष्ठानरूप योग को पृथक् पृथक् कहते हैं पण्डित नहीं कहते हैं क्योंकि एकमें भी नियत दोनों के फलों को अच्छी रीति से पाता है अर्थात् कर्म के द्वारा चित्तशुद्धि होनेपर ब्रह्मकी प्राप्ति है और जब शुद्ध होने पर विना कर्मयोग के ब्रह्मज्ञान में नियत होना भी मोक्ष का ही कारण है, जो मोक्षरूप स्थान ज्ञानियों को प्राप्त होता है वह ज्ञान के द्वारा कर्मयोगियों को भी प्राप्त होता है ब्रह्मज्ञान और कर्मयोग यह दोनों एक ही हैं जो देखता है वही अच्छी रीति से समझता है इससे हे अर्जुन! विना कर्मयोग के संन्यास अर्थात् त्याग होना बड़ा कठिन है और कर्मयोग में प्रवृत्त हुआ मुनि थोड़े ही

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

समय में ब्रह्म को पाता है, जो निर्विकल्प समाधि नाम योग से संयुक्त है और जिसकी चैतन्य आत्मा वृत्ति सारूप्य दोष से रहित है और जिसने मन को जीतकर इन्द्रियों को जीता है और सब जड़ चैतन्य जीवमात्रों का आत्मारूप है वह कर्मों को करताहुआ भी उनसे असङ्ग और निर्लेप रहता है, तत्त्वज्ञ योगी देखता, सुनता, स्पर्शकरता, सूंघता, खाता, चलता, सोता, श्वासलेता, बोलता, त्याग करता, ग्रहण करता, आंखों को खोलता, मीचता भी यही मानता है कि मैं कुछ नहीं करताहूं यह सब इन्द्रियां अपने अपने विषयों में प्रवृत्त हैं और जो ज्ञानी कर्मों को ब्रह्म में धारण करके अथवा फलों को त्याग कर कर्मों को करता है वहभी पापों से संयुक्त ऐसे नहीं होता है जैसे कि कमल का पत्ता पानी से नहीं भीजता। योगी कर्मफल को त्याग करके चित्तशुद्धि के निमित्त ममता से रहित मन, वाणी, देह और इन्द्रियों के द्वारा भी कर्म को करते हैं, योगी कर्मफल को छोड़कर अर्थात् ईश्वरार्पण करके कैवल्य मोक्षरूप शान्ति को पाता है और अयोगी चित्त की इच्छा के अनुसार कर्मफल में प्रवृत्तचित्त होकर बारम्बार बन्धन में पड़ता है, चित्त को जीतनेवाला देहाधीश आत्मा नवद्वारवती पुरी में न करता न कराता हुआ सब कर्मों को मन से त्यागकर सुखपूर्वक बैठा है, चैतन्यात्मा प्रभु जड़रूप लोक के कर्तृत्व वा कर्मत्व और कर्मफल के सङ्ग को उत्पन्न नहीं करता है किन्तु जिसका जैसा स्वभाव है वह उसी प्रकार से कर्मों को करता है, वह व्यापक ईश्वर किसी के पाप पुण्य को नहीं लेता है अज्ञान से ज्ञान ढका हुआ है इसी कारण जीव मोह को पाते हैं अर्थात् भूले हुए हैं, जिन लोगों के आत्माका वह अज्ञान ज्ञान के द्वारा दूर होगया है उनका ज्ञान सूर्य के समान प्रकाशमान होकर परम आत्मतत्त्व को प्रकाशित करता है अर्थात् दिखलाता है, उस परमतत्त्व में बुद्धि वा आत्मा को लगानेवाले उसीमें निष्ठावान् और आश्रय करनेवाले योगी जिनके कि पाप ज्ञान से नाश हुए वह मोक्ष को पाते हैं, जो ब्रह्मज्ञानी पण्डित हैं वह विद्या और नम्रता से भरे हुए ब्राह्मण, गौ, हाथी, श्वान और चाण्डाल में समान ब्रह्म के देखनेवाले हैं, जिनका मन सब जीवमात्रों में ब्रह्मभावरूपी समता से नियत है वह इसी लोकमें अपने जन्म को सुफल करते हैं वह निश्चय करके ब्रह्मदोष से रहित समबुद्धि हैं इस समता बुद्धि से वह ब्रह्ममें ही नियत हैं इस कारण अपने अभीष्ट पुत्रादिकों को पाकर भी प्रसन्न न होय और दुःखदायी शत्रु को पाकर व्याकुल न होजाय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ब्रह्म में नियतबुद्धि और ध्यान के द्वारा उत्पन्न होनेवाले साक्षात्कार के मोह से रहित ब्रह्मज्ञ और ब्रह्म में नियत अर्थात् ब्रह्मभाव का प्राप्त करनेवाला होजाय। बाहर उत्पन्न होनेवाले स्पर्श अर्थात् विषय और इन्द्रियों के सङ्ग में चित्त न लगानेवाला पुरुष जो सुख आत्मा में पाता है वह ब्रह्मयोग में प्रवृत्तबुद्धि अर्थात् ब्रह्मज्ञानी मोक्षरूप अविनाशी सुख को पाता है। हे अर्जुन! विषयों के योग से उत्पन्न होनेवाले जो भोग हैं वह दुःख के उत्पत्तिस्थान हैं क्योंकि आदि अन्त अर्थात् उत्पत्ति नाश रखनेवाले हैं उनमें ज्ञानीपुरुष नहीं रमता है, जो मनुष्य इस लोक में देह-त्याग से प्रथम ही इच्छा से वा क्रोध से उत्पन्न होने वाले वेग को सहता है वही योगी है और सुखी है, जो आत्मा में सुख मानने-वाला विषयों से वैराग्यवान् है अथवा आत्माही में क्रीड़ा करनेवाला स्त्री आदि से रहित है और उसकी क्रीड़ा के सामान भी आत्मारूप हैं वह जीवन्मुक्त योगी देवयान पितृयान सम्बन्धी ब्रह्मको पाता है, जो पापों और संशयों से रहित सब जीवों के हितकारी हैं वह ब्रह्मज्ञानी ऋषि ब्रह्मनिर्वाण अर्थात् कैवल्य मोक्ष को पाते हैं और काम, क्रोध से रहित चित्त के जीतनेवाले ब्रह्मज्ञानी संन्यासी सब दशाओं में मोक्ष को बर्तते हैं ऊपर ब्रह्मनिष्ठा से शीघ्र होनेवाली मुक्ति कही अब ब्रह्मनिष्ठा के अन्तरङ्ग साधन को कहते हैं—आत्मा से बाहर उत्पन्न होनेवाले विषयों को बाहर करके अर्थात् धारण करके और नासिका के भीतर रहनेवाले प्राण और अपान को समान करके अर्थात् प्राणायाम करके जो मुनि इन्द्रिय, मन और बुद्धि का जीतनेवाला वा मोक्ष को उत्तमस्थान जाननेवाला इच्छा, भय, क्रोध से रहित है वह सदैव मुक्त है—इसप्रकार साव-धान चित्त ज्ञानी को क्या जानना चाहिये? उसको कहते हैं—उपाधियुक्त स्वामी देवरूप से यज्ञ और तपों के भोक्ता सबलोकों के पितामह मुझ अन्त-र्यामी को जानकर अर्थात् साक्षात्कार करके मेरे भाव को पाकर कैवल्य मोक्ष रूप शान्ति को पाता है॥ २६॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतासूपनिषत्सु श्रीकृष्णार्जुनसंवादे संन्यास-योगो नाम पञ्चमोऽध्यायः॥ ५॥

छठवां अध्याय।

श्रीभगवान् बोले कि जो कर्मफल का आश्रय न करनेवाला करने के योग्य कर्म को करता है वही संन्यासी है वही योगी है यद्यपि वह वेद और स्मृति-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सम्बन्धी अग्नि को और मन, वाणी, देह की क्रियाओं को त्याग करनेवाला नहीं है जिसको कि संन्यास कहते हैं। हे पाण्डव! उसको योग जान संकल्प को त्यागन करनेवाला कोई योगी नहीं होता है, ज्ञानयोग पर चढ़ने की इच्छा रखनेवाले मुनि का साधनकर्म कहा है अर्थात् फलरहित कर्म करने से ईश्वर का ज्ञान होता है और उसी ज्ञानयोग पर चढ़ेहुए का साधन कर्मों का त्याग-रूप संन्यास कहा है, जब सब संकल्पों का अच्छी रीति से त्याग करनेवाला कर्मयोगी इन्द्रियों के विषय और कर्मों में तदाकार नहीं होता है तब ज्ञान-योग पर चढ़ा हुआ कहा जाता है, आत्मा के द्वारा आत्मा को उद्धार करे कभी आत्मा का विनाश न करे अर्थात् मोक्ष के अधिकार से न गिरावे क्योंकि आत्मा ही आत्मा का बन्धु है पुत्र आदि आत्मा के बन्धु नहीं हैं और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है और कोई दूसरा शत्रु नहीं है, आत्मा का बन्धु मन है जिस मन के द्वारा चित्त को जीता है और जिसने चित्त को नहीं जीता उसका मन शत्रु के समान शत्रुता में नियत होताहै। शीतोष्णता, सुख-दुःख, मानापमान में निर्विकार चित्त महाशान्त योगी का मन बड़ी समाधि को पाता है, वह शास्त्रोपदेश से उत्पन्न बुद्धिरूप ज्ञान और विज्ञान से तृप्तचित्त मोक्ष के अधिकार से डिगायमान न होनेवाला अर्थात् निर्विकार होकर इन्द्रियों का जीतनेवाला लोहा, सोना, पत्थर आदि सबको समान जाननेवाला योग-सिद्ध पुरुष योगी कहा जाता है। प्रतीकारबुद्धि विना उपकार करनेवाला शत्रु मित्र में समभाव, प्रिय अप्रिय और साधु असाधु इन सबमें समान बुद्धि रखनेवाला एकाकी इन्द्रियों समेत देह मनका जीतनेवाला निरपेक्ष कथा पुस्तक आदि परिग्रहों से रहित योगाभ्यासी एकान्त में बैठा हुआ सदैव बुद्धि को आत्मा में लगावे, पवित्रस्थान में अपना ऐसा अचल आसन बिछाकर जो न बहुत ऊंचा न नीचा कुशाका बना हुआ अथवा कुशा के ऊपर मृगचर्म उसके ऊपर सूत्रवस्त्र बिछा हो विषयों को स्मरण करना आदि चित्त की क्रिया और इन्द्रियों की क्रियाओं को विजय करनेवाला योगी उस आसन पर बैठ कर मन को एकाग्र करके अन्तःकरण की अत्यन्त पवित्रता के लिये योग का अभ्यास करे अर्थात् अपनी वृत्ति की तरङ्गों को बन्द करे और मूलाधार से मस्तक तक सीधा और निश्चल नियत होकर अपने नासाग्र को देखता हुआ दिशाओं को न देखता बैठे और उस आसन पर बैठकर यह करे कि जो ब्रह्मचर्यव्रत में

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नियत योगी संन्यासी मुझ परमेश्वर में चित्त लगानेवाला अपने मन को स्वाधीन करके मुझको सर्वोत्तम जाननेवाला होवे, वह अत्यन्त शान्तचित्त अर्थात् सब भीतरी बाहिरी विषयों का त्याग करनेवाला निर्भय होता है, सदैव मनको जीतनेवाला योगी इस रीति से आत्मा को परमात्मा में एकता को करता हुआ मोक्षनिष्ठावाली शान्ति जोकि मुझ में वर्त्तमान है उसको पाता है। हे अर्जुन! बहुत भोजन करनेवाले का भी योग नहीं होता और बहुत कम खानेवाले का भी नहीं होता और अत्यन्त सोनेवाले का भी नहीं होता और जागनेवाले का भी नहीं होता, जिसका कि आहार, विहार योगरीति से है और कर्मों में भी चेष्टा योग्य है सोना जागना भी योग्य है उसका योग दुःखों का दूर करनेवाला होता है, जिसने निर्वाणरूप परमशान्ति को पाया है उसके सुन्दर लक्षण आगे के छह श्लोकों में वर्णन करते हैं अर्थात् जब अच्छी रीति से जीता हुआ चित्त आत्मा में ही नियत होता है और सब कामनाओं से इच्छारहित होता है वह योगी निर्विकल्प कहा जाता है; जैसे कि दीपक निर्वात-स्थान में रक्खा हुआ नहीं हिलता है वह चित्त जीतनेवाले और समाधिका अनुष्ठान करनेवाले योगी को कही हुई योगसेवा से, रुका हुआ एकाग्रचित्त जिस दशा में लय होता है अथवा जहां चित्त से आत्मा को निर्विकल्प देखता हुआ आत्मा ही में तृप्त होता है बाहर उत्पन्न होनेवाले विषयों में नहीं होता जो बड़ा ब्रह्मानन्द-रूप सुख इन्द्रियों से बाहर ब्रह्मज्ञानरूपी बुद्धि के द्वारा प्राप्त करने के योग्य है और इस सुख में नियत है वह ब्रह्म के सिवाय दूसरी वस्तु को नहीं जानता है और तत्त्व से पृथक् नहीं होता है। इस बड़े लाभ को पाकर उससे अधिक लाभ को नहीं मानता है और इसमें प्रवृत्तचित्त होकर पुरुष बड़े दुःखों के कारण से भी पृथक् नहीं किया जाता है, उसको दुःखों के संग का जुदा करनेवाला योग नाम जाने जिसका चित्त वैराग्य के द्वारा दुःख सुखादि का सहनेवाला है उससे वह योगशास्त्र आचार्य से प्राप्त हुए निश्चय समेत अनुष्ठान करने के योग्य है। संकल्प से उत्पन्न हुई सब इच्छाओं का सब वासनाओं समेत त्याग करके और चित्त के द्वारा इन्द्रियों के समूह को चारों ओर से रोककर अर्थात् सब विषयों से पृथक् करके अथवा धृति से स्वाधीन की हुई बुद्धि के द्वारा धीरे धीरे निवृत्त करे और उस मनको आत्मा में नियत करके अर्थात् आत्मारूप करके कुछ भी चिन्तवन न करे। यह चञ्चल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और अस्थिर मन जहां जहां विषयों में जावे वहां वहां से रोककर उसको आत्मा के स्वाधीन करे, इस अत्यन्त शान्तचित्त रजोगुणरहित धर्माधर्म से पृथक् ब्रह्मरूप योगी को ही उत्तम सुख की प्राप्ति होती है, अविद्या आदि क्लेशों से रहित योगी इस रीति से मन को स्वाधीन करता हुआ सुखपूर्वक ब्रह्मानन्दरूप अनन्तसुख को पाता है। अब दो प्रकार के योगफल को कहते हैं-योग से सावधान चित्त सब स्थावर जङ्गम जीवों में ब्रह्म का देखनेवाला योगी सब जीवों में वर्त्तमान अखण्ड ब्रह्मरूप आत्मा को और सब जीवमात्रों को आत्मा में देखता है, जो मुझको सब जीवमात्र में देखता है और सबको मुझमें देखता है मैं उससे कभी परोक्ष नहीं होता हूँ और वह भी मेरा परोक्ष नहीं है अर्थात् मुझमें उसमें पृथक्ता नहीं है जो योगी जीव ब्रह्म की एकता में नियत होके सब जीवों में वर्त्तमान मुझको निर्विकल्प समाधि के द्वारा भजता है वह योगी सबप्रकार के व्यवहारों को करता हुआ भी मुझ में वर्त्तमान है अर्थात् मुझसे कभी पृथक् नहीं होता है। जो योगी आत्मा की समता के कारण सब जीवों में सुख और दुःख को समान देखता है वह योगी उत्तम कहाता है। अर्जुन बोले कि हे मधुसूदनजी! आपने जो यह समतायुक्त योग वर्णन किया सो मैं मनकी चञ्चलता से उसकी बड़ी स्थिरता को नहीं देखता हूँ। हे श्रीकृष्णजी! यह चञ्चल मन बड़ा पराक्रमी और दृढ़ है उस मन का रोकना मैं वायु के समान महाकठिन मानता हूँ। श्रीभगवान् बोले कि हे महाबाहो, अर्जुन! निस्सन्देह यह मन बड़ा चञ्चल है इसका स्वाधीन होना बड़े कष्ट से भी नहीं होता है। हे अर्जुन! इस मन को अभ्यास और वैराग्य के द्वारा स्वाधीन करना योग्य है, जिसने चित्त को अच्छी रीति से न जीता उसको योग का मिलना बड़ा कठिन है यह मेरा मत है और मनको स्वाधीन करनेवाले वा उपाय करनेवाले को अभ्यास वैराग्यादिक उपायों से उसका प्राप्त करना सम्भव है। अर्जुन बोले कि हे श्रीकृष्णजी! कर्मयोग से मनको हटाकर श्रद्धायुक्त योगमार्ग में प्रवृत्त थोड़ा उपाय करनेवाला योग सिद्धि को न पाकर मृतक होके कौनसी गति को पाता है और हे महाबाहो, वासुदेवजी! वह कर्मयोग और ज्ञानयोग का आश्रय न करनेवाला अज्ञानी ब्रह्मप्राप्ति में नियत कर्मयोग ज्ञानयोग इन दोनों से गिराहुआ टूटे हुए बादल के समान नाशदशा को तो नहीं पाता है। हे श्रीकृष्णजी! अब इन मेरे सम्पूर्ण संदेहों को आप दूर करिये

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

क्योंकि आपके सिवाय इस संशय का दूर करनेवाला कोई नहीं विदित होता है। श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन ! इसलोक, परलोक में उसका किसी प्रकार से नाश नहीं है और हे तात ! कोई शुभकर्मी मनुष्य दुर्गति को नहीं पाता है योग से भ्रष्ट हुए अपने पुण्य से उत्पन्न लोकों को पाकर बहुत वर्ष तक निवास करके धनी लोगों के यहां उत्पन्न होता है अथवा वह पुरुष बुद्धिमान् योगियों के घराने में पैदा होता है, लोक में ऐसा जन्म होना भी दुर्लभ है। हे कौरवनन्दन ! वहाँ पूर्व देहसम्बन्धी उस बुद्धि संयोग को पाता है उसके पीछे वह बड़ी शुद्धि के निमित्त अनेक उपाय करता है, फिर वह स्वाधीनतारहित होने पर भी पिछले अभ्यास के कारण से खींचा जाता है क्योंकि योग जानने का इच्छावान् शब्द ब्रह्म को उल्लङ्घन करके कर्मकर्त्ता होता है फिर माता, पिता का रोकना कौन बात है, जो विषयों में बँधा हुआ बड़े उपाय से योगाभ्यास करने में प्रवृत्त होता है। अब उसकी गति को कहते हैं—बड़े बड़े प्राणायामादि उपाय करने से पापों से छूटा हुआ योगी बहुत से जन्मों में मोक्ष के योग्य होकर परम कल्याणरूप मोक्ष को पाता है। अब योगी की प्रशंसा करते हैं—कृच्छ्रचान्द्रायणादि व्रतों से वह योगी बड़े बड़े तपस्वियों से भी अधिक है क्योंकि वह शास्त्रज्ञ ज्ञानियों से और अग्निहोत्र आदि कर्म करनेवालों से भी अधिक माना गया है। हे अर्जुन ! इसीकारण से तू योगी हो, सब कर्मयोगियों में भी जो श्रद्धावान् मुझ वासुदेव में लगे हुए मनके द्वारा मुझको भजता है उसको मैं बड़ायोगी मानता हूँ ॥ ४७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु योगशास्त्रे श्रीकृष्णाऽर्जुन-संवादे अध्यात्मयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सातवां अध्याय ।

श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन ! मुझमें मन लगानेवाला और योगसमाधि का करनेवाला मेरे आश्रित होकर मुझ पूर्णब्रह्म को जैसे जानेगा उसको श्रवण करो मैं इस ज्ञान विज्ञान को सम्पूर्णतासमेत तुमसे कहता हूं जिसको जानकर जानने के योग्य दूसरा कोई विज्ञान शेष नहीं रहता है। हजारों मनुष्यों में कोई मोक्षरूप सिद्धियों के लिये उपाय करता है और उन उपाय करनेवाले सिद्धों में कोई कोई पुरुष मुझको मूलसमेत जानता है। अब ज्ञानसिद्धि के लिये सब चराचर प्रपञ्च के ज्ञानात्मक ब्रह्म प्रभुत्व का वर्णन करते हैं—प्रकृति शब्द से पृथ्वी आदि शब्द और उनके कारण से गन्ध और रस इत्यादि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जानने योग्य हैं क्योंकि प्रकृति के पृथ्वी आदि आठ प्रकार के विकार रूपान्तर हैं अर्थात् पृथ्वी में गन्ध, जल में रस, अग्नि में रूप, वायु में स्पर्श, आकाश में शब्द, मन में अहंकार, बुद्धि में महत्तत्त्व यह आठों प्रकार की प्रकृति मुझ से जुदी नहीं है अर्थात् उसकी उत्पत्ति मुझ ही से है और वह मुझ ही में ऐसे लय होती है जैसे कि रस्सी में सर्प की भ्रान्ति रस्सी ही में लय होजाती है। क्षेत्रात्मक प्रकृति को कहकर क्षेत्रज्ञात्मक पराप्रकृति को कहते हैं—जो ऊपर कही है वह प्रकृति जड़रूपता से अनुत्तम होकर अपर कहाती है और इससे दूसरी चैतन्यता श्रेष्ठ होकर पर प्रकृति कहाती है, क्षेत्रज्ञ नाम जीवरूप उस मुझसे सम्बन्ध रखनेवाले को जानों जिससे कि यह जगत् धारण किया जाता है, यह प्रकृति सब जीवों की उत्पत्तिस्थान और नाश करनेवाली है इसीसे मैं संसार की उत्पत्तिस्थान और लय होने का स्थान हूं इस कारण हे अर्जुन! वह प्रकृति मुझसे पृथक् नहीं है। हे कुन्तीपुत्र! मुझसे उत्तम दूसरा कोई नहीं है यह सब प्रपञ्च मुझ ही में ऐसे पुहा हुआ है जैसे कि सूत्र में मणि पुही होती हैं अर्थात् इस मिथ्यारूप प्रपञ्च से पृथक् हूं मेरी रूपान्तरदशा नहीं है, अगले वर्णन से सिद्ध होता है कि यह सब संसार ब्रह्म में इस रीति से कल्पित किया जाता है जिसप्रकार रस्सी में सर्प की भ्रान्ति होती है। हे अर्जुन! मैंही जल में, मैंही रस में अर्थात् मुझ रसरूप में जल पुरोहे हुए हैं और सूर्य, चन्द्रमा दोनों में प्रकाशरूप मैं हूं अर्थात् मुझ प्रकाशरूप में सूर्य चन्द्रमा पुरोहे हुए हैं और सब वेदों में प्रणव मैं हूं अर्थात् बीजरूप प्रणव हूं अर्थात् बीजरूपी प्रणव में सब वेद पुहे हुए हैं आकाश में शब्द मैं हूं अर्थात् मुझ शब्दरूप में आकाश पुरोहा हुआ है सब पुरुषों में शूरता धैर्यता आदि पुरुषार्थ मैं हूं अर्थात् पौरुषरूप में मनुष्य पुरोहे हुए हैं, पृथ्वी में पवित्र गन्ध मैं हूं अर्थात् मुझ गन्धरूप में पृथ्वी पुही हुई है अग्नि में तेज मैं हूं सब जीवों में जीवनरूप मैं हूं अर्थात् मुझ जीवनरूप में सब जीव पुरोहे हुए हैं तपस्वियों में धर्मरूप में तप मैं हूं अर्थात् मुझ तपरूप में तपस्वी पुरोहे हुए हैं। हे अर्जुन! मुझको सब जीवों का प्राचीन बीजरूप जान मुझ बीजरूप में सब ब्रह्माण्ड इस प्रकार पुरोहा हुआ है जैसा कि सुवर्ण में कुण्डल होता है। बुद्धिमानों में बुद्धि मैं हूं तेजस्वियों में तेज, बलवानों में काम राग विवर्जित बल मैं हूं। हे भरतर्षभ! जीवों में धर्म से अविरुद्ध काम मैं हूं जो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सात्त्विक, राजस, तामसभाव हैं उन सबको भी मुझसे ही हुआ जान वह सब मुझमें ऐसे हैं जैसे कि रस्सी में सर्प की भ्रान्ति परन्तु मैं उनमें नहीं हूं अर्थात् जैसे कि वह मिथ्यारूप हैं उस प्रकार का मैं नहीं हूं। सत्त्व, रज, तम इन तीनों गुणों की तीन रूपान्तरदशाओं के भावों से यह सब जड़ चैतन्य संसार भूला हुआ इन गुणों से उत्तम मुझको नहीं जानता है क्योंकि मैं अविनाशी रूपान्तरदशा से रहित हूं यह मेरी माया मुझ जीव, ईश्वररूप क्रीड़ावान् के सम्बन्धी और ब्रह्माण्डरूप से प्रथम उत्पन्न होनेवाले दुःख से उल्लङ्घन करने के योग्य है, जो मुझको अच्छी रीति से जानते हैं अर्थात् मुझको और अपने को एकही जानते हैं वह पुरुष इस माया को तरते हैं, परन्तु जो पापात्मा, आत्मा अनात्मा के विवेक से रहित मनुष्यों में नीच माया के कारण ब्रह्मज्ञान से शून्य आसुरीज्ञान में आश्रित हैं वह मुझको न श्रेष्ठरीति से जानते हैं न प्राप्त होते हैं। हे भरतवंशिन् ! दुःखी, ब्रह्मज्ञान के आकांक्षी, धनाकांक्षी, ज्ञानाकांक्षी, यह चारों प्रकार के शुभकर्मी पुरुष मुझको भजते हैं, इन चारों में ज्ञानी उत्तम है वह सदैव मुझमें अनुरक्त होकर एकभक्ति से भजन करनेवाला है क्योंकि मैं ज्ञानी का अत्यन्त प्यारा हूं और वह मेरा प्यारा है यह सब उत्तम हैं परन्तु ज्ञानी मेरा आत्मा है क्योंकि वह मुझ जगदात्मा में मन को लगानेवाला होकर मुझ उत्तम गतिरूप में ही नियत है वह पुरुष बहुत जन्मों के पीछे सब संसार को वासुदेवरूप जानकर मुझको पाता है, जो कामनाओं से ज्ञानभ्रष्ट होकर अपने स्वभाव के द्वारा नियमों में नियत होके अन्य अन्य देवताओं को भजते हैं वह सात्त्विकी, राजसी, तामसी तीनों भक्त जिस जिस देवता की मूर्ति को श्रद्धापूर्वक पूजते हैं मैं सबका ईश्वर उन उन भक्तों की अचल श्रद्धा को नियत करता हूं, फिर वह उस श्रद्धा में भरे हुये उस उस मूर्त्ति का आराधन करते हैं और उसी देवता से उन अभीष्टों को पाते हैं जोकि मेरे ही उत्पन्न किये हुये अथवा अनुमति दिये गये हैं तात्पर्य यह है कि सब देवता मेरे आज्ञावर्ती हैं उन निर्बुद्धियों का फल विनाशवान् होता है देवताओं के पूजनेवाले देवताओं को पाते हैं और मेरे भक्त मुझ अनन्त को पाते हैं अर्थात् एकत्वभाव को पाते हैं, निर्बुद्धि लोग मुझ अविनाशी अनुपम अव्यक्त पुरुष को संसारीजीवों के समान देहधारी मानते हैं, क्योंकि योगमाया से ढका हुआ मैं सबको नहीं दिखाई देता हूं यह अज्ञानी लोक मुझ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अज अविनाशी को नहीं जानता है, जब कि जगत् ईश्वर से जुदा नहीं है तो ईश्वर को मोह क्यों नहीं होता? इस शङ्का को कहते हैं—उपाधि से रहित होने के कारण मैं भूत, भविष्य, वर्त्तमान इन तीनों काल के जीवधारियों को जानता हूं परन्तु उपाधिधर्म का अभिमानी होने से कोई भी मुझको नहीं जानता है। अब इस शङ्का को भी कहता हूं कि लोक किस कारण से तीनों काल के जीवों को नहीं जानता है हे शत्रुहन्ता, अर्जुन! सब जीवधारी इच्छा और अनिच्छा से उठे हुए बुरे, भले, सत्य, मिथ्या और आत्मा अनात्मा इत्यादि मोहद्वन्द्वों से अर्थात् उनको उलटा जानने से इस संसार के विषय में अविवेक को पाते हैं अर्थात् उसके मूल को नहीं जानते हैं फिर किसको सर्वज्ञता होती है इस शङ्का को भी सुनो कि जिन पवित्रकर्मी पुरुषों का पाप नाश हुआ है वह मोह के द्वन्द्वों से छुटे हुए ये शम दमादि व्रतों में दृढ़ होकर मुझको भजते हैं। जो मुझ में समाहित चित्त होकर जरा, मृत्यु से छूटने के निमित्त उपाय करते हैं, वह पूर्णब्रह्म अध्यात्म और संपूर्ण कर्मों के ज्ञाता हैं, जिन पुरुषों ने अधिभूत, अधिदैव, अधियज्ञ समेत मुझको जाना है अर्थात् उपासना की है वह मुझमें चित्त लगानेवाले पुरुष शरीर-त्याग के समय में भी मुझको ही जानते और देखते हैं इन अधियज्ञादि शब्दों का अभिप्राय आगे के अध्याय में आप श्रीभगवान्जी वर्णन करेंगे ॥ ३० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु
विज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

आठवां अध्याय।

अर्जुन बोले कि हे पुरुषोत्तम! वह ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है? और अधिभूत, अधिदैव और इस शरीर में अधियज्ञ कौन कहाता है? और किस रीति से इस शरीर में नियत है और आप समाधानचित्त पुरुषों को शरीर त्याग के समय कैसे जाने जाते हो? श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन! जो परम अक्षर १ है अर्थात् उपाधि सम्बन्ध से जुदा है वह तत्त्व-पदार्थरूप ब्रह्म है और जो शुद्धतम पदार्थ है वह अध्यात्म २ है और देवता के निमित्त जो द्रव्य त्यागरूप यज्ञ है वह जीवों के सात्त्विक, राजस, तामस स्वभावों का उत्पन्न करनेवाला कर्म नाम ३ है जो कर्म फलरूप साधने का

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हेतु विनाशवान् है वह अधिभूत ४ है सब देहों में निवास करनेवाला सब देवताओं का आत्मा हिरण्यगर्भ है वह अधिदैव ५ है हे देहधारियों में श्रेष्ठ, अर्जुन! इस शरीर में अधियज्ञ हूं ६ अर्थात् युगाभिमानी अन्तर्यामी विष्णु रूप हूं, इन छहों उत्तरों के प्रथम उत्तरमें जीव का ब्रह्मभाव वर्णन किया वह पुरुष सत्यलोक आदिमें नहीं जातेहैं क्योंकि उनके प्राण अपने मूलमें लयहो जाते हैं तब वह ब्रह्मरूप होकर ब्रह्म को पाते हैं दूसरे उत्तर में शुद्धतम पदार्थ कहा है उस तमपदार्थ की तत्पदार्थ में अर्थात् ब्रह्म में एकता होने से अन्तकाल में मुझीको स्मरण करता हुआ शरीर को त्यागकर निस्सन्देह मेरेही भाव को पाता है अर्थात् मोक्षपदार्थ को पाता है। हे अर्जुन! जिस जिस भाव को स्मरण करता हुआ अन्त में शरीर को त्याग करता है वह सदैव उस भाव से भावित होकर उसी उसी भाव को पाता है, इस कारण सब समय पर मुझी को स्मरण करके तू युद्ध में प्रवृत्त हो मुझ जगदात्मा में मन और बुद्धि का लगानेवाला अथवा लय करनेवाला तू मुझीको पावेगा इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। उसकी व्याख्या तीन श्लोकों में करते हैं—हे अर्जुन! अभ्यास और अभ्यासजन्य योगसमाधि इन दोनों से संयुक्त अनन्य वृत्ति चित्त के द्वारा अन्तर्यामी परम पुरुष को पाता है। अब उपासना के स्वरूप को कहकर जिस की उपासना की जाती है उसका वर्णन करते हैं अर्थात् सबके जाननेवाले पूर्णरूप जगत् के अन्तर्यामी सूक्ष्म से भी सूक्ष्म सब कर्म फलों के विभाग करने वाले ध्यान से अगम्य सूर्य के समान प्रकाशमान अर्थात सब जगत् के प्रकाशक अविद्या से रहित को स्मरण करे। अब उपासना के फलको कहते हैं—शरीर त्यागने के समय मन की दृढ़तापूर्वक योगबल से अथवा वासुदेव भगवान् की भक्ति में प्रवृत्त होके दोनों भृकुटियों में प्राण को चढ़ाकर उस हिरण्यगर्भ नाम दिव्य परम पुरुष को पाता है अर्थात् उसके सन्मुख पहुँचता है जिस प्रणव अक्षर को वेदज्ञलोग कहते हैं और जिसमें वैरागी यतीलोग प्रवेश करते हैं अर्थात् उसकी शरण लेते हैं अथवा जैसे कि समुद्र में नदियां प्रवेश करती हैं उसी प्रकार यह सब लोग इसमें प्रवेश करते हैं और जिसको इच्छा करते हुए ब्रह्मचर्य को कहते हैं उस पद को तुझसे ब्योरेवार कहता हूं सब इन्द्रियरूप द्वारों को अपने स्वाधीन करके मन को हृदय में रोककर अपने प्राण को सुषुम्ना नाड़ी के मार्ग से मस्तक में धारण करके योगशास्त्र की

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लिखी हुई धारणा में अच्छी रीति से नियत होकर, ओम् इस एक अक्षर ब्रह्म को कहता और मुझको स्मरण करता हुआ देह को त्यागकर जो जाता है वह ब्रह्मलोक की प्राप्ति के द्वारा मोक्षरूप परमगति को पाता है जो अनन्यबुद्धि है वह सदैव मेराही स्मरण और कीर्त्तन करता है। हे अर्जुन! उस योग्य अहार विहार और यम नियम आदि में प्रवृत्त योगी को मैं बड़ा सुलभ हूं अर्थात् शीघ्रही प्राप्त होता हूं मुझको पाकर दुःख के आलय विनाशवान् पुनर्जन्म को नहीं पाताहै क्योंकि वह महात्मा मोक्षरूप महासिद्धि को प्राप्तहै। हे अर्जुन! ब्रह्मलोक से लेकर सब संसारी लोक इस पृथ्वीपर फिर लौटकर आनेवाले हैं और मुझको प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता है अर्थात् जो योगी परमेश्वर की उपासना के द्वारा ब्रह्मलोक को गये वह ब्रह्माजी के साथ मुक्त होते हैं और जो पञ्चयज्ञ आदि विद्या के द्वारा ब्रह्मलोक को गये वह लौट आते हैं। अब लौटने के समय को प्रकट करते हैं जिन लोगों ने चारों युगों की हज़ार चौकड़ी का ब्रह्माजी का एक दिन जाना है और इतनी ही रात्रि भी मानी है वह दिन रात्रि के जाननेवाले प्रसिद्ध हैं दिन के होते ही सब प्रत्यक्ष पदार्थ स्वप्न दशारूप अव्यक्त से विदित होते हैं और रात्रि आने पर उसी अव्यक्त नाम में सब अत्यन्त लय होजाते हैं। हे अर्जुन! वही यह सृष्टिसमूह बारम्बार प्रकट होकर रात्रि के आने पर अविद्या और कर्म फल के स्वाधीन होकर लय हो जाता है और दिन के आने पर प्रकट होजाता है। अब उस परब्रह्म को कहते हैं जिसको पाकर फिर आवागमन से छूटता है उस अव्यक्त से अन्य सत्तावान् अरूप उपाधिरहित नित्य एकरूप जो सब संसार के नाश होने पर नाश नहीं होता है अर्थात् तीनोंकाल में अविनाशी होकर नियत है वह गुप्त अविनाशी कहा जाता है और कैवल्य मोक्षरूप परमगति भी कहाता है जिस को कि पाकर फिर नहीं लौटकर आते हैं वही मेरी ब्रह्मज्योति है; इस प्रकार शुद्ध ब्रह्म को कहकर अब उत्पत्ति के हेतु और उपासना के योग्य सगुण ब्रह्म को कहते हैं। हे अर्जुन! अनन्य भक्ति से जो पाने के योग्य है वह शुद्ध ब्रह्म से दूसरा पुरुष है उसमें भी सब जीवमात्र ऐसे नियत हैं जैसे बीज में वृक्ष नियत होता है इसीप्रकार इसमें सब जगत् व्याप्त है। हे भरतर्षभ! कर्मयोगी जिस समय शरीर को त्याग करके चले हुये अनावृत्ति अर्थात् लौटकर न आना और आवृत्ति अर्थात् आवागमन को पाते हैं उस समय को वर्णन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करता हूं किरणों का अभिमानी देवता, अग्नि ज्योति और दिन का अभिमानी देवता, दिन शुक्लपक्ष का देवता और छःमहीने तक उत्तरायणका देवता इन चारों के उदय प्रताप में ब्रह्म की उपासना करनेवाले पुरुष शरीर को त्याग करके ऊपर को जाकर ब्रह्मलोक को पाते हैं अर्थात् ब्रह्मलोक में पहुँचकर ब्रह्मा जी के साथ मुक्त होते हैं, जिन कर्म योगियों का योग पक्का नहीं हुआ उनके मार्ग को कहते हैं अर्थात् जब धूमरात्रि कृष्णपक्ष छः महीने दक्षिणायन इन चारों के देवताओं के उदय में योगी चान्द्रमसी ज्योति अर्थात् स्वर्ग को पाकर फिर लौट आता है, संसार की यह शुक्ल और कृष्ण नाम गति प्राचीन मानी गई हैं एक से तो अनावृत्ति अर्थात् लौटकर न आना और दूसरी से आवृत्ति अर्थात् लौट आता है। हे अर्जुन! इन दोनों मार्गों को जानता हुआ कोई ज्ञान योगी नहीं भूलता है अर्थात् योग में थोड़ा उपाय नहीं करता किन्तु अत्यन्त उपाय करता है; इस कारण हे अर्जुन! सदैव योग में प्रवृत्त हो; फिर श्रद्धा बढ़ाने के लिये योग की प्रशंसा करता हूं—वेदों में यज्ञों में दानों में शास्त्रानुसार जो पुण्यफल कहा गया है उस सब पुण्यफल को योगी उल्लङ्घन करके इसविषय का ज्ञाता होकर ब्रह्मलोक को जाकर स्वयंसिद्ध श्रेष्ठस्थान को पाता है ॥ २८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतासूपनिषत्सु श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

नववां अध्याय।

श्रीभगवान् बोले कि मैं इस अत्यन्त गुप्त रखने के योग्य ज्ञान को अपने विज्ञान के द्वारा तुझ अनसूया रहित से वर्णन करता हूं जिसके जानने से तू इस अशुभ संसार से मुक्त होगा। यह विद्याओं का और गुप्त देवताओं का राजा महाउत्तम पवित्रकर्त्ता अपरोक्ष ब्रह्म का प्राप्त करनेवाला धर्म में हितकारी अनुष्ठान करने में सुखरूप और अविनाशी है। हे शत्रुओं के संतप्त करने वाले, अर्जुन! इस ज्ञानधर्म के श्रद्धा न रखनेवाले पुरुष मुझको अप्राप्त होकर जन्म मृत्युरूपी संसार मार्ग में घूमा करते हैं, इस प्रकार से सन्मुख करके कहने के योग्य वचनों को कहते हैं—मुझ बुद्धि से परे सच्चिदानन्द रूप सगुणरूपधारी से भिन्न परमात्मा से यह सब जगत् व्याप्त है जैसे कि रस्सी में सर्प की भ्रान्ति होती है उसीप्रकार मुझ परमात्मा में यह सब स्थावर जंगम जीव नियत हैं परन्तु मैं उनमें नियत नहीं हूं जैसे कि घटादिकों में

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मृत्तिका नियत नहीं है किंतु घटादिरूप मृतिका में नियत हैं। जीव मुझ एकाकी में नियत नहीं है जीवों के साथ मेरेयोग को अथवा ईश्वरतासम्बन्ध रखनेवाले को देख कि जो मेरा परमानन्दरूप आत्मा अपने आनन्द से जीवों की वृद्धि करनेवाला और धारण करनेवाला है परन्तु आप उन जीवों में नियत नहीं है। ऊपर के दो श्लोकों में ब्रह्म को उपाधि से रहित वर्णन किया अब जीव ब्रह्म की एकता को कहते हैं—जैसे कि सूत्रात्मा महान् वायु सर्वत्र वर्त्तमान होकर अपने उत्पत्तिस्थान आकाश में सदैव नियत है इसीप्रकार चैतन्यरूप सब प्राणी मुझमें नियत हैं अर्थात् मुझसे पृथक् नहीं हैं ऐसा तू समझ, जो उपाधिरहित ब्रह्ममें लय होने का भाव है तो उपाधि की कौन दशा है इस शङ्का को निवृत्त करते हैं—कल्प के अन्त में सब जड़ चैतन्य शरीर मुझ मायोपहित ईश्वर की प्रकृति में प्रवेश करते हैं मैं मायादि का कारणरूप आत्मा कल्पके प्रारम्भ में फिर उनको अनेक प्रकार के रूपों से उत्पन्न करता हूं माया के विना कर्तृत्व भाव न होने से अविद्यालक्षणवाली अपनी प्रकृति के आश्रय में होकर मैं इस सम्पूर्ण देहसमूहों को बारम्बार नानाप्रकार का बनाकर उत्पन्न करता हूं वह देहसमूह स्वभाव के आधीन होने से अस्वतन्त्र है अर्थात् अवशहै, हे अर्जुन! वह कर्म मुझ उदासीनरूप कर्मफल की इच्छा न रखनेवाले को बन्धन में नहीं डालसक्के हैं जैसे कि बादलको किसी बीज से प्रीति, किसी से शत्रुता आदि नहीं है सबके ऊपर समान वृष्टि करताहै उनमें कोई फलवान् होता है कोई नहीं भी होता है यही सम्बन्ध जीवों को ईश्वर से है। हे अर्जुन! मुझ अध्यक्षरूप के कारण से प्रकृति सब जड़ चैतन्यों समेत जगत् को उत्पन्न करती है इसी कारण से जगत् जन्मादि दशाओं में भ्रमता है अर्थात् चुम्बकीय शक्ति के समान मैं इस संसार को चेष्टा देनेवाला होता हूं। अज्ञानी लोग मेरे उत्तम तत्त्व पदार्थ को न जानकर मुझ मनुष्य देह में नियत होनेवाले का अपमान करते हैं और मैं जीवधारियों का महेश्वर हूं, मेरा अपमान करने से वह अज्ञानी निरर्थक आशा और निष्फल ज्ञानी विवेक से रहित राक्षसी आसुरी चित्त अर्थात् रजोगुण तमोगुण प्रधान स्वभावों में आश्रय लेनेवाले हैं १२ परन्तु जो बड़े उदारचित्त दैवीस्वभाव सतोगुण में आश्रय लगानेवाले हैं वह पुरुष मुझको सब संसार का आदि अविनाशी जानकर एकाग्रचित्त से मेरा भजन करते हैं, अब भजन के स्वरूप को वर्णन करते हैं, वह शान्तचित्त दृढ़व्रत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जितेन्द्रिय शम, दम आदि में उपाय करनेवाले सदैव मुझी में बुद्धि से तदाकार होकर मेरा कीर्त्तन करनेवाले नमस्कारपूर्वक बड़ी भक्ति से मेरी उपासना करते हैं और कोई कोई निर्विकल्प समाधिरूप ज्ञानयज्ञ करने से भी मुझको पूजते हुये उपासना करते हैं कोई मुझको अपने शरीर से एकही जानकर कोई पृथक् मानकर अर्थात् अपना स्वामी मानकर और कोई मुझको अनेक रूपवाला विश्वतोमुख अर्थात् जो दीखा सो भगवत्‌रूप जो सुना वह उसीका नाम जो दिया अथवा भोजन किया वह उसी के अर्पण है इस रीति से उपासना करते हैं उसका यह व्यौरा है—मैं हीं संकल्प देवता ध्यानरूप क्रतु हूं, मैं हीं सब प्रकार का यज्ञ हूं, मैं हीं स्वधारूप पितरों का अन्न हूं, मैं हीं ओषधी हूं और जिसके द्वारा दानादिक दिये जाते हैं वह मन्त्र भी मैं हीं हूं, मैं हीं हव्य, मैं हीं अग्नि, मैं हीं हवन करने की क्रिया हूं इन कारणों से मेरी विश्वतोमुख उपासना अत्यन्त योग्य है, मैं हीं जगत् का पिता माता धाता अर्थात् कर्मफल का उत्पन्न करनेवाला पितामह ज्ञेय और पवित्र करनेवाला तप इत्यादि हूं, मैं हीं ॐकार और चारों वेद हूं, मैं हीं गति हूं, मैं हीं कर्मफल का देनेवाला पोषण करनेवाला अन्तर्यामी साक्षी निवास स्थानरूप प्रभु यजमान आदि रक्षक प्रतीकाररहित परोपकारी (उत्पत्ति और लय का स्थान) कर्मफल अर्पण करने का स्थान संसार का बीजरूप अविनाशी हूं, मैं हीं सूर्यरूप होकर संसार को तपाता हूं और आठ महीने तक अपनी किरणों से वर्षा को ग्रहण करता हूं और वर्षाऋतु में अपनी किरणों से ही जल बरसाता हूं। हे अर्जुन ! मैं हीं जीवन, मरण और साधु असाधु हूं परन्तु जो पुरुष किसी प्रकारकी उपासना नहीं करते केवल कर्मों ही को करते हैं उनका यह वृत्तान्त है—ऋग् यजु साम वेदरूप विद्यावाले यज्ञों में सोमपान करनेवाले निष्पाप पुरुष यज्ञों से मेरा पूजन करते हुए स्वर्गगति को चाहते हैं वह पवित्रात्मा इन्द्रलोक में जाकर स्वर्ग में देवताओं के दिव्य भोगों को भोगते हैं, उस बड़े भारी स्वर्ग के भोगों को भोगकर कर्मफल समाप्त होजाने पर वह फिर इसी मर्त्यलोक में आते हैं इसप्रकार से वेदोक्त सफल कर्मोंके द्वारा विषयों के चाहनेवाले पुरुष आवागमन को पाते हैं, कर्मफल की दशा को कहकर अब भजन के फल को कहते हैं—जो पुरुष इस रीति से चिन्तवन करते हैं कि मैं हीं भगवान् वासुदेवजी की उपासना के योग्य हूं दूसरा नहीं है ऐसी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एकत्वता के द्वारा मेरी उपासना करते हैं उन सदैव योग की उपासना करने वाले भक्तों के स्थान भोजनाच्छादन की मैं आप रक्षा करता हूं और जो अन्य देवताओं के भक्त हैं और उनका पूजन करते हैं हे अर्जुन! वह पुरुष भी बुद्धि के विपरीत मुझीको पूजते हैं, क्योंकि मैं हीं सब देवताओं के रूप से सब यज्ञों का भोक्ता फलका देनेवाला प्रभुहूं परन्तु मुझको मुख्यता के साथ अच्छी रीति से नहीं जानते हैं इस हेतु से वह फिर गिरते हैं अर्थात् ज्ञाननिष्ठा को न पाकर संसाररूपी कूप में गिरते हैं, देवताओं के उपासक देवताओं को और पितरों के उपासक पितरों को पाते हैं और भूत, प्रेतादि के उपासक भूत प्रेतों को प्राप्त होते हैं और एक अविनाशी के पूजनेवाले मुझी को पाते हैं, मेरी भक्ति बड़ी सुगम है और अन्य देवताओं की भक्ति में बहुत सा धन खर्च होता है इस शङ्का को कहते हैं–जो भक्तिपूर्वक पत्र, फूल, फल और जल भी मुझको देता है उस शुद्ध अन्तःकरण के दिये हुये को मैं भोजन करता हूं, इस कारण जो कुछ काम करे उसको मेरे अर्पण कर अर्थात् मन, वाणी, देह से जो कुछ किया जाय उसमें यही ध्यान करे कि उसीका नाम लेता हूं जो कुछ खाता है वा हवन करता है वा दान करता है वा तप करता है हे अर्जुन! उसको मेरे ही अर्पण करे–(अब उस कर्म के फल को कहते हैं) इस प्रकार से शुभाशुभ कर्मफलों के बन्धनों से छूटेगा उस कर्मफल के त्याग-रूप संन्यासयोग से सावधान चित्त कर्मबन्धनों से अत्यन्त छुटा हुआ वह पुरुष मुझ परमात्मा को पावेगा, मैं सब जीवों में बराबर हूं, न मेरा कोई मित्र है, न शत्रु है परन्तु जो भक्ति के साथ मुझको भजते हैं वह मुझी में हैं और मैं उनमें हूं अर्थात् मुझमें और उनमें कोई भेद नहीं है क्योंकि ज्ञानी तो मेरा ही आत्मा है जैसे कि अग्नि शत्रुता और मित्रता से रहित है परन्तु जो उसके पास नियत होता है उसीका शीत निवृत्त होताहै दूसरे का नहीं निवृत्त होताहै इसी प्रकार भगवत् की शरण में जानेवाले भक्तों का कर्मबन्धन नाश होजाता है (अब भक्ति के माहात्म्य को कहते हैं) जो अत्यन्त दुराचारी भी है और मेरे सिवाय दूसरे में मनका नहीं लगानेवाला है और मुझी को भजता है उसको साधु समझना चाहिये क्योंकि वह दृढ़ निश्चय करनेवाला है, वह पुरुष शीघ्रही धर्मात्मा होता है और सदैव मोक्षरूप गति को पाताहै हे अर्जुन! तू मेरीआज्ञा से प्रण करके इस बात को दृढ़ जानले कि मेरे भक्तका कभी नाश नहीं होता

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हे तात ! यह बात प्रकट है कि जो स्त्री वैश्य शूद्र भी पापात्मा होयँ वह भी मेरी शरण को लेकर मोक्षरूप परमगतिको पाते हैं तो क्या पवित्र ब्राह्मण और राजर्षि लोग मेरे भक्त होकर मोक्षरूप परमगति को नहीं पावेंगे अर्थात् अवश्य पावेंगे हे अर्जुन ! इस नाशवान् सुखसे रहित लोकको पाकर तू मुझको भज क्योंकि अन्य लोकों में भजन नहीं होताहै। अब भजन की रीति बतलाते हैं-अर्थात मुझी में मन का लगानेवाला हो स्त्री आदि में लगानेवाला न हो मेरा भक्त हो और मेरे ही निमित्त यज्ञ करनेवाला हो स्वर्गादि के लिये न हो मुझी को नमस्कार इत्यादि रीति से योग को करके मुझी उत्पत्ति के स्थान में भक्ति रखनेवाला मुझ जगदात्मा परमात्मा में हीं ऐसे लय होगा जैसे कि नदियां अपने नाम और स्वरूपों को त्यागकर समुद्र में लय होजाती हैं ॥ ३४ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्व्वणि कृष्णार्जुनसंवादे नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दशवां अध्याय।

श्रीभगवान् बोले हे महाबाहो ! तू फिर मेरे इस उत्तम वचन को सुन जो तेरी भलाई के लिये तुझ प्रीतिमान् से कहता हूं कि देवताओं ने और महर्षियों ने भी मेरे आकाशादि के उत्पन्न करने के बड़े ऐश्वर्य को नहीं जाना है इस कारण से कि मैं सब देवता और महर्षियों से भी प्रथम हूं अर्थात् शरीर की उत्पत्ति के पीछे देवता आदिकों की बुद्धि उत्पन्न हुई तो पीछे उत्पन्न होने वाली बुद्धि से पूर्वसमय का वृत्तान्त जानना असंभव है, फिर कौन इसको जानता है इसको कहते हैं-जो अज्ञानी नहीं है अर्थात् ज्ञान विज्ञान से पूर्ण है वह मुझ अनादिरूप अजन्मा और सब लोकों के स्वामी को जानता है और वही मरनेवालों में सब पापों से मुक्त होता है, मेरे महेश्वर होने से ही मुझसे बुद्धि आदि उत्पन्न होती हैं, इसको बताते हैं-अन्तःकरण के सूक्ष्म प्रयोजनों की जाननेवाली [बुद्धि] और आत्मा अनात्मा का जानने वाला [ज्ञान] और जानने के योग्य प्रयोजन वर्त्तमान होने पर स्थिर चित्त और विवेकपूर्वक करने के योग्य विषय का जाननेवाला [असम्मोह] और घायल आदि होने में चित्त में विपर्यय न होनेवाली [क्षमा] और प्रमाण संयुक्त जाने हुए प्रयोजन को निश्चय कहने वाला [सत्य] और इन्द्रियों का जीतनेवाला [दम] और मन का जीतनेवाला [शम] सुख, दुःख, उत्पत्ति, अस्ति, नास्ति, भय, निर्भयता और जीवों को दुःख न देना [अहिंसा]

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और शत्रु मित्र में एक भाव होना, समता, सन्तोष, तपस्या, दान, यश, अयश यह जीवधारियों के बीसों भाव नाना प्रकारों के द्वारा मुझही से उत्पन्न होते हैं इसी कारण हे अर्जुन! उत्तम गुणों की प्राप्ति के अर्थ मेरी शरण लेनी योग्य है। सब सृष्टि से प्रथम भृगु मरीच्यादि महर्षि और सनकादिक ऋषि वा चौदह मनु मुझ हिरण्यगर्भ रूप के मन से उत्पन्न हुए हैं जिनसे कि यह सब प्रजा और लोक उत्पन्न हुए हैं वह मुझीमें मन लगानेवाले हैं।(अब उपासना के अधिकारी को कहते हैं) जो वक्ष्यमाण मेरी विभूति और योग को मूलसमेत जानते हैं वह निर्विकल्प योगसमाधि के द्वारा अचल होकर निस्संदेह तदाकार होता है, (अब दो श्लोकों में उपासना के स्वरूप को वर्णन करते हैं) मैं सब संसार की उत्पत्ति का कारण हूं बुद्धि आदि के द्वारा जो कुछ कर्म होता है वह मुझसे ही सम्बन्ध रखनेवाला होता है ऐसा मान-कर ज्ञानी लोग भक्ति से मुझको भजते हैं, जिनके मनमें मैं हीं वर्त्तमान हूं और जिनकी इन्द्रियां भी मुझी में मग्न हैं वह परस्पर में श्रुतियों और युक्तियों के द्वारा मुझको प्रकट करते हैं और सदैव मुझीको रटते हुए तृप्ति को पाकर मुझी में रमण करते हैं (अब उपासना के फल को कहते हैं-) उन सदैव उत्साहयुक्त प्रीति से भजन करनेवाले महात्माओं को मैं उस बुद्धियोग को देता हूं जिसके द्वारा वह मुझको इसप्रकार से पाते हैं जैसे कि नदियां अपने नाम और रूपों को त्यागकर समुद्र में प्राप्त होती हैं, उनके ऊपर दयादृष्टि करने के लिये मैं अन्तःकरणवर्त्ती होकर प्रकाशरूप ज्ञानदीपक के द्वारा उनके अज्ञान से उत्पन्न हुए मोहरूपी अन्धकार को दूर करता हूं। अर्जुन बोले हे परब्रह्म, परमज्योति, पवित्रात्मा, शरीररूप पुरियों में वर्त्तमान, हृदयाकाश में प्रकट होनेवाले, सबके आदिरूप, व्यापक, अजन्मा, श्रीकृष्णजी! आपको सब ऋषि, देवर्षि, नारद, असित, देवल, व्यासजी इन सब ऋषियों ने उत्तम उत्तम गुणों से संयुक्त किया और आप अपने श्रीमुख से भी वर्णन करते हो सो हे केशवजी! आपके ऐश्वर्य को देवता और दानवों में से कोई नहीं जानता है इस बात को मैं सत्य ही मानता हूं। हे जीवों के उत्पन्न करनेवाले ईश्वर, देवदेव, जगत्पते, पुरुषोत्तम! तुम अपने को आपही जानते हो, हे भगवन्! आप अपनी उन दिव्य विभूतियों को मूल समेत वर्णन कीजिये जिनसे कि आप इन लोकों को व्याप्त करके नियत रहते हो,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हे षडैश्वर्य के स्वामी! मैं अपने चर्मचक्षु से ध्यान करता हुआ आपको कैसे जानूं? अर्थात् नहीं जानसक्ता हे भगवन्! आप विश्वरूप के दर्शनका अधिकार होने के लिये कौन कौन से भावों में मेरे देखने के योग्य हैं। हे जनार्दन! आप अपने विश्वरूप योग और ध्यान के योग्य विभूतियों को फिर विस्तारयुक्त वर्णन कीजिये क्योंकि इन मोक्ष साधन युक्त अमृत से सने हुए आपके वचनों से मेरी तृप्ति नहीं होती है, श्रीभगवान् बोले कि, हे अर्जुन! बहुत श्रेष्ठ है मैं अपनी उत्तम दिव्य विभूतियों को तुझसे कहता हूं मेरी विभूतियों के विस्तार का अन्त नहीं है हे निद्राजीतनेवाले, अर्जुन! मैं व्यापक आत्मा सब जीवों का आश्रयरूप अचल हूं मैं सबका आदि, मध्य, अन्त अर्थात् उत्पत्ति, पालन, लयरूप हूं—योग को कहकर (अब विभूतियों को कहता हूं) अथार्त् अदिती के पुत्रों में बारहवां सूर्य अथवा विष्णु का अवतार वामन रूप मैं हूं, अग्नि आदि ज्योतिरूपों में अत्यन्त संतप्त करनेवाली किरणों समेत सूर्य मैं हूं, उनचास मरुद्गणों में मरीचि नाम मरुत् मैं हूं, नक्षत्र और तारागणों में चन्द्रमा मैं हूं, मनोहर गानयुक्त वेदों में सामवेद मैं हूं, देवताओं में इन्द्र मैं हूं, इन्द्रियों में मन मैं हूं, जीवों की बुद्धि की वृत्ति मैं हूं, ग्यारह रुद्रों में शंकर नाम रुद्र मैं हूं, यक्ष राक्षसों में धनाधिप कुबेर मैं हूं, अष्ट वसुओं में अग्नि मैं हूं, शिखर और रत्नधारी पर्वतों में सुमेरु नाम उत्तम पर्वत मैं हूं और हे अर्जुन! पुरोधसों में बृहस्पति मैं हूं, सेनापतियों में स्वामिकार्त्तिक मैं हूं, नदी आदि जलाशयों में समुद्र मैं हूं, महर्षियों में भृगु मैं हूं, वर्णन करनेवाली वाणियों में एक प्रणव नाम ॐकार अक्षर मैं हूं, यज्ञों में जपयज्ञ मैं हूं, हिंसारहित नियत स्थानों में हिमालय पर्वत मैं हूं, सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष मैं हूं, देवर्षियों में नारदऋषि मैं हूं, गन्धर्वों में चित्ररथ गन्धर्व मैं हूं, सिद्धों में कपिल मुनि मैं हूं, घोड़ों में उच्चैश्श्रवा मैं हूं, गजेन्द्रों में ऐरावत नाम हाथी मैं हूं, मनुष्यों में राजा मैं हूं, आयुधों में वज्र मैं हूं, गौओं में कामधेनु मैं हूं, सन्तति का उत्पन्न करनेवाला कामदेव मैं हूं, सर्पों में वासुकि सर्प मैं हूं, नागों में अनन्त शेषनाग मैं हूं, जलजीवों में और जल के स्वामियों में वरुण मैं हूं, पितृगणों में अर्यमा पितर मैं हूं, दण्ड देनेवालों में यम मैं हूं, दैत्यों में प्रह्लाद मैं हूं, संख्या करनेवालों में काल मैं हूं, मृगों में मृगेन्द्र अर्थात् सिंह मैं हूं, पक्षियों में गरुड़ मैं हूं, पवित्र करनेवालों में अथवा शीघ्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गतिवालों में वायु मैं हूं, शस्त्रधारियों में रामचन्द्र व परशुराम मैं हूं, मत्स्यादिकों में मगर मैं हूं नदियों में श्रीगङ्गाजी मैं हूं, हे अर्जुन! संपूर्ण संसार का आदि, मध्य, अन्त मैं हूं, विद्याओं में अध्यात्म विद्या मैं हूं, जल्प वितण्डा इत्यादि में सिद्धान्तरूप मैं हूं, सब अक्षरों में अकार अक्षर मैं हूं, गुरु शिष्य अथवा ज्ञानियों के एकत्र बैठने से जो प्रयोजन सिद्ध होता है उसका गुप्त आशय मैं हूं, मैं अविनाशी काल हूं, मैं ही कर्म-फल का देनेवाला हूं, मैं विश्वतोमुख हूं, अर्थात् सब जीवमात्रों के तृप्त होने से प्रसन्न और संतुष्ट होता हूं, मैं ही सबका मारनेवाला मृत्यु हूं, प्राप्त होनेवाले कल्याणों में ऐश्वर्य की महत्त्वता और कीर्ति मैं हूं, स्वभाव, मृदुभाषण, शास्त्र की याद रखनेवाली मेधा, धैर्यता, सन्तोष मैं हूं, सामवेद की ऋचाओं में बृहत् नाम ऋचा मैं हूं, छन्दों में गायत्री मैं हूं, महीनों में मार्गशीर्ष अर्थात् अगहन मैं हूं, ऋतुओं में वसन्त ऋतु मैं हूं, छल करनेवालों में जुवा मैं हूं, तेजस्वियों में तेज मैं हूं, विजय मैं हूं, निश्चय वा उपाय मैं हूं, सतोगुणी पुरुषों में सतोगुण मैं हूं, यादवों में वासुदेव मैं हूं, पाण्डवों में अर्जुन मैं हूं, मुनियों में व्यासमुनि मैं हूं, कवियों में शुक्र कवि मैं हूं, राजाओं में दण्डरूप मैं हूं, विजयाभिलाषी पुरुषों में नीतिरूप मैं हूं, गुप्त वस्तुओं में मौनता मैं हूं, ज्ञानियों में ज्ञान मैं हूं, हे अर्जुन! जो सब जीवधारियों का तेज है वह मैं हूं, अर्थात् सब मेरी ही विभूति हैं हे शत्रुहन्ता, अर्जुन! मेरी दिव्य विभूतियों का अन्त नहीं है यह मैंने अपनी असंख्य विभूतियों का संक्षेप तुमसे वर्णन किया, जो जो प्राणी ऐश्वर्यवान् लक्ष्मीवान् शोभावान् और पराक्रम आदि से भी अत्यन्तयुक्त है उस उसको तुम मेरी चैतन्यशक्ति की अग्नि से उत्पन्न हुआ जानो (अब उत्तम अधिकारी के विषय में वर्णन करते हैं) हे अर्जुन! इस बहुत से ज्ञान से तुमको क्या प्रयोजन है? मैं इस संपूर्ण जगत् को अपने एक अंश से व्याप्त करके नियत हूं अर्थात् मेरे एक अंश में यह सारा संसार है॥ ४२॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवत्कृष्णार्जुनसंवादे विभूतिवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः॥ १०॥

ग्यारहवां अध्याय।

अर्जुन बोले कि, जो आपने मेरे ऊपर अनुग्रह करने की दृष्टि से अत्यन्त गुप्तरूप और गुप्त ही करने योग्य आत्मज्ञान को अर्थात् आत्मा अनात्मा के विवेकरूप वचन को वर्णन किया उसके द्वारा यह मेरा अविवेकरूपी मोह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अत्यन्त दूर होगया इसके विशेष हे कमलदललोचन ! मैंने जीवों की उत्पत्ति नाश और आपका महाअविनाशी माहात्म्य भी आपके मुखारविन्द से सुना, हे ईश्वर ! जैसा आपने अपने को कहा आप यथार्थ में वैसे ही हैं परन्तु हे भगवन् ! आपके विराट्रूप देखने की मुझको बड़ी अभिलाषा है, हे प्रभो, योगेश्वर ! जो आप ऐसा समझे होयँ कि उस रूप को मैं देखने योग्य हूं तो आप उस अपने अविनाशी आत्मा को मुझे दिखलाइये, श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन ! मेरे सैकड़ों हज़ारों दिव्यरूप जो नानाप्रकारों से अनेक रङ्ग रूप के हैं उनको देख हे भरतवंशिन् ! उसी स्वरूप में बारह सूर्य, आठ वसु, ग्यारह रुद्र, दोनों अश्विनीकुमार, उन्चास वायु, इसी प्रकार की अन्य बहुत-सी अद्भुत बातों को जो तैंने प्रथम कभी नहीं देखी हैं उनको भी देख, हे निद्राजीतनेवाले ! अब यहां मेरे शरीर के एक अंश में वर्त्तमान सब स्थावर जंगमसहित जगत् को और जो २ भूत, भविष्य, स्थूल, सूक्ष्म देखना चाहता है उनको भी देख, परन्तु तू इन चर्मनेत्रों से मेरे देखने को समर्थ नहीं है तुझे दिव्यनेत्र देता हूं इन नेत्रों से ईश्वरतासम्बन्धी मेरे योग को देख, संजय बोले कि हे राजन्, धृतराष्ट्र ! बड़े योगेश्वर हरि ने इस प्रकार से प्रश्न करनेवाले अर्जुन को अपने ऐश्वर्यसम्बन्धी उन दिव्य उत्तम रूपों को दिखाया जो अनेक मुख, नेत्र और अद्भुत दर्शनसमेत बहुत से दिव्याभरण, वस्त्र और उत्तम शस्त्रों से अलंकृत सुगन्धित पुष्पमालाओं से शोभित सब ओर को हज़ारों सूर्य के समान देदीप्यमान थे, तदनन्तर अर्जुन ने उस देवदेव वासुदेव श्रीकृष्णजी के उस शरीर के भीतर एक अंश में नियत नानाप्रकार के रूपोंसमेत संपूर्ण जगत् को देखा, यह देखकर अर्जुन आश्चर्ययुक्त हुआ और शरीर में रोमांच खड़े होगये तब उसने हाथ जोड़कर उनको प्रणाम करके यह वचन कहा कि हे प्रकाशमान ! आपके शरीर में देवता और चारों प्रकार के सब जीवों को और कमलासन पर विराजमान ईश्वर ब्रह्मा जी को आदिले सब ऋषि, मुनि, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर, उरगराजों को भी देखता हूं, हे विश्वरूप, अखिलेश्वर ! आपको सब ओर अनेकरूप, भुजा, उदर, मुख, नेत्र, कान, नाकों से शोभित देखता हूं फिर आपका आदि, मध्य, अन्त भी नहीं देखता हूं और आपको मुकुट, गदा, चक्र धारण किये तेजसमूहों से कठिनतापूर्वक देखने के योग्य चारोंओर से प्रकाशित अग्नि, सूर्य के समान देदीप्यमान अप्रमेय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देखता हूं, आप अविनाशी शुद्धब्रह्म वेदान्त से ही जानने के योग्य हैं आप ही इस संसार के कारणब्रह्म हो अर्थात् उत्पत्ति, लय के स्थान हो और प्राचीन धर्मों के रक्षक हो अर्थात् हिरण्यगर्भरूप हो। तुम्हीं को सबने सनातन ब्रह्म पुरुष माना है, मैं आपको आदि, मध्य, अन्तरहित महा पराक्रमी बहुत भुजाधारी चन्द्र सूर्यरूप नेत्रयुक्त प्रकाशमान अग्निरूप मुख अपने तेज से इस विश्व का संतप्त करनेवाला देखता हूं, हे महात्मन्! स्वर्ग, पृथ्वी और इन दोनों के मध्यवर्ती आकाश दिशा विदिशाओं को भी मैं तुम्हीं अकेले से व्याप्तरूप देखता हूं इस तेरे अद्भुत भयकारी रूप को देखकर तीनों लोक भय-भीत होते हैं, यह दुर्योधनादि असुरवत् समूह मरने के निमित्त आपके भीतर ऐसे प्रवेश करते हैं जैसे कि पतङ्गों के समूह दीपक में भस्म होने को प्रवेश करते हैं, आपको कोई तो भयभीत होकर स्तुति करते हैं और महर्षि, सिद्ध-गण लोग कल्याण शब्द कहकर स्तोत्रादिकों से आपकी स्तुति करते हैं, ग्यारह रुद्र, बारह सूर्य, आठ बसु और साध्य विश्वेदेवा दोनों अश्विनीकुमार उन्चास मरुत् और उष्णभोजी पितरादि यक्ष, गन्धर्व, असुर, सिद्धगण यह सब आश्चर्यित होकर आपको देखते हैं, हे महाबाहो! बहुभुज जङ्घा चरण पीठ कराल दंष्ट्रायुक्त महारूपधारी आपके रूप को देखकर सब लोक पीड्य-मान हैं और मैं भी पीड्यमान हूं, हे सर्वव्यापिन्! आपको आकाश में व्यापक प्रकाशमान अनेक वर्णों से शोभित दिशाओं में विस्तृत प्रकाशमान नेत्रवाला देखकर अन्तःकरण से अत्यन्य पीड्यमान होकर मुझे धैर्यता नहीं होती है हे देवेश्वर! कालाग्नि के समान आपके मुख और कठिन दंष्ट्राओं को देखकर मारे भयके किसी दिशा को भी नहीं पहिंचानता महादुःखी हूं, हे विश्वरूप! प्रसन्न होकर सुख दीजिये, यह सब धृतराष्ट्र के दुर्योधनादि पुत्र सब साथी राजाओं समेत आपके शरीर में प्रवेश करते हैं और इसीप्रकार भीष्म द्रोणा-चार्य सूत का पुत्र कर्ण भी हमारे उत्तम उत्तम योधाओंसमेत इत्यादि अनेक शीघ्रता करनेवाले आपके मुखों में प्रवेश करते हैं जो मुख तीक्ष्णदंष्ट्रा और भयानक रूप के हैं उनमें कोई तो दाँतों में चिपटे हुये ऐसे दिखाई देते हैं जिन के शिर चूर्ण होगये हैं तात्पर्य यह है कि जिस मुख से अग्नि ब्राह्मण और वेद निकले हैं उस मुख में भीष्मादि भगवद्भक्तों का प्रवेश होना कहा है और दुर्योधनादि पापियों का दूसरे अङ्गों में प्रविष्ट होना कहा है जैसे कि नदियों

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

के जलों के अनेक समूह वेग से समुद्र की ओर दौड़ते हैं इसीप्रकार यह नर-लोक के वीरपुरुष सब ओर से आपके अग्निमुखों की किरणों में प्रवेश करते हैं, जैसे कि अत्यन्त शीघ्रगामी पतंग अपने नाश के लिये बड़ी प्रकाशमान अग्नियों में दौड़कर गिरते हैं इसीप्रकार बड़े वेगवाले लोक अपने नाश के निमित्त आपके मुखों में प्रवेश करते हैं आप सबलोकों को अपने अग्नियुक्त मुखों में निकलते हुये अत्यन्त स्वाद को लेते हो हे विष्णो, सर्वव्यापक! आपका भयानक प्रकाश अपने तेजों से सब संसार को चारोंओर पूर्ण करके अत्यन्त संतप्त करता है ऐसे भयानकरूपवाले आप कौन हैं यह मुझे समझा-इये हे देव! आपको नमस्कार है आप प्रसन्न हूजिये मैं आपको सबका आदिकर्त्ता जानता हूं और आपकी चेष्टाओं को नहीं जानता हूं श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन! मैं लोकों का नाश करनेवाला महाकाल नाम परमेश्वर हूं इस युद्ध में लोगों के भक्षण करने को प्रवृत्त हूं जो योधालोग कि शत्रु की सेना में नियत हैं वह तेरे सिवाय नहीं रहेंगे अर्थात् मारेजायँगे, इस कारण तू युद्ध में खड़ा होकर यश का भागी हो और शत्रुओं को मार धन और राज्य से पूर्ण होकर वृद्धियुक्त राज्य को भोग हे सव्यसाचिन्! अर्थात् बायें हाथ से भी बाण प्रहार करनेवाले अर्जुन! यह सब जो तू देखरहा है वह प्रथम ही मुझसे मारे गये हैं तू केवल इनके मारने में कारण ही रूप होगा, तू मुझ से मारे हुये द्रोणाचार्य, भीष्म, जयद्रथ, कर्ण को और इसीप्रकार अन्य अन्य उत्तम वीरों को भी मारडाल दुःखी मत हो युद्ध को कर तू युद्ध में शत्रुओं को विजय करेगा, संजय बोले कि हे धृतराष्ट्र! मुकुटधारी अर्जुन केशवजी के इन वचनों को सुनकर काँपता हुआ हाथ जोड़ अत्यन्त भयभीत हुआ और अत्यन्त झुककर नमस्कारपूर्वक फिर गद्गदकण्ठ से श्रीकृष्ण जी से बोला, हे हृषीकेश, अन्तर्यामिन्! तुम्हारा नाम लेने से सारा संसार अत्यन्त प्रसन्न होता है और प्रीति करता है और तुम्हारी कीर्ति होने से राक्षस लोग महा भयभीत होकर इधर उधर को भागते हैं और सब सिद्ध लोगों के समूह नम-स्कार करते हैं, आशय यहहै कि आठ अक्षर के सुदर्शन अस्त्र मन्त्र से सम्पुट मन्त्र राक्षसों से भी अभय का देनेवाला है हे महात्मन्! ब्रह्माजी के भी पितारूप आपको वह लोग क्यों नहीं नमस्कार करें हैं अर्थात् अवश्य करें हैं क्योंकि हे अनन्त, देवेश्वर, हे जगत् के उत्पत्तिस्थान, अविनाशिन्, कार्यकारण से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रहित, आदिदेव, सर्व शरीरवर्ती, पुराणपुरुष, संसार के लयस्थान, ज्ञानगम्य, ज्योतिस्वरूप, अनन्त ! तुम्हीं से सब जगत् व्याप्त है, आपही वायु, यम, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा, प्रजापति और ब्रह्मादि देवताओं के पिता हो आप के अर्थ वारंवार नमस्कार है हे सर्वरूप, हे महापराक्रमिन् ! आप अतुलबल हो और अपनी एकता से सबको व्याप्त करते हो इस कारण तुम्हीं सर्वरूप होकर कर्मों के प्रारम्भ और अन्त हो और आप सब प्रकार से नमस्कार करने के योग्य हैं, आपकी महिमा को न जानकर अज्ञान से वा प्रीति से मैंने अपना भाई और मित्र मानकर आपकी महिमा जानने के निमित्त हे कृष्ण, हे यादव, हे मित्र ! इत्यादि शब्दों को जो कहा है और विहार, शय्या, भोजन के समय अकेले में वा मित्रों के सन्मुख भी हास्य के निमित्त असत्कारी जो बचन कहा है हे अविनाशिन् ! उन अपराधों को मैं आपसे क्षमा कराना चाहता हूं क्योंकि आप अचिन्तभाव अर्थात् दयावान् हैं, तुम इस स्थावर जंगम लोक के स्वामी पूजनीय और गुरु हो आपके समान अप्रमेय प्रभाव वाला कोई नहीं है तो तीनोंलोकों में आपसे अधिक कहां से होगा, इस हेतु से मैं आपको साष्टाङ्ग प्रणाम करके स्तुति के योग्य आपको प्रसन्न करता हूं जैसे कि पिता पुत्रका अपराध और मित्र मित्र का अपराध और पति अपनी स्त्री का अपराध क्षमा करता है इसीप्रकार हे देवदेवेश्वर ! आप मेरे अपराधों को क्षमा करने के योग्य हैं मैं पूर्व में नहीं देखे हुए इस रूप को देखकर प्रसन्न हूं परन्तु मेरा चित्त मारे भय के पीड्यमान है हे परमेश्वर ! आप अपने उसी रूप को मुझे दिखलाइये हे देवदेव जगत के उत्पत्तिस्थान ! आप वारंवार प्रसन्न हो, हे सहस्रभुजधारिन्, बिश्वरूप ! मैं तुमको मुकुट गदा चक्र हाथों में धारण किये हुये दर्शन करना चाहता हूं इससे आप अपने चतुर्भुजीरूप का दर्शन दीजिये श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन ! मुझ प्रसन्नरूप ने अपनी सामर्थ्य से यह उत्तम चैतन्य तेजोमय आदि अन्तरहित विश्वरूप दर्शन तुझको दिखलाया इस स्वरूपको तेरे सिवाय किसी दूसरे ने कभी न देखा था हे कौरवों में बड़े वीर ! नरलोक में तेरे सिवाय इस रूप के देखनेको वेद, यज्ञ, जप, दान, क्रिया, तप, व्रतादिकों से भी कोई दूसरा पुरुष योग्य नहीं है मेरे इस प्रकार इस भयानकरूप को देखकर तुझको न पीड़ा होगी न कोई प्रकार का मोह होगा निर्भय और प्रसन्न चित्त होकर फिर उसी पूर्वरूप को देख

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

संजय बोले कि हे राजन्! वासुदेवजी ने इस प्रकार अर्जुन को समझाकर फिर अपने रूप को दिखाया अर्थात् सर्वव्यापी कृष्ण ने सौम्य नररूप होकर इस भयभीत अर्जुन को आश्वासन अर्थात् शान्ति को दिया, अर्जुन बोले कि हे जनार्दन! आपके इस सौम्य नर रूप को देखकर अब मैं सचेत हुआ और प्रकृति में स्वस्थता हुई, श्रीभगवान् बोले जो तुमने इस मेरे रूप को देखा है वह बड़ी कठिनता से दृष्टि में आनेवाला है इस रूप के देखने को देवता लोग भी सदैव इच्छा करते हैं, जैसे तुमने मुझको देखा है उस रीतिसे वेद, यज्ञ, तप, दान, व्रत आदि के द्वारा भी कोई पुरुष मेरे दर्शन करने को समर्थ नहीं है हे अज्ञानरूप शत्रुओं को संताप देनेवाले अर्जुन! इसप्रकार के रूप से मैं अखण्ड भक्ति के द्वारा दर्शन के योग्य हूं अथवा ध्यान से देखने और ऐक्यता से प्रवेश करने के योग्य हूं जो मेरे निमित्त कर्म करनेवाला और मुझी को सर्वोत्तम माननेवाला मेरा भक्त सब संग्रहों से पृथक् शरीरीमात्रों में आत्मभाव माननेवाला है वह मुझ शुद्धब्रह्म को पाता है॥ ५५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्विश्वरूपदर्शननामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

बारहवां अध्याय।

अर्जुन बोले इस प्रकार सदैव सावधान चित्त भक्त लोग सगुणब्रह्मरूप आप को उपासना करते हैं और अक्षर अर्थात् अविनाशी अव्यक्त शुद्धब्रह्म को उपासना करते हैं उन दोनों में योग के जाननेवाले कौन हैं, श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन! जो मुझ सगुण ब्रह्म में मन को प्रवेश करके सदैव उपाय करनेवाले मेरे भक्त मेरी उपासना करते हैं और श्रद्धावान् हैं उनको मैं मुक्ततम मानता हूं और जो इन्द्रियों को मन समेत स्वाधीन करके अर्थात् आत्मा में लय करके अविनाशी मन बुद्धि से परे सर्वव्यापी निर्विकार अचलरूप की उपासना करते हैं वह दृढ़बुद्धि सब जीवों के प्यारे हैं और इच्छावान् होकर मुझ निर्गुण ब्रह्म को प्राप्त होते हैं अर्थात् मुझी में हैं मुझसे जुदे नहीं हैं फिर उनके विषय में योगवित् यह शब्द कब नियत होसक्ता है, उन निर्गुण ब्रह्म में चित्त लगाने वालों को अधिकतर दुःख है क्योंकि निर्गुण पद की प्राप्ति अभिमानी पुरुषों को कठिनता से मिलती है और जो सब कर्मों को मेरे अर्पण करके मुझीको लयस्थान समझके अद्वैतबुद्धि से मेरे ही ध्यान में प्रवृत्त मन होकर मुझको ध्यान करते हुए उपासना करते हैं, हे अर्जुन! मैं उन मन से उपासना

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करनेवालों को थोड़े ही काल में जन्ममरणरूपी समुद्र से उद्धार करता हूं, मुझ विश्वरूपी ईश्वर में संकल्प विकल्पात्मक मन को नियत करके मुझीमें बुद्धि को लगाये हुए जो पुरुष मेरे ही रूप में निवास करेगा वह निस्संदेह मुझीमें एकता पावेगा, जो तू मुझ विश्वरूप में मन लगाने को समर्थ नहीं है तो हे अर्जुन ! मेरे किसी अवतार की उपासना से मन को दृढ़ करके मुझको प्राप्त हो, और जो उस मेरे अवतार की भी उपासना में असमर्थ है तो मेरे श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, चरणसेवन, वंदन, दास्य, सख्यभाव, आत्मनिवेदन, इस नवधाभक्ति में प्रवृत्त हो मेरे निमित्त कर्मों को करता हुआ चित्तशुद्धि को पावेगा और जो तू मेरी श्रवणादिनिष्ठा के भी करने में असमर्थ है तो सब कर्मों के फलों को त्याग कर दे, विचार के अभ्यास से श्रवण मनन इत्यादि ज्ञान श्रेष्ठ है और ज्ञान से श्रवण कीर्त्तनादि ध्यान उत्तम है और ध्यान से कर्म फलों का त्याग करना शुभ है और कर्मफल के त्याग से पीछे मोक्षरूप शान्ति वा श्रवणादि अभ्यास है उस अभ्यास से उत्पन्न ब्रह्मज्ञान उत्तम है और उस ज्ञान से साक्षात्कार रूपध्यान उत्तम है और उससे कर्मफल त्यागना श्रेष्ठ है, (अब भगवान् निर्गुण ब्रह्म की उपासना की प्रशंसा करते हैं) जिससे कि साधुओं को उनके गुणों में प्रीति हो शत्रुतारहित सब जीवों का मित्र, दयावान् शरीरादि में निरभिमानी अहंबुद्धि से रहित अर्थात् अपने को शुद्ध ब्रह्म से एकता करनेवाला रागद्वेष में समभाव क्षमावान्, यथा लाभ संतोषी, श्रवणादि में सदैव मन लगानेवाला इन्द्रियों समेत देह को स्वाधीन करनेवाला आत्मतत्त्व में दृढ़निश्चय रखनेवाला और मुझ शुद्ध ब्रह्म में मन बुद्धि को लय करनेवाला जो मेरा भक्त है वह मेरा प्यारा है क्योंकि ज्ञानी मेरा आत्मा है, ज्ञानी की दो दशा हैं समाधि और व्युत्थान इनमें से प्रथम दशा में तो उससे लोक नहीं डरता है और दूसरी दशा में लोक से वह नहीं डरता है इसी हेतु से प्रसन्नमन असन्तोषता, भय और व्याकुलता से रहित है वह मेरा प्यारा है (अब दूसरी दशा का वर्णन करते हैं) सुख की प्राप्ति और दुःखके निवृत्त होने में अनिच्छावान् बाहर भीतरसे पवित्र भगवत् भजन आदि में आलस्यरहित (उदासीन) अर्थात् प्रतिष्ठा अप्रतिष्ठा को समान जाननेवाला क्लेशरहित सब कर्मों के प्रारम्भों का त्यागनेवाला जो मेरा भक्त है वह मेरा प्यारा है, जो प्रिय प्राप्तिमें प्रसन्न नहीं होता और अप्रियता में दुःखी नहीं होता

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और प्रिय वस्तु के वियोग में शोच नहीं करता और शुभाशुभ को भी नहीं चाहता हुआ भक्तिमान् है वह मेरा प्यारा है, जो शत्रु-मित्र में और मानापमान में अथवा शीतोष्ण सुख दुःखों में समान होकर संगों का त्यागनेवाला है और निन्दास्तुति में तुल्यभाव मौनी, संतोषी, त्यागी स्थान से रहित है और दृढ़बुद्धि से भक्तिमान् है वह पुरुष मेरा प्यारा है, जो श्रद्धावान् मुझ वासुदेव निर्गुण परमानन्दरूप को अपना लयस्थान जानते हैं और इस अविनाशी मोक्षसाधन को अत्यन्त अनुष्ठान करते हैं वह मुझको अतिशय प्यारे हैं ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

तेरहवां अध्याय ।

इस अध्याय में जीव और ब्रह्म की एकता का वर्णन है ॥

अर्जुन बोले कि हे केशवजी ! प्रकृति और पुरुष और क्षेत्र वा क्षेत्रज्ञ और ज्ञान वा ज्ञेय इन सबको मैं जानना चाहता हूं, श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन ! यह शरीररूपी क्षेत्र आत्मा को अविद्या से आच्छादन करनेवाला विद्या से पार उतारनेवाला कर्मबीज का उत्पत्तिस्थान कहाजाता है जो इस क्षेत्र को जानता है क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के जाननेवालों ने आत्मारूप क्षेत्रज्ञ कहा है हे भरतर्षभ ! सब क्षेत्रों में मुझीको क्षेत्रज्ञ और रूप जानो अर्थात् मैं परमेश्वरही दो रूप युक्त होगया हूं क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का जो ज्ञान है वह मुझसे ही सम्बन्ध रखनेवाला ज्ञान है इसको ब्रह्मज्ञानियों ने निश्चय किया है, वह क्षेत्र जैसे रूप का है और जैसे प्रकार का है और जिन जिन विकारों से युक्त है और जिस जिस विकार से जो जो उत्पन्न होता है और जो वह क्षेत्रज्ञ है अथवा जैसे प्रभाववाला है उसको मूलसमेत मैं कहता हूं, जिसको ऋषियों ने अनेक रीतों से गाया और जो अनेक प्रकार के छन्द वेद और मन्त्रों से प्रत्येक शाखाओं में सिद्ध किया गया बहुत निश्चययुक्त हेतुमान् ब्रह्म के जतलानेवाले वेद के भागरूप ब्राह्मणों के वचनों से निश्चय किया हुआ पञ्चमहाभूत और शब्दादि पञ्च तन्मात्रा, अहंकार, महत्तत्त्व, बुद्धि यह क्षेत्र का स्वरूप है और श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना, घ्राण यह पांच ज्ञानेन्द्रिय और वाक्, पाणि, पाद, लिंग, गुदा यह पांच कर्मेन्द्रिय मन और आकाशादि पांच स्थूल विषय इन सबको विकार जानो ६ और विकार से उत्पन्न होनेवाली यह वस्तु हैं इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, संघात अर्थात् आत्मा इन्द्रिय मनसे प्रवृत्त भोक्ता चेतना धैर्य यह विकारों सहित क्षेत्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

का मिला हुआ वर्णन हुआ—(अब ज्ञान के साधनों को कहते हैं) अपनी प्रतिष्ठा न चाहना अर्थात् अपनी प्रतिष्ठा के लिये धर्मरूप पाखण्ड न करना देह, मन, वाणी से किसी जीव को दुःख न देना दूसरे की ओर से अपकार होने पर चित्त को न बिगाड़ना, सरल प्रकृति होना आचारी की उपासना भीतर बाहर से पवित्रता मोक्ष साधन की प्रवृत्ति में विघ्न होने पर भी नियत बुद्धि रहना देह इन्द्रिय और इन्द्रियों के विषय में वैराग्य होना निरहङ्कारता, जरा, जन्म रोग के दुःख और दोषों को अच्छेप्रकार देखना, पुत्र, स्त्री और घरों में ममता न रखना और उनके सुख, दुःखों में सुखी और दुःखी न होना। प्रिय, अप्रिय के मिलने में सदैव एकभाव रहना, इष्ट, अनिष्ट की उपपत्ति में सदैव समचित्त रहना एकान्त स्थान में बैठना, मनुष्यों की सभा में प्रीति न करना, अध्यात्म (शास्त्रजन्य) ज्ञान में सदैव नियत रहना तत्त्वज्ञान के प्रयोजन को देखना यह ज्ञान अर्थात् ज्ञान का साधन कहा जो इसके विपरीत है वही अज्ञान है, अब (क्षेत्रज्ञ को कहते हैं) जो इस ज्ञान से जानने के योग्य है उसको कहता हूं जिसको जानकर मोक्ष को पाता है आदि रखनेवाला जो कार्य कारण है उससे श्रेष्ठ जो ब्रह्म है वह न सत् कहा जाता है न असत् कहा जाता है (अब उसके प्रभाव अर्थात् विश्वरूप लक्षण को कहते हैं) वह सब दिशाओं में बाह्याभ्यन्तर हाथ, पैर, नेत्र, मुख, शिर, कान रखने वाला है और लोक में सब को व्याप्त करके नियत है सब इन्द्रिय और उनके शब्दादि विषयों से पकड़ा हुआ और पकड़नेवाला सा विदित होता है परन्तु वास्तव में वह सब इन्द्रिय और इन्द्रियों के विषयों से स्पर्श भी नहीं होता है अर्थात् पवित्ररूप होकर सबसे पृथक् है परन्तु सबका धारण करनेवाला है पकड़े हुये और पकड़नेवाले से पृथक् होने के कारण निर्गुण है परन्तु बुद्धि आदि के प्रकाशक होने से गुणों का भोगनेवाला सा विदित होता है जीवों के बाहर, भीतर आठ प्रकृति और सोलह विकारों का प्रकाशक होने से चलायमान सा दिखाई देता है परन्तु वास्तव में वह अचल है और सब उपाधियों के पृथक् होने से वह जानने के योग्य नहीं है क्योंकि अज्ञानियों से परे नियत है और ज्ञानियों के सम्मुख वर्त्तमान है, प्राणियों में बहुत रूपवाला सा दिखाई देता है परन्तु अनेकरूपता से रहित ऐसे अनेक दीखता है जैसे कि जल में एक चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब बहुत रूपयुक्त दिखाई देता है भूतों का

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धारण करनेवाला है अर्थात् जैसे कि चन्द्रमा घट और घट के जल से दूर है इस रीति से वह दूर नहीं है क्योंकि वह सब भूत उससे पृथक् नहीं हैं ग्रसित करनेवाला वा प्रकट करनेवाला वह क्षेत्रज्ञ जानने के योग्य है अर्थात् जैसे कि अज्ञानदशा में रस्सी ही सर्प के भ्रम को उत्पन्न करती है और विज्ञान-दशा में सर्प को ग्रस जाती है अर्थात् सर्प का अभाव दिखाती है और उस रस्सी से पृथक् भी नहीं है इसीप्रकार यह सब दृष्टपदार्थ उस क्षेत्रज्ञ आत्मा में कल्पित हैं, निर्विकार लक्षण को कहकर (अब स्वरूप लक्षण को कहते हैं) वह प्रकाशमानों में भी ज्योतिरूप है, और अज्ञान से पृथक् कहा जाता है और सबके हृदय में नियत ज्ञानरूप जानने के योग्य विज्ञान से प्राप्त होने के योग्य है यह क्षेत्रज्ञ और ज्ञान अर्थात् ज्ञान का साधन विज्ञान से जानने के योग्य मिला हुआ क्षेत्रज्ञ वर्णन हुआ इनको जान कर मेरा भक्त मेरे भाव अर्थात् ब्रह्मभाव के योग्य होता है, आठ प्रकार की परा नाम प्रकृति और जीव नाम अपरा प्रकृतिरूप पुरुष इन दोनों को आदि अन्त रहित जानो और इच्छा आदि विकार और बुद्धि, इन्द्रिय आदि गणों को प्रकृतिसे उत्पन्न जानो, कार्य और कारण और इनके सम्बन्धी सुख, दुःख और मोहरूप गुण इन दोनों कार्य कारण के कर्तृत्व में परा नाम प्रकृति ही कारणरूप है, और सुख, दुःख के भोगने में परा प्रकृति नाम पुरुष कारण कहा जाता है परा प्रकृति में नियत पुरुष ही प्रकृति से उत्पन्न होनेवाले गुणों को भोगता है उत्तम अनुत्तम योनियों के जन्मों में इसके गुणों का संग ही कारण है, गुण के चारों प्रकारों का वर्णन करते हैं क्षेत्रज्ञ उत्तम पुरुष ही इस शरीर के बाहर, भीतर का द्रष्टा है अर्थात् आत्मा में उन गुणों के आजाने को न देखता हुआ भी अपने उदासीनरूप से गुण के प्रचार का अद्रष्टा है इसीप्रकार यह हमारा साक्षी और अनुमन्ता है अर्थात् गुणों के भोक्ता होने और आत्मा के असङ्ग होने पर गुणों को आत्मा में संयुक्त मानता है यह सांख्य-वालों का मत है और भर्त्ता है अर्थात् आत्मा में कर्तृत्व कर्म प्रवेशित करने से कर्मफलों का सञ्चय करनेवाला है जैसे कि नैयायिक आदि और भोक्ता हैं अर्थात् देह, इन्द्रिय, मन आदि रूप गुणों के समूह को आत्मारूप देखता हुआ भी भोक्ता होता है जैसे कि चारवाक् मतवाले आदि अब चारों गुणों का वर्णन होचुका वा महेश्वर है अर्थात् जब गुणों को स्वाधीन करके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

क्रीड़ा करता है तब उसको महेश्वर कहते हैं और जो उत्पत्ति, पालन, नाश का करनेवाला प्रभु जगत् का अन्तर्यामी है वही गुणों को छोड़कर नियत परमात्मा कहा जाता है आशय यह है कि अनुमन्ता, भर्त्ता, भोक्ता इन तीन रूपों से बन्धन को पाता है और आप द्रष्टा महेश्वर परमात्मा इन तीनों रूपों से सदैव मुक्त है, जो इस रीति से पुरुष को और गुणयुक्त प्रकृति को जानता है वह कर्मों में कैसा ही प्रवृत्त हो तो भी फिर जन्म नहीं लेता है अर्थात् मुक्त होजाता है, कोई कोई तो शरीर में बुद्धि और ध्यान के द्वारा परमात्मा को देखते हैं और कोई सांख्यमतवाले योग अर्थात् ब्रह्मज्ञान से और कोई कर्मयोगी पुरुष कर्मफल को ईश्वर के अर्पण करने से परमेश्वर को देखते हैं और कितने ही पुरुष इस प्रकार को न जानकर दूसरे आचार्यों से सुनकर अथवा ब्रह्म को अपरोक्ष करके उपासना करते हैं वह गुरु से सुनेहुये उपदेश में पूर्ण विश्वास रखनेवाले भी संसार को अवश्य तरते हैं, जितने जड़ चैतन्य जीव उत्पन्न होते हैं हे भरतर्षभ! उनका पैदा होना क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के योग से जानो अर्थात् जो क्षेत्रज्ञ आत्मा अपने को क्षेत्र से इसप्रकार पृथक् जाने जैसे कि रस्सी से पृथक् सर्प के भ्रम की फिर उत्पत्ति नहीं होती, जो सब सृष्टि में सदैव नियत और रस्सी में सर्प की भ्रान्ति के समान नाश होनेवालों में नाश न होनेवाले परमेश्वर को देखता है वही देखनेवाला है, (अब दर्शन के फलको कहते हैं) अपने शरीर के समान सब शरीरों में अच्छे प्रकार से नियत ईश्वरको समानतापूर्वक देखता हुआ शरीरादिक के सम्बन्ध हेतु से आत्मारूप ईश्वर को पीड़ा नहीं देता है वह भी अन्त में मोक्ष को पाता है अथवा आत्मा को अद्वितीय देखने से अपनी आत्मा के सदृश दूसरे को भी दयालु होकर आश्रय देता है वह पुरुष भी मोक्ष को पाता है, जो मन, वाणी, देह से प्रारम्भ हुये कर्मों को प्रकृति से अर्थात् माया से किया हुआ देखता है और इसी प्रकार आत्मा को अकर्ता देखता है वह आत्मा को सब स्थानों में समान देखता है ३० किस रीति से प्रकृति को कर्तृत्व है और आत्मा को नहीं है इस शङ्का को कहते हैं जब आकाशादि पञ्चभूतों को और चारों खान के अनेक प्रकारवाले जीवों को रस्सी में सर्प और सुवर्ण में कुण्डल आदि के समान एक आत्मा में लय होता हुआ देखता है और उसी एक आत्मा से विस्तार को देखता है तब ब्रह्म को प्राप्त होता है अर्थात् ब्रह्म ही होजाता है तात्पर्य यह है कि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

द्वैत में कर्त्तापन है और एकता में नहीं है, हे अर्जुन ! यह अविनाशी परमात्मा आदि रहित और गुणों से पृथक् होने से शरीर में वर्त्तमान होकर भी कर्म नहीं करता है और न लिप्त होता है, जैसे कि सर्वव्यापी आकाश असंग स्वभाव से लिप्त नहीं होता है इसी प्रकार देह के भीतर सर्वत्र नियत आत्मा भी लिप्त नहीं होता है, हे भरतवंशिन्! जैसे कि सूर्य इस संपूर्ण लोक को प्रकाशित करता है उसी प्रकार क्षेत्रज्ञ आत्मा नानाप्रकार का रूप धारण करनेवाले क्षेत्ररूप शरीर को प्रकाशित करता है, जिन्होंने इसप्रकार से क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के भेद को जान कर ज्ञानरूप नेत्र के द्वारा अथवा आकाशादि भूतों की मूलरूप जो त्रिगुणात्मिका अविद्या है उसके विद्यारूप से मोक्ष को जाना है वह मोक्ष को पाते हैं ॥३५॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतासूपनिषत्सु क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

चौदहवां अध्याय।

श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन! अब मैं आकाशादि भूत और अण्डजादि चारों प्रकार के जीवों की उत्पन्न करनेवाली प्रकृति क्या है ? वह प्रकृति किसके आश्रय से भूतों को उत्पन्न करती है ? और कैसे बन्धन होता ? वा कैसे उस बन्धन से मोक्ष होता है ? और मुक्त लोगों का कौन लक्षण है ? इन सब बातों को प्रकट करता हूं इसके पीछे महा उत्तम ज्ञान को कहूंगा जिसको जानकर सब मुक्तलोगों ने इस संसार से पृथक् होकर मोक्षरूपा महासिद्धि को पाया है जिन्होंने इस ज्ञान को आश्रय करके मुझ ईश्वर की साधर्मी अर्थात् सर्वात्मा सर्वयन्ता सर्वभाव में नियतता आदि भावों को पाया है वह सृष्टि के उत्पत्तिकाल में भी उत्पन्न नहीं होते हैं और प्रलय में भी कालाग्नि से पीड़ित नहीं होते हैं, वह भूतप्रकृति कौन है ? और किसके आश्रय से उत्पत्ति को करती है ? इसको सुनो कि मुझ शुद्ध चिन्मात्र की योनि अर्थात् प्रवेश होने का स्थान महत्तत्त्व की आदिभूता माया है उसमें अपने प्रतिबिम्बरूप गर्भ को मैं धारण करता हूं हे भरतवंशिन् ! उसीसे सब महत्तत्त्वादि और हिरण्यगर्भादि भूतों की उत्पत्ति होती है, हे अर्जुन! सब योनियों में जो देव, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि के शरीर उत्पन्न होते हैं उनकी योनिरूप माता माया है और मैं प्रतिबिम्बरूप वीर्य का देनेवाला पिता हूं इस प्रकार माया ईश्वर के आश्रय से सृष्टि को उत्पन्न करती है, हे महाबाहो ! यह सत्त्व, रज, तम तीनों गुण उस माया से उत्पन्न

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हुये हैं वह गुण रूपान्तर दशारहित आत्मा को भी देह में बन्धन करते हैं, यहां कौन गुण किस संग से बन्धन करता है इसको सुनो कि हे निष्पाप, अर्जुन! उन गुणों में सतोगुण की निर्मलता होने से तो सबका प्रकाश करनेवाला होता है और रजोगुण तमोगुण में लिप्त नहीं होता वह सतोगुण सुख और ज्ञान के संग से बन्धन करता है अर्थात् जब यह कहै कि मैं सुखी हूं व ज्ञानी हूं तब बन्धन है, और तृष्णा और संग से उत्पन्न रजोगुण को रागस्वरूप जानो हे अर्जुन! वह रजोगुण अभिमानी शरीर को कर्मों के कर्मफल की इच्छा से बन्धन करता है, और सब अभिमानी शरीरों को मोह करनेवाले तमोगुण को अज्ञानरूप माया की आवरणशक्ति से उत्पन्न जानो हे भरतवंशिन्! वह तमोगुण प्रमाद, आलस्य, निद्रा इत्यादि बातों से बन्धन करता है यह प्रमाद सतोगुण के कर्म करने को बाधा करता है और आलस्य रजोगुण के कर्म को निषेध करता है और निद्रा निर्भयता के कर्मों को निषेध करती है, हे अर्जुन! सतोगुण सुख में प्रवृत्त करता है रजोगुण कर्म में और तमोगुण ज्ञान को ढक कर प्रमाद में लगाता है, यह सतोगुण आदि तीनों गुण कब अपने २ कामों में प्रवृत्त होते हैं हे भरतवंशिन्! रजोगुण और तमोगुण को स्वाधीन करने से सतोगुण की वृद्धि होती है और सतोगुण तमोगुण को शान्त करने से रजोगुण की वृद्धि होती है और सतोगुण रजोगुण को आधीन करने से तमोगुण वृद्धि पाता है, (अब गुणों के प्रकट होने से चिह्नों को कहते हैं) जब इस देह के भीतर बाह्याभ्यन्तर की इन्द्रियरूपद्वारों में प्रकाशरूप ज्ञान और सुख उत्पन्न होता है तब सतोगुण की वृद्धि जानो और हे अर्जुन! जब रजोगुण की वृद्धि होनेपर (लोभ) कर्मफल की इच्छा से अग्निहोत्रादि करने में (प्रवृत्ति) और स्थान के बनाने आदि का (प्रारम्भ) अच्छे बुरे कर्मों में (अशान्ति) दूसरे के धन में इच्छा करना इत्यादि सब बातें उत्पन्न होती हैं और तमोगुण की अतिशय वृद्धि होनेपर सतोगुणी कर्म की अप्रकाशता और परमेश्वर के निमित्त अग्निहोत्रादि कर्मों का न करना योग्यायोग्य विचाररहित (प्रमाद) मोह इत्यादि सब वस्तु उत्पन्न होती हैं, जब सतोगुण की अतिशय वृद्धि होने पर किसी का मरना होजाता है तब हिरण्यगर्भ के उपासकों के अथवा देवताओं के निर्मल क्लेशरहित लोकों को पाता है, रजोगुण में शरीर त्याग होने पर कर्मफल चाहनेवाले पुरुषों में उत्पन्न होता है इसीप्रकार तमोगुण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

में मरनेवाला चाण्डाल आदि में वा पशु पक्षियों में उत्पन्न होता है, अच्छी रीति से किये हुये सतोगुणी कर्म का फल दुःख और अज्ञान से रहित निर्मल और ज्ञान वैराग्य आदि युक्त सात्त्विक धर्म हैं रजोगुणी कर्म का फल दुःख है और तमोगुणी कर्म का फल अज्ञान है १६ सतोगुण से ज्ञान उत्पन्न होता है रजोगुण से लोभ पैदा होता है और तमोगुण से प्रमाद मोह और अज्ञान पैदा होते हैं, सतोगुणी पुरुष ऊपर जाते हैं अर्थात् देवभाव को पाते हैं रजोगुणी मध्य में नियत होते हैं अर्थात् मनुष्यशरीर को पाते हैं और नीचगुणों की वृत्ति में नियत तामसी पुरुष नरक को जाते हैं अर्थात् पशु पक्षी आदि में उत्पन्न होते हैं, जैसे कि प्रकृति पुरुष को बन्धन करती है इसबात को कहकर (अब उस प्रकृति से अलग होने को कहते हैं) जब द्रष्टारूप जीव सिवाय गुणों के किसी दूसरे को नहीं देखता हैं और जो गुणों से परे मुझको जानता है वह मेरे ब्रह्मभाव को पाता है, जीवात्मा इन तेईस रूपान्तर होने वाले गुणों को जिनसे कि स्थूल शरीर की उत्पत्ति है उल्लङ्घन करके अर्थात् निर्विकल्प समाधि के अभ्यास से निर्मूल करके जरा, जन्म, मरण के दुःखों से रहित होकर मोक्ष को पाता है अर्जुन बोले कि हे प्रभो ! कौन से चिह्नों से इन तीनों गुणों को उल्लङ्घन करनेवाला होता है ? उसका कैसा आचार है ? और किस रीति से इन तीनों गुणों को उल्लङ्घन करके बर्ताव करता है ? श्रीभगवान् बोले हे पाण्डव ! प्रकाश, प्रवृत्ति, मोह यह तीनों सत्त्वादि गुणों के कार्यरूप हैं जो वह अन्तःकरण आदि में वर्त्तमान होयँ तो उनसे शत्रुता नहीं करता है, जो उदासीन के समान नियत होकर गुणों से चलायमान नहीं होता है अर्थात् ऐसा जानता है कि यह गुणों का बर्त्ताव है इस बुद्धि में नियत होकर जो स्थिरता से नियत है वह चलायमान नहीं होता है अर्थात् वासनाओं से रहित होकर समाधि में वर्त्तमान बना रहता है २३ समाधि में सुख दुःख को समान जाननेवाला वा अपनी इच्छा से नियत लोहे पत्थर सुवर्ण को बराबर समझनेवाला अथवा प्रिय अप्रिय वा निन्दा स्तुति में सम बुद्धि धैर्यमान मानापमानरहित शत्रु मित्र में समभाव होकर जो प्रारम्भ कर्मों का त्याग करनेवाला है वह गुणातीत कहाजाता है जो मुझको अव्यभिचारिणी भक्ति से सेवन करता है अर्थात् ध्यान करता है वह इन गुणों को उल्लङ्घन करके ब्रह्मभाव के योग्य होता है, मैं वेद का वा अविनाशी मोक्ष साधन का

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथवा भगवत् अर्पणरूप प्राचीन धर्म का और मोक्षरूपी सुख का अन्तस्थान हूं ॥ २७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतासूपनिषत्सु प्रकृतिगुणभेदो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ।

श्रीभगवान् बोले कि, ऊपर के अध्याय में कहा है कि मैं मोक्षसुख का अन्तस्थान हूं उसमें कौन लक्षण हैं ? और वह सुख किससे ढका हुआ है ? और कौन से साधन से उसका आवरण दूर होगा ? और किस अधिकारी से वह प्राप्त करने के योग्य है ? इन सब बातों को अब मैं कहता हूं वेद में निश्चय करके यही लिखा है कि आनन्द ही से सब सृष्टि की उत्पत्ति होती है और आनन्दों में सबसे उत्तम ब्रह्मानन्द है वही इस संसाररूपी वृक्ष का मूल कारण है ऊपर को परमानन्दरूप मूल रखनेवाला और नीचे की ओर शाखा रखनेवाला वृक्ष है जोकि मिथ्या होने से एक दिन भी रहने के योग्य नहीं है परन्तु वेदों ने अज्ञानियों के लिये उसको अविनाशी वर्णन किया जिस वृक्ष के पत्ते वेद और यज्ञ हैं उस संसाररूपी वृक्ष को जो जानता है वह वेद का जाननेवाला है उसकी शाखा नीचे को तो मृत्युलोक पाताललोक तक और ऊपर को सत्यलोक पर्यन्त फैल रही हैं और वही शाखा सतोगुण आदि गुणों से महावृद्धि युक्त विषयरूपी पत्तों से व्याप्त हैं और नीचे नरलोक में उस वृक्ष की जड़ें जिनसे कि धर्म अधर्म नाम कर्म बँधे हुये हैं फैली हुई हैं और जैसे रस्सी में सर्प का रूप नहीं होता उसी प्रकार वहां उसका भी रूप नहीं पायाजाता है इसके हेतुरूप मूल अज्ञान के आदि अन्त रहित होने से यह संसाररूपी वृक्ष भी आदि अन्त से रहित है और उसके लय होने का भी स्थान नहीं है क्योंकि यह ब्रह्म का विकार नहीं है जो उसमें लय होय ऐसे अत्यन्त दृढ़ मूलवाले वृक्ष को जिसका कि एक दिन का भी विश्वास नहीं देह आदि के असंगरूप दृढ़शस्त्र से काटकर श्रुति और युक्ति बल के द्वारा वह ब्रह्मपद निश्चय करने के योग्य है जिस निर्विकल्पपद में प्राप्त होने के पीछे प्राप्त होनेवाले पुरुष फिर नहीं लौटते हैं उस सबके आदिरूप और घटघटवासी की शरण होता हूं ऐसी भावना करे कि आदि रहित संसारी प्रत्यक्षतारूपी प्रवृत्ति निकले इस रीति से मोक्ष सुख के ढकनेवाले संसारी वृक्ष को और उसके काटनेवाले असंगरूपी शस्त्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को कहकर उस सुख की प्राप्ति में अधिकारी के स्वरूप को कहते हैं मोह मान और कर्मों के संगों समेत रागादि दोषों को जीतनेवाले आत्मनिष्ठ सर्व इन्द्रियजित हर्ष शोक रहित और विद्या के द्वारा अविद्या दूर करनेवाले पुरुष उस अविनाशी पद को पाते हैं, उस पद में न सूर्य प्रकाश करता है न चन्द्रमा प्रकाशित होता है अर्थात् रूपादि रहित नेत्रों से देखने के अयोग्य बुद्धि से परे होने से वहां सूर्य चन्द्रमा प्रकाश नहीं करसक्ते हैं और वाणी का विषय न होने से अग्नि प्रकाश नहीं करसक्ता है जिसको जानकर अर्थात् अज्ञान के मूल न होने से नहीं लौटते हैं वही मेरी परमज्योति है, उसके ही कारण जगत् का ईश्वर देह को प्राप्त करता है अर्थात् शरीर को उत्पन्न करके उसीमें आप भी प्रवेश करता है इसीहेतु से इस जीवलोक में जीवरूप मेरा ही अंश और सनातन है वह सुषुप्ति अर्थात् प्रलय समाधि के समय अपने विषय रूप स्वभाव में नियत होकर छठे मन समेत पांचों इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षण करता है अर्थात् अपने स्वरूप में लय करता है और जाग्रत् उत्पत्ति और पालन के समय इन इन्द्रियों को अपने लय स्थान से विषय के स्थानपर लेजाकर ऐसे प्राप्त होता है जैसे कि गंध को लेकर वायु प्राप्त होती है ८ यह श्रोत्र, चक्षु, स्पर्श, रसना, घ्राण इन पांचों ज्ञानइन्द्रियों को और मनको व्यापारवान् करके विषयों को प्रकाश करता है अर्थात् व्यापार का भोग इन्द्रियों में ही है और आत्मा केवल प्रकाशकमात्र है, उन मन संयुक्त इन्द्रियों की देहान्तर करनेवाली इन्द्रियों के नियत होनेपर आप भी नियत होकर इन्द्रियों के भोक्ता होने पर भोगनेवाले और उन इन्द्रियों के सतोगुण आदि होने में गुणोंसेसंयुक्त होनेवाले को अज्ञानी लोग नहीं देखते हैं परन्तु ज्ञानरूप नेत्र रखनेवाले उनको देखते हैं तात्पर्य यह है कि जैसे घटाकाश की गति घट के हिलाने से विदित होती है परन्तु वास्तव में नहीं है इसी प्रकार आत्मा वास्तव में गति और विषयों के भोग और गुणों के संयोग से पृथक् है, १० उपाय करनेवाले योगी इस असंग आत्मा को बुद्धि में नियत देखते हैं और जिन्होंने यज्ञादि कर्मों के करने से मन को शुद्ध करके अपने आधीन नहीं किया वह उपाय करते हुए भी इस परमात्मा को नहीं देखते हैं, फिर सूर्यादिक कैसे प्रकाशित हैं इसको कहते हैं–जो तेज सूर्य और सूर्यसम्बन्धी चक्षुरिन्द्रिय में वर्त्तमान होकर संपूर्ण संसार को प्रकाशित करता है और जो तेज चन्द्रमा और चन्द्रमा सम्बन्धी मन में वर्त्तमान है और जो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अग्नि और अग्निसम्बन्धी इन्द्री में है उसको तुम मेरा ही तेज जानो, मैं पृथ्वी में प्रवेश करके अपने अपने तेज से संसार को धारण करता हूँ और जलरूप चन्द्रमा होकर सब ओषधियों को रससंयुक्त करके पुष्ट करता हूँ, मैं ही वैश्वानर नाम अग्नि होकर सब जीवों के शरीर में नियत होकर प्राण अपान से संयुक्त भक्ष्य, भोज्य, चूष्य, लेह्य इन चारों प्रकार के पदार्थों को पचाता हूं मैं सबके हृदय में वर्त्तमान आत्मा हूं मुझ आत्मारूप से स्मृतिज्ञान है और पापियों के निमित्त वही अज्ञान है और मैं ही सब वेद कर्म उपासना और ज्ञानकाण्डरूप के द्वारा जानने के योग्य हूं और वेदान्त का कर्त्ता और वेदार्थ का ज्ञाता हूं अर्थात् जिस में यह सब गुण होयँ वह मेरी ही विभूति है, लोक में यह क्षर अक्षर नाम दोही पुरुष हैं सब संसार क्षर नाम है और रूपान्तर दशारहित परमात्मा का प्रतिबिम्ब रूप जीवात्मा अक्षर नाम से प्रसिद्ध है, कार्य कारण और उपाधि से रहित यह दोनों उत्तम पुरुष परमात्मा नाम मायासे ईश्वररूप होकर तीनों लोकवालों के शरीरों में प्रवेश करके रूपान्तरदशा से रहित सबका पोषण करता है, जोकि मैं क्षर से पृथक् और उपाधियुक्त जीव से भी उत्तम हूं इसी कारण से लोक और वेद में पुरुषोत्तम कहाजाता हूं, जो मुझको संशय आदि रहित होकर पुरुषोत्तम जानता है वह सर्वज्ञ है और हे अर्जुन! वही मुझको सब भाव और रीति से भजता है भगवत् के तत्त्वज्ञान को मोक्षफल कहकर अब उसकी प्रशंसा करते हैं हे निष्पाप, भरतवंशिन्, अर्जुन! मैंने यह अत्यन्त गुप्तशास्त्र तेरे आगे वर्णन किया इसको जानकर बुद्धिमान् ब्रह्मज्ञानी कर्मों से निवृत्त होकर मोक्ष को पाता है॥ २०॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः॥ १५॥

सोलहवां अध्याय।

श्रीभगवान् बोले कि, अपने नाश से भय करना, चित्त की निर्मलता, श्रद्धा आदि से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान, जाने हुए अर्थ में मनके लगानेवाला योग, इसके निष्ठावान्, जितेन्द्रिय श्रौतस्मार्त्तयज्ञ, वेद पढ़ना, तप, सरलभाव, अहिंसा, सत्य, अन्य से दुःखपाने पर भी क्रोध न करना, सब कर्मों का त्याग, शान्ति, चित्त की शान्ति, पराये दोषों को न कहना, दुखी जीवों पर दया करना, इन्द्रियों के विषयों के सन्मुख होने पर भी विपरीत दशा से रहित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होने, मृदुता, लज्जा, नीच कर्मों में किसी अङ्ग को प्रवृत्त न करना, तेज से प्रगल्भता, घायल होकर भी क्रोधयुक्त न होना अथवा क्रोध आ जाय तो उसको रोकना, धैर्यता, बाह्याभ्यन्तरीय पवित्रता, शत्रुता रहित होना, अभिमान न करना, अपने को बहुत बड़ा न मानना, दूसरों से अभ्युत्थान की आशा न रखना, हे भरतर्षभ ! दैवी सम्पत्ति के आगे जन्मलेनेवालों के ये गुण होते हैं अर्थात् इन गुणों को दैवी सम्पत्ति कहते हैं (अब रजोगुण तमोगुण रूप आसुरी सम्पत्ति का वर्णन करते हैं) धर्म में पाखण्ड, धन का गर्व, इत्यादि अपनी महत्त्वता चाहना, क्रोध, कठोर वचन सत्य मिथ्या से अनभिज्ञ अज्ञान, यह गुण आसुरीसम्पत्ति के उदय होनेवाले के हैं, दैवी सम्पत्ति मोक्ष के निमित्त है और आसुरीसम्पत्ति सदैव बन्धन करनेवाली कही जाती है सो हे अर्जुन ! तू दैवीसम्पत्ति के सन्मुख उत्पन्न हुआ है इससे शोक मतकर, हे अर्जुन ! इस लोकमें जीवों के स्वभाव दो प्रकारके हैं एक दैव अर्थात् देवसम्बन्धी दूसरा आसुर अर्थात् असुरसम्बन्धी इन दोनों में दैव स्वभाव को तो ब्यौरेवार कहा अब आसुरस्वभाव को कहता हूं आसुर मनुष्य प्रवृत्ति, निवृत्ति को नहीं जानकर बाहर भीतर से अपवित्र होते हैं और आचार सत्यता आदि से रहित होकर वह पुरुष संसार को भी यथार्थ रहित धर्माधर्म और प्रतिष्ठा से खाली कहते हैं और यह भी कहते हैं कि इस का कोई ईश्वर नहीं है यह पुरुष स्त्री के संग से उत्पन्न हुआ है इसका हेतु कामदेव है, ऐसे निर्बुद्धि भयानक कर्मी दुष्ट लोग जिनके धैर्यादि नष्ट हो गये हैं वह ऐसे प्रमाण को आश्रय करके जगत् के नाश के लिये उत्पन्न होते हैं, वह कपटी मानी भ्रष्टव्रती कठिनता से पूर्ण होनेवाली कामनाओं को आश्रय करके अज्ञानता से वशीकरण मारणादि नीच कर्मों को अङ्गीकार करके संसार के नाशके लिये कर्मकर्त्ता होते हैं, वह लोग मृत्युकारी महा चिन्ताओं में डूबे हुए हैं और कामादि भोगों को जीवन का फल माननेवाले हैं और जो कुछ दृश्यमान है उसको निश्चय करके वही मानते हैं और आशारूपी हजारों बन्धनों से बँधे हुये काम क्रोध ही को मुख्यस्थान समझनेवाले कामभोग के लिये अनर्थों के द्वारा धनसमूहों को चाहते हैं, यह प्राप्त हुआ इस मनोरथ को पाऊंगा यह है और फिर यह सब मेरा धन होगा, यह शत्रु मैंने मारा और उन शत्रुओं को भी मारूंगा मैं समर्थ हूँ भोगी हूँ शुद्धात्मा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हूं बली हूं और सुखी हूं, धनी हूं कुलवान हूं मेरे समान कौन है यज्ञादि करूंगा दान करूंगा आनन्द करूंगा ऐसे अज्ञानों में भूला हुआ है, बहुत से विषयों में प्रवृत्त होने से चित्त से व्याकुल मोहरूपी बन्धन में बँधा हुआ काम और भोगों में प्रवृत्तचित्त पुरुष महाघोर नरकों में गिरते हैं, अपने को बड़ा माननेवाले स्तब्ध अहंकारी धनके मद में भरे हुए मनुष्य पाखण्ड करके बुद्धि के विपरीत नाममात्र यज्ञों से पूजन करते हैं, अहंकार, बल, दर्प, काम, क्रोध इत्यादि को आश्रय करके वा घातादिक कर्मों से अपने शरीर से दूसरे शरीरों में मुझ जगदात्मा से शत्रुता करते हैं और शम, दम आदि सब वेदोक्त गुणों की निन्दा करते हैं, हे अर्जुन ! मैं अन्तरात्मा उन शत्रुता करनेवाले निर्दयी सबसे अधम पापात्माओं को सदैव आसुरी योनियों में डालता हूं, फिर वह अज्ञानी आसुरी योनियों में पड़े हुए जन्म जन्मान्तर में भी मुझको न पाकर अधम पशु पक्षी वृक्ष आदि के शरीरोंको पाते हैं, यह काम क्रोध लोभरूपी नरक के तीनों द्वार आत्मा के नाश करनेवाले हैं इसकारण इनतीनों को त्यागकरे, हे अर्जुन ! इनतीनों नरक के द्वारों से अत्यन्त अलग होकर भगवद्भजन आदि कल्याणों को करता है तब परम मोक्षरूप गति को पाता है, जो मनुष्य शास्त्रबुद्धि को त्यागकर मन के इच्छारूपी कर्मों में प्रवृत्त होता है वह मन की शुद्धि को और सुखपूर्वक मोक्ष को नहीं पाता है, इस हेतु से कर्त्तव्य अकर्त्तव्य व्यवस्थाओं में तू शास्त्र को प्रमाण कर अर्थात् जिसकी जैसी विधि शास्त्र में कही हुई है उसको ठीक ही जानकर कर्मों को करना योग्य है॥ २४॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतासूपनिषत्सु देवासुरसंपाद्विभागो नाम षोडशोऽध्यायः॥ १६॥

सत्रहवां अध्याय।

अर्जुन बोले कि, हे श्रीकृष्णजी ! जो श्रद्धावान् पुरुष शास्त्रबुद्धि को त्याग करके ईश्वर का भजन पूजन करते हैं उनकी कौन निष्ठा है सतोगुणी वा रजोगुणी अथवा तमोगुणी है, श्रीभगवान् बोले कि अभिमानी पुरुषों की स्वभाव से उत्पन्न होनेवाली श्रद्धा पूर्वजन्म के धर्माधर्म से उत्पन्न है वह सतोगुणी रजोगुणी और तामसी इनतीन प्रकारकी है इन तीनों प्रकार की श्रद्धा को कहता हूं, हे भरतवंशिन् ! पूर्वकर्म संस्कार के अनुसार जो बुद्धिबल है उसीके अनुरूप सब की श्रद्धा बनी हुई रहती है यह श्रद्धारूप है जो जैसी श्रद्धावाला है वह उसी श्रद्धा के गुणों से प्रसिद्ध होता है, सतोगुणी पुरुष देवताओं को पूजते हैं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रजोगुणी मनुष्य यक्ष, राक्षसों को और तमोगुणी लोग प्रेत भूतादिकों को सेवन करते हैं, वेदादि शास्त्रों के विरुद्ध जो कौल लोगों के शास्त्र हैं उनमें अपने मांस से हवन और ब्राह्मण के रुधिर से तर्पण करना लिखा है उन विरुद्ध शास्त्रों के लिखे हुए घोर तपों को जो मनुष्य करते हैं और पाखण्ड पूर्वक अहंकार में भरे हुए बिना विचार किये विषय की इच्छा से बुरी वासना करके विषय साधन में संयुक्त हैं, वह अज्ञानी शरीर की इन्द्रियों को निर्बल करनेवाले मुझ शरीरवर्त्ती को भी अप्रसन्न करनेवाले हैं उनको आसुरों में निश्चय करनेवाला जानो, अब सात्त्विकी लोगों के भोजन, यज्ञ, तप, दान को प्राप्त करने और राजसी तामसी को त्यागने के अर्थ प्रत्येक को तीन तीन प्रकार का वर्णन करते हैं—अन्नादि भोजन भी सबको तीन प्रकार का प्यारा है इसीप्रकार यज्ञ, तप, दान भी तीन ही प्रकार का प्यारा है इनका विभाग सुनो, जीवन, उत्साह, सामर्थ्य, नीरोगता, सुख, प्रीतिदायक वस्तु, रसीले, कोमल, स्थिर अर्थात् शरीर में रस के द्वारा विलम्बतक रहनेवाले, देखने में सुन्दर हृदय को प्रसन्न करनेवाले, ऐसे गुणयुक्त भोजन सात्त्विकी पुरुषों को प्यारे होते हैं, कड़ुए नोन के खट्टे अतिउष्ण चर्परे रूखे अत्यन्त जलन करनेवाले, दुःख शोक और रोगों के उत्पन्न करनेवाले ऐसे प्रकार के भोजन रजोगुणी को प्यारे हैं, जिसके बनाने में विलम्ब लगे वा (कच्चा वा रसहीन) दुर्गन्धयुक्त हो बासी हो उच्छिष्टहो अभक्ष्य हो वह भोजन तामसी लोगों को प्यारा है, (अब तीन प्रकार के यज्ञों को कहते हैं) यज्ञ ही करने के योग्य है, अर्थात् उसका फल चाहने के योग्य नहीं है इसप्रकार अपने मन को समाधान करके फल के न चाहनेवाले पुरुषों से जो आवश्यकता के लिये रचा हुआ यज्ञ कियाजाता है वह सात्त्विकी कहाजाता है, ११ हे भरतर्षभ! फल की इच्छा मन में धारण कर पाखण्ड और कपट के निमित्त जो यज्ञ कियाजाता है उस यज्ञ को राक्षसी जानो शास्त्र की रीति अन्नदान और मन्त्र दक्षिणा रहित श्रद्धा से विहीन यज्ञ को तामसी यज्ञ जानो, विष्णु आदि देवता ब्राह्मण और माता पिता आचार्य इत्यादि गुरु वा ब्रह्मज्ञानियों का पूजन बाहर भीतर से पवित्रता, सरलता, सत्यता, ब्रह्मचर्य, अहिंसा यह सब देह के तप कहेजाते हैं, जो वचन दूसरे का सुखदायी सत्यता स्नेहता सहित सबका हितकारी है वह और वेद का अभ्यास यह तपस्या कही जाती है, प्रसन्नता चित्तशुद्धि सौम्यता वचन को आधीन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रखना मन का रोकना व्यवहार में औरों के साथ निश्छलता यह मानसी तप कहाता है, फल की इच्छा न करनेवाले सावधानचित्त पुरुष देह, मन, वाणी से जो तीन प्रकार की तपस्या श्रद्धापूर्वक करते हैं वह सात्त्विकी कहाजाता है, जो तपस्या अपने मान सत्कार और पूजन के निमित्त कपट से की जाती है, वह तपस्या इस लोक में फल से रहित नाशवान् रजोगुणी कहीजाती है, अविवेक से उत्पन्न दुराग्रह से अपने शरीर की पीड़ा अथवा दूसरे के नाश के निमित्त जो तप कियाजाता है वह तामसी कहाता है यह दान के योग्य है इस बुद्धि से फल की इच्छा रहित जो दान अनुपकारी पात्र को देशकाल के विचार से पुण्य क्षेत्रादि में दियाजाता है वह सात्त्विकी दान कहाजाता है, जो दान बदले के लिये अथवा फल को ध्यान करके धन के व्यय होने की चिन्ता समेत कियाजाता है, वह राजसी कहाता है, जो दान देशकाल के विपरीत अपात्रों को ऐसे प्रकार से दियाजाता है कि जिसमें मधुरभाषण और चरण प्रक्षालनादि न होकर पात्र का अनादर हो उसको तामसी कहते हैं, अब यज्ञ (दान तप) आदि की पूरी सिद्धि के लिये प्रायश्चित्त को कहते हैं (ॐ तत्सत) यह ब्रह्म का नाम तीन प्रकार का होता है पूर्वकाल में उसी ब्रह्म के नाम से ब्राह्मण वा चारोंवेद और यज्ञ प्रकट किये इस कारण ॐ का उच्चारण करके ब्रह्मवादी अर्थात् वैदिकलोगों के यज्ञ, दान, तप आदि सब क्रिया जोकि वेदबुद्धि में कही हैं सदैव होती रहती हैं, ऊपर के श्लोक में ॐ के भीतर सफलकर्म वा निष्फल कर्मका कोई विभाग नहीं कहा है (अब फलरहित कर्मबुद्धि को कहते हैं) कर्मफल को अङ्गीकार न करके तत् ब्रह्म का नाम कहकर मोक्ष के चाहनेवाले नानाप्रकार के यज्ञ, तप, दान आदि की क्रियाओं को करते हैं, हे अर्जुन! यह सत् नाम वेदभाव जैसे श्रेष्ठ है और साधुओं के भाव में संयुक्त कियाजाता है इसी प्रकार उत्तमकर्म में भी सत्शब्द संयुक्त कियाजाता है, यज्ञ तप और दान में जो निष्ठा है वह सत् नाम कही जाती है और ईश्वर की प्राप्ति के निमित्त जो कर्म है वह भी सत् नाम कहाजाता है, श्रद्धा से रहित होकर दान तप यज्ञादिक कियेजाते हैं हे अर्जुन! वह असत् हैं अर्थात् सत् के विपरीत होने से मिथ्या कहेजाते हैं वह न इस लोक में न परलोक में दोनों में नहीं गिनेजाते हैं ॥ २८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतासूपनिषत्सु श्रद्धात्रयनो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अठारहवां अध्याय।

अर्जुन बोले कि, हे महाबाहो, हृषीकेश, केशीदैत्य को मारनेवाले! मैं त्याग से पृथक् संन्यास और संन्यास से रहित त्याग को मूलसमेत जानना चाहता हूं, श्रीभगवान् बोले कि जिनमें किसी प्रकार की इच्छा है ऐसे कर्मों के त्याग को सूक्ष्म पदार्थदर्शी पुरुषों ने संन्यास कहा है और पण्डितलोगों ने सब कर्मफलों के त्याग को त्याग कहा है, और परमात्मा को अपरोक्ष करनेवाले चित्त के जीतनेवालों ने केवल कर्मों ही का त्याग दोषयुक्त रागादि के समान त्याज्य कहा है और परमात्मा के चाहने की इच्छा करनेवालों ने यज्ञ दान और तप को नहीं त्यागने के योग्य कहा है, हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ, अर्जुन! उस कर्म के त्यागने में मेरे भी निश्चय को तू सुन हे पुरुषोत्तम! त्याग तीन प्रकार का कहा है, यज्ञ,दान,तप और कर्म यह चारों त्याग के योग्य नहीं हैं वह अवश्य करने के ही योग्य हैं क्योंकि यज्ञ, दान, तप बुद्धिमानों के मन को पवित्र करनेवाले हैं, अपने में कर्त्ताभाव लानेवाले संग को और कर्मफलों को त्याग करके यज्ञ, दान, तपादिक कर्म करने के योग्य हैं यह मेरा सम्मत अत्यन्त निश्चय किया हुआ उत्तम है, मोक्ष की इच्छावालों को करने के योग्य कर्मोंका त्याग उचित नहीं है मोह से उसका त्याग करना तामसी कहागया है, यह कर्म दुःखरूप है ऐसा मानकर शरीर के क्लेश के भय से जो त्याग करता है वह इस राजसी त्याग के चित्त शुद्धिरूप फल को नहीं पाता है, हे अर्जुन! कर्म को करने के ही योग्य मानकर संगफल को त्याग के जो सन्ध्या वन्दनादि नित्य कर्म किये जाते हैं उसको सात्त्विकी त्याग माना है साधारण सात्त्विकी त्याग को कहकर उत्तम सात्त्विकी त्याग को वर्णन करते हैं स्नान शौच और भिक्षा आदि दुःखदायी कर्म को बुरा नहीं कहता और मीठे अन्न भिक्षा आदि सुखदायी कर्म में प्रीति नहीं करता है अथवा जो शिष्यलोग सेवाकर्मों में कुशल हैं उनमें अत्यन्त प्रवृत्त नहीं होता है अर्थात् राग, द्वेष से रहित है वह सतोगुण से भरा हुआ त्यागी अर्थात् संन्यासी है क्योंकि शास्त्रों की स्मरण करनेवाली बुद्धि का स्वामी होने से वह आत्मा और अनात्मा के विवेक का रखनेवाला होकर छिन्न संशय कहा जाता है, देहाभिमानी से सर्व कर्म त्याग करने महाकठिन और असंभव हैं अर्थात् शरीर के अभिमान से रहित बड़ा ही परमार्थदर्शी और उत्तम त्यागी कर्मों को त्याग करसक्ता है इस हेतु से जो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कर्मों के फलों का त्यागी है वही त्यागी कहा जाता है, ११ जो त्यागी नहीं हैं उनके कर्मों का फल मरने के पीछे तीनप्रकार का होता है नरक वा पशु पक्षी आदि का जन्म यह तो अप्रिय है और देवता का रूप आदि मिला हुआ और नररूप यह प्रिय कहाता है परन्तु संन्यासियों का कुछ नहीं होता है अपने में कर्त्ताभाव नियत न करने से हे महाबाहो! सब कर्मों की सिद्धि के लिये यह पांचकारण सांख्य और वेदान्तशास्त्रों में कहे हैं सांख्य में सब कर्मों का अन्त हो जाता है, उन पांचों की संख्या करते हैं (अधिष्ठान) अर्थात् स्थूल शरीर परमात्मा का प्रतिबिम्ब जीवरूप कर्त्ता और दशो इन्द्रियाँ मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार और नानाप्रकार की पृथक् २ प्राण, अपान आदि चेष्टा और इनमें पांचवें पुण्य पाप और सूर्यादि इन्द्रियों के देवता यह दैव हैं, मनुष्य जिसकर्म धर्मरूप वा अधर्मरूप मन, वाणी और देह के द्वारा प्रारम्भ करता है उसी के यह पांचों हेतु हैं, उन कर्मों के मध्य में ऐसी दशा होनेपर जो बुद्धि की म्लानता से केवल आत्मा को कर्त्ता देखता है वह पापरूप बुद्धि रखनेवाला नहीं देखता है, अर्थात् अन्धा है, मैं कर्म का कर्त्ता हूं जिसको कि यह अहंकार नहीं है अर्थात् आत्मा से पृथक् १४ श्लोक के लिखे हुये पांच कर्त्ताओं को जानता है और जिसकी बुद्धि उसमें लिप्त नहीं होती है अर्थात् सदैव ब्रह्माकार रहती है कर्त्ता न होने के हेतु से वह धर्मयुद्ध वा ब्रह्मज्ञान से इन लोकों को भी जीतकर नहीं मारता है और न बन्धन में होता है, मुख्यवस्तु का प्रकट करनेवाला (ज्ञान) और जानने के योग्य (ज्ञेय) (परिज्ञाता) अर्थात् विषय आभास बुद्धिरूप भोक्ता यह तीन प्रकारवाले कर्मों की चेष्टा होती हैं इन्द्रियां करण और जो इन्द्रियों से कियाजाय सो कर्म करनेवाला कर्त्ता यह तीन प्रकार के कर्मों के निवास स्थान हैं अर्थात् यह तीनों भोक्ता हैं आत्मा नहीं हैं वही ज्ञान कर्म कर्त्तागुणों के विभाग से सांख्यशास्त्र में तीन प्रकार के कहे जाते हैं इनकी भी व्यवस्था को सुन, तीन प्रकार का ज्ञान कहता हूं जिस ज्ञान से बहुत नाम और रूपों के कारण पृथक् २ रूपवाली सृष्टि में न्यूनाधिकता रहित विना भेद एक चिन्मात्ररूप को देखता है अर्थात् सबको ब्रह्म ही जानता है उस ज्ञान को सात्त्विकी जानो, जो ज्ञान द्वैतता से युक्त है और जिस ज्ञान से सब सृष्टि में देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि अनेकभाव भिन्न भिन्न प्रकार के हैं ऐसा जानता है अर्थात् उनको एक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आत्मारूप नहीं देखता है पृथक् पृथक् जानता है वह ज्ञान राजसी है २१ और जो ज्ञान एक कार्य में परिपूर्ण के समान प्रवृत्त है अर्थात् केवल शरीरही को आत्मा मानता है अथवा परमात्मा को ही परम ईश्वर मानता है वह हेतु से रहित है परमार्थ सिद्धान्त नहीं है वह ज्ञान तामसी है (अब तीन प्रकारवाले कर्म को कहते हैं) कर्मफल न चाहनेवाले पुरुष से जो कर्म सदैव संग और राग द्वेष से रहित किया जाता है वह सात्त्विकी कहाजाता है, फिर फल की इच्छा रखनेवाले जो अत्यन्त परिश्रम का कर्म अहंकार युक्त होकर करते हैं वह राजसी कहाता है, जो परिणाम फल और धन का खर्च वा दूसरे का कष्ट वा अपनी सामर्थ्य के बल का विचार न करके मोह से कर्म किया जाता है वह तामसी है, अब तीन प्रकार के कर्त्ता को कहते हैं संगरहित अपने को कर्त्ता न माननेवाला धैर्य और उत्साह से पूर्ण कर्मों की सिद्धि वा असिद्धि में विपरीत दशा से रहित है ऐसा कर्त्ता सात्त्विकी कहाता है, विषयों में प्रीति रखनेवाला फल चाहनेवाला दूसरे के धन लोलुपपर पीड़ा देनेवाला बाहर भीतर से अपवित्र प्रिय अप्रिय मिलने में प्रसन्न और सुख दुःख से संयुक्त कर्त्ता राजसी कहा जाता है २७ (असावधान) (प्राकृत) किसीका आदर न करनेवाला, शठ, छली, दूसरे का अपमान करनेवाला, कार्यासक्त, आलसी, विषादी, दीर्घसूत्री ऐसा कर्त्ता तामसी कहा जाता है, हे अर्जुन ! गुणों से बुद्धि और धैर्य के तीन प्रकार के भेद में तुझसे पृथक् २ करके कहता हूं उन सबों को सुनो, जो बुद्धिमान् प्रवृत्ति निवृत्ति कार्य, अकार्य, भय, निर्भयता, कर्मसम्बन्ध बन्धन और मोक्ष को जानते हैं वह सात्त्विकी होते हैं, जिस बुद्धि से धर्माधर्म और कार्याकार्य को खण्डित और संदिग्ध जानता है उसकी राजसी बुद्धि कहाती है, हे अर्जुन ! जो अज्ञान से ढकी हुई बुद्धि से अधर्म को धर्म और सब अर्थों को उलटा मानते हैं उनकी बुद्धि तामसी कहाती है, जो चित्त वृत्ति के रोकने के द्वारा जिस समाधि में प्रवृत्त होकर धैर्यता से मन, प्राण और इन्द्रियों की क्रियाओं को देर तक नियत करता है अर्थात् विषयों की ओर जाने नहीं देता है वह धैर्य सात्त्विकी है, हे अर्जुन ! जिस धैर्य से धर्म, अर्थ, कामों को धारण करता है, अर्थात् करता है, अथवा धर्मादि के सम्बन्ध से फल का आकाङ्क्षी है वह राजसी धैर्य है, जिसकी मेधा बुद्धि बिगड़ी हुई है वह जिस धीरज से स्वप्न भय, दुःख,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

व्याकुलता और शास्त्र से विरुद्ध विषयों के सेवन से चित्त की अस्वाधीनता को धारण करता है वह धैर्य तामसी कहाजाता है, हे भरतवंशिन्, अर्जुन! अब उन तीन प्रकार के सुखों को कहता हूं जिन सुख समाधियों में अभ्यास करके रमता है और दुःख के अन्त होनेपर मोक्ष को पाता है, जोकि वह सुख प्रथम अर्थात् समाधि के आदि में विष के समान अन्त में अमृत के समान होता है अर्थात् जीवन्मुक्त करनेवाला है, वह बुद्धि की निर्मलता से उत्पन्न हुआ सात्त्विकी सुख कहलाता है, जो विषय इन्द्रियों के योग से आदि में भोग के समय अमृत के समान है और अन्त में वियोग के समय विष के तुल्य है उस सुख को राजसी कहते हैं जो स्वप्न आलस्य और भूल से उत्पन्न हुआ सुख है वह आदि में और अन्त में बुद्धि को भुलानेवाला है वह तामसी है, वह पृथ्वी के जड़, चैतन्य जीवों में और स्वर्ग के देवताओं में भी नहीं है जोकि दूसरे जन्मों के धर्म संस्कारों से उत्पन्न होनेवाले तीनों गुणों से रहित प्रकृतिवाले होयँ, हे शत्रुहन्ता, अर्जुन! स्वभावजन्य गुणों के कारण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के पृथक् पृथक् कर्म होते हैं प्रथम ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण के कर्मों को कहता हूं ब्राह्मणमात्र की जाति के नहीं कहता हूं शम, दम, तप, शौच, क्षान्ति, आर्जव, ज्ञान, विज्ञान, श्रद्धा यह पूर्वजन्म के संस्कार से उत्पन्न हुये ब्राह्मण के कर्म हैं, पराक्रम, तेज, धैर्य, चातुर्यता, युद्ध के सन्मुख होकर न भागना, ईश्वरभाव अर्थात् अपराधियों को दण्डदेना यह क्षत्रियों के पूर्वजन्म संस्कार और स्वभावज कर्म हैं खेती, गौ की रक्षा, पोषण, बनिज, यह वैश्य के स्वाभाविक कर्म हैं, और सेवा करना आदिक शूद्र के स्वाभाविक कर्म कहेजाते हैं, अपने अपने कर्म में प्रीति करनेवाला मनुष्य समसिद्धि को अर्थात् ज्ञान की योग्यता को पाता है और जैसे अपने कर्म में प्रीति रखनेवाला मुख्य संन्यास लक्षणवाली सिद्धि को पाता है उसको भी मैं कहता हूं, जिस अन्तर्यामी से जीवों की प्रवृत्ति है और जिसमे यह सब जगत् भी व्याप्त है उसको मनुष्य अपने कर्मों से पूजन करके मोक्षरूपी सिद्धि को पाता है, दूसरे के उत्तम धर्म से अपना धर्म किसी अङ्ग से हीन भी श्रेष्ठतम है स्वभावजन्य कर्मों के करने से पाप का भागी नहीं होता है आशय यह है कि हे अर्जुन! इन कारणों से हिंसारहित भिक्षाधर्म तुझको करना योग्य नहीं है किन्तु हिंसायुक्त युद्धरूप ही तेरा मुख्य और श्रेष्ठ धर्म है, हे अर्जुन! अपने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शरीर के साथ उत्पन्न होनेवाले अर्थात् स्वाभाविक दोषों से युक्त कर्म को भी त्याग न करे क्योंकि सब कर्मों के प्रारंभ हिंसा आदि दोषों से ऐसे आच्छादित हैं जैसे कि अग्नि धुयें से आच्छादित होती है, अपने कर्मों को ईश्वरार्पण और अपने अवश्य कर्मों को करना योग्य है यह सब कहकर परमेश्वर में अर्पण करने से जो फल होता है उसको अब कहते हैं पुत्रादि सब पदार्थों में बुद्धि न लगानेवाला शान्तचित्त अत्यन्त लोभ और इच्छा से रहित संन्यास के द्वारा उस परम सिद्धि को पाता है जो कर्म के त्याग और ब्रह्मज्ञान से संबंध रखनेवाली है हे अर्जुन ! जैसे कि वैराग्य सिद्धि को पानेवाला ब्रह्म को पाता है उसका वृत्तान्त मुझसे सुनो वह वृत्तान्त ज्ञान की परानिष्ठा है ५० उसी ब्रह्म में मिलजाने को तीन श्लोकों में कहते हैं अत्यन्त शुद्धबुद्धि के द्वारा धैर्यता से शरीर और इन्द्रियों के समूह को प्रणोंसमेत स्वाधीन करके अर्थात् दृढ़ आसन से शब्दादि विषयों को त्याग करे रागद्वेषरहित हो और अहंभाव को दूर करके सदैव एकान्तवासी अल्पाहारी शरीर में बोलनेवाले मन को जीतनेवाला वैराग्य युक्त सदैव ध्यानयोग में प्रवृत्त, अहंकार, बल, क्रोध, इच्छा और शिष्यादि में आत्मभावरूपी परिग्रह को छोड़कर शान्तरूप होकर ब्रह्मभाव के योग्य होता है, इस योग की अयोग दशा की समाधि को कहते हैं ब्रह्मरूप योगी प्रसन्नचित्त होकर न शोच करता है न इच्छा करता है और सबजीव मात्रों में समदर्शी होता है अर्थात् यह सब ब्रह्मरूप है इसबुद्धि में द्वैततारहित होजाता है वह मेरी पराभक्ति को पाता है, अब इस अद्वैत आत्मज्ञान लक्षणवाली भक्ति को कहते हैं—उस भक्ति के द्वारा ज्ञानी पुरुष जैसा मैं वास्तव में हूं वैसा ही ठीक ठीक जानता है तदनन्तर मुझको मूलसमेत जान कर अभेद बुद्धि से मुझमें ही समाता है अर्थात् ब्रह्मभाव को पाता है, उस प्रकार का ज्ञानी मुझमें निवास करनेवाला सदैव सब कर्मों को भी करता हुआ मेरी कृपा से अविनाशी सनातन मोक्षपद को पाता है, इस प्रकार से वर्णाश्रम के धर्म को मुख्य करके साधन और फल से युक्त ब्रह्मविद्या का वर्णन किया उसके प्राप्त होने के लिये। फिर भक्ति को वर्णन करते हैं। विवेक बुद्धि से सब कर्मों को मुझ भगवत् वासुदेव में अर्पण करके मुझको उत्तमलय स्थान जाननेवाला बुद्धियोग में प्रवृत्त होकर सदैव मुझी में चित्त का लगानेवाला हो इस भक्तियोग के करने न करने के गुणदोषों को कहते हैं मुझ में चित्त लगाकर तू

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सब कठिनताओं से तरेगा और जो तू अहंकार से मेरे वचन को नहीं सुनेगा तो नाश पावेगा अर्थात् पुरुषार्थ से हीन होजायगा, जो अहंकार में प्रवृत्त होकर तू मानता है कि मैं नहीं लड़ूंगा यह तेरा निश्चय करना मिथ्या है तेरा क्षत्रिय स्वभाव तुझको युद्ध में प्रवृत्त करेगा, हे अर्जुन! स्वभाव से उत्पन्न होने-वाले अपने कर्मों से बँधाहुआ तू जो अज्ञान से युद्ध नहीं करना चाहता है तो तू पराधीन होने के समान होकर अवश्य उसको करेगा, वह परमेश्वर कौन है जिसके स्वाधीन मैं हूं यह शङ्का करके कहते हैं हे अर्जुन! ईश्वर सब सृष्टि के हृदयस्थान में लिङ्गदेह नाम यन्त्रपर आरूढ़ होनेवाला अपनी माया से सब जीवों को ऐसे घुमाता हुआ नियत है जैसे बाजीगर काठ की मूर्त्तियों को। हे भरतवंशिन्! सब भाव से उसी ईश्वर की शरण में जाओ उसकी कृपा से तू अविनाशी पराशान्ति नाम स्थान अर्थात् मोक्ष को पावेगा, मैंने यह गुह्य से गुह्य ज्ञान तुमसे कहा इस सबको अच्छी रीतिसे विचारकर जैसा चाहो वैसा करो, फिर सबसे गुह्यतम मेरे उत्तम वचनों को सुनो तू मेरा बड़ा प्यारा है इस कारण मैं तेरे परमहित को कहूंगा, मुझ आनन्दरूप परिपूर्ण ब्रह्म में ही चित्त से लगा हुआ तू मेरा भक्त होकर मुझ भगवान् के ही निमित्त कर्म का करने-वाला होके मुझको नमस्कार कर मुझमें ही लय होगा यह मैं सत्य ही प्रतिज्ञा करता हूं क्योंकि तू मेरा बड़ा प्यारा है, इस श्लोक में भक्ति और कर्म के द्वारा ज्ञाननिष्ठा को दिखाया (अब योगनाम उपासना को दिखाते हैं) सब वर्णाश्रम, देह, इन्द्रिय और बुद्धि के धर्म और अग्निहोत्रादि कर्म और सुख दुःखादि को अत्यन्त त्यागकर मुझ अकेले अर्थात् सबके ईश्वर एकरस अखण्ड परमात्मा की अविद्या आदि नाश करनेवाली शरण को प्राप्तकर अब शरणागत के फल को सुनो मैं तुझको सब पापों से संचित क्रियमाणादि रहित करूंगा किसी बात का शोक मतकर, जो तप से रहित और भक्ति से शून्य है अथवा गुरु की सेवा से बहिर्मुख होकर मेरी निन्दा करते हैं उनसे कभी यह मेरा गुप्त ज्ञान कहने के योग्य नहीं है, (अब विद्यावान् के-फल को कहते हैं) जो अभक्त भी इस मेरे गुप्तज्ञान को मेरे भक्तों में प्रचार करके उनको धारण करावेगा अर्थात् सुनावेगा वह मुझमें पराभक्ति को अर्थात् अद्वैत लक्षणा और उपासना को करके मुझी को प्राप्तहोकर निश्चय मुक्ति को पावेगा, मनुष्यों में इस गीता पढ़ानेवाले से अधिक मेरा कोई प्यारा नहीं है

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और उससे अधिक मुझको प्यारा पृथ्वी पर कोई नहीं होगा, जो हमदोनों के इस धर्मरूप उपाख्यान को पढ़ैगा मैं उस ज्ञानयज्ञ निर्विकल्प समाधि के द्वारा उससे पूजित हूंगा कहने और पढ़नेवालों के फलको कहकर (अब सुननेवाले के फल को कहता हूं) श्रद्धावान् अन्य के गुणों में दोष न लगानेवाला जो मनुष्य इस गीता के श्लोकों को सुनेगा वह भी मुक्त होकर पवित्रात्मा पुरुषोंके शुभ लोकों को पावेगा, हे अर्जुन! तैंने एकाग्रचित्त होकर इस गीता शास्त्र को सुना और हे संसारी धन के विजय करनेवाले! तेरा मोह जनित सब अज्ञान अब नष्ट होगया, अर्जुन बोले हे अविनाशिन्! आपकी कृपा से मेरा मोह दूर हुआ और स्मृति प्राप्त हुई अब मैं सन्देह से रहित हूं इससे आपके वचनों को करूंगा संजय बोले कि मैंने महात्मा वासुदेवजी और अर्जुन के इस अपूर्व रोमहर्षण करनेवाले संवाद को सुना, मैंने व्यासजी की कृपा से अर्थात् दिव्य नेत्रोंके देनेसे यह अत्यन्त गुप्तयोग निज योगेश्वर श्रीकृष्णजीके मुखसे सुना, हे राजन्! केशवजी और अर्जुन के इस अपूर्व पुण्यकारी संवाद को बारम्बार प्रसन्नतापूर्वक स्मरणकर आनन्द में मग्न होताहूं, हे राजन्! हरि के उस अपूर्व रूप को बारम्बार स्मरण करके मुझको बड़ा आश्चर्य है और बारम्बार प्रसन्न होता हूं, जिधर योगेश्वर श्रीकृष्णजी और जिधर धनुषधारी अर्जुन है उधर ही लक्ष्मी, जय, ऐश्वर्य और नीति है यह मेरा निश्चय मत है ॥ ७८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे संन्यासादितत्त्वनिर्णययोगो नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

वैशम्पायन बोले कि जो गीता कमलनाभ के मुखपङ्कज से निकली है वह गीता अच्छे प्रकार से गान करनी चाहिये अन्य शास्त्रों के विस्तार से कुछ प्रयोजन नहीं है, यह गीता सब शास्त्ररूप है और सब देवतारूप भगवान् हरिहैं और सब तीर्थरूप गङ्गा हैं और सर्वदेवमय मनुजी हैं गीता गङ्गा गायत्री और गोविन्दजी के हृदय में नियत होने और चार प्रकार से संयुक्त होने पर फिर जन्म नहीं होता है, केशवजी ने ६२० श्लोक कहे अर्जुन ने सत्तावन और संजयने सरसठ ६७ कहे, धृतराष्ट्र ने एकही श्लोक कहा इतनाही गीता का मान है हे भरतवंशिन्! सब अमृतसे मथीहुई गीता के सारको श्रीकृष्णजी ने लेकर अर्जुन के मुख में होम किया यह सबकी सुखदायी गीता समाप्तहुई सब को लाभकारी हो ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अब तैंतालीसवां अध्याय प्रारंभ हुआ।

संजय बोले कि तदनन्तर महारथियों ने बाणोंसमेत गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन को देखकर महाशब्द करना प्रारम्भ किया, पाण्डव वा संजय अथवा जो इनके पीछे चलनेवाले महाबली वीरलोग थे उन सबोंने भी बड़े प्रसन्न चित्त होकर समुद्रोत्पन्न उत्तम उत्तम शंखोंकी ध्वनि करी, और इसीप्रकार भेरी क्रकच गोविषाणक नाम सब बाजे एकसमय पर ही बजनेलगे और महातुमुल शब्द हुआ, तदनन्तर हे राजन्, धृतराष्ट्र! देवता, पितर, सिद्ध, चारण आदि गन्धर्वों समेत सब देवता युद्ध देखने की इच्छा से आ पहुँचे, और महाभाग ऋषिलोग भी इन्द्र को अग्रभाग में करके उस महाभारी नाश के देखने को वर्त्तमान हुये तदनन्तर हे राजन्! वीर राजा धर्मराज युधिष्ठिर इन युद्धों के लिये अच्छे प्रकार सन्नद्ध होकर सागर के समान बारम्बार चलायमान दोनों सेनाओं को देखकर, कवच को उतार उत्तम धनुष को त्याग शीघ्र ही रथ से उतरकर पैदल ही हाथजोड़ेहुये पितामहकी ओर देखकर मौनता साधे हुये पूर्वाभिमुख होकर शत्रु की सेना में घुसा हुआ चला उन धर्मराज को जाते हुये देखकर कुन्ती का पुत्र अर्जुन शीघ्र ही रथसे उतरकर भाइयों समेत उसके पीछे चला और हे राजन्! वासुदेवजी उसके पीछे की ओरसे चले तिस पीछे सब पृथ्वी के राजा अपने अपने मनोरथ सिद्ध करने की इच्छा से उसके पीछे चले, अर्जुन बोले हे युधिष्ठिर! आपका क्या निश्चय है जो हमलोगों को त्याग करके पैदल होकर पूर्वाभिमुख शत्रुओं की सेनामें जाते हो, भीमसेन बोले हे राजेन्द्र, राजन्, युधिष्ठिर! आप कवच और शस्त्रों को त्यागकर भाइयों को छोड़ के शस्त्रों से सन्नद्ध शत्रुओं की सेना के मनुष्यों में कहां को जाओगे, नकुल बोले हे भरतवंशिन्! आप सरीके मेरे बड़े भाई को इसप्रकार से जानेपर बड़ा भारी भय मेरे हृदय को पीड़ित करता है कहिये आप अब कहां जाओगे सहदेव बोले हे राजन्! इस महाभयकारी युद्ध करने के योग्य शत्रु की सेना के समूह के सम्मुख होकर कहां जाते हो, संजय बोले कि, हे कौरवनन्दन, धृतराष्ट्र! भाइयों के इसप्रकार से कहने पर भी मौन हुए अवाक् होकर चला जाता था, तब तो बड़े साहसी वासुदेवजी ने बड़े प्रसन्न होकर कहा कि मैंने इस के चित्त की इच्छा को जाना, यह युधिष्ठिर, भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और शल्य नाम आदि सब गुरुओं की प्रतिष्ठापूर्वक परिक्रमा करके उनसे आज्ञा को मांगकर युद्ध में

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शत्रुओं से लड़ेंगे प्राचीन शास्त्र में सुना जाता है कि जो बांधवों समेत गुरु वृद्धों को शास्त्र के अनुसार प्रतिष्ठा देकर अपने से बड़ों के साथ युद्ध करे, निश्चय करके युद्ध में उसकी विजय होती है यह मेरा मत है, श्रीकृष्णजी के इसप्रकार कहनेपर शत्रुओं की सेना में बड़ा हाहाकार शब्द हुआ और पाण्डव लोगों के पक्षी राजालोग चुप होगये, दुर्योधन की सेना के वीरों ने युधिष्ठिर को देखकर परस्पर में वार्त्तालाप करी कि यह कुल का कलङ्क है, प्रकट है कि यह राजा युधिष्ठिर भाइयों और शकुनी समेत भयभीत होने के समान भीष्मजी आदि की शरण लेने के निमित्त आता है, पाण्डव युधिष्ठिर, अर्जुन, भीमसेन, नकुल, सहदेव चारों भाइयों समेत किस प्रकार से भयभीत सा होकर सन्मुख आता है निश्चय है कि यह पृथ्वी पर प्रसिद्ध क्षत्रियों के कुल में उत्पन्न नहीं हुआ काहे से कि इस अल्प बलरखनेवाले का हृदय युद्ध से भयाकुल है, तदनन्तर उन प्रतिपक्षी मनुष्यों ने बड़े प्रसन्न हृदय से कौरवों की प्रशंसा की और पृथक् पृथक् (चैलों) को अर्थात् रूमालों को फिराया, हे राजन्! तिसके पीछे वहां सबके वीर उन केशवजी और सगे भाइयों समेत युधिष्ठिर की ओर को गर्जे हे राजन्! फिर वह कौरवों की सेना युधिष्ठिर को तुच्छ करके शीघ्र ही अवाक् होगई, और सब विचारनेलगे कि यह राजा क्या कहैगा? और भीमसेन क्या कहैगा? और युद्ध में प्रशंसनीय भीष्मजी क्या कहैंगे? और श्रीकृष्ण वा अर्जुन क्या कहैंगे? हे धृतराष्ट्र! इन विचारों के कारण युधिष्ठिर के जाने से दोनों ओर की सेना में बड़ा भारी संशय उत्पन्न हुआ कि राजा युधिष्ठिर को क्या कहने की इच्छा है, वह राजा युधिष्ठिर भाइयों समेत शत्रु की सेना के बाण बरछियों से व्याकुल सेना के पार होकर भीष्मजी के सन्मुख आया, तदनन्तर शन्तनु के पुत्र युद्धोत्सुक पितामह भीष्मजी के दोनों चरणों को युधिष्ठिर ने हाथों से दाबकर कहा, हे दुर्जय पितामह! मैं आप से पूछता हूं कि इस युद्ध में हम आपके साथ लड़ैंगे सो आज्ञा दो और आशीर्वाद भी दो, भीष्मजी बोले हे भरतवंशिन्, महाराज, राजन्, युधिष्ठिर! जो तुम इस युद्धमें इसरीति से मेरे पास नहीं आते तो मैं तुमको पराजय करने का शाप देता, हे पुत्र! मैं प्रसन्न हूं हे पाण्डव! युद्ध को करके विजय को प्राप्त करो और युद्ध में जो तेरी दूसरी इच्छा है उसको भी तुम पाओगे, हे राजन्, युधिष्ठिर! वर मांग तू मुझसे क्या चाहता है? हे राजन्! इसप्रकार के तेरे आचरणों से तेरी पराजय नहीं है,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुरुष धन रूपादि अर्थों का दास है परन्तु अर्थ किसीका दास नहीं है, हे महाराज ! यह सत्य है मैं कौरवों की ओर से अर्थद्वारा वशीभूत किया गया हूं, हे कौरवनन्दन ! मैं इस कारण से निर्मल के समान तुझसे वचन कहता हूं कि मुझको कौरवों ने धन के द्वारा पोषण किया है सो इनके लिये युद्ध तो अवश्य करूंगा तू युद्धके सिवाय क्या चाहता है, युधिष्ठिर बोले हे महाज्ञानिन्! मेराहित चाहनेवाले तुम सदैव आप अन्त को विचारो और दुर्य्योधनादि कौरवों के निमित्त युद्ध करो और आपका दियाहुआ वर सदैव नियत रहै, भीष्मजी बोले हे कौरवनन्दन, युधिष्ठिर ! इस स्थान पर मैं तेरी कौन सी सहायता करूं दूसरे के लिये अपनी इच्छा के समान लड़ूंगा और जो तेरी इच्छा है उसको भी कह, युधिष्ठिर बोले हे तात, पितामह ! आपको नमस्कार है मैं आपसे पूछता हूं हे अजेय ! मैं युद्ध में आपको कैसे विजय करसक्ता हूं इस विषय में मेरे लिये श्रेष्ठ हितकारी शिक्षा दो, भीष्मजी बोले कि हे कुन्ती के पुत्र ! मैं ऐसा किसी को नहीं देखता हूं जो कोई पुरुष वा साक्षात् देवता इन्द्र भी मुझ युद्धमें लड़ते हुए को विजय करे, युधिष्ठिर बोले हे पितामह ! तुम्हारे अर्थ नमस्कार है मैं आपसे यह हेतु पूछता हूं कि आप युद्ध में अपने विजय करने के उपाय को कहो भीष्मजी बोले हे तात ! जबतक मेरी मृत्यु का समय न होय तबतक कोई मुझको युद्ध में जीतनेवाला नहीं दिखाई देता है, संजय बोले इसके पीछे कौरवनन्दन युधिष्ठिर ने भीष्मजी के वचन को शिर से अङ्गीकार किया और फिर भी नमस्कार करके वह महाबाहु युधिष्ठिर भाइयों समेत शत्रु की सेना के सब मनुष्यों के देखतेहुए सेना के मध्य में से निकलकर गुरु आचार्य द्रोणाचार्य जी के रथ के पास गया, वहां कठिनता से विजय होनेवाले द्रोणाचार्यजी को परिक्रमापूर्वक नमस्कार करके वाणी से अपने कल्याणकारी वचन को बोला, हे भगवन्, गुरुदेव ! मैं आपका पूजन करता हूं और पूछताहूं कि मैं पाप से युद्ध करूंगा या पाप से रहित युद्ध करूंगा इसको आप कहिये हे विप्रेन्द्र ! आपकी आज्ञा से मैं किस प्रकार से सब शत्रुओं को विजय करूंगा, द्रोणाचार्य बोले कि जो युद्ध के निश्चय करने के लिये तू मुझको नहीं मिलता तो हे महाराज ! सब प्रकार से पराजय होने के लिये तुमको शाप देदेता हे निष्पाप, युधिष्ठिर ! मैं तुम से पूजित होकर प्रसन्न हूं मैं आज्ञा देता हूं कि युद्ध करो और विजय को पाओ, तेरे मनोरथ को सिद्ध करूंगा जो तेरी इच्छा होय सो कहो हे महाराज !

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुम ऐसी दशा में युद्ध के विशेष अन्य कौनसी बात चाहते हो ? पुरुष अर्थ का दास है परन्तु अर्थ किसी का दास नहीं है हे युधिष्ठिर ! यह सत्य ही बात है कि मैं कौरवों की ओर से अर्थ से स्वाधीन किया गया हूं, इस हेतु से असमर्थों के समान मैं तुझसे कहता हूं कि युद्ध तो इनके अर्थ हम करेंगे इसके सिवाय दूसरी बात क्या चाहता है ? मैं कौरवों के निमित्त लड़ूंगा परन्तु तुम्हारी विजय होने का आशीर्वाद देता हूं युधिष्ठिर बोले हे गुरुदेव ! मेरी विजय होने का आशीर्वाद हो और मेरे हितकारी सलाह को दो और आप कौरवों के निमित्त युद्ध करिये मुझे वर दो द्रोणचार्य बोले हे राजन् ! तेरी अवश्य विजय है क्योंकि तेरे मन्त्री हरि हैं मैं तुझको अच्छी रीति से जानता हूं कि तू युद्ध में शत्रुओं को जीवन से मुक्त करेगा जहां धर्म है वहीं श्रीकृष्णजी हैं जहां धर्म है वहीं विजय है इससे हे कुन्तीनन्दन ! जाओ युद्ध करो तुम्हारी विजय होगी अब मुझसे तू क्या पूछता है ? युधिष्ठिर बोले हे ब्राह्मणवर्य ! मैं अपनी इच्छा के अनुसार आपसे पूछता हूं हे अजेय ! मैं युद्ध में आपको कैसे विजय करूंगा, द्रोणाचार्य बोले कि हे राजन् ! जब तक मैं युद्ध भूमि में लड़ूंगा तब तक तेरी विजय नहीं होगी मेरे मरने के पीछे तुम अपने भाइयों समेत शीघ्र उपाय करो, युधिष्ठिर बोले कि हे महाबाहो ! बड़े कष्ट की बात है कि मैं आपको नमस्कार करके प्रार्थना करता हूं कि आप अपने मरने के उपाय को बताइये, द्रोणाचार्य बोले हे तात ! मैं उस अपने शत्रु को संसार में नहीं देखता हूं जो मुझ क्रोधाग्नि में भरेहुए बाणों की वर्षा करते हुए को युद्ध में मारे, हे राजन् ! इसके विशेष मरने के निमित्त निश्चय करनेवाले योगबल से देहत्याग करनेवाले मुझको युद्ध में कोई वीर मारनेवाला नहीं दीखता है यह मैं निश्चय करके कहता हूं, मैं युद्ध में विश्वासित पुरुष से बहुत बड़े अप्रिय और असत्य वचन को सुनकर शस्त्रों का त्याग करूंगा यह तुमसे मैं सत्य सत्य कहता हूं, संजय बोले हे धृतराष्ट्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य के इस वचन को सुनकर उन आचार्यजी की प्रतिष्ठा करके नमस्कार कर कृपाचार्यजी के पास आया और वह वक्ताओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर उस बड़े दुर्जय कृपाचार्यजी को प्रणाम और प्रदक्षिणा करके यह वचन बोला कि मैं गुरुजी को प्रणामादिक करके पाप से पृथक् हुआ लड़ूंगा या पाप से, हे निष्पाप ! मैं आपसे आज्ञा पाकर सब शत्रुओं को विजय करूं कृपाचार्य बोले कि हे महाराज ! जो युद्ध

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

के निमित्त निश्चय करनेवाला तू मुझसे नहीं मिलता तो मैं तेरे पराजय के निमित्त कठिन शाप देता, पुरुषही अर्थ का दास है परन्तु अर्थ किसी का दास नहीं है हे महाराज! यह सत्य ही है कि मैं कौरवों की ओरसे अर्थ के द्वारा आधीन कियागया हूं उनके निमित्त युद्ध करना योग्य है हे महाराज! मेरा यह मत है इसी हेतु से मैं असमर्थ के समान तुझसे कहता हूं कि युद्ध के विशेष दूसरी जो बात चाहै वह मुझसे कह, युधिष्ठिर बोले हे आचार्यजी! बड़े कष्टकी बात हैं मैं भी इसी हेतु से आपसे पूछता हूं आप मेरे वचन को सुनो यह कहकर पीड़ावान् और व्याकुल चित्त होकर कुछ न बोले, संजय बोले कि गौतम कृपाचार्यजी उसके अभिप्राय को अच्छीतरह जानकर यह वचन बोले हे महाराज! मैं तो अवध्य ही हूं आप युद्ध करो और विजय को पाओ मैं तेरे आने से प्रसन्न हूं हे राजन्! मैं सदैव प्रातःकाल उठकर तेरे विजय होने का आशीर्वाद दूंगा यह तुझसे सत्य २ कहता हूं, यह गौतम कृपाचार्यजी के वचनों को सुनकर उनको प्रदक्षिणा पूर्वक नमस्कार करके वहां को चले जहां मद्रदेश के राजा शल्य वर्त्तमान थे, उस दुर्जय राजा शल्य की नमस्कार पूर्वक परिक्रमा करके अपने कल्याणकारी वचन को बोला, हे कठिनता से विजय होनेवाले, राजन्, शल्य! मैं आपकी प्रतिष्ठा करता हुआ प्रणाम करता हूं कि मैं निष्पाप होकर युद्ध करूंगा हे राजन्! आपकी आज्ञा से मैं बड़े बलवान् शत्रुओं को विजय करूंगा शल्य बोले हे महाराज, युधिष्ठिर! जो युद्ध के निश्चय करनेको आप मेरे पास नहीं आते तो मैं तुम्हारे पराजय के निमित्त महाशाप देता, मैं तुमसे पूजित होकर बड़ा प्रसन्न हुआ हूं जो इच्छा में होय वह मुझसे मांगो और जो तू चाहता है वही तेरा मनोरथ सिद्ध होगा और मैं तुमको आज्ञा देता हूं कि युद्ध करो और विजय प्राप्त करो हे वीर! इसके सिवाय अपने अभीष्ट को कहो जिसको मैं दूं हे युधिष्ठिर! ऐसी दशा में युद्ध के भिन्न दूसरी बात क्या चाहता है? पुरुष अर्थ का दास है और अर्थ किसीका दास नहीं है यह वचन सत्य सत्य कहता हूं कि मैं कौरवों की ओर से अर्थ के आधीन किया गया हूं, हे इच्छावन्! मैं तेरी अभीष्ट इच्छा को पूर्ण करूंगा इसहेतु से मैं असमर्थों के समान कहता हूं कि तुम युद्ध के विशेष कौनसी बात चाहते हो? युधिष्ठिर बोले कि हे महाराज! सदैव सुखदायी मेरे अभीष्ट के विषय में सलाह दो और कौरवों के निमित्त आप युद्ध करो यही मैं वर मांगता हूं, शल्य बोले हे राजेन्द्र! यहां मैं तेरी कौनसी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सहायता करूं मैं तेरे प्रतिपक्षी कौरवलोगों की ओर से युद्ध के लिये वचनबद्ध होगया हूं इससे उनके ही निमित्त लड़ूंगा, युधिष्ठिर बोले कि हे शल्य ! मुझे वही वर आपका दिया हुआ उचित है जो आपने युद्ध के उपाय में मुझसे प्रण किया है आपको युद्ध में कर्ण के तेज का नाश करना चाहिये, शल्य बोले हे कुन्ती के पुत्र, युधिष्ठिर ! यह तेरा मनोरथ सिद्ध होगा तुम इच्छापूर्वक युद्ध करो तुम्हारी विजय होगी संजय बोले कि इस प्रकार उक्त महावीरों से ऐसे ऐसे वरदान लेकर भाइयों समेत युधिष्ठिर अपने मामा शल्य को नमस्कार करके बड़ी सेना में से बाहर को निकले इसके पीछे गद के बड़े भाई वासुदेवजी युद्धभूमि में कर्ण के पास गये और पाण्डवों के निमित्त उससे यह वचन बोले, हे कर्ण ! मैंने सुना है कि तुम निश्चय करके भीष्म की विरुद्धता से युद्ध नहीं करोगे हे कर्ण ! हमको यह वरदान दो कि जबतक भीष्मजी नहीं मारेजायँ तबतक आप युद्ध न करोगे भीष्मजी के मरने पर क्या तुम युद्ध के निमित्त संग्राम भूमि में आओगे, हे राधा के पुत्र ! जो तुम दुर्योधन की सहायता को देखते हो, कर्ण बोले हे केशवजी ! मैं दुर्योधन का अनिष्ट नहीं करूंगा मुझको आप दुर्योधन का अभीष्ट चाहनेवाला और उसके निमित्त अपने प्राणों का भी त्यागनेवाला जानो, हे भरतवंशिन्, धृतराष्ट्र ! श्रीकृष्णजी उसके वचन को सुनकर युधिष्ठिरादि पाण्डवोंसमेत वहां से लौटे, तदनन्तर राजा युधिष्ठिर सेना में आकर बड़े उच्चस्वर से पुकारे कि जो हमको वरता है मैं उसको सहायता के कारण वरता हूं, तदनन्तर धृतराष्ट्र के पुत्र युयुत्सु ने इनको अच्छे प्रकार से सच्चा देखकर बड़े प्रसन्नचित्त होकर कुन्ती के पुत्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर से यह वचन कहा कि हे महाराज ! मैं आपके निमित्त युद्धभूमि में धृतराष्ट्र के पुत्रों से लड़ूंगा हे निष्पाप ! जो तुम मुझको वरते हो युधिष्ठिर बोले हे युयुत्सु ! आओ आओ हम सब तेरे अज्ञानी भाइयों से लड़ेंगे वासुदेवजी समेत हम सब प्रकार से कहते हैं, हे महाबाहो ! मैं तुमको वरता हूं मेरे कारण से युद्ध कर तू ही धृतराष्ट्र के पुत्रों के पिण्डों का सूत्र दिखाई देता है अर्थात् तू ही जीवता रहेगा और बाकी सब मारे जायँगे, हे महातेजस्विन्, राजकुमार ! तुम हम सब चाहनेवालों को चाहो तू निश्चय करके निर्बुद्धि दुर्योधन का ईर्षा करनेवाला नहीं होगा, संजय बोले तब तो युयुत्सु कौरवों और तेरे पुत्रों को त्यागकरके नगाड़ा बजाकर पांडवों की सेना में गया तदनन्तर बड़े प्रसन्न

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चित्त उत्साहयुक्त राजा युधिष्ठिर ने अपने स्वर्णमय प्रकाशमान महातेजस्वी-रूप कवच को धारण किया, और वह सब उसके साथी पुरुषोत्तम भी अपने अपने रथों पर सवार होकर उसके रथ के पीछे हुये और सबों ने पूर्व के समान अपने व्यूह को सन्नद्ध अर्थात् तैयार किया, और सैकड़ों दुन्दुभी वा पुष्कर नाम अनेक बाजों को बजाया और नानाप्रकार के सिंहनाद भी उन पुरुषोत्तमों ने किये, तब धृष्टद्युम्न आदि सब राजालोग पुरुषोत्तम पाण्डवों को रथों पर सवार देखकर फिर प्रसन्न हुये, और उन प्रतिष्ठा के योग्य पुरुषों को प्रतिष्ठा देनेवाले पाण्डवों के समूह को देखकर राजालोगों ने बड़ी प्रशंसा की और समय के अनुसार उन महात्माओं की जातवालों पर बड़ी सुहृदता और कृपालुता को वर्णन किया, उन कीर्त्तिमानों की प्रशंसा से युक्त पवित्र चित्तों के हृदय आकर्षण करनेवाले बहुत अच्छा बहुत अच्छा यह श्रेष्ठ वचन चारों ओर फैल गये, जिन म्लेच्छ और आर्यपुरुषों ने पाण्डवों के उस चलन को देखा और सुना वह गद्गद कण्ठों से रुदन करने लगे तदनन्तर प्रसन्नचित्त साहसी सेना के मनुष्यों ने सैकड़ों भेरी और पुष्करादि अनेक बाजे और दुग्धसमान महाश्वेत उत्तम उत्तम शंखों को बजाया ॥ १०२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्माद्यभिगमने त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि, मेरे पुत्रों की और पाण्डवों की सेना के इस रीति पर तैयार होने पर पहले किन लोगों ने अर्थात् कौरव पाण्डवों में से पहले किस ने प्रहार किया, संजय बोले कि आपका पुत्र दुश्शासन भाई के उस वचन को सुनकर भीष्मजी को आगे करके सेना के साथ चला, इसी प्रकार भीमसेन आदि सब प्रसन्न चित्त पाण्डव लोग भी भीष्मजी से युद्ध करने की इच्छा करके चले, शंखध्वनि और कलकला शब्दपूर्वक क्रकच, गोविपाक, भेरी, मृदंग, मुरज इत्यादि बाजों के और घोड़े हाथियों के अनेक प्रकार के शब्द होने लगे, हे राजन्! तदन्तर वह दोनों सेनाओं के वीर लोग परस्पर में एक दूसरे पर प्रहार करने को महागर्जनाओं को करके ऐसे दौड़े कि जिनके शब्दों से महातुमुलशब्द होगया, पाण्डवों की और दुर्योधनादि कौरवों की महायुद्ध करनेवाली सेना समागम के समय शंख और मृदंगों के शब्दों से ऐसे महाकम्पायमान हुई जैसे कि वायु से सब वन कम्पायमान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होते हैं, फिर राजा लोगों से और हाथियों से समाकुल और अशुभ मुहूर्त्त में आनेवाली सेनाओं के ऐसे कठोरशब्द हुए जैसे कि वायु से चलायमान समुद्रों के शब्द होते हैं, शरीर के रोमहर्षण करनेवाले उस तुमुल शब्द के उठने पर महाबाहु भीमसेन ऐसा अत्यन्तता से गर्जा कि जिसकी गर्जना के कारण शंख दुन्दुभियों के शब्द और हाथियों की चिंघाड़ वा सेना के मनुष्यों से सिंहनाद भी तिरस्कार होगये, इस भीमसेन के शब्द ने सेना के मध्यवर्त्ती हज़ारों घोड़ों के हिनाहिनाहट आदि अनेक शब्दों को दबादिया उसके उस महावज्र के समान शब्द को सुनकर तेरी सेना के मनुष्य अत्यन्त भयभीत हुए उस वीर के शब्द से सब सवारियों के वाहनों ने ऐसे मूत्र विष्ठा को डाला जैसे कि सिंह के शब्द को सुनकर अन्य जंगल के पशु विष्ठा मूत्र को डालते हैं, वहाँ भीमसेन अपने शरीर को महाभयानक दिखाता और बड़े घन के समान गर्जता तेरे पुत्रों को डराता हुआ फिर उन्हों के सम्मुख आया, तब तो उस आते हुए बड़े धनुषधारी भीमसेन को दुर्योधन के सहोदर भाइयों ने चारों ओर से बाणों की वर्षा से ऐसा ढक दिया जैसे कि सूर्य को बादल ढक देता है, हे राजन्, धृतराष्ट्र ! आपके पुत्र दुर्योधन, दुर्मुख, अतिरथी, दुश्शासन, दुस्सह, युयुत्स, दुर्मर्षण, विविंशति, चित्रसेन, महारथी विकर्ण, पुरमित्र, जय, भोज, पराक्रमी सोमदत्त, यह सब वीर जैसे बादल बिजली को धारण किये हुए होते हैं उसी प्रकार धनुषों को चढ़ाये हुए कांचली रहित सर्पों के समान नाराच नाम बाणों को हाथों में लिये हुए सम्मुख आये तदनन्तर द्रौपदी के पुत्र और सुभद्रा का पुत्र महारथी अभिमन्यु, नकुल, सहदेव, पार्षद का पुत्र धृष्टद्युम्न, यह सब बड़े तीक्ष्ण शरों से ऐसे पीड़ित करते हुए शत्रुओं के सम्मुख गये जैसे बड़े वेगवान् वज्रों से शिखरों को पीड़ित करते हुए इन्द्र पर्वतों के सम्मुख जाय, उस पहले युद्ध में तेरे पुत्रों के और पाण्डवों के धनुषों की ज्या प्रत्यञ्चाओं के भयानक शब्दों से दोनों पक्षवालों में से कोई भी पराङ्मुख नहीं हुआ अर्थात् किसी ने मुख न फेरा, हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र ! मैंने बाणों को बराबर छोड़ते और लक्षों को बेधते हुए द्रोणाचार्य के शिष्यों की हस्तलाघवता को देखा, उस समय शब्दायमान धनुषों के शब्द बन्द नहीं होते थे और प्रकाशित बाण भी बराबर ऐसे चले जैसे कि आकाश से नक्षत्रों के पतन बराबर होते हैं,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हे भरतवंशिन्! अन्य सब राजाओं ने कुतूहल देखनेवालों के समान उस दर्शनीय और भय उत्पन्न करनेवाले जातभाइयों के युद्ध को देखा, तदनन्तर हे राजन्! उन क्रोधों में भरे हुए परस्पर में अपराधी महारथियों ने अन्योन्य की ईर्षा से परस्पर वीरता करी, कौरव और पाण्डवों की वह दोनों सेना हाथी घोड़े और रथों से व्याप्त होकर युद्ध में ऐसी शोभायमान हुई जैसे चित्रपटों से चित्रित दो वस्त्र होते हैं तदनन्तर धनुषबाण हाथ में लिये सब राजालोग आपके पुत्र की आज्ञा से सेना के मनुष्यों समेत चारों ओर से आ टूटे उन चारों ओर से दौड़नेवालों के व्याकुल शब्द उस समुद्र की गर्जना से सुनाई दिये जिस समुद्र में हाथी घोड़ों के समान रूपवाले बड़े कलिल थे वह समुद्र सिंहनाद से मिश्रित शंख भेरी से व्याकुल शब्दायमान बाणरूप ग्राहवाला धनुष हाथी और खड्गरूप कछुए रखनेवाला और चारों ओर से घोड़ों की चाल रूप वायु को आगे रखनेवाला था, और युधिष्ठिर की आज्ञा पाये हुए हजारों राजालोग अपनी सेना के मनुष्यों समेत आपके पुत्र की सेना पर पड़े, उस समय दोनों ओर के वीरों में परस्पर ऐसा कठिन युद्ध हुआ जिसकी धूलि से सूर्य भी आच्छादित होगया, इसीसे दोनोंओर के वीरों का अत्यन्त लड़ना वा मुख फेरना अथवा लौटना वा किसीकी मुख्यता दिखाई नहीं दी, इस बड़े भयकारी तुमुल युद्ध के वर्त्तमान होने पर आपके पिता भीष्मजी सब सेना को उल्लङ्घन करके अत्यन्त शोभायमान हुए॥ ३२॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४४॥

पैंतालीसवां अध्याय।

संजय बोले कि हे राजन्! उन भयकारियों के प्रथम भाग में राजाओं के शरीरों को काटनेवाला महाभारी घोर युद्ध प्रारम्भ हुआ, युद्ध में विजयाकांक्षी कौरवों के और सृंजियों के सिंहनादरूपी शब्दों ने पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान कर दिया, और धनुषधारियों के धनुषों की टंकारों समेत शंखों की महाध्वनियों से अत्यन्त कलकला शब्द उत्पन्न हुआ और परस्पर में सम्मुख गर्जनेवाले मनुष्यों के सिंहनाद उत्पन्न हुये, हे भरतर्षभ! हस्तत्राण से टक्कर खाई हुई प्रत्यञ्चाओं के शब्द और पदातियों आदि घोड़ों के चरणों के शब्दों से गिरेहुये अंकुश वा अस्त्रों के शब्दों से अथवा परस्पर में सम्मुख दौड़नेवाले हाथियों के घंटों के शब्दों से, इस युद्ध में शरीर के रोमहर्षण करनेवाले तुमुल-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शब्द उत्पन्न हुये और रथों के शब्द बादलों की गर्जना के समान हुये, वह सब लोग जिनकी ध्वजा उन्नत थीं और जो जीवन की आशा को अत्यन्त त्याग करके कठोरचित्त निर्दय और दूसरों से शत्रुता करनेवाले बनकर पाण्डवों के सम्मुख लड़ने को उपस्थित हुये हे राजन्! आप भीष्मपितामहजी कालदण्ड के समान भयानकरूप धारण किये अपूर्व भयकारी धनुष को हाथ में लेकर अर्जुन के सम्मुख दौड़े और संसार में विदित धनुषधारी महा हस्तलाघव जाननेवाला तेजस्वी अर्जुन भी अपने गाण्डीव धनुष को लेकर भीष्मजी के सम्मुख दौड़ा, कौरवों में महाश्रेष्ठ वह दोनों परस्पर में मारने की इच्छा में प्रवृत्त हुये तब महाबली भीष्मजी ने अर्जुन को बाणों से भेदकर कंपायमान नहीं किया इसी प्रकार अर्जुन ने भी भीष्मजी को बाणों से भेदकर कंपायमान नहीं किया और धनुषधारी सात्यकी कृतवर्मा के सम्मुख गया, इन दोनों का भी रोमहर्षण महातुमुल युद्ध हुआ सात्यकी ने कृतवर्मा को और कृतवर्मा ने सात्यकी को घायल किया, दोनों ने बड़े बड़े शब्दों को कहकर परस्पर में घायल किया तदनन्तर वह दोनों यादव बाणों से भरे हुये अङ्गोंसमेत ऐसे शोभायमान विदित हुये जैसे कि वसन्त ऋतुमें फूलोंसे आच्छादित विचित्र किंशुक होते हैं उस समय बड़ा धनुर्धारी अभिमन्यु बृहद्बलसे युद्ध करने लगा हेराजन्! तिसपीछे युद्धमें राजा कौलकने अभिमन्युकी ध्वजाको गिराकर उसके सारथीको गिराया ध्वजाके काटने और रथसारथी के गिराने से अभिमन्यु ने महाक्रोधाग्निरूप होकर बृहद्बलको नौ बाणोंसे घायल किया, अर्थात् एकबाणसे तो ध्वजाको और एक बाण से पीछे के रक्षक और सारथी को मारा, शत्रुओं के विजय करनेवाले दोनों ने परस्पर में तीक्ष्ण बाणों से घायल किया और महामानी युद्ध में प्रकाशित शत्रुता करनेवाले महारथी आपके पुत्र दुर्योधन से भीमसेन युद्ध करने लगा, उन दोनों नरोत्तम और कौरवोत्तम महारथियों ने, युद्धभूमि में अपने २ बाणों की वर्षा से परस्पर में एकने दूसरे को ढक दिया, हे भरतवंशिन्! उन युद्ध में कुशल दोनों महात्मा चित्रयोधियों को देखकर सब जीवों को आश्चर्य उत्पन्न हुआ, और दुश्शासन ने महारथी नकुल के सम्मुख जाकर बड़ी प्रसन्नता से तीक्ष्ण बाणों करके नकुल को घायल किया और इसीप्रकार हे राजन्! हँसते ही हुये नकुल ने भी अपने तीव्र बाणों से दुश्शासन की ध्वजा और धनुषबाण को काट डाला और पचीस क्षुद्रक नाम बाण उस पर छोड़े,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फिर तेरे पुत्र दुश्शासन ने नकुल के घोड़ों को मार कर उसकी ध्वजा को गिराया, और दुर्मुख ने महाबली सहदेव के सम्मुख जाकर उपाय करनेवाले सहदेव को अपने बाणों की वर्षा से पीड्यमान किया, तिस पीछे बड़े वीर सहदेव ने उसी युद्ध के बीच बड़े तीक्ष्ण तीरों से दुर्मुख के सारथी को गिराया उन दोनों दुर्मद घात के बदले घात करने के इच्छावान् वीरों ने अपने भयकारी बाणों से युद्ध में भय उत्पन्न करदिया, और आप राजा युधिष्ठिर मद्रदेश के राजा के सम्मुख गये उसको देखते ही मद्रदेश के राजा ने युधिष्ठिर के धनुष को काटडाला, तब कुन्ती के पुत्र वेगवान् युधिष्ठिर ने उस कटे हुए धनुष को डालकर दूसरे दृढ़ धनुष को धारण किया, तिस पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर राजा युधिष्ठिर ने तीक्ष्ण तने हुये बाणों से मद्रदेशाधिपति को आच्छादित किया और तिष्ठ तिष्ठ करके अनेक वचनों को कहा, हे भरतवंशिन्! इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़ा उस समय महाक्रोध में भरे हुये द्रोणाचार्य ने युद्ध में उस महात्मा पांचाल के दृढ़ धनुष को जोकि मारने का साधन था काटडाला और महाभयानक कालदण्ड के समान अपने बाण को युद्ध में फेंका वह उसके शरीर में घुसगया तिस पीछे द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष में शायक नाम चौदह बाणों को धारण करके युद्ध में द्रोणाचार्य को घायल किया और दोनों क्रोधरूपों ने परस्पर में बड़ा युद्ध किया, हे महाराज! युद्ध में शीघ्रता करनेवाला शंख अपने समान गुणवाले सोमदत्त के सम्मुख गया और तिष्ठ तिष्ठ शब्द को बोला तब बड़े वीर सोमदत्त ने युद्ध में उसके दक्षिण भुजा को घायल करके अत्यन्त ही व्याकुल किया, हे राजन्! उन दोनों अहंकारियों का भी युद्ध ऐसा महाभयकारी हुआ जैसा देव दानवों का युद्ध होता है तिस पीछे बड़ा साहसी महारथी युद्ध में क्रोधरूप धृष्टकेतु बाह्लीक राजा के सम्मुख गया, तब बाह्लीक ने उस क्षमा से रहित धृष्टकेतु को बहुत से बाणों से आच्छादित करके महासिंहनाद किया फिर उस महाक्रोधरूप चेदिराज धृष्टकेतु ने भी युद्ध में बड़ी शीघ्रता से नौ बाणों करके बाह्लीक को घायल किया और ऐसा युद्ध किया जैसे मत्त और उन्मत्त हाथी लड़ते हैं ४० और युद्ध में महाक्रोधाग्निरूप दोनों वारंवार शब्दों को करते हुये मंगल और बुध के समान बड़े पराक्रम से लड़े, महाकठिन कर्मी घटोत्कच उसी के समान कठिनकर्मी अलंबुष नाम राक्षस के सम्मुख ऐसे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गया जैसे कि युद्ध में बलि के सम्मुख इन्द्र जाता है, हे भरतवंशिन्! फिर घटोत्कच ने उस महाक्रोधरूप महाबली राक्षस को तीक्ष्ण नौ तीरों से घायल किया, और अलंबुष ने भी युद्ध में भीमसेन के पुत्र घटोत्कच को गुप्त ग्रन्थिवाले बाणों से अनेक रीति से घायल किया, तदनन्तर वह दोनों बाणों से भिदे हुए युद्ध में अत्यन्त शोभायमान हुए हे राजन्! महापराक्रमी शिखण्डी उस युद्ध में अश्वत्थामा से युद्ध करने के लिये उनके सम्मुख गया तब तो क्रोधाग्निरूप अश्वत्थामा ने सन्मुख वर्तमान होनेवाले शिखण्डी को बड़े तीक्ष्ण नाराच नाम बाणों से अत्यन्त घायल करके महाकंपायमान किया, तिस पीछे हे राजन्! शिखण्डी ने भी बड़े तीक्ष्ण पुङ्खवाले पीतरङ्ग के शायकों से अश्वत्थामा को घायल किया, और युद्धभूमि में परस्पर बहुत प्रकार के बाणों से संग्राम किया और सेनापति राजा विराट् संग्रामभूमि में राजा भगदत्त के सम्मुख गया तिस पीछे युद्ध होना प्रारम्भ हुआ और राजा विराट् ने महाक्रोधित होकर भगदत्त के ऊपर बाणों की ऐसी वर्षा करी जैसे बादल अपने जल से पर्वत पर वर्षा करता है फिर भगदत्त ने भी बड़ी शीघ्रता से उस राजा विराट् को संग्रामभूमि में बाणों के मारे ऐसा आच्छादित करदिया जैसे बादल सूर्य को आच्छादित करते हैं, और केकयदेशीय शरद्वत कृपाचार्यजी बृहच्छत्र के सम्मुख गये, हे भरतवंशिन्! कृपाचार्यजी ने बाणों की वृष्टि से उसको ढकदिया और बृहच्छत्र ने भी महाक्रोधयुक्त होकर गौतम कृपाचार्यजी को बाणों की वर्षा से व्याप्त करदिया तदनन्तर हे राजन्! वह दोनों परस्पर में धनुष को काट घोड़ों को मार के विरथ होकर महाक्रोधों में भरे हुये खड्गयुद्ध करने लगे, उन दोनों का वह युद्ध भयानकरूप देखनेवालों को भी भयकारी विदित होता था, तिस पीछे शत्रुसंतापी महाक्रोधाग्निरूप राजा द्रुपद सिंधु के राजा जयद्रथ के सम्मुख गया तब जयद्रथ ने द्रुपद को तीन विशिखों से युद्धभूमि में घायल किया और इसी प्रकार द्रुपद ने भी जयद्रथ को फिर उन दोनों का युद्ध भयानक दुःख से प्राप्त होने के योग्य देखनेवालों को प्रसन्नता देनेवाला ऐसा हुआ जैसा कि मंगल और शुक्र का युद्ध होता था तिस पीछे आपका पुत्र विकर्ण बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा भीमसेन के पुत्र महापराक्रमी सुतसोम के सम्मुख गया और युद्ध होनेलगा विकर्ण ने सुतसोम को और सुतसोम ने विकर्ण को बाणों से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वेधित करके कम्पायमान नहीं किया इसमें बड़ा आश्चर्यसा हुआ, नरोत्तम महारथी पराक्रमी पाण्डवों पर अत्यन्त क्रोधरूप चेकितान सुशर्मा के सम्मुख गया, हे महाराज ! युद्ध होने लगा और सुशर्मा ने युद्ध में चेकितान को बाणों की बड़ी वर्षा करके रोंका तब तो चेकितान ने भी महाक्रोधरूप होकर बाणों की वर्षा से सुशर्मा को ऐसा आच्छादित कर दिया जैसे कि बड़ा बादल पहाड़ को आच्छादित कर लेता है, हे राजन् ! इसके पीछे पराक्रमी शकुनि महाबली प्रतिबिन्ध के सम्मुख इस तीव्रता से गया जैसे कि सिंह मतवाले हाथी के सम्मुख जाता है, युधिष्ठिर के पुत्र प्रतिबिन्ध ने महाक्रोधित होकर सुबल के पुत्र शकुनि को तीव्र बाणों से ऐसा अत्यन्त घायल किया जैसे कि इन्द्र दैत्यों को करता है और शकुनि ने भी बड़े ज्ञानी महाबली प्रतिबिन्ध को अत्यन्त सपक्षबाणों से विदीर्ण करदिया, और श्रुतकर्मा काम्बोज के महारथी पराक्रमी राजा सुदक्षिण के सम्मुख गया, हे राजन् ! तिस पीछे सुदक्षिण ने सहदेव के पुत्र को घायल करके मैनाक पर्वत के समान कम्पायमान नहीं किया, इसके पीछे श्रुतिकर्मा ने भी काम्बोज के महारथी सुदक्षिण को बाणों से अनेक रीति करके आच्छादित करदिया, तदनन्तर शत्रुसंतापी युद्ध में कुशल अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन का पुत्र इरावान् श्रुतायुष के सम्मुख गया, और महारथी बलवान् इरावान् ने युद्ध में उसके घोड़ों को मारकर बड़े वेग से शब्द किया जिससे कि संपूर्ण सेना में शब्द भरगया, और अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतायुष ने भी अर्जुन के पुत्र इरावान् के घोड़ों को गदाओं से मारडाला फिर युद्ध होने लगा, फिर आवन्त्य देश के राजा बिन्द अनुबिन्द दोनों महावीर कुन्तभोज के सम्मुख युद्ध में उपस्थित हुये, हे राजन् ! वहां हमने उन दोनों के अपूर्व भयानक पराक्रमों को देखा अर्थात् वह दोनों बड़ी सेना समेत युद्ध करने में प्रवृत्त हुये अनुबिन्द ने गदा से कुन्तभोज को घायल किया और कुन्तभोज ने शीघ्र ही अपने बाणसमूहों से उसको ढकदिया, फिर कुन्तभोज के पुत्र ने भी शायकों से बिन्द को पीड्यमान किया और उसने उसको पीड़ित किया यह भी आश्चर्यसा हुआ, हे धृतराष्ट्र ! केकयदेशी पांचों भाइयों ने सेनाओं समेत संग्राममूमिमें नियत होकर गन्धारियों के सम्मुख होकर महायुद्ध किया, फिर आपका पुत्र वीरबाहु रथियों में श्रेष्ठ विराट् के पुत्र उत्तर से युद्ध करनेलगा और नौ बाणों से उसको घायल किया,
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उत्तर ने भी अपने तीव्र बाणों से उस वीर को विदीर्ण करदिया, और चंदेरी के राजा ने उलूक के सम्मुख जाकर बाणों से उलूक को घायल किया और उलूक ने भी बड़ी तीव्रता से शीघ्रगतिवाले बाणों से उसको विदीर्ण किया, हे राजन्! उन दोनों का युद्ध भी महाघोर भयकारी हुआ और क्रोधित होकर दोनों ने परस्पर एकने दूसरे को घायल किया, इस प्रकार तेरे पुत्र और पाण्डवों के रथ गज अश्वों से संकुलित युद्ध में हज़ारों योधा लोगों के द्वन्द्वयुद्ध हुए हे राजन्! एक मुहूर्त्त तक तो उनका युद्ध अच्छा देखने के योग्य हुआ फिर उन्मत्तों के समान हुआ उस समय वहां कुछ भी नहीं जाना गया अर्थात् ध्यान करके देखा तो युद्धभूमि में गजारूढ़ गजारूढ़ के साथ रथी रथी के साथ अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ों के और पदाती पदातियों के साथ सम्मुख हुए तिस पीछे परस्पर युद्ध में सम्मुख होकर शूरवीरों का महाकठिन युद्ध हुआ और सब महाव्याकुल होगये वहां युद्ध देखने को आये हुए देव ऋषियों ने और सिद्ध चारणों ने देवता और असुरों के युद्ध के समान महाभयकारी युद्ध को देखा, हे धृतराष्ट्र! तिस पीछे हज़ारों हाथी रथ और घोड़ों के सवारों के समूह और पुरुषों के समूह मर्यादारहित होकर परस्पर में युद्ध करनेलगे और जहां तहां रथ, हाथी और घोड़ों के सवार वारंवार लड़ते हुए देखपड़े ॥ ८६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ।

संजय बोले कि हे राजन्! जहां तहां लाखों पदाती मर्यादा से विरुद्ध लड़ने में प्रवृत्त हुए उसका वृत्तान्त मैं तुमसे कहता हूं, उस युद्ध में पुत्र ने अपने पिता को न जाना और पिता ने पुत्र स्त्री को नहीं जाना और भाई ने भाई को न जाना और भानजे ने मामा को और मामा ने भानजे को और मित्र ने मित्र को नहीं जाना कि तू भूतादि के आवेशयुक्त पुरुषों के समान वह सब लोग कौरव और पाण्डवों के पक्ष में एक एक से लड़ते हैं, हे भरतर्षभ! कोई कोई नरोत्तम शूरवीर रथों में सवार हो होकर सेना के और भागों पर जा टूटे और रथों ही से रथों के जुओं को तोड़डाला, रथाधीश रथाधीशों से और कूवररथ कूवरों से खण्डित हुए और कोई कोई परस्परमें मारनेकी इच्छासे सम्मुख आनेवालों से युद्ध करने लगे कोई रथ तो रथों से ही टक्करें खाकर चलने के योग्य नहीं रहे और बड़े डीलडौल के रथ आदि बड़े बड़े हाथियों से मिल कर टुकड़े टुकड़े

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होगये, हे महाराज! वहां बहुतसे क्रोधभरे हाथी अपने दांतों से घायल करतेहुए अम्बारी और पताकावाले युद्ध के महागजेन्द्र हाथियों से मिलकर अत्यन्त पीड़ा से पुकारते थे, शिक्षाओं से सीखे हुये चाबुक और अंकुशों से घायल विना मदवाले हाथी मदों के चूनेवाले उन्मत्त हाथियों के सम्मुख हुए, और कोई कोई मद चूनेवाले बड़े बड़े हाथी हाथियों से भिड़े हुए क्रौंच के समान शब्दों को करते हुए जहां तहां भागे, इसी प्रकार अच्छे हमला करनेवाले गण्ड-स्थलों से मद झारनेवाले उत्तम हाथी लाठी तोमर और नाराचों से रुकगये, मर्मस्थलों से भिदे हुए चिकार मारते हुए पृथ्वीपर गिरकर मृत्युवश हुए और कोई कोई हाथी महाभयानक शब्दों को करते हुए चारों ओर को दौड़े हे महाराज! हाथियों के चरणरक्षक शूरवीर लोग जो कि बड़े बड़े वक्षस्स्थलयुक्त मिले हुए और प्रहार करनेवाले थे वह हाथ की यष्टि, धनुष, निर्मल फरसे, गदा, मूसल, गोफन, तोमर, परिघ और स्वच्छ तीक्ष्ण खड्ग इन सब शस्त्रों को अच्छे प्रकार से धारण किये हुए अत्यन्त क्रोध में भरे परस्पर में एक दूसरे के मारने की इच्छा करते हुए जहां तहां दौड़ते देखपड़े, परस्पर में एक एक के सम्मुख दौड़ते हुए शूरवीरों के खड्ग मनुष्यों के रुधिरों से भरेहुए शोभाय-मान दृष्टि में आये, वीरों की भुजाओं से अधोमुख और ऊर्ध्वमुख गिराये हुए शत्रुओं के मर्मों पर पड़े हुए खड्गों का तुमुल शब्द उत्पन्न हुआ, गदा और मूसलों से टूटे हुए अङ्ग और उत्तम खड्गों से कटे हुए हाथियों के दांतों से घायल हाथियों से ही खुँदे हुए मनुष्यों के जहां तहां परस्पर पुकारे हुए भयकारी ऐसे वचन सुनेगये जैसे कि प्रेतों के शब्द सुनने में आते हैं, अश्वा-रूढ़ मनुष्यों से और अन्य तीव्रगामी अश्वों की सवारी से परस्पर में सम्मु-खता हुई, उनके छोड़े हुए शीघ्रगामी निर्मल सर्पों के समान जाम्बूनद सुवर्ण से अलंकृत भाले उनके अङ्गोंपर परस्पर में पड़े कितने ही वीरों ने उत्तम गतिवाले घोड़ों से बड़े रथों को संयुक्त करके घोड़ों समेत रथों को और सवारों के शिरों को काटा, और रथ के सवार ने बहुत से अश्वारूढ़ों को पाकर बड़े झुके हुए पर्ववाले भालों से उन बाणों से भिदे हुओं को मारा, मदोन्मत्त सुनहरी भूषणवाले हाथियों ने नवीन बादल के समान रंगीन घोड़ों को तिरस्कार करके अपने पैरों से मर्दन किया, बड़े भयानक कितने ही हाथी मस्तक और देह में कवच आदि से भी अलंकृत भालों से मारे हुए बड़े पीड्यमान शब्दों को करते थे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फिर वहां महायुद्ध होनेपर कितने ही उत्तम हाथियों ने सवारों समेत घोड़ों को मथकर वा उठाकर फेंक दिया हाथी अपने दांतों की नोक से सवारों समेत घोड़ों को ऊंचे को उठाये ध्वजाधारी रथ समूहों को मर्दन करते हुए चारों ओर घूमने लगे और कितने ही बड़े हाथियों ने बड़ी वीरता और मदोन्मत्तता से अपनी सूंड़ और चरणों के द्वारा सवारोंसमेत घोड़ों को मारा, यह अनर्थ देखकर चारों ओर से हाथियों के मस्तक वा अङ्ग वा पसली और जङ्घाओं पर बड़े शीघ्रगामी सर्पों के समान तीक्ष्ण बाण गिरे, और हे राजन्! जहां तहां वीरों की भुजाओं से मारी हुई बरछियां लोहे के कवचों को काटकर मनुष्य और घोड़ों के शरीरों पर पड़ीं वह बरछियां महाभयानक उल्काओं के रूप थीं, और इसी संग्राम में चित्र व्याघ्रचर्म से बँधे हुए और व्याघ्र के ही चर्म में रहनेवाले मियान से बाहर स्वच्छ खड्गों से शत्रुओं को मारा, निर्भय मनुष्य के सम्मुख जाना और काटना आदिक सब कर्मों को करना और बाईं ओर को सवारी करना इत्यादि चेष्टाओं को दिखलाते खड्ग ढाल और परशु नाम शस्त्रों समेत गिरे, कितने ही हाथी सूंड़ों से घोड़ों समेत रथों को खैंचते थे और खैंचनेवाले हाथियों के शब्दों को सुनकर सबके सब चारों ओर को गये, कितने ही मनुष्य डंडों की कीलों से कटे हुए और परशुओं से मारे हुए थे और बहुत से हाथियों से मर्दित हुए और कितने ही घोड़ों से अत्यन्त घायल हुए हे महाराज! जहां तहां कितने ही मनुष्य बांधवों को पुकारते हुए रथों के पहियों से दबकर परशुओं से कटगये, और कहीं संग्राम में अपने पुत्रों को कोई भाइयों को और मामा वा भानजों को अथवा अन्य लोगों को पुकारते हुए घायल होकर मारे गये, हे भरतवंशिन्! जिनकी आंतें फैलगईं और जङ्घा टूट गईं ऐसे सब मनुष्य होगये और बहुत से कटी हुई भुजाओं समेत अङ्गों से रहित हुए, और अनेक मनुष्य जीवन की इच्छा करते हुए अत्यन्त रोदन करते देख पड़े बहुतेरे प्यासे और धैर्य को छोड़े हुए जल को खोजते थे, हे राजन्! उन रुधिरों से भरेहुए दुःखियों ने आप समेत आपके पुत्रों की निन्दा करी, हे धृतराष्ट्र! अच्छे शूरवीर क्षत्रिय न तो शस्त्र को छोड़ते हैं न रोते और पुकारते हैं, हे राजन्! जहां तहां अत्यन्त प्रसन्नचित्त शूरवीर लोग क्रोध से अपने दांतों के द्वारा ओठों को काटकर निन्दायुक्त वचनों को कहते हैं, कोई कोई धैर्यवान् महाबली बाणों से महाव्याकुल और घावों से पीड़ित होकर यहाकष्ट से मौन होगये, कितने ही शूरवीर युद्ध

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

में रथ से विहीन और उत्तम हाथियों से अत्यन्त घायल दूसरे के रथों की इच्छा करते हुए मार्ग में गिरपड़े, हे महाराज! वह फूले हुए किंशुक वृक्ष के समान शोभायमान हुए और इसकें विशेष सेना में भयकारी अनेक शब्द प्रकट हुए, इस बड़े भयानक और उत्तम वीरों के नाश करनेवाले युद्ध के होने पर संग्रामभूमि में पिता ने पुत्र को और पुत्र ने पिता को मारा, मामा ने भानजे को और भानजे ने मामा को मित्रने मित्र को इसी प्रकार बाँधवों ने बाँधव आदि सम्बन्धियों को भी मारा, इस रीति से पाण्डवों से और कौरवों से उस भयानकरूप मर्यादा से रहित बड़े भयकारी युद्ध के होने पर यह सर्व संहार जारी हुआ, हे भरतर्षभ! पांच नक्षत्रवाले तालध्वजा समेत भीष्मजी को पाकर अर्थात् सम्मुख होकर पाण्डवों की सेना अत्यन्त कंपायमान हुई। उस समय वह महाबाहु भीष्मजी सुवर्णनिर्मित उत्तम ध्वजा समेत विस्तृत रथ में बैठे हुए ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि मेरु पर्वत पर चन्द्रमा शोभित होता है॥ ४६॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि षट्चत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय।

संजय बोले कि हे राजन्! उस महाभयानक दिन के मध्याह्न व्यतीत होने और इस रीति से उत्तम लोगों के नाश वर्त्तमान होने पर, आपके पुत्र की आज्ञा लेकर दुर्मुख, कृतवर्मा, कृपाचार्य, शल्य और विविंशति ने भीष्मजी के पास आकर उनकी रक्षा करी, हे भरतर्षभ! इन पांच अतिरथी वीरों से रक्षित महारथी भीष्मजी ने पाण्डवों की सेना में प्रवेश किया, और हे धृतराष्ट्र! चेदि, काशि, कुरुष और पांचाल देश की सेना के मध्य में भीष्मजी की तालरूप ध्वजा बहुत सुन्दर देख पड़ी, उसवैरिणी युद्ध में बड़े वेगवान् अतिशय झुके हुए भल्ल नाम बाणों से भीष्मजी ने शिर और ध्वजायुक्त रथों को रथ के जुए से आदि अङ्गों समेत काटा, हे भरतर्षभ! नक्षत्र के समान भीष्मजी के घूमने पर मर्मस्थलों से घायल कितने ही हाथियों ने पीड़ा के शब्द किये, उस समय अभिमन्यु अत्यन्त क्रोध में भरा हुआ पिंगल वर्ण उत्तम घोड़ों के रथ में बैठ कर भीष्मजी के रथ के सम्मुख आया, और जाम्बूनद सुवर्ण से रचित कर्णिकार वृक्ष के चित्र की रखनेवाली ध्वजा समेत भीष्मजी को आदि ले उन उत्तम पांचों रथियों के सम्मुख हुआ, फिर वह वीरभीष्मजी की तालध्वजाको तीक्ष्ण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बाणों से छेदकर उनके पीछे चलनेवाले पांचों रथियों से युद्ध करने लगा, एक बाण से कृतवर्मा को और पांच बाणों से शल्य को और नौ उत्तम बाणों से पितामह को घायल किया, और जाम्बूनद सुवर्ण से शोभित एक उत्तम शायक से उनकी ध्वजा को काटा, और सब पर्दों के भेदन करनेवाले झुके हुए पर्ववाले एक भल्ल नाम बाण से दुर्मुख के सारथी का शिर देह से जुदा करदिया, सुवर्ण से बने हुए महाशोभायमान कृपाचार्यजी के उत्तम धनुष को तीक्ष्ण नोकवाले भल्ल से काटा और महाक्रोधरूप होकर उस महारथी ने अपने तीव्रबाणोंसे उन सबको भी घायल किया देवतालोग भी आकाश से उस शीघ्र हस्तलाघवता को देखकर प्रसन्न हुए, और भीष्म आदि सब रथियों ने उस अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के लक्ष्य भेदन से उसको साक्षात् अर्जुन के समान पराक्रमी माना, और घुमाये उल्मुक के समान प्रकाशित निर्विघ्न मार्ग में नियत उसका मण्डल दिशाओं में गिरा और गाण्डीव धनुष के समान उसको शब्दायमान किया, तब शत्रुओं के मारनेवाले भीष्मजी ने शीघ्रतापूर्वक उससे आगे होकर युद्धभूमि में शीघ्र गतिवाले नौ बाणों से तत्काल ही उस अर्जुन के पुत्र को घायल किया, और बड़े पराक्रमी दृढ़व्रत सावधान भीष्मजी ने इसकी ध्वजा को तीन भल्लों से काटा और उसके सारथी को तीन बाणों से मारा। हे राजन्! इसीप्रकार कृतवर्मा, कृपाचार्य और शल्य ने भी अर्जुन के पुत्र को घायल करके ऐसे कम्पायमान नहीं किया जैसे मैनाक पर्वत को कम्पायमान नहीं करसक्के, फिर उन महारथियों से घिरा हुआ अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु पांचों रथियों के ऊपर बाणों की वर्षा करके पांचों के अस्त्रों को अपने बाणों से रोककर भीष्मजी के ऊपर बाणों को छोड़ता हुआ बड़े वेग से गर्जा उस समय हे राजन्! वहां उस युद्ध में उपाय करनेवाले और बाणों से भीष्म को मारनेवाले अभिमन्यु का बड़ाभारी भुजबल विदित हुआ, तब भीष्मजी ने भी उस पराक्रमकर्त्ता के ऊपर बाणों को छोड़ा फिर उसने युद्ध में भीष्मजी के धनुष से छूटे हुए बाणों को काटा, उसके बाद उस सफल बाणवाले वीर ने भीष्मजी की ध्वजा को फिर नौ तीरों से काटा इस कारण सब लोग बड़े शब्द से पुकारे हे भरतवंशिन्! वह बड़ी शाखायुक्त सुवर्ण से शोभित सुवर्णित ताल वृक्ष अभिमन्यु के विशिख नाम बाणों से कटा हुआ पृथ्वी पर गिरा, हे भरतर्षभ! अभिमन्यु के विशिखों से घिरी हुई ध्वजा को देखकर भीमसेन से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महाप्रसन्न होकर उस अभिमन्यु को प्रसन्न करके बड़ी गर्जना की, इसके बाद महाबली भीष्मजी ने उस महाभयकारी युद्ध में बहुत से दिव्य महाअस्त्रों को प्रकट करके सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु को हज़ार बाणों से ढक दिया यह आश्चर्य सा होगया, यह देखकर हे राजा ! आगे लिखे हुए पाण्डवों के महारथी बड़े धनुषधारी रथों में सवार होकर शीघ्र ही अभिमन्यु की रक्षा के लिये दौड़े उनके नाम यह हैं कि उत्तर नाम अपने पुत्र समेत राजा विराट, पर्षत का पुत्र धृष्टद्युम्न, भीमसेन, केकय, सात्यकी, शन्तनु के पुत्र भीष्मजी ने युद्ध में उन तीव्र आनेवालों के मध्य में धृष्टद्युम्न को तीन बाणों से और सात्यकी को नौबाणों से घायल किया, और कर्णपर्य्यंत खींचकर छोड़े हुये तीक्ष्ण धार वाले एक बाण से भीमसेन की ध्वजा को काटा, हे नरोत्तम ! भीमसेन की ध्वजा सिंह के चित्र की स्वर्णमयी भीष्म से गेरी हुई पृथ्वी पर गिरी तदनन्तर भीमसेन ने शन्तनु के पुत्र भीष्मजी को बाणों से घायल करके एक बाण से कृपाचार्य को और आठ बाणों से कृतवर्मा को घायल किया, और उत्तर नाम विराट का पुत्र अग्रभाग में सूंड़ की कुण्डली बनानेवाले हाथी पर सवार होकर मद्रदेश के राजा शल्य के सम्मुख दौड़ा, शल्य ने बड़ी तीव्रता से रथपर गिरनेवाले उस गजेन्द्र के महावेग को रोका, फिर उस क्रोधित गजेन्द्र ने चरणों से रथ के जुये को दबाकर उसके चारों उत्तम सवारी के घोड़ों को मारा ३७ मृतक घोड़ेवाले रथ पर नियत राजा मद्र ने सर्प के समान और उत्तर के नाश करनेवाली लोहे की बरछी को फेंका, उस बरछी से जिसका कवच कटगया ऐसा वह उत्तर विस्मरणता में आकर हाथी के ऊपर से नीचे गिरपड़ा और गिरते ही उसके हाथ से अंकुश और तोमर छूटपड़े, फिर शल्य ने अपने रथ से उतर, खड्ग हाथ में लेकर बड़े पराक्रम से उसके गजेन्द्र की बड़ी भारी सूंड़ को काटडाला, वह हाथी बाण समूहों से भिदाहुआ, टूटे कवचवाला, कटीहुई सूंड़ से भयानक शब्द करता हुआ महादुःखों से पृथ्वी पर गिरकर मरगया। हे राजन् ! शल्य ऐसा कर्म करके शीघ्रही कृतवर्मा के प्रकाशवान् रथ पर चढ़गया, तब विराट के पुत्र श्वेत ने भाई उत्तर को मृतक देखकर और साथ में बड़े वीरलोगों को जानकर क्रोधयुक्त होके गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से उनके धनुषों को काटा, हे भरतवंशिन् ! वह धनुष कटेहुए दीख पड़े तदनन्तर उन्होंने अर्द्ध निमेष में ही अपने सब धनुषों को तैयार करके सात बाण श्वेत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को मारे तदनन्तर अपार बुद्धि श्वेत ने सात भल्लों से उन धनुषधारियों के धनुषों को काटा, वह धनुषकटे हुए महारथी दिव्य बरछों को हाथ में लेकर भयकारी शब्दों को करने लगे और सातों बरछों को उन्होंने श्वेत के रथ पर छोड़ा तिस पीछे परम अस्त्रों के जाननेवाले श्वेत ने उन ज्वालारूप प्रकाशित उल्का और वज्रके समान शब्दायमान सातों बरछों को अपने सात भल्लों से बीच ही में काटडाला, तदनन्तर हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! श्वेत ने सब शरीर के छेदनेवाले बाण को रुक्म के रथ पर चलाया, वह बाण उसके मुख को उल्लङ्घन करके बड़ी तीव्रता से उसके शरीर में प्रवेश करगया इसके पीछे हे राजन्! रुक्मरथी शायक नाम बाण से घायल होकर रथ के बैठने के स्थान में बैठ गया और बड़ी अचेतता में प्रवृत्त हुआ परन्तु शीघ्रता करनेवाला उसका सावधान सारथी उसको अचेत जानकर सबको देखते हुये बहुत दूर लेगया तदनन्तर महाबाहु श्वेत ने सुवर्ण से शोभित दूसरे घोड़ों को लेकर, उन छहोंकी ध्वजाओं की नोकों को गिराया, फिर हे राजन्! वह श्वेत शेष बचे हुये घोड़ों को बाणों से आच्छादित करके शल्य के रथ पर गया, हे भरतवंशिन्! इसके अनन्तर शल्य के रथपर जाते हुये सेनापति श्वेत को देखकर आपकी सेना के मनुष्यों में बड़ा हलचल का शब्द हुआ फिर आपका पुत्र महाबली भीष्मजी को आगे करके सब सेना के मनुष्यों समेत शल्य के रथ पर गया और मृत्यु के मुखमें फँसे हुये मद्र के राजा शल्य को बचाया, इसके पीछे आपके पुत्र और प्रतिपक्षियों में महारोमहर्षण करनेवाला तुमुल युद्ध हुआ जिसमें रथ और हाथी संयुक्त थे, कौरवों के पितामह वृद्ध ने अभिमन्यु, भीमसेन, महारथी सात्यकी, केकय, विराट, धृष्टद्युम्न, पर्वत का पुत्र इन नरोत्तमों पर और राजा चंदेली की सेना के पुरुषों पर बाणों की वर्षा की ॥ ५६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्वेतयुद्धे सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

अड़तालीसवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय! इसप्रकार शल्य के रथ के पास बड़े धनुषधारी श्वेत के वर्त्तमान होनेपर कौरव और पाण्डवों ने क्या क्या कर्म किये? और शान्तनव भीष्मजी ने क्या किया? उसको मेरे आगे वर्णन करो, संजय बोले हे राजन्! इसके पीछे लाखों उत्तम शूरवीर और महारथी क्षत्रिय उस सेनापति श्वेत को आगे करके आपके पुत्र राजा दुर्योधन को अपना पराक्रम दिखलाते हुये शि-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खण्डी को आगे कर रक्षा करने की इच्छा करके युद्धकर्त्ताओं में उत्तम भीष्मजी को मारने की अभिलाषा करते हुये उनके सुवर्णजटित रथ के समीप उनकी सम्मुखता में आकर वर्त्तमान हुये, उस समय बड़ा भारी युद्ध हुआ, अब मैं उस युद्ध को कहता हूं जिस रीति से तुम्हारे पुत्र और दूसरे लोगों का युद्ध प्रचलित हुआ उस युद्ध में भीष्मजी ने रथी लोगों के स्थानों को खाली करके उनके शिरों को काटा, सूर्य के समान प्रतापी युद्ध में चारों ओर से पीड़ित करते हुये भीष्मजी ने बाणों से सूर्य को ऐसे ढकदिया जैसे उदय होकर सूर्य अंधेरे को ढक देता है। हे राजन्! उन्होंने युद्ध के बीच क्षत्रियों के नाश करनेवाले बड़े शीघ्रगामी लाखों तीव्रबाणों की वर्षा करी, युद्धमें अनेकशूरोंके शिरोंको गिराया, हे राजन्! भल्ल और बाणों सें युक्त शिर से रहित बहुत से रथी रथ में बैठे हुये दिखाई दिये। रथी रथी के ऊपर, अश्वपति अश्वपति के ऊपर वर्त्तमानहुये, और सेना के साथ मरे हुये धनुषों समेत रथ में पड़े हुये वीरों को उनके रथों के घोड़े इधर उधर लेजाते हुए देखपड़े। खड्ग और तूणीर के बांधनेवाले कटे शिरों से वर्त्तमान हुये और सैकड़ों पृथ्वीपर पड़े हुए वीरों की शय्याओं पर सोते हैं, और परस्पर में दौड़ते, गिरते हुए फिर उठ खड़े हुए और उठकर अत्यन्त दौड़नेवालों ने द्वन्द्वयुद्ध को मचाया, फिर परस्पर में पीड़ित होकर युद्धभूमि में फिरने लगे। मतवाले हाथी चारों ओर से गिरे और जिनके सारथी मारेगये वह भी हाथी घोड़े गिरपड़े, रथों के साथ रथीलोग चारों ओर से मर्दन करने लगे और कोई किसी के बाण से मरा हुआ रथ से गिरा, और जिसका सारथी मारा गया वह बड़ा रथ भी काष्ठ के समान गिरा और द्वन्द्वयुद्ध में धूल के उठने पर, लड़नेवाले का विज्ञान और सम्मुख युद्ध करनेवालों के शब्द ध्वंस हुये युद्ध करनेवालों का शरीर छूने से शत्रु का ज्ञान होता था, हे राजन्! विजय करनेवाली सेना बाणों से लड़नेवालों को उल्लङ्घन करगई और वीरों के कहे हुए वीरशब्द परस्पर में सुनाई नहीं दिये, युद्ध के शब्दायमान होने और कर्ण फाड़नेवाले पटहशब्द होने पर युद्ध करते हुये अपनी शूरवीरता करने का परस्पर में पिछली शूरताओं का वर्णन करना भी नहीं सुनागया। भीष्मजी के धनुष से निकले हुये बाणों से पीड्यमान और युद्ध में लड़नेवालों का भी वर्णन नहीं सुनाई दिया, एकने दूसरे वीरों के मनों को कम्पित किया उस बराबर व्याकुल करनेवाले रोमहर्षण तुमुलयुद्ध में, कोई पिता अपने निजपुत्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को नहीं जानता था, रथ के पहिये और जुये टूटगये और एक भारवाहक घोड़ा मारागया, जुये के और पहिये के टूटने और रथ को स्वाधीनरहित होने पर सारथी समेत वीर लोग सूधे चलनेवाले बाणों के द्वारा रथों से गिराये गये, और परस्पर में लड़ते हुये देखपड़े। जो मारागया वह शिर से रहित हुआ यह मर्मस्थलों में घायल होकर मरा, भीष्मजी के हाथ से शत्रुओं के मनुष्यों को मरते हुये कोई भी विना घायल के नहीं बचा कौरवों के उस बड़े युद्ध में आप श्वेत ने, राजकुमारों को और सैकड़ों समूहवाले बड़े बड़े पुरुषों को मारा और हज़ारों समूहयुक्त रथियों के शिरों को काटा, हे भरतवंशिन्! उस युद्ध भूमि में चारों ओर से बाजूबन्दों समेत भुजा वा धनुष और रथी पदाती रथ वा रथों में सवार छोटी बड़ी पताका अथवा घोड़ों के और रथों के समूह वा मनुष्यों के समूह सैकड़ों हाथियों समेत श्वेत शूरवीर के हाथों से मारे गये। उसके पीछे हम भी श्वेत के भय से भयभीत होकर अपने उत्तम रथ को छोड़कर दूर चले गये, और यहांपर आपकी चिन्ता को देखते हैं सो हे कौरवनन्दन! हम सब कौरव लोग बाणों की झड़ी को विचारकर वहां पर नियत, शान्तनव भीष्मजी को देखनेलगे वह नरोत्तम बड़े उदार प्रतापी हमारे वृद्ध पितामह भीष्मजी भय के समय बड़े भारी युद्ध में, निश्चल मेरुपर्वत के समान अकेले ही नियत हुए और जैसे चैत्र, वैशाख में सूर्य अपनी किरणों से पृथ्वी के रसादिकों को आकर्षण करता हुआ नियत होता है उसीप्रकार वह शीतल किरणोंवाला भीष्मभी शत्रुओं के प्राणों को खींचता हुआ नियत हुआ। युद्धमें शत्रुओं को मारते हुए उस धनुषधारी ने बहुत प्रकार से बाणों के समूहों को ऐसे छोड़ा जैसे कि चक्रधारी विष्णु असुरों पर छोड़ते हैं तब भीष्मजी से घायल हुए वीर लोगों ने भीष्म को त्याग किया और अपने सब समूहों को भी काष्ठ से छूटी हुई अग्नि के समान शत्रुओं के समूहों से पृथक् किया। प्रसन्नचित्त देह से प्रफुल्लित शत्रुसंतापी दुर्योधन के प्रयोजन करने में प्रवृत्तचित्त अकेले भीष्मजी ने उस अकेले श्वेत को अपने सम्मुख देखकर पाण्डवों को बहुत शोषण किया हे राजन्! जीवन को और उससे उत्पन्न हुए भय को त्यागकर उस महायुद्ध में पाण्डवों की सेना के मनुष्यों को मारकर गर्दमर्द किया, फिर आपके पिता देवव्रत भीष्मजी उस सेनाओं के मारनेवाले सेनापति को देखकर बड़ी शीघ्रगति से सम्मुख हुआ उस समय उस श्वेत ने बाणों के महाजालों से भीष्मजी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को आच्छादित करदिया, इसीप्रकार भीष्मजी ने बाणों के समूहों से श्वेत को ढकदिया और फिर वह दोनों बैलों के समान गर्जते हुए बड़े मतवाले हाथी और व्याघ्र के समान अत्यन्त क्रोध में भरे परस्पर में आघात करने लगे, तदनन्तर वह दोनों पुरुषोत्तम अस्त्रों से अस्त्रों को रोककर परस्पर मारने के इच्छावान् युद्ध में प्रवृत्त हुए। अत्यन्त क्रोधरूप भीष्मजी पाण्डवों की सेना को एक ही दिन में भस्म करडालते जो श्वेत रक्षा न करता तिस पीछे श्वेत से मुख फेरे हुए पितामह को देखकर पाण्डवों ने बड़ा हर्ष मनाया, और आपका पुत्र उदास हुआ तदनन्तर क्रोध में भरा हुआ दुर्योधन अपने साथी राजाओं समेत सेना के मनुष्यों को साथ लिये युद्ध में आकर पाण्डवों की सेना के सम्मुख दौड़ा तब श्वेत ने गंगा के पुत्र भीष्मजी को छोड़कर बड़ी तीव्रता से आपके पुत्र की सेना का ऐसे नाश किया जैसे वायु अपने बल से वृक्षों का नाश करती है, वह क्रोध से भरा हुआ विराट का श्वेत नाम बड़ा पुत्र दुर्योधन की सेना का नाश करके वहां से लौटकर फिर वहीं आ पहुँचा जहां पर भीष्मजी नियत थे, हे राजन्! वह दोनों प्रकाशवान् महाबली महात्मा परस्पर में फिर ऐसे युद्ध करने लगे जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्र लड़ते थे और परस्पर मारने की इच्छा करते थे। श्वेत ने अपने धनुष को हाथ में लेकर भीष्मजी को सात बाणों से विदीर्ण किया इसके पीछे इस पराक्रमी ने उस पराक्रमी को बड़े पराक्रम से ऐसे हटा दिया जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी को हटा देता है। फिर क्षत्रियों के प्रसन्न करनेवाले विराट के पुत्र श्वेत ने क्रोध करके युद्ध में धनुष को खींचकर भीष्मजी को घायल किया, इसीप्रकार शान्तनव भीष्मजी ने भी उसको दश बाणों से विह्वल करदिया, वह पराक्रमी भीष्मजी से घायल होकर भी पर्वत के समान कम्पायमान नहीं हुआ तदनन्तर फिर श्वेत ने गुप्त ग्रन्थिवाले पचीस बाणों से भीष्मजी को घायल किया, यह आश्चर्यसा हुआ और युद्ध में ओंठ को चाबनेवाले श्वेत ने अत्यन्त हँसकर, दश बाणों से भीष्म के धनुष को दश खण्ड कर दिये तिस पीछे बाणों के भी छेदनेवाले विशिखों को चढ़ाकर, उन महात्मा भीष्मजी की तालध्वजा के शिर को मथन किया। फिर आपके पुत्रों ने भीष्मजी की ध्वजा को गिरा हुआ देखकर भीष्मजी को श्वेत के आधीन वर्त्तमान मृतकरूप माना और प्रसन्नचित्त पाण्डवों ने भी चारों ओर शंखों को बजाया, महात्मा भीष्मजी की तालध्वजा
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को गिरा हुआ देखकर दुर्योधन ने बड़े क्रोध से अपनी सेना को जताया कि उन देखनेवालों को भी श्वेत मारेगा तब शान्तनव भीष्मजी भी मारे जायँगे इसलिये मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि बड़े उपाय से भीष्मजी के जीवन की इच्छा से तुम चारों ओर से उनकी रक्षा करो यह बात मैं सत्य-सत्य ही कहता हूं राजा दुर्योधन के वचन को सुनते ही शीघ्रता करने वाले महारथियों ने चार अङ्गवाली सेनासमेत गङ्गा के पुत्र भीष्म की रक्षा करी; बाह्लीक, कृतवर्मा, कृपाचार्य, शल्य, जरासन्ध का पुत्र, विकर्ण, चित्रसेन, विविंशति, हे भरत-वंशिन्! उन सब शीघ्रता में शीघ्रता करनेवालों ने चारों ओर से भीष्मजी को मध्य में करके श्वेत के ऊपर अस्त्रों की वर्षा करी, हस्तलाघवता के दिखाने-वाले और शीघ्रता करनेवाले महाबली बड़े बुद्धिमान् श्वेत ने उन क्रोध भरे हुओं को अपने तीव्रबाणों से रोका, जैसे कि सिंह हाथियों को रोकता है उसी प्रकार श्वेत ने उन सबोंको रोककर बाणों की बड़ी वर्षा से भीष्मजी के धनुष को काटा, तदनन्तर हे राजन्! युद्ध भूमि में शान्तनव भीष्मजी ने दूसरे धनुष को लेकर कंकपक्षयुक्त शिला पर तीक्ष्ण किये हुये बाणों से श्वेत को घायल किया, तिस पीछे हे राजन्! लड़ाई में सब लोगों के देखते बड़े क्रोधयुक्त श्वेत ने भीष्मजी को बड़े बड़े लोहे के बाणों से विदीर्ण किया इनके अनन्तर राजा दुर्योधन उन सब लोगों के आगे बड़े वीर भीष्मजी को युद्ध में श्वेत से रुका हुआ देखकर बड़ा दुःखी हुआ, आपकी सेना का बहुत देर तक निवास रहा और श्वेत के बाणों से विदीर्ण उस वीर भीष्म को देखकर श्वेत के आधीन वर्त्तमान होकर उसके हाथ से मृतकरूप माना इस पीछे आपके पिता देवव्रत भीष्मजी क्रोध के वशीभूत हुए, हे महाराज! ध्वजा को मथित करके उस सेना को रोके हुए देखकर श्वेत के ऊपर अनेक शायकों की वर्षा करी, फिर रथियों में श्रेष्ठ श्वेत ने उन बाणों को रोककर फिर भी आपके पिता भीष्म के धनुष को भल्लों से काटडाला, हे राजन्! क्रोध में भरे हुए भीष्मजी ने धनुष को त्यागकर दूसरे अत्यन्त दृढ़ धनुष को लेकर शिला के तीक्ष्ण किये हुए सात भल्लों को चढ़ाकर चार बाणों से तो श्वेत के चारों घोड़ों को मारा और दो बाणों से ध्वजा को काटा और सातवें भल्ल से सारथी के शिर को काटा फिर वह महारथी श्वेत जिसके सारथी और घोड़े मरगये थे रथ से कूदकर क्रोध से व्याकुल हुआ। पितामह ने रथियों में श्रेष्ठ श्वेत को रथ से विहीन देखकर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बड़े तीक्ष्ण बाणों से उसको चारोंओर से घायल किया, युद्ध में भीष्मजी के बाणों से घायल हुए श्वेत ने अपने रथपर धनुष को छोड़कर दिव्य सुवर्णित बरछी को धारण किया, तदनन्तर युद्धमें घोर भयानक उग्र कालदण्डके समान नाश करने में महासमर्थ अपनी बरछी को लेकर, महाक्रोधरूपी बुद्धिमान् श्वेत ने भीष्म भीष्म ऐसा कहकर सर्प के समान बरछी को फेंका, हे राजन्! उस समय आपके पुत्रों ने बड़ा हाहाकार किया कि पाण्डवों के निमित्त पराक्रम करने वाला श्वेत आपका अनर्थ करना चाहता है ऐसी सर्पाकाररूपवाली नाश-द्योतक श्वेत की छोड़ी हुई बरछी को देखकर आपके पुत्रों में बड़ा हाहाकार हुआ। हे राजन्! उसकी फेंकी हुई बरछी एकाएकी उल्कापातके समान आकाश से गिरी तब भ्रांति से युक्त आपके पिता देवव्रत ने उस पृथ्वी और आकाश के बीच, प्रकाशवान् किरणों से युक्त बरछी को आठ बाणों से काटकर नौ टुकड़े किये, वह उत्तम सुवर्णवाली बरछी तीक्ष्ण बाणों से कटगई इसके पीछे हे भरतर्षभ! आपके सब पुत्र बड़े शब्दों को करके पुकारे, तब क्रोध से भरे काल से विदीर्णचित्त श्वेत ने उस बरछी को खण्डित हुई जानकर करने के योग्य कर्म को नहीं जाना, फिर क्रोधयुक्त और प्रसन्नमूर्त्ति श्वेत ने भीष्म जी के मारने के लिये गदा को हाथ में लिया, और क्रोध से अत्यन्त रक्तनेत्र दूसरे काल के समान भीष्मजी के ऊपर ऐसा दौड़ा जैसे कि बादल पर्वत पर दौड़ता है, प्रभाव के जाननेवाले भीष्मजी उसके वेग को न रोकने के योग्य मानकर अपने बचाव के लिये शीघ्र ही पृथ्वी पर उतर पड़े, क्रोध के आधीन होकर श्वेत ने अपनी उस गदा को घुमाकर भीष्मजी के रथपर ऐसा फेंका जैसे कि धनेश कुबेर अपनी गदा को फेंकता है, उस भयानक घात करनेवाली गदा ने घोड़ों समेत रथ सारथी और ध्वजा को अत्यन्त भस्मकर दिया फिर महारथी भीष्मजी को रथ से विहीन देखकर रथियों में श्रेष्ठ शल्य आदिक महारथी एकसाथ दौड़े, तदनन्तर महादुःखी भीष्मजी दूसरे रथ में बैठकर धनुष को टंकार करके हँसतेहुए धीरपने से श्वेत के निकट आये, इसी अन्तर में भीष्मजी ने आकाश से उत्पन्न वा अपना भला करनेवाली इस दिव्य वाणी को सुना, कि हे भीष्म, हे भीष्म, हे महाबाहो! इसके विजय करने में शीघ्र उपाय कर यह समय ईश्वर से कहा हुआ है, देवदूत के कहे हुये आकाश से उस वचन को सुनकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त हो भीष्मजी ने उसके मारने में मनको

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लागाया। सात्यकी, भीमसेन, पार्षत का पोता धृष्टद्युम्न, केकय, धृष्टकेतु, पराक्रमी अभिमन्यु यह सब महारथी उस रथियों में श्रेष्ठ श्वेतको रथ से विहीन देखकर एक साथही चारों ओर को देखते हुये लौटे उनको चारों ओर से आते हुये देख कर बड़े बुद्धिमान् भीष्मजी ने द्रोणाचार्य, शल्य और कृपाचार्य को साथ लेकर उनको ऐसे रोका जैसे कि वायुके वेगों को पर्वत रोंके। महात्मा पाण्डव और सबके रुकजाने पर श्वेत ने खड्ग को खैंचकर भीष्म के धनुष को काटा, फिर शीघ्रता करनेवाले पितामह ने उस टूटेहुये धनुष को छोड़कर और देवदूत के वचन को याद करके उसके मारने में मन को प्रवृत्त किया, इसके पीछे आपके पिता महारथी शीघ्रता करनेवाले देवव्रत भीष्म ने दूसरे धनुषको लेकर उस इन्द्रायुद्ध के समान प्रकाशित धनुष को क्षणमात्र में ही तैयार किया फिर हे भरतवंशियो में श्रेष्ठ! फिर आपके पिता भीष्मजी उन भीमसेन आदि पुरुषोत्तमों से चाहाहुआ उस महारथी श्वेतको देखकर उसके मारनेमें प्रवृत्तहुए, इसके पीछे प्रतापवान् महारथी भीमसेन ने उस गिरते हुए सेनापति भीष्म को देखकर साठ बाणों से घायल किया फिर तो आपके पिता देवव्रत ने भी युद्ध के बीच अपने घोरबाणों से अभिमन्यु आदि सब महारथियों को रोंककर, उसी युद्ध में गुप्तग्रन्थीवाले तीन बाणों से श्वेत को घायल किया और एकसौ तीन बाणों से सात्यकी को और बीस बाणों से धृष्टद्युम्न को और पांच बाणों से केकय को और बहुत से बाणसमूहों से शेष राजाओं को घायल करके रोक दिया जब सब रुकगये तब श्वेतके सम्मुख दौड़े तिस पीछे भीष्मजी ने मृत्युके समान कठिनता से आधर्ष होनेवाले बाण को तरकस से खैंचकर चढ़ाया, उस ब्रह्मअस्त्र से युक्त वज्र को भी काटनेवाले बाण को देवता, गन्धर्व, पिशाच, सर्प और राक्षसों ने देखा वह बाण अग्नि के समान प्रकाशित और महावज्र के समान ज्वलित श्वेत के कवच को काटकर उसकी नाभि में ऐसे समागया जैसे अस्तगत होता हुआ सूर्य शीघ्र अपने प्रकाश को लेकर चलाजाता है, इस रीति से वह बाण श्वेत के जीवन को लेकर गया हमने इस प्रकार से युद्ध में उस नरोत्तम को भी भीष्म के हाथ से मरा हुआ पृथ्वी पर गिरता हुआ ऐसा देखा जैसे पर्वत से गिरता हुआ शिखर होता है उस स्थान में पाण्डवों को आदिले जो महारथी थे वह सब उसे देखकर युद्ध करने से बन्द हुये और आपके पुत्रों समेत सब कौरव प्रसन्न हुये, तदनन्तर हे राजन्! दुश्शासन श्वेत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को गिरा हुआ देखकर, बड़े बड़े बाजों के घोर शब्दों को करके चारों ओर को घूमने लगा युद्ध में शोभा पानेवाले भीष्मजी के हाथ से उस बड़े धनुषधारी के मरनेपर शिखण्डी आदि रथी अत्यन्त कम्पायमान हुए हे राजन्! इस सेनापति के मरनेपर अर्जुन और श्रीकृष्णजी ने भी सब रीतियों से धीरे धीरे युद्ध का विश्राम किया, तदन्तर आपके पुत्रों के और पाण्डवों के गर्जने और प्रसन्न होनेपर दोनों सेनाओं का विश्राम हुआ; हे शत्रुसन्तापिन्, धृतराष्ट्र! महारथी पाण्डव कौरवों के घोर मरण को शोचते उदास मन होकर स्थित हुये ॥११७॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्वेतवधे अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

उनचासवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि हे तात! युद्ध में दूसरों के हाथ से श्वेत सेनापति के मरने पर पाञ्चालों ने पाण्डवों के साथ क्या किया? हे संजय! युद्ध में गिराये हुये सेनापति श्वेत को और उसके लिये उपाय करनेवाले वा अहंकार करनेवाले दूसरों को भी विजय करने के वचनों को सुनकर मेरा चित्त प्रसन्न होता है और मानसी पापों को भी विचारता हुआ मेरा मन लज्जायुक्त नहीं होता है हे संजय! पाण्डवलोग विराट के घरमें जाके बड़े सुखपूर्वक रहे थे उस विराट के दोनों पुत्रों को युद्धमें मरवाडाला इससे उनको कुछ लज्जा भी आई या नहीं आई अब हमारे विचार को तुम सत्य सत्य सुनो कि अब महाअनर्थ का मूल उत्पन्न हुआ कि इसी श्वेत के मरने के हेतु से पारथ और भीमसेन महाक्रोध में होकर अनेक वीरों को मारकर इस पृथ्वी को रुधिर से भरदेंगे देखो इस दुर्योधन को हमने गांधारी ने श्रीकृष्णजी ने और कृपाचार्य, भीष्मजी, द्रोण, बलराम, विदुर, व्यास इत्यादि अनेक गुरु इष्टमित्रों ने समझाया परन्तु इस निर्बुद्धि ने किसी का भी कहना नहीं माना और सब पाण्डवों के भी मन में परस्पर स्नेह रखने की ही इच्छा थी तो भी दुर्योधन ने हठ करके इस संग्राम को रचा, देखिये अब ईश्वर क्या करता है हे संजय! वह पापकर्मी दुर्योधन कर्ण और शकुनि के मत में नियत होकर दुश्शासन का साथी बनके पाण्डवों की निन्दा करने लगा मैं उसका फल उसके घोर दुःख का होना अवश्य वर्त्तमान देखता हूं श्वेत के नाश होने से महाक्रोधरूप होकर अर्जुन ने भीष्मजी के विजय करने का हेतु श्रीकृष्णजी से क्या विचार किया अर्जुन ही से मुझको बड़ा भय है हे तात! वह मेरा भय दूर नहीं होता है, वह संसार के सब पदार्थों को

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विजय करनेवाला कुन्ती का पुत्र अर्जुन अत्यन्त हस्तलाघवता करनेवाला प्रतापी शूर है मैं निश्चय जानता हूं कि वह बाणों से शत्रुओं के शरीरों को मर्दन करेगा, उस इन्द्र के पुत्र और इन्द्र के छोटे भाई के बराबर युद्ध में विष्णु के समान क्रोध और संकल्प में सफलवाले अर्जुन को देखकर तुम सब लोगों का कैसा चित्त होता है, वह शूरवीर वेदज्ञ और प्रताप में सूर्य और अग्नि के समान इन्द्र के अस्त्रों का ज्ञाता बड़ा बुद्धिमान् युद्ध में कुशल महाविजयी युद्ध करने को उपस्थित, जो वह कुन्ती का पुत्र महारथी वज्र के समान स्पर्शवाला रूपवाले अस्त्रों को शत्रुओं के ऊपर चलानेवाला है, हे संजय ! उस द्रुपद के पुत्र बड़े ज्ञानी बलवान् धृष्टद्युम्न ने युद्ध में श्वेत के मरने पर क्या किया पूर्व समय के अपराधों से और श्वेत के मारेजाने से मैं मानता हूं कि महात्मा पाण्डवों का हृदय क्रोध से अग्निरूप होगया मैं रात्रि दिन उनके क्रोधों को शोचता हुआ दुर्योधन के कारण शान्ति को नहीं पाता हूँ, इसके सिवाय यह बड़ाभारी युद्ध-कैसे हुआ ? हे संजय ! उस सबको मुझसे कहो, संजय बोले हे राजन् ! स्थिर चित्त होकर सुनो कि इसमें आपका ही बड़ाभारी अन्याय है यह दोष आपको दुर्योधन में लगाना योग्य नहीं है जैसे विना जल के नदी में पुल और अग्नि से जलते हुए घर में पानी के निमित्त कुएँ का खोदना निरर्थक है, उसी प्रकार की आपकी बुद्धि है, हे भरतवंशिन् ! दिन में तीसरी लड़ाई के प्रारम्भ में भीष्मजी के हाथ से श्वेत सेनापति के मरजाने पर, कृतवर्मा के साथ शल्य को नियत देखकर शत्रु की सेना को मारनेवाला युद्ध में विजयरूपी कीर्ति वाला विराट का पुत्र शंख नाम शीघ्र ही ऐसा क्रोधरूप होगया जैसे कि हव्य से अग्नि की प्रचण्डता होती है वह बलवान् शंख इन्द्रधनुष के समान बड़े धनुष को टंकारकर मद्रदेश के राजा के मारने की इच्छा से चारों ओर को बड़े बड़े रथों से रक्षित होकर सम्मुख दौड़ा और बड़े बाणों की वर्षा करता हुआ शल्य के रथ के समीप आया उस मतवाले हाथी के समान पराक्रमी शंखको आता हुआ देखकर मृत्यु के मुख में फँसे हुए राजा मद्र की रक्षा करने के लिये तुम्हारे पुत्रों के साथ इन रथियों ने उसको चारों ओर से रोका, कौशल, बृहद्बल, जयत्सेन, मागध उसी प्रकार शल्य का पुत्र रुक्म, रथविन्द, अनुविन्द और आवन्तिका के राजा लोग सुदक्षिण, कांबोज, बृहच्छत्र का [illegible]त्र जयद्रथ सिंधु का राजा इन सब लोगों के धनुष नानाप्रकार की धातुओं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

से जटित ऐसे देख पड़े जैसे कि बादलों में बिजली दिखाई देती है, उन वीरों ने बाणरूप वर्षा शंख के मस्तक पर ऐसी करी जैसे कि वर्षाऋतु में वायु से प्रकट बादल आकाशी जल को बरसाते हैं, इसके पीछे बड़ा धनुषधारी सेनापति शंख महाक्रोधित होकर उन लोगों के धनुषों को अपने सात भल्लों से काटकर महाध्वनि से गर्जा, तदनन्तर महाबाहु भीष्मजी बादल के समान गर्जते तालवृक्ष के समान धनुष को लेकर उस युद्ध में शंख के सम्मुख दौड़े, उस बड़े धनुषधारी महाबली को उदयरूप देखकर पाण्डवों की सेना ऐसी भयभीत हुई जैसे कि वायु के वेग से टक्कर खाई हुई नौका डामाडोल होती है, उस युद्ध में अर्जुन भी यह शोचकर शंख के आगे चलनेवाला हुआ कि अब यह भीष्मजी से रक्षा करने के योग्य है युद्ध में लड़नेवाले युद्धकर्त्ताओं का बड़ा हाहाकार हुआ तदनन्तर गदाधारी शल्य ने बड़े रथ से उतरकर शंख के चारों घोड़ों को मारा वह मृतक घोड़ों के रथ से शीघ्र ही उतरकर खड्ग लेकर दौड़ा और अर्जुन के रथ को पाकर फिर शान्त होगया इसके अनन्तर भीष्मजी के रथ से शीघ्र ही बाण ऐसे उछलने लगे जिनसे पृथ्वी और आकाश व्याप्त हो गये, प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने बाणों से पाञ्चाल, मत्स्य, केरल और प्रभद्रक नाम अनेक वीरों को गिराया, हे राजन्! भीष्मजी युद्ध में अर्जुन को छोड़कर सेना समेत बहुत बाणों को फेंकते हुए अपने प्यारे समधी पांचाल द्रुपद के सम्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि चैत्र वैशाख के महीने में वन का जलानेवाला अग्नि दौड़ता है द्रुपद की सेना बाणों से भस्म हुई देखपड़ी और भीष्मजी अग्नि के समान दिखाई दिये, जैसे कि मध्याह्न के समय संतप्त करनेवाले महाप्रचण्ड सूर्य के देखने को लोग असमर्थ होते हैं उसी प्रकार पाण्डवों के युद्ध में भीष्मजी के देखने को कोई समर्थ नहीं हुआ, पाण्डव लोगों की सेना भय से पीड़ित होकर चारों ओर को अपना कोई रक्षक ऐसे नहीं देखती थी जैसे कि जाड़े से दुःखी गौएँ अपना कहीं रक्षक नहीं देखतीं, हे राजन् ! फिर वह युधिष्ठिर की सेना भीष्मजी के बाणों से ऐसी पीड्यमान हुई जैसे कि सिंह से भयभीत हुई श्वेत गौएँ, हे भरतवंशिन् ! सेना के मरने भागजाने साहस छोड़ने और मर्दन होने पर पाण्डवों की सेना में बड़ा हाहाकार हुआ, फिर सदैव मण्डलरूपी धनुषधारी भीष्मजीने विष में बुझे हुए सर्प के समान तीक्ष्णबाणों को छोड़कर अपने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बाणों से सब ओर की सफ़ाई करके रथियों को तिष्ठ तिष्ठ शब्द करके मारा, जब सेना के इधर उधर भगने और मर्दन होने वा सूर्य के अस्त होने पर कुछ नहीं जाना गया तब तो पाण्डवों ने उस महायुद्ध में भीष्मजी को अग्नि बरसाता हुआ देखकर सेना का विश्राम किया ॥ ५३ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि प्रथमदिवसयुद्धवर्णनं नाम एकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९ ॥

पचासवां अध्याय।

संजय बोले हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! उस प्रथम दिन में सेना के मनुष्यों के विश्राम करने और युद्ध में भीष्मजी के क्रोधरूप होने अथवा दुर्योधन के प्रसन्न होने पर, धर्मराज युधिष्ठिर ने सब भाइयों और राजाओं समेत जनार्दनजी के पास जाकर, बड़े शोकयुक्त होकर अपनी पराजय को शोच भीष्मजी के पराक्रम को देखकर श्रीकृष्णजी से कहा कि हे श्रीकृष्णजी! इस बड़े धनुषधारी भयानक पराक्रमी भीष्मजी को देखिये कि यह बाणों के मारे मेरी सेना को ऐसे भस्म किये डालते हैं जैसे कि ऊष्मऋतु में अग्नि वन और वन की सूखी घास को, हव्य भोजन करनेवाली अग्नि के समान मेरी सेना को चाटनेवाले इस महात्मा की ओर देखने को भी हम कैसे समर्थ होसक्ते हैं, इसी धनुषधारी महाबली पुरुषोत्तम को देखकर बाणों से महाव्या-कुल हमारी सब सेना इधर उधर को भाग गई, युद्ध में क्रोधाग्निरूप यमराज वा वज्रधारी इन्द्र वा पाशधारी वरुण वा गदाधारी कुबेर को भी चाहैं विजय करना संभव है परन्तु महाबाहु अति पराक्रमी भीष्मजी को विजय करना असंभव है सो मैं ऐसी दशा में भीष्मरूपी अथाह जल में विना नौका के डूबा जाता हूँ, हे श्रीकृष्णजी! मैं अपनी बुद्धि की निर्बलता से भीष्मजी के सम्मुख होकर वन को चला जाऊंगा अथवा हे वृष्णिवंशिन्! मेरे जीवन में कल्याण नहीं है, परन्तु इन राजाओं को भीष्मरूपी मृत्यु के वश करने को मैं योग्य नहीं हूँ हे श्रीकृष्णजी! महाबली भीष्मजी मेरी सेना को नाश कर डालेंगे जैसे कि पतंग ज्वलित अग्नि की ओर दौड़ते हुए अपने नाश के निमित्त जाते हैं इसीप्रकार मेरी सेना के मनुष्य भीष्मजी की ओर को जानेवाले हैं, [illegible]जा के निमित्त मैं पराक्रम करनेवाला नाश होता हूं और मेरे वीर भाई लोग [illegible]ी बाणों से पीड़ित होकर महा दुर्बलांग हैं, वह मेरे कारण अथवा भाई विरा-[illegible]ी की शुभचिन्तकता के कारण अपने राज्यसुखों को त्यागनेवाले हुए मैं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जीवन को बहुत मानता हूं, अब जीवन होना कठिन विदित होता है, शेष जीवन से तपस्या करूंगा। हे केशवजी! मैं युद्ध में इन मित्रों को नहीं मरवाऊंगा, महाबली भीष्मजी अपने दिव्य अस्त्रों से मेरे हजारों उत्तम शूरवीर रथियों को बराबर मारते हैं, सो आप शीघ्रता से कृपा करके बतलाइये कि कैसे मेरा कल्याण हो मैं इस युद्ध में अर्जुन को भी उदासीन के समान देखता हूं यह महाबाहु अकेला भीमसेन क्षत्रिय धर्म को स्मरण करता केवल भुजाबल के द्वारा बड़ी सामर्थ्य से लड़ता है, यह बड़ा साहसी अपने साहस के अनुसार वीरों की मारनेवाली गदा से रथ, घोड़े, हाथी और मनुष्यों के मध्य में कठिन कर्म को करता है, हे श्रेष्ठ! वह वीर सत्ययुद्ध के द्वारा वर्षों में भी शत्रु की सेना के नाश करने को समर्थ नहीं है, यह आपका एक मित्र अस्त्रों का जानने वाला है वह भी महात्मा द्रोणाचार्य और भीष्मजी के हाथ से बराबर भस्मीभूत होता हुआ हम लोगों को कुछ नहीं समझता है महात्मा भीष्मजी और द्रोणाचार्य के बारम्बार चलाये हुए दिव्य अस्त्र सब क्षत्रियों को जलाते हैं हे कृष्णजी! निश्चय करके क्रोध रूप भीष्मजी सब राजाओं समेत हमको मारेंगे ऐसा इनका पराक्रम है, हे योगेश्वर! तुम उस महाभाग महारथी को देखो और विचारो जो युद्ध में भीष्मजी को ऐसे शान्त करे जैसे बादल दावानल अग्नि को, हे गोविन्दजी! आपकी कृपा से नाशवान् पाण्डव शत्रुओं से और अपने राज्य से मिले हुए बांधवों समेत आनन्द करेंगे, तदनन्तर बड़ा साहसी युधिष्ठिर इसप्रकार की बातें कहकर शोक से पीड़ितचित्त देरतक मन को हृदय में नियत करके ध्यान करता हुआ बैठा, फिर गोविन्दजी पाण्डवों को दुःख-शोक से पीड़ित और उदासरूप देखकर सब पाण्डवों को प्रसन्न करते हुए यह वचन बोले, हे भरतवंशियों में उत्तम! तू शोच मतकर और तू शोच करने के योग्य नहीं है क्योंकि तेरे भाई तो महाशूरवीर हैं और वह सब संसार में विख्यात हैं, हे राजन्, धर्म! मैं और महारथी सात्यकी, विराट, द्रुपद, धृष्टद्युम्न आपके मनोरथ पूर्ण करनेवाले हैं, हे राजेन्द्र, युधिष्ठिर! इसीप्रकार सब राजा लोग अपनी अपनी सेना समेत तेरी प्रसन्नता की ही बाट देखते हैं और आपके परम भक्त हैं, सदैव भलाई चाहनेवाले आपके प्यारे, प्रीतिमान् महारथी धृष्टद्युम्न ने सेनाध्यक्षी के अधिकार को पाया, निश्चय करके यह महाबाहु शिखण्डी भीष्म का नाश करनेवाला है राजा युधिष्ठिर कृष्ण के यह वचन सुनकर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उसी सभा में वासुदेवजी के आगे धृष्टद्युम्न से बोला कि हे धृष्टद्युम्न ! जो मैं आपसे कहता हूं उसको अच्छी रीति से समझो वह मेरा वचन उल्लङ्घन करने के योग्य नहीं है आप वासुदेवजी के विचार से मेरी सेना के सेनापति हो, पूर्व समय में जैसे कार्त्तिकेय अर्थात् स्वामिकार्त्तिक देवताओं की सेना के सेनापति हुए इसीप्रकार से आप पाण्डवों के सेनापति हूजिये, हे पुरुषोत्तम ! तुम अपने पराक्रम को करके कौरवों को मारो और बड़भागी मैं वा भीमसेन और श्रीकृष्णजी तेरे पीछे चलेंगे, एक साथ दोनों नकुल और सहदेव और द्रौपदी के शस्त्रधारी पुत्र और अन्य सब राजा लोग भी तुम्हारे साथ पीछे पीछे चलेंगे यह सुनकर धृष्टद्युम्न सबको प्रसन्न करके बोला कि हे राजन् ! पहले समय में शिवजी की ओर से मैं द्रोणाचार्य के नाश करनेवाला नियत हुआ था इसी हेतु से हे राजन् ! अब मैं इस युद्ध में भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, शल्य और जयद्रथ आदि सब अहंकारियों से अवश्य लड़ूंगा तदनन्तर शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्न के अच्छी रीति से सन्नद्ध होने पर युद्ध में आकर महादुर्मद और धनुषधारी पाण्डवों ने उच्चस्वर से शब्द किया, फिर युधिष्ठिर ने सेनापति धृष्टद्युम्न से कहा कि सब शत्रुओं का नाश करनेवाला क्रौंचारुण नाम व्यूह जिसको देव, दानवों के युद्ध में बृहस्पतिजी ने देवेन्द्र से कहा था उसी शत्रुहन्ता व्यूह को आप विधि के अनुसार रचो, उस अपूर्व व्यूह को राजाओंसमेत कौरव लोग देखें धृष्टद्युम्न से राजा धर्मराज ने इसप्रकार से यह वचन कहा जैसे कि वज्रधारी इन्द्र ने विष्णुजी से कहा था, प्रातःकाल के होते ही सब सेना के आगे अर्जुन को किया उस समय प्रकाशित और मन को प्रसन्न करनेवाली अपूर्व ध्वजा सूर्य के मार्ग में वर्त्तमान थी उस ध्वजा को इन्द्र की आज्ञा से विश्वकर्मा ने बनाया । इन्द्रवज्र के समान पताकाओं से अलंकृत, आकाश में गन्धर्वनगर के समान नियत थी । हे राजन् ! वह ध्वजा रथ के भ्रमण करने में नाचती हुई प्रकाशमान थी और वह युधिष्ठिर उस रत्नदान गाण्डीव धनुषधारी श्रेष्ठ पुरुष के कारण ऐसा शोभित हुआ जैसे कि सुमेरु पर्वत सूर्य से सुशोभित होता है, हे राजन् ! बड़ी सेना संयुक्त राजा द्रुपद तो शिर हुआ और कुन्तभोज और चन्देल राजा आँखें हुईं हे भरतर्षभ ! प्रभद्रक, शार्नक, अशीरक नाम समूहों के साथ अनूपक किरात ग्रीवा में वर्त्तमान हुआ, और राजा युधिष्ठिर पटश्चर पौंडर नाम कौरवों के निषादों के साथ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पीछे को हुआ, और भीमसेन पर्षत का पौत्र (धृष्टद्युम्न) द्रौपदी के पुत्र वा अभिमन्यु और महारथी सात्यकी पक्ष बने, और कुण्डी व ऋषियों समेत पिशाच, दारद, पौण्ड्र, यवन, धेनुक, तंगण, परतंगण, बाह्लीक, तित्तिर, चोल, पाण्ड्य इन देशों के निवासी दक्षिण पक्ष में नियत हुए, अग्निवेश्य, गजतुण्ड, मलद, आश्कारव, शबर, कुम्भस, मालुकों समेत वत्स, नकुल, सहदेव यह सब बायें पक्ष में नियत हुए, रथों का एक अर्बुद पक्ष हुआ और इसी प्रकार रथों का एक नियुत शिर हुआ और एक अर्बुद और बीस हजार की पुष्ठ हुई और नियुत सत्तर हज़ार ग्रीवा में हुए, हे राजन्! ऐसे पक्षीरूपी व्यूह के आगे वा पक्ष और पूंछ के स्थानों पर चलनेवाले पर्वतों के समान चारों ओर से रक्षा करते हुए हाथी चले, राजा विराट ने केकय लोगों के साथ और काशीराज शैवी ने तीन अयुत रथों के साथ जघन स्थान की रक्षा की। हे राजन्! वह सब पाण्डव इस प्रकार से इस बड़े उत्तम व्यूह को रचकर बड़ी सज धजके साथ शस्त्रों को धारण किये सूर्योदय को चाहते हुए युद्ध के निमित्त नियत हुए, उन लोगों के छत्र जो सूर्यवर्ण निर्मल और अत्यन्त श्वेतरूप थे वह हाथी और रथों के ऊपर दिखाई दिये ॥ ५९ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि क्रौंचव्यूहनिर्माणे पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ।

संजय बोले हे श्रेष्ठ, भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र! इसके अनन्तर आप का बड़ा बेटा बड़े तेजस्वी पाण्डवों के रचेहुए घोर और अभेद्य महाव्यूह को देखकर आचार्य द्रोणाचार्यजी के पास जाकर कृपाचार्य, राजा शल्य, सोमदत्त, विकर्ण, अश्वत्थामा, दुश्शासन आदि सब भाइयों और युद्ध के निमित्त समीप आये हुए अन्य बहुत से राजाओं को, समय पर प्रसन्न करता हुआ यह वचन बोला कि तुम सब नानाप्रकार के शस्त्रधारी और अस्त्रों के अर्थ में पण्डित हो, आप सब महारथी एक ही युद्ध में पाण्डवों के मारने में समर्थ हो तो साथियों के मिले हुए होने से क्यों नहीं समर्थ होगे, हमारी सब सेना भीष्म आदि की रक्षा से अजेय है और वह उनकी सेना भीम आदि से रक्षित पराजय होने के योग्य है, संस्थान, विकर्ण, शूरसेन, कुकुट, रेचक, त्रिगर्त्त, मद्रक, यवन, शत्रुंजय, दुश्शासन, बड़े वीर विकर्ण, नन्द, उपनन्द, मणिभद्रकों समेत चित्रसेन सेना के मनुष्यों समेत सम्मुख होकर भीष्म की रक्षा करो, हे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रेष्ठ ! इसके पीछे आपके पुत्रों ने पाण्डवों के रोकने के लिये बड़ेभारी व्यूह को रचा, भीष्मजी तो चारों ओर को सेना से रक्षित देवराजके समान बड़ी सेना समेत चले, और बड़े धनुषधारी प्रतापी भारद्वाज द्रोणाचार्य जी कुन्तल मागध और दशार्ण के साथ भीष्मजी के साथ चले और विदर्भ मेकल कर्ण प्रावरण भी सब सेना समेत भीष्मजी के ही साथ चले; गान्धार, सिन्धु, सौवीर, शैब्य, विशातय और शकुनी ने सेना समेत भारद्वाज द्रोणाचार्य जी को रक्षित किया, तदनन्तर राजा दुर्योधन और सब सगे भाई अश्वातक, विकर्ण, वामन, कोसल, दरद, वृक और बालव लोगों के साथ क्षुद्रक, पाण्डव लोगों की सेना के सम्मुख दौड़ा। हे राजन् ! भूरिश्रवा, शैल, शल्य, भगदत्त, और बिन्द, अनुबिन्द और अवन्ति देश के राजालोगों ने बायें भाग को रक्षित किया, सोमदत्ति, सुशर्मा, काम्बोज, सुदक्षिण, शतायुष, श्रुतायु यह सब दक्षिण ओर नियत हुए; अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कृतवर्मा, यादव यह सब बड़ी सेना समेत पीछे की ओर को नियत हुए, उसके पीछे से रक्षक अनेक देशों के राजा केतुमान, बसुदान और काशी के राजा का पुत्र इत्यादि हुए, हे भरतवंशिन् ! इसके अनन्तर आपके उन सब पुत्रों ने जोकि युद्ध के लिये बहुत प्रसन्न चित्त थे शंखों को बजाकर सिंहनादों को किया, कौरवों के वृद्ध पितामह प्रतापवान् भीष्मजी ने उन प्रसन्न चित्तों के सिंहनादों को सुनकर बड़े शब्द से सिंहनाद करके अपने शंख को बजाया तदनन्तर दूसरी ओर के शंख भेरी आदि अनेक बाजे चारों ओर से बजे और तुमुलशब्द हुआ तिस पीछे श्वेत घोड़ों से युक्त बड़े रथपर वर्त्तमान श्रीकृष्णजी और अर्जुन ने, सुवर्ण और रत्नों से जटित उत्तम शंखों को बजाया फिर इन्द्रियों के स्वामी जगदात्मा श्रीकृष्णजी ने तो पांचजन्य नाम शंख को और अर्जुन ने देवदत्त नाम अपने शंख को बजाया, और भयकारी भीमसेन ने पौण्ड्र नाम महाशंख को बजाया और कुन्ती के पुत्र राजा युधिष्ठिर ने अनन्त विजय नाम शंखको बजाया और नकुल सहदेव ने सुघोष और मणिपुष्पक नाम शंख को बजाया और शैब्य काशिराज और महारथी शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, विराट, महारथी सात्यकी बड़ा धनुर्धर पांचाल द्रुपद और द्रौपदी के पांचों पुत्रोंने सिंहनाद को करके अपने महाशंखों को बजाया सब वीरोंने अच्छे प्रकार उत्तम शब्द किये, तुमुलशब्द से आकाश और पृथ्वी शब्दायमान होगई हे महाराज ! इस

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रीति से यह कौरव और पाण्डव परस्पर में संतप्त करते हुए फिर युद्ध के निमित्त गये ॥ २६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि एकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

बावनवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय! इस रीति से मेरे पुत्र और पाण्डवों की सेना के व्यूह रचने पर प्रहार करनेवालों में उत्तम शूरों ने परस्पर में कैसे कैसे प्रहार किये, संजय बोले कि इस रीति से सेना के व्यूहित होनेपर समुद्ररूप सेना को अपार देखते हुए उन वीरों के कवच तैयार हुए जिनकी ध्वजा महासुन्दर और मनोहर थीं, हे राजन्! उन सबमें नियत होकर आपका पुत्र दुर्योधन आपके सब पुत्रों को बुला के कहने लगा कि तुम सब शस्त्रधारण करके युद्ध को करो वह जीवन को त्यागे हुए ध्वजा को ऊंची करनेवाले सब मनसे निर्दयरूप होकर पाण्डवों के सम्मुख लड़ने को उपस्थित हुए तदनन्तर आपके पुत्र और दूसरोंका युद्ध जिसमें रथ और हाथी संयुक्त थे रोमहर्षण और तुमुल शब्दों से व्याप्त हुआ, सुवर्णपंख और अत्यन्त प्रकाशित और तीक्ष्ण बाण रथी लोगों के हाथों से छूटे हुए हाथी और घोड़ों पर गिरे इसीप्रकार युद्ध प्रारम्भ होने पर भयकारी पराक्रमी शस्त्रधारी पितामह भीष्मजी ने धनुष को उठाये हुए सम्मुख आकर, महारथी अभिमन्यु, भीमसेन, अर्जुन, केकय, विराट, धृष्टद्युम्न, चेदि, मत्स्य, विभु इन नौ वीरों पर बाणों की वर्षा की, उस बड़े वीर के सम्मुख बड़ी सेना अत्यन्त कम्पायमान हुई और सब सेना के लोगों को बड़ा खेद उत्पन्न हुआ, और वह अत्यन्त उत्तम घोड़ों के रथों के सवार मारे गये जिनकी सेना हट गई थी ऐसे अकेले पाण्डव वर्त्तमान हुए नरों में उत्तम क्रोधरूप अर्जुन महारथी भीष्मको देखकर श्रीकृष्णजी से बोले वहाँ चलो कि जहाँ पितामह हैं, हे वृष्णि-वंशिन्! यह निश्चय है कि यह अत्यन्त क्रोधरूप भीष्म दुर्योधन के अभीष्ट में प्रवृत्त मेरी सेना को अवश्य मारेंगे, हे जनार्दनजी! यह द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, शल्य, विकर्ण और सब धृतराष्ट्र के पुत्र जिनमें अग्रगामी दुर्योधन है, वह सब धनुषधारियों से रक्षित होकर पांचाल देशियों को मारेंगे सो हे जनार्दनजी! मैं भी सेना समेत भीष्मजी को मारूंगा, वासुदेवजी बोले कि हे अर्जुन! सावधान हो मैं तुझको अभी पितामह के रथके पास पहुँचाता हूँ, हे राजन्! ऐसा कहकर वासुदेवजी ने उसको शीघ्र ही भीष्मजी के रथके पास पहुँचाया, वह पाण्डव

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अर्जुन बगले के समान श्वेत घोड़ों के रथ पर सवार बड़ी ऊंची प्रकाशमान ध्वजा को फहराता बड़े बादल के समान गरजता हुआ सूर्य के समान प्रकाशित रथ के द्वारा कौरवों की सेना और शूरसेनों को संहार करता हुआ, मित्रों के उत्साहों का बढ़ानेवाला शीघ्र ही युद्धभूमि में आया उस मदोन्मत्त हाथी के समान महावेगयुक्त आते हुए युद्ध में शूरों को कँपाते और अपने बाणों से प्रहार करके गिराते हुए अर्जुन को देखकर पूर्वी सौवीर, केकय, जयद्रथ और सिन्धु आदि के राजाओं से रक्षित, भीष्मजी एकाएकी सम्मुख वर्त्तमान हुये कौरवों के पितामह भीष्म द्रोणाचार्य और कर्ण के सिवाय दूसरा कौन रथी है जो गाण्डीवधनुषधारी अर्जुनके सम्मुख जासके तदनन्तर हे महाराज! कौरवों के पितामह भीष्मजी ने तो सतत्तर बाणोंसे अर्जुन को खूब पीड्यमान किया और द्रोणाचार्य व कृपाचार्य ने पच्चीस २ बाणों से दुर्योधन ने चौंसठ बाणों से शल्य ने नौ बाणों से और नरोत्तम अश्वत्थामा ने साठ बाणों से विकर्ण ने तीन बाणों से और आर्त्तायनि ने तीन भल्लबाणों से पाण्डव अर्जुन को खूब घायल किया वह महाबाहु अर्जुन उनके चारों ओर की बाणवृष्टि से पर्वत के समान आच्छादित और घायल भी होकर पीड्यमान नहीं हुआ फिर उस नरोत्तम अर्जुन ने भीष्मजी को पचीस बाणों से कृपाचार्य को नौ बाणों से द्रोणाचार्य को साठ बाणों से विकर्ण को तीन बाणों से आर्त्तायनि को भी तीन बाणों से और राजा दुर्योधन को भी पांच बाणों से घायल किया, जो कि अर्जुन बड़ा साहसी और मुकुटधारी था तो भी हे भरतर्षभ! सात्यकी, विराट, धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पांचो पुत्र और अभिमन्यु इन सबने आनकर अर्जुन को चारोंओर से रक्षित किया तदनन्तर राजा द्रुपद भीष्म के अनभीष्ट में प्रवृत्त द्रोणाचार्य को सम्मुख उपस्थित हुआ फिर रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने शीघ्र ही पाण्डव अर्जुन को, तीक्ष्ण अस्सी बाणों से घायल किया उससे आपके पुत्र प्रसन्न हुये तदनन्तर रथियों में उत्तम प्रतापी अर्जुन उन प्रसन्नचित्तों की गर्जना को सुनकर बड़े प्रसन्न चित्त के समान सेना में घुसा हे राजन्! वह अर्जुन उन उत्तम रथियों के मध्य को पाकर महारथियों को चिह्नित करके धनुष लिये हुये घूमने लगा तदनन्तर राजा दुर्योधन युद्ध में अपनी सेना को अर्जुन के हाथ से पीड्यमान देखकर भीष्म से बोला हे तात! यह बलवान् पाण्डव श्रीकृष्णजी के साथ सब

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सेनाओं को मारता गिराता हुआ रथियों में श्रेष्ठ गाङ्गेय और द्रोणाचार्य के जीवते होनेपर हमारे मूलको काटे डालताहै हे राजन्! आप ही के कारण सदैव मेरा हित चाहनेवाला यह कर्ण भी बेसलाह होकर युद्ध में पाण्डवों से नहीं लड़ता है ३७ हे भीष्मजी! सो तुम ऐसाही करो जिससे अर्जुन नाश को पावे तदनन्तर हे राजन्! इस प्रकार कहेहुये आपके पिता देवव्रत भीष्मजी क्षत्रिय धर्म को धिक्कार है ऐसा शब्द कह कर अर्जुन के रथ के समीप आये हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! राजाओं ने उन दोनों महाबलो श्वेत घोड़ोंवालोंको मिलाहुआ देखकर, अत्यन्त सिंहनादकर शंखों को बजाया अश्वत्थामा और आपका पुत्र दुर्योधन और विकर्ण यह सब युद्ध में भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित करके युद्ध के निमित्त नियत हुये और हे राजन्! इसी प्रकार से सब पाण्डव लोग अर्जुन को चारों ओर से घेरकर बड़े युद्ध करने के निमित्त नियत हुये इसके पीछे युद्ध प्रारम्भ हुआ फिर गङ्गापुत्र भीष्मजी ने युद्ध में नव बाणों से अर्जुन को घायल किया, फिर अर्जुन ने मर्मभेदी दश बाणों से उनको घायल किया, तदनन्तर युद्ध में प्रशंसनीय पाण्डव अर्जुन ने अच्छे प्रकार से चलाये हुये हज़ार बाणों से भीष्मजी की दिशाओं को रोका, तदनन्तर भीष्मजी ने अपने बाणों से अर्जुन के उन बाणों के जालों को रोका, दोनों युद्ध में प्रसन्नचित्त और उत्साह माननेवाले प्रहार के बदले प्रहार करने की इच्छावाले युद्ध में अतिशयतापूर्वक प्रवृत्त हुये, भीष्मजी के धनुषसे छूटे हुये बाणजालों के समूह अर्जुन के बाणों से कटे हुये देखपड़े, इसी प्रकार अर्जुन के छोड़े हुये बाणजाल भीष्मजी के बाणों से टूट-टूटकर पृथ्वीपर गिरपड़े फिर अर्जुन ने पचीस तीक्ष्ण शरों से भीष्मजी को व्यथित किया, भीष्मजी ने भी नव बाणों से अर्जुन को घायल किया वह दोनों महाबली शत्रुओं के जीतनेवाले युद्ध में घोड़ों को और रथों को परस्पर घायल करके, क्रीड़ा करनेवाले होगये तदनन्तर हे राजन्! महाक्रोधरूप महाप्रहारी भीष्मजी ने, तीन बाणों से वासुदेवजी को स्तनान्तर में घायल किया, उन भीष्मजी के धनुष से निकले हुये बाणों से घायल मधुसूदनजी, युद्ध में फूले हुये किंशुक वृक्ष के समान शोभायमान हुये तदनन्तर माधवजी को घायल देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर अर्जुन ने भी भीष्म के सारथी को तीन बाणों से घायल किया तब युद्ध में एक दूसरे के रथ पर उपाय करनेवाले दोनों वीर, परस्पर में गिराने को समर्थ नहीं हु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फिर उन्होंने सूत के बल की तीव्रता से वारंवार विचित्र मण्डलों को दिखला कर, अवकाश के मार्ग देखने में नियत दोनों वीरों ने वारंवार प्रहारों के बीच में अवकाश को तकते हुये सिंहनादपूर्वक शंखों के शब्दों को किया और इसी प्रकार दोनों महारथियों ने धनुषों के भी शब्दों को किया, उन दोनों के शब्दों से और रथों के शब्दों से अकस्मात् पृथ्वी फटगई और कम्पायमान होकर शब्दायमान भी हुई हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! उन दोनों के अन्तर को किसी ने भी नहीं देखा, दोनों युद्ध में बलवान् शूरवीर परस्पर में समान थे वहां कौरव लोग केवल चिह्नों को देखकर भीष्मजी के पास गये, इसी प्रकार पाण्डवों ने भी केवल चिह्न ही मात्र से अर्जुन को पाया हे राजन्, धृतराष्ट्र! उन दोनों नरोत्तमों के उस महापराक्रम को देखकर युद्ध में सब जीवमात्रों ने आश्चर्य किया और कोई भी उन दोनों के अन्तर को ऐसे नहीं देख सक्ता था जैसे कि धर्मवान् पुरुष का कोई पाप कहीं दिखाई नहीं देता वह दोनों बाणजालों से गुप्त होगये इसके पीछे दोनों शीघ्र ही प्रकट होगये वहां गंधर्वों समेत देवताओं ने और महर्षियों समेत चारण लोगों ने इन दोनों के पराक्रम को देखकर परस्पर में वार्त्तालाप करी कि यह युद्ध में क्रोधरूप दोनों महाबली देवता असुर और गन्धर्वों से भी किसी दशा में लोक में जीतने के योग्य नहीं है यह बड़ाभारी अपूर्व युद्ध इसलोक में हो रहा है ऐसा युद्ध कभी नहीं होगा, धनुष, रथ और घोड़ों समेत युद्धभूमि में शायकों को छोड़ते हुये भीष्मजी को युद्ध में बुद्धिमान् अर्जुन विजय करने के योग्य नहीं हैं इसी प्रकार युद्धमें देवताओं से भी अजेय धनुषधारी पाण्डवों की विजय करने को भीष्मजी भी उत्साह नहीं करते देखने से भी यह युद्ध बराबर का होगा, हे राजन्! भीष्म और अर्जुन की प्रशंसा के यह वचन जहां तहां फैले हुये सुने गये तदनन्तर उन दोनों के पराक्रम होने पर आपके शूरवीर और पाण्डवों ने परस्पर में युद्ध किया इसीप्रकार तीव्रधार खड्ग और निर्मल परशे बाण और अन्य-अन्य प्रकार के अनेक शस्त्रों से दोनों ओर के शूरवीरों ने परस्पर में एक ने दूसरे को प्रहार किया हे राजन्! इसी रीति से उस घोर और महा भयानक युद्ध होनेपर द्रोणाचार्य और द्रुपद की बड़ीभारी लड़ाई हुई ॥ ७२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि द्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तिरपनवां अध्याय ।

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय ! बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न दोनों बुद्धिमान् कैसे युद्धमें परस्पर सम्मुखहुये उसका वृत्तान्त मुझसे कहो, हे संजय ! मैं उद्योग से प्रारब्ध को बड़ा मानता हूं जहां युद्ध में शान्तनव भीष्मजी ने पाण्डव अर्जुन को विजय नहीं किया जो भीष्म रण में क्रुद्ध होकर सब स्थावर जंगमजीवों को भी मार सक्ता है उस महावीर ने किस हेतु से युद्ध में पराक्रम करके पाण्डव अर्जुन को नहीं मारा, संजय बोले कि हे राजन् ! तुम स्थिरचित्त होकर इस बड़े भारी भयानक युद्धको सुनो कि पाण्डव अर्जुन इन्द्रादि देवताओं से भी विजय करने के योग्य नहीं है द्रोणाचार्य ने नाना प्रकार के बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल किया और भल्लों से उसके सारथी को रथ के नीड़ से नीचे गिरा के महाक्रोधित होकर उस धृष्टद्युम्न के घोड़ों को भी चार शायकों से महापीड़ित किया, तो भी बड़े वीर धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य को नब्बे तीक्ष्ण शरों से घायलकिया और तिष्ठ-तिष्ठ शब्दोंको भी किया तदनन्तर बड़े प्रतापी द्रोणाचार्य जीने उस धृष्टद्युम्न को मारे बाणों के आच्छादित करदिया, और उसके मारने के लिये इन्द्रवज्र के समान स्पर्शवाले मृत्युदण्ड के समान घोर बाण को हाथमें लिया, हे राजन् ! उस युद्धमें द्रोणाचार्य के चढ़ाये हुये उस बाण को देखकर सब सेना में हाहाकार हुआ, उस स्थान में हमने धृष्टद्युम्न के अपूर्व पराक्रम को देखा कि अकेला ही शूरवीर युद्ध में पर्वतके समान अचल होकर नियत खड़ा रहा और उस प्रकाशित घोर मृत्युरूप आये हुए बाण को अपने बाणों से काट डाला और द्रोणाचार्य्य के ऊपर बाणों को बरसाया तदनन्तर धृष्टद्युम्न के किये हुए उस कठिन कर्म को देखकर पाण्डवों समेत पांचालदेशी लोग उच्चशब्द को पुकारे, तदनन्तर द्रोणाचार्य्य के मारने की इच्छा करनेवाले उस पराक्रमी ने बड़ी वेगवान् सुवर्ण वैडूर्यजटित महाघोर बरछी को मारा इस बरछी को आता देखकर प्रसन्नचित्त द्रोणाचार्य्यने शीघ्र ही अपने बाणों से मार्ग में काट कर गिरा दिया, हे राजन् ! तब उस धृष्टद्युम्न प्रतापी ने अपनी उग्र बरछी को कटाहुआ जान के द्रोणाचार्य के ऊपर अनेक बाणों को बरसाया, फिर महायशस्वी द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न की बाणोंकी बरसा को रोककर उसके धनुष को मध्य में से काटडाला फिर उस कटे हुए धनुषवाले महाप्रतापी ने अपनी एक भारी लोहे की गदा को फिराकर द्रोणाचार्य के ऊपर फेंका, उसके हाथकी छूटी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गदा द्रोणाचार्य के मारने को शीघ्र ही आई तो वहां हमने द्रोणाचार्य के अपूर्व पराक्रमको देखा, कि उस सुवर्णित घोरगदाको खण्ड-खण्डकरके अत्यन्त तीक्ष्ण पीतरंग सुनहरी शिलापर तीक्ष्ण कियेहुए बाणको धृष्टद्युम्न के ऊपर फेंका उस बाणने उसके कवचको काटकर उसके रुधिरको पिया, तदनन्तर बड़े वीर धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुषको लेकर युद्ध में महापराक्रम करके पांच बाणों से द्रोणाचार्य को घायल किया, तदनन्तर वह दोनों रुधिर से भरे हुये वीर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि वसंतऋतु में लाल फूलवाले किंशुक वृक्ष शोभा देते हैं, हे राजन्! तदनन्तर युद्धभूमि में महाक्रोधरूप द्रोणाचार्य ने बड़े पराक्रम से धृष्टद्युम्न के धनुष को काटकर उसको मारे बाणों के ऐसे ढक दिया जैसे बादल बरसा करके पर्वत को ढक देता है, फिर भल्लों से इसके सारथी को रथ के नीड़ से गिरा दिया और चारों घोड़ों को भी चार तीक्ष्ण बाणों से पृथ्वी पर गिरा दिया और सिंहनाद करके दूसरे बाण से इसके दूसरे धनुष को भी गिराया वह धनुष, रथ और घोड़े सारथी मृतकवाला धृष्टद्युम्न गदाको हाथमें लेकर अपनी वीरता को प्रकट करता हुआ रथ से उतरा उस समय द्रोणाचार्य ने बड़ी शीघ्रता से रथ से उतरने भी नहीं पाया था कि उसकी गदा को एक विशिख बाण से काटकर गिरादिया यह बड़ा आश्चर्यसा हुआ तदनन्तर वह सुन्दर भुजाधारी महाबली सुवर्ण की सूर्य चन्द्रमावाली बड़ी ढाल और दिव्य खड्ग को लेकर द्रोणाचार्य के मारने की इच्छासे बड़े वेगयुक्त होकर सम्मुख ऐसे दौड़ा जैसे कि मांस का चाहनेवाला सिंह वन में मतवाले हाथी के ऊपर दौड़ता है । हे राजन्! वहां हमने द्रोणाचार्य की वीरता और अस्त्रयोग से हस्तलाघवता अपूर्व प्रकार की देखी कि अकेले ने ही बाणों की बरसा करके धृष्टद्युम्न को रोक दिया तदनन्तर उस महायुद्ध में कोई महाबली भी जाने को समर्थ नहीं हुआ वहां हमने बड़े रथ के समीप नियत और बाणविद्या में कुशल के समान बाणसमूहों को ढालसे रोकते हुये धृष्टद्युम्न को देखा, तदनन्तर महाबाहु पराक्रमी भीमसेन युद्धमें महात्मा धृष्टद्युम्नकी सहायता करनेवाला अकस्मात् आकूदा, हे राजन्! उसने आतेही अकस्मात् सात बाणों से द्रोणाचार्य को घायल किया और शीघ्र ही धृष्टद्युम्न को दूसरे रथपर सवार किया, इसके पीछे राजा दुर्योधन ने बड़ी सेना समेत राजा कलिङ्ग को द्रोणाचार्यजी की रक्षा के निमित्त भेजा, तदनन्तर हे राजन्! आपके पुत्र की आज्ञा से कलिङ्ग देशियों की बड़ी भारी भयानक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सेना भीमसेन के सम्मुख आई, रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य भी धृष्टद्युम्न को छोड़ कर मिले हुए वृद्ध विराट और राजा द्रुपद से युद्ध करनेलगे और धृष्टद्युम्न भी युद्ध में धर्मराज युधिष्ठिर के पास गया तिस पीछे उस युद्धभूमि में कलिङ्ग देशियों से और महात्मा भीमसेन से महाघोर रोमहर्षण संसार का मृत्युकारी घोररूप भयानक युद्ध जारी हुआ ॥ ४१ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि द्रोणधृष्टद्युम्नयुद्धवर्णनं नाम त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

चौवनवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि उस आज्ञा पानेवाले कलिङ्ग के राजा ने अपनी सेना समेत युद्धभूमि में आकर उस अपूर्वकर्मी महाबलिष्ठ मृत्युदण्ड समान गदा हाथ में लिये वीर भीमसेन से युद्ध करने को मन किया, संजय बोले हे राजेन्द्र! इस रीति से आपके पुत्र से आज्ञा पाकर वह कलिङ्ग देश का राजा भीमसेन के रथ के पास आया, हे भरतवंशिन्! भीमसेन ने घोड़े, हाथी और रथों से युक्त उत्तम शस्त्रधारी कलिङ्गों की बड़ी सेना को चेदिदेशीय लोगों के साथ आते हुए देखकर केतुधारी निषादों के राजा को घायल किया, तदनन्तर व्यूहित सेना समेत शस्त्रों को धारण किये अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतायु केतुमान् नाम निषादों के राजा के साथ उस युद्ध में भीमसेन के सम्मुख आया, हे महाराज! कलिङ्ग देशों के राजा केतुमान् ने हज़ार रथ और दश हज़ार हाथियों और निषादों को साथ में लेकर चारों ओर से भीमसेन को घेर लिया और भीमसेन के आगे चलनेवाले चेदि, मत्स्य और करूष देशों के वासी वीर राजाओं समेत एका एकी निषादों के सम्मुख आकर वर्त्तमान हुए तिस पीछे घोररूप भयानक युद्ध जारी हुआ, फिर एका एकी परस्पर में एक दूसरे को मारने की इच्छा से दौड़ते हुए वीरों का और शत्रुओं के साथ भीमसेन का घोर युद्ध जारी हुआ, हे राजन्! जैसा कि इन्द्र का युद्ध दैत्यों की सेना के साथ होताहै इसी प्रकार हे भरतवंशिन्! युद्ध में लड़नेवाले बहुत बड़े शब्दों से गर्जना करते हुये सागर के समान हुये, हे राजन्! इसके पीछे परस्पर में प्रहार और घात करनेवाले युद्ध कर्त्ताओं ने सब पृथ्वी को मांस और रुधिर से पूरित करके शोभित किया और मारनेकी इच्छा से अपने और पराये युद्धकर्त्ताओं को नहीं पहिंचाना, फिर युद्ध में दुर्जय शूरवीरों ने अपनी सेना के लोगों को भी शस्त्रों से मारा घोड़ों का बहुतों के साथ बड़ाभारी युद्ध हुआ, हे राजन्! चेदिदेशवाले शूरवीरों का युद्ध कलि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और निषादों के संग हुआ तब चेदिदेशीय अपनी सामर्थ्य के अनुसार वीरता को करके, उस भीमसेन को त्यागकर अलग होगये चेदिदेशियों के अलग हो जाने पर सब कलिङ्गदेशियों के सम्मुख होकर पाण्डव भीमसेन अपने भुजाबल में स्थिर होकर खड़ारहा अर्थात् वह महाबली भीमसेन अपने रथ से नहीं हटा, और कलिङ्गदेशवासियों को भी अपने तीव्र बाणों से ढक दिया तब बड़े धनुषधारी कलिङ्ग के राजा और उसके पुत्र महारथी, शक्रदेव ने बाणों से भीमसेन को घायल किया तदनन्तर अपने भुजबल से रक्षित सुन्दर धनुष को हिलाते हुये महाबाहु भीमसेन ने राजा कलिङ्ग को लड़ाया और युद्ध में अनेक बाण छोड़ते हुये शक्रदेव ने भीमसेन के चारों घोड़ों को मारा फिर शक्रदेव उस शत्रुहन्ता भीमसेन को विरथ देखकर अपने तीक्ष्ण बाणों से ढकता हुआ उसके सम्मुख दौड़ा फिर महाबली शक्रदेव ने भीमसेन के ऊपर बाणों की ऐसी बरसा करी जैसे वर्षाऋतु में जल को बरसाता है मृतक घोड़ों के रथपर चढ़ेहुये महाबली भीमसेन ने, अपनी लोहे की शैक्य गदा को शक्रदेव के ऊपर फेंका हे राजन्! कलिङ्ग के राजा का पुत्र उस गदा से मरकर ध्वजा और सारथी समेत रथसे पृथ्वी में गिरा कलिङ्ग देश के महारथी ने अपने पुत्र को मरा हुआ देखकर, हजारों रथों समेत भीमसेन की दिशाओं को रोका तदनन्तर हे राजन्! पुरुषोत्तम भीमसेन ने गदा को छोड़कर अनुपम खड्ग और ढाल को हाथ में लिया वह ढाल सुनहरी नक्षत्र और अर्द्धचन्द्रों से जटित थी तदनन्तर क्रोध में आकर राजा कलिङ्ग ने धनुष की ज्या को चढ़ाकर सर्प के विष के समान एक महाघोर बाण को लेकर मारने की इच्छाकरके भीमसेन के ऊपर फेंका, हे राजन्! उस गिरतेहुए विषसंयुक्त बाण को भीमसेनने अपने खड्ग से दो खंड करदिये और आपकी सेना को भयभीत करता हुआ बड़ा प्रसन्नचित्त बड़े शब्द से पुकारा तदनन्तर राजा कलिङ्ग ने महाक्रोधित होकर शीघ्रही भीमसेन के ऊपर शिला से तीक्ष्ण कियेहुये चौदह तोमरोंको फेंका तब भीमसेन ने अपने उत्तम खड्ग से समीप में न पहुँचनेवाले उन तोमरों को बीच ही में काटा, हे पुरुषोत्तम! वह भीमसेन उस युद्ध में चौदह तोमरों को काटकर समीप आये हुये भानुमन्त के सम्मुख दौड़ा तदनन्तर भानुमन्त तीरों की वर्षा से भीमसेनको ढककर आकाश और पृथ्वीको शब्दायमानकरके महाशब्दका करनेवाला हुआ तब भीमसेन उस सिंहनाद को न सहकर अपनी महागर्जना

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करके गर्जा कलिङ्गदेशों की सेना उस शब्द से भयभीत हुई, हे पुरुषोत्तम, धृतराष्ट्र! युद्ध में सबोंने भीमसेन को मनुष्य नहीं माना इसके पीछे भीमसेन बड़े उच्च शब्द को करके, खड्ग समेत महावेग से दौड़कर हाथी के दांतों के द्वारा उत्तम हाथी पर चढ़ गया और शीघ्र ही हाथी की पीठपर होगया, फिर बड़े खड्ग से भानुमन्त की कमरको काटकर उस शत्रुहन्ता ने युद्धभूमि में उस राजकुमार को मारकर बड़े भारी खड्ग को हाथी के कंधे पर गिराया उसके प्रहार से वह गजराज हाथी पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि रत्नों से प्रकाशित पहाड़ सिंह के वेग से टूटकर गिरपड़ता है हे भरतवंशिन्! वह महाबली भीमसेन गिरते हुए हाथी से कूदकर हाथ में खड्ग लिये महाअलंकृत शस्त्र-युक्त प्रसन्न मन होकर पृथ्वी पर नियत हुआ और निर्भय होकर अनेक हाथियों को गिराता हुआ बहुत से मार्गों में घूमा फिर वह समर्थ घोड़ों के, हाथियों के और रथों के समूहों में सब ओर से गोल अग्नि के समान दिखाई दिया, महाबली भीमसेन उस युद्धभूमि में पक्षीरूप पदातियों के समूहों में बाज पक्षी के समान सबको मारता और घूमता देख पड़ा, फिर वह बड़ा वेगवान् भीमसेन तीक्ष्ण धारवाले खड्गसे उन युद्धकर्त्ता हाथियों के सवारों के शिर और देहों को काटता हुआ देखने में आया, शत्रुओं के भय उत्पन्न करनेवाले अत्यन्त क्रोधरूप मृत्यु के समान पदाती अकेले भीमसेन ने उन सब शूरवीरों को मोहित किया, उस महाभारी युद्ध में हाथ में तीक्ष्ण खड्ग को लिये बड़े वेगवान् भीमसेन को घूमता हुआ देखकर सबलोग अत्यन्त व्याकुल और अचेत होकर पुकारते हुए भागे फिर शत्रुहन्ता पराक्रमी भीमसेन ने युद्ध में रथियों के रथ जुए आदि को काटकर रथियों को भी मारा, और बहुत मार्गों में घूमता हुआ दिखाई दिया हे भरतवंशिन्! फिर भ्रान्त, उद्भ्रान्त, आविद्ध, आप्लुत, प्रस, तेसृत, सम्पात, समुद्धरण अर्थात् घुमाना, ऊंचा घुमाना, टेढ़ा घुमाना, शरीर में लय करना झुके पर झुकाना सब खड्ग का प्रहार बड़े बल से मारना क्रम से इन सब दशाओंको दिखाया हे राजन्! कितने ही शूरवीर भीमसेन के खड्ग के अग्रभाग से कटगये और टूटे कवचवाले गर्ज गर्ज कर मर गये इसीप्रकार से हे राजन्! दांत और सूंडों की नोक टूटे मस्तक फटे चोट खाये हुए शूरवीरों से रहित हाथियों ने भी अपनीही सेनाको मारा और बड़े भारी शब्दों को करके वे सब पृथ्वीपर गिर पड़े और हे राजन्! कटे हुए तोमर वा बड़े भारी शिर वा सुवर्ण से जटित परशे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वा सुवर्णसे जटित स्वच्छ झूलें वा ग्रीवाके भूषण हाथियोंकी भूषणोंसमेत पताका वा तूणीर यन्त्र विचित्र (धनुष) वा श्वेतवर्ण के (अग्निदण्ड) वा अंकुशों से युक्त चाबुकोंको वा नानाप्रकार के घण्टे और सुनहरी खड्गोंकी मूठों को भी, सवारोंसमेत गिरे हुए और जहां तहां पड़ेहुओं को देखता हूँ जिनके अंग और आगेकी सूंड़ के भाग कट गये और जो मर भी गये उन हाथियों से वह पृथ्वी ऐसी होगई जैसी कि गिरे हुए पहाड़ों से हो जाती है, उस नरोत्तम ने इस प्रकार बड़े २ हाथियों को मारकर घोड़ों को भी मर्दन किया, और घोड़ों के उत्तम २ सवारों को भी मारकर गिराया हे भरतर्षभ! तेरे पुत्रों का और पाण्डव लोगों का वह महाघोर युद्ध हुआ, विचित्र लगाम और उत्तम सुवर्ण से मण्डित झूलें, परशे, तोमर, प्रास, दुधारे खड्ग, कवच, ढालें और अनेक रत्नवाले विस्तर यह सब उस महायुद्ध में जहां तहां कटे हुए बहुमूल्य के दिखाई दिये, इसके विशेष उसने विचित्र पोथयन्त्र और स्वच्छ खड्गों से भी पृथ्वी को ऐसा व्याप्त कर दिया कि जैसे कमलों से शवल व्याप्त होता है, महाबली पाण्डव भीमसेन ने सेना में जाके कितने ही रथियों को मर्दन करके खड्ग से ध्वजाधारियों को भी गिराया, युद्ध में उस उग्ररूप के वारंवार इधर उधर दिशाओं में गिरते दौड़ते और चित्रमार्गों में घूमते हुए को देखके मनुष्य बड़े आश्चर्यमें हुये, कितनोंको तो चरणोंही से मारा किसीको खैंचकर मारा किसी को खड्ग से मारा किसीको शब्द से भयभीत किया, किसीको जङ्घाओं के वेग से पृथ्वी पर गिराया इन सब बातों को देखते हुये अन्य लोग बड़े भयातुर होकर भाग गये, इस रीति से मरीकुशी वेगवान् कलिङ्ग देशियोंकी बड़ी सेना युद्ध में भीष्मजी को मध्यवर्ती करके भीमसेन के सम्मुख दौड़ी, तदनन्तर भीमसेन कलिङ्ग की सेना के आगे श्रुतायुष को देखकर उसके सम्मुख गया उस बड़े बुद्धिमान् कलिङ्ग देशी ने भीमसेन को आता हुआ देखकर नव तीरों से हृदय के मध्य में घायल किया, अंकुश से पीड़ित हाथी के समान बाणों से घायल भीमसेन क्रोध से ऐसा अग्निरूप होगया जैसे कि इंधन से अग्नि प्रज्वलित होती है, तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ अशोक ने सुनहरी अङ्गवाले रथ को साथ लेकर भीमसेन को सवार करवाया, शत्रुहन्ता भीमसेन बड़ी शीघ्रता से उस रथ पर चढ़कर श्रुतायुष के सम्मुख दौड़ा और तिष्ठ तिष्ठ शब्द को कहा, तदनन्तर अपनी हस्तलाघवता को दिखाते हुये महाक्रोधरूप बलवान् श्रुतायुष ने बड़े

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तीक्ष्ण बाणों को भीमसेन के ऊपर फेंका, हे राजन्! श्रुतायुष के उत्तम धनुष से छुटे हुये तीव्र नव बाणों से घायल महाबली भीमसेन ऐसा महाक्रोधित हुआ जैसे कि लकड़ी से घायल सर्प क्रोधित होता है, पराक्रमियों में श्रेष्ठ क्रोधित भीमसेन ने बड़े भारी धनुष को चढ़ाकर, सात लोहे के बाणों से श्रुतायुष को मारा और बाणों से ही श्रुतायुष के दोनों महाबली पार्यों के रक्षक सत्यदेव और सत्य को यमलोक भेजा इसके पीछे महासाहसी भीमसेनने तीव्र नाराचों से, केतुमन्त को यमलोक में पहुँचाया फिर कलिङ्गदेशीय क्षत्रियों ने अत्यन्त क्रोधित होकर हज़ारों सेनाओं से उस क्रोधित भीमसेन को लड़ाया तदनन्तर हे राजन्! सैकड़ों कलिङ्गदेशियों ने बरछी, गदा, खड्ग, तोमर, दुधाराखड्ग और परशों के द्वारा भीमसेन को रोका, तब भीमसेन ने उनको और उनके बाणसमूहों को बहुत अच्छी रीति से रोककर, गदा हाथ में लिये बड़ी तीव्रता से दौड़कर सात सौ वीरोंको यमलोक में पहुँचाया, फिर उसी शत्रुहन्ता ने कलिङ्गदेशियों के दो हजार वीरों को कालवश किया यह बड़ा आश्चर्य्य सा हुआ, इसप्रकार उस भयानक पराक्रमी महावीर भीमसेन ने कलिङ्गदेशियों की उन सेनाओं को युद्ध में वारंवार भगाया, और असंख्य हाथियों को सवारों से रहित किया फिर वह हाथी भी बाणों से पीड़ित होकर अपनी सेना को मारते खूंदते अत्यन्त गर्जते हुए सेना के मध्य में से ऐसे भाग गये जैसे कि वायु से टक्कर खाये हुए बादल इधर उधर होजाते हैं तदनन्तर खड्ग हाथ में लिये महाबली, अत्यन्त प्रसन्नचित्त भीमसेन ने बड़े घोर शंख को बजाकर सब कलिङ्गदेशी सेना के हृदय को कँपाया, हे परन्तप, धृतराष्ट्र! कलिङ्ग देशियों में मोह पैदा हुआ और सवारियों समेत सब सेना के लोग अत्यन्त भयभीत हुए, युद्धमें सब ओर से गजेन्द्र के समान मार्गों में घूमते और जहां तहां दौड़ते अथवा वारंवार उछलते भीमसेन के देखने से बड़ा मोह अर्थात् विह्वलता प्राप्त हुई, वह सेना भीमसेन के भयसे ऐसी अत्यन्त कम्पायमान हुई जैसे बड़े ग्राह से पीड़ित सरोवर होता है, भीमसेन से कौरवों को भयभीत होनेसे और चारों ओरसे उन कलिङ्गदेशियों के लौटने और भागजाने पर पाण्डव के सेनापतिने आज्ञा दी कि तुम भी लड़ो, हे भरतवंशिन्! शिखण्डी जिनमें उत्तम है वहसेना सेनापति के वचन को सुनकर, प्रहारकर्त्ता रथियों समेत भीमसेन के पास वर्त्तमान हुई, और धर्मराज युधिष्ठिर ने मेघवर्ण हाथियों की बड़ी सेना समेत पीछे की ओर से उन सबको

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रक्षित किया इस रीति से धृष्टद्युम्न सेनापति ने अपनी सब सेना को चला कर अच्छे पुरुषों समेत भीमसेन के पृष्ठभाग को रक्षित किया इस लोक में भीमसेन और सात्यकी के सिवाय पाञ्चालेश राजा धृष्टद्युम्न को कोई अन्य प्राणों से प्यारा नहीं है वह शत्रुहन्ता धृष्टद्युम्न कलिङ्गों के मध्य में घूमते हुए महाबाहु भीम को देखकर सब ओर को गर्ज करके महाप्रसन्न हुआ, फिर उसने युद्ध में शंख को बजाकर महासिंहनाद को किया तब वह भीमसेन उस कपोत के समान घोड़ों से युक्त सुवर्ण से मण्डित रथपर कचनार वृक्ष की ध्वजाधारी को बैठा हुआ देखकर विश्वासयुक्त हुआ और वह साहसी धृष्टद्युम्न उस कलिङ्गदेशियों की ओर दौड़नेवाले भीमसेन को देखकर, उसकी रक्षा के लिये युद्ध में घुसकर उसके पास आया तब उन महासहसी धृष्टद्युम्न और भीमसेन दोनों वीरों को कलिंग देश की सेना दूर से युद्ध में वर्त्तमान देखकर महाभयभीत हुई फिर उस शीघ्रगामियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने वहां जाकर भीमसेन और धृष्टद्युम्न के पृष्ठ को रक्षित किया और बड़ी धनुषधारी सेना को मारकर भयानकरूप में नियत हुआ और भीमसेन ने कलिङ्गदेशियों से उत्पन्न रुधिररूप कीच से भरीहुई, रुधिर के बहनेवाली नदी को जारी किया इसी अन्तर में महाबली भीमसेन कलिङ्गदेशीय और पाण्डवों की महादुर्गम सेना को अच्छे प्रकार से तरगया हे राजन्! तब तुम्हारी सेना के लोग भीमसेन को देखकर पुकारे, कि यह कालपुरुष भीमरूप से कलिङ्गदेशियों के साथ लड़ता है तदनन्तर शान्तन व भीष्मजी युद्ध में उस शब्द को सुनकर सेना को चारों ओर से तैयार करके बड़ी शीघ्रता से सेना के सम्मुख आये उनको आते हुये देखकर सात्यकी वा भीमसेन और धृष्टद्युम्न भीष्मजी के रथ के सम्मुख दौड़े और सबों ने बड़ी शीघ्रता से गङ्गापुत्र भीष्मजी को चारों ओर से घेरकर तीन २ शीघ्रगामी बाणों से घायल किया फिर आपके पिता देवव्रत भीष्मजी ने उन सब उपाय करनेवाले बड़े धनुषधारियों को सीधे चलनेवाले तीन तीन बाणों से घायल किया तिसके पीछे हज़ार बाणों से उन महारथियों को रोककर [illegible]नहरी कवचरूप वस्त्रों से अलंकृत भीमसेन के घोड़ों को बाणों से मारा फिर [illegible]तक घोड़ेवाले रथपर नियत प्रतापवान् भीमसेन ने बड़ी तीव्रता से भीष्मजी [illegible] रथपर उग्र बरछी को फेंका फिर आपके पिता देवव्रत ने उस न पहुँची हुई [illegible]छी को बीच ही में दो खण्ड करके पृथ्वी में गेरदिया तदनन्तर पुरुषोत्तम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भीमसेन बड़ी शीघ्रता से शक्यायशी बड़ी गदा को लेकर रथ से कूदा और महारथी धृष्टद्युम्न उसको अपने रथपर सवार करके सब सेना के देखते हुये दूर लेगया तदनन्तर सात्यकीने भी भीमसेन के अभीष्ट के लिये शीघ्र ही शायकों से कौरवों के पितामह भीष्मजी के सारथी को रथ से गिराया उस सारथी के मरने पर रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजी भी उन वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्धभूमि से दूर चले गये तदनन्तर हे राजन् ! उस महाभारथी भीष्म के दूर चलेजाने पर भीमसेन को ऐसा महाकोप उत्पन्न हुआ, जैसे कि वन को जलानेवाली अग्नि प्रचण्ड होती है और सब कलिङ्ग देशियों को मारकर सेना में आगया, हे भरतवंशिन् ! आपका कोई वीर इसके सम्मुख होने को समर्थ नहीं हुआ फिर वह भरतवंशियों में श्रेष्ठ भीमसेन पाञ्चाल और मत्स्य देशियों से अच्छी रीति से प्रशंसित धृष्टद्युम्न को छोड़कर सात्यकी से मिला, तदनन्तर यादवों में श्रेष्ठ सत्य पराक्रमी सात्यकी धृष्टद्युम्न के देखते हुये भीमसेन की प्रशंसा करके यह वचन बोला कि प्रारब्ध से राजा कलिङ्ग और राजकुमार केतुमान् और कलिङ्गदेशी शक्रदेव और अन्य सब कलिङ्गदेशी लोग युद्ध में मारे गये सो तुम अकेले ने ही अपने भुजबल के पराक्रम से कलिङ्ग देशियों के घोड़े हाथी और रथों से संकुल महाबली शूरवीरों से सेवित महाव्यूह को मर्दन किया, शत्रुओं का जीतनेवाला और लम्बी भुजावाला सात्यकी इस प्रकार से कह कर उस रथपर नियत पाण्डवों के पास जाकर मिला, तदनन्तर उस क्रोध से भरे सात्यकी ने भी आपकी सेना के मनुष्यों को मारा और भीमसेन की सेना को रक्षित किया ॥ १२४ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि कलिङ्गवधो चतुःपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ।

संजय बोले कि हे भरतवंशिन् ! उस मध्याह्न के अन्त होनेपर रथ, घोड़े, हाथी और सवार पैदलों के बड़े नाश होने पर धृष्टद्युम्न अकेला ही अश्वत्थामा, शल्य और महात्मा कृपाचार्य इन तीनों महाबलियों के सम्मुख हुआ और बड़ी शीघ्रता से तीव्र और शीघ्रगामी बाणों से अश्वत्थामा के प्रसिद्ध घोड़ों को मारा तदनन्तर मृतक घोड़ेवाला अश्वत्थामा बहुत शीघ्र शल्य के र[थ] पर चढ़कर उसी रीति से बाणसंयुक्त होकर धृष्टद्युम्नके सम्मुख हुआ, हे भर[त] वंशिन् ! सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु अश्वत्थामासे भिड़ेहुये धृष्टद्युम्न को देख[कर]

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बड़े तीव्र बाणों को फेंकता हुआ शीघ्रही सम्मुख दौड़ा, और वहां जाकर उस अभिमन्यु ने शल्य को पच्चीस बाणों से कृपाचार्य को नौ बाणों से और अश्वत्थामा को आठ बाणों से घायल किया, इसके पीछे अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को अश्वत्थामा ने एक बाण से शल्य ने बारह बाणों से और कृपाचार्य ने तीन तीक्ष्ण बाणों से घायल किया, फिर आपका पोता लक्ष्मण उस सम्मुख आये हुए अभिमन्यु को देखकर महाकोपित होकर उसके आगे वर्त्तमान हुआ और उन दोनोंका युद्ध जारी हुआ, हे राजन्! इसके पीछे महाक्रोधी दुर्योधन के पुत्रने युद्ध में उस सुभद्रा के पुत्र को तीव्र बाणों से घायल किया यह आश्चर्य सा हुआ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! फिर उस क्रोधरूप अभिमन्यु ने अपनी हस्तलाघवता से शीघ्रही पांचसौ बाणों से भाई लक्ष्मण को घायल किया फिर लक्ष्मणने भी एकबाण से उसके धनुषको मुष्टदेशसे काटा इस कारण से मनुष्यों ने बड़ा शब्द किया, फिर वीर शत्रुहन्ता अभिमन्यु ने उस टूटे हुये धनुष को छोड़कर बड़े वेगवान् जड़ाऊ धनुष को हाथ में लिया, फिर युद्धकर्म में प्रवृत्त द्वन्द्व युद्ध करनेवाले दोनों पुरुषोत्तमों ने तीक्ष्णधारवाले बाणों से परस्पर एक को एकने घायल किया इसके पीछे महाराजा दुर्योधन अपने महाबली पुत्र को आपके पोते से पीड्यमान देखकर वहां आया फिर आपके पुत्र के अलग होजाने परसब राजा लोगों ने रथों के समूहोंसमेत अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को रोका, हे राजन्! युद्ध में अजेय श्रीकृष्णजी के समान पराक्रमी शूरवीर अभिमन्यु उन शूरों से घिरा हुआ भी व्याकुल नहीं हुआ, तदनन्तर अर्जुन वहां अभिमन्यु को भिड़ा हुआ देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर अपने पुत्र की रक्षा करने को सम्मुख दौड़ा। तदनन्तर रथ घोड़े और हाथियोंसमेत वह राजा लोग जिनमें अग्रगामी भीष्म और द्रोणाचार्य थे, अकस्मात् आकर अर्जुन के सम्मुख वर्त्तमान हुए, मनुष्य, घोड़े और रथों के चलने से एकाएकी पृथ्वी से धूल उड़ी और सूर्य के मार्ग को पाकर तेज दिखाई दी, वह हजारों हाथी और राजा लोग उस अर्जुन के बाणों के मार्ग को पाकर सब रीतों से सम्मुख वर्त्तमान नहीं रहे, सब जीव जन्तु पुकारे और दिशाओं में अन्धकार हुआ और कौरवों का अन्यायरूप भयानक फल उत्पन्न हुआ, हे नरोत्तम! मुकुटधारी अर्जुन के बाणों से अन्तरिक्ष अर्थात् पृथ्वी और आकाश के मध्य में दिशा पृथ्वी और सूर्य नहीं दिखाई दिये, हाथी ध्वजाओं से रहित हुए और असंख्यों

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रथी मृतक घोड़ेवाले हुए और कोई महारथी ऐसे देख पड़े कि जिनके रथी भाग गये, कहीं रथी लोग अपने रथों से रहित शस्त्र और बाजूबन्दों समेत इधर उधर दौड़ते हुए जहां तहां दिखाई देते थे, हे राजन्! अर्जुन के भय से घोड़े के सवार घोड़ों को और हाथी के सवार हाथियों को त्याग करके चारों ओर से भागे, और बहुत से राजालोग अर्जुन के बाणों से रथ हाथी और घोड़ों से गिराये वा गिरते हुए देख पड़ते थे, हे राजन्! अर्जुन ने जहां तहां गदा समेत उठाये हुए और खड्ग, प्राश, तूणीर, बाण, धनुष इत्यादि को उठाये हुए अथवा अंकुश और पताकाओं समेत उठाये हुए मनुष्यों की भुजाओं को अपने कराल बाणों से काटकर रुद्ररूप धारण किया, हे भरतर्षभ, धृतराष्ट्र! युद्ध में कटे हुए परिघ, मुद्गर, प्राश, भिन्दिपाल, खड्ग, तीक्ष्ण परसे, तोमर और धनुष से काटे हुए सुनहरी कवच भी हजारों पृथ्वी पर पड़े हुए दृष्टि में आये, और सब प्रकार की ध्वजा, ढाल, पंखे और सुनहरी दण्डवाले छत्र, तोमर, चाबुक, कोड़े और रस्सियों के ढेरों के ढेर युद्धभूमि में फैलेहुए दिखाई दिये। हे श्रेष्ठ! आपकी सेना का कोई मनुष्य भी ऐसा न हुआ जो युद्ध में उस शूरवीर अर्जुन के सम्मुख जाय, हे राजन्! युद्ध में जो जो अर्जुन के सम्मुख जाता है वह बाणों के द्वारा यमपुर को भेजा जाता है सब रीति से आपके शूरों के भागजाने पर अर्जुन और वासुदेवजी ने उत्तम शंखों को बजाया फिर आपके पिता देवव्रत उस सेना को भागा हुआ देखकर, बड़ा आश्चर्य करके युद्ध में महाशूरवीर द्रोणाचार्यजी से बोले कि यह पाण्डु का बेटा वीर बलवान् श्रीकृष्णजी के साथ में होकर उसीप्रकार सेनाओं को मार-कर काटे डालता है जैसे कि संसारी धन का विजय करनेवाला करता है, अब यह किसी प्रकार से भी युद्ध में जीतने के योग्य नहीं है, इसका रूप काल वा अन्तक वा यम नाम मृत्यु के समान देखने में आता है और यह बड़ी सेना भी नाश करवाने के योग्य नहीं है, देखो यह सेना परस्पर की सहायता से निर्बल है, यह सूर्य सब रीति से सब लोकों की दृष्टि को हरता हुआ पर्वतों में श्रेष्ठ अस्ताचल को प्राप्त होता है। हे पुरुषोत्तम! ऐसी दशा में मैं सेना के विश्राम को चाहता हूं, जो युद्धकर्ता भयभीत हुए थक गये हैं, वह कभी नहीं लड़ेंगे। महारथी भीष्मजी ने आचार्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य से इस रीति से कहकर आपकी सेनाओं का विश्राम किया। हे श्रेष्ठ! सूर्य के अस्तंगत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होने पर आपकी और पाण्डवों की सेना का विश्राम हुआ और संध्या वर्त्तमान हुई ॥ ४२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि पञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय।

संजय बोले कि इसके पीछे शत्रुसंतापी भीष्मजी ने प्रातःकाल के समय चढ़ाई करने के निमित्त सेनाओं को आज्ञा की तब आपके पुत्रों की विजय चाहनेवाले कौरवों के पितामह वृद्ध भीष्म जीने गारुड़ नाम महाव्यूह को रचा, उसमें आपके पिता देवव्रत तो गरुड़ की चोंच पर हुए और भारद्वाज द्रोणाचार्य वा कृतवर्मा यादव यह दोनों नेत्रों के स्थान में हुए और यशस्वी अश्वत्थामा और कृपाचार्य शिर के स्थान में हुए और जो त्रिगर्त्त, मत्स्य वा केकय यह सब बारधानों से युक्त थे, और भूरिश्रवा, शल, शल्य, भगदत्त, मद्रक, सिन्धु, सौवीर और पंचनदवासी लोग यह सब जयद्रथ के साथ ग्रीवा में नियत हुए और राजा दुर्योधन अपने सगे भाइयों समेत अपने पीछे चलने वाले शूरवीरों से युक्त पीछे की ओर नियत हुए और विन्द, अनुविन्द और अवन्ति के राजा लोग और काम्बोज यह सब शक लोगों वा शूरसेनदेशीय वीर लोगों के युक्त गरुड़ की पूंछ की ओर नियत हुए, और मगधदेशीय वा कलिंगदेशीय वा असुर लोगों के समूह यह सब उस गरुड़ के दक्षिणपक्ष पर नियत हुए, और कारूष, विकुञ्ज, मुंड, कौंडी, वृष यह सब बृहद्बल समेत बायें पक्ष पर उपस्थित हुए, उस युद्धभूमि में शत्रुहन्ता परन्तप अर्जुन ने उस व्यूहित सेना को देखकर धृष्टद्युम्न की सलाह से उसकी समानता का अपनी सेना का भी व्यूह रचा अर्थात् सब पाण्डवों ने आपके उस व्यूह को देखकर अर्द्धचन्द्र नाम व्यूह से अपनी भयानक सेना को सुशोभित किया, और नानाप्रकार के शस्त्रों के समूह और अनेक देशी राजा लोगों से युक्त भीमसेन दाहिने शृंगपर नियत होकर शोभायमान हुआ, उसीके पीछे महारथी विराट और द्रुपद नियत हुए फिर उनके पीछे अपने नीले आयुधों समेत राजा नील और नील के पीछे चन्देरी वा काशी वा करूषदेशीय वा पौरवदेशीय इन सबको साथ लिये राजा धृष्टकेतु वर्त्तमान हुए और हे भरतर्षभ! धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, पाञ्चालदेशीय और प्रभद्रक यह सब पत्यन्त सेना समेत युद्ध करने के लिये बीच में नियत हुए और उसी स्थान में

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हाथियों की सेना समेत राजा धर्मराज युधिष्ठिर भी वर्त्तमान हुए और उसके पीछे सात्यकी वा द्रौपदी के पाँचों पुत्र थे उनसे पीछे अभिमन्यु अभिमन्यु के पीछे इरावान् और उसके पीछे भीमसेन का पुत्र घटोत्कच और महारथी केकय देशीय उसके पीछे नरोत्तम सब जगत् का रक्षक जिसके रक्षक जनार्दन थे वह अर्जुन हुआ, इस रीति से पाण्डवों ने आपके पुत्रों के और उनके सहायकों के मारने के निमित्त इस बड़े भारी व्यूह को रचा, तदनन्तर आपके पुत्र और पाण्डवों में परस्पर वह युद्ध जिसमें हाथी घोड़े और रथ संयुक्त थे जारी हुआ; हे राजन्! जहां तहां वह हाथी और रथों के समूह परस्पर में मारते और गिरते हुए देख पड़ते थे, और दौड़ते वा पृथक् २ लड़नेवाले रथ के समूहों के महाकठिन शब्द दुन्दुभियों के शब्दों से मिले हुए सुने जाते थे, हे भरतवंशिन्! उस तुमुलयुद्ध में परस्पर में मारतेहुए आपके और दूसरों के शूरवीरों के शब्द आकाश तक व्याप्त हुए ॥ २३ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि गरुडार्द्धचन्द्रव्यूहनिर्माणे षट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ।

संजय बोले कि हे भरतवंशिन्! इसके अनन्तर आपके पुत्रोंकी और पाण्डवों की सेना व्यूहित होनेपर बाणों से महारथियों को गिराते हुए अतिरथी अर्जुन ने रथके यूथपों को इस रीति से मारा जैसे कि युगके अन्त में काल सबका नाश करता है, इस रीति से अर्जुन से घायल और पीड़ित उन धृतराष्ट्र के पुत्रोंने युद्ध में महाकुशल पाण्डव लोगों से युद्ध किया हे राजन्! अपनी कीर्ति के चाहने वाले उन कौरवों ने मृत्यु को न लौटनेवाली मानकर चित्त को स्थिर करके पाण्डवों की सेना को अनेक रीति से छिन्नभिन्न करके आप भी युद्ध से छिन्नभिन्न होगये, फिर भागते और छिन्नभिन्न होते अथवा लौटने समय में कौरव पाण्डवों की धूमधाम में कुछ नहीं जाना गया और धूल ऐसी उड़ी कि जिससे पृथ्वी और सूर्य ढकगये और अन्धकार ऐसा मचगया जिसमें दिशा विदिशा का भी कुछ ज्ञान न रहा, हे राजन्! उस समय जहां संग्रामभूमि में ध्यान और नाम गोत्रों के द्वारा युद्ध जारी रहा, हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! वहां भारद्वाज द्रोणाचार्य से रक्षित वह कौरवों का व्यूह छिन्नभिन्न नहीं होता था और इसी प्रकार अर्जुन से रक्षित पाण्डवों का बड़ा व्यूह भी भीमसेन से आश्रित होकर पराजय नहीं होता था फिर वहां रथ हाथियों से संयुक्त दोनों सेनाओं के मनुष्य

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सेना के आगे से निकल कर युद्ध करने लगे, तब उस महायुद्ध के बीच तीक्ष्ण धारवाले दुधारा खड्ग और परशों के द्वारा घोड़ों के सवारों के हाथ से घोड़ों के सवार गिराये गये, फिर उस अत्यन्त भयकारी सेना में सुनहरी बाणों से रथी ने रथी को सम्मुख होकर गिराया, फिर आपके और उनके हाथियों के सवारों के समूहों ने नाराच शर और तोमरों के द्वारा सम्मुख होकर हाथियों के सवारों को गिराया और उस रण में पत्ति सिंह नाम सेना के भागने भिन्दपाल और परशों के द्वारा पत्तियों को गिराया और रथी ने हाथी के सवार को सम्मुख होकर मारा और हाथी के सवार ने इसी प्रकार से रथी को जा गिराया हे भरतर्षभ! घोड़ों के सवारों ने प्राशों के द्वारा रथी को और रथी ने घोड़े के सवार को, और दोनों सेनाओं के हाथी के सवारों ने तीक्ष्ण शस्त्रों से घोड़ों के सवारों को और घोड़ों के सवारों ने हाथी के सवारों को विध्वंस किया यह भी आश्चर्य सा हुआ और जहां तहां अच्छे २ हाथी के सवारों के हाथ से पदाती भी मारे हुए देख पड़े और उन पदातियों के हाथ से हाथियों के सवार मरे हुए देखने में आये घोड़ों के सवारों से पतियों के समूह और पतियों से सवारों के समूह गिराये हुए दिखाई दिये, हज़ारों गिरते हुए हज़ारों कटे हुए हज़ारों ध्वजा और धनुषों समेत और हज़ारों तोमर परिस्तोम और कुथों समेत और बहुतेरे बहुमूल्य कम्बलों को ओढ़े हुए प्राश, गदा, परिघ, कंपन शक्ति और विचित्र कवचों को धारण किये भूमि में गतप्राण दीखे हे भरतर्षभ! हज़ारों (कुणप) (अंकुश) और सुवर्ण पुंखवाले बाणों से भूमि ऐसी शोभायमान थी जैसे कि मालाओं से पूरित होकर शोभित होती है और उस महायुद्ध में मनुष्य घोड़े और हाथियों के गिरे हुए शरीरों से ढकी हुई पृथ्वी मांस रुधिररूपी कीच से महादुर्गम और देखने के योग्य न थी और मनुष्यों के रुधिरों से छिड़की हुई पृथ्वी की धूल अत्यन्त शान्त होगई हे राजन्! सब दिशा शुद्ध हुईं और कबन्ध अर्थात् विना शिरके रुण्ड चारों ओर से असंख्य उत्पन्न होकर सब संसार के नाशकारक हुए फिर उस बड़े भारी भयानक युद्ध जारी होने पर चारों ओर से दौड़ते हुए अनेक रथी देख पड़े इस के पीछे भीष्म, द्रोणाचार्य, जयद्रथ, राजा सिंधु, पुरुमित्र, विकर्ण, शकुनि, सौबल, यह सब युद्ध में दुर्धर्ष सिंह के समान पराक्रमी पाण्डवों की सेना के मारने को उपस्थित हुए, इसी प्रकार हे भरतवंशिन्! भीमसेन, घटोत्कच राक्षस, सात्यकी, चेकितान, द्रौपदी के पांचों पुत्र इन वीरों ने भी सब राजाओं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

समेत युद्धभूमि में नियत होकर आपके शूरवीरों समेत सब पुत्रों को ऐसे छिन्न भिन्न कर दिया जैसे कि देवता लोग दानवों को कर देते हैं इसी प्रकार से वह सब क्षत्रिय परस्पर में युद्धप्रहार करते हुए, रुधिर भरे हुए शरीरों से घोर-रूप किंशुक वृक्षों के समान शोभायमान दिखाई देने लगे हे राजन् ! दोनों ओर की सेना के शूरवीर अपने-अपने शत्रुओं को विजय करके ऐसे देखने में आते थे जैसे कि आकाशमण्डल में सूर्यादि बड़े ग्रह दिखाई देते हैं। इसके उपरान्त आपका पुत्र दुर्योधन हज़ार रथों के साथ, उस युद्ध में पाण्डव और घटोत्कच राक्षस के सम्मुख आया वैसे ही सब पाण्डव भी अपनी बड़ी सेनासमेत भीष्म और द्रोणाचार्य के सम्मुख गये यह सब पाण्डव आदि युद्ध में शूरवीर शत्रुओं के विजय करनेवाले हैं इसके पीछे दिव्य मुकुटधारी क्रोध में भरा अर्जुन सब ओर के राजाओं के सम्मुख गया और अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु वा सात्यकी यह दोनों शकुनी की सेना के सम्मुख गये उसके पीछे परस्पर में विजय की इच्छा रखनेवाले आपके पुत्रों का और दूसरों का रोमहर्षण करने वाला महायुद्ध फिर जारी हुआ ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ।

संजय बोले कि फिर उन क्रोधरूप राजाओं ने अर्जुन को युद्ध में देखकर हज़ारों रथसमेत उसको आनकर घेरलिया, तदनन्तर हे भरतवंशिन् ! उसको रथसमूहों से घेरकर चारों ओर से हज़ारों बाणों से भी रोका, फिर युद्ध में क्रोधरूप उन लोगों ने स्वच्छ बरछी, तीक्ष्ण गदा, प्राश, परश्वध, मुद्गर और मुशलों को परिघोंसमेत अर्जुन के रथपर छोड़ा और अर्जुन ने भी अपने सुनहरी बाणों से उस टीड़ी के समूह के समान राजाओं की शस्त्र और बाणोंकी वर्षा को चारों ओर से रोका हे राजन् ! उस युद्ध में अर्जुन की हस्तलाघवता जो कि दृष्टि से बाहर थी, उसको देव, दानव, गन्धर्व, पिशाच, उरग और राक्षसों ने देखकर अर्जुन की बड़ी प्रशंसा धन्य धन्य शब्दों से की और सात्यकी और अभिमन्यु ने बड़ी सेनावाले युद्ध में शूरवीर गान्धारियों को सौबल के पुत्रों समेत युद्ध में रोक दिया, इसके पीछे क्रोध में भरे हुए सौबल के पुत्रों ने वृष्णिवंशी सात्यकी के उत्तम रथ को नाना प्रकार के शस्त्रों से तिल के समान टुकड़े टुकड़े करडाला, हे शत्रुसन्तापिन्, धृतराष्ट्र ! फिर तो सात्यकी उस महा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भारी युद्ध के होने पर उस रथ को त्याग शीघ्र ही अभिमन्यु के रथपर चढ़ा।फिर एकही रथपर सवार होकर उन दोनों ने बड़ी शीघ्रता से गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से शकुनी की सेना को मारा, और युद्ध में कुशल द्रोणाचार्य और भीष्मजी ने कङ्कपक्षवाले तीक्ष्ण बाणों से धर्मराज युधिष्ठिर की सेना का विध्वंस किया। इसके अनन्तर धर्मराज युधिष्ठर, माद्रीनन्दन नकुल, सहदेव आदि पाण्डवों की सब सेना के देखते हुए द्रोणाचार्य की सेना के सम्मुख दौड़े, फिर वहां रोमहर्षण करनेवाला बहुतभारी ऐसा तुमुल युद्ध हुआ जैसे कि पूर्वसमय में देवता और असुरों का महाभयानक युद्ध हुआ था फिर भीमसेन और घटोत्कच ने बड़ा कर्म किया तब तो दुर्योधन ने सम्मुख आकर उन दोनों को भी रोका, हे भरतवंशिन्! वहां हमने हिडम्बा के पुत्र घटोत्कच का अपूर्व पराक्रम देखा कि युद्ध में पिता को भी उल्लङ्घन करगया फिर अत्यन्त क्रोधभरे अशान्तरूप भीमसेन ने हँस करके प्रशत नाम बाण से दुर्योधन के हृदय में प्रहार किया तब तो उस महाभारी वज्ररूप प्रहार से पीड्यमान राजा दुर्योधन रथ के बैठने के स्थान में बैठगया, हे राजन्! फिर इसका सारथी इसको अचेत जानकर बड़ी शीघ्रतापूर्वक युद्धभूमि से दूर लेगया इसके पीछे सेना इधर उधर बिखर गई, फिर भीमसेन जहां तहां से भागनेवाली उस कौरवी सेना को तीक्ष्ण बाणों से मारता हुआ पीछे की ओर से चला, हे भरतवंशिन्! युद्ध में कुशल धृष्टद्युम्न और धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य और भीष्मजी के देखते हुए शत्रु हननेवाले विशिखों से उस सब सेना को मारा और सेना ऐसी भगी कि जिसके रोकने को भीष्म और द्रोणाचार्य भी समर्थ नहीं हुए आशय यह है कि वह सेना महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य से रोकी हुई भी इनको देखकर भागती थी और हे परंतप! जहां तहां हज़ारों रथों के टूटने पर उन एक रथ पर बैठनेवाले अभिमन्यु और सात्यकी ने भी शकुनी की सेना का नाश करदिया, इसके पीछे वह दोनों अभिमन्यु और सात्यकी ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि अमावास्या के दिन आकाशमण्डल में वर्त्तमान सूर्य्य और चन्द्रमा शोभित होते हैं, हे राजन्! इसके अनन्तर क्रोधयुक्त अर्जुन ने आपकी सेनापर ऐसी बाणोंकी वर्षा की जैसे कि धारों से बादल जल को बरसाता है, फिर इसके पीछे युद्ध के बीच अर्जुन के बाणों से घायल और भय से विह्वल और कम्पायमान होकर वह कौरवी सेना युद्ध से भागगई, फिर दुर्योधन के अभीष्ट चाहनेवाले महा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बली भीष्म और द्रोणाचार्य ने उस भागी हुई कौरवी सेना को बड़े क्रोध से रोका, हे राजन्! इसके पीछे राजा दुर्योधन ने भी अच्छी रीति से विश्वास देकर उस भागीहुई अपनी सेना को चारों ओर से लौटाया, हे भरतवंशिन्! जहां जहां जिस जिसने आपके पुत्र को देखा वहां वहां से वह क्षत्रियों के महारथी लौटे, इसके पीछे हे राजन्! उन लौटे हुओं को देखकर अन्य मनुष्य भी परस्पर की ईर्षा से वा लज्जा से लौटकर नियत हुए फिर उन लौटनेवालों का ऐसा वेग हुआ जैसे कि चन्द्रमा के उदय में पूर्ण होते हुए समुद्र का वेग होता है इसके पीछे राजा दुर्योधन उन लौटेहुओं को देखकर बहुत शीघ्र ही शान्तनव भीष्मजी के पास जाकर यह वचन बोला हे भरतवंशिन्, पितामह! आप मेरे इस वचन को समझिये। हे कौरवों में श्रेष्ठ! मैं यह उचित नहीं समझता हूं कि आपके और सकल शस्त्र विद्या के ज्ञाता द्रोणाचार्यजी और उनके पुत्र अश्वत्थामा और महाधनुर्धर कृपाचार्य वा उनके मित्रों के विद्यमान रहतेहुए सेना भागती है, मैं किसी दशा में भी किसीको आपके समान पराक्रमी नहीं जानता हूं इसी प्रकार द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और अश्वत्थामा के भी समान युद्ध में पाण्डव लोग नहीं हैं, हे पितामह! निश्चय करके पाण्डव लोग आपकी कृपा के योग्य हैं। हे वीर! इसीसे इस घायल और मारी कूटीहुई सेनापर आप क्षमा करते हो सो हे राजन्! आपको प्रथमही सम्मुखता में कहनेको योग्य था कि मैं इसयुद्धमें पाण्डवलोगों से वा सात्यकी और धृष्टद्युम्न से नहीं लड़ूंगा हे भरतवंशिन्! जो मैं आपके और आचार्यजीके वचनों को सुनता तो उसीसमय कर्णसे कर्म करवानेके विचारको करता आप दोनोंको इस युद्धमें मेरा त्यागना योग्य नहीं है, आप दोनों पुरुषोत्तम अपने योग्य पराक्रम के द्वारा युद्ध करो, भीष्मजी इसकी बातों को सुनकर वारंवार हँसते हुए क्रोधसे दोनों नेत्रोंको अच्छी रीतिसे खोलकर आपके पुत्र से बोले कि हे राजन्! मैंने बहुत बार तुमसे तुम्हारा हितकारी वचन कहा है, कि पाण्डवलोग युद्धमें इन्द्रसमेत देवताओं से भी अजेय हैं। हे राजाओं में श्रेष्ठ! जो मुझ वृद्ध से करने के योग्य है, उसको मैं अपनी सामर्थ्य के अनुसार करूँगा, तू अब बांधवोंसमेत देख कि मैं सेनासमेत पाण्डवोंको तेरे और सब लोकोंके देखते हुए हटाऊंगा। हे राजन्! भीष्मसे कहेहुए ऐसे वचनोंको सुनकर आपके आनंद भरे पुत्र ने शंख और भेरी को बजाया, इसके पीछे पाण्डवोंने भी इस बड़े शब्द को सुनकर शंखों को बजाकर भेरी मुरजादिकोंको अच्छीरीति से बजाया॥४६॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि अष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उनसठवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय! इसके अनन्तर उस भयानक युद्ध में मेरे पुत्र के कहने से भीष्मजी के कोपयुक्त होकर प्रण करने पर, भीष्मजी ने पाण्डवों के ऊपर और पाञ्चाल देशियों के पितामह के ऊपर क्या क्या काम किये वह मुझ से आप वर्णन कीजिये, संजय बोले कि हे भरतवंशिन्! उस दिन के मध्याह्न समय के व्यतीत होने पर सूर्य के पश्चिम ओर होने के काल में और महात्मा पाण्डवों के विजयी होकर प्रसन्न होनेपर सब धर्मों के ज्ञाता आपके पिता देवव्रत भीष्मजी सब रीति से आपके पुत्र और सेनाओं से रक्षित होकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा पाण्डवों की सेना के सम्मुख गये, हे भरतवंशिन्! इसके पीछे आपके अन्याय के कारण पाण्डवों से हमारा रोमहर्षण करनेवाला महातुमुलयुद्ध हुआ, अर्थात् धनुषों के शब्दों से और तालों के बजने से ऐसा तुमुलशब्द हुआ जैसे कि पर्वतों के फटने का हुआ करता है, तिष्ठ तिष्ठ खड़ाहूं खड़ाहूं इसको देख २ लौट २ नियत हो २ नियतहूं २ प्रहार कर २ इत्यादि अनेक प्रकार के शब्द सुनाई दिये, सुनहरी कवच कमठ और ध्वजाओं पर ऐसे महाशब्द हुए जैसे कि पर्वतों पर शिलाओं के गिरने से शब्द होते हैं, हज़ारों भूषणों से अलंकृत शिर और भुजा पृथ्वीपर गिरकर नानाचेष्टा करनेलगे, कितनेही शिर कटे हुए पुरुषोत्तम धनुष उठाये हुए वा शस्त्रों को धारण किये हुए उसी दशा में नियत हुए, तब रुधिर से जारी होनेवाली घोर नदी हाथियों के अङ्गरूपी शिला और मांस रुधिररूपी कीचड़से भरीहुई बड़े वेगवान् उत्तम घोड़े हाथी और मनुष्यों के शरीर से प्रकट गृध्र शृगालों की प्रसन्नता देनेवाली परलोक समुद्ररूपा घोर नदी बड़े प्रवाह से बही, हे राजन्! जैसा कि आपके पुत्रों का और पाण्डवों का युद्ध हुआ वैसा आजतक न देखागया न सुनागया, उस युद्ध में गिराये हुए शूरवीरों के कारण कहीं से रथों के जाने का मार्ग नहीं रहा और नीले नीले हाथियों के गिरेहुए होने से वह पृथ्वी पहाड़ोंके शिखरों के समान दिखाईदी, हे भरतश्रेष्ठ! सुवर्णनिर्मित कवचों के और शिरत्राणों के फैले हुए होने से वह युद्धभूमि ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि शरद्ऋतु में आकाशमण्डल शोभित होता है, कोई मनुष्य अत्यन्त घायल आंत वा पैरों से भी कटे हुए मन से अदीन और अहंकारी होकर उस युद्ध में शत्रुओं के सम्मुख दौड़े, और कोई कोई हे पिता! हे भाई! हे मित्र! हे बांधव! हे समान अवस्थावाले! हे मामा!

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हे काका ! मुझको मत सताओ मत सताओ ऐसा २ कहकर पुकारे, और कोई सम्मुख वर्त्तमान हो तुम आओ क्या भयभीत है कहां जायगा मैं युद्ध में नियत हूं भय न कर इत्यादि बातें कहकहकर पुकारते थे, उस युद्ध में शान्तनव भीष्मजी ने जिनका धनुष मण्डल के समान था विषके बुझे हुए तीव्र कोक के सर्पाकार बाणों को छोड़ा, हे भरतवंशिन् ! बाणों से सब दिशाओं को बराबर करनेवाले सावधान व्रत भीष्मजी ने पाण्डवों के रथियों को कहकहकर मारा, वह भीष्मजी रथ के मार्गों में नृत्य करते और हस्तलाघवता को दिखाते हुए उल्काके समान जहां तहां फिरते और चमकते हुए देखपड़े, पाण्डवों ने संजयों समेत युद्धभूमि में उस अकेले शूरवीर की हस्तलाघवता के कारण लाखों के समान जानकर भीष्मजी को महामायावी के सदृश माना, क्योंकि उनको अभी पूर्व में देखकर फिर पश्चिम दिशा में देखा, इसी प्रकार उत्तर में देखकर दक्षिण दिशा में भी देखा, इस रीति से वह गाङ्गेय भीष्मजी युद्ध में महायुद्ध करते हुए दृष्टिआये, पाण्डवों का कोई शूरवीर उनके युद्धके देखने को समर्थ नहीं हुआ इन भीष्मजी के धनुष से गिरे हुए अनेक विशिखनाम बाण ही दिखाई पड़ते थे, उस संग्राम में उस कर्म करनेवाले सेना को मारते देवरूप घूमते हुए आपके देवव्रत पिता को देखकर युद्ध में लोग अनेक रीतों से पुकारते थे, और अत्यन्त मोहित हज़ारों राजा लोग उस भीष्मरूप अग्नि में शलभाओं के समान गिरकर कालवश हुए, युद्धभूमि में उस हस्तलाघवता से लड़नेवाले भीष्मजी का कोई भी बाण मनुष्य हाथी घोड़े आदि के शरीर में लगकर निष्फल नहीं गया वह भीष्म युद्ध में झुके हुए पर्ववाले एक ही बाण से दन्तमण्डलधारी हाथीको ऐसे मारडालते थे जैसे कि वज्र से पर्वत को इन्द्र मारता है आपके पिता ने अत्यंत तीव्र नाराच नाम बाण से मिले हुए पर्वतों के समान दो वा तीन हाथियों के सवारों को भी मारा, जो कोई युद्ध में इस नरोत्तम भीष्म के सम्मुख आता था वह भय से एक मुहूर्त्त तक पृथ्वी पर गिरा हुआ देख पड़ता था, इस रीति से अतुल बल भीष्मजी से घायल हुई युधिष्ठिर की सेना हज़ारों प्रकार से दुःखी और भयभीत हुई, वह पाण्डवों की बड़ी सेना भीष्मजी के बाणसमूहों से पीड़ित होकर वासुदेव जी और महात्मा अर्जुन के देखते हुए बड़ी कम्पायमान हुई, उपाय करनेवाले वीर लोग भी भीष्मजी के बाणों से अत्यन्त पीड्यमान भागते हुये महारथियों के लौटाने को समर्थ नहीं हुये हे महाराज ! महेन्द्र के समान पराक्रमी भीष्मसे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उच्छिन्न पाण्डवोंकी बड़ीभारी सेना पराजयको प्राप्त हाहाकाररूपहो अचेत होगई और रथ, हाथी, घोड़े भी घायल होकर ध्वजाओं समेत पृथ्वी पर पड़े हुये थे, उस युद्ध में दैवीबल से विजय पानेवाले पिता ने पुत्र को और पुत्र ने पिता को वा मित्र ने प्रियमित्र को मारा हे भरतवंशिन्! पाण्डवों की सेनाके मनुष्य कवचों को त्याग शिर के बालों को फैलाकर दौड़े हुये देख पड़े, तब पाण्डवों की वह सेना जिसके महारथी भ्रान्ति से युक्त थे व्याकुल दुःखी और भयकारी शब्दों को करते हुये दिखाई दिये फिर यादवों के प्रसन्न करनेवाले श्रीकृष्णजी सेना को पराजय में प्राप्त देखकर अपने उत्तम रथ को रोक कर अर्जुन से बोले कि हे अर्जुन! अब वह समय आगया है जो तेरा अभीष्ट है हे नरोत्तम! जो तू मोह से अज्ञान नहीं है तो इनके ऊपर प्रहारकर, हे महावीर! पूर्व समय में राजाओं के मिलाप में जो तुमने कहा है, कि दुर्योधन की सेनाके भीष्म, द्रोणाचार्य आदि लोगों को उनके उन सहायकों समेत मारूँगा जो कि मुझसे युद्ध को करेंगे, हे शत्रुंजय, अर्जुन! तू अपने उस वचन को सत्य कर तू इधर उधर छिन्न भिन्न हुई अपनी सेना को देख, युधिष्ठिर की सेना में युद्ध कुशल मृत्यु के समान भीष्म को देखकर इन भागते हुए राजाओं को देखो, यह सब भय से पीड़ित होकर ऐसे नाश हुए जाते हैं जैसे कि छोटे २ मृग सिंह को देखकर भय से मरजाते हैं यह कृष्ण के वचन सुनकर अर्जुन ने वासुदेवजी को उत्तर दिया, कि आप घोड़ों को उधर चलाओ जहां भीष्मजी हैं मैं अब इस सेनारूपी समुद्र को उतरकर इस अजेय और वृद्ध कौरवों के पितामह को गिराऊँगा हे राजन्! तब तो माधवजीने चांदी के समान श्वेतरंग के घोड़ों को उधर ही को चलाया जिधर सूर्य के समान कठिनता से देखने के योग्य भीष्मजी थे, इसके अनन्तर भीष्म के निमित्त युद्ध में प्रवृत्त महाबाहु अर्जुन को देख के युधिष्ठिर की वह बड़ी भारी सेना फिर लौट आई, ५० तदनन्तर सिंहसमान गर्जते कौरवों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने शीघ्र ही बाणों की वर्षा से अर्जुन को ऐसा ढक दिया, कि जिस का रथ ध्वजा सारथी समेत क्षण भर में बाणों से आच्छादित होकर दिखाई नहीं दिया, फिर तो भ्रान्ति से रहित बुद्धिमान् वासुदेवजी ने धैर्यता में नियत होकर भीष्म ही के शायकों से उन्हीं के धनुष को काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया, फिर उस टूटे हुए धनुषवाले पितामह भीष्म ने शीघ्र ही दूसरे बड़े भारी धनुष को लेकर एक निमिष में ही तैयार कर लिया, तदनन्तर उस बादल के समान गर्जनेवाले धनुष को भीष्म ने दोनों

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हाथों से खींचा फिर क्रोधयुक्त अर्जुन ने उनके उस धनुष को भी काटा, अर्जुनकी इस हस्तलाघवता को देखकर भीष्मजी ने प्रशंसा की कि हे महाबाहो, अर्जुन! धन्य है हे पाण्डुनन्दन! तुमको धन्य है, हे संसार के धनों के विजय करनेवाले! यह बड़ा कर्म तुझी में है योग्य है योग्य है हे पुत्र! मैं तेरे इस कर्म से अत्यन्त प्रसन्न हूँ तू मेरे संग युद्धकर इस रीति से इस वीर ने अर्जुन की प्रशंसा करके फिर दूसरे बड़े धनुष को लेकर अर्जुन के रथ पर बाणों की वर्षा करी, फिर वासुदेवजी ने भीष्मके बाणों को निष्फल करके तेजमण्डलों में घूमते हुए घोड़ों के चलाने में बड़ा पराक्रम दिखाया, इसके पीछे भीष्मजी ने अपने तीक्ष्ण बाणों से वासुदेवजी को और अर्जुन को बहुत घायल किया, उन बाणों से अत्यन्त घायल वह दोनों पुरुषोत्तम ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि गर्जते और शाखाओं के घात से चिह्नित दो उत्तम बैल होते हैं, इसके पीछे अत्यन्त क्रोध में भरे हुए भीष्मजी ने लाखों बाणों से इन दोनों कृष्ण, अर्जुन की दिशाओं को रोक दिया, फिर वारंवार अत्यन्त अहंकार और क्रोधयुक्त भीष्मजीने बड़े ऊंचे शब्द से हँसकर तीव्र बाणों से वृष्णिवंशी श्रीकृष्णजी को कंपायमान करदिया, इसके अनन्तर महाबाहु श्रीकृष्णजी युद्ध में भीष्मजी के महापराक्रम को देख कर और अर्जुन के मृदु युद्ध को अच्छी रीति से विचार और युद्ध में वारंवार बाणों को छोड़ते हुए दोनों सेनाओं के बीच को पाकर पाण्डवों की उत्तम सेना को और सेना के उत्तम २ शूरवीर पुरुषों को सूर्य के समान संतप्त करते वा मारते, युधिष्ठिर की सेना में प्रलय मचाते हुए भीष्म को देखकर उस बड़े ज्ञानी शत्रुओं के मारनेवाले क्षमाशील भगवान् केशवजी ने, यह चिन्ता करी कि युधिष्ठिर की सेना नहीं रहैगी क्योंकि भीष्मजी एक ही बाण में युद्ध के बीच दैत्य, दानवों को भी नाश करनेवाले हैं तो सेना और सहायकोंसमेत पाण्डवों का मारडालना उनको कितनी बड़ी बात है और इन महात्मा पाण्डवों की सेना भागी भी जाती है, और यह कौरवलोग सोमकों को युद्ध से भागे हुए देखकर बड़े प्रसन्नचित्त पितामह को आनन्द देते हुए चारोंओर से दौड़े चले आते हैं सो अब मैं भी शस्त्र धारण करके पाण्डवों के निमित्त भीष्म को मार के महात्मा पाण्डवों के इस महाभार को दूर करूंगा, और अर्जुन भी युद्धमें तीव्र बाणों से पीड्यमान है वह इस युद्ध में भीष्मजी की महत्त्वता से करने के योग्य कर्म को नहीं जानता है, इस प्रकार उन श्रीकृष्णजी के विचार

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करते ही में फिर अत्यन्त क्रोधरूप भीष्मजीने अर्जुन के रथपर बाणों को फेंका, उन बाणों की अत्यन्त आधिक्यता से सब दिशा ढकगईं उस समय आकाश और दिशा कुछ भी दिखाई नहीं देते थे और न किरणसमूहधारी सूर्य दिखाई देता था। वायु महातुमुल हुआ, सब दिशाओं में धुआंसा व्याप्त होकर महाव्याकुलता मचगई और द्रोणाचार्य, विकर्ण, जयद्रथ, भूरिश्रवा, कृतवर्मा, कृपाचार्य, श्रुतायु, अम्बष्ठपति, बिन्द, अनुबिन्द, सुदक्षिण, पूर्वी राजा, सौवेरों के गण, सर्व विशातगण, क्षुद्रकमालव यह सब राजा लोग शीघ्र ही भीष्मजी के आज्ञावर्त्ती होकर अर्जुन की ओर को दौड़े। जब सात्यकी ने उस अर्जुन को घोड़े, हाथी, रथ और पदातियों के लाखों जालों से और हाथियों के स्वामियों से घिरा हुआ देखा अर्थात् शूरवीरों में श्रेष्ठ, शस्त्रधारियों में उत्तम सात्यकी उन अर्जुन और वासुदेवजी को रथ, घोड़े, हाथी और सम्मुख दौड़नेवाले पदातियों से घिरे हुए देखकर शीघ्रही उनके समीप गया। वहां जाकर उस शूरवीर धनुषधारी सात्यकी ने उन सेनाओं के सम्मुख पहुँच कर, अर्जुन की ऐसी सहायता की जैसी कि विष्णु भगवान् इन्द्र की सहायता करतेहैं फिर उस महाबली सात्यकी युधिष्ठिर की रथ, हाथी, घोड़े और पदातियों समेत उस भागनेवाले सेना को जिसकी सब ध्वजा गिरी हुईं और शूरवीर भीष्मजी से भयभीत हुए देखकर यह वचन बोला कि हे क्षत्रियो! कहां जाते हो पुराणों ने यह धर्म श्रेष्ठ पुरुषों का नहीं कहा है। हे श्रेष्ठ वीर लोगो! अपने प्राणों को मत त्यागो, अपने वीरधर्मों से पुरुषार्थ करो, तुम अर्जुन को मृदु युद्धकर्त्ता और भीष्म को भयंकर युद्ध कर्त्ता और चारोंओर से गिरते हुये कौरवोंको देखकर भागे जाते हो यह वचन सुनकर सब यादवों के भर्त्ता महात्मा श्रीकृष्णजी बड़ी प्रशंसा करके उस यशस्वी सात्यकी से बोले कि हे सेनापतियों में बड़े वीर! जो जातेहैं वह चले जायँ और जो नियत हैं वह भी चाहे चले जायँ, अब युद्ध के बीच रथ, हाथी, घोड़े और सब सेनासमेत भीष्म को और द्रोणाचार्य को मेरेहाथ से गिरे हुये देखो। हे यादव, सात्यकी! कौरवों की सेना में कोई ऐसा नहीं है जो अब युद्ध में मुझ क्रोधयुक्त के साथ युद्ध करने को समर्थ हो, इस कारण अब मैं रथ के भयकारी चक्र को अर्थात् पहिये को लेकर इस महाव्रत भीष्म के प्राणों को हरूंगा। हे सात्यकी! रथियों में बड़ेवीर भीष्म और द्रोणाचार्य को सेना के समूहोंसमेत इस युद्धभूमि में मारकर, राजा युधिष्ठिर, अर्जुन, भीमसेन, नकुल और सहदेव

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

की प्रसन्नता को करूँगा, अब मैं प्रसन्नमन होकर धृतराष्ट्र के सब पुत्रों को और जो जो उन के सहायक राजा हैं उनको मारकर, अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर को राज्य से युक्त करूंगा, यह कहकर वासुदेव श्रीकृष्णजी सुन्दररूप, सूर्य के समान प्रकाशित, हजारवज्र के सदृश कठोर, छुरे के समान तीक्ष्ण घेरा रखनेवाले चक्र को ऊंचा घुमाकर और घोड़ों को छोड़ रथ से उतर चरणों से पृथ्वी को अत्यन्त कम्पायमान करते हुए महात्मा भीष्म की ओर को ऐसे चले जैसे कि युद्धभूमि में महामदोन्मत्त अहंकारी गजेन्द्र के मारने को सिंह दौड़े, अर्थात् इन्द्रके छोटे भाई शत्रुहन्ता कृष्णजी महाक्रोधित होकर सेनाके बीच भीष्मजी के सम्मुख दौड़े, उस समय शरीर में वर्त्तमान उत्तम पीताम्बर कैसा प्रकाशमान हुआ जैसे कि आकाश में सुन्दर अलंकारों से युक्त बादल विलम्ब तक ठहरा हुआ हो, और इन श्रीकृष्णजी का वह सुदर्शनचक्ररूप कमल जिसकी बड़ी नालही सुन्दर भुजा थीं ऐसा शोभायमान विदित हुआ जैसे कि नारायण की नाभि से उत्पन्न तरुण सूर्यके समान वर्णवाला नवीन कमल शोभायमान हुआ था वह कमल श्रीकृष्णजी के क्रोधरूप सूर्य के उदयसे खिला हुआ और छुराओंसे युक्त तीव्र नोकरूप पत्तेवाला उनके शरीररूपी बड़े तड़ाग में नियत नारायण की भुजा-रूपी नाल रखनेवाला शोभायमान हुआ ऐसे चक्रधारी उच्चस्वर से गर्जना करनेवाले महेन्द्र के छोटे भाई श्रीकृष्णजी को देखकर सब जीव यह चिन्ता करके अत्यन्त पुकारे कि यह कौरवों की प्रलय वर्त्तमानहुई। फिर यह चक्रधारी लोकों के स्वामी जीव लोक के नाश करने को सम्मुख गिरतेहुए ऐसे प्रकाश-मान हुये जैसे कि सब जीवमात्रों का भस्म करनेवाला अग्नि देदीप्यमान होता है ऐसे पुरुषोत्तम देवदेव चक्रधारी को आता देखकर, धनुषबाण हाथमें रखनेवाले रथारूढ़ भीष्मजी निर्भयता से बोले कि देवेश्वर, हे जगन्निवास, हे शार्ङ्गधन्वन्, गदाखड्गधारिन्! आओ मैं तुमको नमस्कार करता हूं हे लोकनाथ! हे जीवोंके आश्रय, रक्षा के स्थान! तुम युद्ध में हठ करके मुझको इस उत्तम रथ से गिराओ हे श्रीकृष्णजी! अब तुम्हारे हाथ से मुझ मरे हुए का इसलोक और परलोक में कल्याणहै, हे अन्धक वृष्णी क्षात्रियोंके नाथ! मैं तीनोंलोकमें प्रसिद्ध प्रभाववाला होकर अङ्गीकार हुआ हूं बड़े वेग से दौड़तेहुए श्रीकृष्णजी भीष्म के इस वचन को सुनकर उनसे बोले कि अब तुम्हीं इस संसार के नाशके मूल हो सो तुम अब दुर्यो-धन का नाश करो क्योंकि दुष्ट द्यूत का खेलनेवाला राजा धर्ममार्ग में नियत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मन्त्री से निवारण करने के योग्य है अथवा जो काल से विपरीतबुद्धि होकर धर्म को उल्लङ्घन करके चले वह कुल का कलंकी है वह त्याग ही करने के योग्य है इसबात को सुनकर वह राजा देवव्रत भीष्मजी यादवों में बड़ेवीर परम देव देव श्रीकृष्णजीसे यह वचन बोले कि यादवों ने अपने प्रयोजन के सिद्ध करने के लिये कंस को मारा वह राजा भी समझाने से नहीं समझा प्रारब्ध से दुःख के लिये जिसकी विपरीत बुद्धि है उसका अभीष्ट सुननेवाला कोई नहीं है, इसके पीछे लम्बे और मोटे भुजावाले शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने रथ से कूदकर पैदल चलके मोटे ऊंचे और लम्बे भुजावाले यादवों में बड़े वीर हरि को दोनों भुजाओं से पकड़लिया, तब आदिदेव आत्मयोगी और अत्यन्त क्रोधरूप पकड़े हुए बिष्णुजी अर्जुन को लेकर ऐसी शीघ्रता से चले जैसे कि बड़ा वायु अकेले वृक्ष को लेकर चलता है हे राजन्! फिर महात्मा अर्जुन ने बल से दोनों चरणों को पकड़कर बड़ी शीघ्रता से भीष्मजीकी ओर दौड़तेहुए को दशवें पादचिह्न पर बड़ी सुगमतापूर्वक बल से पकड़ लिया, सुनहरी जड़ाऊ मालाधारी प्रसन्नचित्त अर्जुन उन ठहरे हुए श्रीकृष्णजी को दण्डवत् करके बोले कि आप क्रोधको दूर करिये हे कृष्ण! आपही पाण्डवों की गतिहो आप अपने प्रण के अनुसार कर्म को मत छोड़ो, हे केशवजी! मैं पुत्र और भाइयों की शपथ खाताहूँ हे इन्द्र के छोटे भाई! मैं अवश्य आपके साथ में होकर कौरवों का नाश करूँगा तदनन्तर उसके प्रण और नियम को सुनकर जनार्दनजी महाप्रसन्न होकर उस कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुन के अभीष्ट सिद्ध करने में प्रवृत्त हुए और चक्र समेत रथपर सवार हुए फिर उन लगामों को हाथ में लेनेवाले शत्रुओं के मारनेवाले उन श्रीकृष्णजी ने हाथ में पाञ्चजन्य शंख को लेकर ऐसी ध्वनिकरी कि जिसके कारण सब दिशाओं समेत आकाश शब्दायमान होगया उस निष्क बाजूबंद और कुण्डलों से अलंकृत रज से भरे पक्ष्मनेत्र विशुद्ध दंष्ट्रायुक्त शंखको धारणकिये श्रीकेशवमूर्तिको देखकर महाबली कौरवलोग पुकारे तदनन्तर मृदंग, भेरी, पटहाओं के वा रथ के चक्रों के और दुन्दुभियों के भयकारी शब्द शंखध्वनियों समेत कौरवों की सेना में भी होने लगे और अर्जुन के गाण्डीव धनुष का शब्द बादल की गर्जना के समान आकाश और दिशाओं में व्याप्त हुआ, तदनन्तर पाण्डव अर्जुन के धनुष से निकले हुए बहुत निर्मल और प्रकाशित बाण सब दिशाओं में चले तब कौरवों का राजा दुर्योधन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जिसने बाण हाथ में ऊँचा कररक्खा था वह अपनी सेना वा भीष्म भूरिश्रवा को साथ में लेकर अर्जुन के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि वन को जलाता हुआ अग्नि जाता है इसके पीछे भूरिश्रवा ने सुवर्ण पुङ्खवाले सात भल्ल अर्जुन के ऊपर फेंके, और दुर्योधन ने बड़े शीघ्रगामी भयकारी तोमर को और शल्य ने गदा को और भीष्मजी ने बरछी को मारा फिर अर्जुन ने अपने सात बाणों से भूरिश्रवा के चलाये तीव्र सातों बाणों को काटकर क्षुरप्र नाम बाण से दुर्योधन के छोड़े हुए तोमर को काटा तिस पीछे भीष्मजी की विजय के समान तीव्र बरछी को, और शल्य की फेंकी हुई गदा को अपने दो बाणों से काट कर महाकठिन और अतुल प्रभाववाले अपने गाण्डीव धनुष को दोनों भुजाओं से खींचकर, बुद्धि के अनुसार महाघोर अपूर्व माहेन्द्र अस्त्र को अन्तरिक्ष में प्रकट किया इसके पीछे बड़े धनुषधारी महात्मा मुकुटमालाधारी ने उस उत्तम धनुष के द्वारा निकले हुए बड़े स्वच्छ और तीव्र बाणों के समूहों से सब सेना को हटाया फिर उसके गाण्डीव से निकले हुए शिलीमुख बाण, रथ, हाथी, घोड़े और ध्वजाओं के शिरों को वा धनुषों को और भुजाओं को काटकर शत्रुपक्ष के गज गजेन्द्र और राजाओं के शरीर में प्रवेश कर गये फिर उस मुकुट मालाधारी अर्जुन ने उत्तम धारवाले तीव्र बाणों से दिशा और विदिशाओं को पूर्ण करके गाण्डीव धनुष के शब्दों से उन सबके हृदयों को महापीड़ित किया इस प्रकार उस बड़े भयानक अस्त्रों के युद्ध में शंख दुन्दुभियों के शब्द, गाण्डीव धनुषके शब्दों से छुपगए और रथों के भी महाभयानक शब्द मन्द होगये इसके पीछे उस गाण्डीव के शब्दों को जानकर नरों में वीर राजा विराट आदि और पाञ्चाल और द्रुपद यह महापराक्रमी उस स्थान पर आये और आपके पुत्रों की भी सब सेना वहां आई जहां कि गाण्डीव के बड़े शब्द होरहे थे और सबोंने अपने को न्यून ही समझा कोई प्रतिपक्षी उसके सम्मुख नहीं गया हे राजन्! उस बड़े भयानक युद्ध में रथ वा सूतोंसमेत बड़े २ शूरवीर मारे गये और सुनहरी जड़ाऊ फूलों से अलंकृत बड़ी ६ पताका रखनेवाले हाथी भी नाराचों के आघात से झुलहुए से होकर अर्जुन के हाथ से कटे हुए शरीर से निर्जीव होकर अकस्मात् गिरपड़े, सेनाओं के मुखों पर राजा लोगों की ध्वजायें अर्जुन के भयानक वेग और तीक्ष्ण धारयुक्त निशित फलवाले बाणों से अत्यन्त विध्वंस हो गईं और यन्त्र कटे हुए हजारों इन्द्रजाल भी वारंवार नाश

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को प्राप्त हुए और युद्ध में रथ, हाथी, घोड़े और पदातियों के समूह भी उस अर्जुन के बाणों से घायल और असामर्थ अङ्गों को विना साधे शीघ्र ही पृथ्वी पर गिरपड़े, हे राजन्! ऐसे बड़े युद्ध में उस ऐन्द्र नाम उत्तम अस्त्र से कवच टूटे और शरीर जर्जरीभूत होगये तदनन्तर अर्जुन के तीव्र बाणसमूहों से मनुष्यों के देह में शस्त्रों से निकले हुए रुधिररूपी जलवाली नदी वहां बह निकली उस नदी में मनुष्यों की वसा तो जलका फेन था वह नदी तीव्रता से बड़ी प्रवाहवाली और मृतक हाथी और घोड़ों के शरीरों के किनारेवाली मनुष्यों के आंत भेजे से उत्पन्न मांसरूप कीच को धारण किये हुए थी और बहुतसे राक्षसों के अवताररूप राजाही उसके वृक्ष थे, और शिरों के कपालों से व्याकुल मृतक बालरूप घास से शोभित देशों से युक्त शरीरों के समूहों से हजारों माला रखनेवाली हज़ारों प्रकार की कवचरूपी लहरों से व्याकुल और मरे हुए मनुष्य हाथी घोड़े और मनुष्यों के हाड़रूप उसमें कङ्कड़ और रेत वर्त्तमान थे १२८ मनुष्यों ने उस शृगाल, कङ्क, गिद्ध और कच्चे मांस खानेवाले राक्षस, पशु, पक्षी आदि के समूह वा छोटे व्याघ्रों से संयुक्त किनारेवाली कठिन वैतरणीरूपी नदी को देखा, अर्जुन के बाणसमूहों के द्वारा कटे हुए कपाल वसा रुधिर से बहने वाली अत्यन्त भयानक नदी को देखकर अथवा इसी प्रकार अर्जुन के हाथसे मृतक शूरवीरवाली कौरवी सेना को देखकर वह चंदेरी पाञ्चाल और मत्स्यादिक देशीय वीर और सब शूरवीर पाण्डव विजय में बुद्धि रखने और पुरुषों में बड़े वीर उन कौरवी सेना के बड़े शूरवीरों को डराते हुए सब एक साथ ही महागर्जना करते हुए, शत्रुओं को भय उत्पन्न करनेवाले मुकुटधारी अर्जुन के हाथ से मृतक वीरोंवाली सेना को देखकर और जैसे कि मृगों के यूथों को सिंह भयभीत करे उसी प्रकारसेनापतियों की सेना को भयभीत करके वह अति प्रसन्नमन गाण्डीव धनुषधारी और जनार्दनजी अत्यन्तता से गर्जे तदनन्तर शस्त्रों से अत्यन्त घायल अङ्ग भीष्म वा द्रोणाचार्य वा दुर्योधन बाह्लीक आदि कौरवों ने निशा की सन्धि को देखकर और उस प्रलय के समान असह्य और घोर फैले हुए ऐन्द्रास्त्र को देखकर अथवा सूर्य की अरुणतासे युक्त संधिगत रात्रि को देखकर युद्ध से निवृत्ति करी और नरों का इन्द्र अर्जुन भी लोक में यशी और कीर्त्तिमान् होकर शत्रुओं का मर्द्दन करके युद्धकर्म को समाप्त करनेवाला अपने निज भाइयोंसमेत रात्रि के समय अपने डेरे को गया इसके पीछे रात्रि के

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रारम्भ में कौरवों के बड़े घोर शब्द उत्पन्न हुए, अर्जुन ने दश हज़ार रथियों को मारकर सात सौ हाथी मारे और सब पूर्वदेशीय शूरवीर सौवीरगणों समेत क्षुद्रक मालवों को मारा, यह अर्जुन ने ऐसा बड़ाभारी कर्म किया जैसा कि दूसरा कोई भी नहीं करसक्ता हे राजन् ! श्रुतायु और अम्बष्ठपति, दुर्मर्षण, चित्रसेन, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, सैन्धव, बाह्लीक, भूरिश्रवा, शल्य, शल और भीष्मजी समेत सैकड़ों योद्धाओं को युद्ध में उस हस्तलाघवी महाबली लोक महारथी कोपित अर्जुन ने विजय किया हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! आपके सब शूरवीर हज़ारों मसालें बलवा के इस बात को कहते हुए कि किरीटी अर्जुन से सब शूरवीर भयभीत हुए हैं कौरवों की सेना के डेरों में गये ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि तृतीयदिवसयुद्धे नाम एकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

साठवां अध्याय ।

चौथेदिनके युद्ध का प्रारम्भ ॥

संजय बोले कि, हे भरतवंशिन् ! इसके अनन्तर प्रातःकाल के समय महात्मा भीष्मजी जिनका क्रोध शत्रुओं के ऊपर उत्पन्न हुआ वह सब सेना समेत भरतवंशियों की सेना के आगे गये द्रोणाचार्य, दुर्योधन, बाह्लीक, दुर्मर्षण, चित्रसेन, महाबली जयद्रथ और अन्य राजा लोग सेनाओं के समूहों समेत चारोंओर से भीष्मजी के पास आये, हे राजेन्द्र, धृतराष्ट्र ! वह भीष्मजी उन महापुरुष महारथी तेजस्वी पराक्रमी राजाओं के बीच में कैसे शोभायमानहुए जैसे कि देवताओंके मध्य में देवराज इन्द्र शोभित होताहै, उस सेनाके आगे लगीहुई बड़े२ हाथियों के कन्धोंपर वर्त्तमान लाले, पीले, काली, श्वेत कम्पायमान पताका भी शोभित हुईं और वह सेना राजा भीष्म वा महारथी वा हाथी घोड़ों से विद्युद्धारी बादल के समान ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि जल के आगमन में बादलों से भरा हुआ आकाश होताहै इसके पीछे भीष्मजी से रक्षित राजा लोग युद्ध के निमित्त अर्जुनके सम्मुख गये और कौरवी सेनाभी अकस्मात् ऐसे चलती हुई जैसे कि गङ्गाजी का भयानक वेग चलताहै, फिर कपिध्वज महात्मा अर्जुन ने दूरहीसे उस हाथी, घोड़े रथरथी और पदातियों समेत बड़े वेग से भरेहुए बादल के समान नानाप्रकार के पक्षों समेत व्यूह को देखा, औरसेनाओं के आगे खड़ा हुआ दोनों सेनाओं से संयुक्त महात्मा वीर अर्जुन श्वेत घोड़े और ध्वजाधारी रथ की सवारी से सुशोभित होकर सब शत्रुओं की सेना की ओर चला तब आपके पुत्रों समेत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सब कौरव लोग उस सब सामान से शोभित कपिध्वज अर्जुन को और यादव-पति श्रीकृष्ण सारथी से ऊंचे की ओर बाँधे हुए पत्रवाले रथ को युद्धभूमि में देखकर महाव्याकुल हुए आपके पुत्र और सब शूरवीरों ने लोक महारथी शस्त्रधारी सेना को विध्वंस करनेवाले मुकुटधारी अर्जुन से रक्षित चार २ मत्त हाथियों से संयुक्त उस व्यूहराज को देखा, जैसे कि प्रथम दिन में कौरवों में श्रेष्ठ धर्मराज ने व्यूह को बनाया था उस प्रकार का व्यूह इस लोक में मनुष्यों ने प्रथम कभी न देखा था न सुना था, इसके पीछे सब सेना के बीच युद्धभूमि में बड़े बल से बजाई हुई हजारों भेरी शब्दायमान हुईं और शंखों के वा हजारों तूर्यों के शब्द भी बड़े वेग से हुए, इसके पीछे वीरों के छोड़े हुए बाणों के शब्दों से संयुक्त चलाये हुए धनुषों के और शंखों के बड़े शब्दों ने क्षणमात्र में ही भेरी और ढोलों के कठिन शब्दों को गुप्त कर दिया, शंखों के उन शब्दों से सब अन्तरिक्ष व्याप्त होगया और शीघ्र ही पृथ्वी से धूलों के समूह आकाश की ओर उड़े तदनन्तर बड़े वितानों से प्रकाश को देखकर वीर लोग अकस्मात् दौड़ उठे, रथी रथी से भिड़कर घोड़े समेत रथी ध्वजा को भी लेकर गिरा और हाथी से मारा हुआ हाथी गिरा इसी प्रकार पदाती से माराहुआ पदाती गिरा, और घोड़े के सवार परस्पर में परशे और खड्गों से लड़कर पृथ्वी पर मारे गये, और सुनहरी ताराओं के समूहों से शोभायमान सूर्य की समान प्रकाशित ढालें, परश्वध, प्रास और खड्गों से खण्ड खण्ड होकर पृथ्वी पर गिरीं, और कितने ही हाथी हाथियों के दांतों से चबाये हुये पृथ्वी पर गिरे और रथी के बाण से रथी पदाती के बाण से पदाती पृथ्वी पर गिरे, हाथियों के समूहों के वेग से कम्पायमान वा सवारों और हाथियों के दांत वा अङ्ग वा जङ्घाओं से घायल सवार और पदातियों के आक्रन्दित शब्दोंको सुनकर मनुष्य अनेकप्रकार से व्याकुलहुए जिसमें हाथी, घोड़े और रथों की व्याकुलता और सवार पदाती वीरों की विध्वंसता थी ऐसे मुहूर्त में महारथियों से घिरे हुए भीष्मजी ने हनुमान्जी की ध्वजा धारण करनेवाले अर्जुन को देखा पांचताल की उन्नत ध्वजा धारण करनेवाले भीष्मजी उन उत्तम घोड़ों की तीव्रता से बड़ेभारी अस्त्र को लिये बिजली से चमकपर अर्जुन के सम्मुख दौड़े और इसी प्रकार कृपाचार्य, शल्य, विविंशति, दुर्योधन, सोमदत्त यह सब भी द्रोणाचार्यजी को आगे करके इन्द्र के समान महाबली इन्द्रपुत्र अर्जुन के सम्मुख गये, इसके पीछे सर्व अस्त्रों का ज्ञाता सुवर्ण का

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जड़ाऊ कवच पहरनेवाला महाशूर अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु रथ के सेनामुख से निकल कर बड़े वेग से उन सबके सम्मुख चला, फिर वह असहिष्णु शील कर्मी अभिमन्यु उन महाबलवानों के बड़े बड़े अस्त्रों को काटकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि महामन्त्र आहुति से संयुक्त महाज्वालामान सभा में वर्त्तमान अग्नि देवता होता है तदनन्तर वह महापराक्रमी भीष्म शीघ्र ही युद्ध में शत्रुओं के रुधिररूपी जल से उस नदी को पूर्ण करके महारथी अर्जुन और अभिमन्यु को भी उल्लङ्घन कर गया, फिर मुकुट मालाधारी अर्जुन ने बड़े हठ को करके गाण्डीव धनुष के शब्द से महाशब्दायमान विपाठ नाम बाणों के जाल से उन प्रबल शत्रुओं के जालों का नाश किया, फिर कर्मफल के चाहनेवाले हनुमान्‌जी की ध्वजा रखनेवाले महात्मा अर्जुन ने बड़े तीव्रधारवाले स्वच्छ भल्लों से उस सर्व धनुर्धारियों में श्रेष्ठ भीष्मजी के ऊपर वर्षा करी, इसी प्रकार आपके पुत्रों ने भी अन्तरिक्ष में अर्जुन के बड़े अस्त्रजालों को भीष्मजी के हाथ से ऐसे टूटे और व्यर्थ हुए देखा जैसे कि सूर्य से तिरस्कार किया हुआ अन्धकार होता है इसी रीति से प्रसन्नचित्त कौरव संजय आदि सब लोगों ने उन सत्पुरुषों में श्रेष्ठ भीष्म और अर्जुन दोनों के इस प्रकार के द्वैरथ युद्ध को जो कि भयकारी धनुषों के शब्दों से संयुक्त था देखा ॥ २६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मार्जुनद्वैरथे षाष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥

इकसठवां अध्याय ।

संजय बोले हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! उन अश्वत्थामा वा भूरिश्रवा, शल्य, चित्रसेन और शायमन के पुत्र इन सबने अभिमन्यु से युद्ध किया, मनुष्यों ने उस अकेले अभिमन्यु को इन पांचों व्याघ्ररूपों से लड़ता हुआ ऐसा देखा जैसे हाथियों से लड़ता हुआ एक सिंह का बच्चा होता है, बड़ी लक्ष भेदनपूर्वक शूरता और अस्त्रों के कारण पराक्रम और हस्तलाघवता में अभिमन्यु के समान कोई भी नहीं हुआ, इसके पीछे युद्ध में सावधान अर्जुन ने अभिमन्यु को पराक्रम करनेवाले शत्रुओं का ऐसा मर्दन करनेवाला देखकर बड़े वेग से सिंहनाद किया, हे राजेन्द्र! आपके पुत्रों ने इसी रीति से सेना को पीड्यमान करता आपके पोते अभिमन्यु को देखकर चारों ओर से आकर रोक लिया, फिर शत्रुसंतापी अर्जुन बहुत हर्षित मन के समान अभिमन्यु समेत बल पराक्रमयुक्त आपके पुत्रों की सेना के सम्मुख गया, युद्ध में शत्रुओं से संग्राम करने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वाले उस अर्जुन का बड़ा धनुष हस्तलाघवता के मार्ग में नियत होके सूर्य के समान प्रकाशमान दिखाई दिया, उसने एक बाण से अश्वत्थामा को और पांचबाणों से शल्य को घायल करके आठ बाणों से सायमन के पुत्र की ध्वजा को गिराया और सोमदत्त की फेंकी हुई सुनहरी दण्डवाली सर्पाकृति शक्ति को तीव्रबाणों से काटा, फिर अर्जुन के पुत्र ने बाण के फेंकनेवाले शल्य के महाघोर सैकड़ों बाणों को रोककर उसके चारों घोड़ों को मारा फिर तो अत्यन्त क्रोध में भरे हुए भूरिश्रवा, शल्य, अश्वत्थामा, सायमन का पुत्र और शल उस अभिमन्यु के महाप्रबल पराक्रम के आगे ठहर न सके, इसके पीछे हे राजन्! आपके पुत्र के कहने से धनुर्वेद के ज्ञाता युद्ध में अजेय पचीस हज़ार त्रिगर्त देशी और मद्र देशियों ने केकय देशियों समेत उस पुत्र समेत अर्जुन के मारने की इच्छा से चारों ओर से उनको घेर लिया, हे राजन्! वहां शत्रुंजयी सेनापति धृष्टद्युम्न ने उन पिता पुत्रों को रथों से चारों ओर को घिरा हुआ देखा तदनन्तर वह शत्रुसंतापी सेनापति महाक्रोधित होकर हज़ारों घोड़े रथ हाथियों के पतियों से युक्त अपने धनुष को चढ़ाय सेना को आज्ञा देकर उस मद्र और केकय देशियों के सम्मुख गया, उस कीर्त्तिमान् दृढ़धनुषधारी से रक्षित रथ हाथी घोड़े से युक्त वह युद्ध करनेवाली सेना शोभायमान हुई पाञ्चालकुलावतंस उस धृष्टद्युम्न ने तीन बाण से अर्जुन के सम्मुख जानेवाले कृपाचार्य को घायल किया, फिर दश तीक्ष्ण बाणों से मद्रकों को घायल करके शीघ्रही एक भल्ल से कृपाचार्य के सारथी को मारा, फिर उस शत्रुसंतापी ने बड़े तीक्ष्ण नाराचों से पौर के पुत्र दमन को मारा इसके पीछे चित्रसेन ने दुर्मद धृष्टद्युम्न को दश बाणों से और उसके सारथी को भी दश बाणों से घायल किया फिर उस महाघायल धृष्टद्युम्न ने होठों को चबाकर बड़े तीक्ष्ण भल्ल से इसके धनुष को काटा, हे राजन्! इसी प्रकार इसको भी पचीस बाणों से पीड्यमान करके उसके घोड़ों को दोनों सारथियों समेत मार डाला, हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! फिर उस मृतक घोड़ेवाले रथमें बैठेहुए चित्रसेनने उस द्रुपदके यशस्वी पुत्र को देखा, और देखते ही रथ से उतर पैदल होकर शीघ्र ही महाघोर खड्ग को धारण करके रथ पर बैठे हुए धृष्टद्युम्न की ओर को चला, उस महाभयानक खड्गधारी को आता हुआ देखकर वहां पाण्डव और धृष्टद्युम्न ने उसको सूर्य के समान प्रकाशित और मतवाले हाथी के समान महाबलीरूप

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देखा, फिर शीघ्रता करनेवाले सेनापति धृष्टद्युम्न ने उस महाकालरूप सम्मुख आनेवाले घोर खड्गधारी के शिर को गदा से तोड़ा, हे राजन्! वह अपने खड्ग और ढाल समेत मरकर पृथ्वी पर गिरा, राजा धृष्टद्युम्न ने उसको गदा की नोक से मारकर बड़े यश को पाया, हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! उस बड़े धनुषधारी महारथी राजकुमार के मरनेपर आपकी सेना में बड़ा हाहाकार हुआ इसके अनन्तर क्रोध में भरा हुआ सायमनी अपने पुत्र को मृतक देखकर बड़े वेग से धृष्टद्युम्न के सम्मुख दौड़ा तब सब राजा वा कौरव और पाण्डवों ने युद्ध में जुटेहुए उत्तम रथों समेत दोनों शूरवीरों को देखा, इसके पीछे शत्रुविजयी सायमनी ने महाक्रोधित होकर तीन बाणों से धृष्टद्युम्न को ऐसा घायल किया जैसे कि अंकुश आदि से बड़े हाथी को करते हैं इसी प्रकार युद्धभूमि को शोभित करने वाले क्रोधरूप शल्य ने उस शूरवीर धृष्टद्युम्न को छाती में घायल किया इस पीछे युद्ध होना जारी हुआ ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि एकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

बासठवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि, हे संजय! मैं प्रारब्ध को उपाय से भी बड़ा मानता हूँ जो मेरे पुत्र की सेना पाण्डवों की सेना से मारी जाती है हे सूत! तू सदैव हमारे शूरवीरों को मृतक कहता है और पाण्डवों को सदैव अत्यन्त प्रसन्न और अक्षत कहा करता है, हे संजय! अब हमारे शूरवीरों को गिरते गिराते दोनों प्रकार से पराक्रम से रहित कहता है इसीसे पाण्डव लोग सामर्थ्य के अनुसार लड़ते विजय में उपाय करते हुए जय को पाते हैं और मेरे बेटे पराजय को पाते हैं, हे तात! सो मैंने दुर्योधन से उत्पन्नहुए दुःखके सहने के योग्य अनेक दुःखों को वारंवार सुना, हे संजय! मैं उस उपाय को नहीं देखता हूं जिसके द्वारा पाण्डवों की हार होय और मेरे पुत्रों की विजय होय, संजय बोले कि हे राजन्! तुम सावधानी से सुनो कि यह मनुष्यों का रथ और घोड़े, हाथी आदि का नाश होना तुम्हारे ही अन्याय का फल है, शल्य के नौ बाणों से पीड़ित अत्यन्त क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने लोहे के तीर से मद्रदेश के राजा को पीड्यमान किया, वहां हमने धृष्टद्युम्न के अपूर्व पराक्रम को देखा जो युद्ध में शोभा पानेवाले शल्य को शीघ्र ही हटादिया, किसी ने युद्ध में इन दोनों क्रोधयुक्तों के अन्तर को नहीं देखा दोनों का युद्ध एक मुहूर्त तक अच्छा हुआ इसके पीछे हे महाराज! शल्य

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ने युद्धभूमि में पीले तीव्रधारवाले भल्ल से धृष्टद्युम्न के धनुष को काटकर इसको बाणों की वर्षा से ऐसे ढकदिया जैसे कि वर्षाऋतु में जल भरेहुए बादल पर्वत को ढकदेते हैं फिर धृष्टद्युम्न के पीड्यमान होने पर अत्यन्त क्रोधरूप अभिमन्यु बड़े वेग से राजा मद्र के रथ की ओर दौड़ा, तदनन्तर महासाहसी क्रोध में भरे हुए अभिमन्यु ने राजा मद्र के रथ को पाकर आर्त्तायनि को तीन पैने तीरों से घायल किया हे राजन् ! फिर तो अभिमन्यु के दबाने की इच्छा से आप के पुत्र शीघ्रही राजा मद्र के रथ के चारों ओर आकर नियत हुए, दुर्योधन, विकर्ण, दुश्शासन, विविंशति, दुर्मर्षण, दुस्सह, चित्रसेन, सुदुर्मुख, सत्यव्रत, पुरोमित्र, महारथी विकर्ण यह सब राजा मद्र के रथ की रक्षा करते हुए युद्ध में नियत हुए, इनको देखकर हे राजन् ! महाक्रोधित भीमसेन, धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पांचों पुत्र अभिमन्यु और माद्री के पुत्र नकुल और सहदेव इन नाना प्रकार के शस्त्रों के प्रहार करनेवाले दशों शूरवीरों धृतराष्ट्र के महारथी दशों पुत्रों को रोककर परस्पर में मारने के इच्छावान् अत्यन्त क्रोधरूप सम्मुख वर्त्तमान हुए हे राजन् ! निश्चय करके आपकी बुरी सलाह करने पर वह लोग युद्ध करने में अत्यन्त प्रवृत्त हुए उन दशों रथियों के और बड़े भय के वर्त्तमान होने पर आप के पुत्र और पाण्डवों के रथी युद्धक्रीड़ा देखनेवाले हुए, वह सब नाना प्रकार के शस्त्रों को चलाते हुए परस्पर में एक एक के सम्मुख गर्जते हुए महारथी लोगों ने अच्छे प्रकार से युद्ध किया, तब तो वह सब अत्यन्त क्रोध में भरे हुए परस्पर मारने के इच्छावान् सम्मुख होकर गर्जना करते हुए एक एक से ईर्षा करनेलगे, हे राजन् ! ज्ञाति के लोग अपने ज्ञातिवालों से परस्पर की ईर्षा के द्वारा युद्ध करते हुए क्रोध से पूर्ण बड़े बड़े अस्त्रों को त्यागते हुए सम्मुख दौड़े, फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने चार तीक्ष्ण बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल किया, दुर्मर्षण ने बीस बाण से चित्रसेन ने पांच बाण से दुर्मुख ने नौ बाण से दुस्सह ने सात बाणों से विविंशति ने पांच बाणों से दुश्शासनने तीन बाणों से घायल किया हे राजन् ! उस शत्रुसंतापी हस्तलाघवता दिखानेवाले धृष्टद्युम्न ने उन प्रत्येकों को पच्चीस पच्चीस बाणों से घायल किया, हे भरतवंशिन् ! फिर अभिमन्यु ने सत्यव्रत और पुरोमित्र को दश दश बाणों से घायल किया फिर माता को प्रसन्न करनेवाले माद्रीनन्दन नकुल और सहदेव ने युद्ध में अपने मामा शल्य को तीव्र बाणों से ढक दिया यह आश्चर्य सा हुआ इसके पीछे हे राजन् ! शल्य

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ने भी उन रथियों में श्रेष्ठ प्रहारकों पर प्रहार कर्म करने के इच्छावान् दोनों भानजों को बहुत से बाणों से ढकदिया, इसके पीछे बाणों से आच्छादित होकर भी वह दोनों नकुल, सहदेव, व्याकुल नहीं हुए फिर महाबली भीमसेन ने दुर्योधन को देखकर युद्ध के अन्त करने की इच्छा से अपनी गदा को हाथ में लिया कैलास पर्वत की समान उस गदा के उठानेवाले भीमसेन को देखकर आपके पुत्र भयभीत होकर भागे, फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने राजा मगधको चेताया और वेगवान् हाथियों की दश हज़ार सेनाके लिये आज्ञा करी राजा दुर्योधन उस हाथियों की सेना समेत राजा मगध को आगे करके भीमसेन के सम्मुख गया भीमसेन उस हाथियों की सेना को चारों ओर से गिराता हुआ देखकर, सिंह के समान उच्चस्वर से गर्जता हुआ हाथ में गदा लिये रथ से उतरा और उस महाभारी लोहे की गदा को पकड़कर, उस सेना को अपना भक्ष्य पदार्थ समझकर हाथियों की सेना के सम्मुख दौड़ा और वहां जाकर अपनी गदा से हाथियों को मारता हुआ ऐसा घूमा जैसे दानवों के बीच वज्रधारी इन्द्र गर्जता हुआ दौड़ता है हृदय के कँपानेवाले भीमसेन के बड़े शब्द से सब मिले हुए हाथी अत्यन्त चलायमान हुए फिर द्रौपदी के पांचों पुत्र और महारथी अभिमन्यु, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न यह सब भीमसेन के पृष्ठभाग की रक्षा करते हुये बाणों की वर्षा को करकर हाथियों के सम्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि पर्वतों पर बादल दौड़ते हैं तीव्र बिजली के समान भल्लों से पाण्डवों ने युद्ध में हाथीवानों के और हाथी के सवारों के शिरों को काटा फिर तो हाथियों से गिरने वाले मृतकों की शोभा पाषाणवृष्टि सी विदित होती थी और हाथियों के कन्धों पर विना शिर के हाथी सवार ऐसे देखपड़े जैसे कि चलतेहुए पर्वतों पर चोटी कटे हुए वृक्ष होते हैं इनके सिवाय हमने धृष्टद्युम्न के मारे हुए वा गिराये हुए पड़ेहुए दूसरे बड़े हाथियों को देखा, इसके पीछे मगध के राजा ने ऐरावत के समान हाथी को युद्ध में अभिमन्यु के रथ पर भेजा उस हाथी को आता हुआ देखके शत्रुओं के विजयी अभिमन्यु ने उसको बाणों से मारकर सुवर्ण के पुङ्खवाले भल्ल से उस हाथी के न रोकनेवाले राजा के शिर को भी काटा, फिर भीमसेन भी उस हाथियोंकी सेनाको मथन करताहुआ ऐसा घूमा जैसे कि इन्द्र पर्वतों को मथन करता घूमता है, हमने उस युद्ध में भीमसेन के एकही प्रहार से मरे हुए हाथियों को ऐसा देखा जैसे कि वज्र से प्रहारित पर्वत दीखते हैं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आंख, दांत, गण्डस्थल, जङ्घा, पीठ और कमर टूटकर मरे हुए पर्वताकार हाथियों को और कितने ही झाग डालकर मरे हुए हाथियों को भी हमने देखा, कितने ही बड़े हाथी कुम्भ टूटे रुधिर को वमन करते भयसे विकल पृथ्वी पर ऐसे गिरे जैसे कि पर्वत पृथ्वी पर गिरते हैं, रुधिर मज्जा से लिसेहुए अङ्ग और कपालों की मज्जासे छिड़का हुआ भीमसेन दण्डधारी मृत्यु के समान युद्ध में घूमा हाथियों के रुधिर से भीजा हुआ गदा को धारण किये हुए भीमसेन पिनाकधारी शिवजी के समान घोर और भयानकरूप हुआ क्रोधयुक्त भीमसेन के हाथ से मथे हुए कष्टित हाथी अकस्मात् आपकी सेना को दबाते हुए भागे अभिमन्यु को आदि लेके बड़े बड़े धनुषधारी रथियों ने उस युद्ध करनेवाले वीर भीमसेन की चारों ओर से ऐसी रक्षा करी जैसे इन्द्र की रक्षा देवता करते हैं, रक्त से भरे हुए और हाथियों के रुधिर से छिड़की हुई गदा को धारण किये भीमसेन मृत्यु के समान रुद्रात्मा ही देख पड़ा, हे भरतवंशिन्! हमने गदायुक्त भीमसेन को सब दिशाओं में नाचता हुआ शंकरजी के समान देखा, फिर हमने यमराज के दण्ड की समान और इन्द्र के वज्र की समान शब्दायमान नाश की करनेवाली रौद्रीरूप महाभारी गदा को देखा वह गदा केशों से युक्त कपाल और रुधिर से ऐसी भरी हुई थी जैसे कि क्रोधयुक्त शिवजी के हाथ में पशुओं का मारनेवाला पिनाक धनुष होता है, और जैसे गाय चरानेवाला अपनी यष्टि से पशुओं के समूहों को हटाता है इसीप्रकार भीमसेन ने भी अपनी गदा से हाथियों को हटाया, इसके पीछे गदा और बाणों से घायल वह हाथी अपने रथों को दबाते तोड़ते हुए इधर उधर को भागे, जैसे कि वायु बादलों को इधर उधर तितिर बितिर कर देता है उसी प्रकार युद्ध से भिन्न भिन्न हाथियों को करके भीमसेन युद्धभूमि में ऐसे नियत हुआ जैसे कि श्मशानभूमि में रुद्रजी नियत होते हैं ॥ ६३ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीमयुद्धे द्विषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ।

संजय बोले कि उस हाथियों की सेना के मारे जाने पर आपके पुत्र दुर्योधन ने सब सेना को चैतन्य किया और आज्ञा दी कि भीमसेन को मारो तदनन्तर आप के पुत्र की आज्ञा से सब सेना महाभयकारी शब्दों को करती हुई भीमसेन के सम्मुख दौड़ी, फिर उस अत्यन्त देवताओं से भी कठिनता से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सहने योग्य समुद्र के समान अत्यन्त दुस्तर रथ, हाथी, घोड़ों समेत कवचधारी शंख भेरियों से शब्दायमान असंख्य रथ, हाथी, पदाती लोगों से भरी हुई सब ओर से धूल उड़ाती हुई भारी समुद्र के समान अव्याकुल सेना को भीमसेन ने रोक दिया, हे राजन्! हमने उस महात्मा भीमसेन के उस अद्भुत कर्म को देखा, अर्थात् भीमसेन ने बड़ी निर्भयता से घोड़े हाथी और रथों समेत उन सब राजाओं को अपनी गदा से ही हटादिया, वह पराक्रमियों में श्रेष्ठ भीमसेन तुमुलयुद्ध में उन सेनाओं के समूहों को गदा से हटाकर मेरुपर्वत के समान निश्चल होकर नियत हुआ, उस घोर और महाभयानक युद्ध में भय के उत्पन्न होने पर भाई बेटे धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पांचों पुत्र अभिमन्यु और महाविजयी शिखण्डी ने उस महाबली भीमसेन को त्याग नहीं किया अर्थात् यह सब उसके साथ ही में बने रहे, इसके पीछे दंडधारी मृत्यु के समान उस लोहे की गदा को लेकर महाबली भीमसेन आपके शूरवीरों पर दौड़ा, और रथ घोड़े हाथियों के समूहों को मारता हुआ ऐसा घूमा जैसे युग के अन्त में अर्थात् प्रलयकाल में अग्नि देवता दौड़ता है, जैसे कि प्रलय के समय में काल सबको मारता है उसी प्रकार युद्धभूमि में कालरूप भीमसेन शूरवीरों को मारता हुआ अपनी जङ्घाओंके वेग से रथके जालोंको खैंचता, शीघ्रही सेनाको ऐसे मर्दन करने लगा जैसे कि हाथी नलों के जंगलों को मर्दन करता है रथों को रथों से वा युद्ध करनेवाले हाथियों के सवारों को हाथियों से मर्दन करता हुआ, सवारों को घोड़ों की पीठ से पदातियों को पृथ्वीपर मर्दन करता हुआ घूमने लगा, फिर उस महाबाहु भीमसेन ने आपके पुत्र की सेना में जाकर गदा से सबको ऐसा मारा जैसे कि वायु देवता अपने बल से वृक्षों को गिराता है फिर वह भीमसेनी कराल भयंकर गदा मांस रुधिर से भरीहुई हाथी घोड़ों की मारने वाली रौद्रीरूप से दृष्टि पड़ी और स्थान स्थान में मरे हुए हाथी घोड़े और सवारों से वह युद्धभूमि संहारभूमि के समान होगई, चारों ओर से वर्णाश्रमरहित पशुओं के समान मनुष्यों को मारनेवाले क्रोधरूप रुद्रजी के पिनाक धनुष के समान यमदण्ड के सदृश भयानक और इन्द्र वज्र के समान प्रकाशित नाश करनेवाली रौद्री भीमसेन की गदा को हमने देखा, गदा को मारते हुए उस महात्मा भीमसेन का रूप महाप्रकाशित और घोररूप ऐसा होगया जैसे कि संसार के नाश में महाकाल का रूप होता है, इसरीति से उस बड़ी सेना

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को वारंवार भगाते हुए मृत्यु के समान भीमसेन को आता हुआ देख कर सबलोग चित्त से महाव्याकुल हुए हे भरतवंशिन् ! उस भीमसेन ने गदा को उठाकर जिधर जिधर को देखा उधर उधर की सेना व्याकुल होकर छिन्न भिन्न होगई जैसे कि सेनाओं को छिन्न भिन्न करते हुए सेनासमूहों से अजेय अत्यन्त भक्षण करनेवाली मृत्यु के समान सेनाओं को निगलते भयकारी कर्म करते बड़ी गदा के उठानेवाले उस भीमसेन को देखकर सूर्य के समान प्रकाशमान बादल से शब्दायमान रथपर सवार होकर भीष्मजी बाणों की वर्षा करते हुए अकस्मात् उसके सम्मुख आये इस रीति से उस मृत्युरूप के समान भीष्मजी को आता देखकर महाबाहु भीमसेन बड़ा क्रोधरूप अग्नि के समान होकर उनके सम्मुख गया, उस समय महावीर सत्यसंकल्प सात्यकी बड़े दृढ़ धनुष से शत्रुओं को मारता हुआ आपके पुत्र की सेना को कँपाता पितामह के सम्मुख जा भिड़ा, हे भरतवंशिन् ! आपके सब मनुष्य उस चांदी के समान श्वेत घोड़ों के रथपर चढ़े हुए सुन्दर पंखवाले बाणों के प्रहार करनेवाले सात्यकी के रोकने को समर्थ नहीं हुए, तब अलम्बुष नाम राक्षस ने प्रषत्क नाम दश बाणों से उसको घायल किया फिर सात्यकी भी उसको चार बाणों से घायल करके रथ के द्वारा सम्मुख दौड़ा, फिर वृष्णी वीर सात्यकी को समीप आया हुआ और शत्रुओं में घूमनेवाला उत्तम कौरवों का नाशकर्त्ता युद्ध में वारंवार गर्जता हुआ देखकर, आपके शूरवीर लोग उस पर ऐसी बाणों की वर्षा करने लगे जैसे कि बादल जलों के वेग से पहाड़पर वर्षा करते हैं, मध्याह्न के समय सूर्य के समान तपानेवाले पितामह भी उस सात्यकी के रोकने को समर्थ नहीं हुए, हे राजन् ! वहां सोमदत्त के लड़के के सिवाय कोई भी स्थिरचित्त नहीं हुआ हे भरतर्षभ ! वह सोमदत्त का पुत्र भूरिश्रवा अपने रथी लोगों को दूर हटा हुआ देखकर महाभयानक वेगयुक्त धनुष को हाथ में लिये युद्ध की इच्छा से सात्यकी के सम्मुख गया ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि त्रिषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ।

संजय बोले कि हे राजन् ! इसके पीछे अत्यन्त कोपयुक्त भूरिश्रवाने नौ बाणों से सात्यकी को इस रीति से घायल किया जैसे कि अंकुश से बड़े हाथी को घायल करते हैं, फिर उस महासाहसी सात्यकी ने भी सबके देखते हुए गुप्त

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ग्रन्थिवाले बाणों से भूरिश्रवा को रोका, फिर अपने निज भाइयों समेत दुर्योधन ने युद्ध में उपाय करनेवाले भूरिश्रवा की चारों ओर से रक्षा करी, इसी प्रकार से महापराक्रमी सब पाण्डव लोग भी युद्धभूमि में चारों ओर से सात्यकी को रक्षित करके नियत हुये, हे भरतवंशिन्! भीमसेन को गदा उठाये कोप में देखकर आपके सब क्रोधी और असन्तोषी दुर्योधनादिक पुत्रों ने बहुत से असंख्य रथों को साथ लेकर उसको चारों ओर से रोका फिर आपके पुत्र नन्दक ने उस महाबली भीमसेन को, शिलापर तीक्ष्ण किये हुए तीव्र और तेज नोकवाले बाणों से घायल किया इसके पीछे क्रोधयुक्त दुर्योधन ने उस बड़े युद्ध में बड़े तीक्ष्ण बाणों से छाती पर घायल किया इसके पीछे महाबली महाबाहु भीमसेन बड़े उत्तम रथपर सवार होकर विशोक से बोला कि यह धृतराष्ट्र के पुत्र बड़े शूर और महाबली अत्यन्त कोपित युद्ध में मेरे मारने को तैयार हुए हैं इनको निस्सन्देह मैं तेरे देखते ही में मारूंगा, इस हेतु से हे सारथी! तू इस युद्ध में बड़ी सावधानी से मेरे घोड़ों को सँभाल ऐसा कहकर हे राजन्! भीमसेन ने तेरे पुत्र को बड़े तीक्ष्ण सुनहरी भूषित दश बाणों से अत्यन्त घायल किया और नन्दकको तीन बाणों से स्तनों के मध्य में विदीर्ण किया फिर दुर्योधन ने सात बाणों से उस महाबली भीमसेन को घायल किया और अत्यन्त तीक्ष्ण तीन बाणों से विशोक सारथी को घायल किया। फिर युद्धभूमि में हँसते हुए दुर्योधन ने तीन महापैने बाणों से भीमसेन के उस धनुष को मूठ के स्थानपर से काट डाला, हे महाराज! तब भीमसेन ने आपके धनुषधारी पुत्र के विशिखों से महापीड्यमान अपने विशोक सारथी को देखकर, असहनशील और महाक्रोधित होकर आपके पुत्र के मारने के लिये दिव्य धनुष को धारण किया और क्रोध में भरकर बाणों के काटनेवाले क्षुरप्र बाण को धनुष में चढ़ाकर उससे दुर्योधन के उत्तम धनुष को पीछे की ओर को काटा, फिर महाक्रोध में भरे हुए तुम्हारे पुत्रने उस कटे हुए धनुष को डाल कर शीघ्र ही बड़े वेगवान् दूसरे धनुष को लेके कालमृत्यु के समान प्रकाशित बड़े भयानक विशिख बाण को चढ़ाकर बड़े कोप से भीमसेन के स्तनों के मध्यस्थान को घायल किया, फिर वह महाघायल और पीड्यमान रथ के बैठने के स्थान में बैठकर महाअचेत हो गया, फिर पाण्डवों के उन महारथियों ने जिनका अग्रगामी अभिमन्यु था उस पीड्यमान भीमसेन को देखकर महाक्रोधित होकर आपके बेटेके मस्तक पर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महाउग्र तीक्ष्ण बाणों की तुमुल वर्षा करी, इसके पीछे महाबली भीमसेन ने सचेत होकर दुर्योधन को तीन बाणों से घायल करके फिर पांच बाणों से व्यथित किया और पच्चीस बाणों से शल्य को घायल किया इन बाणों से घायल होकर वह महाधनुषधारी शल्य युद्ध से हटगया, इसके पीछे आपके यह चौदह पुत्र इस वीर के सम्मुख गये सेनापति सुषेण, जलसिन्धु, सुलोचन, उग्र, भीमरथ, भीम, वीरबाहु, अलोलुप, दुर्मुख, दुष्प्रधर्ष, विवित्सु, विकट, सम इन सब क्रोध में भरे हुए बाणों के बरसानेवालों ने, एक साथ ही भीमसेन को सम्मुख जाकर अत्यन्त घायल किया फिर महाबली महाबाहु भीमसेन ने आपके पुत्रों को अच्छी रीति से देखकर भेड़िये के समान होठों को चाटकर गरुड़ के समान वेग से सम्मुख दौड़कर अपने क्षुरप्र बाण से सेनापति के शिर को काटा फिर उस महाबाहु प्रसन्न चित्त ने अत्यन्त आनन्दित होकर तीन बाणों से जलसिन्धु को विदीर्ण करके यमलोक को पठाया फिर सुषेण को मार कर मृत्यु के पास पहुँचाया, फिर एक भल्ल से उग्र के मुकुट समेत चन्द्रमा के समान कुण्डलों से शोभित शिर को पृथ्वीपर गिराया, फिर सत्तर बाणों से घोड़े ध्वजा और सारथी समेत वीरबाहु को मारा, फिर हँसते हुए भीमसेन ने भीम और भीमरथ दोनों वेगवान् भाइयों को भी यमपुर को पठाया, इसके अनन्तर सब सेना के देखते हुए सुलोचन को क्षुरप्र बाण से मारा, हे राजन्! तब वहां जो आपके शेष बचे हुए पुत्र थे वह भीमसेन के बल को देखकर उससे घायल और भयभीत होकर युद्ध से भागे इसके पीछे भीष्मजी सब महारथियों से बोले, कि यह युद्ध में क्रोधरूप भयानक धनुषधारी भीमसेन जो धृतराष्ट्र के महाशूरवीर बुद्धिमान् पुत्रों को गिराता और मारता है उसको पकड़ो, इसके पीछे दुर्योधन की सेना के सब लोग इस आज्ञा को पाकर अत्यन्त क्रोध में भरकर उस महाबली भीमसेन के सम्मुख दौड़े, हे राजन् ! राजा भगदत्त मतवाले हाथी की सवारी पर अकस्मात् वहां आ टूटा जहां भीमसेन नियत था, और युद्धभूमि में गिरते ही शिला के घिसे हुए बाणों से भीमसेन को दृष्टि से ऐसा गुप्त करदिया जैसे कि बादल सूर्य को करता है वहां अपने भुजबल में नियत और रक्षित अभिमन्यु आदि महारथी भीमसेन के ढकजाने को न सह सके, और क्रोधित होकर उन्हों ने चारों ओर से उसको अपने बाणों की वर्षा से रोंककर चारों दिशाओं से मारे बाणों के उसके हाथी को घायल किया, हे धृतराष्ट्र! वह राजा प्राग्ज्योतिष का

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हाथी इन सब महारथियों के नाना प्रकार के चिह्नधारी प्रकाशित तीव्र बाणों से घायल रुधिर के श्रोतों से युद्ध में ऐसा देखने के योग्य हुआ जैसे कि सूर्य की किरणों से व्याप्त अर्थात् पिरोहा हुआ बड़ा बादल होता है ४४ फिर वह मदोन्मत्त कालरूप मृत्यु के समान राजा भगदत्त का पेला हुआ हाथी अत्यन्त तीव्र होकर पृथ्वी को अपने चरणों से कँपाता हुआ उन सब वीरों के सम्मुख दौड़ा उसके उस बड़े रूप को देखकर वह सब महारथी, उसको सहने के योग्य न समझकर भयभीत हुए हे नरोत्तम! फिर उसके अनन्तर राजा भगदत्त ने महाक्रोधित होकर गुप्तग्रन्थी के बाणों से भीमसेन के वक्षस्स्थल को व्यथित किया उस राजा से अत्यन्त घायल किया हुआ वह बड़ा धनुषधारी, महारथी मूर्च्छायुक्त होकर ध्वजा की यष्टी के सहारे से नियत हुआ फिर उनको भयभीत और भीमसेन को मूर्च्छायुक्त देखकर, वह प्रतापी भगदत्त बड़े शब्द को करता हुआ गर्जा हे राजन्! इसके पीछे घटोत्कच उस मूर्च्छावान् भीमसेन को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसी स्थान में गुप्त होगया और फिर घोररूप महाभयकारी माया को रचि के घोर ही रूप में नियत हो करके अपने रचे हुए मायारूपी ऐरावतपर चढ़कर आधे ही निमेष में दृष्टिगोचर हुआ, और महासुन्दर प्रभावी (अंजन) (वामन) महापद्म नाम दूसरे दिग्गज उसके पीछे चलनेवाले हुए, हे राजन्! वह बड़े शरीरवाले सब अङ्गों से मद चूनेवाले तीनों महागजराज राक्षसों समेत नियत हुए, जोकि तेजी से पराक्रमयुक्त बड़े वेगवाले थे फिर घटोत्कच ने अपने हाथी को युद्ध में भेजा, हे शत्रुसन्तापिन् धृतराष्ट्र! वह हाथी भगदत्त के मारने को उपस्थित हुआ और वह दूसरे महाबली हाथी भी राक्षसों के प्रेरित अत्यन्त क्रोधित चार चार दांतों से महाभयानकरूप दिशाओं में पहुँचे और भगदत्त के हाथी को अपने दांतों से महापीड्यमान किया तब तो इन हाथियों से महापीड़ित दुःखों से व्याकुल और बाणों से घायल उस हाथी ने इन्द्र के वज्र के समान महाघोर शब्द किया उसके महाघोर शब्द को सुनकर भीष्मजी, द्रोणाचार्य और राजा दुर्योधन से बोले कि यह बड़ा धनुषधारी भगदत्त युद्ध में दुरात्मा घटोत्कच के साथ लड़ता है और आपत्ति में फँसा है यह राक्षस बड़े शरीरवाला है और राजा भी बड़ाक्रोध करने वाला है निश्चय करके कालमृत्यु के समान दोनों युद्ध में जुटे हुए हैं और पाण्डवों के प्रसन्नता के बड़े शब्द सुने जाते हैं और उस भयभीत हाथी के

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

व्याकुलताके भी बहुत से शब्द सुने जाते हैं आपलोगों की भलाई के लिये हम राजा की रक्षा के लिये वहांपर चलें, नहीं तो युद्ध में अरक्षित होकर वह शीघ्र ही प्राणों को त्यागेगा हे बड़े पराक्रमियो! इस हेतु से शीघ्रता करो विलम्ब मत करो, यह रोमहर्षण करनेवाला महारुद्ररूप युद्ध वर्तमान है यह सेनापति भगदत्त भक्तकुलपुत्र होकर बड़ा शूर है हे विजयी लोगो! हमलोगों को उसकी रक्षा करनेयोग्य है भीष्मजी के इस वचन को सुनकर सब राजालोग द्रोणाचार्य को आगे करके भगदत्त पर प्रीति करके बड़ी तीव्रता से उसके समीप गये, उन जाते हुए शत्रुओं को देखकर पाण्डवों समेत पाञ्चाल देशीय अपने आगे राजा युधिष्ठिर को करके पीछे की ओर से चले, फिर राक्षसों का राजा प्रतापी घटोत्कच उन सेनाओं को देखकर आकाश को शब्दायमान करता हुआ बड़े शब्द से गर्जा, उसके शब्द को सुनकर और लड़ते हुए हाथियों को देखकर भीष्मजी द्रोणाचार्य से बोले, कि मुझको इस महासाहसी घटोत्कच के साथ में युद्ध करना अच्छा नहीं विदित होता है क्योंकि वह इस समय बल पराक्रम से भरा हुआ महामदवाला है यह इन्द्र से भी विजय करने के योग्य नहीं है और लक्षभेदी होकर प्रहार करनेवाला है और हम थल की सवारीवाले हैं, पाञ्चाल और पाण्डवों से सब दिन घायल हुए इसीहेतु से विजय से शोभा पानेवाले पाण्डवों के साथ युद्ध करना अच्छा नहीं ज्ञात होता है, अब विश्राम करो प्रातःकाल शत्रुओं से लड़ेंगे अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरवीरों ने इस पितामह के वचन को सुनकर वैसा ही किया, फिर वह घटोत्कच के भय से महापीड़ित युक्ति के द्वारा युद्ध से हटगये कौरवों के हटजाने पर विजय से शोभा पानेवाले पाण्डवों ने शंख और वंशियों के शब्दों समेत सिंहनाद किये हे राजन्! इस रीतिसे कौरव और पाण्डवों का वह युद्ध घटोत्कच को आगे करके दिनभर हुआ तदनन्तर शीघ्र ही कौरव लोग पाण्डवों से पराजित बाणों से घायल लज्जा में भरे रात्रि के समय अपने अपने डेरों को गये हे महाराज, धृतराष्ट्र! फिर महारथी पाण्डव भी युद्ध में प्रसन्न चित्त भीमसेन और घटोत्कच को आगे करके अपने डेरों में गये, और वहां जाकर वह शत्रुसंतापी महात्मा बड़ी प्रसन्नता से युक्त प्रशंसा करते हुए तुरीय बाजे बजाते शोभायुक्त होकर नानाप्रकार के शब्दों से गर्जे और सिंहनादयुक्त शंखों को बजाते गर्जनाओं से पृथ्वी को कम्पायमान करते, और आपके पुत्रों के मर्मों को चलायमान करते हुए सायंकाल के समय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

डेरों में गये फिर अश्रुपातयुक्त चिन्ता और शोक से व्याकुल भाई बिरादरियों के मरण से दुःखित राजा दुर्योधन एक मुहूर्त्तपर्यन्त चिन्ता में मग्न हुआ, तदनन्तर बुद्धि के अनुसार डेरों के सब प्रबन्ध को करके शोक से खिन्न भाइयों के शोक से निर्बल होकर बड़े विचार में प्रवृत्त हुआ ॥ ८३ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि चतुर्थदिवसयुद्धे चतुःषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ।

धृतराष्ट्र बोले कि, हे संजय! देवताओं से भी कठिनता से करने के योग्य पाण्डवों के कर्म को सुनकर मुझको बड़ाभय और आश्चर्य उत्पन्न होता है हे संजय! सब प्रकार से अपने पुत्रों की ही पराजय को सुनकर मुझको यही चिन्ता है कि परिणाम कैसा होगा, निश्चय विदुरजी के वचन मेरे हृदय को जलाते हैं हे संजय! दैवयोग से उन्हीं का कहना सत्य होता दिखाई देता है जहां कि पाण्डवों की सेना के वह शूरवीर उन युद्धकर्त्ताओं से जिनमें शस्त्रवेत्ता महाप्रतापी भीष्मजी मुख्य हैं युद्ध करते हैं, उन महाबली महात्मा पाण्डवों ने कौन सी तपस्या करी है वा किससे कौनसा वरदान पाया है अथवा वह किस ज्ञान को जानते हैं, जिस कारण से कि वह नाश को नहीं पाते हैं हे संजय! पाण्डवों से वारंवार मारे हुए सेना के मनुष्यों को मैं नहीं सहसक्ता हूं, दैव मुझको ऐसा कठिन दण्ड देता है कि पाण्डव निर्विघ्न हैं और मेरे पुत्र घायल हैं, हे संजय! इसका हेतु मुझसे मूलसमेत वर्णन करो मैं किसी दशा में भी इस दुःख का अन्त ऐसे नहीं देखता हूं जैसे कि भुजाओं से तिरता हुआ मनुष्य समुद्र का अन्त नहीं पाता है मैं निश्चय करके मानता हूं कि मेरे पुत्रों को महाभयानक दुःख वर्त्तमान हुआ मैं निस्संदेह जानता हूं कि भीमसेन मेरे सब पुत्रों को मारेगा, मैं ऐसा वीर किसी को नहीं देखता हूं जो युद्ध से मेरे पुत्रों को बचावे, हे संजय! युद्ध में मेरे पुत्रों का नाश निश्चय होता दीखता है हे सूत! इस हेतु से तुम सब हेतुपूर्वक वृत्तान्त मुझसे वर्णन करो और दुर्योधन ने युद्ध में अपने युद्धकर्त्ताओं को विमुख देखकर जो जो किया अथवा भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, शकुनि, जयद्रथ, महाधनुषधारी अश्वत्थामा, और महापराक्रमी विकर्ण ने जो जो किया, उसको और हे महाज्ञानिन्! मेरे पुत्रों के उदासीन होनेपर इन महात्माओं ने जो निश्चय किया उन सब बातों को ब्योरे समेत यथार्थ मुझसे वर्णन करो १४ संजय बोला कि हे राजन्!

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सावधान होकर सुनो और सुन करके विश्वास करो कि पाण्डवों का न तो कुछ अनुष्ठान है न किसी प्रकार की माया है, न वह किसी प्रकार की भयानकता करते हैं वह केवल युद्ध में समर्थ होकर न्याय के अनुसार लड़ते हैं, हे भरतवंशिन् ! बड़े यश को चाहनेवाले पाण्डव जीवन आदि सब कर्मों को सदैव धर्मयुक्त होकर प्रारम्भ करते हैं वह धर्मवान् महाबली बड़ी शोभापूर्वक युद्ध से मुख नहीं मोड़ते हैं जिधर धर्म है उधर ही विजय होती है, इस हेतु से पाण्डवलोग युद्ध में निर्विघ्न होकर विजय को पाते हैं और आपके निर्बुद्धि पुत्र सदैव पापों में प्रीति करनेवाले, कठोरवक्ता और दुष्कर्मी हैं इसी हेतु से युद्ध में पराजय को पाते हैं हे राजन् ! आपके पुत्रों ने पाण्डवों के ऊपर हिंसायुक्त ऐसे अनेक दुष्कर्म किये जैसे कि नीच मनुष्य करते हैं हे पाण्डु के बड़े भ्राता, धृतराष्ट्र ! पाण्डव आपके पुत्रों के उन सब आप अपराधों को क्षमा करके वैसे ही निश्छल बने रहे आपके पुत्र इनको अच्छे प्रकार से नहीं मानते हैं, उस वारंवार किये हुए पाप कर्मों का बड़ा घोर फल किंपाक वृक्षफल के समान वर्त्तमान हुआ है, हे महाराज ! आपने अपने सुहृदों के निषेध करने से भी नहीं माना इस हेतु से आप अपने पुत्र सहायकों समेत उस फल को भोगोगे, विदुरजी, भीष्मजी, द्रोणाचार्यजी और अन्य श्रेष्ठ लोगों समेत मैंने भी वारंवार आपको समझाया परन्तु आप न माने न अब सावधान होते हो, और परिणाम में आनन्द देनेवाले वचनों को भी ऐसे नहीं सुनते हो जैसे कि निर्बुद्धि मनुष्य पथ्य और गुणदायी औषधी को नहीं पाता तुम अपने पुत्रों के मत में नियत होकर पाण्डवों को विजयी देखते हो, और हे भरतर्षभ ! जो पाण्डवों की विजय का हेतु तुम पूछते हो, उसको भी मैं कहता हूँ हे राजन् ! जैसा कि मैंने सुना है और उसीको दुर्योधन ने भीष्मजी से पूछा है, अर्थात् युद्ध में पराजित सब महारथी भाइयों को देखकर शोक से व्याकुल मन आपका पुत्र दुर्योधन रात्रि के समय बड़ी नम्रता से महाज्ञानी भीष्मपितामह के पास जाकर जो वचन बोला वह सब मैं तुमसे कहता हूं, तात्पर्य यह है कि दुर्योधन ने कहा कि द्रोणाचार्य और तुम वा शल्य वा कृपाचार्य अश्वत्थामा वा कृतवर्मा वा हार्दिक्य वा काम्बोज सुदक्षिण वा भूरिश्रवा वा विकर्ण वा पराक्रमी भगदत्त यह सब महारथी और सब कौरव लोग शरीर के त्यागनेवाले, तीनों लोकों में सामर्थ्यवान् प्रसिद्ध हैं, मेरी बुद्धि से यह सबलोग पाण्डवों के पराक्रम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

में नियत नहीं होते हैं यह मुझको बड़ा सन्देह है कि ऐसे हमारे सहायकों के होनेपर भी पाण्डव लोग हमको पदपद पर विजय करते हैं भीष्मजी बोले कि हे कौरवोंके राजा! मेरे कहने को सुन मैंने तुझको बहुतबार समझाया परन्तु तैंने न माना भरतवंशियों में श्रेष्ठ पाण्डवों से तुम सन्धि करलो हे दुर्योधन! इसी में तेरी और सब संसार की कुशल है, हे तात! भाइयों समेत सब मित्रों को प्रसन्न करके अपने बांधवों समेत आनन्दपूर्वक इस पृथ्वी को भोगो और पहले भी हमने वारंवार कहा उसको तुमने नहीं सुना सुनो जो कोई पाण्डवों का अपमान करता है उसका यही फल वर्त्तमान होता है वही अब तुमको भी वर्त्तमान है हे समर्थ, महाराज! उन सुगमकर्मी पाण्डवों के अवध्य होने का जो हेतु है उसको मुझसे सुन, लोकों में ऐसा कोई बली नहीं है न कभी कोई होगा जो शार्ङ्गधनुषधारी के शरण में रक्षित सब पाण्डवों को विजय करे४०हे धर्मज्ञ! जो तुमने कहा और जो शुद्ध अन्तःकरणवाले मुनियों ने पुराणों में कहा है उसको तुम ठीक ठीक पूर्णता से सुनो, निश्चय है कि प्राचीन समय में सब देवता और ऋषियों ने इकट्ठे होकर गन्धमादन पर्वत पर पितामहजी की उपासना करी, फिर उन सबोंमें बैठेहुए प्रजापति ब्रह्माजी ने तेज से प्रकाशित अत्यन्त सुन्दर आकाश में वर्त्तमान उत्तमविमान को देखा, ब्रह्माजी ने ध्यान के द्वारा जानकर हाथ जोड़ के उस घटघटवासी को नमस्कार किया, फिर सब देवता और ऋषि लोग भी वहांसे उठे हुए ब्रह्माजी को और उसअपूर्व अद्भुतरूप को देखकर हाथ जोड़कर नियत हुए, फिर ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ धर्मज्ञ संसार के स्वामी ब्रह्माजी ने बुद्धि के अनुसार उसका पूजन करके इस परम उत्तम और पवित्र स्तोत्र को पढ़ा (स्तोत्रम्) विश्वावसुर्विश्वमूर्तिर्विश्वेशो विष्वक्सेनो विश्वकर्मावशी च। विश्वेश्वरो वासुदेवोसि तस्माद्योगात्मानंदैव तं त्वामुपैमि ४७ जय विश्वमहादेव जय लोकहितेरत। जय योगीश्वर विभो जय योगपरावर ४८ पद्मनाभ विशालाक्ष जय लोकेश्वरेश्वर। भूतभव्यभवन्नाथ जय सौम्यात्मजात्मज ४९ असंख्येयगुणाधार जय सर्वपरायण। जय कृष्ण सुदुष्पार जय शार्ङ्गधनुर्धर ५० जय सर्वगुणोपेत विश्वमूर्त्ते निरामय। विश्वेश्वर महाबाहो जय लोकार्थतत्पर ५१ महोरगवराहाद्य हरिकेश विभो जय। हरिवासदिशामीशविश्वासामिताव्यय ५२ व्यक्ताव्यक्तमितस्थान नियतेन्द्रिय सत्क्रिया। असंख्येयात्मभावज्ञजय गम्भीरकामद ५३ अनन्तविदितब्रह्मनित्यं भूतविभावन। कृत कार्य कृत मज्ञ धर्मज्ञ विज-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यावह ५४ गुह्यात्मन्सर्वयोगात्मन्स्फुटसंभूत संभव। भूतात्मतत्त्वलोकेश जय भूतिविभावन ५५ आत्मयोने महाभाग कल्पसंख्येयतत्पर। उद्भावन मनोभाव जय ब्रह्मजनप्रिय ५६ निसर्गसर्गनिरत कामेश परमेश्वर। अमृतोद्भव सद्भाव मुक्तात्मविजयप्रद ५७ प्रजापतिपते देव पद्मनाभ महाबल। आत्मभूत महाभूत कर्म्मात्मन् जय सर्वदा ५८ पादौ तव धरा देवी दिशो बाहुर्दिवः शिरः। मूर्त्तिस्तेहं सुराकायश्चन्द्रादित्यौ च चक्षुषी ५९ बलं तपश्च सत्यं च धर्मकर्मात्मजं तव। तेजोऽग्निः पवनश्वासः आपस्तेस्वेद संभवाः ६० अश्विनौ श्रवणौ नित्यौ देवी जिह्वा सरस्वती। वेदाः संस्कारनिष्ठा हि त्वदीयं जगदाश्रितम् ६१ न संख्या न परी माणं न ते जनपराक्रमम्। न बलं योगयोगीश जानीमस्तेन संभवम् ६२ त्वद्भक्तिनिरता देव नियमैस्त्वां समाश्रिताः। अर्चयाम सदा विष्णो परमेशं महेश्वरम् ६३ ऋषयो देवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः। पिशाचा मानुषाश्चैव मृगपक्षिसरीसृपाः ६४ एवमादि मया सृष्टं पृथिव्यां त्वत्प्रसादजम्। पद्मनाभ विशालाक्ष कृष्ण दुःस्वप्ननाशन ६५ त्वं गतिः सर्वभूतानां त्वं नेता त्वं जगन्मुखम्। त्वत्प्रसादेन देवेश सुखिनो विबुधाः सदा ६६ पृथिवी निर्भयादेव त्वत्प्रसादात् सदाभवत्। तस्माद्भव विशालाक्ष यदुवंशविवर्द्धनः ६७ धर्मसंस्थापनार्थाय दैतेयानां वधाय च। जगतो धारणार्थाय विज्ञाप्यं कुरु मे विभो ६८ यत्तत्परमकं गुह्यं त्वत्प्रसादादिदं प्रभो। वासुदेव तदेतत्ते मयोद्गीतं यथातथम् ६९ सृष्ट्वा संकर्षणं देव स्वयमात्मानमात्मना। कृष्ण त्वमात्मना साक्षीः प्रद्युम्नं स्वात्मसंभवम् ७० प्रद्युम्नाच्चानिरुद्धन्तु यं विदुर्विष्णुमव्ययम्। अनिरुद्धो सृजन्मां वै ब्रह्माणं लोकधारिणम् ७१ वासुदेवमयः सोऽहं त्वयैवास्मि विनिर्मितः। विसृज्य भागशोऽऽत्मानं व्रजमानुषतां विभो ७२ तत्रासुरवधं कृत्वा सर्वलोकहिताय वै। धर्मं स्थाप्य यशः प्राप्य योगं प्राप्स्यसि तत्त्वतः ७३ त्वां हि ब्रह्मर्षयो लोके देवाश्चामितविक्रम। तैस्तैः स्वैर्नामभिर्युक्ता गायन्ति परमाद्भुतम् ७४ स्थितश्च सर्वे त्वयि भूतसङ्घाः कृत्वाश्रयं त्वां वरदं सुबाहो। अनादिमध्यान्तमपारयोगं लोकस्य सेतुं प्रवदन्ति विप्राः॥ ७५॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि पञ्चषष्टितमोऽध्यायः॥ ६५॥

छयासठवां अध्याय।

भीष्मजी बोले कि इसके पीछे वह योगेश्वरों के ईश्वर भगवान् स्निग्ध गम्भीर वाणी के द्वारा ब्रह्माजी से बोले, हे तात! यह तेरे मनकी इच्छा मुझ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को योग से विदित है वह उसीप्रकार से होगा। यह कह कर वह उसी स्थानमें गुप्त होगये, इसके अनन्तर देवर्षि और गन्धर्वों ने बड़ा आश्चर्य किया और सबने मिलकर ब्रह्माजी से कहा, कि हे समर्थ! यह कौन था जिसको आपने बड़ी नम्रता से नमस्कारपूर्वक उत्तम वाणियों से स्तुतिको किया, हम उसको जानना चाहते हैं इसरीति से देवर्षि गन्धर्वों के पूछने पर बड़ी मधुर वाणी से ब्रह्माजी बोले, जो सर्वोत्तम रूप आगे प्रकट होनेवाला है वही श्रेष्ठ सब जीवमात्रों का आत्मारूप प्रभु है उसी को ब्रह्म और ज्योतिस्स्वरूप कहते हैं, हे श्रेष्ठपुरुषो! मैंने उसी प्रसन्नमूर्त्ति परमेश्वर से वार्त्तालाप की है और जगत् के अनुग्रह के लिये वह जगत्पति मेरी प्रार्थना से, वासुदेव नाम से प्रसिद्ध होगा, तुम सब लोग मर्त्यलोक में नियत होकर असुरों के मारने के लिये पृथ्वी पर प्रकट होजाओ, जो दैत्य, दानव और राक्षस युद्ध में मारेगये हैं वही आकर इन घोररूप महाबली मनुष्यों में उत्पन्न हुये हैं, इन्हों के मारने के निमित्त अतुल पराक्रमी भगवान् नरसंयुक्त मनुष्ययोनि में नियत होकर पृथ्वीपर विचरेंगे, वही दोनों पुराणपुरुष ऋषियों में श्रेष्ठ नरनारायणरूप मिले हुए सावधान, युद्ध में देवताओं से भी विजय करने के योग्य नहीं हैं वही महातेजस्वी एक साथ नरलोक में प्रकट हुए। इन दोनों नरनारायण ऋषियों को अज्ञानी लोग नहीं जानते हैं मैं जिसके आत्मा से उत्पन्न होनेवाला पुत्र सब जगत् का पतिहूं और सब लोकों का महेश्वर वासुदेव तुम्हारा पूज्य है, हे उत्तम देवताओ! इसी प्रकार का वह महापराक्रमी शंखचक्रगदाधारी ऐसा जानकर कि यह मनुष्य है कभी अपमान करने के योग्य नहीं है, यह अत्यन्त गुप्तरूप और परम ज्योति है यही परब्रह्म है यही यश है यही अविनाशी सनातन और यज्ञपुरुष है यही दृश्य अदृश्य नाम से गायाजाता है और जाना जाता है सब यही है, यह परमतेज सुख और सत्विश्वकर्त्ता कहाजाता है इसकारण से बड़ा पराक्रमी प्रभु वासुदेव इन्द्रादिक देवता और सब असुरों से भी मनुष्य जानकर अपमान के योग्य नहीं है, जो इस वासुदेव को केवल मनुष्य समझे वह इन्हीं हृषीकेशजी के अपमान से निर्बुद्धि नीच पुरुष है जो इस योगी महात्मा मानुषी शरीरवर्त्ती वासुदेवजी को अपमान करता है उसको महापुरुष लोग तामसी कहते हैं जो इस जड़, चैतन्य के आत्मा श्रीवत्साचिह्नधारी तेजस्वी पद्मनाभजी को नहीं जानता है वह भी तामसी बोला जाता है, जो मुकुट कुण्डल और कौस्तुभ-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धारी शत्रुभयवर्द्धन महात्मा पुरुष को अपमान करता है वह घोर तामिस्र नाम नरक में गिरता है, हे श्रेष्ठ देवर्षियो ! इसरीति से तत्त्वार्थ को जानकर लोकेश्वरों का ईश्वर वासुदेव सब लोकों से नमस्कार करने के योग्य है, भीष्मजी बोले कि पूर्व समय में भगवान् ब्रह्माजी देवता और ऋषियों के समूहों से इस प्रकार कहकर सब प्राणियों को विदा करके अपने भवन को गये, इसके पीछे देवता, गन्धर्व, ऋषि, मुनि और अप्सरादिक भी ब्रह्माजी की कही हुई इस कथा को प्रीतिसंयुक्त सुनकर स्वर्ग को गये, हे तात ! इस रीति से मैंने शुद्ध अन्तःकरणवाले देवता ऋषि आदि की सभा में यह प्राचीन वृत्तान्त सुना है हे शास्त्र में कुशल, दुर्योधन ! जमदग्न्यजी के पुत्र परशुरामजी और बुद्धिमान् मार्कण्डेय व्यास और नारदजी से भी सुना है, इस अर्थ को अच्छीरीति से सुन और जानकर न्यूनतारहित लोकेश्वर प्रभु वासुदेवजी को ध्यान करो जिसकी आत्मा से उत्पन्न होनेवाला ब्रह्मा सब जगत् का पिता है वह वासुदेव परमात्मारूप किस प्रकार से मनुष्यों से पूज्य नहीं है अर्थात् सबका पूज्यतम है, हे तात ! प्राचीन समय में तो शुद्ध अन्तःकरणवाले मुनियों ने सदैव निषेध किया है कि उस धनुषधारी वासुदेवजी से कभी युद्ध मत करो ३० और न कभी पाण्डवों से लड़ो परन्तु तू अपने मोह से सावधान नहीं होता है इस कारण मैं तुझको राक्षस और निर्दय जानता हूं जोकि तू अज्ञान में डूबा हुआ है इसी कारण से तू गोविन्दजी समेत पाण्डव अर्जुन से शत्रुता करता है कौन सा ऐसा मनुष्य है जो इन दोनों नर नारायण देवताओं से शत्रुता करे, हे राजन् ! इस हेतु से मैं तुझसे कहता हूँ कि यह सनातन अविनाशी विश्वरूप पृथ्वी का धारण करनेवाला अचल है, और जो चराचर का गुरु प्रभु तीनों लोकों को धारण करता वह युद्धकर्त्ता विजयरूप विजयी सबकी प्रकृति और ईश्वर है, हे राजन् ! यह सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण से जुदा है जिधर श्रीकृष्ण हैं उधर धर्म है जिधर धर्म है उधर ही विजय है, हे राजन् ! पाण्डव लोग उन श्रीकृष्णजी के माहात्म्य योग वा उत्तम रूप योग से धारण किये हुए हैं, इन्हीं की ही विजय होगी वही श्रीकृष्ण पाण्डवों की कल्याणमिश्रित बुद्धि को और युद्ध में पराक्रम को भी सदैव धारण करता है और भयों से रक्षा करता है वही सनातन ब्राह्मणरूप शिव और वासुदेव कहाजाता है हे भरतवंशिन् !

क्षणयुक्त स्वकर्मों से नित्यमुक्त ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्रों करके वह सदैव

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सेवा किया जाता है उसीको द्वापर के अन्त पर कलियुग के प्रारम्भ में सतोगुणी बुद्धि में नियत होकर संकर्षणजी ने गाया है, वही युग युग में देवलोक मृत्युलोक और समुद्रान्तरवर्त्तीपुरी और मनुष्यों के विश्राम स्थानों को वारंवार उत्पन्न करता है॥ ४१॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि षट्षष्टितमोऽध्यायः॥ ६६॥

सरसठवां अध्याय।

दुर्योधन बोले कि, सब लोकों के मध्य में वासुदेवजी ही महद्भूत कहेजाते हैं हे पितामहजी! मैं उनके आगम और प्रतिष्ठा को जाना चाहता हूं, भीष्मजी बोले कि हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! वासुदेवजी ही महद्भूत और सब देवताओं के देवता हैं इन पुण्डरीकाक्ष श्रीकृष्णजी से परे कोई नहीं दिखाई देता है, मार्कण्डेय ऋषि भी गोविंदजी को अत्यन्त अपूर्व और बड़ा कहते हैं इसी पुरुषोत्तम महात्मा जीवात्मा ने पृथ्वी आदि पांचो तत्त्वों को उत्पन्न किया है इसी परमेश्वर ने पृथ्वी को न देखकर जल में शयन किया अर्थात् उस महात्मा पुरुषोत्तम सर्वतेजोमय ने अपने योगबल से जलमें शयन किया फिर उस बड़े साहसी वासुदेवजी ने मुख से अग्नि को प्राण से वायु को उत्पन्न करके वेदों को प्रकट किया इसनेही प्रारम्भ में लोकों समेत देवता और ऋषियों के समूह को उत्पन्न किया और जन्म, मरण, नाशसहित मृत्यु को भी इसीने उत्पन्न किया, यह धर्म और धर्मात्मा वर का देनेवाला अथवा सब अभीष्टों का देनेवाला यही आदिदेव प्रभु कर्त्ता और कर्मरूप है इसीने भूत, वर्तमान, भविष्य इन तीनों कालों को उत्पन्न किया यही प्रभु अविनाशी जगत् का कर्त्ता और वरदाता है इसीने सबके आदिभूत संकर्षणजी को उत्पन्न किया उसीको शेषकल्पना करके अनन्त नाम से प्रसिद्ध किया वही शेषजी पर्वत और समुद्रों समेत इस पृथ्वी को धारण करते हैं उसको महातेजस्वी कहते हैं, पुरुषोत्तमजी ने ब्रह्माजी के उपकार के लिये कर्ण से उत्पन्न महातेजस्वी पराक्रमी दैत्य को मारा, हे तात! इसीके मारने से इनको सब संसार मधुसूदन कहते हैं यही वराह नृसिंह अवतार धारण करनेवाला तीन चरणों से सब जगत् को मारनेवाला है, यही हरि सब जीवों का पिता और माता है इनसे बढ़कर न कोई है न था न होगा, हे राजन्! इसने ब्राह्मणों को मुख से क्षत्रियों को भुजाओं से वैश्यों को ऊरु से और शूद्रों को चरणों से उत्पन्न किया है, इस साव-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धान ने तपके द्वारा जीवों को हव्य कव्यादिक विधियों को ब्रह्मरूपी अमावास्या वा पूर्णमासी में उत्पन्न किया, जो इन योगरूप केशवजी की सेवा करता है वह महाऐश्वर्य को पाता है, हे राजन्! इन केशवजी को मुनियों ने ऐसा कहा है इसीको आचार्य पिता और गुरु जानना योग्य है जिसके ऊपर श्रीकृष्णजी प्रसन्न होयँ वह अविनाशी लोकों का विजय करनेवाला है, जो प्राणों के भय के स्थान में इनकी शरण में जाता है वह मनुष्य उसको स्मरण करता हुआ आनन्दपूर्वक निर्विघ्न होता है और जो इनको प्राप्त होते हैं वह मनुष्य मोह में नहीं फँसते हैं, यह जनार्द्दनजी बड़ेभारी भय में डूबेहुये अपने भक्तों की सदैव रक्षा करते हैं हे महाभाग, राजन्, दुर्योधन! वह युधिष्ठिर इस प्रकार से ठीक २ जानकर सर्वात्मारूप से उस योगीश्वर जगदीश केशव मूर्त्ति की शरण में आश्रित है॥ २४॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सप्तषष्टितमोऽध्यायः॥ ६७॥

अड़सठवां अध्याय।

भीष्मजी बोले कि हे महाराज! इस मेरे कहे हुये ब्रह्मरूप स्तोत्र को सुनो जो कि पूर्व समय में पृथ्वीपर देव ऋषि और देवताओं ने वर्णन किया है १ भीष्म उवाच॥ शृणु चेदं महाराज ब्रह्मभूतं स्तवम्मम। महर्षिभिश्च देवैश्च यः पुरा कथितो भुवि १ साध्यानामपि देवानां देवदेवेश्वरः प्रभुः। लोकभावन भावज्ञ इति त्वां नारदोऽब्रवीत् २ भूतं भव्यं भविष्यञ्च मार्कण्डेयोभ्युवाच ह। यज्ञं त्वां चैव देवानां तपश्च तपसामपि ३ देवानामपि देवं च त्वामाह भगवान्प्रभुः। पुराणं चैव परमं विष्णोरूपं न वेत्ति च ४ वासुदेवो वसूनां त्वं शक्रस्थापयतां तथा। देवदेवोऽसि देवानामिति द्वैपायनोऽब्रवीत् ५ पूर्वे प्रजापतेः सर्गे दक्षमाहुः प्रजापतिम्। स्रष्टारं सर्वभूतानामङ्गिरास्त्वां तथाब्रवीत् ६ अव्यक्तं ते शरीरोत्थं व्यक्तं ते मनसि स्थितम्। देववाक्यं भवाश्चेति देवलस्त्वां तथाब्रवीत् ७ शिरसा ते दिवं व्याप्तं बाहुभ्यां पृथिवी धृता। जठरं ते त्रयोलोकाः पुरुषोऽसि सनातनः ८ एवं त्वामभिजानन्ति तपसा भाविता नराः। आत्मदर्शनतृप्तानामृषीणां चापि सत्तमः ९ राजर्षीणामुदाराणामाहवेष्वनिवर्त्तिनाम्। सर्वधर्मप्रधानानां त्वं गतिर्मधुसूदन १० इति नित्यं योगविद्भिर्भगवान् पुरुषोत्तमः। सनत्कुमारप्रमुखैः स्तूयते व्यचर्यते हरिः ११ एष ते विस्तरस्तात संक्षेपश्च प्रकीर्त्तितः। केशवस्य यथा तत्त्वं सुप्रीतो भव केशव॥ १२॥ संजय उवाच॥ पुण्यं श्रुत्वैतदाख्यानं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महाराज सुतस्तव । केशवं बहु मेने स पाण्डवांश्च महारथान् १३ तमब्रवीन्महाराज भीष्मः शान्तनवः पुनः । माहात्म्यं ते श्रुतं राजन् केशवस्य महात्मनः ॥ १४ ॥ नरस्य च यथा तत्त्वं यन्मां त्वं परिपृच्छसि । यदर्थं नृषु संभूतौ नरनारायणावुभौ ॥ १५ ॥ अबुध्यौ च यथा वीरौ संयुगेष्वपराजितौ । यथा च पाण्डवा राजन् न वध्या युधि कस्यचित् ॥ १६ ॥ प्रीतिमान्हि दृढं कृष्णः पाण्डवेषु यशस्विषु । तस्मान्ब्रवीमि राजेन्द्र समो भवतु पाण्डवैः ॥ १७ ॥ पृथिवीं भुङ्क्ष्व राजेन्द्र सहितो भ्रातृभिर्बली । नरनारायणौ देवाववज्ञाय विनङ्क्ष्यति ॥ १८ ॥ एवमुक्त्वा तव पिता तूष्णीमासीद्विशांपते । व्यसर्जयच्च राजानं शिबिरं च विवेश ह ॥ १९ ॥ राजा च शिबिरं प्रायात्प्रणिपत्य महात्मने । शिश्ये च शयने शुभ्रे तां रात्रिं भरतर्षभ ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि ब्रह्मस्तववर्णनोऽष्टषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६८ ॥

उनसठवां अध्याय ।

संजय बोले कि, हे महाराज! रात्रि व्यतीत होने और सूर्य के उदय होनेपर फिर दोनों सेना सम्मुख वर्त्तमान हुईं, वह सब एकसाथ युद्ध में परस्पर देखकर अत्यन्त क्रोधित होके परस्पर में विजय की इच्छा से सम्मुख दौड़े, हे राजन्! आपकी बुरी सलाहों के होने से आपके पुत्र और पाण्डव व्यूहों को रचकर अत्यन्त प्रसन्न और अलंकृत होके प्रहारों को करने लगे, फिर भीष्मजी ने चारों ओर से अपने मकर नाम व्यूह की रक्षा की, इसीप्रकार पाण्डवों ने अपने व्यूह की रक्षा की हे महाराज ! बड़े रथसमूहों समेत रथियों में श्रेष्ठ आपके पिता भीष्मजी चले, और दूसरी ओर के भी रथी हाथीपति और घोड़ों के सवार इत्यादि सब अपने अपने स्थान और अधिकार में नियत होकर पीछे पीछे चले, यशस्वी पाण्डव कौरवों को युद्ध में सन्नद्ध देखकर उस युद्ध में अजेय राजश्येन नाम व्यूह से युद्ध होकर सम्मुखता में वर्त्तमान हुए उस व्यूह के मुखपर महाबली भीमसेन शोभायमान हुआ और नेत्रों पर दुर्जय शिखण्डी और धृष्टद्युम्न नियत हुआ, सत्य पराक्रमी महाबली सात्यकी उसके शिरपर विराजमान हुआ और अर्जुन अपने गाण्डीव धनुष को चलायमान करता हुआ ग्रीवा में वर्त्तमान हुआ, और श्रीमान् महात्मा द्रुपद अपने पुत्रों समेत एक अक्षौहिणी सेना समेत व्यूह के बायें पक्ष में हुआ और दाहिने पक्ष में एक अक्षौहिणी को लिये केकय नियत हुआ और द्रौपदी के पांचो पुत्र और महा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बली अभिमन्यु पीछे की ओर हुए और उत्तम पराक्रमी श्रीमान् राजा युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव भाइयों समेत व्यूह के पृष्ठभाग में शोभित हुए, तब भीमसेन ने मुख के मार्ग से उस कौरवों के मकर व्यूह में प्रवेश करके भीष्मजी को पाकर उस युद्ध में शायकों से ढकदिया, फिर पराक्रमी भीष्मजी ने भी बड़े अस्त्रों को फेंका और बड़ायुद्ध करके पाण्डवों के व्यूह को मोहित कर दिया, फिर सेना के मोहित होजाने पर बड़ी शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने उस युद्धभूमि में आकर हज़ार बाणों से भीष्मजी को घायल किया, युद्ध में भीष्मजी के छोड़ हुए बाणों के प्रहार को सहकर अपनी प्रसन्न सेना के साथ युद्ध करने को उपस्थित हुआ, इसके पीछे पराक्रमी राजा दुर्योधन पूर्व दिन में सेना समेत भाइयों के मरण को देखकर द्रोणाचार्यजी से बोला कि हे पापों से रहित, आचार्यजी ! आप सदैव मेरा हित चाहनेवाले हो, हम सब आप की और भीष्मजी की रक्षा में होकर देवताओं को भी निस्सन्देह युद्ध में विजय करसक्के हैं, युद्ध में बल पराक्रमरहित पाण्डवों को विजय करना कितनी बात है आपका कल्याण हो आप वही काम करो जिसमें पाण्डव मारे जायँ तदनन्तर आपके पुत्र के इसरीति पर कहने से द्रोणाचार्यजी ने सात्यकी के देखतेहुए पाण्डवों की सेना को बाणों से भेदा, इसके पीछे हे भरतवंशिन् ! सात्यकी ने द्रोणाचार्य को रोका फिर तो महाघोररूप युद्ध होने लगा, फिर महाप्रतापी द्रोणाचार्य ने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर सात्यकी को दश बाणों से शत्रुस्थान में घायल किया इसके पीछे सात्यकी की रक्षा के निमित्त उस क्रोधरूप भीमसेन ने द्रोणाचार्यजी को बाणों से बेधा फिर द्रोणाचार्य, भीष्म और शल्य ने बड़े बाणों से भीमसेन को ढक दिया, इसके पीछे महाक्रोध भरे अभिमन्यु और द्रुपद के पुत्रों ने उन सब शस्त्रधारियों को बड़े तीक्ष्ण बाणों से बेधा फिर महाधनुषधारी शिखण्डी उन महाक्रोधरूप अतुलपराक्रमी भीष्म और द्रोणाचार्य के सम्मुख गया, वह वीर शीघ्र ही बादल के समान गर्जना करता बड़े भारी धनुषको लिये बाणों से सूर्य को ढककर तीव्र बाणोंकी वर्षा करनेलगा, फिर भरतवंशियों के पितामह भीष्मजी ने इसरीति से शिखण्डी को सम्मुख पाकर उसके स्त्रीभाव को स्मरण करके उससे युद्ध करना त्याग किया, हे महाराज ! इसके पीछे आपके पुत्र के कहने से भीष्मजी की रक्षा करते हुए द्रोणाचार्यजी संग्रामभूमि में उसके सम्मुख दौड़े २० फिर भयभीत शिखण्डी ने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

न महाशस्त्रवेत्ता प्रलय की अग्नि के समान प्रकाशमान द्रोणाचार्य को अच्छी रीति से सम्मुख होकर रोका, हे राजन् ! इसके पीछे युद्धाभिलाषी आपके पुत्र ने बड़ी सेना समेत भीष्मजी की रक्षा की और इसी रीति से पाण्डव अर्जुन को आगे करके और विजय में दृढ़बुद्धि होकर भीष्मजी के सम्मुख हुए, वह ऐसा महाघोर युद्ध हुआ जैसा कि देव और दानवों का संग्राम होता है उस युद्ध में विजयाभिलाषी शूरवीरों की बड़ी अपूर्वकीर्ति विख्याति हुई ॥ ३४ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि एकोनसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ।

संजय बोले कि आपके पुत्रों की रक्षा चाहनेवाले शान्तनव भीष्मजी ने बड़ा कठिन युद्ध किया, वह बड़ाभारी युद्ध दिन के पूर्वभाग में पाण्डव और कौरवों के राजाओं का नाश करनेवाला जारी हुआ, उस बड़े भयानक सब को व्याकुल करनेवाले महाघोर युद्ध के जारी होनेपर, आकाश को व्याप्त करनेवाला महाघोर शब्द हुआ, और हाथियों की चिंघाड़ और घोड़ों के हिनहिनाटों से वह शब्द अत्यन्त कठोर होगया, फिर वह पराक्रमी शूरवीर विजयाभिलाषी होकर परस्पर में युद्ध करते हुए, ऐसे गर्जे जैसे कि गौओं की शालाओं में बलीवर्द्द गर्जना करते हैं, हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! उस युद्ध में तीक्ष्ण बाणों से कटे हुए शिरों की ऐसी वृष्टि हुई जैसी कि आकाश से पाषाणों की वर्षा होती है और बड़े सुन्दर सुनहरी कुण्डल और मंडीलें पहरे हुए शिर पृथ्वीपर गिरे हुए दृष्टिगोचर हुए, विशिखों से भिंदे हुए अंग और कुण्डल-धारी शिर और अनेक हाथों के भूषणों से पृथ्वी व्याप्त होकर गुप्तसी होगई, हे राजन् ! अङ्गों में कवच विभूषित भुजा चन्द्रमा के समान मुख और लाल लाल नेत्रों से, और हाथी, घोड़े और मनुष्यों के सब अङ्गों से सब युद्धभूमि एक मुहूर्त में ही भरकर पूर्ण होगई, धूल के कठिन बादलों में शस्त्ररूप बिजली प्रकाशित थी और उन्हीं शस्त्रों के शब्द बादल की गर्जना सी होती थी, हे राजन् ! कौरव और पाण्डवों के वह शस्त्रों का परस्पर प्रहार महाकठिन सहने के अयोग्य जारी हुआ जिसमें रुधिर की नदी बह निकली, उस महाभयानक घोर तुमुलवाले रोमहर्षण युद्ध में दुर्मद क्षत्रियों ने बाणों के जालों को बरसाया, यहां बाणों की वर्षा से अत्यन्त पीड्यमान हाथी पुकारे और पाण्डवों के शूरवीर शस्त्रों से शोभित होकर चारों ओर से दौड़े, अत्यन्त कोपयुक्त पराक्रमी शूरवीरों

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

के धनुषों के टङ्कारशब्दों से कुछ भी नहीं जान पड़ता था, सब ओरसे जलरु रुधिर के मध्य बिन शिर घोड़ों के उड़ने पर शत्रुओं के मारने को उपस्थि दूसरे राजा लोग चारों ओर को दौड़े, बड़े तेजस्वी परिघ के समान भुजाधारी वीरों ने युद्ध में बाण, बरछी, गदा और खड्गों से परस्पर में एक को एक ने मारा, और बाणों से घायल हाथी अंकुश के विनाही इधर उधर घूमने लगे और जिनके सवार मारेगये ऐसे घोड़े भी दशों दिशाओं में दौड़ते फिरते थे, और कोई बाणों से पीड़ित होकर उठ उठकर गिरते थे और आपके वा पाण्डवों के शूरवीर भ्रमण करने लगे १६ पृथ्वी पर गिरेहुए बाण, बरछी, गदा, खड्ग और परिघ जांघ और हाथों से युक्त चरण भूषणसमेत कपड़ों के तोदे भीमसेन और भीष्मजी के सम्मुख पड़े हुए देख पड़ते हैं, हे राजन्! जहां तहां दौड़ते हुए घोड़े और लौटते हुए हाथियों के समूह दृष्टिगोचर हुए, वहां काल के प्रेरित क्षत्रियों ने गदा, खड्ग, प्रास और झुके हुए पर्ववाले बाणों से एकने एकको परस्पर में मारडाला। युद्ध में भुजबल करने में कुशल शूरवीर लोहे के परिघ समान अपनी भुजाओं के द्वारा बहुत प्रकार से बढ़े, हे राजन्! पाण्डवों के साथ आपके शूरवीरों ने मुष्टिका जानुतल और कीलों से भी परस्पर में घात किया, और जहां तहां गिरे और गिराये हुए पृथ्वी पर चेष्टा करनेवाले शूरवीरों से युद्धभूमि महाभयकारी दीखने लगी, और रथी रथ से पृथक् अथवा उत्तम खड्ग के धारण करनेवाले परस्पर घात के आकाङ्क्षी एक एक के सम्मुख दौड़े, तदनन्तर बहुत से कलिङ्गदेशियों से युक्त राजा दुर्योधन युद्ध में भीष्मजी को आगे करके पाण्डवों के सम्मुख वर्त्तमान हुआ, और इसी प्रकार युद्ध में क्रोधयुद्ध शीघ्रगामी सवारियोंवाले सब पाण्डव भीमसेन को मध्य में करके भीष्मजी के सम्मुख दौड़े ॥ २६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सप्ततितपोऽध्यायः ॥ ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय।

संजय बोले कि भीष्मजी से युक्त भाइयों और अन्य बांधवों को देखकर अस्त्रधारी अर्जुन गांगेय भीष्म के सम्मुख दौड़ा फिर पाञ्चजन्य शंख और गाण्डीव धनुष का शब्द सुनकर और अर्जुन की ध्वजा को देखकर हम सब लोगों में भय उत्पन्न हुआ, हे महाराज! हमने गाण्डीव धनुषधारी की उस ध्वजा को आकाश में देखा जो सिंह लांगूल नाम आकाश में प्रकाशित पर्वत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मान वृक्षों में न रुकनेवाली ऊंची उठी हुई अनेक रङ्गों से युक्त श्रीहनुमान्‌जी के चिह्न से अलंकृत थी, जैसे कि आकाश के बादलों में नियत शोभायमान बिजली दिखाई देती है उसी प्रकार शूरवीरों ने भारी युद्ध में उस सुनहरी पृष्ठवाले गाण्डीव धनुष को देखा, फिर हमने इन्द्र के समान सम्मुख गर्जना करते और आपकी सेना को मारते हुए अर्जुन के तलोंके महाघोर शब्दों को वारंवार सुना जैसे कठिन वायुयुक्त बादल बिजली के साथ होता है उसी प्रकार अर्जुन ने चारों ओर से बाणों की वर्षासे दिशाओं को चलायमान करदिया, भयानक अस्त्रवाला अर्जुन भीष्मजी के सम्मुख दौड़ा उस समय हमने अस्त्रों से व्याकुल होकर पूर्वादि दिशाओं को भी नहीं पहचाना, हे भरतर्षभ! आपके अचेत होने वाले शूरवीर जिनकी सवारी थकी और घोड़े मरे वा किसी दशा में नियत थे, वह सब परस्पर में मिलकर आपके पुत्रों समेत भीष्मजी के ही आश्रय में होते थे और भीष्मजी उनकी रक्षा करते थे, भयभीत रथी अपने रथों से और सवार घोड़े की पीठ से और पदाती पृथ्वी से अत्यन्त उछलते थे, हे भरतवंशिन्! गाण्डीव धनुष के वज्र के समान शब्दों को सुनकर सेना के सब मनुष्य मारे भयके भागे, इसके पीछे राजा कलिङ्ग बड़े शीघ्रगामी काम्बोजदेशी वा उत्तम घोड़ों के द्वारा गोपायन नाम गोपों की असंख्य सेनायुक्त मद्र, सौवीर, गान्धार, त्रिगर्तदेशीय और कलिङ्गों की उत्तम सेना के शूरवीरों समेत, नानाप्रकार की सेनाओं के समूहों को साथ लिये जिनमें मुख्य दुःशासन था और सब राजाओंसमेत राजा जयद्रथ और आपके पुत्रके भेजे हुए चौदहहज़ार उत्तम अश्व सवार इन सबोंने चारों ओर से सौबल के पुत्र को मध्य में कर लिया, इसके पीछे उन सब पाण्डवों ने जिनके रथ और सवारियां बुद्धि के अनुसार विभागयुक्त थीं एकसाथ ही आकर आपके शूरवीरों को मारा, रथी हाथी घोड़े और पदातियों से अच्छे प्रकार से चलायमान युद्धभूमि बड़े बादलों के समान धूलि से महाभयकारी विदित हुई, भीष्मजी तोमर, प्रास, नाराच और हाथी घोड़े रथोंसे युद्ध करनेवाली शूरवीरोंकी सेनासमेत अर्जुनसे अत्यन्त लड़े राजा अवन्ती काशी के राजा के साथ और भीमसेन जयद्रथ के साथ और राजा युधिष्ठिर पुत्र और प्रधानों समेत मद्रदेश के राजा शल्य के साथ अत्यन्त शूरतासे लड़े और विकर्ण सहदेव से चित्रसेन शिखंडी से लड़ने लगा, हे राजन्! मत्स्यदेशीय शूरवीर दुर्योधन और शकुनी के साथ बड़े पराक्रम करनेवाले हुए

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और महारथी द्रुपद चेकितान और सात्यकी महात्मा द्रोणाचार्य और उनके पु
से युद्ध करनेवाले हुए कृपाचार्य और कृतवर्मा दोनों धृष्टद्युम्न के सम्मुख दौड़े इ
रीति से स्थान स्थान पर चारों ओर से ऐसे युद्ध होने लगे कि जिन के घोड़े
प्राणगत और हाथी रथ भ्रान्ति से युक्त होगये हे राजन्! उस समय आकाश में
विना ही बादलों के महातीव्र विद्युत्पात होने लगा और दिशा धूल से आच्छा-
दित होगईं और महाउल्कापात होकर परस्पर में बड़े घोर शब्द प्रकट हुए,
महावायु चलनेलगा और धूल की ऐसी अत्यन्त वर्षा हुई जिसके कारण सूर्य
ढककर आकाश में गुप्त होगया, धूल से लुपाहुआ और अस्त्रों के जालों से लड़-
नेवाले सब जीवों को बड़ी अचेतता प्राप्त हुई, वीरों की भुजाओं से छुटे सब
पदों के भेदन करनेवाले बाणों के जालों से महाकठोर शब्द उत्पन्नहुए हे भरतर्षभ!
उत्तम भुजाओं से उठायेहुए निर्मल नक्षत्रों के समान प्रकाशमान शस्त्रों ने आ-
काश को प्रकाशित करदिया, और सब दिशाओं में उत्तम जड़ाऊ सुनहरी ढालें
पृथ्वी पर गिरीं, सब रीतों से सूर्यरूप खड्गों से गिराये हुए शरीर और शिर
सब ओर को पड़े हुए दिखाई दिये, जिनके पहिये अक्ष और नीढ़ें टूटगये थे
और बड़ी-बड़ी ध्वजायें गिरपड़ी थीं वा घोड़े भी मरगयेथे ऐसे बड़े-बड़े रथ स्थान
स्थान पर गिरे पड़े थे और कितने ही घोड़े शस्त्रों से घायल हुए पृथ्वी में चारों
ओर घूमते थे हे भरतवंशिन्! बाणों से घायल देहवाले उत्तम घोड़े जिनके अङ्गों
पर ईर्षा दण्ड बँधा था उन्होंने जुओं को स्थान स्थान पर खैंचा, उस युद्ध में कोई
कोई एक ही बाण से सारथी घोड़े और रथ समेत मारे हुए शूरवीर दिखाई पड़े,
सेना के समूहों के चढ़ाई होने पर बहुत से हाथियों ने हाथी के मद से
निकली हुई गन्ध को सूंघकर वायु को भक्षण किया, और नाराचों से मारे हुए
बड़े डील डौलवाले तोरनों समेत गिरे हुए मृतक हाथियों से युद्धभूमि गुप्त
होगई, फिर सेना के चलायमान होने पर भगे हुए हाथियों से घायल हुए दूसरे
हाथी अपने शूरवीर सवारों समेत सब ओरसे पृथ्वीपर गिरे, हे महाराज! उसयुद्ध
में गजराज के समान हाथियों की सूंड़ों से खिंचकर रथों के कूबर अत्यन्त टूटेहुए
दिखाई पड़े, जिन के रथों के जाल टूटे ऐसे रथी युद्ध में वृक्ष की डाली के समान
शिरके बालों में हाथियों से खिंच कर और घायल होके फँसगये, और युद्धमें उत्तम
हाथी रथों में चिपटे हुए रथों को खैंचते सब हाथियों के शब्दों पर चलते हुए सब
दिशाओं को दौड़े, उन खैंचनेवाले हाथियों का रूप ऐसा शोभित हुआ जैसे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तड़ागोंमें लगे हुए सुन्दर कमलों के खैंचनेवाले हाथियों का रूप शोभायमान होता है, वह युद्धभूमि सवार पदाती और बड़े ध्वजावाले रथों से पूरित होगई ॥ ४२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि एकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ।

संजय बोले कि हे राजन्! शिखण्डी ने मद्र के राजा विराट समेत बड़ी शीघ्रतासे महारथी दुःप्रधर्ष भीष्मजी से सम्मुखताकरी और अर्जुन ने द्रोणाचार्य कृपाचार्य और राजा दुर्योधन के बहुत से बड़े-बड़े धनुषधारी महाबली शूरवीरों को मोहित किया, हे राजेन्द्र! प्रधान और भाइयों के साथ बड़े धनुषधारी राजा सिंध और पूर्वीय पश्चिमीय व आपके क्रोधीपुत्र और बड़े धनुषधारी दुर्योधन आदि अन्य अनेक राजाओं के सम्मुख उस युद्ध में भीमसेन वर्त्तमान हुए और महारथी सहदेव शकुनी और उलूक के सम्मुख हुए और वह बड़े धनुषधारी दुःप्रधर्ष पिता पुत्र भी सम्मुख वर्त्तमान हुए, और आपके पुत्र से ठगा हुआ महारथी युधिष्ठिर युद्ध में हाथियों की सेना के सम्मुख वर्त्तमान हुआ, और युद्ध में गर्जनेवाला माद्रीनन्दन वीर नकुल त्रिगर्त्त देशियों के बड़े रथों से युद्ध करनेवाला हुआ, और अजेय महाबली सात्यकी वा चेकितान और अभिमन्यु यह तीनों शाल्व और केकय लोगों से युद्ध करने के लिये उपस्थित हुए और धृष्टकेतु वा घटोत्कच राक्षस युद्ध में आप के पुत्रों की रथवाली सेना के सम्मुख गये, हे राजन्! महारथी साहसी सेनापति धृष्टद्युम्न महाभयकारी कर्मकरता द्रोणाचार्य के सम्मुख जा भिड़ा, इस प्रकार से आपके इतने धनुषधारी पराक्रमी शूरों ने पाण्डवों के सम्मुख होकर प्रहारों को किया, दिवस में सूर्य के वर्त्तमान होने और आकाश में व्याकुलता होनेपर कौरव और पाण्डवों ने परस्पर में मारना प्रारम्भ किया, और सुवर्ण जटित ध्वजा उस युद्ध में घूमनेलगी और व्याघ्रचर्म से मढ़ेहुए रथ और पताकाओंसमेत महाशोभायुक्त हुए, युद्ध में भिड़े हुए परस्पर विजयाभिलाषी सिंह के समान गर्जना करने वाले शूरवीरों के महाकठोर शब्द होने लगे, वहां हमने बड़े भयानक उस अपूर्व प्रहार को देखा जिसको बड़े शूरवीर संजय लोगोंने कौरवों के साथ किया हे शत्रुहन्ता! हमने चारों ओर से छोड़े हुए बाणों के कारण आकाश सूर्य दिशा विदिशा आदि किसी को नहीं देखा, तीक्ष्णधार बरछी और छोड़े हुए

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तोमर और विषयुक्त नीले कमल के समान खड्गों के और जड़ाऊ कवचों वा आभूषणों के प्रकाश ने आकाश दिशा विदिशाओं को प्रकाशित कर दि हे राजन् ! उस समय वह रणभूमि चन्द्रमा सूर्य से प्रकाशमान मुखवाले राजाओं के शरीरों से शोभायमान हुई, हे राजन् ! रथियों में श्रेष्ठ नरोत्तम युद्ध में जुटे हुए उस युद्ध में ऐसे शोभायमान विदित होते थे जैसे कि आकाश में ग्रहों समेत सूर्य चन्द्रमा शोभा देते हैं, फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त महारथी भीष्मजी ने सब सेना के देखते उस महाबली भीमसेन को रोंका और अपने तीक्ष्ण शिलापर घिसे हुए सुन्दर प्रकाशित सुवर्ण पुङ्खवाले बाणों से उसके शरीर को घायल किया, हे भरतवंशिन् ! फिर उस महाबली भीमसेन ने शीघ्रगामी सूर्य के समान तीव्र बरछी को बड़े क्रोध करके भीष्म के ऊपर फेंका, फिर भीष्म ने उस सुनहरी दण्डवाली महा असह्य अकस्मात् गिरनेवाली बरछी को अपने गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे काटा, तदनन्तर अपने तीक्ष्ण पीतरंग वाले भल्ल से भीमसेन के धनुष को काटा इसके पीछे सात्यकी ने भीष्मजी के सम्मुख आकर बड़े वेग से कानोंतक खैंचे हुए तीक्ष्ण प्रकाशित बाणों से आपके पिता को मोहित कर दिया फिर भीष्मजी ने बड़े भयानक तीक्ष्णबाण को चढ़ाकर सात्यकी के सारथी को रथ से गिराया, हे राजन् ! सारथी के मरने पर उसके घोड़े मन और वायु की गति के समान इधर उधर दौड़ने लगे, इसके पीछे सम्पूर्ण सेना में कठिन शब्द प्रकट हुआ और महात्मा पाण्डवों का हाहाकार उत्पन्न हुआ, चलो दौड़ो-दौड़ो घोड़ों को थामों-थामों यह कठोरशब्द केवल सात्यकी के रथके विषय में हुआ फिर उसी समय शंतनु के पुत्र भीष्मजी ने पाण्डवों की सेना को ऐसे मारा जैसे कि असुरों की सेना को इन्द्र मारताहै, वह पांचाल देशी सोमकों समेत भीष्म के हाथ से घायल युद्ध में उत्तमबुद्धि को करके भीष्म के सम्मुख दौड़े और अग्रगामी धृष्टद्युम्न समेत पाण्डव भी आपके पुत्रकी सेनाके मारनेकी इच्छासे उस भीष्म के सम्मुख दौड़े, हे राजन् ! इसी प्रकार आपके भीष्म आदिक वीर भी पाण्डवों के सम्मुख बड़े वेग से दौड़े और युद्ध होने लगा ॥ ३४ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि द्विसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ।

संजय बोले कि इसके पीछे राजा विराट ने तीन बाणों से महारथी भीष्म

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोहित किया और भीष्म ने अपने तीन बाणों से उसके घोड़ों को घायल करके अपने तीक्ष्ण दश बाणों से उसको घायल किया और बड़े धनुषधारी महारथी दृढ़हस्त अश्वत्थामा ने छः बाणों से अर्जुन की छाती को घायल किया फिर शत्रुओं के मारनेवाले और बल से हीन करनेवाले अर्जुन ने उसके धनुष को काटकर बड़े तीव्र बाणों से उसको घायल किया हे राजन्! उस वेगवान् क्रोध से मूर्च्छित युद्ध में अर्जुन के हाथ से टूटे हुये धनुष को असह्य मानकर अश्वत्थामा ने दूसरे धनुष को लेकर, नौ तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को घायल किया और सत्तर तेज बाणों से वासुदेव जी को घायल किया, इसके पीछे श्रीकृष्णजी समेत क्रोध से लाल नेत्र अर्जुन ने बड़ी लम्बी उष्ण श्वासें लेकर वारंवार बड़ी चिन्ता युक्त होकर वाम हाथ से गांडीव धनुष को बहुत सा दबाकर गुप्तग्रन्थी युक्त जीवन के नाश करनेवाले भयानक शिलीमुख नाम बाणों को धनुष पर चढ़ाया और बड़ी शीघ्रता से उन बाणों के द्वारा अश्वत्थामा को घायल किया, उन बाणों ने युद्ध में उसके कवच को काटकर उसके रुधिर को पानकिया फिर अर्जुनसे घायल कियाहुआ पीड्यमान अश्वत्थामा भी उसी रीति के अर्जुन को बाण मारता हुआ और महाव्रत भीष्मजी की रक्षा करता हुआ बड़े धैर्य से युद्ध में नियत रहा, उसके उस महाकर्म को देखकर कौरवों ने बड़ी प्रशंसा करी जो युद्ध में श्रीकृष्ण के सम्मुख दौड़ा, और द्रोणाचार्य से अति दुःप्राप्य संहार समेत अस्त्र समूहों को पाकर भयभीत सेना में युद्ध करनेवाले शत्रुसंतापी वीर अर्जुन ने इस बात को विचार करके कि यह मेरे गुरु का पुत्र गुरु को अत्यन्त प्यारा और मुख्य कर ब्राह्मण होकर मेरा पूजनीय है उस को अवध्य जानकर नहीं मारा, इसके पीछे श्वेत अश्ववाला शीघ्रकर्मी अर्जुन युद्ध में अश्वत्थामा को छोड़कर आपके शूरवीरों को मारता हुआ युद्ध में प्रवृत्तहुआ, फिर दुर्योधन ने गृध्रपक्ष युक्त सुनहरीपुङ्ख शिला पर तीक्ष्णकियेहुए दश बाणों से बड़े बली धनुषधारी भीमसेन को घायल किया, तब अत्यन्त कोपित भीमसेन ने मृत्युकारक रत्नों से जटित बड़े दृढ़ धनुष को हाथ में लिया और दश तीक्ष्ण बाणों को चढ़ाकर बड़ी शीघ्रता से अधिक खैंच कर राजा दुर्योधन को छाती में घायल किया, उस की सुवर्णित सूत्र से बँधी हुई छाती की मणि बाणों से संयुक्त होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि आकाश में ग्रहों से व्याप्त सूर्य होताहै, फिर भीमसेन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

से घायल आप के तेजस्वी पुत्र ने ऐसे नहीं सहा जैसे कि हाथ की हथेली के शब्द से जागा हुआ सर्प शान्त नहीं होता है, हे महाराज! सेना की रक्षा करने वाले अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने सुनहरी पुङ्ख के पैने किये हुए बाणों से भीमसेन को घायल किया फिर आपके वह दोनों महाबली पुत्र युद्ध में लड़ते और परस्पर घायल करते देवताओं के समान शोभायमान हुए, और नरोत्तम शत्रुहन्ता अभिमन्यु ने सात तीक्ष्ण बाणों से चित्रसेन और पुरुमित्र को घायल किया फिर युद्ध में नृत्य करते इन्द्र के समान पराक्रमी अभिमन्यु ने सत्तर बाणों से सत्यव्रत को घायल करके हम लोगों को पीड़ित किया, चित्रसेन ने शिलीमुख नाम दश बाणों से और सत्यव्रत ने नव बाणों से पुरुमित्र ने सातबाणों से उसको घायल किया, उस घायल और रुधिर को डालने वाले अभिमन्यु ने चित्रसेन के उस जड़ाऊ शत्रुओं के हटानेवाले बड़े धनुष को काटा, और बाण ही से उसके कवच को काटकर छाती में घायल किया फिर आपके उन महाबली राजकुमारों ने और महारथियों ने भी अपने तीक्ष्ण बाणों से घायल किया फिर उस महा अस्त्रज्ञ ने उन सबको भी अपने तीक्ष्ण बाणों से घायल किया, फिर युद्ध में महाक्रुद्ध के समान आपके वीरों के जलानेवाले उस अभिमन्यु के उस कर्म को आपके पुत्रों ने देखकर उसको चारों ओर से घेर लिया, चैत्र वैशाख की तीव्र अग्नि के समान अभिमन्यु आपकी सेनाको नाश करता बड़ा शोभित हुआ, हे राजन्! आप का पौत्र लक्ष्मण उस चरित्र को देखकर शीघ्र ही अभिमन्यु के सम्मुख आन भिड़ा फिर अत्यन्त कोपित अभिमन्यु ने शुभ लक्षणवाले लक्ष्मण को छः विशिखों से और सारथी को तीन बाणों से पीड्यमान किया, हे महाराज, धृतराष्ट्र! उसी प्रकार से लक्ष्मण ने भी अपने बाणों से अभिमन्यु को ऐसा घायल किया जिसके देखने से आश्चर्य सा होता है, फिर महाराथी अभिमन्यु उसके चारों घोड़ों को सारथी समेत मारकर लक्ष्मण के सम्मुख दौड़ा, फिर वह मृतक घोड़ों के रथ पर नियत शत्रु के वीरों के मारनेवाले अत्यन्त क्रोधित लक्ष्मण ने अभिमन्यु के रथ पर बरछी को फेंका, अभिमन्यु ने उस भयानकरूप असह्य सर्पाकृति आनेवाली बरछी को अपने तीव्रबाणों से काटा, फिर कृपाचार्य जी लक्ष्मण को अपने रथ पर बैठाकर सब सेना के देखते हुए उसको रथ के द्वारा दूर लेगये, फिर बड़े भयकारी तुमुल युद्ध के वर्त्तमान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होने पर परस्पर विजयाभिलाषी शूरवीर एक एक को मारते हुए सम्मुख दौड़े, आपके बड़े धनुषधारी महारथी पाण्डव युद्ध में प्राणों को होमते हुए परस्पर में मारने लगे फिर छुटेबाल कवच रहित टूटे धनुष सृंजी लोग अपनी भुजाओं से कौरवों से अत्यन्त युद्ध करनेवाले हुए, तदनन्तर महाबाहु भीष्मजी ने बड़े क्रोधयुक्त होकर अपने दिव्यअस्त्रों से महात्मा पाण्डवों की सेना को मारा, उस समय विना स्वामी के हाथी मनुष्य घोड़ों के वा रथी और अश्वारूढ़ों के गिरने से युद्धभूमि अत्यन्त व्याप्त होगई ॥ ४३ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय।

संजय बोले कि, हे राजन्! फिर युद्धमें दुर्मद महाबाहु सात्यकी ने अपने उग्र धनुष को खैंचकर, अपनी हस्तलाघवता को दिखाते सपुङ्ख सर्पाकृति तीक्ष्ण बाणों को छोड़ा और बड़ी शीघ्रता से अनेक बाणों को फेंकते शत्रुओं को मारते हुए सात्यकी का ऐसा रूप दिखाई दिया जैसे कि अत्यन्त बरसते हुए बादल का रूप दिखाई देता है, फिर राजा दुर्योधन ने उस गर्जनेवाले सात्यकी को देखकर उसके ऊपर दश हज़ार रथियों को भेजा, फिर सत्य विक्रम महाबली उग्रधनुषधारी सात्यकी ने अपने दिव्यास्त्रों से उन बड़े-बड़े धनुषधारियों को मारा, फिर इस वीर धनुषधारी ने महाकठिन कर्म को करके भूरिश्रवा को सम्मुख पाया, वह कौरवों की कीर्त्ति का बढ़ानेवाला भूरिश्रवा उस सेना को सात्यकी के हाथ से पीड़ित देखकर बड़ा क्रोधयुक्त होके सम्मुख दौड़ा, हे राजन्! उसने भी अपनी हस्तलाघवता को दिखाकर इन्द्रवज्र के समान धनुष को टङ्कारकर सर्पों के समान वज्र के सदृश हज़ारों बाणों को छोड़ा, और सात्यकी के साथी शूर वीर उन मृत्यु के समान स्पर्शवाले बाणों को नहीं सहसके और सब उस दुर्मद सात्यकी को युद्ध में अकेला ही छोड़कर चारों ओर को भागे फिर सात्यकी के बड़े धनुषधारी महारथी कवचों से शोभित दश पुत्रों ने उस सेना को भागता देखकर महा क्रोधित होके उस यूपध्वज बड़े धनुषधारी भूरिश्रवा के सम्मुख होकर बोले, हे कौरवों के प्यारे पुत्र महाबली! आओ और युद्ध में हमसबों के साथ अथवा जुदे-जुदे के साथ युद्ध को करो, तुम संग्राम में हमको विजय करके कीर्त्तिवान् होगे अथवा हम तुम को विजय करके पिता को आनन्द देंगे, तब उन शूरवीरों से ऐसा कहा हुआ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अपने बल से प्रशंसा पानेवाला नरोत्तम महाबली भूरिश्रवा उनको सम्मुख नियत देखकर बोला, हे वीरलोगो! यह बहुत उत्तम है जो अब तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो तुम सब इकट्ठे होकर लड़ो मैं युद्ध में तुम सब उपाय करनेवालों को मारूंगा, ऐसे परस्पर कहकर बड़े धनुषधारी शीघ्रता करनेवाले शत्रुओं के पराजय करनेवाले उन वीरों ने बाणों की वर्षा चारों ओर से मचादी, हे महाराज! तीसरे पहर तक एक का बहुतों के साथ महायुद्ध हुआ, फिर इन सबोंने उस रथियों में श्रेष्ठ अकेले को बाणों से ढककर ऐसा सींचा जैसा कि वर्षा ऋतु में सुमेरु पर्वत को बादल सींचते हैं, उस भ्रान्तिरहित महारथी ने उन सबोंके छोड़े हुए यमदण्ड वा इन्द्र वज्र के समान प्रकाशित बाणसमूहों को बड़ी शीघ्रतापूर्वक मार्ग में ही काटा, हे राजन्! हमने वहां पर सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा के अद्भुत पराक्रम को देखा कि जो अकेलाही निर्भय के समान अनेकों से लड़ा, दश महारथियों ने बाणों की वर्षा को छोड़ कर उस महाबाहु को चारों ओर से घेरकर मारने का विचार किया, हे भरतर्षभ! तब तो महारथी भूरिश्रवा ने अत्यन्त कोपयुक्त होकर एक निमिष ही में अपने दश बाणों से उनके दशों धनुषों को काटा, तदनन्तर इन टूटे धनुषवाले वीरों के शिरों को अपने गुप्तग्रन्थीवाले भल्लों से काटडाला, वह मरकर पृथ्वी पर ऐसे गिरे जैसे कि वज्र से टूटे हुए वृक्ष पृथ्वी पर गिरते हैं, हे राजन्! युद्ध में मरे हुए महाबली वीरपुत्रों को देखकर, बड़ी गर्जना करता हुआ सात्यकी भूरिश्रवा के सम्मुख गया और दोनों महाबली युद्ध में रथ से रथ को टक्कर देकर रथों के घोड़ों को परस्पर मार विरथ होके सम्मुख गर्जते हुए द्वन्द्व युद्ध करने लगे, फिर वह बड़े बड़े खड्ग और ढालों को धारण किये हुए युद्ध में प्रवृत्त महाशोभायमान हुए, हे राजन्! इसके पीछे भीमसेन ने उत्तम खड्गधारी सात्यकी के पास आकर उसको रथपर सवार किया, फिर आपके पुत्र ने भी सब धनुष धारियों के देखते हुए शीघ्र ही भूरिश्रवा को रथ पर सवार किया, हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! इस प्रकार से उस युद्ध के प्रवृत्त होने पर महाक्रोधित पाण्डव और भीष्मजी भी युद्ध में प्रवृत्त हुए, सूर्य के अरुण होने पर बड़ी शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने पच्चीस हज़ार महारथियों को मारा, फिर वह दुर्योधन की आज्ञा से अर्जुन के मारने की इच्छा में अर्जुन को न पाकर ही ऐसे नष्ट होगये जैसे कि अग्नि में टीड़ी भस्म होजाती हैं, इस पीछे धनुर्वेद में पण्डित मत्स्य और केकयों ने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हुआकर पुत्र समेत अर्जुन की चारों ओर से रक्षाकरी फिर अच्छे प्रकार से उठी हुई धूल के बादलों से सूर्यास्तसा होगया उस समय सूर्यास्त के कारण सेना में बड़ा मोह उत्पन्न हुआ, इसके पीछे हे महाराज ! आपके पिता देवव्रत जिनके घोड़े थके हुए थे उन भीष्मजी ने सायंकाल के समय सेना को विश्राम दिया, पाण्डव और कौरवों के परस्पर युद्ध से अत्यंत व्याकुल वह दोनों ओर की सेना अपने-अपने निवासस्थान को गई, इसके पीछे संजयों समेत पाण्डव और कौरव बुद्धि के अनुसार अपने अपने डेरों में जाकर स्थित हुए ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि चतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय ।

संजय बोले कि हे राजन् ! फिर वह कौरव पाण्डव रात्रि को व्यतीत करके प्रातःकाल ही युद्ध करने को चले, इसके पीछे उन पाण्डवों के और आपके पुत्रों के उत्तम रथों के जुड़ते हुए घोड़ों के महाशब्द होने लगे और सब ओर से शंख वा दुन्दुभियों के कठिन शब्द भी सुनाई दिये तब राजा युधिष्ठिर ने धृष्टद्युम्न से कहा कि हे महाबाहो ! तुम मकरव्यूह को तैयार करो वह व्यूह शत्रुओं का संतप्त करनेवाला है, युधिष्ठिर की आज्ञा पाते ही उस महारथी धृष्टद्युम्न ने रथी शूरवीरों को आज्ञा करी, उस व्यूह का शिर तो राजा द्रुपद और अर्जुन हुआ और नेत्र में महारथी नकुल और सहदेव हुए और मुख में महाबली भीमसेन हुआ और व्यूहकी ग्रीवा में अभिमन्यु, द्रौपदी के पांचो पुत्र, घटोत्कच राक्षस, सात्यकी और धर्मराज हुए, और पीठ पर बड़ी सेनायुक्त सेनापति धृष्टद्युम्न और विराट उपस्थित हुए और वाम भाग में पांचो भाई केकय वर्त्तमान हुए, और नरोत्तम धृष्टकेतु और पराक्रमी चेकितान दक्षिण पक्ष में नियत होकर व्यूह के दक्षिण ओर नियत हुए और हे राजन् ! बड़ी सेना समेत श्रीमान् महारथी कुन्तभोज और शतानीक व्यूह के चरणों पर स्थिर हुए, फिर बड़ा धनुषधारी बलवान् शिखण्डी सोमकों समेत और राजा इरावान् उस मकरव्यूह की पूंछपर नियत हुए, इस रीति से मकरव्यूह को रचकर सूर्य के उदय होनेपर सब पाण्डव फिर युद्ध करने को शस्त्रधारी होकर उपस्थित हुए और रथ, हाथी, घोड़े और बड़ी ऊंची ध्वजावाले क्षत्रियों से युक्त सब प्रकार के स्वच्छ अस्त्रों समेत कौरवों के सम्मुख गये, हे धृतराष्ट्र ! आपके पिता भीष्मजी ने उस अलंकृत सेना को देखकर अपनी सेना को भी क्रौंच नाम बड़े व्यूह में बड़ी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रचना से बनाया, उसके मुख पर बड़े धनुर्द्धर द्रोणाचार्य और नेत्रों पर अश्वत्थामा और कृपाचार्य हुए और शिर की ओर कृतवर्मा, बाह्लीक और काम्बोज वाले हुए, और ग्रीवा में सब राजाओं समेत आपका पुत्र दुर्योधन और शूरसेन नियत हुए, और बड़ी सेनासमेत राजा प्राग्ज्योतिषभद्र और केकयों समेत सौवीर छाती पर नियत हुआ और प्रस्थल देश का राजा सुशर्मा अपनी सेना समेत बायें भाग में शस्त्रों को धारण करके नियत हुआ २० और तुषार यवन और शक चोल्कों समेत व्यूह के दाहिने भाग में बड़ी सावधानी से वर्त्तमान हुए, और श्रुतायु शतायु (सोमदत्त) मारिष यह सब व्यूह की जङ्घापर रक्षा करने वाले हुए इसके पीछे हे राजन् ! सूर्य के उदय होने पर पाण्डव कौरवों के समूह युद्ध के निमित्त चले फिर युद्ध होना प्रारम्भ हुआ, हाथी रथियों के सम्मुख गये और रथी हाथियों के सम्मुख हुए अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ों के और रथी अश्वारूढ़ों के और अश्वारूढ़ घोड़ों के सम्मुख पहुँचे और हाथी हाथी के सवारों से और रथी रथियों के सम्मुख उपस्थित हुए हे राजन् ! रथी और अश्वारूढ़ पत्तियों से युद्ध करने लगे और युद्ध में महाक्रोधित होकर परस्पर सम्मुख दौड़े और भीमसेन, अर्जुन और नकुल वा सहदेव यह सब अन्य महारथियों से रक्षित होकर ऐसी बड़ी शोभा को प्राप्त हुए जैसी कि नक्षत्रों से रात्रि की शोभा होती है इसी प्रकार आपकी सेना भी भीष्म, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, शल्य और दुर्योधन से ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि ग्रहों से भरा हुआ आकाश शोभित होता है, फिर कुन्ती का पुत्र पराक्रमी भीमसेन द्रोणाचार्य को देखकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों की सवारी से उनकी सेना के सम्मुख गया, फिर युद्ध में क्रोधित पराक्रमी द्रोणाचार्य ने मर्मस्थलों को ताककर नौ लोहे के बाणों से भीमसेन को घायल किया ३० तदनन्तर उस युद्ध में द्रोणाचार्य से बहुत घायल हुए भीमसेन ने उनके सारथी को मारा, फिर उस प्रतापी द्रोणाचार्यजी ने आप घोड़ों को पकड़ कर पांडवों की सेना का ऐसा विध्वंस किया जैसे कि अग्नि रुई को भस्म करता है हे नरोत्तम ! द्रोणाचार्य और भीष्मजी से घायल होकर वह संजय केकयों समेत भाग गये इसी प्रकार भीमसेन और अर्जुन से भयभीत आपकी भी घायल सेना जहां तहां ऐसे भागी जैसे कि मतवाली श्रेष्ठ स्त्री जहां तहां भागती है, हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे उस उत्तम वीरों के नाश में दोनों व्यूह भिन्न भिन्न होगये और आपके पुत्रों को और पाण्डवों को महाघोर दुःख हुआ हे राजन् !

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हमने आपके पुत्रों का शत्रुओं के साथ वह आश्चर्य देखा जो एक स्थान पर वर्त्तमान होकर सब युद्ध में प्रवृत्त हुए वह कौरव पांडव उस महायुद्ध में परस्पर अस्त्रों को प्रहार करके युद्ध करते हुए ॥ ३७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७५ ॥

छहत्तरवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय ! यह सेना बहुगुणसंपन्न अनेकप्रकार के शास्त्रके अनुसार अलंकृत और युद्ध में सफल है और हमारी सेना भी सदैव प्रसन्न सफलरूप और उदार है जिसका कि पराक्रम प्रारम्भ से ही देखा जाता है न बहुत वृद्धा न बालक न दुर्बल न पुष्ट है किन्तु हस्तलाघवता आदि उपायों में कुशल अत्यन्त दृढ़ अंगवाली और निरोग है, कवच और शस्त्रों की धारण करनेवाली अनेक शस्त्रसमूहों से पूर्ण भुजा खड्ग गदा इत्यादि से युक्त लड़ाई में बड़ी तीव्र है, प्रास, दुधाराखड्ग, तोमर, परिघ, लोहे के भिंदिपाल, बरछी, मूसल, कंपनधनुष, कनप इत्यादि शस्त्रों में और उनके चलाने आदि की अनेक अद्भुतता में वा मदोन्मत्तता के युद्धों में संग्रामभूमिपर नियत होकर सबप्रकार से योग्य, विद्याओं में पूर्ण अथवा मल्लयुद्ध में प्रबल शस्त्रविद्या के ज्ञाता सब विद्याओं में पण्डित, सवार होने वा डेरे में रहने वा चलने वा दोनों के अन्तर से चलने वा शस्त्र चलाने वा चढ़ाई करने वा समय देखकर हटजाने में बड़े कुशलबुद्धि, हाथी घोड़े और रथों की सवारियों में बहुधा परीक्षा किये हुए और परीक्षा लेकर न्याय के अनुसार मासिक आदि वेतनके योग्य हैं, और सभा उपकार नातेदारी और मित्रों के और कुटुम्बियों के बल और सामानों के कारण अधिकार नहीं पानेवाले हैं, वृद्धियुक्त वा उत्तम मनुष्य जिनमें बांधव प्रसन्न और प्रतिष्ठावान् हैं और बहुत उपकारी यशस्वी साहसी वेगवान् उत्तम कर्मी लोकपालों के समान संसारमें प्रसिद्ध मनुष्यों से पोषित अपनी इच्छा से सेना समेत पीछे चलनेवाले बहुत से क्षत्रियों को लेकर हमारे समीप आनेवाले चारोंओर से समुद्रके समान उमगते हाथी, रथ, घोड़ोंसमेत अनेक शूरवीरोंसे शोभित बड़े भयानकक्षेप खड्ग, गदा, बरछी, बाण, परशु आदि अनेक शस्त्रोंसे अलंकृत रत्नजटित रेशमी वस्त्रों से मण्डित अनेक ध्वजाओं समेत चारोंओर को दौड़नेवाली सवारियों में बैठे समुद्रके समान गर्जनेवाले द्रोणाचार्य और भीष्म से रक्षित कृतवर्मा, कृपाचार्य, दुश्शासन, जयद्रथ, भगदत्त, विकर्ण, अश्वत्थामा, शकुनि, बाह्लीक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इन बड़े बड़े वीरों से और महात्माओं से रक्षित जो सेना युद्ध में मारी गई इसमें होनहार ही प्रबल है, हे संजय! पृथ्वीपर ऐसे युद्ध को बड़े बड़े ऋषि मुनि और महात्मा मनुष्यों ने भी कभी नहीं देखा शास्त्र, धन, लक्ष्मी से युक्त ऐसा सेना का समूह भी जिस युद्ध में मारा जाता है वहां प्रारब्ध के सिवाय क्या समझना चाहिये, हे संजय! यह सब विपरीत देख पड़ता है कि जहां ऐसी भयानक सेना ने युद्ध में पाण्डवों को नहीं जीता, हे संजय! वहां पाण्डवों के निमित्त देवता तो आनकर हमारी सेना से नहीं लड़ते हैं कि इतनी प्रबल सेना घायल होजाती है, इस स्थान पर सदैव हितकारी फलदायक वचन विदुरजी ने कहा है परन्तु मेरा अभागा बेटा दुर्योधन उस वचन को नहीं मानता है मैं मानता हूं क्योंकि उस सर्वज्ञ महात्मा विदुर का पहला कहाहुआ अब सत्य हुआ हे तात! उसने पूर्वही ऐसा देखा था, हे संजय! इस प्रकार की होनहार को उसने पूर्व ही देख लिया कि ईश्वर को अब ऐसा करना है इसके विपरीत कभी नहीं होसक्ता॥ २६॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि षट्सप्ततितमोऽध्यायः॥ ७६॥

सतहत्तरवां अध्याय।

संजय बोले कि, हे राजन्! तुमने अपने दोष से ऐसे दुःखों को पाया हे भरतर्षभ! इसको दुर्योधन नहीं देखता है, हे राजन्! जिनको तुमने देखा है वह सब धर्म को अधर्म से मिलानेवाले हैं हे राजन्! पूर्व समय में आपही के दोष से यह जुवां जारी हुआ, आपके ही दोषसे पाण्डवों से युद्ध प्रारम्भ हुआ, और अब तुमहीं अपने पापको करके उसके फल को भोगो, आपने ही कर्म किया है इसका फल इस लोक में वा परलोक में आपही को भोगना पड़ेगा हे राजन्! जैसा तुमने किया था वैसा ही फल भी ठीक पाया, इससे हे धृतराष्ट्र! तुम चित्त को समाधान करके इस महादुःख को पाकर इस युद्ध होने का कारण मुझसे सुनो, तदनन्तर वीर भीमसेन ने बड़े तीक्ष्ण बाणों से आपकी बड़ी सेना को चलायमान करके दुर्योधनके इन सब भाइयों को सम्मुख पाया, दुश्शासन, दुर्विषह, दुःसह, दुर्मद, जयसेन, विकर्ण, चित्रसेन, सुदर्शन, चारुमित्र, सुवर्माण, दुष्कर्ण, कर्ण इनके सिवाय और बहुत से रथ में चढ़े समीपी महारथी इन सबको महाक्रोधरूप महाबली भीमसेन देखकर युद्ध में भीष्मजी से रक्षित बड़ी उग्र सेना में घुस गया, इस सेना में घुसे हुए भीमसेन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को देखकर वह सब बोले कि हे राजाओ! हम सब इसको जीता ही पकड़ें जैसे कि संसार के नाश करने में सूर्य बड़े बड़े क्रूरग्रहों से घिरा हुआ होता है इसी प्रकार यह भीमसेन इन निश्चय करनेवाले भाइयों से घिरा हुआ वर्त्तमान हुआ, सेना के मध्य में भी जाकर इसको ऐसे भय नहीं हुआ जैसे कि महेन्द्र देवता असुरों के युद्ध में दानवोंको पाकर भयभीत नहीं होता है, तदनन्तर घोर बाणों के समूहों को फेंकते हुए एक लाख शस्त्रधारी रथियों ने इस अकेले को घेर लिया, धृतराष्ट्र के पुत्रों को ध्यान न करके उस महाबली ने उस सेना के बड़े जंगी हाथी घोड़े रथ और सवारों को मारा, हे राजन्! पकड़ने के इच्छावान् उन लोगों को जानकर उस पराक्रमी भीमसेन ने सबके मारने को मनोरथ किया, और रथ को, त्यागकर गदा हाथ में लेके उन आपके पुत्रोंसमेत सेना के महासमूह को मारा, फिर सेना में भीमसेन के प्रवेश करनेपर पर्षत का पुत्र धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्यको छोड़कर बड़ी शीघ्रतासे वहां गया जहां शकुनी वर्त्तमान था, उस नरोत्तम ने युद्ध में आपके पुत्र की बड़ी सेना को हटा कर भीमसेन के रथ को पाया, हे महाराज! वहां भीमसेन के विशोक नाम सारथी को देखकर बड़ा खिन्न चित्त अचेत हो अश्रुपात युक्त गद्गद कण्ठ से महादुःखित श्वास लेकर धृष्टद्युम्न बोला और पूछा कि मेरे प्राणों से भी प्रियतम भीमसेन कहां हैं? यह सुनकर हाथ जोड़कर विशोक धृष्टद्युम्न से बोला कि महाबली भीमसेन मुझको यहां नियत करके, अकेला ही धृतराष्ट्र के पुत्रों की असंख्य समुद्ररूपी सेना में घुसा है और मुझसे ऐसे प्रीतिपूर्वक वचन कहकर गये हैं कि हे सूत! तुम घोड़ों को एक मुहूर्त्त तक थाम के मेरी बाट देखो मैं इन के मारने को जाता हूं जो कि मेरे मारने की इच्छा कररहे हैं, सो गदा हाथ में लिये उस महाबली को दौड़ता देखकर सब सेना में बड़ी प्रसन्नता हुई, हे राजन्! उस बड़े भयकारी तुमुल युद्ध के वर्त्तमान होने पर आपका मित्र बड़ी सेना के व्यूह को हटाकर प्रवेश करगया है यह विशोक के वचन सुनकर वह महाबली धृष्टद्युम्नजी उस सूत से यह वचन बोले, कि पाण्डवों के साथ प्रीति करके और भीमसेन को युद्ध में छोड़कर अब जीवन से मुझको कुछ प्रयोजन नहीं है मैं भी विना भीमसेन के कभी न जाऊंगा क्योंकि भीमसेन के विना जाऊंगा तो मुझको सब क्षत्रिय क्या कहेंगे? युद्ध में भीमसेन के एक ओर जाने और मेरे नियत होने पर इन्द्रसमेत सब

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देवता उनके अकल्याण को करते हैं जो सहायकों को त्याग कर जीते घर को जाते हैं, हे शत्रुहन्तः! वह महाबली भीमसेन मेरा मित्र नातेदार और परम भक्त है और मैं भी उसमें भक्ति रखनेवाला हूं, सो हे सूत! मैं भी वहीं जाऊंगा जहां भीमसेन गया है मुझको भी तू देख कि मैं शत्रुओं को कैसा मारता हूं? जैसे कि इन्द्र दानवों को मारता है, हे राजन्! ऐसा कहकर वह महाबली भीमसेन के मध्य में गदा से मारे हुए हाथियों से उत्पन्न भीमसेन के मार्गों में होकर चला वहां उसने शत्रुओं को भस्म करते और जैसे कि वायु वृक्षों को काटता है उसी प्रकार युद्ध में राजाओं को छिन्न भिन्न करते हुए भीमसेन को देखा, युद्ध में भीमसेन से घायल और पीड़ित रथी, सवार, पदाती और हाथियों ने महाभयभीत और पीड्यमान होकर घोर शब्द किया, हे राजन्! आपकी सेना में बड़ा हाहाकार उत्पन्न हुआ और यह शब्द पुकारने लगे कि सावधान हो अपूर्व युद्ध करनेवाले भीमसेन के हाथ से सेना नाश हुई जाती है, इसके पीछे बड़े निर्भय अस्त्रों के ज्ञाता उन वीरों ने भीमसेन को चारोंओर से घेरकर सबओर से अस्त्रों की वर्षा करी, फिर बलवान् धृष्टद्युम्न बड़ी मिली हुई घोर सेना से सम्मुख हुए महाबली लोक में प्रसिद्ध भीमसेन को देख कर, उसके पास गया और बाणों से छिदेहुए क्रोधरूप विषको उगलते प्रलयके काल पुरुष की समान गदा लिये हुए भीमसेन को विश्वास कराया, फिर उस महात्मा ने बहुत शीघ्र ही उसको बाणों से छुटाया और अपने रथपर सवार किया और शत्रुओं के मध्य में ही अच्छे प्रकार मिलकर विश्वास कराया, इसके पीछे आपका बेटा भी उस युद्ध में अकस्मात् भाइयों से मिलकर बोला कि यह द्रुपद का बेटा निर्बुद्धि भीमसेन के साथ में सम्मुख आया है इसके मारने को हम सब एक साथ ही चलें क्योंकि हमारा शत्रु होके हमारी सेना में न मिले इसके पीछे वह क्रोधी पुत्र अपने भाई दुर्योधनके इस वचन को सुनकर और आज्ञा मानकर शस्त्रों को लेकर उसके मारने को ऐसे दौड़े जैसे कि प्रलयकाल में पूछलतारे अर्थात् वह वीर रत्नजटित धनुषधारी कवच पहरे रथ के पहियों की ध्वनि से सब को कम्पायमान करते हुए, बाणों से द्रुपद के पुत्रपर ऐसी वर्षा करने लगे जैसे कि बादल पानी की झड़ियों से पर्वतपर वर्षा करते हैं उस समय वह अपूर्व युद्ध करनेवाला धृष्टद्युम्न अपने तीक्ष्ण बाणों से उनको पीड्यमान करने पर भी आप पीड़ायुक्त नहीं हुआ, और बड़े साहसी आपके शूरवीर पुत्रों को देख

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कर युद्ध में नियत हुआ फिर महारथी द्रुपद ने, पुत्र के मारने की इच्छा करने वालों पर प्रमोहन नाम बड़े भयानक अस्त्र का प्रयोग किया और आपके पुत्रों पर ऐसा अत्यन्त क्रोधित हुआ जैसे कि इन्द्र युद्ध में दैत्यों पर क्रोधित होता है फिर वह सब आपके वीर युद्ध में परशुओं और अस्त्रों से घायल होकर बड़े अचेत होगये फिर आपके पुत्रोंको कालफाँस में फँसे हुए अचेतरूप देखकर सब कौरव घोड़े और रथों के साथ घोर शब्द करते हुए चारों ओर से भागे उस समय शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्यजी ने धृष्टद्युम्न को पाकर तीन उग्र बाणोंसे पीड़ित किया, हे राजन् ! और वह राजा द्रुपद भी द्रोणाचार्य से अत्यन्त घायल हो पूर्व की शत्रुता को स्मरण करके हटगया, ४७ प्रतापवान् द्रोणाचार्य ने द्रुपद को जीतकर शंख को बजाया उनके शंख के शब्द को सुनकर सब भयभीत हुए, इसके पीछे महाशस्त्रवेत्ता द्रोणाचार्य ने युद्ध में आपके पुत्रों को प्रमोहन अस्त्र से अचेत होना सुना और बड़ी शीघ्रता से संग्रामभूमि से उनके पास आये वहां प्रबल युद्ध में संग्राम करते हुए धृष्टद्युम्न और भीष्मजी को देखा और आपके पुत्रों को भी मोह से महाअचेत देखा, फिर उन्होंने प्रज्ञा अस्त्र को लेकर मोहन अस्त्र को काटा, इसके पीछे आपके महारथी पुत्रों के प्राण फिर लौट आये, फिर युद्ध में लड़ने के लिये भीमसेन और धृष्टद्युम्न के सम्मुख गये इसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर अपनी सेना के मनुष्यों से बोले कि तुम अपनी सामर्थ्य से संग्रामभूमि में भीमसेन और धृष्टद्युम्न के मार्ग में जाओ तुम अभिमन्यु को मुख्य करके बारह वीर वहां जाकर निज वृत्तान्त को देखो मेरा चित्त सन्देह से निवृत्त नहीं होता है वह सब शूरवीर सिंह के समान युद्ध करनेवाले युधिष्ठिर की आज्ञा पाते ही मध्याह्न के समय युद्ध की ओर गये, पांचो केकय और पांचो द्रौपदी के पुत्र धृष्टकेतु यह सब अपनी भारी सेना समेत अभिमन्यु को आगे करके प्रस्थित हुए, और वहां युद्ध में व्यूह को शूचीमुख बना के धृतराष्ट्र के पुत्रों की रथवाली सेना को छिन्न भिन्न करदिया, भीमसेन के भय से भरे हुए और धृष्टद्युम्न के हाथ से अति अचेत आपकी सेना उन अभिमन्यु आदि बड़े धनुषधारियों के सम्मुख होने को समर्थ नहीं हुई, और मूर्च्छा में भरे हुए स्त्री के समान मार्ग में नियत हुए, वह महाधनुर्धर सुवर्णित ध्वजायुक्त धृष्टद्युम्न और भीमसेन के देखने को सम्मुख दौड़े उन अभिमन्यु आदि वीरों को देख कर वह दोनों भीमसेन और धृष्टद्युम्न बड़े आनन्दित हुए, फिर शूर वीर धृष्टद्युम्न

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ने अकस्मात् आये हुए अपने गुरुको देखकर आपके पुत्रों को नहीं मारा, तदनन्तर भीमसेन को केकय के रथपर सवार करके अत्यन्त कोप में भरा हुआ। धृष्टद्युम्न बाण और अस्त्रों के पारङ्गत द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़ा, शत्रुहन्ता प्रतापी द्रोणाचार्य ने बहुत क्रोधित होकर बड़ी शीघ्रता से उस सम्मुख आनेवाले के धनुष को भल्ल से काटा, और स्वामी के हित के निमित्त अन्य सैकड़ों बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल किया, फिर शत्रु के मारनेवाले धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष को लेकर शिलापर घिसे सुनहरी पुंखवाले, बाणों से द्रोणाचार्य को घायल किया, फिर शत्रुहन्ता द्रोण ने उसके दूसरे धनुषको भी काटा और बड़े तीव्र चार शायकों से चारों घोड़ोंको यम के लोक को भेजा फिर इसके सारथी को भी एक ही भल्ल से मारडाला, फिर वह महाबाहु महारथी शीघ्र ही मृतक घोड़ों के रथ से उतर कर अभिमन्यु के महारथ पर सवार हुआ, इसके अनन्तर भीमसेन और धृष्टद्युम्नके देखते हुए रथ हाथी घोड़े आदिसमेत सेना भयसे कम्पित हुई, फिर द्रोणाचार्यजी से व्याकुल सेनाको देखकर वह सब महारथी उसके रोकने को समर्थ नहीं हुए, द्रोणाचार्यके तीक्ष्ण बाणोंसे घायल वह सेना समुद्रके समान महाव्याकुल होकर जहां तहां भागने लगी, फिर आपकी सेना उस सेनाको भागती देखकर बड़ी प्रसन्न हुई, हे भरतर्षभ ! इस रीति से शत्रु की सेना को मारता हुआ क्रोधयुक्त द्रोणाचार्यको देखकर शूरवीरलोग चारोंओरसे धन्य २ करके पुकारने लगे॥७५॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ।

इसके पीछे राजा दुर्योधन ने व्यूह से पृथक् होकर अपने बाणों की वर्षा से दुर्जय भीमसेन को रोका, फिर आपके महारथी पुत्र भी इकट्ठे होगये और सब मिलकर भीमसेन से लड़ने लगे फिर महाबाहु भीमसेन भी युद्ध में अपने रथ को पाकर उसपर चढ़ के वहां को गया जहां आपका पुत्र था, वहां उस वेगवान् ने जीव निकालनेवाले दृढ़ और जड़ाऊ धनुष को चढ़ाकर बाणों से आपके पुत्र को पीड़ित किया, इसके पीछे हे राजन् ! दुर्योधन ने भी अत्यन्त तीक्ष्ण नाराचों से महाबली भीमसेन को मर्म स्थलों में घायल किया, फिर उस महाक्रोधरूप धनुषधारी भीमसेन ने आपके पुत्र से घायल होकर बड़े लाल नेत्र करके उत्तम प्रबल धनुष को खैंचकर अपने तीन बाणों से दुर्योधन की भुजा और छाती को घायल किया, हे राजन् ! इस रीति से घायल होकर भी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वह दुर्योधन पर्वत के समान चलायमान नहीं हुआ फिर दुर्योधन के शूरवीर युद्ध में देह के त्यागनेवाले भाइयों ने दोनों वीरों को परस्पर मारने में प्रवृत्त देखकर भयकारी भीमसेन के पकड़ने का पूर्वकर्म स्मरण करके बड़े निश्चयपूर्वक उसके पकड़ने का उपाय किया, हे महाराज! महाबली भीमसेन भी उन युद्ध में प्रवृत्त वीरों के सम्मुख ऐसा चला जैसे कि हाथी हाथियों के सम्मुख जाता है हे महाराज! बड़े यशस्वी तेजवान् अत्यन्त क्रोधित भीमसेन ने आपके पुत्र चित्रसेन को नाराच से घायल किया, और इसी प्रकार से अनेक उत्तम बाणों से आपके अन्य पुत्रों को भी घायल किया, तदनन्तर धर्मराज के भेजे हुए भीमसेन के पीछे चलनेवाले वह अभिमन्यु आदि बारह महारथी युद्ध में अपनी सेनाओं को सब ओर से नियत करके उन महारथी राजपुत्रों के सम्मुख गये, उन शूर रथों पर सवार सूर्य अग्नि के समान प्रकाशित शोभायमान लक्ष्मी से युक्त भूमि में तेजस्वी सुवर्णभूषणों से अलंकृत सब बड़े धनुषधारियों को देख कर आपके महाबली पुत्रोंने युद्ध में भीमसेन को त्याग दिया परन्तु भीमसेन उन जीवते जानेवालों को देखकर सह न सका ॥ १६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७८ ॥

उन्नासीवां अध्याय ।

संजय बोले कि इसके पीछे भीमसेन समेत अभिमन्यु ने पीछा करके आपके सब बेटों को घायल किया, फिर धनुषधारी महारथी दुर्योधनादि आप की सेना को धृष्टद्युम्न के हाथ से महाव्याकुल देखकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा वहां पहुँचे जहां कि वह रथी वर्त्तमान थे तदनन्तर मध्याह्न के पीछे आपके और दूसरों के शूरवीरों का महायुद्ध प्रारम्भ हुआ हे भरतवंशिन्! अभिमन्यु ने विकर्ण के घोड़ों को मारकर पचीस क्षुरक बाणों से उसको आच्छादित कर दिया फिर महारथी विकर्ण मृतक घोड़ों के रथ को त्यागकर चित्रसेन के प्रकाशमान रथपर सवार हुआ फिर उन एक रथपर चढ़े हुए दोनों भाइयों को अभिमन्यु ने बाणों से ढक दिया तब दुर्जय और विकर्ण ने पांच लोहे के बाणों से अभिमन्यु को पीड़ित किया परन्तु मेरु पर्वत के समान दृढ़ अभिमन्यु उस चोट से कम्पित नहीं हुआ फिर हे राजेन्द्र! दुश्शासन ने पांचों केकयों को लड़ाया यह एक आश्चर्यसा हुआ और युद्ध में कोपित द्रौपदी के पुत्रों ने दुर्योधन को रोंका फिर प्रत्येक ने तीन तीन बाणों से आपके बेटे को पीड़्य-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मान किया और उसने भी दुर्जय द्रौपदी के सब पुत्रों को बड़े तीक्ष्ण शायकों से जुदा जुदा घायल किया और फिर वह दुर्योधन उन पांचों से घायल रुधिर चूता हुआ ऐसा शोभायुक्त हुआ जैसे कि पहाड़ी धातु मिश्रित झिरनों से पर्वत शोभायमान होता है और हे राजन्! महाबली भीष्मजी ने भी पाण्डवों की सेना को ऐसा घायल किया जैसे कि ग्वाल अपने पशुओं के समूहों को ताड़ित करता है इसके पीछे सेना के दक्षिण ओर अर्जुन के शत्रुहन्ता गाण्डीव धनुष का शब्द सुनाई दिया, वहां भी कौरव और पाण्डवों की सेनाओं में हज़ारों रुण्ड खड़े हो होकर युद्ध करनेवाले हुए, उस युद्ध में भी नरोत्तमों ने रुधिररूप जल और बाणरूप भवँर हाथीरूप टापू घोड़ेरूप लहरें ऐसे सेनारूपी सागर को रथरूप अपनी नौकाओं के द्वारा तरण किया उस संग्राम में हाथ कवच टूटे देह के अहंकार से रहित हज़ारों नरोत्तम पृथ्वी पर गिरे हुए दृष्टि-गोचर हुए, हे भरतर्षभ! मृतक हुए रुधिरों में भरे मतवाले हाथियों से पृथ्वी ऐसी दिखाई दी मानों पर्वतों से भरी है, वहां हमने आपके पुत्रों का और पाण्डवों का अपूर्व वृत्तान्त देखा अर्थात् कोई ऐसा वहां पुरुष नहीं था जो युद्ध करना न चाहता हो, इसरीति से बड़े यश के चाहनेवाले युद्ध में विजयाभिलाषी आपके वीर पुत्र पाण्डवों के साथ युद्ध करनेवाले हुए ॥ १९ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि एकोनाशीतितमोऽध्यायः ॥ ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय।

संजय बोले कि, फिर सूर्य के अरुण होनेपर युद्ध में वेगवान् राजा दुर्योधन भीमसेन के मारने को इच्छावान् सम्मुख दौड़ा, तब अत्यन्त कोपयुक्त भीम-सेन उस आते हुए नरवीर बड़ी शत्रुता रखनेवाले को अपने सम्मुख देखकर यह वचन बोला, कि बहुत वर्षों से चाहा हुआ वह समय आया है अब मैं अवश्य तुझको मारूँगा जो तू युद्ध से न भागेगा, अब तेरे मारने से मैं कुन्ती के और द्रौपदी के वनवास के दुःखों को दूर करूँगा, जिस हेतु से कि पूर्वसमय में तैंने ईर्षा करके पाण्डवों का अपमान किया था हे गान्धारी के पुत्र! तू उस पाप के फल को देख, और जिस कारण से कि तैंने कर्ण और शकुनी के मत में नियत होकर पाण्डवों को साधारण समझकर अपनी इच्छा से वह कर्म किया है, और जिस दशा में कि भूल से तैंने श्रीकृष्णजी का अपमान किया है इन सब हेतुओं से मैं बांधवों समेत तुझको मारूँगा और उस पाप को शान्त

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करूँगा जो पूर्वसमय में किया है, उस क्रोधरूप भीमसेन ने इस प्रकार से कहकर अपने घोर धनुष को खैंचकर वारंवार ऊंचा घुमाकर घोर महावज्र के समान प्रकाशमान अग्निशिखा के समान ज्वलित वज्र के समान सीधे चलनेवाले छब्बीस बाणों को बड़े वेग से शीघ्रतापूर्वक दुर्योधन पर फेंका और दो बाणों से उसके धनुष को काटा और दोही बाणों से उसके सूत को घायल करके चार तीक्ष्ण बाणों से उसके घोड़ों को मारडाला, फिर उस शत्रुहन्ता ने अच्छे प्रकार खैंचे हुए दो बाणों से उस राजा के छत्र को भी उत्तम रथ से काट गिराया, फिर तीन बाणों से उसकी उत्तम ध्वजा को पृथ्वी पर काटकर दुर्योधन के देखते हुए बड़े शब्द से गर्जा वह नानाप्रकार के रथों से शोभित उत्तम ध्वजा अकस्मात् रथ से ऐसी गिरी जैसे कि बादल से बिजली गिरती है, सब राजाओं ने कुरुपति दुर्योधन की प्रकाशमान अग्नि के समान ज्वलित मणियों से जटित ध्वजा को कटा हुआ देखा, तब अहंकारयुक्त महारथी भीमसेन ने उसको दश बाणों से ऐसे घायल किया जैसे कि दण्ड से महागजेन्द्र को घायल करते हैं, इसके अनन्तर सिंधदेशियों के राजा रथियों में श्रेष्ठ महाबली ने हाथ में परशों को धारण करके दुर्योधन की पीठ को पकड़ा, और रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य ने बड़े तेजस्वी क्रोधयुक्त कौरवी दुर्योधन को रथपर सवार किया फिर वह राजा दुर्योधन भीमसेन के हाथ से अत्यन्त घायल और पीड्यमान रथ में बैठ गया, तब मारने की इच्छा करनेवाले जयद्रथ ने भीमसेन को चारों ओर से घेरकर हज़ारों रथियों से उसकी सब दिशाओं को रोंका इसके पीछे हे राजन्! धृष्टकेतु वा पराक्रमी अभिमन्यु वा पांचों केकय, वा पांचों द्रौपदी के पुत्र आपके पुत्रों से युद्ध करने लगे, चित्रसेन, सुचित्र, चित्राङ्ग, चित्रदर्शन, सुचारु, चारुचित्र इसी प्रकार नन्द, उपनन्दक इन बड़े बड़े धनुषधारी सुकुमार यशस्वी आठों ने अभिमन्यु के रथ को चारों ओर से घेरा, फिर बड़े साहसी अभिमन्यु ने शीघ्र ही गुप्तग्रन्थीवाले पांच पांच बाणों से प्रत्येक को घायल किया, वह बाण जड़ाऊ धनुष से निकले हुए वज्ररूप मृत्यु के समान थे वह सब भी क्रोधयुक्त होकर रथियों में श्रेष्ठ अभिमन्यु पर, अपने तीक्ष्ण बाणों की ऐसे वर्षा करने लगे जैसे कि मेरुपर्वत पर बादल वर्षा करते हैं हे महाराज! उस अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्मद, पीड्यमान अभिमन्यु ने आपके पुत्रों को ऐसा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अत्यन्त कम्पित किया जैसे कि देवता और असुरों के युद्ध में वज्रधारी इन्द्र बड़े बड़े असुरों को कम्पायमान करता है हे राजन्! इसी प्रकार उस अभिमन्यु ने विष भरे हुए घोर चौदह भल्लों को विकर्ण के निमित्त भेजा, फिर उस पराक्रमी ने युद्ध में नृत्य करनेवाले के समान उन बाणों से विकर्ण की ध्वजा, घोड़े, रथ, सूत और धनुष को भी रथ से गिराया, और पीतरंग के प्रकाशित नोक और सीधे चलनेवाले अन्य बाणों को विकर्ण पर फेंका वह कङ्क और मोर के परों से संयुक्त बाण विकर्ण को पाकर उसके शरीर को घायल कर सर्पों के समान श्वास लेते हुए पृथ्वी पर गिरे, फिर वह सुनहरी पुङ्ख नोकवाले बाण विकर्ण के रुधिर से भरे रुधिर को उगलते हुए पृथ्वी पर पड़े देखने में आये, विकर्ण को घायल देखकर उसके दूसरे सगे भाई युद्ध में अभिमन्यु आदि रथियों के सम्मुख दौड़े, और इसी प्रकार उन क्रोधयुक्त युद्ध दुर्मद रथियों ने उनके सम्मुख जाकर उन सूर्य के समान तेजस्वी रथियों को परस्पर में घायल किया, फिर दुर्मुख ने शीघ्रगामी सात बाणों से श्रुतकर्मा को घायल करके एक बाण से उसकी ध्वजा को काटा और सात बाणों से उसके सारथी को घायल किया, फिर सुनहरी जालों से ढके हुए वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों को छः बाणों से मारकर उसके सारथी को भी गिराया उस मृतक घोड़ों के रथपर नियत उस महाबली श्रुतिकर्मा ने बड़े क्रोधयुक्त होकर महाज्वलित उल्का के समान बरछी को उसके ऊपर फेंका, वह बरछी उस यशस्वी दुर्मुख के बड़े कवच को काटकर अपने तेज से उसको फाड़ के बड़ी प्रकाशमान हो के पृथ्वी में प्रविष्ट होगई वहां महाबली सुतसोम ने उसको विरथ देखकर सब सेना के देखते हुए अपने रथ पर सवार किया इसके पीछे हे राजन्! महाबली श्रुतकीर्ति आपके यशस्वी जयसेन पुत्र के मारने की इच्छा से उसके सम्मुख गया, तब आपके पुत्र जयसेन ने उस धनुष खैंचनेवाले श्रुतकीर्ति के धनुष को अपने क्षुरप्र बाणों से बड़े हास्यपूर्वक काटा फिर तेजस्वी शतानीक उस धनुष टूटे हुए अपने निज भाई को देख कर, सिंह के समान वारंवार गर्जता हुआ सम्मुख आया और युद्ध में अपने दृढ़ धनुष को खैंचकर बड़ी शीघ्रता से दश शिलीमुख बाणों से जयसेन को घायल किया और मदोन्मत्त हाथी के समान महाशब्द करके गर्जा, तदनन्तर इसने बड़े बड़े तीक्ष्ण ढाल खड्गों के काटनेवाले अन्य बाणों से जयसेन को अत्यन्त घायल किया, इसी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रकार युद्ध के वर्त्तमान होने पर भाई के समीप नियत क्रोध में व्याकुल दुष्कर्ण ने शतानीक के बाण समेत धनुष को काटा, फिर महाबली शतानीक ने बड़े बोझ के साधनेवाले अन्य दृढ़ धनुष को लेकर बड़े घोरबाणों को हाथ में लिया और भाई के सम्मुख होकर दुष्कर्ण से "तिष्ठ, तिष्ठ" शब्द कहके उसके ऊपर बड़े तीक्ष्ण और ज्वलित सर्प के समान बाणों को छोड़कर एक बाण से उसके धनुष को और दो बाणों से उसके सारथी को काट मारकर बड़ी शीघ्रता से सात बाणों से उसको घायल किया, फिर प्रसन्न मूर्ति सात्यकी ने बड़ी शीघ्रता से बारह तीक्ष्ण बाणों से उसके उन सब घोड़ों को जो कि बल के अनुसार शीघ्रगामी और कल्माषी रंग थे मारडाला, फिर हे राजन्! उस क्रोधरूप ने शत्रुहन्ता और महाभयकारी भल्ल नाम बाण से दुष्कर्ण को व्यथित किया और वह उसके आघात से वज्र से टूटे हुए वृक्ष की समान पृथ्वी पर गिरा हे राजन्! पांच महारथियों ने दुष्कर्ण को मरा हुआ देखकर, मारने की इच्छा करके शतानीक को चारों ओर से घेरलिया, फिर बाणों से ढके हुए यशस्वी शतानीक को देखकर, अत्यन्त क्रोध में भरे पांचों निज भाई केकय उनके सम्मुख दौड़े, हे राजन्! उन पांचों महारथियों को आता देखकर आपके पुत्र ऐसे सम्मुख गये जैसे कि हाथी महागजेन्द्रों के सम्मुख जाय दुर्मुख, दुर्जय, दुर्द्धर्षण, शत्रुंजय, शत्रुसह यह सब यशस्वी महाक्रोधयुक्त होकर केकय लोगों के सम्मुख गये, मनके अनुसार शीघ्रगामी घोड़ों से संयुक्त नानाप्रकारके विचित्र रथों और पताकाओं समेत रथों में बैठे उत्तम धनुषधारी चित्र विचित्र कवच पहिरे वह वीर शत्रुओं की सेना में आकर ऐसे वर्त्तमान हुये जैसे कि सिंह एक वन से दूसरे वन में वर्त्तमान होते हैं, हे राजन्! परस्पर मारते और एक एक का अपराध करनेवाले लोगों का वह युद्ध हाथी घोड़ोंसमेत महातुमुल और घोर जारी हुआ, वह सब यमलोक की वृद्ध करनेवाले सूर्यास्त के समय बड़े घोर युद्ध करनेवाले हुए, हज़ारों रथी और घुड़चढ़े व्याकुल हुए इसके पीछे शन्तनु के बेटे क्रोधयुक्त भीष्मजी ने गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से उन महात्माओं की उस सेना को नष्ट कर दिया और पाञ्चालों की सेना को भी यमलोक में पहुँचाया, इस रीति से वह बड़े धनुषधारी पाण्डवों की सेना को घायल करके सब सेनाओं का विश्राम करके अपने डेरे को गये, धर्मराज भी धृष्टद्युम्न और भीमसेन को देखकर दोनों के मस्तक को सूंघकर अपने डेरों को गये ॥ ६४ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वण्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८० ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इक्यासीवां अध्याय।

संजय बोले कि हे महाराज ! इसके पीछे परस्पर अपराध करनेवाले शूर रुधिर से भरे देह अपने अपने डेरों को गये, फिर न्याय के अनुसार विश्राम कर परस्पर पूजन को करके युद्ध करने की इच्छा से कवच और अस्त्र शस्त्रों से. अलंकृत देख पड़े, हे राजन् ! इसके अनन्तर चिन्तायुक्त आपके पुत्र ने गिरते हुए रुधिर से भरे हुए शरीरवाले भीष्मपितामह से पूछा कि पाण्डवों के वह शूर महारथी घोर भयानक और शस्त्रों से अलंकृत बहुत ध्वजायुक्त सेनाओं को मार और पीड़ित करके कीर्तिमान् हो युद्ध में प्रवृत्त हुये और उस वज्र के समान मकरव्यूह में प्रवेश करके मृत्युदण्ड के समान प्रकाशित और घोर भीमसेन के बाणों से मैं महाव्याकुल और घायल होगया हूँ, हे राजन् ! उस क्रोधरूप भीम को देख के भय से मूर्च्छावान् होकर अबतक मैं शान्ति को नहीं पाता हूं हे सत्यसंकल्प ! मैं आपही की कृपा से पाण्डवों को मारकर विजय पाना चाहता हूं इतनी बात के सुनते ही दुर्योधन को व्याकुल और क्रोधयुक्त देखकर भीष्म जी हँसकर बोले, हे राजपुत्र ! मैं सर्वांगपूर्वक बड़े उपायों से सेना को मझा-कर विजय और सुख को देना चाहता हूं और मैं अपने शरीर को तेरे प्रयोजन के लिये किसी प्रकार से बचाता हूं, बहुत से महारथी शूर और रुद्ररूप अस्त्रज्ञ परिश्रम से अखिन्न क्रोधरूप विष के उगलनेवाले जो पाण्डवों के युद्ध में सहा-यक हैं वह बल में बड़े हैं उन्हीं के साथ तुमने शत्रुता करी है वह युद्ध में एका-एकी विजय करने के योग्य नहीं हैं हे वीर, राजन्, दुर्योधन ! मैं इस जीवन को त्याग करके सब प्रकार से उनके साथ लड़ूंगा हे महानुभाव ! अब युद्ध में तेरे प्रयोजन के लिये मैं अपने प्राणों की रक्षा करना योग्य नहीं समझता हूं अर्थात् अपने प्राणों की रक्षा नहीं करसक्ता हूं मैं तेरे निमित्त देवता और दैत्यों समेत सब लोकों को भी जीतसक्ता हूँ तो इस स्थानपर तेरे शत्रुओं का जीतना कितनी बड़ी बात है हे दुर्योधन ! मैं पाण्डवों से लड़कर तेरे सब अभीष्टों को करूंगा इस बात को सुनकर दुर्योधन भीष्मजी से बहुत प्रसन्न हुआ, इसके अ-नन्तर उस प्रसन्नचित्त ने सब सेनाओं समेत राजाओं से कहा कि चलो चलो हे धृतराष्ट्र ! उसकी आज्ञा पाते ही रथ घोड़े हाथी और पैदलों की सब सेना शीघ्रही चलदी, हे तात ! फिर आपकी बड़ी सेना अतिप्रसन्न होकर नानाप्रकार के अस्त्र शस्त्र धारण करके हाथी घोड़े पैदलों समेत संग्रामभूमि में नियत होकर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शोभायमान हुई, और हाथियों के समूह अच्छे प्रकार उचित स्थानों में नियत होकर चारों ओर से प्रकाशित हुए, और आपके अस्त्र शस्त्रवेत्ताओं के समूह नरदेव शूरवीरों से संयुक्त होकर अपने अपने कर्म को करने लगे, फिर उन रथ, घोड़े, हाथी और पैदलों से उठी हुई धूल भी बड़ी उठी कि सूर्य भी ढकगये, हे राजन्! युद्ध में चारों ओर से घूमते नाना रंगधारी रथ, हाथी, घोड़े और पदाती और इनके चढ़नेवाले अपनी अपनी सवारियों समेत ऐसे शोभायमान हुए, जैसे कि बादलों से संयुक्त और वायु से पृथक् हुई बिजलियां आकाश में प्रकाशित होती हैं, फिर धनुष चढ़ानेवाले राजाओं के शब्द ऐसे बड़े कठोर और घोर हुए जैसे कि युग की आदि में देवासुरों के हाथ से मथे हुए समुद्र के शब्द हुए थे, तब वह आपके पुत्रों की सेना भयकारी शब्दों से और शत्रुओं के मारनेवाले अनेक रूपों से प्रलयकाल के बादलों के समान होगई ॥ १६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मदुर्योधनसंवादे एकाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ।

संजय बोले कि हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! इसके पीछे भीष्मजी ध्यान में नियत होकर फिर आपके पुत्र की प्रसन्नता के वचन बोले कि मैं द्रोणाचार्य, शल्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा, सोमदत्त, और सिन्धुदेशियों समेत बिन्द अनुबिन्द अवन्तिदेश के राजा बाह्लीकदेशीय, और बलवान् राजा त्रिगर्त और महादुर्जय राजा मगध, बृहद्बल, कौशल्य, चित्रसेन, विविंशति, और बड़ी ध्वजावाले शोभायमान हज़ारों रथ और घुड़चढ़े समेत देशी घोड़े और मद से लाल नेत्रवाले मन्दोन्मत्त गजेन्द्र पदाती और नाना प्रकार के शस्त्रधारी शूर लोग भी नाना प्रकार के देशों में उत्पन्न होनेवाले सब लोग तेरे ही निमित्त युद्ध करने को तैयार हैं, इनके सिवाय और बहुत से लोग तेरे लिये जीवन के त्यागनेवाले हैं बहुत से इनमें देवताओं को भी युद्ध में विजय करनेवाले हैं यह मेरा मत है परन्तु हे राजन्! मुझको तेरे प्रियकारी वचन अवश्य कहने के योग्य हैं उनको भी सुनो कि इन्द्र समेत देवताओं से भी पाण्डवों का विजय करना असंभव है, क्योंकि वह वासुदेवजी को सहायक रखनेवाले होकर महेन्द्र के समान पराक्रमी हैं हे राजेन्द्र! मैं सब प्रकार से तेरे वचन को करूँगा, मैं पाण्डवों को युद्ध में विजय करूँगा अथवा पाण्डव मुझको विजय करेंगे इस प्रकार की बातें करके उसके निमित्त वह औषधियां जो घावको

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आनन्द करनेवाली और सामर्थ्य की बढ़ानेवाली थीं दीं उनके लगाते ही वह घावों से रहित हुआ तदनन्तर बड़े प्रातःकाल उठकर शुद्ध हो व्यूह की रचना में बड़े कुशल भीष्मजी ने अपनी सेना के व्यूह को आप तैयार किया फिर उस नरोत्तम ने अपनी सेना के मंडल को शस्त्रों से अलंकृत किया, और उत्तम शूरवीर हाथी और पैदलों से भरा हुआ हज़ारों रथों से चारों ओर को घिरा हुआ दुधारे खड्ग, तोमर धारण करनेवाले सवारों से व्याप्त एक एक हाथी के साथ सात सात रथी और प्रत्येक रथ के साथ सात सात घोड़े और घोड़े घोड़े के पीछे दश दश धनुषधारी और हर एक धनुषधारी के पीछे सात सात पदाती हुए हे महाराज ! आपकी सेना इस रीति से महारथियों से शोभायमान हुई युद्ध में भीष्मजी से रक्षित बड़े संग्राम के लिये नियत किये हुए दश हज़ार घोड़े और दश हज़ार हाथियों के समूहों के साथ आपके चित्रसेन आदि शूर वीरों ने पितामह को चारों ओर से रक्षित किया वह भीष्मजी उन शूरों से रक्षित और शूर उन से रक्षित हुए और महाबली राजा लोग भी शस्त्र धारण किये युद्ध को तैयार देख पड़े, फिर शस्त्रों से अलंकृत रथपर बैठा हुआ दुर्योधन भी शोभा से युक्त ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसा कि स्वर्ग में इन्द्र प्रकाशमान होता है इसके पीछे हे भरतर्षभ ! आपके पुत्रों के महाशब्द हुए और रथ और रथाङ्गों के भी घोर शब्द हुए, फिर वह धृतराष्ट्र के पुत्रों का व्यूह भीष्मजी का रचा हुआ अति दुर्जय मण्डलरूप बना हुआ पश्चिम की ओर को चला, हे राजन् ! शत्रुओं से दुर्जय होनेवाला वह व्यूह सब ओर से शोभित हुआ फिर उस मण्डलवाले भयानक व्यूह को देखकर राजा युधिष्ठिर ने अपने हाथों से अपनी सेना द्वारा वज्रव्यूह को तैयार किया इस रीति से सेनाओं के तैयार होने पर सब रथी पदाती आदि अपने अपने स्थानों पर नियत होकर सिंहनाद करने लगे इसके पीछे व्यूह के तोड़ने को युद्धाभिलाषी पराक्रमी शूरवीर लोग एक दूसरे के सम्मुख गये, द्रोणाचार्यजी राजा मत्स्य के सम्मुख गये, अश्वत्थामा शिखण्डी के सम्मुख हुआ, राजा दुर्योधन आप धृष्टद्युम्न के सम्मुख दौड़ा और नकुल सहदेव राजा मद्र के सम्मुख गये, बिन्द, अनुबिन्द, अवन्ति के राजा लोगों के और युधामन्यु के सम्मुख दौड़े और सब राजा लोग इकट्ठे होकर अर्जुन से लड़ने को उपस्थित हुए, फिर सावधान और समर्थ सात्यकी ने युद्ध में भीमसेन को रोका, हे राजन् !

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अर्जुन का समर्थ पुत्र अभिमन्यु चित्रसेन, विकर्ण और दुर्मर्षण नाम आपके तीनों पुत्रों से युद्ध करने लगा फिर हिडम्बा का पुत्र राक्षसोत्तम घटोत्कच बड़े वेग से राजा प्राग्ज्योतिष के सम्मुख ऐसे दौड़ा जैसे कि मस्त हाथी हाथी पर दौड़ता है हे राजन्! युद्ध में महाक्रोधरूप अलंबुष राक्षस सेना समेत युद्ध में महादुर्मद सात्यकी के सम्मुख दौड़ा और युद्ध में कुशल भूरिश्रवा धृष्टकेतु से लड़ने लगा, फिर धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने राजा श्रुतायुष से और चेकितान ने कृपाचार्य से युद्ध करना प्रारम्भ किया, शेष बचे हुए राजा लोग महारथी भीमसेन के सम्मुख हुए, इसके पीछे हज़ारों राजाओं ने अर्जुन को घेर लिया उन सब राजाओं के हाथों में बरछी, तोमर, नाराच, गदा, और परिघआदि अनेक अस्त्र शस्त्र शोभायमान थे उस समय अर्जुन अत्यन्त कोपित होकर श्रीकृष्णजी से बोला कि, हे माधवजी! व्यूहविद्या में कुशल महात्मा भीष्म जी से व्यूहित करी हुई दुर्योधन की सेना को संग्रामभूमि में देखो और युद्धा-भिलाषी शूरों को कवच और शस्त्र धारण किये हुए देखो और भाइयों समेत राजा त्रिगर्त्त को भी देखो हे जनार्दनजी! अब आपके देखते हुए इन सबको मैं मारूँगा हे यादवेन्द्र! जो यह संग्रामभूमि में मेरे मारने के लिये इच्छा कर रहे हैं इतना कहकर अर्जुन ने अपने धनुषकी प्रत्यञ्चा को ठीक करके राजाओं के समूहों पर बाणों की वर्षा को बरसाया फिर उन बड़े बड़े धनुषधारियों ने भी उस अर्जुन को बाणों की वर्षा से ऐसा भरदिया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल तड़ागों को जलसे भरदेते हैं, हे राजन्! उस बड़े संग्राम में दोनों कृष्ण अर्जुन को अत्यन्त बाणों से ढका हुआ देखकर आपकी सेना में बड़ा हाहाकार हुआ देवता, ऋषि, गंधर्व और महाउरगों ने इसप्रकार बाणों से ढके हुए दोनों कृष्ण, अर्जुन को देखकर बड़ा आश्चर्य किया, इसके पीछे हे राजन्! महाकोपयुक्त अर्जुन ने इन्द्रास्त्रको प्रकट किया उस समय हमने अर्जुनके अपूर्व पराक्रम को देखा, कि अपने बाणों के समूहों से शत्रुओं के छोड़े हुए अस्त्रसमूहों को रोक दिया कोई मनुष्य भी शस्त्रों से घायल हुए विना नहीं रहा और हे धृतराष्ट्र! हज़ारों राजा घोड़े हाथी और शूरवीर लोगों को अर्जुन ने दो दो तीन तीन बाणों से पीड्यमान किया इसके पीछे वह अर्जुन से घायल हुए शन्तनु के पुत्र भीष्मजी के पास आये तब भीष्मजी इन अथाह जल में डूबे हुओं के रक्षक हुए, हे महाराज! वहांपर उन आनेवालों से आपकी सेना तिर्र बिर्र होकर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ऐसे महाव्याकुल हुई जैसे कि वायुसे महासमुद्र उथल पुथल होता है ॥ ४६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि द्व्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय।

संजय बोले कि इसरीतिसे युद्ध जारी होने वा राजा सुशर्मा के लौटनेवा महात्मा अर्जुन के हाथ से वीरों के अस्तव्यस्त होनेपर, और बड़ी शीघ्रता से समुद्र के समान आपकी सेना के व्याकुल होने वा शीघ्र ही अर्जुन के ऊपर भीष्मजी के चढ़ाई करने पर राजा दुर्योधन युद्धमें अर्जुन के पराक्रम को देख कर बड़ी शीघ्रता से सब राजाओं से मिलकर और इन्हीं लोगों के सम्मुख सब सेना के मध्य में महाबली सुशर्मा को अत्यन्त प्रसन्न करता हुआ यह वचन बोला, कि यह कौरवों में श्रेष्ठ शन्तनु के पुत्र भीष्मजी अपने जीवन को त्याग करके सर्वभाव से अर्जुन से युद्ध करना चाहते हैं, तुम सब साव-धान होकर सेना समेत उन शत्रुओं पर चढ़ाई करनेवाले भरतवंशी पितामह की रक्षा करो, फिर राजाओं की वह सब सेना उसके वचन को अङ्गीकार करके पितामह के पीछे चली, इसके पीछे शन्तनु के पुत्र भीष्मजी अकस्मात् अर्जुन की ओर को चले और बड़े श्वेत घोड़ों के कपिध्वजवाले घन के समान शब्दायमान महाउत्तम रथपर चढ़े सब सेना के सम्मुख जाते हुये महाबली अर्जुन को पाया और अर्जुन को देखते ही भय से कठोर शब्द हुए, दिवस ही में सूर्य के वर्तमान होनेपर द्वितीय सूर्य के समान बागडोर हाथ में रखनेवाले श्रीकृष्णजी को देखकर उनके सम्मुख देखने को भी समर्थ नहीं हुए, इसी प्रकार पाण्डव भी श्वेतघोड़े और श्वेत धनुषधारी श्वेत ग्रह के उदय समान शन्तनु के पुत्र भीष्मजी के देखने को समर्थ नहीं हुए, इस रीति से वह महात्मा भीष्म त्रिगर्त्तदेशीय भाइयों वा आपके पुत्रों अथवा अन्य बड़े बड़े महारथियों से रक्षित हुए, फिर द्रोणाचार्य ने युद्ध में बाणों से राजा मत्स्य को पीड़ित किया और एक एक बाण से उसकी ध्वजा को और धनुष को काटा फिर वाहिनीपति विराट् ने उस टूटे धनुष को डालकर भार सहनेवाले दूसरे दृढ़ धनुष को बड़ी तीव्रता से हाथ में लिया और सर्पाकृति पन्नग नाम सर्पों के समान ज्वलित बाणों को लेकर तीन बाण से द्रोणाचार्य को और चार बाणों से उनके घोड़ों को घायल किया, एक से ध्वजा को काटा और पांच से उनके सारथी को व्यथित करके एक बाण से धनुष को

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तोड़ा उस स्थान पर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्यजी ने बड़े क्रोधयुक्त होकर गुप्त ग्रन्थी के आठ बाणों से उसके घोड़ों को और बाण से उसके सारथी को मारा, वह रथियों में श्रेष्ठ सारथी को मरा देख मृतक घोड़ों के रथ से कूदकर शीघ्र ही पुत्रके रथपर सवार हुआ फिर उसके पीछे रथ पर नियत उन दोनों पिता पुत्रों ने बल से मारे बाणों के द्रोणाचार्य को रोका, हे राजन्! इसके पीछे क्रोधरूप द्रोणाचार्य ने सर्प के समान बाण को बड़ी शीघ्रता से शंख के ऊपर छोड़ा, वह बाण उसके हृदय में घुस उसके रुधिर को पानकर, लालरंग लोहू में भरा हुआ पृथ्वी में गिरा, वह शंख द्रोणाचार्य के बाण से घायल पिता के ही सम्मुख धनुषबाण को त्याग कर गिरपड़ा फिर राजा विराट् अपने पुत्र को मृतक देखकर और द्रोणाचार्य को मृत्यु के समान समझकर बड़े भय से उनको छोड़कर भागा, इसके पीछे द्रोणाचार्य ने शीघ्र ही पाण्डवों की हज़ारों बड़ी बड़ी सेनाओं को हटाया, हे महाराज! शिखण्डी ने भी बड़ी शीघ्रता से अश्वत्थामा को पाकर तीव्रगामी तीन नाराचों से दोनों भृकुटी के मध्यभाग मस्तक को घायल किया, फिर वह नरोत्तम ललाटपर नियत हुए तीनों बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे ऊंचे सुवर्ण के तीनि शिखरों से मेरु पर्वत शोभित होता है, फिर क्रोध भरे अश्वत्थामा ने आधे ही निमेष में शिखण्डी के सारथी, रथ, घोड़े, शस्त्र और ध्वजा को अनेक बाणों से काट कर गिराया, फिर रथियों में श्रेष्ठ मृतक घोड़ों के रथ से कूदकर अपने तीक्ष्ण खड्ग और ढाल को लेकर बड़ा क्रोध में भरा हुआ सब सेना में बाजपक्षी के समान घूमा हे राजन्! युद्ध में खड्ग लिये हुये उस शिखंडी का अश्वत्थामा ने कोई अवकाश नहीं देखा यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ, इसके पीछे महाक्रोध युक्त अश्वत्थामा ने हज़ारों बाणों की वर्षा करी परन्तु उस महापराक्रमी ने अपने खड्ग से ही उन सब बाणों को काटडाला, फिर अश्वत्थामा ने इसकी सूर्य चन्द्रमावाली स्वच्छ ढाल को काटकर खड्गके भी खण्डखण्ड करडाले और बहुत से बाणों से उसको घायल किया फिर शिखण्डी ने उसके बाणों से कटे हुए खड्ग को देखकर शीघ्रही सर्पके समान महाज्वलित खड्ग को छोड़ा तब हस्तलाघवता दिखाते हुए अश्वत्थामा ने उस वज्र और बिजली के समान शब्दायमान अकस्मात् गिरते हुए खड्ग को युद्ध में ही काटडाला और बहुत से लोहे के बाणों से शिखण्डी को घायल किया, फिर तीव्र बाणों से अत्यन्त घायल शिखण्डी शीघ्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ही महात्मा सात्यकी के रथपर सवार हुआ, फिर महाबली सात्यकी ने भी बड़ा क्रोध करके अपने घोर बाणों से उस पराक्रमी अलम्बुष राक्षस को घायल किया फिर राक्षसाधिप अलम्बुषने अपने अर्द्धचन्द्र नाम बाणों से उसके धनुष को काट कर बहुत से शायकों से उसको घायल किया और राक्षसी माया को करके बाणों की वर्षा से ढक दिया वहाँ हमने सात्यकी के अपूर्व पराक्रम को देखा, कि वह युद्ध में बड़े तीक्ष्ण बाणों से घायल होकर भी व्याकुल नहीं हुआ, हे भरतवंशिन्! सात्यकी ने उस ऐन्द्रास्त्र का प्रयोग किया, जो कि महात्मा माधवजी और अर्जुन से मिला था उस अस्त्र से सब राक्षसीमाया को अत्यन्त नाश करके अपने घोर बाणों से अलम्बुष को इस रीति से ढक दिया जैसे कि वर्षाऋतु में बलाहक नाम बादल अपने जलों से पर्वत को ढकते हैं, उस यशस्वी सात्यकी से पीड़ित होकर वह राक्षस महा भयभीत होकर सात्यकी को त्याग कर भागगया, सात्यकी आपके शूरवीरों के देखते हुए उस राक्षसाधिप को जो कि इन्द्र से भी विजय होना कठिन था जीतकर सिंह के समान गर्जा, फिर सत्यपराक्रमी सात्यकी ने अपने पुत्रों को भी बड़े तीक्ष्ण बाणों से घायल किया वह भी भयसे पीड़ित होकर भागे हे महाराज! उसीसमय द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्न ने आपके पुत्र दुर्योधन को, वहां शुभग्रन्थीवाले बाणोंसे आच्छादित करदिया, हे राजेन्द्र! धृष्टद्युम्न के बाणों से ढका हुआ भी दुर्योधन पीड्यमान नहीं हुआ और बड़ी शीघ्रता से अपने बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल किया, यह एक आश्चर्य सा हुआ हे राजन्! फिर उस क्रोधयुक्त सेनापति ने उसके धनुष को काटकर, शीघ्र ही चारों घोड़ों को मारा और सात तीक्ष्ण बाणों से उसको तत्क्षण घायल किया, वह महाबाहु मृतक घोड़ों के रथ से कूदकर पैदल हो खड्ग को उठाकर धृष्टद्युम्न के ऊपर दौड़ा, राज्य के लोभी महाबली शकुनी ने समीप आकर राजा दुर्योधन को अपने रथपर सवार किया, इसके पीछे शत्रुहन्ता धृष्टद्युम्न ने राजा को विजय करके उसकी सेना को ऐसा मारा जैसे कि वज्रधारी इन्द्र असुरों के समूहों को मारता है, कृतवर्मा ने महारथी भीम को युद्ध में मोहित करके बाणों से ऐसे ढक-दिया जैसे कि बड़ा बादल सूर्य को ढकदेता है, इसके पीछे शत्रुसन्तापी भीमसेन ने महा क्रोधित होकर अच्छे प्रकार हँसकर कृतवर्मा के ऊपर शायकों की वर्षा करी हे महाराज! अतिरथी कृतवर्मा उन भीमसेन के बाणों से घायल होकर कम्पायमान नहीं हुआ और फिर भीमसेन को तीक्ष्ण बाणों से घायल किया,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इसकेपीछे महाबली भीमसेनने उसके चारों घोड़ोंको मारकर सारथी और ध्वजायुक्त उसके उत्तम रथ को भी गिराया, शत्रुहन्ता ने फिर उस कृतवर्मा को भी अनेक बाणों से ढकदिया फिर वह महाघायल सब अङ्गों से शिथिल देखपड़ा, हे महाराज! फिर वह शीघ्र ही आपके पुत्र को देखकर मृतक घोड़ों के रथ से कूदकर आपके वृषक नाम साले के रथपर गया, फिर महाक्रोधरूप होकर भीमसेन भी आपकी सेनाके ऊपर दौड़ा और मृत्युके सम्मान हाथ में दण्ड लेकर बड़े क्रोध से उसको मारा॥ ६२॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि त्र्यशीतितमोऽध्यायः॥ ८३॥

चौरासीवां अध्याय।

हे संजय! मैंने तेरे कहने से अपने पुत्रों के साथ पाण्डवों के विचित्र विचित्र युद्ध सुने, हे सूतपुत्र! तू मेरी सेना को कुछ प्रसन्न नहीं कहता है सदैव पाण्डवों को प्रसन्नचित्त और अजय कहा करता है, और मेरे पुत्रों को युद्ध में पराजित वा अनुत्साहयुक्त और घायल कहता है निश्चय करके यही होनहार है, संजय बोले आपके पुरषोत्तम बेटे युद्ध में बड़े पराक्रम से वीरता और पुरुषार्थ को दिखलाते बल साहस्य के अनुसार ऐसे युद्ध करते हैं जैसे कि देवनदी गङ्गाजी का जल महास्वादिष्ठ महासमुद्र के मिलजाने के प्रभाव से लवणता को प्राप्त होता है, हे राजन्! इसी प्रकार से आपके पुत्र भी महात्मा और वीर पाण्डवों के पुरुषार्थ को पाकर निष्फल होते हैं, हे कौरवोत्तम! सामर्थ्य के अनुसार उपायकर्ता और कठिन साध्यकर्मों के करनेवाले आप अपने शूरवीरों को दोष के भागी करने को योग्य नहीं हो, हे राजन्! बेटेसमेत आपके अपराध से पृथ्वीभर का नाश अत्यन्तता से यमराज के देश का वृद्धिकारक है, आप अपने दोषजन्य फल के शोचने के योग्य नहीं हो, यहां सब राजा लोग अपने जीवन की रक्षा नहीं करते हैं, राजा लोग युद्ध के द्वारा उत्तम और पवित्र लोकों को चाहते हैं औरसदैव स्वर्ग को ही उत्तम स्थान समझनेवाली सेना में घुसकर युद्ध को करते हैं, हे राजन्! प्रातःकाल के समय मनुष्यों का नाश होना प्रारम्भ हुआ, उस देवता और असुरों के युद्ध समान महासंग्राम को आप एकचित्त होकर मुझ से सुनो, बड़े धनुषधारी महात्मा और तेजस्वी लाल नेत्रवाले अवन्तिदेश के राजा लोग इरावान् को सम्मुख देखकर युद्धाभिलाषी हुए, और उनका रोमहर्षण महातुमुल युद्ध जारी हुआ फिर अत्यन्त क्रोधित होकर इरावान् ने देवतारूप दोनों भाइयों को, बड़ी शीघ्रता से गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से घायल किया और उन दोनों ने भी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अपूर्व युद्ध करके उसको घायल किया, इसके पीछे शत्रु के नाश करने में उपाय करनेवाले प्रहार पर प्रहार करने की इच्छा से युद्ध करनेवालों की मुख्यता देखने में नहीं आई, फिर इरावान् ने अपने चार शायकों से राजा अनुबिन्द के चारों घोड़ों को मारकर अत्यन्त तीक्ष्ण भल्लों से धनुष और ध्वजा को काटा यह भी आश्चर्यसा हुआ, फिर अनुबिन्द बड़े दृढ़ और उत्तम धनुष को लेकर अपने रथ को छोड़कर बिन्द के रथपर नियत हुआ, वे दोनों महारथी एक रथपर बैठे हुए बिन्द, अनुबिन्द ने बड़ी शीघ्रता से इरावान् के ऊपर बाणों की वर्षा करी, इन दोनों के सुवर्ण से शोभित छोड़े हुए तीक्ष्ण बाणों ने सूर्य के रथ को पाकर आकाश को आच्छादित करदिया, फिर महारथी इरावान् ने भी क्रोधयुक्त होकर उन दोनों भाई महारथियों पर बाणों की वर्षा करके उनके सारथी को गिराया, हे राजन् ! उस सारथी के गिरने और मरने पर वह रथ जिसके घोड़े भ्रान्ति में संयुक्त थे इधर उधर को भागा, हे महाराज ! उस नागराज के पौत्र ने उन दोनों को विजय करके पुरुषार्थ को प्रसिद्ध करते हुए आपकी सेना को भी बड़ी शीघ्रता से भस्मीभूत कर दिया, दुर्योधन की युद्ध में प्रवृत्त उस बड़ी सेना ने बहुत प्रकार के ऐसे ऐसे वेगों को किया जैसे कि विषपान करके मनुष्य किया करते हैं, फिर राक्षसों का राजा महाबली घटोत्कच सूर्यवर्ण ध्वजाधारी रथ में चढ़कर भगदत्त के सम्मुख दौड़ा, इसके पीछे राजा प्राग्ज्योतिष गजेन्द्र पर ऐसे सवार हुआ जैसे कि पूर्वसमय में दानवों के युद्ध में वज्रधारी इन्द्र ऐरावत हाथी पर सवार होता है उस स्थान में गन्धर्वों समेत देवता और ऋषिलोग आये । घटोत्कच ने भगदत्त की मुख्यता को नहीं जाना, जैसे कि देवेन्द्र ने दानवों को भयभीत किया उसी प्रकार युद्ध में उस राजा ने पाण्डवों को भगाया, हे भरतवंशिन् ! उससे भगाये हुए उन पाण्डवों ने अपनी सेना में जाकर सब दिशों में कोई अपना रक्षक नहीं पाया, हे भरतवंशिन् ! वहां मैंने अकेले भीमसेन के पुत्र घटोत्कच को ही रथपर नियत देखा और शेष महारथी अपने मन से हार हार कर इधर उधर को भागे, फिर पाण्डवों की सेना के लौटने पर युद्ध में आपकी सेना का बड़ा घोर निष्ठानक हुआ, इसके पीछे घटोत्कचने बाणों से भगदत्त को ऐसा ढकदिया जैसे कि बादल मेरु पर्वत को ढकदेते हैं राजा भगदत्त ने भी घटोत्कच के फेंके हुए बाणों को काटकर अपने बाणों से उसके मर्मस्थलों को घायल किया, वह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घटोत्कच उन गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से ऐसे पीड्यमान नहीं हुआ जैसे कि घायल पर्वत पीड़ित नहीं होता, फिर उस क्रोधभरे राजा प्राग्ज्योतिष ने युद्ध में चौदह तोमर उसके ऊपर फेंके उनको घटोत्कच ने काटा, फिर तोमरों को काटकर उस महाबाहु राक्षसाधिप ने कङ्कपक्षवाले सत्रह बाणों से भगदत्त को घायल किया फिर हे भरतर्षभ! राजा भगदत्त ने भी शायकों से उसके चारों घोड़ों को गिराया, तदनन्तर उस मृतक घोड़ों के रथपर नियत प्रतापी घटोत्कच ने बड़े वेग से भगदत्त के हाथी पर बरछी को छोड़ा, राजा ने भी उस सुनहरी अकस्मात् गिरती हुई तीक्ष्ण बरछी के तीन टुकड़े करदिये, घटोत्कच अपनी बरछी को टूटाहुआ देखकर भय से ऐसा भागा जैसे कि पूर्वकाल में युद्धभूमि से दैत्येन्द्र नमुचि इन्द्रके भयसे भागा था, हे राजन्! उसने युद्ध में उस प्रसिद्ध पराक्रमी यमराज के समान अजेय शत्रु को विजय करके, हाथीसमेत उसी युद्ध के भीतर पाण्डवों की सेना को भी ऐसे मर्दन किया जैसे कि जंगली हाथी कुमुदिनियों को मर्दन करता हुआ चलता है, और युद्ध में नकुल और सहदेव के साथ भिड़ते हुए मद्रदेश के राजा ने बाणों के समूहों से दोनों पाण्डुनन्दन अपने भानजों को आच्छादित करदिया, फिर सहदेव ने युद्ध में सम्मुख हुए अपने मामा को देखकर बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल सूर्य को ढकदेते हैं, वह बाणों से ढकाहुआ अत्यन्त प्रसन्नरूप हुआ और माता के कारण से उन दोनों की अत्यन्त प्रीति हुई, हे राजन्! इसके पीछे उस महारथी ने बहुत हँसकर युद्ध में चार उत्तम शायकों से नकुल के चारों घोड़ों को मारा, फिर वह महारथी भी शीघ्र ही मृतक घोड़ेवाले रथ से कूदकर, अपने यशस्वी भाई के रथपर सवार हुआ फिर एक रथपर सवार दोनों क्रोधयुक्त शूर भाइयों ने दृढ़ धनुषों को खींचकर क्षणमात्र में ही राजा मद्र के रथ को बाणों से ढकदिया, वह बाणों से आच्छादित होकर भी पर्वत के समान कम्पायमान नहीं हुआ और हँसते ही उसने उन बाणों की वर्षा को नाश किया, तदनन्तर पराक्रमी सहदेव ने बड़े क्रोध से बाण को खींचकर राजा मद्र के ऊपर फेंका, उसका फेंका हुआ वह गरुड़ समान बाण राजा मद्र को घायल करके पृथ्वीपर गिरा, फिर वह महाघायल पीड्यमान महारथी बड़ी दृढ़ता से रथ में बैठकर अचेत होगया। उसका सूत उसको अचेत हुआ देखकर उस संग्रामभूमि से रथ के द्वारा दूर लेगया, धृतराष्ट्र के सब पुत्रों ने राजा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मद्र के रथ को फिरा हुआ देखकर बड़ी व्याकुलता से चिन्ता की और जाना कि वह नहीं है, माद्री के दोनों महारथी पुत्रों ने युद्ध में अपने मामाको जीत-कर शंखों को बजा के बड़े सिंहनाद से गर्जनाओं को किया और हे राजन् ! वह दोनों बड़े प्रसन्न होकर आपकी सेनापर ऐसे दौड़े जैसे कि इन्द्र और विष्णु दोनों देवता दैत्यों की सेनापर दौड़ें ॥ ५७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि इन्द्रयुद्धे चतुरशीतितमोऽध्यायः ॥ ८४ ॥

पचासीवां अध्याय ।

संजय बोले कि इसके पीछे आकाश के मध्यगत सूर्य के आजाने पर राजा युधिष्ठिर ने श्रुतायुष को सम्मुख देखकर घोड़ों को चैतन्य किया, और गुप्तग्रन्थीवाले नौ शायकों से शत्रुजित् श्रुतायुष को घायल करके उसके स-म्मुख दौड़ा, फिर उस बड़े धनुषधारी ने कोपित होकर युद्ध में बाणों को रोक-कर सात बाण युधिष्ठिर पर चलाये, वह बाण उस महात्मा के प्राणों को खोज करते हुए उसके कवच को काटकर रुधिर को पीने लगे फिर उससे अत्यन्त घायल हुए युधिष्ठिर ने वराह कर्ण नाम बाण से राजा के हृदय को घायल किया, फिर रथियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर ने दूसरे भल्लसे उस महात्मा की ध्वजा को शीघ्र ही काटकर रथसे नीचे गिराया, उसके पीछे उस राजा श्रुतायुष ने अपनी ध्वजा को गिरा हुआ देखकर सात विशिखों से धर्मराज को घायल किया, इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ऐसा अत्यन्त क्रोध में ज्वलित हुआ जैसे कि प्रलय-काल की अग्नि देदीप्त होती है, हे राजन् ! देवता, गन्धर्व, राक्षस, युधिष्ठिर को क्रोधयुक्त देखकर पीडयमान हुए और सब संसार को भी व्याकुलता हुई और सब जीवों के चित्त में यह बात वर्त्तमान हुई कि अब यह राजा अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर तीनों लोकों को भस्म करदेगा, हे राजन्! तब तो युधिष्ठिर के अत्यन्त क्रोधित होनेपर ऋषियों और देवताओं ने लोकों की शान्ति के निमित्त बड़ी बड़ी ईश्वर से प्रार्थना की, उस क्रोध में भरे होठों को चाबते हुए युधिष्ठिर ने प्रलयकाल के सूर्य के समान अपने भयानक रूप को धारण किया, तदनन्तर हे राजन् ! वहां आपकी सब सेना जीवन के विषय में निराशा हुई, तब उस राजा ने धैर्यता से उस क्रोध को अच्छीरीति से रोंककर श्रुतायुष के बड़े धनुष को मूठपर से काटा, फिर राजा ने भी सब सेना के देखते हुए इस टूटे धनुषवाले को अपने नाराच बाण से छातीपर घायल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

किया और इसी महात्मा ने शीघ्रता से उस महात्मा के घोड़ों को बाणों से मारकर सारथी को तत्क्षण ही मारडाला, तब श्रुतायुष मृतक घोड़ों के रथ को त्यागकर राजा के पराक्रम को देखके बड़ी तीव्रता से संग्रामभूमि से भागा। हे राजन्! उस युद्ध में धर्मपुत्र युधिष्ठिर से उस धनुषधारी के विजय होने पर दुर्योधन की सब सेना मुख मोड़गई, फिर धर्मराज ने यह कर्म करके अत्यन्त काल मृत्यु के समान होकर आपकी सब सेना को मारा, फिर वृष्णिवंशी चेकितान ने सब सेना के देखते रथियों में श्रेष्ठ गौतम कृपाचार्य को शायकों से ढकदिया और कृपाचार्य ने उन बाणों को रोककर युद्ध में कुशल चेकितान को बाणों से घायल किया फिर उस शीघ्रता करनेवाले कृपाचार्य ने दूसरे भल्लसे उसके धनुष को काटकर उसके सारथी को भी गिराया, इसके पीछे घोड़ों को मारके सारथी और पीछे के रक्षक को मारा फिर उस गदा में कुशल यादव ने शीघ्रही रथसे कूदकर गदाको हाथमें लिया, और उस वीरों की मारनेवाली गदा से कृपाचार्य के घोड़ों को और सारथी को मारा फिर पृथ्वी पर वर्त्तमान कृपाचार्य ने सोलह बाणों को उसके ऊपर फेंका वह सब बाण उस यादव को घायल करके पृथ्वीपर गिरे, फिर कृपाचार्य को मारने की इच्छा से महाक्रोधित चेकितान ने उस गदा को ऐसे फेंका जैसे कि इन्द्र ने वृत्रासुर के ऊपर फेंका था। फिर कृपाचार्य ने उस लोहे की महास्थूल गिरती हुई गदा को हज़ारों बाणों से रोका, इसके पीछे चेकितान खड्ग को मियान से निकालकर बड़ी तीव्रता से कृपाचार्य के समीप गया, फिर बड़े सावधान कृपाचार्य भी धनुष को छोड़कर बड़ी तीव्रता से चेकितान के पास गये, वहां उन दोनों महापराक्रमी खड्गधारियों ने तीक्ष्ण धारवाले खड्गों से परस्पर में घायल किया। फिर वह दोनों पुरुषोत्तम खड्गों के आघातों से घायल सब जीवों के निवास स्थान पृथ्वी पर गिरपड़े और मूर्च्छा से महाव्याकुल देह होकर बड़े परिश्रम से अचेत होगये इसके पीछे परिकर्ष उस दशा में युक्त, युद्ध में दुर्मद चेकितान को देखकर प्रीति के कारण बड़ी तीव्रता से सम्मुख दौड़ा और सेना के देखते हुए उसको रथपर सवार किया, इसी प्रकार हे राजन्! आपके साले शूर शकुनी ने उस रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य को भी शीघ्र रथपर सवार किया, इसी प्रकार से महाबली क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने नब्बे तीक्ष्ण बाणों से भूरिश्रवा को हृदय में घायल किया, हे राजन्! भूरिश्रवा उन हृदयपर नियत बाणों से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ऐसा अत्यन्त शोभित हुआ जैसे कि मध्याह्न के समय सूर्य अपनी किरणों से शोभित होता है फिर भूरिश्रवा ने उत्तम शायकोंसे महारथी धृष्टकेतु के सारथी, रथ, घोड़ों को मार रथ से बिरथ कर दिया, फिर इसको युद्ध में रथहीन देखकर बाणों से ढक दिया, हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! फिर वह बड़ा साहसी धृष्टकेतु उस रथ को छोड़कर शतानीक के रथपर सवार हुआ, इसके पीछे सुनहरी कवच धारण करनेवाले चित्रसेन, विकर्ण, दुर्मर्षण नाम तीनों रथी अभिमन्यु के सम्मुख दौड़े, इसके पीछे अभिमन्यु से और उन रथियों से ऐसा घोर युद्ध मचा जैसे कि देह से और वात, पित्त, कफ इन तीनों से युद्ध होता है, हे राजन्! फिर भीमसेन के वचन को स्मरण करते हुए उस नरोत्तम ने आपके पुत्रों को विरथ करके मारा नहीं, तदनन्तर देवताओं से भी अजेय भीष्मजी बहुत से हाथी घोड़े और रथोंपर सवार हज़ारों राजाओं से आनकर संयुक्त हुए। इसप्रकार आपके पुत्रों की रक्षा के लिये बड़ी शीघ्रता से आते हुए भीष्मजी को देखके और महारथी अभिमन्यु को अकेला देखकर श्वेत घोड़े के रथ पर सवार अर्जुन वासुदेवजी से यह वचन बोला कि हे हृषीकेश! घोड़ों को तेज करिये और जहां यह बहुत से रथ हैं वहां चलिये, यह अस्त्रों के जाननेवाले युद्ध में दुर्मद बड़े शूरवीर जैसे कि हमारी सेना को नहीं मारें हे माधवजी! उसी प्रकार से आप घोड़ों को चलाइये, बड़े तेजस्वी अर्जुन के कहे हुए ऐसे वचनों को सुनकर श्रीकृष्णजी ने उन्हीं श्वेत घोड़ों के द्वारा रथ को संग्रामभूमि में पहुँचाया, हे राजन्! यह आपकी सेना का बड़ा निष्ठानक हुआ जो युद्ध में क्रुद्ध अर्जुन आपके पुत्रोंपर चढ़ाई करनेवाला हुआ, हे राजेन्द्र! अर्जुन उन भीष्मजी के रक्षक राजाओं को प्राप्त होकर राजा सुशर्मा से यह वचन बोला, कि मैं तुझको शूरवीरों में अत्यन्त श्रेष्ठ और पहला शत्रु जानता हूं अब इसअन्याय से प्राप्त हुए भयानक फलको देखो, अब मैं तेरे मरे हुए पूर्वजों से तुझे मिलाऊंगा यह अर्जुन के वचन सुनकर महारथी सुशर्मा ने उसको अच्छा बुरा कोई उत्तर नहीं दिया, फिर बहुत राजाओं समेत आपके महारथी पुत्रों ने महापराक्रमी अर्जुन के सम्मुख जाकर अर्जुन को चारों ओर से घेरकर बाणों की वर्षा से ऐसा आच्छादित करदिया जैसे कि बादल सूर्य को ढकलेते हैं हे भरतर्षभ! इसके पीछे आपके पुत्रों से और अर्जुन से ऐसा महाभयानक युद्ध प्रारम्भ हुआ कि जिसमें रुधिरों की नदी बह निकली ॥ ५५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि पञ्चाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छियासीवां अध्याय ।

संजय बोले कि बाणों से घायल सर्प के समान श्वास लेनेवाले महापीड़ित बलवान् अर्जुन ने युद्ध में महा हठ करके एक एक बाण से सब महारथियों के बाणों को और धनुषों को एक क्षण में काटकर उस नाशकर्त्ता महात्मा अर्जुन ने बाणों से सबको एकही समय में घायल किया, हे राजन् ! इन्द्र के पुत्र अर्जुन के हाथ से घायल वह राजालोग रुधिर में भरे अत्यन्त टूटे अङ्ग शिर कटे मृतक होके कवच पहरे हुए संग्रामभूमि में गिरपड़े, अर्जुन के पराक्रम से विचित्र रूप होकर सब महारथी एक साथ ही नाश को प्राप्त हुए, युद्ध में उन राजकुमारों को मृतक देखकर राजा त्रिगर्त्त रथ की सवारी में चला; फिर उन रथियों के पति भी पीछे की रक्षा करनेवाले वीर अर्जुन के सम्मुख आये और अर्जुन को चारों ओर से घेरकर बड़े शब्दायमान धनुषों को चढ़ाके, हजारों बाणों की ऐसी वर्षा करने लगे जैसे कि जलसमूह से बादल पहाड़ पर वर्षा करते हैं, फिर बाणों की वर्षा से पीड़ित अर्जुन ने बड़े क्रोधयुक्त होकर उन पृष्ठरक्षकों को भी युद्ध के भीतर तेल से सफा किये हुए बाणों से मारा फिर उस यशस्वी प्रसन्नचित्त अर्जुन ने युद्ध में उन साठ रथियों को विजय कर युद्ध में राजाओं की सेनाओं को मार भीष्मजी के मारने के लिये शीघ्रता की, फिर राजा त्रिगर्त्त अर्जुन के हाथ से मरे हुए बांधवों के उन समूहों को देखकर राजाओं के आगे करके अर्जुन के मारने के लिये बहुत शीघ्र गया, फिर शिखण्डी आदि उस अस्त्रज्ञ अर्जुन को सम्मुख गया हुआ जानकर बड़े तीव्र अस्त्रों को हाथ में लिये बड़ी शीघ्रता से अर्जुन की रक्षा के निमित्त उसके पास गये । फिर उस बड़े धनुषधारी अर्जुन ने भी राजा त्रिगर्त्त के साथ आते हुए उन नरोत्तम वीरों को देखकर, गाण्डीव धनुष से छोड़े हुए तीक्ष्ण पृषत्क बाणों से मारकर भीष्मजी की ओर जाते हुए मार्ग में दुर्योधन और जयद्रथ आदि राजाओं को देखा, फिर वह वीर उन रोकने के इच्छावानों के सम्मुख होकर और एक मुहूर्त्त युद्ध करके बड़े पराक्रमी राजा जयद्रथ आदि को छोड़कर, हाथ में भयकारी धनुष लेकर भीष्मजी के सम्मुख गया । फिर भयकारी पराक्रमवाला युधिष्ठिर भी बड़े क्रोध में भरके उनके सम्मुख गया, फिर वह अत्यन्त कीर्तिमान् अपने भाग में मिलेहुए उस राजा मद्रको त्यागकरके नकुल, सहदेव और भीमसेन को साथ लिये भीष्मजी के सम्मुख गया युद्ध में अपूर्व पराक्रम दिखानेवाले गङ्गापुत्र शन्तनु के पुत्र भीष्मजी उन उत्तम महारथियों

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

से संयुक्त होकर सब पाण्डवों से भिड़े हुए भी पीड्यमान नहीं हुए, इसके पीछे भयानक बल साहसी सत्यसंकल्प राजा जयद्रथ ने युद्ध में आकर उत्तम धनुष से उन महारथियों के धनुषों को काटा, और क्रोधयुक्त शत्रुता रखनेवाले दुर्योधन ने अग्नि के समान प्रकाशमान बाणों से युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल और सहदेव समेत श्रीकृष्ण और अर्जुन को घायल किया हे समर्थ! वह पाण्डव युद्धभूमि में उन महाक्रोध में भरे हुए कृपाचार्य, शल और शल्य वा चित्रसेन के बाणों से ऐसे घायल किये जैसे कि दैत्यों के समूह से मिले हुए देवता घायल होते हैं, फिर क्रोधयुक्त महात्मा युधिष्ठिर भीष्मजी के हाथ से टूटे अस्त्रवाले शिखण्डी को देखकर महाक्रोधयुक्त शिखण्डी से यह वचन बोला कि तुमने अपने पिता के सम्मुख प्रतिज्ञा करके यह मुझसे कहा था कि मैं निर्मल सूर्यरूपी बाणों के समूहों से महाव्रत भीष्मजी को मारूंगा, तुम अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करके क्यों नहीं भीष्मजी को मारते हो, हे नरोत्तम! तुम असत्य प्रतिज्ञावाले मत हो धर्म, यश और कुल की रक्षा करो, तुम अत्यन्त तीव्र प्रकाशित बाणों के समूहों से मेरी सेना के सब यूथों के संत॰ करनेवाले और युद्ध में भयकारी रूप भीष्म को ऐसा देखो जैसे कि काल पुरु॰ क्षणभर में सबको मारे, युद्ध में राजालोग भीष्म के हाथ से टूटे धनुषवाले हु॰ तुमको ऐसा उचित नहीं है कि अपने सगे भाई और बान्धवों को छोड़कर जाते हो, यह बात तुम्हारे योग्य नहीं है हे द्रुपद के पुत्र! तू उस अतुल पराक्रमी भीष्म को और इस छिन्न भिन्न भागी हुई सेना को देखकर अवश्य भयभीत है और तेरे मुख की शोभा बिगड़ी हुई है, बड़ेभारी युद्ध में चारों ओर से जाते हुए अर्जुन के साथ भिड़े हुए नरवीर भीष्म को देखो। हे वीर! तू पृथ्वीपर विख्यात होकर क्यों भीष्मजी से शत्रुता करता है, हे राजन्! उस महात्मा ने धर्मराज के रूखे रूखे अनेक मर्म स्पर्श करनेवाले वचनों को सुनकर आज्ञा को मानकर भीष्म के मारने की शीघ्रता की, उस समय बड़े वेग से भीष्मके सम्मुख आते हुए शिखण्डी को शल्य ने बड़े दुर्जय घोर अस्त्रों से रोका, हे राजन्! महेन्द्र के समान प्रभाववाला वह द्रुपदका पुत्र उस प्रलयाग्नि के समान प्रकाशित अस्त्र को देखकर मोहित नहीं हुआ, और बड़े धनुष के बाणों से उस अस्त्र को नाश करके उसी स्थानमें नियत हुआ फिर शिखण्डी ने इसके नाश करनेवाले दूसरे वरुणास्त्र को लिया उस अस्त्र से अस्त्र को रुके हुए को स्वर्गवासी देवता और राजाओं ने देखा,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फिर उस महात्मा वीर भीष्मजी ने युद्ध में अजमीढवंशी पाण्डव युधिष्ठिर के धनुष को जड़ाऊ ध्वजासमेत काटकर बड़ा शब्द किया इसके पीछे भीमसेन युधिष्ठिर को भयभीत देखकर बाणोंसमेत धनुष को छोड़कर, गदाको हाथमें लिये पैदल ही संग्राम में जयद्रथ के सम्मुख आया, जयद्रथ ने गदाधारी भीमसेनको बड़ेवेग से आता हुआ देखकर यमराज के दण्ड के समान घोर नौ बाणों से चारों ओर घायल किया फिर क्रोध में पूर्ण भीमसेन ने बाणों को कुछ न मानकर, राजा सिन्धु के पारावत नाम सब घोड़ों को मारा, फिर अतुल प्रभाव इन्द्र के समान अस्त्रधारी आपका पुत्र चित्रसेन बड़ी शीघ्रता से अपने रथके द्वारा भीमसेन के मारने को सम्मुख गया तब भीमसेन भी खूब गर्जकर गदा से उसको रोकता हुआ सम्मुख गया, फिर वह कौरवलोग चहुँओर को यमदण्ड के समान गदा उठाये भीमसेन को देखकर सब आपके पुत्रोंको छोड़कर उस भयकारी गदा से बचने के लिये इच्छा करनेवाले हुए और उस बड़े भारी तुमुल युद्ध से दूर हटगये फिर चित्रसेन आतीहुई महाघोर गदा को देखकर, रथ को त्यागकर युद्धभूमि में पैदलही निर्मल खड्ग और ढालको लेकर रथसे पृथ्वीपर ऐसे कूदा जैसे कि पर्वतके कोणसे सिंह कूदता है, वह गदा भी बड़े जड़ाऊ रथों को पाकर घोड़े और सारथीसमेत रथको विध्वंसन करके पृथ्वी पर ऐसे गिरी जैसे कि आकाश से गिरीहुई बड़ी ज्वलित उल्का पृथ्वी को जाती है, आपके पुत्र और सब भाई अत्यन्त प्रसन्न उस बड़े अप्रधर्ष्य को देखकर एक साथही गर्जे और चारों ओर से सेना समेत सबों के बल की प्रशंसा करी ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि षडशीतितमोऽध्यायः ॥ ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ।

संजय बोले कि इसके अनन्तर आपके पुत्र विकर्ण ने उस विरथ और प्रसन्नचित्त चित्रसेन को पाकर रथपर सवार किया, इसरीति से उस अत्यन्त कठिन तुमुल युद्धके वर्त्तमान होने पर शान्तनु के पुत्र भीष्मजी बड़ी शीघ्रता से युधिष्ठिर के सम्मुख दौड़े, उसके पीछे संजय नाम बड़े बलवान् क्षत्रियों ने रथ, हाथी और घोड़ों समेत अत्यन्त कोपित होकर युधिष्ठिर को काल के मुख में गया जाना फिर समर्थ धर्मराज युधिष्ठिर भी नकुल सहदेव दोनों अपने भाइयोंसमेत उस बड़े धनुषधारी नरोत्तम भीष्मजी के सम्मुख गया, इसके पीछे पाण्डवों ने हजारों बाणों से भीष्म को ऐसा ढक दिया जैसे कि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सूर्य को बादल ढक देता है फिर गाङ्गेय भीष्मजी ने उस युधिष्ठिर को अच्छी-रीति से छोड़े हुये हज़ारों बाणों को अपने बाणों से रोक दिया हे राजन्! फिर इसी रीतिसे भीष्म के भी छोड़े हुए बाण आकाश में ऐसे दिखाई दिये जैसे कि पक्षियों के समूह उड़ते हैं इन भीष्मजी ने क्षणमात्र में ही युधिष्ठिर-समेत उनके सब बाणसमूहों को गुप्त कर दिया, फिर युधिष्ठिर ने महा-क्रोधित होकर सर्प के समान नाराच भीष्मजी के ऊपर फेंके, फिर वहां महा-रथी भीष्मजी ने अपने क्षुरप्र नाम बाण से उसके छोड़े हुए बाणों को बीच ही में काटा, उस कालसमान नाराच को काटकर भीष्मजी ने सुवर्ण भूषित युधिष्ठिर के घोड़ों को मारा, फिर युधिष्ठिर उस मृतक घोड़ों के रथ का त्याग कर शीघ्र ही महात्मा नकुल के रथपर सवार हुआ, फिर शत्रुपुर के विजयी भीष्म ने क्रोधयुक्त दोनों नकुल सहदेव को भी बाणों से आच्छादित कर दिया, फिर राजा युधिष्ठिर भीष्म के बाणों से अत्यन्त पीड़ित उन दोनों भाइयों को देखकर भीष्मजी के मारने की इच्छा से बड़े चिन्तायुक्त हुए, इसके पीछे युधिष्ठिर ने उन अपने आज्ञावर्ती राजाओं को और मित्रसमूहों को सावधान किया और कहा कि इस युद्ध में भीष्मजी को मारो, फिर सब राजाओं में युधिष्ठिर के वचन को सुनकर बड़े रथसमूहों समेत पितामह को घेर लिया, हे राजन्! चारों ओर से घिरे हुये आपके पिता देवव्रत भीष्म बाणों से महारथियों को गिराते हुए धनुषक्रीड़ा करनेवाले होगये, संग्राम-भूमि में घूमते हुए भीष्मजी को पाण्डवों ने ऐसा देखा जैसे कि बड़े वन के मध्य मृगों में प्रवेश करके सिंह घूमता है, फिर युद्ध में शूरों को घुड़कते और बाणों से उड़ाते हुए भीष्मको देखकर सब पाण्डवी सेना ऐसी भयभीत हुई जैसे कि सिंह को देखकर मृगों के यूथ कम्पित होते हैं, उस समय सब क्षत्रियों ने भीष्मजी की गति को उस युद्धभूमि में ऐसा देखा मानों वायु का सखा अग्नि सूखे वन को जलारहा है, वहां भीष्म ने रथियों के शिरों को ऐसे गिराया जैसे कि बुद्धिमान् मनुष्य तालवृक्ष के पके फलों को गिराता है, हे राजन्! पृथ्वी पर गिरते हुए शिरों के ऐसे बड़े कठिन शब्द हुए जैसे कि गिरते हुए पत्थरों के शब्द होते हैं, उस महाभयानक घोरयुद्ध के होने पर सब सेना में बड़ा खेद उत्पन्न हुआ, फिर उन व्यूहों के टूटने पर क्षत्रिय लोग परस्पर में एक एक को बुलाकर युद्ध के निमित्त सम्मुख नियत हुए,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फिर शिखण्डी भरतवंशियों के पितामह को पाकर बड़े वेगसे तिष्ठ तिष्ठ वचनों को कहता हुआ सम्मुख दौड़ा, इसके पीछे भीष्मजी उस शिखण्डी को तिरस्कार करके उसके स्त्रीपने को विचारते हुए संजयों के सम्मुख गये, फिर प्रसन्नचित्त संजय लोगों ने महारथी भीष्म को देखकर शंख के शब्दोंसमेत बड़े सिंहनाद को किया, तदनन्तर भीष्म की दिशा में नियत होकर सूर्य के वर्त्तमान होनेपर रथ, हाथियों समेत युद्ध जारी हुआ, हे राजन्! फिर बर्छी, तोमरों की वर्षा से सेना को अत्यन्त पीड़ित करते हुए पाञ्चालदेशीय धृष्टद्युम्न और महारथी सात्यकी ने, अनेकप्रकारके बाणों से आपके शूरवीरों को घायल किया परन्तु आपके उन घायल शूरों ने, बड़ी बुद्धिमानी से युद्धभूमि को नहीं त्यागा और बड़े उत्साहसे लोगों को मारा, हे राजन्! वहां महात्मा धृष्टद्युम्न के हाथ से घायल हुए आपके पुत्रों के बड़े शब्द हुए, फिर आपके पुत्रों के घोर शब्दों को सुनकर महारथी बिन्द अनुबिन्द और अवन्तिदेश के राजा लोग सब मिलकर धृष्टद्युम्न के सम्मुख हुए, फिर उन शीघ्रतायुक्त दोनों महारथियों ने उसके घोड़ों को मारकर बाणों की वर्षा से धृष्टद्युम्न को ढक दिया, तब महाबली धृष्टद्युम्न शीघ्र ही रथ से कूदकर बड़े महात्मा सात्यकी के रथ पर चढ़गया, फिर बड़ी सेना समेत राजा युधिष्ठिर उन क्रोधयुक्त अवन्तिदेश के राजाओं की ओर दौड़ा, और इसी प्रकार आपका पुत्र भी बिन्द और अनुबिन्द को रक्षित करके नियत हुआ हे क्षत्रियोत्तम, धृतराष्ट्र! युद्ध में अर्जुन ने भी अत्यन्त कोपयुक्त होकर क्षत्रियों से ऐसा युद्ध किया जैसे कि असुरों से वज्रधारी इन्द्र ने किया था, फिर युद्ध में क्रुद्ध आपके पुत्रों के शुभचिन्तक द्रोणाचार्य ने सब पाञ्चालदेशियों को ऐसे नष्ट किया जैसे कि तूलराशि को अग्नि भस्म कर देता है, फिर आपके दुर्योधनादि पुत्र भीष्मजी को रक्षित करके पाण्डवों से युद्ध करने लगे, इसके पीछे सूर्य के अरुण होने पर राजा दुर्योधन आपके सब शूरवीरों से बोला कि शीघ्रता करो, फिर इसी प्रकार इन के लड़ते और कठिन कर्म करते हुए सूर्य के अस्तंगत होने पर, रात्रि के प्रारम्भ में भयानक रुधिर की नदी बही जिसमें हज़ारों शृगाल वर्त्तमान थे और भूतसमूहों से व्याप्त संग्रामभूमि चारों ओर को घूमते हुए अशुभ शृगालों से महाभयानक होगई, और हज़ारों राक्षस, पिशाच और अनेक मांसाहारी जीव भी चारों ओर के देख पड़े इसके पीछे अर्जुन भी सुशर्मा आदि राजाओं को उनके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

साथियों समेत विजय करके सेनामें जाकर अपने डेरों को गये, फिर युधिष्ठिर भी सेना-समेत भाइयों को साथ लिये रात्रि के समय अपने डेरों को गये, और भीमसेन भी दुर्योधनादि महारथी राजाओं को विजय करके अपने डेरे को गये, दुर्योधन भी भीष्मजी को मध्य में करके डेरे को गया, और द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य, कृतवर्मा यादव यह सब सेना को मध्य में करके डेरों को गये, इसी प्रकार सात्यकी धृष्टद्युम्न वीरों को मथन करके डेरों को गये हे महाराज ! इसरीति से यह शत्रुसन्तापी आपके सब शूरवीर रात्रि के समान पाण्डवों सहित लौटे, हे राजन् ! इस रीति से पाण्डव और कौरव परस्पर प्रशंसा करते अपने अपने डेरों में स्थित हुए, वह सब वीर अपनी रक्षा करके और गुल्म नाम सेना को बुद्धि के अनुसार देखकर और भालों समेत सफ़ाई से स्नान कर ब्राह्मणों से आशीर्वाद मांग वन्दीजनों से प्रशंसित हो गीतवाद्यों समेत आनन्द से क्रीड़ा करने लगे फिर एक मुहूर्त में ही वह सब क्रीड़ास्थान स्वर्ग के तुल्य होगया वहां किसी महारथी ने भी युद्ध की कथा का वर्णन नहीं किया, फिर वह दोनों सेनाओंके वीर हाथी घोड़ों समेत बड़े आनन्दपूर्वक सोये ॥ ५७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सप्ताशीतितमोऽध्यायः ॥ ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय ।

संजय बोले कि सुखपूर्वक सोये हुए कौरव और पाण्डवों समेत राजालोग रात्रि को व्यतीत करके फिर युद्ध के निमित्त गये, और संग्राम-भूमि में जानेवाले वीरों के बड़े बड़े शब्द समुद्र के समान हुए, तब राजा दुर्योधन, चित्रसेन, विविंशति, भीष्मजी, द्रोणाचार्य, ब्राह्मण इन सब बड़े सावधान और एक मन कौरवों के महारथी कवच शस्त्रधारियों ने पाण्डवों के सम्मुख व्यूहों को अलंकृत किया फिर शन्तनु के पुत्र आपके पितामह भीष्मजी सागरके समान भयानक सवारीरूपी लहरों से लहराते हुए महाव्यूह को शोभित करके, मालवदेशीय दक्षिणदेशीय और अवन्तिदेशियोंसे संयुक्त सब सेनाओं के अग्रगामी होकर चले, इस के पीछे प्रतापवान् द्रोणाचार्यजी पुलिन्द पारद क्षुद्रक और मालवी लोगों के साथ हुए हे राजन् ! फिर प्रतापी सावधान राजा भगदत्त मागध कलिङ्ग और पिशाचों समेत द्रोणाचार्य के पीछे हुआ और राजा बृहद्बल कौशल्य मेकल त्रैपुर और चिबुकों समेत प्राग्ज्योतिष के राजा भगदत्त के पीछे चला, उसके पीछे त्रिगर्त्तदेशीय महाशूर पराक्रमी राजा प्रस्थल बहुत से काम्बोजों से युक्त होकर नियत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हुआ इसके पीछे महावेगवान् शूरवीर अश्वत्थामा त्रिगर्त्तदेशियों के पीछे अपने सिंहनाद से पृथ्वी को शब्दायमान करता हुआ चला, इसी प्रकार से इसके पीछे राजा दुर्योधन सब भाइयों समेत सबसेनाके साथ अश्वत्थामाके पीछे चला इसके पीछे शारद्वत कृपाचार्यजी दुर्योधन के पीछे चले इस रीति से सागर के समान वह बड़ा व्यूह चला, उस व्यूह की पताका श्वेत छत्र जड़ाऊ बाजूबन्द तोमर धनुषों समेत महाशोभायमान हुई, फिर महारथी युधिष्ठिर आपके बेटों के उस बड़े व्यूह को देखकर बहुत जल्दी से अपने सेनापति धृष्टद्युम्न से बोला कि हे महाधनुषधारिन्, धृष्टद्युम्न ! इस समुद्र के समान रचे हुए व्यूह को देखो और तुम भी उसके समान शीघ्र ही हमारे व्यूह को अलंकृत करो, इसके पीछे उस शूर धृष्टद्युम्न ने बड़े भयानक शत्रुओं के व्यूह के नाश करनेवाले शृङ्गाटक नाम व्यूह को बड़ी उत्तमता से बनाया, उस व्यूह में महारथी भीमसेन और सात्यकी तो हज़ारों हाथी, घोड़े, रथ, पदातियों समेत शिखररूप हुए, और नरोत्तम श्वेत घोड़ेवाला श्रीकृष्ण को सारथी रखनेवाला अर्जुन नाभि के ऊपर वर्त्तमान हुआ और मध्य में राजा युधिष्ठिर और नकुल सहदेव दोनों भाई हुए, इसी प्रकार व्यूहशास्त्र में कुशल बुद्धि बड़ा धनुषधारी अन्य महारथियोंने सेनासमेत उस व्यूह को पूर्ण किया, और महारथी (अभिमन्यु) विराट द्रौपदी के पुत्र और घटोत्कच राक्षस उसके पीछे हुए, हे राजन् ! इस रीति वह व्यूहवीर पाण्डव अपने व्यूह को रचकर युद्धाभिलाषी विजय के चाहनेवाले संग्राम-भूमिमें आकर नियत हुए, शंखध्वनि से युक्त भेरियों के कठोर शब्द वा सिंहनाद और भुजाओं के शब्दों से शब्दायमान सब दिशायें अत्यन्त भयानक विदित हुईं, इसके पीछे उन शूरवीरों ने परस्पर सम्मुख होकर एक ने एक को टक टके नेत्रों से देखा, हे राजन् ! वह शूरवीर पूर्वनामोंके द्वारा परस्परमें बुला बुलाकर युद्ध के निमित्त वर्त्तमान हुए, इसके अनन्तर परस्पर मारनेवाले आपके पुत्र और पाण्डवी सेना का महाघोर और भयानकरूप युद्ध जारी हुआ, हे भरतर्षभ ! उस युद्ध में बड़े तीक्ष्ण नाराचों की ऐसी वर्षा हुई जैसे कि महाभयानक दंश करनेवाले सर्प चारों ओर से गिरते होयँ, और तेल से शुद्ध तीक्ष्ण बरछियां भी चारों ओर से ऐसी गिरीं जैसे कि बादलों से प्रकाशमान बिजली गिरती है और रेशमी वस्त्रों से मढ़े हुए, सुवर्णसे जटित पर्वत के शिखर के समान बड़ी-बड़ी गदा और निर्मल आकाश के समान खड्ग और सूर्य चन्द्रमाओं से चिह्नित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उत्तम ढालें यह सब गिरती हुई बड़ी शोभायमान हुईं हे राजन्! वह खड्ग ढालें पृथ्वी पर गिरी हुई सब ओर से शोभायमान हुईं फिर वह परस्पर युद्ध करनेवाली दोनों सेना ऐसी शोभित हुईं जैसे कि देव दानवों की सेना होती हैं उस समय एक एक के सम्मुख दौड़े, रथी रथियों के साथ बहुत जल्दी से भेजे गये और उत्तम राजा लोग रथ के जुओं को जुओं से मिलाकर युद्ध करने लगे, हे राजन्! सब ओर लड़ते हुए हाथियों की गसावट से दांतों के ऊपर सधूम अग्नि उत्पन्न होगये कोई हाथी के सवार तो जंगी फरसों से घायल हुए सब ओर से गिरते हुए ऐसे देख पड़े जैसे कि पर्वत के शिखर से वृक्ष गिरते हैं और विचित्र रूपधारी शूरवीर पदाती नख और फरसों से युद्ध करनेवाले पदाती परस्पर में मारते हुए देख पड़े, फिर उन कौरव और पाण्डवों की सेना के मनुष्यों ने परस्पर सम्मुख होकर युद्ध में नाना प्रकार के बाणों से एक ने दूसरे को यमपुर को भेजा और रथ वा धनुष के शब्दों से गर्जना करते हुए भीष्मजी पाण्डवों के सम्मुख गये, और पाण्डवों ने भी सावधान रथी धृष्टद्युम्न को आगे किये हुये बड़े भयानक घोर शब्दों को करते हुए कौरवों के सम्मुख दौड़े, इसके पीछे आपके शूरवीरों का और पाण्डवों के वीरों का युद्ध जारी हुआ और मनुष्य, हाथी, घोड़े और रथों का परस्पर मेल न हुआ॥४०॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वण्यष्टाशीतितमोऽध्यायः॥ ८८॥

नवासीवां अध्याय।

संजय बोले कि पाण्डव लोग युद्ध में क्रोधित चारों ओरसे संतप्त करनेवाले भीष्मजी के देखने को भी ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि अत्यन्त प्रचण्ड सूर्य को कोई नहीं देख सक्ता है, इसके पीछे धर्मपुत्र युधिष्ठिर की आज्ञा से पाण्डवों की सब सेना भीष्मजी के सम्मुख दौड़ीं, फिर उस प्रतापी भीष्म ने (संजय लोगों को) सोमकों समेत और बड़े धनुषधारी पाञ्चाल देशियों को शायकों से आच्छादित किया तब भीष्मसे घायल हुए सोमकोंसमेत पांचालदेशीय भय को त्याग कर शीघ्र भीष्मजी के सम्मुख जा पहुँचे तब उस शन्तनु के पुत्र बलवान् भीष्म ने उन रथियों की भुजाओं को अस्त्रोंसमेत काटकर रथों से विरथ कर दिया फिर खड्गों से सवारों के शिर गिराये हे महाराज! हमने भीष्मजी के अस्त्र से अत्यन्त मोहित विना शिरके हाथियों को ऐसा देखा जैसे कि विना वृक्षके पर्वत होते हैं, उस काल वहाँ रथियों में श्रेष्ठ महाबली भीमसेन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

के सिवाय पाण्डवोंका कोईभी मनुष्य नियत नहीं हुआ, उसने युद्धमें भीष्मजी को पाकर रोक दिया फिर भीम और भीष्म की सम्मुखता में सब सेनाओं को निष्ठानक महाघोर और भयानक हुआ और पाण्डवों ने प्रसन्न होकर वह सिंह-नाद किया, इसके पीछे बड़े घोर नाश के वर्तमान होनेपर अपने निज भाइयों समेत दुर्योधन ने आकर भीष्मजी की रक्षा करी, फिर रथियों में श्रेष्ठ भीमसेन ने भीष्मजी के सारथी को मारकर बड़े वेगवान् घोड़ेवाले रथ पर बैठकर धनुषको तान बड़ी शीघ्रता से अपने क्षुरप्रबाण से सनाभ के शिर को काटा वह शिर के कटते ही पृथ्वीपर गिर पड़ा, हे महाराज ! उस महारथी आपके पुत्र के मरनेपर उसके आदित्यकेतु, बह्वाशी, कुण्डधार, महोदर, अपराजित, पण्डितक, विशा-लाक्ष, दुर्जयनाम शूरवीर सगे भाई जड़ाऊ कवच अस्त्रादिकों से अलंकृत होकर उस भीमसेन के सम्मुख दौड़े, उस समय महोदर ने वज्र के समान नौं बाणों से भीमसेन को ऐसा घायल किया जैसे इन्द्रने नमुचिको किया था, फिर आदित्य केतुने सत्तर बाणों से बह्वाशी ने पांच बाणों से कुण्डधार ने नौ बाण से विशा-लाक्ष ने सात बाण से और महारथी अपराजित अनेक बाणों से महाबली भीमसेन को व्याकुल कर दिया, फिर पण्डितक ने तीन बाण से घायल किया, इसके पीछे इन सबके बाणों से पीड़ित शत्रुसंतापी महाबली भीमसेन ने क्रोध युक्त हो बायें हाथ से दृढ़ धनुष को खैंचकर गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से आपके पुत्र अपराजित के शिर को काटा फिर वह शिर पृथ्वी पर गिरा, इसके पीछे सब सेनाके देखतेहुए दूसरे भल्ल से महारथी कुण्डधारको कालवश किया, हे भरत-र्षभ ! फिर बड़े साहसी भीमसेनने धनुषमें शिलीमुख बाणको चढ़ाकर पण्डितकको मारा, वह बाण पण्डितक को मारकर, पृथ्वी में ऐसे प्रवेश कर गया जैसे कि काल का भेजा सर्प मनुष्य को काटकर पृथ्वी में घुस जाता है, फिर पूर्वसमयके दुःखों को स्मरणकरके प्रसन्नचित्त भीमसेनने तीन बाणसे विशालाक्ष को मारकर पृथ्वी पर गिराया, हे राजन् ! बड़े धनुषधारी महोदरको नाराच से छातीके ऊपर घायल किया वह भी मृतक होकर भूमिमें गिरा, फिर एक बाणसे आदित्यकेतुके छत्रको काटकर बड़े तीक्ष्ण भल्ल से उसके भी शिरको काटा, फिर अत्यन्त क्रोधभरे भीम-सेन ने गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से बह्वाशी को भी यमलोक को भेजा, इस के पीछे आप के और सब बेटे सभा के मध्य में कहे हुए भीम के वचनों को सत्य-सत्य जानकर युद्धभूमि से भागे, तदनन्तर भाइयों के दुःख से पीड्यमान राजा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दुर्योधन आप के सब पुत्रों को बुलाकर यह बोला कि हे भाइयो ! इस भीमसेन को मारो, इस रीति से इन धनुषधारी आप के पुत्रों ने भाइयों को मारा हुआ देखकर उस वचन को याद किया जो बड़े शुभचिन्तक विदुरजी ने हितकारी समझकर कहा था वही उन महात्मा का वचन अब सत्य-सत्य वर्त्तमान हुआ है हे राजन् ! तुम लोभ, मोह में भरे हुए पुत्र की प्रीति से नहीं जानते हो पूर्व समय में सत्य हितकारी वचन कहा गया था निश्चय करके महाबाहु बलवान् भीमसेन तेरे पुत्रों के मारने के लिये ऐसा ही उत्पन्न हुआ है जैसा कि कौरवों को माररहा है, इसके पीछे राजा दुर्योधन भीष्म के पास जाकर महाखेदयुक्त होकर रोदन करने लगा कि मेरे शूरवीर भाई युद्ध में भीमसेन के हाथ से मारे गये, इसी प्रकार और सब सेना के मनुष्य भी मारे जाते हैं, आप सदैव हम को उदासीनपने से त्याग करते हो मैं कुमार्ग में वर्त्तमान हूं मेरी अभाग्यता देखिये, संजय बोले कि इस वचनको सुनकर आपके पिता भीष्मजी उस अश्रुपात करनेवाले दुर्योधन से यह वचन बोले कि मैंने और द्रोणाचार्य, विदुर, गांधारी आदि ने प्रथम ही कहा था परन्तु हे तात ! तुमने उसको नहीं समझा, मैंने प्रथम तुम्हारे साथ नियम किया है सो मैं और आचार्यजी दोनों किसी रीति से तुम को छोड़ने को योग्य नहीं, धृतराष्ट्र के पुत्रों में से जिस-जिस को भीमसेन देखे गा उसको सत्य-सत्य ही मारे विना नहीं छोड़ेगा, सो स्वर्ग को अपना स्थान समझकर मन को स्थिर करके पाण्डवों से युद्ध करो हे भरतर्षभ ! इन्द्रादिक देवता भी पाण्डवों के जीतने को समर्थ नहीं हैं इस हेतु से युद्ध में स्थिर बुद्धि होकर संग्राम करो ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वण्येकोननवतितमोऽध्यायः ॥ ८९ ॥

नब्बेका अध्याय।

धृतराष्ट्र ने कहा कि, हे संजय ! एक भीमसेन के हाथ से मेरे बहुत से पुत्रों को मराहुआ देखकर भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य आदि ने क्या-क्या किया और मेरे पुत्र प्रतिदिन युद्ध में नाश होते हैं इससे हे सुत ! मैं मानता हूं कि सबरीति से प्रारब्ध से हीन हूं, कि मेरे पुत्र नाश होते हैं और विजय नहीं पाते हैं भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, भूरिश्रवा, भगदत्त, अश्वत्थामा आदि बड़े-बड़े प्रतापीलोगों के मध्यमें मेरे पुत्र वर्त्तमान होकर भी मारे जाते हैं यहां प्रारब्ध से दूसरी कौन सी बात है, हे तात ! मेरे और भीष्म विदुरआदि अनेक सुहृदों के समझाने और

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निषेध करने से भी निर्बुद्धि दुर्योधन ने पहले वचनों को नहीं समझा और हितकारिणी अपनी माता गान्धारी के भी वचन को उस दुर्बुद्धि ने नहीं समझा उसी का यह फल पा रहा है, वह महाक्रोधी भीमसेन युद्ध में प्रतिदिन मेरे पुत्रों को ही अधिकता से मारकर यमलोक में पहुंचाता है, संजय बोले कि हे समर्थ ! विदुरजी का वह उत्तम वचन वर्त्तमान हुआ है जो विदुर ने कहा था कि पुत्रों को जुआ खेलने से निषेध करो और पाण्डवों से शत्रुता मत करो सो उन शुभचिन्तक मित्रों के वचनों को तुमने ऐसे नहीं माना जैसे कि रोगी अपनी नीरोग करनेवाली औषधी को नहीं खाता है वही साधुओं का कहा हुआ वचन आप के आगे वर्त्तमान हुआ है, यह सब कौरवलोग अपने शुभचिन्तक विदुर द्रोणाचार्य भीष्म और अन्यबहुत से हितकारियों के वचनों को न मानकर नाश होते जाते हैं, इस के पीछे हे राजन् ! मध्याह्न के समय संसार का नाशकारी बड़ा भारी भयानक युद्ध जो प्रारम्भ हुआ उस को मुझ से सुनो, कि धर्मपुत्र युधिष्ठिर की आज्ञा से पाण्डवों की सब सेना महाक्रोधित होकर भीष्म के मारने के लिये सम्मुख दौड़ी हे महाराज ! धृष्टद्युम्न शिखण्डी सात्यकी यह तीनों अपनी अपनी सेना-समेत भीष्म के सम्मुख गये, विराट, द्रुपद आदि महारथी भी सब सोमकों समेत भीष्म के सम्मुख गये और पांचों भाई केकय, धृष्टकेतु, कुन्तिभोज आदि भी सब कवचधारी होकर सेना समेत भीष्म के सम्मुख गये, अर्जुन और द्रौपदी के पांचों पुत्र और पराक्रमी चेकितान उन सब राजाओं के सम्मुख गये जिन को कि दुर्योधन ने आज्ञा दी थी, इसी प्रकार वीर अभिमन्यु और महारथी घटोत्कच और क्रोधित भीमसेन भी कौरवों के सम्मुख दौड़ा हे राजन् ! पाण्डवों के दो यूथों से तो कौरव मारे गये और कौरवों से भी उधर के लोग मारे गये फिर महारथी द्रोणाचार्य बड़े क्रोधयुक्त होकर संजयों सहित सोमकों को मारते हुये पाण्डवों के सम्मुख गये उस युद्ध में द्रोणचार्य के हाथ से मरते हुए महात्मा संजयों के बड़े-बड़े शब्द हुए उस स्थान में द्रोणाचार्य के हाथ से मरे हुए बहुत से क्षत्रिय ऐसे तड़फड़ाते दिखाई दिये जैसे कि रोगयुक्त मनुष्य विकल होकर तड़फड़ाते हैं युद्ध में बोलते, गर्जते, पुकारते हुए शूरवीरों के ऐसे शब्द सुने गये जैसे कि भूख से व्याकुल मनुष्यों के शब्द निकला करते हैं इसी प्रकार द्वितीय काल के समान क्रोधरूप महाबली भीमसेन ने कौरवों के महाघोर नाश को किया, उस महाघोर युद्ध में परस्पर सब सेनाओं के मरने से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रुधिर की घोर भयानक नदी जारी हुई हे महाराज ! कौरव और पाण्डवों की वह महायुद्ध (घोरलड़ाई) यमराज के पुर की वृद्धि करनेवाली हुई, इसके पीछे क्रोध में भरे निरभिमानी भीमसेन ने हाथियों की सेना को मारकर यमपुर भेजा, वहां भीमसेन के नाराचों से मरे हुए हाथी अचेत होकर शब्द करते दिशाओं में घूमते हुए पृथ्वी पर गिरे, हे राजन्, धृतराष्ट्र ! वह सूँड़ और अङ्गों से रहित हाथी क्रौञ्च पक्षी के समान शब्द करते हुए पृथ्वी पर मरकर सोये, और नकुल, सहदेव दोनों भाई घोड़ों की सेना के सम्मुख गये वहां सुवर्ण भूषणों से अलंकृत सैकड़ों और हज़ारों घोड़े मरे कटे देख पड़े उस समय वह पृथ्वी गिरे हुए घोड़ों से पूर्ण हुई, और बहुत से जिह्वा से रहित श्वास लेते हुए शब्दायमान मृतकरूप अनेक रंगवाले घोड़ों से पृथ्वी बड़ी शोभायमान हुई, हे भरतर्षभ ! इसी प्रकार से अर्जुन के हाथ से मरे हुए राजाओं से भी भयानक पृथ्वी महाशोभा को प्राप्त हुई बड़े शस्त्रों से टूटे रथ, ध्वजा और प्रकाशित छत्रों से वा टूटेहुए चामर और व्यजनों से अथवा हार, केयूरादिक आभूषणों से युक्त कुण्डलधारी शिर अनेक प्रकार की पताकाओं से, और रथों की अनेक रंगवाली डोरियों से युक्त रथों से ढकी हुई पृथ्वी ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि वसन्त ऋतु में फूलों से शोभित होती है, जिस प्रकार से भीष्मजी और रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, और कृतवर्मा इन सबके क्रोधरूप होने से पाण्डवों के शूरवीरों का नाश हुआ उसी प्रकार पाण्डवों के कोपित होने से आप के भी वीरों का नाश हुआ ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि नवतितमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

इक्यानबे का अध्याय ।

संजय बोले कि, हे राजन् ! इस प्रकार उन उत्तम वीरों के नाश होने पर सुबल का पुत्र श्रीमान् शकुनि और शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला यादव कृतवर्मा पाण्डवों की सेना के सम्मुख गया, फिर काम्बोजदेशीय उत्तम घोड़े व नदी के समीप उत्पन्न होनेवाले अरट्टदेशीय व सिन्धुदेशीय आदि सब प्रकार के घोड़े और वनायुज देशीय श्वेतरूप पहाड़ी घोड़े इन सब प्रकार के अनेक घोड़ों के द्वारा युद्ध के चारों ओर को नियत करके दूसरे प्रकार के तित्तिरिज वायु के समान वेगवान् सुवर्ण-भूषणों से अलंकृत श्रेष्ठ रचना किये

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हुए कवचों को धारण करनेवाले वायु के समान शीघ्रगामी उत्तम घोड़ों समेत बलवान् रूपवान् श्रीमान् पराक्रमी अर्जुन का पुत्र इरावान् उस सेना के सम्मुख हुआ यह इरावान् अर्जुन का पुत्र नागकन्या में इस रीति से उत्पन्न हुआ था कि ऐरावत नाम नागों के राजा ने गरुड़जी से महादुःखित होकर अर्जुन को अपनी कामवती कन्या दी तब अर्जुन ने उस कामासक्त को अपनी स्त्री बनाने के लिये ग्रहण किया इस रीति से यह अर्जुन का पुत्र दूसरे के क्षेत्र में उत्पन्न हुआ, वह माता से रक्षित होकर नागलोक में बड़ा हुआ और अर्जुन की शत्रुता से उसके चाचा ने उसको पृथक् किया फिर वह रूपवान् पराक्रमी गुणों से सम्पन्न सत्यपराक्रमी अर्जुनको स्वर्ग में वर्त्तमान सुनकर शीघ्र ही इन्द्रलोक को गया, वहां उस सावधान सत्यपराक्रमी ने हाथ जोड़कर पिता के पास जाकर दण्डवत् की, और अपने को अर्जुन के सम्मुख वर्णन किया कि हे प्रभो! आप का कल्याण हो मैं इरावान् नाम आप का पुत्र हूं और जैसे माता का मिलाप हुआ था वह सब वर्णन किया तब अर्जुन ने उसका यथार्थ वृत्तान्त जैसा हुआ था सब स्मरण किया वह अर्जुन देवराज के भवन के भीतर गुणों में अपने समान पुत्र को देखकर बहुत स्नेह से मिलकर प्रसन्न हुआ, हे भरतवंशिन्, धृतराष्ट्र! तब इन्द्रलोक में वह महाबाहु इरावान् अर्जुन से बोला कि हे पितः! आप मुझे कोई काम करने की आज्ञा दीजिये, अर्जुन ने कहा कि हे पुत्र! युद्ध के समय तुमको हमारी सहायता करनी उचित है उसकी आज्ञा को स्वीकार करके युद्ध के समय वह उन पूर्वोक्त उत्तम घोड़ों समेत वहां आया जो अकस्मात् ऐसे ऊंचे होकर चलने लगे जैसे कि महासमुद्र में हंस चलते हैं वह शीघ्रगामी घोड़े आपके घोड़ों के समूहों को पाकर, अपनी तीव्रता से पृथ्वी पर छाती से छाती को नाकों से नाकों को परस्पर घायल करतेहुए दौड़े, इस रीति से उस परस्पर दौड़ते हुये घोड़ों के समूहों से ऐसे भयकारी शब्द सुनेगये जैसे कि गरुड़ के गिरने में होते हैं, इसी प्रकार घोड़े के सवारों ने भी परस्पर में मिलकर एक ने एक का नाश किया, इस रीति के कठिन और तुमुल युद्ध के होनेपर दोनों ओर के घोड़ों के समूह भी चारों ओर से भ्रमण करने लगे, जिनके कि बाण अत्यंत निबट गये और घोड़े भी मारे गये उन शूरवीरों ने नाशको पाया, फिर घोड़ों की सेना के नाश होने और कुछ शेष रह जाने पर शकुनी के छोटे भाई महा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शूरवीर युद्धभूमि में वायु के समान तीव्र स्पर्शयुक्त और शीघ्रगामीपने में तीव्र वायु के समान प्रसन्नरूप तरुण घोड़ों पर चढ़कर आये, गज, गवाक्ष, वृषभ, चर्मवान्, आर्जव, शुक यह छओं महावीर गान्धार कुनाद युद्ध में दुर्मद बड़ी सेना-समेत महाप्रवीण भयानकरूप अतिबली कवच आदि से अलंकृत शकुनि और अपने बड़े-बड़े वीरों से निषेधित होकर भी विजयाभिलाषी हो उस बड़ी कठिन सेना को चीरकर स्वर्ग के निमित्त युद्ध में आये उस समय पराक्रमी इरावान् भी उन राजकुमारों को आया हुआ देखकर अपने शस्त्र आभूषणों से अलंकृत वीर पुरुषों से बोला कि जिस प्रकार से दुर्योधन के यह सब शूरवीर मारे जायँ वही काम तुमको करना उचित है यह सुनकर इरावान् के शूरों ने अङ्गीकार करके, उनकी दुर्जय सेना को मारा युद्ध में इस सेना से मारी हुई अपनी सेना को देखकर, महाअसहिष्णु सुबल के पुत्रों ने इरावान् को चारों ओर से घेरलिया और बड़े परशों से और परिघों से प्रहार करते हुए उसके ऊपर दौड़े, इरावान् भी उन वीरों से घायल रुधिर में डूबा हुआ ऐसा विदित हुआ जैसे कि दण्डों से घायल हाथी होता है, हे राजन् ! वह अकेला उन सब से हाथ छाती पीठ और कुक्षिपर घायल होनेपर भी पीड़ित नहीं हुआ, फिर शत्रु के पुर को विजय करनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त इरावान् ने भी उन सबको अपने तीक्ष्ण बाणों से घायल किया, फिर उस शत्रुहन्ता ने अपने शरीर में से सब परशों को उखाड़कर उन्हीं परशों से सुबल के पुत्रों को घायल किया, इसके पीछे अपने तीक्ष्ण खड्ग और ढाल को धारण कर के बड़ी शीघ्रता से उन सुबल के पुत्रों के मारने को पैदल ही गया, फिर चैतन्य होकर क्रोध में भरे हुए वह सब सुबल के पुत्र भी इरावान् के सम्मुख गये तब तो इरावान् अपने खड्ग की हस्तलाघवता को दिखलाता हुआ उन सबके सम्मुख दौड़ा, उस समय उन सब पुत्रों ने अपनी शीघ्रगामी सवारियों से भी उसकी तीव्रता को नहीं पाया, फिर उसको घेरकर सबने पकड़ना चाहा, परंतु उस अकेले महाबली ने ही पास जाकर उन सब खड्ग, धनुषधारियों के अङ्गों को काटा और अङ्गों के कटते ही वह सब मृतक होकर पृथ्वी पर गिरे, हे महाराज ! इनमें से एक वृषभ ही इस घोर रुद्रयुद्ध में से बड़ी सहायताओं से बचा फिर आप का पुत्र इन शूरवीरों को मरा हुआ देखकर महाक्रोध में भरा हुआ महाबली शत्रुहन्ता मायावी आर्य शृङ्ग राक्षस जो कि बकासुर के

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बध में भीमसेन का शत्रु था उससे बोला, हे वीर! देखो जैसे कि इस पराक्रमी और मायावी अर्जुन के पुत्र ने मेरे विजयकर्म से सेना के नाश को किया है सो हे तात! तूभी इच्छानुचारी मायावी अस्त्रविद्या में कुशल है और पाण्डवों से शत्रुता करनेवाला है इस हेतु से इस इरावान् को युद्ध में तुम मारो, उसकी आज्ञा पाते ही वह घोररूपराक्षस बड़ा सिंहनाद करता हुआ अर्जुन के पुत्र के पास गया और दो सहस्र युद्ध से शेष बचेहुए घोड़ों से महाबली इरावान् के मारने का अभिलाषी हुआ, फिर अत्यन्त पराक्रमी शत्रुहन्ता शीघ्रता करने-वाले इरावान् ने अपने मारने के इच्छावान् उस राक्षस को रोका, इसके अन-न्तर शीघ्रता से बड़े महाबली राक्षस ने उस आते हुए को देखकर माया को प्रकट किया, अर्थात् उसने उतने ही मायारूपी घोड़े जिनपर शूल पट्टिश धारण किये हुए घोर राक्षस सवार थे प्रकट किये, फिर उन दोहज़ार क्रोधरूप प्रहार करनेवालों ने सम्मुख होकर थोड़ेही समय में परस्पर युद्ध करके एक ने एक को प्रेतलोक में भेजा, उस सेना के मरने पर वह युद्ध में दुर्मद दोनों ऐसे युद्ध करने लगे जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्र ने युद्ध किया था, उस युद्ध में दुर्मद राक्षस को सम्मुख आया हुआ देखकर महाबली इरावान् बड़े क्रोध से उस के ऊपर दौड़ा, और उस निर्बुद्धी के धनुष को अपने खड्ग से काटकर पांच प्रकार के पांच बाणों से व्याकुल किया, फिर वह अपने धनुष को टूटा जानकर बड़े क्रोध से इरावान् को अपनी माया से मोहित करके बड़ी तीव्रता से आकाश में पहुँचा, इसके पीछे इरावान् ने भी अपनी माया से अन्त-रिक्ष में जाकर उसके अङ्गों को काटा, हे राजन्! जैसा कि यह इरावान् सब धर्मों का ज्ञाता कामरूप और अजेय था वैसा ही वह राक्षसों में श्रेष्ठ वारंवार घायल होकर भी नीरोगतापूर्वक तरुणरूप था क्योंकि उन्होंकी देह से उत्पन्न होनेवाली माया तरुणतापूर्वक स्वेच्छारूप धारण करनेवाली होती है, इस रीति से उस राक्षस का शरीर कटकर भी फिर उत्पन्न हुआ हे राजेन्द्र! जब इरावान् ने उस महाबली राक्षस को बाण और परशों से वारंवार काटा तब वह राक्षस वृक्ष के समान होकर वारंवार महाभयकारी शब्दों से गर्जना करके परशों से कटे हुये शरीर से रुधिर बहाने लगा इस के अनन्तर वह राक्षस इरावान् को पराक्रमी देखकर बड़ा क्रोधित हुआ और युद्ध में ऐसी तीव्रता करने लगा, कि अपना घोररूप बनाकर अर्जुन के पुत्र महावीर इरावान् को युद्ध में सबके देखते

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हुये इसने पकड़ना चाहा फिर उस निर्बुद्धि की उस माया को देखकर अत्यन्त क्रोध भरे इरावान् ने भी माया को रचा अर्थात् अपने नाना के वंशरूप सर्पों को उत्पन्न किया, हे राजन् ! बहुत से सर्पों से युक्त उस इरावान् ने शेषनाग के समान अपने महान्रूप को धारण किया और अनेक नागों से उस राक्षस को घेरा, फिर उस राक्षसों में श्रेष्ठ ने अपना गरुड़रूप धारण करके उन घिरेहुये सर्पों को खाया, मायासे उसके ननसारी सर्पों के भक्षण होजानेपर वह इरावान् अचेत हुआ फिर उस अत्यन्त मोहित इरावान् को राक्षस ने खड्ग से मारकर उसके कुण्डल मुकुटधारी चन्द्रमा के समान प्रकाशमान शिर को पृथ्वी पर गिराया उस राक्षस के हाथ से उस इरावान् के मरने पर धृतराष्ट्र के सब पुत्र शोक से निवृत्त होकर बड़े प्रसन्न हुये, फिर उस भयकारी महायुद्ध में दोनों सेनाओं का घोर नाश होना प्रारम्भ हुआ रथ, हाथी, घोड़े, पदाती, सवार यह सब परस्पर में युद्ध कर करके और पत्तियों के हाथों से नाश को प्राप्त हुये, इसी प्रकार उस तुमुल युद्ध में आपके और उन्हीं के अनेक घोड़े पत्ति और रथियों के समूह रथियों के हाथों से मारे गये, और उस पुत्रको मृतक न जाननेवाले अर्जुन ने भी भीष्मजी के रक्षक उन शूरवीर राजाओं को मारा इसी रीति से उस युद्ध में प्राणों को होमकर सृंजी लोगों ने आप के शूरवीरों को परस्पर में मारा, नङ्गे शिर कवचों से रहित रथहीन टूटे धनुष परस्परमें भिड़े हुये शूरवीर भुजाओं से युद्ध करने लगे, इसी प्रकार युद्ध में पाण्डवों की सेना को कँपाते हुये परन्तप भीष्मजी ने मर्मभेदी बाणों से महारथियों को मारा, उन भीष्मजी के हाथ से युधिष्ठिर की सेना के बहुतसे रथ, हाथी, घोड़े, सवार और पदाती मारे गये, हे भरतवंशिन् ! वहां हमने भीष्म के पराक्रम को देखकर इन्द्र के समान उसके अपूर्व बल को जाना और इसी प्रकार से युद्ध में (भीमसेन, धृष्टद्युम्न) और धनुर्द्धर सात्यकी का भी युद्ध महाभयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पाण्डवों में इस प्रकार का महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेले ही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मारने को समर्थ हैं तो सब पृथ्वी के बड़े बड़े पराक्रमी शूरवीरों समेत कैसे न होंगे हे भरतर्षभ ! इसरीति से घोर युद्ध होने पर दोनों ओर के शूरवीर लोग परस्पर में असहिष्णु होकर तुम्हारे और पाण्डवों के शूरक्षत्रिय राक्षसआदि अनेक प्रकार के घोर युद्ध करते हैं हमने उस देव दानवों के युद्ध की समान संग्राम में किसी को ऐसा न देखा जो अपने प्राणों की रक्षा करता हो ॥ ६३ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वण्येकनवतितमोऽध्यायः ॥ ९१ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बानबेका अध्याय ।

धृतराष्ट्र बोले कि युद्ध में इरावान् को मरा देखकर पाण्डवों ने क्या किया ? उसको मुझसे कहो, संजय बोले कि भीमसेन का पुत्र घटोत्कच राक्षस उस इरावान् को युद्ध में मरा हुआ देखकर महाध्वनि से गर्जा, उसकी गर्जना से पर्वत और समुद्रोंसमेत पृथ्वी चलायमान हुई, और दिशा विदिशाओं समेत आकाश भी शब्दायमान हुआ और उस महाघोर शब्द को सुनकर आपकी सेना में भी सबको प्रस्वेद हुआ और सब वीर महाखेदित होकर सब ओरसे ऐसे भयभीत हुए जैसे कि सिंह से भयभीत हाथी होते हैं, उस राक्षस ने इस घोर शब्द को करके, महाज्वलित रूप शूल को धारण कर उग्ररूप होके नाना प्रकार के रूप और शस्त्रधारी राक्षसों को साथ लिये कालमृत्यु के समान क्रोधी होकर मारना प्रारम्भ किया इस क्रोधयुक्त भयानकरूप राक्षस को आता देखकर और उसके भय से अपनी सेना का मुख फेरना देखकर राजा दुर्योधन बड़े भारी धनुष को लेकर सिंह के समान गर्जना करता हुआ घटोत्कचके सम्मुख गया इसके पीछे वङ्गदेशियों का राजा चलते हुए पर्वताकार दशहज़ार हाथियों को साथ लेकर गया उस हाथियों की सेना समेत आपके पुत्रको देखकर वह राक्षस महाक्रोधाग्नि रूप होगया फिर रोमहर्षण महातुमुल युद्ध जारी हुआ, उस समय राक्षसों से और आपकी सेना से युद्ध होने लगा फिर बादलों के समूहों के समान युद्ध में प्रवृत्त हाथियों की सेना को देखकर, बिजली से अनेक शस्त्रों को धारण किये हुए बादलों के समान गर्जना करते हज़ारों राक्षस सम्मुख दौड़े, (बाण, बरछी, दुधाराखड्ग, नाराच, भिन्दिपाल, शूल, मुद्गर) और परशे इत्यादि शस्त्रों से हाथियों के सवारों कोमारकर उन राक्षसों ने पर्वत और वृक्षों से हाथियों को मारा हे राजन् ! हमने राक्षसों के हाथ से टूटेहुए मस्तकोंसमेत हाथियों को रुधिर से रहित होकर मरा हुआ देखा उस हाथी और हाथीवानों के पराजित होने पर, महाक्रोधरूप होके दुर्योधन अपने जीवनकी आशा को त्यागकर उन राक्षसों के सम्मुख गया, हे शत्रुसंतापिन् ! उस बड़े धनुषधारी दुर्योधन ने वहां जाकर अपने तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से बड़े बड़े राक्षसों को मारकर अपने महातीव्र चार बाणों से उस महाभयंकर घोररूपवाले घटोत्कच को घायल किया, फिर वह राक्षस इन्द्र-धनुष के समान अपने धनुषको खैंचकर, बड़े वेग से दुर्योधन के सम्मुख गया उस मृत्युसमान राक्षस को आता हुआ देखकर आपका पुत्र दुर्योधन पीड्यमान नहीं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हुआ तब अत्यन्त रक्तनेत्र कोप से युक्त वह राक्षस इससे कहने लगा कि अब मैं उन अपने माता पिता से उऋण होजाऊंगा जिनको कि तुझ निर्दयी ने वनवासी किया, और छलसे द्यूतमें जीता और पापात्मा निर्बुद्धि एकवस्त्रा रजस्वला कृष्णा द्रौपदी को जो तुमने सभा में लाकर महादुःखित किया और तेरे अर्थ चाहनेवाले दुर्बुद्धि जयद्रथ ने मेरे पिता लोगों को निरादर करके आश्रम में नियत द्रौपदी को पकड़कर हरणकिया हे कुलध्वंसिन्, महानीच! उन अपराधों का फल मैं अब तुझको देकर उसका प्रतीकार पाऊंगा, फिर ओठों को चबाकर घटोत्कच ने धनुष को खैंचकर मारे बाणों के दुर्योधन को ऐसे ढकदिया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल जल की धाराओं से पर्वत को ढक देते हैं ॥ २६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि द्विनवतितमोऽध्यायः ॥ ६२ ॥

तिरानबे का अध्याय।

संजय बोले कि इसके अनन्तर राजा दुर्योधन ने दानवों से भी असह्य उन बाणों की वर्षा को ऐसे सहा जैसे कि बड़ा हाथी पानी की वर्षा को सहलेता है हे भरतवंशिन्! इसके पीछे क्रोध में पूर्ण सर्प की समान श्वासलेते हुए आपके पुत्र ने बड़े सन्देह से युक्त होकर पचीस नाराचों को छोड़ा वह नाराच बाण उस राक्षस पर ऐसे जाकर गिरे, जैसे कि गन्धमादन पर्वतपर क्रोधयुक्त सर्प गिरते हैं उन बाणों से घायल मदवाले हाथी के समान रुधिर गिरते, उस मांसाहारी राक्षस ने राजा के मारने का विचार किया और पर्वतों के चीरने वाली बड़ी बरछी को लिया, फिर आपके पुत्र के मारने के लिये उस महाबाहु ने उस महाघोर उल्का के समान प्रकाशमान बरछी को उठाया उस समय महाशीघ्रता करनेवाले वङ्गदेशीय राजा ने उस उठाई हुई बरछी को देखकर पर्वताकार अपने हाथी को उस राक्षस के ऊपर चलाया और उस शीघ्र चलनेवाले हाथी के द्वारा आप उस मार्ग में वर्त्तमान हुआ जिधर दुर्योधन का रथ था अर्थात् उस हाथी से आपके पुत्र के रथ को गुप्त करदिया उस वङ्गदेश के राजा करके मार्ग को बन्द देखकर घटोत्कच ने महाक्रोधित होकर उस उठाई हुई बरछी को हाथीपर फेंका उस बरछी के प्रहार से वह हाथी महापीड़ित होकर गिरकर मरगया फिर वह वङ्गदेशीय बलवान् राजा भी बहुत शीघ्र हाथी से उछलकर पृथ्वी पर बड़ी तीव्रता से गया, दुर्योधन ने उस गिरेहुए बड़े हाथी को और सेना के हटजाने को देखकर बड़े खेद को पाया, और राजा दुर्योधन क्षत्रिय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धर्म को विचार अपने अहङ्कार को करके सेना के भागजाने पर भी पर्वत के समान अचल होकर युद्ध में खड़ारहा, फिर महाक्रोधित होकर बड़े धनुष को खैंचकर एक बड़े तीक्ष्ण बाण को उस राक्षस पर छोड़ा उस इन्द्रवज्र के समान आतेहुये बाण को देखकर घटोत्कच ने बड़ी हस्तलाघवता से निष्फल कर दिया और लालनेत्र करके बड़े क्रोधपूर्वक भयानक शब्द से गर्जना को करके सेना को ऐसा भयभीत करदिया जैसे कि प्रलयकाल में बादल सबको भय से पीड़ित करते हैं, उस राक्षस के उस घोर शब्द को सुनकर शन्तनु के पुत्र भीष्मजी द्रोणाचार्य के पास जाकर बोले कि यह राक्षस का घोर और भयानक शब्द सुनाजाता है निश्चय करके यह घटोत्कच ही राजा दुर्योधन से लड़ता है युद्ध में इस राक्षस को कोई जीव विजय नहीं करसक्ता है आपका श्रेय हो आप वहीं जाकर राजा की सब ओर से रक्षा करो, वह महाभाग दुर्योधन बड़े साहसी राक्षस से लड़ता है हे शत्रुसन्तापियो! तुम्हारा और हम सबका भी उत्तम कर्म है पितामह के इस वचन को सुनकर शीघ्रता करनेवाले महारथी द्रोणाचार्य, सोमदत्त, बाह्लीक, जयद्रथ, कृपाचार्य, भूरिश्रवा, शल्य, अवन्ति का राजा बृहद्बल, अश्वत्थामा, विकर्ण, चित्रसेन, विविंशति और हजारों उनके पीछे चलनेवाले रथ वह सब मिलेहुये आपके पुत्र दुर्योधन की रक्षाके लिये वहां गये जहां राजा दुर्योधन था फिर वह राक्षसोत्तम महाबाहु घटोत्कच उस दुर्जय महारथियों से रक्षित मारने की इच्छा रखनेवाली सेना को आता हुआ देखकर मैनाक पर्वत के समान भयभीत नहीं हुआ, और शूल, मुद्गर आदि अनेक प्रकार के शस्त्रधारी राक्षसों से युक्त घटोत्कच बड़े धनुष को खैंचकर खड़ा हुआ, फिर घटोत्कच और दुर्योधन की सेना का महारोमहर्षण युद्ध जारी हुआ उस समय हे राजन्! धनुष की टंकारों के महाकठिन शब्द चारों ओर से ऐसे सुनाई दिये जैसे कि जलते हुये बांसों के शब्द होते हैं, और शरीर के कवचोंपर लगने वाले अस्त्र शस्त्रों के भी ऐसे शब्द होते थे जैसे कि फटेहुये पहाड़ों के महाशब्द होते हैं, हे राजन्! वीरों की भुजाओं से फेंकेहुये तोमरों के ऐसे रूप दिखाई दिये जैसे कि आकाश में चलते हुये सर्पों के आकार दिखाई देते हैं, इसके पीछे अत्यन्त क्रोधरूप भयकारी गर्जना करतेहुये उस राक्षसों के राजा ने बहुत बड़े धनुष को लेकर, अर्द्धचन्द्र नाम बाण से द्रोणाचार्य के धनुष को काट के भल्ल से सोमदत्त की ध्वजाको तोड़ता हुआ महागर्जना करके बाह्लीक को तीन बाणसे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छाती पर घायल किया और एक बाणसे कृपाचार्य को, तीन बाण से चित्रसेन को, घायल करके कानतक खैंचे हुए बाण से विकर्ण को घायल किया, फिर वह विकर्ण रुधिर भरे देह से रथ में बैठा इसके पीछे उस पराक्रमी ने पन्द्रह नाराच भूरिश्रवा पर फेंके वह नाराच उसके कवच को काटकर पृथ्वी पर गिरे फिर विविंशति और अश्वत्थामा के सारथियों को घायल किया जिसके मां वह घोड़ों की रस्सियों को छोड़कर पृथ्वी पर गिरपड़े और अर्द्धचन्द्र बाण से राजा सिन्धुके सुनहरी वाराह को और दूसरे बाण से उसके धनुषको काटा, फिर क्रोध से अत्यन्त रक्तनेत्र ने अपने चार नाराचों से महात्मा राजा अवन्ति के चारों घोड़ोंको मारा हे महाराज ! फिर बड़े तीक्ष्ण बाण से राजा बृहद्बल को घायल किया वह भी महाघायल होकर रथ में बैठगया फिर राक्षसाधिप घटोत्कच ने सर्पाकृति अनेक बाणों से राजा शल्य को व्यथित किया ॥ ४२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि त्रिनवतितमोऽध्यायः ॥ ९३ ॥

चौरानवे का अध्याय ।

संजय बोले कि, फिर वह राक्षस आपके सब योद्धाओं को युद्ध में भगाकर मारने की इच्छा से दुर्योधन के सम्मुख दौड़ा, उस राक्षस को राजा के ऊपर आता देख कर मारने के इच्छावाले युद्ध में दुर्मद आपके भी शूरवीर उसके सम्मुख दौड़े, यह सब वीर तालवृक्ष के समान धनुषोंको खैंचेहुए सिंहों के समान गर्जना करतेहुए उस अकेले के ऊपर दौड़े, और बाणों की वर्षा से उसको चारों ओरसे ऐसे ढकदिया जैसे कि शरदृऋतु में बलाहक नाम बादल अपनी जलधाराओं से पर्वत को ढक देते हैं, दण्ड से घायल हाथी के समान वह अत्यन्त घायल घटोत्कच गरुड़ के समान चारों ओर से आकाश को उछला, और भयानक शब्द करता हुआ दिशा, विदिशा समेत आकाश को शब्दायमान करके शरदृऋतु के बादलों के समान महाघोर गर्जना करनेलगा, इसके पीछे हे भरतर्षभ ! उस राक्षस के शब्द को सुनकर राजा युधिष्ठिर शत्रुविजयी भीमसेन से बोले, कि निश्चय वह घटोत्कच राक्षस धृतराष्ट्र के महारथी पुत्रों से लड़रहा है क्योंकि यह महाघोर शब्द की गर्जना उसीकी सुनी जाती है इस समय उस राक्षसके ऊपर मुझको बड़ी भारी विपत्ति जान पड़ती है और अत्यन्त कोपयुक्त भीष्मजी पाञ्चालदेशियों के मारने को युद्ध में प्रवृत्तहैं, उन पाञ्चालों की रक्षा के निमित्त अर्जुन ही शत्रुओं से लड़ताहै हे महाबाहो ! इस बात को जानकर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो काम वर्त्तमान हुए, अब चलकर बड़ी विपत्ति से घटोत्कच की रक्षा करो यह भाई के वचन सुनते ही शीघ्रता करनेवाला भीमसेन अपने सिंहनाद से सब राजाओं को डराता हुआ ऐसे महावेग से वहां पहुँचा जैसे कि पर्वकाल में समुद्र जाता है, और इसके पीछे ही सत्यधृति युद्ध में दुर्मद (सुचित्ती, श्रेणिमान, वसुदान) और महासमर्थ काशिराज का पुत्र यह सब गये, और अग्रवर्ती अभिमन्यु के साथ द्रौपदी के महारथी पुत्र (क्षत्रदेव, विक्रान्त, क्षत्रधर्मा) और नील नाम अनूपदेश का राजा अपनी सेना में नियत होकर चला यह सब शूर रथों के समूहों समेत घटोत्कच की रक्षा के लिये उसके चारों ओर को नियत हुए, इन सब वीरों के साथ महादुर्मद मतवाले छः सहस्र हाथी थे इन सब हाथियों की और रथों की गर्जना और ध्वनियों से पृथ्वी शब्दायमान होगई, उन आते हुओं के शब्द को सुनकर आपकी सेना भीमसेन के भय से महाव्याकुल होकर रूपान्तर दशा को प्राप्त हुई, हे महाराज! वह सेना घटोत्कच को छोड़कर चारोंओर को घूमनेलगी फिर सम्मुख लड़नेवाले आपके और दूसरों के शूरवीरों का नानाप्रकार के अस्त्र शस्त्रों समेत युद्ध होना प्रारम्भ हुआ और परस्पर सम्मुख दौड़ते हुए महारथियों ने बड़े प्रहार किये और अत्यन्त भयकारी घोर युद्ध होनेलगा, घोड़े हाथियों के साथ और पदाती रथियों के साथ युद्ध करने लगे उस युद्ध में परस्पर एक दूसरे को चाहते हुए सम्मुख गये उस समय अनेक हाथी, घोड़े, रथ, पैदलों के समूहों से उठी हुई बहुत भारी धूल उड़ी फिर उस काली और लालरंगवाली उग्र धूलि से संग्रामभूमि ऐसी आच्छादित होगई कि जिसमें अपने पराये की कुछ पहचान न होसकी, इस प्रकारके रोमहर्षण करनेवाले महाप्रलयकाल में पिता ने पुत्र को और पुत्र ने पिताको भी नहीं पहचाना, हे भरतर्षभ! उस युद्ध में शस्त्रों के और गर्जना करनेवालों के प्रेतों केसे महाघोर शब्द हुए, फिर वहां हाथी, घोड़े, रथ, पैदलों के रुधिर से नदी बह निकली उसमें शिरों के बाल ही कुमुदिनी समेत शाद्वल थे उस संग्राम में मनुष्यों के गिरते हुए शिरों के ऐसे महाशब्द सुनाई दिये जैसे कि गिरते हुए पत्थरों के शब्द होते हैं फिर बिना शिर के मनुष्य और अङ्गभङ्ग हाथी घोड़ों के शरीरों से पृथ्वी व्याप्त होगई और बड़े बड़े महारथी परस्पर में नानाप्रकार के शस्त्रों को प्रहार करते हुए एक एक के सम्मुख मारने को प्रवृत्त हुए, फिर सवारों से शोभित घोड़े घोड़ों से लड़ते लड़ते मरकर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पृथ्वीपर गिरे, और क्रोध से रक्तनेत्र मनुष्यों ने दूसरे मनुष्यों को पाकर एक ने दूसरे को छाती से छाती मिलाकर मारा, फिर पीछे के हाथियों ने बड़े बड़े शरीर मुखवाले शत्रु के हाथियों के सम्मुख होकर दांतों की नोकों से हाथियों को मारा, वह पताकाओं से शोभित हाथी रुधिर से पीड़ित होकर ऐसे संसक्त दिखाई देते थे जैसे कि बादलों में बिजली दीखती है, कोई हाथीदांतों के नोकों से घायल और तोमरों से फूटेहुए कुम्भ बादलों के समान गर्जते हुए सम्मुख दौड़े, कोई टूटी सूंड़वाले वा टूटे अङ्गवाले हाथी युद्ध में ऐसे गिरे जैसे कि टूटे पर्वत और कितने ही कुक्षियों में घायल हाथियों ने बहुत सा रुधिर ऐसा डाला जैसे कि पर्वत धातुओं को गेरते हैं, और बहुतेरे तोमरों से और नाराचों से घायल और पीड़ित होकर शब्द करते हुए ऐसे दौड़े जैसे कि विना शिखर के पहाड़ होते हैं, और अनेक क्रोधयुक्त मदान्ध हाथियों ने क्रोधित होकर हज़ारों रथ घोड़े और पदातियों को मर्दन किया, इसीप्रकार अश्वसवारों के प्रास और तोमरों से घायल घोड़े दिशाओं को व्याकुल करते हुए प्रत्येक मार्ग में सम्मुख हुए, कुलीन और शरीर त्यागनेवाले रथियों ने बड़ी सामर्थ्य से निर्भयतापूर्वक रथियों से युद्ध किया, हे राजन्! युद्धमें कुशल यश और स्वर्ग के अभिलाषी वीरों ने उस स्वयंवर के समान युद्ध में एक ने एकको परस्पर में हरण किया, इसीप्रकार से इस रोमहर्षण युद्ध के प्रारम्भ होने पर दुर्योधन की प्रबल सेना बहुधा भगाई गई ॥ ४२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि चतुर्णवतितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥

पंचानबे का अध्याय।

संजय बोले कि राजादुर्योधन अपनी सेनाका नाश हुआ देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर आप भी उस शत्रुजेता भीमसेन के सम्मुख दौड़ा, और इन्द्रधनुष के समान शब्दायमान धनुष से बाणों की वर्षा करके भीमसेन को ढक दिया, और क्रोध में भरकर अत्यन्त तीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र बाण से भीमसेन के धनुष को काटकर बड़ी शीघ्रतासे समय को पाकर उसने पर्वतों के भी तोड़नेवाले तीक्ष्ण बाण को धनुष पर चढ़ाया, हे राजन्! उस बाण से भीमसेन को छाती पर घायल किया, फिर उस तेजस्वी भीम ने होठों को चाटकर अपनी सुनहरी ध्वजा को पकड़ लिया उस समय घटोत्कच भीमसेन को व्याकुल देख कर, क्रोधरूपी अग्नि से ज्वलित हुआ और महाक्रोधयुक्त अभिमन्यु आदि महारथी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राजा को पुकारते हुए सम्मुख दौड़े अत्यन्त क्रोधयुक्त उन लोगों को आताहुआ देखकर, भारद्वाज द्रोणाचार्यजी आपके महारथियों से बोले कि तुम्हारा कल्याण हो तुम शीघ्र जाओ और बड़े दुःखसमुद्र में पड़े हुए राजा को चारों ओर से रक्षा करो, यह महाकोपयुक्त पाण्डवोंके धनुषधारी महारथी अनेकप्रकार के शस्त्रोंको चलाते और शब्दों की गर्जनाओं से राजाओं को भयभीत करते सब भीमसेन को आगे करके दुर्योधन के सम्मुख गये हैं, द्रोणाचार्य के इस वचन को सुनकर सोमदत्त को अग्रगामी करके वह सब आपके शूरवीर पाण्डवों के सम्मुख पहुँचे (कृपाचार्य, भूरिश्रवा, शल्य, अश्वत्थामा, विविंशति, चित्रसेन, विकर्ण, जयद्रथ, वृहद्बल, और बड़े धनुषधारी राजा अवन्ती ने चारों ओर से दुर्योधन को रक्षित किया, और परस्पर मारने की इच्छासे उन पाण्डव और धृतराष्ट्रके पुत्रों ने बीस बीस चरण चलकर प्रहारों को किया, फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य ने बड़े धनुष को लेकर छब्बीस बाणोंसे भीमसेनको पीड़ितकरके अनेक अन्य बाणोंसे ऐसे शीघ्र ढक दिया, जैसे कि जल की धारों से बलाहक नाम बादल पर्वत को ढक देते हैं, बड़े धनुषधारी महाबली शीघ्रतायुक्त भीमसेन ने शिलीमुख नाम दश बाणों से उनको घायल किया फिर वह वृद्ध द्रोणाचार्य अत्यन्त घायल और पीड़ित होकर अकस्मात् रथ में बैठगये गुरु को पीड्यमान देखकर आप राजा दुर्योधन और अश्वत्थामा बड़े क्रोधित होके भीमसेन के सम्मुख गये, फिर महाबली भीमसेन उन काल और मृत्यु के समान दोनों को आता हुआ देखकर, शीघ्र ही रथ से कूद यमदण्ड के समान अपनी भारी गदा को लेकर युद्ध में पर्वताकार निश्चल होकर खड़ा हुआ फिर शिखरधारी पर्वतके समान उस उठीहुई गदा को देखकर दुर्योधन और अश्वत्थामा दोनों एक साथ ही उसके सम्मुख दौड़े, भीमसेन भी उन तीव्र दौड़नेवालों को सम्मुख आता देखकर बड़ी शीघ्रता से उन पर दौड़ा, फिर उस क्रोधयुक्त भयानक भीमसेन को आता हुआ देखकर कौरवों के महारथी यह दोनों भी शीघ्रता से दौड़े और सबोंने आकर अनेक प्रकार के शस्त्रों की वर्षा से भीमसेन की छाती को घायल किया, और सब चारोंओर से पीड़ित करनेलगे उस पीड़ित और घिरेहुए महारथी को देखकर, पाण्डवों के महारथी अभिमन्यु आदि अपने दुस्त्यज प्राणों को त्याग करते हुए भीमसेन को चाहते उनके सम्मुख दौड़े, और भीमसेन का परममित्र शूरवीर नीले बादल के समान क्रोधरूप अनूप देश का नील नाम राजा अश्वत्थामा के सम्मुख गया,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वह बड़ा धनुषधारी सदैव द्रोणपुत्र अश्वत्थामा से ईर्षा करता था इसलिये उसने-बड़े धनुष को चढ़ाके बाणों की वर्षा से अश्वत्थामा को घायल किया, हे महा-राज! पूर्वसमय में जैसे इन्द्र ने दुर्जय देवसन्तापी तीनोंलोकों को भयकारी विप्रचित्ती नाम दैत्य को घायल किया उसीप्रकार राजा नील ने अपने अच्छे छोड़े हुए बाणों से अश्वत्थामा को घायल किया, फिर जारीहुए रुधिरसे पीड़ित महा-क्रोध युक्त अश्वत्थामा ने इन्द्रधनुष के समान धनुष को चढ़ाके बड़ी बुद्धिमानी से राजा नीलके मारने की इच्छा की और बड़े तीक्ष्ण भल्लों से चारों घोड़ों को मार कर ध्वजा को गिराया और एक भल्ल से राजा नील को छाती पर घायल किया, वह फिर अत्यन्त घायल और पीड़ित होकर रथ के भीतर बैठगया उस बादलों के समान राजा नील को अचेत देखकर, अपनी जाति के राक्षसों से युक्त महाक्रोधित होकर घटोत्कच बड़े वेग से युद्ध में शोभायमान अश्वत्थामा के सम्मुख गया, और इसी प्रकार युद्ध में दुर्मद उसके साथी राक्षस भी उसके सम्मुख दौड़े उस भय-कारीरूप राक्षस को आता हुआ देखकर, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ने भी बड़ी शीघ्रता से सम्मुख दौड़कर बड़े क्रोध से उन राक्षसों को मारा, राक्षस के आगे चलनेवाले जो राक्षस सम्मुख हुए थे उनको अश्वत्थामा के बाणों से भागता हुआ देखकर, भीमसेन का पुत्र बड़ा शरीर घटोत्कच अत्यन्त क्रोधित हुआ और युद्ध में अश्व-त्थामा को अचेत करके अपनी मायाको प्रकट करता हुआ, उस माया से भागे हुए आपके शूरवीर परस्पर में देखकर, महादुःखी रुधिरयुक्त शरीरों से पृथ्वीपर चेष्टा करने लगे, द्रोणाचार्य, दुर्योधन, शल्य और अश्वत्थामा आदि जो बड़े धनुषधारी कौरवीय शूरवीर थे उन सबको राजा लोगों को भी रथ, सारथी, हाथी घोड़ों समेत उसने पृथ्वीपर गिराया, हे राजन्! उस आपकी सेना के डेरों की ओर भागता हुआ देखकर मैंने और देवव्रत भीष्मजीने बहुत बहुत पुकारा कि डरो मत यह राक्षसी माया घटोत्कचकी पैदा कीहुई है इसको सुनकर भी वह महा-अचेत होकर नियत नहीं हुए उन भयभीतों ने हम दोनों के कहने पर भी वि-श्वास नहीं किया उस सेना को भागा हुआ देखकर विजय पानेवाले पाण्डवोंने घटोत्कचसमेत मिलकर बड़े सिंहनादों को किया और शंख दुन्दुभी भी चारोंओर से अच्छीरीति से बजाईं, इस रीति से सायंकाल को सूर्यास्त के समय दुष्टात्मा घटोत्कच की माया से आपकी सब सेना चारोंओर को भागी ॥ ५० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि पञ्चनवतितमोऽध्यायः ॥ ९५ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छानबे का अध्याय।

संजय बोले कि, हे महाराज ! उस बड़े शब्द के होने पर राजा दुर्योधन ने भीष्मजी के समीप जाके बड़ी नम्रतापूर्वक दण्डवत् करके, घटोत्कच की विजय और अपनी पराजय होने के मुख्य वृत्तान्त को बड़ी बड़ी श्वासा लेकर वर्णन किया और पितामह से कहने लगा, कि हे प्रभो ! मैंने वासुदेवजी के समान आप को अपना रक्षक समझकर बड़ी भयकारी शत्रुता पाण्डवों से करी है हे शत्रुहन्तः ! जो मेरी ग्यारह अक्षौहिणी प्रसिद्ध हैं वह सब मुझसमेत आपकी आज्ञा में नियत हैं, हे भरतर्षभ ! ऐसा योग होने पर भी मैं भीमसेन आदि पाण्डव जिनका कि घटोत्कच रक्षक है उनसे पराजय हुआ, वह भीमसेन मेरे अङ्गों को ऐसा जला-रहा है जैसे सूखे वृक्ष को अग्नि जलाता है, हे शत्रुहन्तः, पितामह ! आपसरीखे दुर्जय पुरुषकी रक्षा में होकर आपकी कृपा से उस नीचराक्षस को मैं अपने हाथ से मारा चाहताहूं आप मेरे मनोरथ को पूरा करने को योग्य हो, दुर्योधन के इस वचन को सुनकर शान्तनव भीष्मजी यह वचन बोले, हे कौरवेन्द्र ! जो मैं वचन कहताहूं उसको सुनकर उसीके अनुसार तुमको भी करना योग्य है, हे शत्रुहन्तः, पुत्र ! युद्ध में सब प्रकार से अपना शरीर रक्षा के योग्य है हे निष्पाप ! तुमको सदैव धर्मराज से युद्ध करना उचित है, और अर्जुन, नकुल, सहदेव अथवा भीमसेन के साथ युद्ध करना उचितहै राजा राजधर्म को आगे करके किसी राजा के सम्मुख होता है, मैं और द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कृतवर्मा, यादव, शल्य, भूरिश्रवा, महारथी विकर्ण और तेरे वह सब भाई जिनमें अग्रगण्य दुश्शासन है, यह सब तेरे निमित्त उस महाबली राक्षस से लड़ेंगे उस रुद्ररूप राक्षसों के राजा से जो तेरी बड़ी शत्रुता है तो उस दुर्बुद्धि राक्षस के युद्ध के लिये भगदत्त को भेजो यह कहकर राजा भगदत्त से बोले कि हे महाराज ! तुम बड़ी शीघ्रता से उस दुर्मद घटोत्कच के सम्मुख जाओ, और सब राजाओं के देखते हुए उस कठिनकर्मी राक्षस को ऐसे हटाओ जैसे कि पूर्वसमय में इन्द्र ने तारक को हटाया था, हे शत्रुहन्तः ! तुम्हारे पास दिव्य अस्त्र हैं और महापराक्रमी हो और पूर्वसमय में भी तुमने बहुत से असुरों से सम्मुखता करी है, हे राजेन्द्र ! तुम इस युद्ध में उस राक्षस से युद्ध करने के योग्य हो, इससे हे राजन् ! तुम अपनी बड़ी सेना के बल से राक्षस को मारो, यह भीष्म-जी के वचनों को सुनकर भगदत्त बड़े सिंहनादपूर्वक शत्रुओं के सम्मुख

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गया और पाण्डवों के भी आगे लिखे हुए महाबली शूरमा उस क्रोधयुक्त बादल के समान गर्जते भगदत्त को देखकर सम्मुख आकर वर्त्तमान हुए भीमसेन, अभिमन्यु, घटोत्कच, द्रौपदी के पुत्र, सत्यधृति, क्षत्रदेव, चेदि का राजा, वसुदान, दशार्णाधिपति सुप्रतीक समेत भगदत्त के सम्मुख गये, और भगदत्त के साथ पाण्डवों का खूब युद्ध हुआ वह युद्ध बड़ा भयानक और यमराज के पुर का वृद्धिकारक था, रथियों ने बड़े बड़े भयानक बाणों से रथी और हाथियों को मारा और बड़े बड़े मदोन्मत्त हाथियों को हाथीवानों ने संग्रामभूमि में ले जाकर बड़ी निर्भयता से एक एक के पीछे दौड़ाया फिर हाथियों ने परस्पर में अपने अपने तीक्ष्ण दांतों से घायल किया, चमर अपीड़ और प्रासधारी घोड़ों के सवार नियत हुए और बड़ी शीघ्रता से एक दूसरे पर दौड़े, तब हजारों पदाती शत्रुओं के बरछी आदि शस्त्रों से मरे हुए पृथ्वी पर गिरे, और रथियों के शायकों से अन्य रथी घायल होकर गिरे फिर युद्ध में गिरानेवाले वीरों ने सिंहनाद किये, इस प्रकार के रोमहर्षण युद्ध के जारी होने पर बड़ा धनुषधारी भगदत्त बड़ेभारी सप्तांग मदस्रावी गजेन्द्र की सवारी के द्वारा भीमसेन के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि जल के झिरनेवाले बड़े पर्वत के साथ कोई जाती हो, फिर उसने उस सुप्रतीक हाथी के शिरपर सवार होकर हज़ारों बाणों को ऐसे वर्षाया जैसे कि ऐरावत हाथी पर चढ़ा हुआ इन्द्र जल की धाराओं को वर्षाता है, उस राजा ने बाणों से भीमसेन को ऐसा घायल किया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल जल की धाराओं से पर्वत को घायल करता है, फिर बड़े धनुषधारी भीमसेन ने अत्यन्त क्रोधित होकर बाणों की वर्षा से हज़ारों पादरक्षकों को मारा फिर बड़े प्रतापवान् भगदत्त ने उन पाद-रक्षकों को मरा हुआ देखकर बड़े क्रोध से अपने गजेन्द्र को भीमसेन के रथ पर पेला, जैसे कि तीर से चलाया हुआ बाण जाता है उसीप्रकार उसका पेला हुआ हाथी भी शत्रुजित भीमसेन के ऊपर बड़ी शीघ्रगति से दौड़ा, उस आते हुए हाथी को देखकर, भीमसेन के आगे चलनेवाले अभिमन्यु, पांचों केकय, द्रौपदी के पांचों पुत्र, राजा दुश्शार्ण, क्षत्रदेव, चेदि का राजा, चित्रकेतु इन सबने क्रोधयुक्त होकर दिव्य अस्त्रों के द्वारा, उस अकेले हाथी को चारों ओर से घेर लिया वह महागजेन्द्र दश बाणों से घायल होकर रुधिर को डालता हुआ ऐसा महाशोभायमान हुआ, जैसे कि धातुओं से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चित्रित गिरिराज पर्वत शोभित होता है, फिर पर्वत के समान हाथी पर सवार राजा दुश्शार्ण भी भगदत्त के हाथी पर दौड़ा, तब उस हाथियों के राजा सुप्रतीक ने उस आते हुए हाथी को ऐसे रोका जैसे कि किनारा समुद्र को रोकता है, महात्मा राजा दुश्शार्ण के हाथी को रुका हुआ देखकर, पाण्डवों की सेना ने साधु साधु करके प्रशंसा करी इसके पीछे बड़े क्रोधयुक्त राजा प्राग्ज्योतिष ने चौदह तोमर उस हाथी के ऊपर फेंके वह सब तोमर स्वर्णमयी कवच को भेदन करके उसके शरीर में ऐसे प्रवेश कर गये जैसे सर्प बामी में प्रवेश करता है, फिर वह महाघायल और पीड्यमान मदोन्मत्त हाथी बड़े भयानक शब्द को करके प्रथम तो सम्मुख हुआ फिर बड़ी शीघ्रता से अपनी सेना को दबाता कुचलता हुआ महाव्याकुल होकर ऐसा दौड़ा जैसे कि वायु अपने बल से वृक्षों को गेरता हुआ जाता है, उस हाथी के पराजय होने पर पाण्डवों के महारथियों ने, बड़े उच्चस्वर से सिंहनाद किया और सब युद्ध के निमित्त सम्मुख नियत हुए इसके पीछे भीमसेन को आगे करके नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रों को फेंकते मारते भगदत्त के सम्मुख गये हे राजन्! उन अत्यन्त क्रोधयुक्त आते हुये असह्य लोगों के भयानक शब्दों को सुनकर क्रोध से निर्भय बड़े धनुषधारी भगदत्त ने अपने हाथी को चलायमान किया, फिर अंकुशरूपी उंगली से पीड्यमान हाथी उस युद्ध में संवर्त्तक अग्नि के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर हज़ारों रथसमूहों को हाथी घोड़े सवार और पदातियोंसमेत मारता, तोड़ता, कुचलता हुआ इधर उधर को दौड़ा उस हाथी से घायल प्रलयाग्नि में नियत होने के समान क्रोधयुक्त भगदत्त के हाथ से पीड़ित अपनी सेना को देखकर, बड़े क्रोध में भरा हुआ घटोत्कच भगदत्त के सम्मुख गया हे राजन्! उस विकटरूप क्रोध से लालनेत्र पराक्रमी घटोत्कच ने अपने रूप को भयानक करके पर्वतों के भी तोड़नेवाले बड़े उग्र शूल को हाथ में लिया, और हाथी के मारने की इच्छा से अकस्मात् घुमाकर फेंका वह शूल चारों ओर से अग्निकणों करके व्याप्त था उस अकस्मात् गिरते हुए शूल को देखकर राजा प्राग्ज्योतिष भगदत्त ने बड़े सुन्दर तीक्ष्ण भयानक अर्द्धचन्द्रनाम बाणको फेंककर उस शूलको काटा तब वह सुनहरी शूल दो खण्ड होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे कि इन्द्र का वज्र आकाश से गिरता है हे राजन्! शूलको टूटा और गिराहुआ देखकर भगदत्त बड़ी तीक्ष्ण सुनहरी बर्छीको लेकर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राक्षसपर फेंककर और 'तिष्ठ तिष्ठ' इस वचन को कहने लगा, उस आकाश से गिरती हुई वज्र के समान बरछी को देखकर उस राक्षस ने बड़ी शीघ्रता से उछलकर पकड़ा और महागर्जना को किया और शीघ्र ही उस बरछी को घोटू पर रखकर राजा के देखते ही देखते तोड़डाला यह सबको आश्चर्य सा हुआ पराक्रमी राक्षस से किये हुए उस कर्म को देखकर आकाश में गन्धर्वों समेत देवता और मुनि भी आश्चर्य करने लगे, हे महाराज! जिनमें भीमसेन अग्रगणनीय हैं उन पाण्डव लोगों ने धन्य धन्य शब्दों से पृथ्वी को शब्दायमान किया, फिर बड़ा धनुषधारी प्रतापवान् भगदत्त पाण्डवों के उस अत्यन्त आनन्दकारी शब्द को सुनकर न सहसका, और इन्द्र के वज्र के समान बड़े धनुष को चढ़ाकर उसने पाण्डवों के महारथियों को घुड़का, फिर निर्मल स्वच्छ प्रकाशमान नाराचों को छोड़ते हुए भगदत्त ने एक बाण से भीमसेन को और नौ बाणों से राक्षस को घायल करके तीन बाण से अभिमन्यु को पांच से केकय लोगों को व्याकुल किया और फिर अच्छे प्रकार से खैंचे और झुके ग्रन्थिवाले बाण से, क्षत्रदेव की दक्षिण भुजा को ऐसा घायल किया कि वह भुजा धनुष समेत अकस्मात् पृथ्वीपर गिरपड़ी, फिर पांच बाणों से द्रौपदी के पुत्रों को घायल करके बड़े क्रोध से भीमसेन के घोड़ों को मारा, फिर विशिख नाम तीन बाणों से सिंह के चिह्न रखनेवाली उसकी ध्वजा को काटा और दूसरे तीन बाणों से उसके सारथी को घायल किया, हे भरतर्षभ! युद्ध में भगदत्त से अत्यन्त घायल और पीड़ित वह विशोक सारथी रथ के भीतर बैठगया, इसके अनन्तर रथियों में श्रेष्ठ महाबाहु भीमसेन विरथ होकर बड़ी शीघ्रता से गदा को हाथ में लेकर उस रथ से कूदा, हे राजन्! उस पर्वत के समान उठाई हुई गदा को देखकर आपके शूरों में बड़ा भय उत्पन्न हुआ, इसके पीछे श्रीकृष्ण भगवान् को सारथी रखनेवाला पाण्डव अर्जुन चारों ओर से शत्रुओं को मारता हुआ वहां आ पहुँचा जहां कि वह महाबली पुरुषोत्तम पिता, पुत्र भीमसेन और घटोत्कच प्राग्ज्योतिष के राजा भगदत्त से युद्ध कररहे थे, हे भरतर्षभ! वह अर्जुन युद्ध करते हुए महारथी भाइयों को देखकर अत्यन्त क्रोध से बाणों की वर्षा करके युद्ध में प्रवृत्त हुआ, उसके पीछे महारथी राजा दुर्योधन ने बड़ी शीघ्रता से रथ हाथी घोड़ों से संयुक्त सेनाको भेजा, फिर श्वेत घोड़े रखनेवाला पाण्डव अर्जुन बड़े वेगसे उस अकस्मात् आनेवाली कौरवी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महासेना के सम्मुख गया, और राजा भगदत्त उस अपने हाथी के द्वारा पाण्डवों की सेना को मर्दन करता हुआ युधिष्ठिर के सम्मुख गया, इसके पीछे हे राजन्, धृतराष्ट्र ! वहां भगदत्त का और पाण्डवों का युद्ध पाञ्चालदेशीय और केकयदेशीय लोगों समेत बड़े बड़े अस्त्र शस्त्रों के द्वारा महाभयानक हुआ, फिर भीमसेन ने भी उसी युद्ध में उन केशव और अर्जुन दोनों महात्माओं से इरावान् के मारेजाने का जैसा वृत्तान्त हुआ सब यथार्थ वर्णन किया ॥ ८६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि षण्णवतितमोऽध्यायः ॥ ९६ ॥

सत्तानबे का अध्याय ।

संजय बोले कि, हे राजन् ! उस इरावान नाम पुत्र को मरा हुआ सुनकर बड़े खेद और शोक से भरा, सर्प की समान श्वासा लेता हुआ अर्जुन वासुदेव जी से यह वचन बोला कि परम चतुर बुद्धिमान् सत्यवक्ता विदुरजी ने पूर्व समय में बड़े निश्चय से इस कौरव और पाण्डवों के महाघोर नाश को देखा था इसी कारण उन्हों ने राजा धृतराष्ट्र से निषेध किया था, हे मधुसूदनजी ! इसके विशेष बहुत से वीर लोग युद्ध में जैसे कौरवों के हाथ से मारे गये उसी प्रकार युद्ध में मेरे हाथसे भी अनेक कौरव मारे गये, हे नरोत्तम ! यह सब युद्धकर्म केवल धन ही के निमित्त किये जाते हैं ऐसे धन आदि को धिक्कार है जिसके कारण ऐसा जातिवालों का नाश किया जाता है, इस जाति के मरने से तो निर्धन ही मरना श्रेष्ठ है हे श्रीकृष्णजी ! हम जातिवालों को मारकर क्या फल पावेंगे ? दुर्योधन और सौबल के पुत्र शकुनी के अपराध अथवा करण की बुरी सलाहों से क्षत्रिय लोगों का नाश हुआ जाता है, हे महाबाहो, श्रीकृष्णजी ! अब मैं अच्छीरीति से जानता हूं कि राजा युधिष्ठिरने बड़ा अच्छा काम किया कि दुर्योधन से आधे राज्य वा पांच ही गांवों की अभिलाषा चाही और उस निर्बुद्धि ने वह भी उनकी अभिलाषा पूरी नहीं की मैं इस युद्धभूमि में सोतेहुए बड़े बड़े शूरवीर क्षत्रियों को देखकर, अपने को अत्यन्त बुरा कहकर क्षत्रिय की जीविका को अत्यन्त धिक्कारी देता हूं, हे मधुसूदन ! जो मैं ज्ञातिवालों से युद्ध करना न चाहूं तो सब क्षत्रिय लोग मुझको युद्ध में असमर्थ समझेंगे इस कारण हे मधुसूदन ! आप घोड़ों को शीघ्र ही दुर्योधन की सेना में ले चलो, अब मैं भी अपनी भुजाओं से इस युद्धरूपी महासमुद्र को शीघ्र ही तरूंगा क्योंकि यह समय किसी स्थान पर भी असमर्थ होने का वर्त्तमान नहीं है, इस

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रकार के अर्जुन के वचनों को सुनकर शत्रुसंहारी केशवजी ने उन श्वेतरूप वायु के समान तीव्रगामी घोड़ों को हांका, इसके पीछे हे राजन्! आपकीसेना में ऐसा महाशब्द हुआ जैसे कि पर्वत के समय वायु से उठे हुए वेगवान् समुद्र का घोर शब्द होता है, हे महाराज! अपराह्न के समय भीष्मजी के और पाण्डवलोगों के युद्ध में बादल के समान शब्द हुए इसके पीछे हे राजन्! आपके पुत्र युद्ध में द्रोणाचार्य को रक्षित करके भीमसेन के सम्मुख ऐसे गये जैसे इन्द्र को रक्षित करके अष्ट वसु जाते हैं, फिर शन्तनु के पुत्र भीष्मजी और रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य, भगदत्त, सुशर्मा यह सब अर्जुन के सम्मुख गये और (कृतवर्मा वा वाह्लीक) सात्यकी के सम्मुख हुए और राजा अम्बष्टक अभिमन्यु के सम्मुख वर्त्तमान हुआ, इनके विशेष शेष बचे हुए शूरवीर बचे हुए महारथियों के सम्मुख गये फिर महाभयानक युद्ध प्रारम्भ हुआ, हे राजन्! फिर भीमसेन आपके पुत्रों को देखकर ऐसा क्रोधित होकर अग्निरूप हुआ जैसे कि हव्यको पाकर अग्नि प्रचण्ड होते हैं, फिर आपके पुत्रोंने बाणोंसे भीमसेन को ऐसा ढक दिया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल पर्वत को ढक देते हैं, हे राजन्! आपके पुत्रों से बहुत ढकेहुए होठों को चाबते शार्दूल के समान गर्वित महाबली भीमसेन ने, अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से व्यूढोरस्क को ऐसा गिराया कि वह मरगया, फिर दूसरे पीले तीक्ष्ण भल्ल से कुण्डली को भी ऐसे गिराया जैसे कि छोटे मृग को सिंह गिराता है, इसके पीछे हे राजन्! बड़ी शीघ्रता से भीमसेन ने अत्यन्त तीक्ष्ण शिलीमुख बाणों को हाथों में लिया और आपके पुत्रोंपर छोड़े उन भीमसेन के चलाये हुए बाणों ने आपके महारथी अनाधृष्ट, कुण्डभेद, वैराट, दीर्घलोचन, दीर्घबाहु, सुबाहु, कनकध्वज पुत्रों को पृथ्वी पर गिराया और सब वीर गिरकर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि वसन्तऋतु में गिरे और पड़े हुए लाललाल फूल होते हैं, इसके पीछे आपके शेष बचे हुए पुत्र भीमसेन को काल के समान जानकर युद्धसे भागगये, फिर द्रोणाचार्य ने आपके पुत्रों के जलानेवाले भीमसेन को बाणों की वर्षा करके चारों ओर से ऐसा ढक दिया जैसे कि बादल जल की धाराओं से पर्वत को ढकता है, वहां हमने कुन्ती के पुत्र भीमसेन के पराक्रम को देखा जिसने द्रोणाचार्य के रोंकने पै भी आपके पुत्रों को मारा, हे राजन्! जैसे कि आकाश से गिरेहुए जलको गो वृषभ जंगल में सहते हैं उसीप्रकार द्रोणाचार्य के बाणोंको भीमसेनने सहा, फिर वहां भीमसेन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ने दूसरा अद्भुत कर्म किया कि आपके बेटों को मारकर द्रोणाचार्य को भी रोंका, अर्जुनका बड़ाभाई आपके वीरपुत्रों को महापीड़ा देनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि मृगोंके मध्य में महाबली व्याघ्र पीड़ा देनेवाला होताहै जैसे कि भेड़िया पशुओं के बीच में नियत होकर पशुओंको व्याकुल और चलायमान करताहै इसीप्रकार भीमसेन ने युद्ध में आपके पुत्रों को भगादिया, फिर भीष्मजी भगदत्त और महारथी कृपाचार्य ने युद्ध में वेगवान् अर्जुन को धारण किया अर्थात् उसके बाणों को सहा, उस अतिरथी ने युद्ध में उन सबके अस्त्रों को अपने अस्त्रों से रोंककर आपकी सेना के बड़े बड़े वीरों को मारा, और अभिमन्यु ने भी रथियों में श्रेष्ठ संसार में विख्यात राजा अम्बष्ठ को शायकों से विरथ करदिया, फिर उस यशस्वी अभिमन्यु से विरथ हुए राजा अम्बष्ठ ने शीघ्र ही रथ से कूद महात्मा अभिमन्यु के ऊपर अपने खड्ग को फेंका और बड़ी शीघ्रता से महाबली कृत-वर्मा के रथ पर सवार हुआ, फिर युद्ध में महाकुशल शत्रुहन्ता अभिमन्यु ने उस गिरते हुए खड्ग को अपनी तीव्रता से निष्फल किया, तब अभिमन्यु से निष्फल किये हुए खड्ग को देखकर सेना के लोगों ने साधु साधु शब्द उच्चा-रण किया और जैसे कि धृष्टद्युम्न आदि वीरलोग आपकी सेना से लड़े उसी प्रकार आपके सब वीर पुरुष भी पाण्डवों की सेना से लड़े, हे भरतर्षभ ! वहां परस्पर में मारों को मारते और कठिन कर्मों को करते हुए आपके और पाण्डवों के वीरों के महाशब्द हुए, युद्ध में प्रशंसनीय वीर लोग परस्पर में बालों को खैंचकर नख, दांत, मुष्टिका और जांघों से भी युद्ध करनेवाले हुए और अवकाश पाकर तमाचों तलवारों और अच्छे नियत भुजों से बहुतोंने बहुतों को यमपुरी में भेजा, उस युद्ध में पिता ने पुत्र को भी मारा अर्थात् सब मनुष्य सर्वाङ्गरहित व्याकुल हो होकर भी युद्ध को करते हुए, हे राजन्, धृतराष्ट्र ! युद्ध में मरे हुए वा घायल शूरवीरों के सुनहरी पृष्ठवाले सुन्दर धनुष और तूणीर अथवा सुन-हरी रुपहली पुङ्खवाले छोड़े हुए तीक्ष्णधार बाण तेल से शुद्ध किये हुए सर्पों के समान शोभायमान हुए, हाथीदांत की मूठवाले सुवर्ण से जटित खड्ग, धनुष, ढाल, पराश, दुधारे खड्ग, शक्ति, कवच, भारी मुशल, परिघ, पट्टिश, भिन्दि-पाल अनेक प्रकार के गिरे हुए धनुष और अनेक प्रकार की भूल चमर पङ्खे वा अनेक प्रकार के शस्त्रधारी महारथी और मरे मनुष्य भी जीवते से दिखाई देते हैं, हे राजन् ! गदाओं से मथे हुए अङ्गोंसमेत मुशलों से टूटे शिर घायल हाथी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घोड़े और रथ पृथ्वी पर शयन कर रहे हैं अर्थात् बिछे हुए हैं, उन हाथी, घोड़े, रथ और मनुष्यों से ढकी हुई पृथ्वी सब ओर से ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि पर्वतों से शोभित होती है, युद्धभूमि में गिरी हुई बरछी और दुधारे खड्ग, बाण, तोमर, पट्टिश, पराश, भल्ल, लोहे के फरसे, परिघ, भिन्दिपाल, शतघ्नी और शस्त्रों से कटे हुए शरीरों से पृथ्वी सविस्तर विदित होती है अल्पशब्द के वा दीर्घशब्द के मृतक मनुष्यों के समूहों से व्याप्त हुई पृथ्वी महाशोभित विदित हुई, तलत्र, केयूररक्षक और चन्दनचर्चित भुजा हाथियों की सूंड़ के समान कटी हुई जङ्घा और चूड़ामणि बँधे हुए उत्तम शूरों के कुण्डलधारी शिरों से पृथ्वी अपूर्व ही शोभा देरही है, और हे भरतवंशिन्! सुवर्ण के फैले हुए रुधिर से भरे कवचों से पृथ्वी ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि निर्धूम अग्नियों से शोभित होती है, टूटे धनुष तरकस और फैले हुए सुनहरी पुंखवाले बाणों से और चारों ओर से घण्टों से युक्त टूटे हुए रथों से वा बाणों से मारे हुए रुधिर में भरे जिनकी जिह्वा मुख से बाहर निकली थी उन घोड़ों से वा खींची हुई पताकाओं से और उपसङ्गिक ध्वजाओं से और वीरों की खोपड़ियों से वा बिखरी हुई चोटियों से और सूंड़ टूटे हुए हाथियों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि नानाप्रकार के आभूषणों से अलंकृत स्त्री शोभित होती है, वहां बहुत पीड़ित सूंड़ों से शब्द करते हुए पराशों समेत अन्य हाथियों से वह युद्धभूमि ऐसी शोभित हुई जैसे कि चलते हुए पहाड़ों से शोभायमान होती है, नानाप्रकार के रङ्गवाले हाथियों के कम्बलों से वे परश, तोमरों से और वैडूर्यमणिवाले शुभ अंकुशों से वा चारों ओर से गिरे हुए गजेन्द्रों के घण्टों से और चित्र विचित्र झूल और ग्रीवाओं के भूषणों से वा हाथी के बांधनेवाली सुवर्ण की रस्सियों से यन्त्रों से बाजूबन्दों समेत गिरी हुई भुजाओं से वा शुद्ध तीक्ष्ण परशों से और निर्मल दुधारा खड्गों से विचित्र बाणों की वर्षा से जोकि रांक नाम मृग के रोमों से बने हुए अत्यन्त मृदु थे वा राजाओं की अमूल्य चूड़ामणियों से वा टूटे छत्र चामर व्यजन और चन्द्रकमल के समान मुखों के प्रकाशों से और हे महाराज! वीरों की अच्छे प्रकार से रची हुई डाढ़ी मूछ से पृथ्वी ऐसी होगई जैसे कि नक्षत्रसमूहों से प्रकाशमान आकाश होता है, हे भरतर्षभ! इसप्रकार आपकी और उन्हीं की यह दोनों सेना युद्ध में परस्पर सम्मुख होकर गर्दमर्द होगईं, उन सेनाओं के थकने और तिर्रे बिर्रे होने और मर्दन होने पर, रात्रि-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होगई इसके पीछे हमने चलनेवालों को नहीं देखा फिर कौरव पाण्डवों ने सेनाओं का विश्राम किया, रात्रि के प्रारम्भ होजाने पर कौरव और पाण्डव एक साथही सदैव के समान अपने अपने डेरों में नियत हुए ॥ ७६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सप्तनवतितमोऽध्यायः ॥ ९७ ॥

अट्ठानबे का अध्याय ।

सातवें दिन के युद्ध का प्रारम्भ ।

संजय बोले कि इसके पीछे राजा दुर्योधन और सुबल का पुत्र शकुनि, दुश्शासन और दुर्जय कर्ण इन सबने मिलकर सलाह करी कि पाण्डवों को सेना समेत कैसे विजय करना चाहिये, यह सुनकर राजा दुर्योधन महाबली शकुनि और कर्ण को सम्मुख करके उन सब मन्त्रियों से बोला कि द्रोणाचार्य, भीष्म, कृपाचार्य, शल्य, भूरिश्रवा यह सब मिले हुए से पाण्डवों को युद्ध में पीड़ा नहीं देते हैं इसका कारण मैं नहीं जानता हूं, वह सब विना घायल हुए ही मेरी सेना का नाश करे डालते हैं, हे कर्ण ! मैं युद्ध में अपनी सेना और शस्त्रों से नाशयुक्त होकर देवताओं से भी अजेय शूरवीर पाण्डवों से निरादर कियागया हूं इस सन्देह में पड़ा हुआ मैं युद्ध को कैसे करूंगा हे राजन् ! यह सुनकर कर्ण ने कहा, कि हे भरतर्षभ! चिन्ता मत करो मैं तुम्हारे हित को करूंगा, शंतनु के पुत्र भीष्मजी शीघ्रही युद्ध से निवृत्त होजायँ, युद्ध से भीष्मजी के हटजाने और शस्त्रों से रहित होजाने पर मैं सब सोमकों समेत पाण्डवों को भीष्मजी के देखते हुए ही मारूंगा हे राजन् ! यह मैं तेरे सम्मुख सत्यसंकल्पपूर्वक प्रतिज्ञा को करता हूं और शपथ से कहता हूं कि वह भीष्म निश्चय करके पाण्डवों पर दया करता है, इससे भीष्मजी युद्ध में उन महारथियों के विजय करने को असमर्थ हैं, यह भीष्म युद्ध में महाअहंकरी और युद्ध ही को सदैव प्रिय मानता है, हे तात ! वह सम्मुख आये हुए पाण्डवों को युद्ध में कैसे विजय करेगा सो तुम शीघ्र ही यहां से भीष्म के डेरे में जाकर, उन वृद्ध गुरु को नमस्कार करके शस्त्रों के त्यागने के लिये कहो हे राजन् ! भीष्मजी के शस्त्र त्यागने पर युद्ध में सेना और मित्रोंसमेत पाण्डवों को मुझ अकेले के ही हाथ से मरा हुआ देखोगे कर्ण के ऐसे वचन सुनकर आपका पुत्र दुर्योधन, अपने भाई दुश्शासन से बोला कि यात्रा का सब सामान सब प्रकार से तैयार हो, ऐसा दुश्शासन को कह दुर्योधन कर्ण से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बोला, कि हे शत्रुओंके विजय करनेवाले! मैं पुरुषोत्तम भीष्म को युद्धके लिये समझाकर और प्रणाम करके शीघ्र ही तेरे सम्मुख आऊंगा, उसकेपीछे भीष्म जी के हटजाने पर तुम युद्ध में प्रहार करोगे, हे राजन्! ऐसा कहकर आपका पुत्र अपने भाइयों समेत ऐसी शीघ्रता से चला जैसे कि देवताओं समेत इन्द्र जाता है, इसके पीछे राजाओं में श्रेष्ठ सिंह समान पराक्रमी दुर्योधन को, भाई दुश्शासन ने शीघ्र ही घोड़े पर सवार किया हे धृतराष्ट्र! बाजूबन्द और मुकुट हस्त भूषणादि से अलंकृत, वह दुर्योधन मार्ग में चलता हुआ फिरण्डी के फूल और सुवर्ण के समान प्रकाशमान उत्तम चन्दनादि से सुगन्धित देह निर्मल वस्त्रादिकों को पहरे सिंह समान गति से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि आकाश में निर्मल किरणयुक्त सूर्य प्रकाशमान होता है, भीष्म के डेरे में जातेहुए उस नरोत्तम के पीछे सब लोकों के बड़े धनुषधारी शूरवीर और महाधनुर्द्धर भाई लोग ऐसे चले जैसे कि इन्द्रके पीछे देवता चलते हैं, हे नरोत्तम! इसीप्रकार कोई हाथी पर कोई रथपर कोई घोड़े पर सवार होकर उसके साथ हुए, राजा की रक्षा के निमित्त वह सुहृज्जन जिन्हों ने शस्त्रों को त्याग करदिये थे एक साथ ही ऐसे प्रकट हुए जैसे कि इन्द्र की रक्षा के निमित्त देवता स्वर्गमें प्रकट होते हैं, कौरवों का राजा अपने सब कौरवलोगों से सेवित उन यशस्वी भीष्मजी के डेरे को गया, उस समय उसके पीछे तो वीर लोग और ओर पास सब भाई बन्धु अपने सुन्दर भुजदण्डों में अंजुली साधेहुए और देशनिवासियों से मीठे वचनों को सुनता हुआ वह महायशस्वी सूत मागधों से प्रशंसित होकर उन सब अपनी प्रजाओं को प्रसन्न करने लगा वहां महात्मा पुरुषों ने सुगन्धित वस्तुओं से पूर्ण सुवर्ण के दीपकों के द्वारा उसको चारों ओर से प्रकाशित किया, फिर उन सुवर्ण के बड़े बड़े दीपकों के प्रकाशसे महाप्रकाशमान, वह राजा ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बड़े बड़े ग्रहोंसे संयुक्त चन्द्रमा प्रकाशमान होताहै उस स्थानपर सुनहरी सितार आदि बाजे हाथोंमें रखनेवाले मनुष्य सब ओर से उन मनुष्यों को मीठे वचनों से हटानेवाले हुए फिर राजा भीष्म के शुभ डेरे को पाकर घोड़े से उतर भीष्म के सम्मुख उनको नमस्कार करके उत्तम आसनपर बैठगया, वह डेरा सुनहरी उत्तम बिछौनों से सब दिशामें कल्याणरूप था उसमें बैठेहुए भीष्मजी से राजा दुर्योधन हाथ जोड़े हुए गद्गदवाणीसे बोला कि हे शत्रुहन्ता! हमलोग युद्ध में आपसे रक्षितहोकर इन्द्रसमेत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देव दानवों के भी विजय करने की अभिलाषा रखते हैं तो इन पाण्डवों का उनके सहायकों समेत विजय करना कितनी बात है हे गांगेय, भीष्मजी! आप मुझपर कृपा करने को योग्य हो, आप उन वीर पाण्डवोंको ऐसे मारो जैसे कि महेन्द्र दानव लोगों को मारता है हे महाराज! मैं सब सोमकों को मारूंगा फिर करूषोंको और पाञ्चालों समेत केकय लोगों को भी मारूंगा आप अपने वचन को सत्य करके सम्मुख आये हुए पाण्डवों को मारो और बड़े धनुषधारी सोमकों को भी मारकर अपने वचन को सत्य करो, हे भरतवंशिन्, भीष्मपितामह! दयासे या मेरे वैरभाव से अथवा मेरी प्रारब्धहीनतासे जो आप पाण्डवों की रक्षा करते हो तो युद्ध में शोभा पानेवाले कर्ण को आज्ञा दो, वह कर्ण युद्धमें सब सेना और सुहृदों समेत पाण्डवों को मारेगा, आपका पुत्र इस प्रकार के वचन कहकर फिर उस सत्यपराक्रमी भीष्मजी से कुछ नहीं बोला ॥ ४२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्व्वण्यष्टनवतितमोऽध्यायः ॥ ६८ ॥

निन्नानबे का अध्याय।

संजय बोले कि आपके पुत्र के वचनरूपी भालों से अत्यन्त घायल और वचनरूपी शलाका से भिदे हुए सर्प की समान श्वास लेते बड़े साहसी महाकष्ट में पड़े हुए भीष्मजी बड़ी विलम्बतक शोचरूपी ध्यान में मग्न होकर अपने क्रोध से देव, दनुज, मनुष्यों को भस्म करनेवाले बड़े क्रोध से दोनों नेत्रों को खोलकर, बड़ी मधुरवाणी द्वारा आपके पुत्र से वचन बोले, कि हे दुर्योधन! इस प्रकार से अपनी सामर्थ्य के अनुसार उपाय करके तेरे हित के लिये अपने प्राणों को होमते हुए मुझको तू अपने वचनरूपी भालों से क्यों घायल करताहै? जिस दशामें कि शूरवीर पाण्डवों ने युद्ध में इन्द्र को विजय करके खाण्डव वन में अग्नि को तृप्त किया और हे महाबाहो! जब गन्धर्वों के पराक्रम से तुझ पकड़े हुए को तेरे भाई बन्धु और कर्ण आदि बड़े बड़े शूरों के भागजाने पर अकेले पाण्डव अर्जुन ने छुड़ाया यही दृष्टान्त तुमको शोचने के योग्य हैं, और विराट नगर में हम सब के सम्मुख अकेला अर्जुन ही हुआ वह भी दृष्टान्त योग्यहै हे समर्थ! युद्ध में तेरे शूर भाइयों के भाग जानेपर युद्धदुर्मद द्रोणाचार्य और मुझको संग्राम में विजय करके वस्त्र उतार लिये वह भी दृष्टान्त योग्य है, इसी प्रकार गौ हरण में भी बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा और कृपाचार्य को भी विजय किया वह भी दृष्टान्त ठीक है, जब कि सब पुरुषों में

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बड़े धनुर्धर कर्ण को विजय करके उत्तरा के लिये वस्त्र दिये वह दृष्टान्त भी बहुत है, अर्जुन ने इन्द्र से भी कठिनतापूर्वक विजय होनेवाले निवात कवच नाम राक्षसों को संग्राम में विजय किया वह भी दृष्टान्त बहुत है, तब ऐसा कौन सा पुरुष है जो उन वेगवान् पाण्डवों को युद्ध में विजय करने को समर्थ होय अरे दुर्योधन ! जिसकी रक्षा करनेवाला जगत् का स्वामी शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण करनेवाला, महाशक्तिमान् वासुदेव सृष्टि, संहार का करने वाला सर्वेश्वर देवदेव परमात्मा सनातन है जिसको कि नारदादि महर्षियों ने भी तुझको समझाया है ऐसा जानकर भी हे दुर्बुद्धे ! तू मोह से कहने और न कहने की बात को भी नहीं जानता है मरने की इच्छा रखनेवाला पुरुष जैसे कि सब वृक्षों को स्वर्णमयी देखता है उसी प्रकार हे गान्धारी के पुत्र ! तू भी विपरीत बातों को देखता है, तैंने आप पाण्डव और सृंजियों से बड़ी भारी शत्रुता करी है इससे युद्धभूमि में उनसे तू संग्राम करियो हम भी देखेंगे, हे नरोत्तम ! मैं शिखण्डी को छोड़कर सम्मुख आये हुए सब सोमकों को और पाञ्चालों को मारूंगा, मैं युद्ध में उनके हाथ से मरा हुआ यमलोक को जाऊंगा या मैं ही उनको मारकर तुझको प्रसन्न करूंगा, क्योंकि प्रथम राजमहल में शिखण्डी स्त्री होकर उत्पन्न हुआ था फिर वरदान से पुरुष हुआ है निश्चय करके यह शिखण्डी स्त्री है इससे हे दुर्योधन ! मैं अपने प्राण जाते हुए भी उसको कभी न मारूंगा जो इसको ईश्वर ने प्रथम स्त्री उत्पन्न किया था इसी से यह शिखण्डी अब भी निश्चय स्त्री है हे गान्धारी के पुत्र ! आनन्द से शयन कर मैं प्रातःकाल ही ऐसा महाभारी युद्ध करूंगा जिसको मनुष्य जबतक पृथ्वी नियत रहेगी तबतक कहाकरेंगे, हे राजन् ! भीष्मजी से ऐसे वचनों को सुनकर आपका पुत्र मस्तक से उनको दण्डवत् करके डेरे से बाहर निकल अपने निवासस्थान को गया, और सब साथ के लोगों को बिदा करके शीघ्रही अपने डेरे में प्रवेश कर गया, वहां रात्रिभर सोया, फिर प्रातःकाल उठकर उसने राजाओं को आज्ञा करी कि सेना को तैयार करो अब युद्ध में क्रुद्ध होकर भीष्मजी सोमकों को मारेंगे, हे राजन् ! रात्रि में दुर्योधन के उस बड़े भारी विलाप को सुन और अपना निरादर समझ बड़े वैराग्यरूप होकर दूसरे का दोष वर्णन करने की निन्दा करके युद्ध में अर्जुन से संग्राम करने के अभिलाषी भीष्मजी ने बड़ा ध्यान किया और दुर्योधन ने शरीर की चेष्टा से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भीष्मजी की बड़ी चिन्ता को जानकर दुश्शासन से कहा कि हे दुश्शासन! भीष्मजी के रक्षा करनेवाले रथ बहुत शीघ्र तैयार हों और बाईस अनीक सेना को भी प्रेरणा कर दो, कि बहुत काल से विचार किया हुआ सम्पूर्ण सेना समेत पाण्डव लोगों का मरण अब अच्छी तरह से प्राप्त हुआ उस स्थान में भीष्मजी की रक्षा को ही मैं बड़ा काम जानता हूं वह रक्षित किया हुआ भीष्म हमारा सहायक होकर पाण्डवों को मारेगा, क्योंकि इसने बड़े शुद्ध अन्तःकरण से कहा है कि मैं शिखण्डी को नहीं मारूंगा इस निमित्त कि वह पहले स्त्री था वह युद्ध में मुझसे त्याज्य है, और सब संसार इस बात को जानता है कि मैंने पिता की प्रीति के निमित्त राज्य करने को और स्त्रीसंग्रह को त्याग किया है इस निमित्त हे नरोत्तम! मैं किसी दशा में भी युद्ध में इस जन्म की स्त्री को वा पूर्वजन्म की स्त्री को कभी न मारूंगा यह मैं सत्य सत्य तुमसे वर्णन करता हूं, हे राजन्! यह शिखण्डी जिसको कि आपने सुना है वह स्त्री था फिर उद्योग करने से यह शिखण्डिनी नाम से उत्पन्न हुई जो कन्या होकर मुझसे युद्ध करेगा उस पर मैं कभी अपना शस्त्र न चलाऊंगा, हे तात! मैं पाण्डवों की विजय चाहनेवाले क्षत्रियों को या युद्ध में सम्मुख आयेहुए अन्य क्षत्रियों को भी संग्राम करके मारूंगा, यह भरतर्षभ गांगेय भीष्मजी ने मुझसे कहा है इससे मैं सर्वात्मभाव से ही भीष्मजी की रक्षा को चाहता हूं क्योंकि विना रक्षा किये हुए सिंह को भेड़िया भी मारसक्ता है तात्पर्य यह है कि भेड़ियारूप शिखण्डी के हाथ से सिंहरूप भीष्मजी को कभी न मरवाना चाहिए मेरा मामा शकुनि, शल्य, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, विविंशति यह सब मिलकर बड़ी सावधानी से भीष्मजी की रक्षा करें उसके रक्षित होने से अवश्य विजय होगी, तब तो सब लोगों ने दुर्योधन के इस वचन को सुनकर सब ओर से रथों के समूहों से भीष्मजी की रक्षा करी, फिर भीष्मजी की रक्षा करके आपके बेटे पृथ्वी और आकाश को कम्पायमान करके, पाण्डवों को भयभीत कराये हुए बड़े प्रसन्न होकर चले, वह सब महारथी बड़ी रीति से नियत किये हुए रथियों वा हाथियों से भीष्मजी को मध्य में रक्षित करके कवच और अस्त्र शस्त्रों को धारण कियेहुए ऐसे सब इकट्ठे हुए जैसे कि देवता और असुरों के युद्ध में देवता और वज्रधारी इन्द्र कूदे यह सब इसप्रकार से उस महारथी को रक्षित करके नियत हुए तदनन्तर राजा दुर्योधन ने, फिर अपने भाई से कहा, कि अर्जुन के वामओर का

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रक्षक युधामन्यु और दक्षिणभाग का उत्तमौजा यह दोनों हैं और अर्जुन भी शिखण्डी का रक्षक है, वह अर्जुन से रक्षित और हम से त्यागा हुआ शिखण्डी जैसे भीष्म को, और हमको नहीं मारे हे दुश्शासन ! तुम वही उपाय करो फिर आपका पुत्र दुश्शासन भाई के इस वचन को सुनकर भीष्मजी को आगे करके सेना के साथ में चला और रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन रथियों के समूहों से भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित देखकर धृष्टद्युम्न से बोला कि हे राजन्, धृष्टद्युम्न ! अब नरोत्तम शिखण्डी को भीष्म के सम्मुख नियत करो मैं उसका रक्षक हूं ॥ ५१ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि नवनवतितमोऽध्यायः ॥ ९९ ॥

सौका अध्याय।

संजय बोले कि इसके पीछे शन्तनु के पुत्र भीष्मजी अपनी सेना को साथ लेकर चले और अपनी बुद्धि से सर्वतोभद्र नाम व्यूह को तैयार किया और कृपाचार्य, कृतवर्मा, महारथी शैब्य, शकुनि, सैंधव, काम्बोज, सुदक्षिण यह सब भीष्मजी और आपके पुत्रों समेत सेना के अग्रगामी होकर व्यूह के मुखपर नियत हुए और द्रोणाचार्य, भूरिश्रवा, शल्य, भगदत्त यह सब शस्त्र और कवचों को धारण करके व्यूह के दक्षिणभाग में रक्षक होकर नियत हुए, और अश्वत्थामा सोमदत्त और दोनों अवन्तिदेश के महारथी राजा यह सब बड़ी सेनासमेत व्यूह के वामभाग में रक्षक हुए, और हे भरतवंशिन्, धृतराष्ट्र ! राजा दुर्योधन सब ओर से त्रिगर्त्त देशियों से संयुक्त व्यूह के मध्य में पाण्डवों के सम्मुख नियत हुआ, रथियों में श्रेष्ठ अलम्बुष और महारथी श्रुतायु यह दोनों कवच शस्त्रधारी व्यूह की सब सेनाओं के पीछे नियत हुए, हे भरतर्षभ ! उस समय आपके शूरवीर शस्त्र कवचों से अलंकृत ऐसे देखपड़े जैसे कि अत्यन्त संतप्त करनेवाली अग्नियां होती हैं, इसके पीछे राजा युधिष्ठिर भीमसेन और माद्री के दोनों पुत्र नकुल और सहदेव भी शस्त्र और कवच धारण किये हुए बहुत शोभायुक्त अपने व्यूह की सब सेनाओं के आगे नियत हुए और धृष्टद्युम्न, विराट, महारथी सात्यकी यह सब शत्रुहन्ता वीर बहुतसी सेना समेत नियत हुए शिखण्डी, घटोत्कच राक्षस, महाबाहु चेकितान, कुन्तिभोज यह सब भी बहुत सी सेना समेत युद्ध में उपस्थित हुए, और महाधनुषधारी अभिमन्यु और महाबली द्रुपद और केकय लोग शस्त्रादि से अलंकृत होकर युद्ध के निमित्त नियत हुए इसीरीति से वह शूरवीर पाण्डवलोग भी दुर्जय व्यूह को

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रचकर शत्रुओं के सम्मुख संग्रामभूमि में युद्ध के निमित्त वर्त्तमान हुए, हे राजन्! फिर युद्ध में कुशल आपके पुत्र और सेना समेत सब राजालोग भीष्मजी को आगे करके संग्रामभूमि में पाण्डवों के सम्मुख गये, इसीप्रकार पाण्डवलोग भी भीमसेन को आगे करके भीष्म से लड़ने की इच्छा से विजयाभिलाषी होकर सिंहनादपूर्वक किलकिला शब्दों को करते और भेरी मृदङ्गादि बाजों से और दुन्दुभियों से शत्रुओं को भय उत्पन्न करते हुए बड़े प्रसन्नचित्त कौरवों के सम्मुख वर्त्तमान हुए, पृथक् पृथक् रीति से प्रत्येक से भँभाये हुए सिंहनादों से गर्जना करते हुए हम सब लोग बड़ी शीघ्रता से उनके सम्मुख गये, और अकस्मात् अत्यन्त क्रोधित होकर बड़े कठोर शब्दों को करते हुए परस्पर में सम्मुख दौड़ कर बड़े बड़े प्रहार करने लगे इसके होते ही पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान हुई और बड़े भारी कठोर शब्दों को करते हुए पक्षी घूमने लगे और बड़ा प्रकाशमान सूर्य उस समय प्रभा से रहित हुआ और बड़ी भयानक कठोर शब्दवाली तीक्ष्ण वायु चली, हे महाराज! वहां घोर नाश के सूचक नानारूपधारी भयानक शृगालों के समूह भी कठोर शब्दों को करने लगे, और सब दिशाओं में दिग्दाह हुआ और धूल की वर्षा हुई और रुधिर से संयुक्त हाड़ों की वर्षा हुई, और रोते हुए वाहनों ने बड़े ध्यान में प्रवृत्तहोकर मूत्र और विष्ठा को कर दिया, और हे राजन्! मांसभक्षी राक्षसों के भी बड़े बड़े अशुभ शब्द वहां गुप्त सुने गए और गोमायु व कौवों के झुण्ड भी गिरते हुए देख पड़े और नाना शब्दों से कुत्ते भूकने और रोनेलगे, और सूर्य को आच्छादित करके बड़े भारी उल्कापात भी पृथ्वी पर हुए इसके पीछे पाण्डवों की और दुर्योधन की बड़ी सेना शंख और मृदङ्गों के शब्दों से ऐसी कम्पायमानहुई जैसे कि वायुके वेगसे वन कम्पायमान होते हैं, राजा हाथी घोड़े और रथों से पूर्ण अशुभ मुहूर्त में आई हुई सेनाओं के ऐसे कठोर शब्द हुए जैसे कि वायु से उठे हुए समुद्र के शब्द होते हैं ॥ ३० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि शततमोऽध्यायः ॥ १०० ॥

एकसौएक का अध्याय।

संजय बोले कि बड़ा रथी और तेजस्वी अभिमन्यु पिङ्गल वर्ण के उत्तम-उत्तम घोड़ों के द्वारा बादलकी जलधाराओं के समान बाणों की वर्षा करता हुआ दुर्योधन की सेना के सम्मुख गया उसके हटाने को आपके महाबली शत्रुहन्ता महा उत्तम उत्तम शस्त्रधारी शूरवीर लोग भी समर्थ नहीं हुए,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हे राजन्! उसके छोड़े हुए शत्रुसंहारी बाणों ने युद्ध में अनेक क्षत्रियों को मारकर यमपुर को भेजा, फिर युद्ध में क्रोधित अभिमन्यु ने यमदण्ड और ज्वलित सर्पाकार घोर बाणों को छोड़कर बड़ी शीघ्रता से रथीसमेत रथियों को और सवारों के साथ घोड़ों को और हाथियोंसमेत हाथीवानों को चूर्ण कर डाला, युद्ध में ऐसे महाकर्म करनेवाले अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की सब राजाओं ने बड़ी प्रसन्नचित्तता से धन्य धन्य करके प्रशंसा की हे राजन्! उस सुभद्रा के पुत्र ने उन सेनाओं को ऐसे घायल किया जैसे कि वायु आकाश में रुई को चारों ओर को बखेर देता है, और हे राजन्! उस अभिमन्यु से भगी हुई तुम्हारी सेना को कोई रक्षक ऐसे नहीं मिला जैसे कि कीच में फँसे हुए हाथी को कोई रक्षक नहीं मिलसक्ता, फिर वह अभिमन्यु आपकी सब सेना को भगाकर निर्धूम अग्नि के समान क्रोध में भराहुआ स्थिर होगया हे राजन्! इसको देखकर आपके शूरवीर लोग ऐसे नहीं सहसके जैसे कि काल के प्रेरित पतङ्ग अत्यंत प्रकाशमान अग्नि को, फिर वह पाण्डवों का महारथी उग्र धनुषधारी सब शत्रुओं को घायल करता हुआ वज्रधारी इन्द्रके समान देखपड़ा, और उसका सुवर्णकी पृष्ठवाला धनुष दिशाओंमें घूमताहुआ ऐसा दिखाई दिया जैसे कि बादलों में प्रकाशमान बिजली होती है, अत्यंत तीक्ष्ण नोक पीतरंग विषके भरे हुए बाण युद्ध में घूमने लगे हे राजन्! जैसे कि फूले वृक्षवाले वन से भँवरों के समूह निकलते हुए दृष्टि में नहीं आते उसी प्रकार मनुष्यों ने सुनहरी अङ्गवाले रथों से घूमते उस महात्मा अभिमन्यु का अन्तर अर्थात् अवकाश नहीं देखा, कि वह बड़ा धनुषधारी उत्तम हस्तलाघव करनेवाला उन कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, बृहद्बल और जयद्रथ को मोहित करके अत्यंतता से घूमा, हे धृतराष्ट्र! आपकी सेना भस्म करनेवाला उस अभिमन्यु का धनुष सूर्यमण्डल के समान मण्डली करनेवाला हमने देखा, बड़े-बड़े शूरवीर क्षत्रियोंने उस वेगवान् शीघ्रगामी कठिन दौड़नेवाले अभिमन्यु को देखकर उसके कर्मों से इस लोक को दो अर्जुन का रखनेवाला माना, हे महाराज! उस अभिमन्यु से पीड्यमान आपकी सेना स्थान स्थान पर ऐसी अत्यंतता से घूमी जैसे कि तरुणता के मद में भरी हुई स्त्री इधर उधर घूमती है, फिर सेनासमेत महारथियोंको घायल और कम्पायान करके उस अभिमन्यु ने अपने सुहृदों को ऐसा प्रबल किया जैसे कि इन्द्र ने मय दैत्य को जीतकर सबको प्रसन्न किया

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

था और युद्ध में अभिमन्यु से भगाई हुई आपकी सेनाओं ने ऐसी पीड़ा के भयानक शब्द किये जैसे कि भयकारी बादलकी गर्जनाके शब्द होतेहैं, इसरीति के आपकी सेना के शब्दों को सुनकर राजा दुर्योधन आर्यशृङ्ग नाम राक्षस से बोला कि हे महाबाहो! यह दूसरे अर्जुन के समान अभिमन्यु क्रोध से सेना को ऐसे भगाये देता है जैसे कि देवताओं की सेना को वृत्रासुर भगाता था तुझ सर्वविद्या और शस्त्रसम्पन्न के सिवाय इस युद्ध में इसका मारनेवाला मुझको कोई नहीं दिखाई देता सो तुम शीघ्र ही जाकर इस अभिमन्यु को मारो, और हम सब भीष्म और द्रोणाचार्य को आगे करके अर्जुन को मारेंगे, इस प्रकार से वह आज्ञा दियाहुआ प्रतापी बलवान् राक्षसाधिप वर्षाऋतु के बादल के समान बड़े शब्दों को करता हुआ आपके पुत्र की आज्ञा से शीघ्र ही युद्धभूमि में गया, हे राजन्! उसके भयङ्कर शब्द से पाण्डवों की बड़ी सेना सब ओर से ऐसी चलायमान हुई जैसे कि वायु से उठाया हुआ समुद्र चलायमान होता है, बहुत से मनुष्य तो उसके भयकारी शब्द ही से अपने प्यारे जीवन को त्यागकर पृथ्वी पर गिर पड़े परन्तु शूरवीर अभिमन्यु बड़ी प्रसन्नता से युक्त बाणोंसमेत धनुष को हाथों में लेकर नाचता हुआ सा रथ में बैठकर उस राक्षस के सम्मुख पहुँचा इसके पीछे उस क्रोधयुक्त राक्षस ने युद्ध में अभिमन्यु को पाकर उसकी समीपी सेना को घायल किया इस रीति से उस पाण्डव की घायल और भागी हुई बड़ी सेना को देखकर वह राक्षस युद्ध में उसके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि देवताओं की सेना के सम्मुख दैत्यों का राजा बलि गया था, हे धृतराष्ट्र! युद्ध में उस घोर राक्षस ने सेना का बड़ा मर्दन किया, और अपने पराक्रम को दिखाकर हज़ारों बाणों को फेंका तब तो वह पाण्डवी सेना भय से महाव्याकुल होकर भाग निकली, जैसे कि हाथी कमलिनियों को मर्दन करता है उसी प्रकार सेना को मर्दन करके युद्धभूमि में द्रौपदी के पुत्रों के सम्मुख गया तब वह बड़े धनुषधारी प्रहार करनेवाले महाबली द्रौपदी के पुत्र भी महाक्रोधरूप होकर उसके सम्मुख ऐसे गए जैसे कि पांच ग्रह सूर्य को सम्मुख से घेरते हैं, फिर उन पांचों महाबली शूरोंने उसको ऐसा घायल किया जैसे कि युग के अन्त में अर्थात् प्रलय होने के समय में पांच भयकारी ग्रह चन्द्रमा को पीड़ा देते हैं, इसके अनन्तर महाबली व्रतबन्ध ने अत्यन्त शीघ्रता से तीक्ष्ण धारवाले लोहे के बाणों से उस राक्षस को अत्यंत घायल किया, उन बाणों से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कटे हुए कवचवाला वह राक्षस ऐसा अत्यंत शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्य की किरणों से गर्भित बड़ा बादल होता है हे राजन्! वह आर्यशृंग राक्षस सुवर्णजटित बाणों से भिदाहुआ ऐसा शोभित विदित होता है जैसे कि प्रकाशित शिखरवाला पर्वत शोभायमान होता है, फिर उन पांचों भाइयों ने उस राक्षस को बड़े तीक्ष्ण स्वर्णमयी बाणों से घायल किया तब तो महाविष भरे सर्पों के समान बाणों से विदीर्ण वह गजेन्द्ररूप राक्षस बड़ा क्रोधयुक्त होकर एक मुहूर्त्तमात्र तो अचेत होगया, फिर उस क्रोध से द्विगुणित पराक्रमवाले ने उनके बाण धनुष और ध्वजाओं को काटा और रथ में बैठेहुए नाचते और आश्चर्य करते महारथी अलम्बुष ने प्रत्येक को पांच-पांच बाणों से घायल करके बड़ी शीघ्रता से उन महात्माओं के घोड़े और सारथियों को मारा, और बहुत प्रकार के अनेक रूप के हज़ारों बाणों से उनके शरीरों को घायल किया इन सब कर्मों को करके उन सबके मारने की इच्छा करके वह राक्षस बड़ी तीव्रतासे उनके पास गया, अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु उस दुष्टात्मा से अपने भाइयों को पीड़ित देखकर शीघ्र ही उसके सम्मुख गया, वहां उन दोनों का ऐसा महायुद्ध हुआ जैसा कि इन्द्र और वृत्रासुर का हुआ था इस युद्ध को आपके सब पुत्रों ने और महारथी पाण्डवों ने देखा कि दोनों परस्पर में महाक्रोधयुक्त और लाल लाल नेत्र करके अत्यंत लड़े और युद्ध में कालाग्नि के समान दोनों वीरों ने अपने को देखा फिर दोनों का भयकारी युद्ध ऐसा अप्रिय जानपड़ा जैसा कि पूर्वसमय में देवता और असुरों के युद्ध में इन्द्र और शम्बर का हुआ था ॥ ५३ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वण्येकाधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०१ ॥

एकसौ दो का अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले! हे संजय युद्ध में अलम्बुष राक्षस किस रीति से पांचों महारथियों को मारता हुआ शूरवीर अभिमन्यु के सम्मुख हुआ और शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अभिमन्यु कैसे-कैसे उस अलम्बुष से लड़ा इसको यथार्थता से मुझ से वर्णन करो, रथियों में श्रेष्ठ भीमसेन, घटोत्कच राक्षस, नकुल, सहदेव और महारथी सात्यकी यह सब कैसे कैसे लड़े और अर्जुन के युद्ध में मेरी सेना में क्या क्या हुआ इन सब बातों को मेरे आगे पूरा पूरा वर्णन करो, संजय बोले कि हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! मैं उस रोमहर्षण युद्ध को तुमसे कहता हूं जो उस राक्षस और अभिमन्यु ने किया है और जैसे कि पाण्डव अर्जुन, भीमसेन, नकुल,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सहदेव और सात्यकी ने युद्ध में पराक्रम किया है, और जो जो कठिन कर्म आपके उन शूरों ने किये जिन के कि अग्रगामी भीष्म और द्रोणाचार्य थे उनको और जैसे जैसे फिर अलम्बुष युद्ध में बड़े शब्द से गर्जकर वा थड़ककर महारथी अभिमन्यु के सम्मुख गया और बड़ी तीव्रता से तिष्ठ तिष्ठ शब्द करके सिंह के समान गर्जना करता हुआ अभिमन्यु पिता के महा शत्रु अलम्बुष के सम्मुख जैसे गया तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ शीघ्रता करनेवाले नर और राक्षस युद्ध में रथों के द्वारा देव दानव के समान सम्मुख हुए माया का जाननेवाला राक्षस और अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु यह दोनों दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले थे, फिर अभिमन्यु ने तीन तीक्ष्ण बाणों से अलम्बुष को घायल करके पांच बाणों से विदीर्ण किया, और अत्यंत क्रोधयुक्त अलम्बुष ने भी नौ बाणों से अभिमन्यु के हृदय को ऐसा घायल किया जैसे कि चांकसे बड़े हाथी को करते हैं हे भरतर्षभ ! इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले अलम्बुष ने अपने हज़ार बाणों से अभिमन्यु को पीड्यमान किया, फिर महाक्रोध भरे अभिमन्यु ने भी ग्रन्थीवाले नौ बाणों सें राक्षसों के राजा को बड़ी छाती पर घायल किया, वह बाण मर्मों में प्रवेश करके शीघ्र ही उस की देह में घुसगये उन बाणोंसे वह राक्षस सब शरीर में घायल होकर ऐसा शोभायमान हुआ, जैसे कि फूलेहुए किंशुक वृक्षों से पर्वत शोभित होता है और सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से उसकी ऐसी अद्भुत शोभा हुई जैसे अग्निवाले पहाड़की होती है इसके पीछे महा क्रोधयुक्त असह्य अलम्बुष ने बाणों से महेन्द्र के समान अभिमन्यु को ढकदिया फिर उसके बाण अभिमन्यु को घायल करके पृथ्वी में घुस गये इसी प्रकार अभिमन्यु के छोड़े हुए सुवर्ण जटित बाण भी अलम्बुष को घायल करके पृथ्वी में प्रवेश करगये फिर अभिमन्यु ने युद्ध में अच्छे झुकेहुए ग्रन्थी के बाण अलम्बुष के ऐसे मारे जिनके मारे उसने ऐसे मुख फेर लिया जैसे कि इन्द्र के मारेहुए बाणोंसे मय दैत्य ने मुख फेर लिया था फिर राक्षसाधिप ने अपनी तामसी बड़ी माया से अन्धकार को प्रकट किया उस अन्धकार से वह सब गुप्त होगए, तब न राक्षस को न अपने शूरवीरों को न शत्रुओं को अभिमन्यु ने देखा, इस महाभयकारी प्रबल माया को देखकर अभिमन्यु ने प्रकाशमान सौर नाम अस्त्र को प्रकट किया तब सब संसार दीखने लगा और प्रकाश के होते ही उस निर्बुद्धि दुरात्मा राक्षस की प्रबल माया को दूर करके बड़े वीर पराक्रमी नरोत्तम अभिमन्यु ने उस राक्षसाधिप को युद्ध में गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ढक दिया फिर उस राक्षसने अनेक अनेक माया की परन्तु सब मायाओंको उस महा अस्त्रज्ञ अभिमन्यु ने दूर किया फिर माया के नाश होते ही सोमकों से घायल होकर वह राक्षस बड़ा भयभीत होके रथ को उसी स्थान में छोड़कर भाग गया फिर उस कठिन युद्ध कर्त्ता राक्षस के शीघ्र विजय होने पर युद्ध में प्रवृत्त होकर अभिमन्यु ने आपकी सेना का ऐसा विध्वंसन किया जैसे कि मदोन्मत्त वनवासी गजेन्द्र निर्बल कुमुदिनियों के वन को विध्वंस करता है इसके पीछे शन्तनु के पुत्र भीष्मजी ने अपनी सेना को भगा हुआ देखकर बाणों की तीव्रवर्षा से अभिमन्यु को ढक दिया, फिर धृतराष्ट्र के महारथी पुत्रों ने उस वीर को चारों ओर से घेरकर युद्ध में अनेकों ने अकेले को बहुत से बाणों से अत्यंत घायल किया, उस पिता के समान बली वा बल पराक्रम में वासुदेवजी के तुल्य सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ वीर अभिमन्यु ने उन रथियों के सम्मुख पिता और मामा के समान अनेक प्रकार के कर्मों को किया, उसके पीछे पुत्र को चाहते और आपकी सेना को मारते क्रोधयुक्त वीर अर्जुन ने युद्ध में अपने पुत्र को पाया, इसी प्रकार अन्य अपने वीरों को भी सम्मुख लड़ते हुए पाया और आप के पिता देवव्रत ने लड़ाई में अर्जुन को ऐसे सम्मुख पाया जैसे कि राहु सूर्य को सम्मुख पाता है, इसके पीछे रथ हाथी और घोड़ों समेत आपके पुत्रों ने युद्ध में भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित किया, हे राजन्, धृतराष्ट्र ! इसीप्रकार से अलंकृत पाण्डव अर्जुन को घेरकर बड़े युद्ध के लिये प्रवृत्त हुए, इसके पीछे कृपाचार्य ने पच्चीस बाणों से भीष्म के आगे वर्त्तमान अर्जुन को ढक दिया, फिर सात्यकी ने अर्जुन के प्रिय करने की इच्छा से सम्मुख जाकर उनको तीक्ष्ण बाणों से ऐसा घायल किया जैसे कि शार्दूल हाथी को घायल करता है और अत्यन्त कोपयुक्त शीघ्रता करनेवाले कृपाचार्यजी ने भी कङ्कपक्षयुक्त नौ बाणों से सात्यकी को हृदय में घायल किया फिर वेगवान् क्रोधभरे सात्यकी ने अपने धनुष को लचाकर कृपाचार्य के नाश करनेवाले शिलीमुख नाम बाण को धनुष पर चढ़ाया उस समय अत्यंत क्रोध से भरे हुए अश्वत्थामा ने उस तीव्रता से गिरते हुए इन्द्रवज्र के समान बाण को दो स्थानों में काटा, इसके पीछे रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी कृपाचार्य को त्यागकर युद्ध में अश्वत्थामा के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि आकाश में चन्द्रमा के सम्मुख राहु जाता है, हे भरतवंशिन्! द्रोण के पुत्र अश्वत्थामा ने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उसके धनुष के दो खण्ड करके उसको मारे बाणों के आच्छादित कर दिया फिर सात्यकी ने शत्रुओं के मारनेवाले दूसरे धनुष को खैंचकर साठ बाणों से अश्वत्थामा की छाती और दोनों भुजाओं को घायल किया उन बाणों से घायल और पीड़ित होकर अश्वत्थामा महाव्याकुल वा अचेत होकर कई मुहूर्त्त तक ध्वजा के आश्रय से रथ में बैठ गया, थोड़े ही समय में अश्वत्थामा ने सचेत हो बड़े क्रोध से सात्यकी को नाराच बाण से घायल किया, वह बाण सात्यकी को घायल करता हुआ पृथ्वी में ऐसे घुस गया जैसे कि वसन्तऋतु में सर्प का बलवान् बच्चा बिल में प्रवेश करताहै, फिर अश्वत्थामा ने दूसरे भल्ल से सात्यकी की उत्तम ध्वजा को काटकर बड़े सिंहनादपूर्वक उसको महाघोर बाणों से ऐसा ढक दिया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल सूर्य को ढक देता है हे महाराज! फिर सात्यकी ने भी बड़ी शीघ्रता से उस बाणों के जाल को काटकर अपने बाणसमूहों से अश्वत्थामा को आच्छादित कर दिया फिर उस शत्रुहन्ता सात्यकी ने अश्वत्थामा को ऐसा संतप्त किया जैसे कि स्वच्छ आकाशवाला सूर्य सबको अत्यंत तपाता है, इसके पीछे बड़े उपाय करनेवाले सात्यकी ने बड़ी गर्जनाओं को करके हज़ारों बाणों से अश्वत्थामा को व्याप्त कर दिया, तब राहु से ग्रसे हुए सूर्य के समान अपने पुत्र को देखकर प्रतापवान् द्रोणाचार्यजी उस सात्यकीके सम्मुख गए, हे राजन्! सात्यकी के हाथ से पीड्यमान अपने पुत्र को चाहते हुए द्रोणाचार्य ने उसको युद्ध में बड़े तीव्र पृषत्क बाण से घायल किया फिर सात्यकी ने युद्ध में गुरु के पुत्र महारथी को छोड़कर लोहमयी बाणों से द्रोणाचार्यजी को महाव्याकुल किया, उसी अन्तरमें बड़ा साहसी शत्रुसंतापी महारथी क्रोधभरा अर्जुन युद्धमें द्रोणाचार्य के सम्मुख गया फिर द्रोणाचार्य और अर्जुन ने उस घोरयुद्ध में ऐसी बड़ी सम्मुखता करी जैसी कि आकाश में बुध और शुक्र ने करी थी॥ ५६॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि द्व्यधिकशततमोऽध्यायः॥ १०२॥

एकसौ तीन का अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले हे संजय! युद्ध में कुशल दोनों पुरुषोत्तम अर्थात् बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य और पाण्डव अर्जुन परस्पर कैसे सम्मुख हुए, हे संजय! वह अर्जुन उस बुद्धिमान् द्रोणाचार्यका सदैव प्यारा है और आचार्यजी भी अर्जुन को सदैव प्यारे हैं, वह दोनों महारथी युद्ध में प्रसन्नचित्त सिंह की समान मदो-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

न्मत्त और सावधान होके किस रीति से युद्ध करने को प्रवृत्त हुए, संजय बोले कि द्रोणाचार्यजी युद्ध में अर्जुन को अपना प्यारा नहीं जानते हैं इसी प्रकार अर्जुन भी क्षत्रियधर्म को आगे करके गुरु को युद्ध में प्यारा नहीं मानता है, हे राजन् ! क्षत्रिय लोग परस्पर में एक दूसरे को त्याग नहीं करते हैं किन्तु पिता, माता, भाई के साथ में भी अमर्यादा से लड़ते हैं, हे राजन् ! युद्ध में अर्जुन के तीन बाणों से घायल द्रोणाचार्यजी ने अर्जुन के धनुष से गिरे हुए बाणों को विचार नहीं किया, फिर अर्जुन युद्धभूमि में बाणों की वर्षा करता हुआ ऐसा क्रोधयुक्त हुआ जैसे कि बड़े वन में वृद्धि पानेवाला अग्नि प्रचण्ड हो जाता है, फिर द्रोणाचार्य ने भी शीघ्र ही गुप्तग्रन्थिवाले बाणों से अर्जुन को ढक दिया, तदनन्तर राजा दुर्योधन ने युद्ध में द्रोणाचार्य की समीपता के कारण राजा सुशर्मा को आज्ञा करी, उस त्रिगर्त्त के क्रोधयुक्त राजा ने भी अपने धनुष को अच्छे प्रकार खैंचकर लोहे की पुङ्खवाले बाणों से अर्जुन को आच्छादित कर दिया हे राजन् ! उन दोनों के छोड़े हुए बाण अन्तरिक्ष में ऐसे प्रकाशमान हुए जैसे कि शरदृऋतु के आकाश में हंस शोभित होते हैं, वह बाण चारों ओर से अर्जुन को पाकर ऐसे प्रविष्ट हुए जैसे कि फलों के बोझ से झुके हुए वृक्षों में पक्षी प्रवेश करते हैं, फिर रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने बड़ी गर्जना करके मारे बाणों के पुत्र समेत त्रिगर्त्त के राजा को घायल कर दिया, जैसे कि युग के अन्त में काल से घायल होते हैं उसी प्रकार अर्जुन से घायल और मरने में निश्चय करनेवाले वह लोग अर्जुन के ही सम्मुख आकर वर्त्तमान हुए और युद्ध में उन लोगों ने अर्जुन के रथ पर बाणों की वर्षा करी और अर्जुन ने अपने बाणों से उनके बाणजालों को ऐसे रोका जैसे कि जल की वर्षा को पर्वत रोकता है हे राजन् ! वहां हमने अर्जुन की हस्तलाघवता को भी अपूर्व देखा कि जो अकेले ने बहुत से वीरों की छोड़ी हुई असह्य बाणों की वर्षा को और शस्त्रों को ऐसे रोका जैसे कि वायु बादलों के समूहों को रोक देता है, अर्जुन के उस कर्म से देवता और दानव भी महाप्रसन्न हुए हे राजन् ! अर्जुन ने महाक्रोधित होकर सेना के मुखरूप त्रिगर्त्तदेशियों के ऊपर वायव्य अस्त्र को छोड़ा उसमें से आकाश को व्याकुल करते वा देवताओं के समूहों को गिराते और सेनाओं को मारते हुए वायु प्रकट हुए फिर द्रोणाचार्यजी ने बड़े भयकारी वायव्य अस्त्र को देखकर, दूसरे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शैल्य नाम घोर अस्त्र को छोड़ा उस द्रोणाचार्य के उस अस्त्र के छोड़ते ही वह वायु शान्त होगई और दशों दिशा प्रसन्न हुईं इसके पीछे उस वीर अर्जुन ने त्रिगर्त्त राजा के रथों के समूहों को, बेउत्साह व निर्बल व मुख फेरनेवाला किया, इसके पीछे दुर्योधन व रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य, कांबोज, सुदक्षिण, बिन्द, अनुबिन्द अवान्ति के राजा लोग, बाह्लीक देशियों-समेत राजा बाह्लीक इन सब वीरों ने रथों के समूहों से अर्जुन की दिशा को रोक दिया, उसी प्रकार भगदत्त व महाबली श्रुतायु इन दोनों ने हाथियों की सेनासमेत भीमसेन की दिशाओं को रोका और भूरिश्रवा, शल्य, शकुनी इन सबोंने बड़े तीव्र बाणों से माद्री के दोनों पुत्र नकुल, सहदेव को घेर लिया और सेना वा धृतराष्ट्र के सब पुत्रोंसमेत भीष्मजी ने युधिष्ठिर को पाकर सब ओर से घेर लिया, फिर भीमसेन ने उस गिरती हुई हाथियों की सेना को देखकर, वन के सिंह के समान होठों को चाटते हुए अपनी बड़ी गदा को लेकर शीघ्र ही रथ से कूद कर आपकी सेनाओं को भयभीत किया इसके पीछे युद्ध में कुशल उन हाथियों के सवारों ने भीमसेन को गदा धारण किये देखकर चारों ओर से घेर लिया तब वह भीमसेन हाथियों के मध्यवर्त्ती होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बादलों के बड़े जाल में वर्त्तमान होकर सूर्य शोभित होता है और वीर भीमसेन ने अपनी गदा से हाथियों की सेना को ऐसे पृथक् पृथक् करदिया जैसे कि वायु बड़े और असंख्य फैले हुए बादलों के जालों को पृथक् पृथक् करता है उस महाबली भीमसेन से घायल बादलों के समान गर्जनेवाले हाथियों ने पीड़ायुक्त शब्द किये और हाथियों के दांतों से बहुत घायल हुआ भीमसेन रणभूमि में फूले हुए अशोक के समान शोभित हुआ फिर हाथीको दांत पर से पकड़ करविना दांत कर दिया और उसी दांत से हाथी के मुखको घायल करके रणभूमि में गिराया उस समय मृत्युसमान दण्ड हाथ में लिये मस्तकों की चरबी से शोभित रुधिरभरे देह से रुधिर में डूबी हुई गदा का धारण करनेवाला भीमसेन रुद्र के समान देख पड़ा इस रीति से सब हाथी मारे गये और मरने से बचे बचाये बड़े हाथी अपनी ही सेना को दबाते मर्दन करते इधर उधर को भाग गये उन चारोंओर को भागते हुए उन बड़ेबड़े हाथियों के कारण से दुर्योधन की सब सेना मुख फेरगई ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि त्र्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०३ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एकसौचार का अध्याय।

संजय बोले कि हे राजन् ! मध्याह्न के समय सोमकों से भीष्मजी का युद्ध वर्त्तमान हुआ वह महाघोर युद्ध लोकों के नाश का करनेवाला भयङ्कररूप था, रथियों में श्रेष्ठ गङ्गापुत्र भीष्मजी ने अपने तीक्ष्णबाणों से पाण्डवों की हजारों सेनाओं को तितिरबितिर करदिया और ऐसा मर्दन किया जैसे कि बैलों का समूह बहुत से कटे हुए नाज के ढेर को कर देता है, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, विराट और द्रुपदने युद्ध में महारथी भीष्म को पाकर बाणों से घायल कर दिया इसके पीछे भीष्म ने धृष्टद्युम्न को घायल कर तीन बाणों से विराट को व्यथित करते हुए द्रुपद के ऊपर नाराच को चलाया, तब तो उस भीष्म से घायल शत्रुहन्ता बड़े धनुषधारी चरण से छुये हुए सर्परूप क्रोधयुक्त शिखण्डी ने उस भरतवंशियों के पितामह भीष्मजी को घायल किया और उस अजेय ने उसको स्त्रीरूप ध्यान करके इसपर प्रहार नहीं किया, फिर क्रोधरूप धृष्टद्युम्न ने अपने तीन बाणों से पितामह की छाती और भुजाओं पर घायल किया, द्रुपद ने पच्चीस बाण से, विराट ने दशबाणों से और शिखण्डी ने पच्चीस शायकों से भीष्मजी को घायल किया, फिर अत्यन्त घायल रुधिरभरे शरीर से वह पितामह ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि वसन्तऋतु में फूला हुआ लाल अशोक होता है १० इसके पीछे गङ्गापुत्र भीष्मजी ने सीधे चलनेवाले तीन तीन बाणों से उन सबको घायल किया और भल्ल से द्रुपद के धनुष को काटा, फिर द्रुपद ने दूसरे धनुष को लेकर पांच बाणों से उनके शिर को घायल किया और अत्यन्त तीक्ष्ण तीन बाणों से सारथी को व्यथित किया, इसीप्रकार से भीमसेन वा द्रौपदी के पांचों पुत्र वा पांचों भाई केकय वा यादव, सात्यकी जिन में अग्रगामी युधिष्ठिर थे और पाञ्चाल जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्न था रक्षापूर्वक यह सब लोग भीष्मजी के सम्मुख दौड़े, हे राजन् ! इसीप्रकार से आप के सब शूरवीर भीष्मजी की रक्षा के लिये उपाय करनेवाली सेनाओंसमेत पाण्डवी सेनाके सम्मुखगये। वहां आपके और पाण्डवों के मनुष्य, घोड़े, हाथी, सवार और रथों का बड़ाभारी युद्ध हुआ, वह युद्ध भी यमराज के पुरकी वृद्धि का करनेवाला था। वहां रथीने रथीको यमलोकमें भेजा और अन्य अन्य मनुष्यों ने हाथी, घोड़े और रथों को सम्मुख पाकर, गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से परलोक को पहुँचाया। हे राजन् ! जहां तहां नानाप्रकार के घोरबाणों से रथी रथों से हीन हुए

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जब सारथी भी मारेगये तब चारों ओर को भागगये हे राजन् ! युद्ध में गंधर्व नगर के समान बहुत से घोड़े मनुष्यों को खूंदते मर्दन करते भागते हुए देखपड़े । और रथी रथियों से हीन कवचधारी और तेजयुक्त कुण्डल मण्डील बाण और बाजूबन्द आदि भूषणधारी, सब देवकुमारों के समान और युद्ध में बल से इन्द्र के समान धन से कुबेर को और चित्त से बृहस्पति को भी उल्लङ्घन करनेवाले, सब संसार के शूरवीर राजा जहां तहां ऐसे भागे हुए देखपड़े जैसे कि साधारण मनुष्य होते हैं, हे नरोत्तम ! हाथी अपने श्रेष्ठ सवारों से हीन अपनी सेनाओं को मर्दन करते हुए सब शब्दों के पीछे चलनेवाले दौड़े, हे श्रेष्ठ ! ढाल, चमर, पताका, सुन्दर सुनहरी दण्डवाले छत्रादिक, चारोंओर भागे हुवों के साथ दशों दिशाओं को दौड़ते हुए देखपड़े । बादल के रूप हाथी घन की सी गर्जना करनेवाले विदित हुए, हे राजन् ! इसीप्रकार उस तुमुल युद्ध में आपके और पाण्डवों के हाथियों के सवार हाथियों से रहित दौड़ते दृष्टिगोचर हुए, नानाप्रकार के देशों में उत्पन्न होनेवाले सुवर्णित भूषणों से अलंकृत हज़ारों घोड़ों को भी भागता हुआ देखा, घोड़ों के मरने से चारोंओर को हाथ में खड्ग लिये भागते हुए घोड़ों के सवारों को देखा, उसी बड़े युद्ध में भागते हुए हाथी को पाकर हाथी बड़ी तीव्रतायुक्त पदातियों को और घोड़ों को मर्दन करता हुआ गया । इसी प्रकार हाथी ने रथियों को और पृथ्वीपर पड़े हुए रथी और घोड़ों को पाकर घोड़ों ने मनुष्यों को मर्दन किया और बहुतों ने परस्पर में मर्दन किया इसप्रकार उस भयानक युद्धमें रुधिर की महाभयंकर नदी भी वर्त्तमान देखी, खड्गसमूहों से गसेहुए केशरूप शैवाल रथरूप ह्रद बाणरूप चक्र घोड़ेरूप मछलियां रखने वाली दुष्प्राप्य शिररूप पत्थरों से व्याप्त हाथीरूप ग्रहों से व्याकुल और कवच मण्डीलरूप के फेनों से भरी धनुषरूप वेग खड्गरूपी कछुए रखनेवाली, पताका ध्वजारूप वृक्षों से संयुक्त मृत्युरूपी किनारे रखनेवाली नाशकारी मांसभक्षी राक्षस रूप हंसों से युक्त नदी यमराजके देश की अत्यन्त बढ़ानेवाली थी, हे राजन् ! बड़े बड़े शूरवीर महारथी क्षत्रियों ने भय को त्यागकर रथ, हाथी, घोड़ेरूप नौकाओं के द्वारा उस नदी को तरा, युद्ध में भयभीत मूर्च्छावान् मनुष्यों को ऐसे दूर पहुँचाया जैसे कि वैतरणी नदी के प्रेतराज के पुर में प्रेतों को पहुँचाती है, वहां क्षत्रिय लोग उस बड़ी प्रलय को देखकर पुकारे कि दुर्योधन के अपराध से क्षत्रिय लोगों का नाश होता है, पापात्मा लोभी राजा धृतराष्ट्र ने गुणवान् पाण्डवों से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कैसे शत्रुता की इसप्रकार पाण्डवों की प्रशंसा से भरे हुए आपके पुत्रोंसमेत सेना के अनेक प्रकार के भयानक शब्द परस्पर में सुने गए, इसके पीछे सब संसार का अपराधी आपका पुत्र दुर्योधन उन शूरवीरों के कहे हुए वचनों को सुनकर, भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, शल्य आदि से बोला कि आप लोग अहंकार को त्यागकर युद्ध करो, विलम्ब क्यों करते हो? इसके पीछे पाण्डवोंका और कौरवों का महाघोर भयानक युद्ध जारी हुआ, हे विचित्रवीर्य के पुत्र! जो पूर्व समय में महात्माओं के कहने को तुमने नहीं माना उसी का यह महाभयकारी फल तुम देखो हे राजन्! पाण्डव लोग सेना और साथ के चलनेवालों समेत अपने प्राणों की रक्षा नहीं करते हैं और कौरव लोग भी अपने प्राणों की रक्षा नहीं करते हैं, हे पुरुषोत्तम, धृतराष्ट्र! इसहेतु से यही सूचित होता है कि यातो दैव की इच्छा से अथवा आपके अन्याय से मनुष्यों का भयकारी और प्रलयरूपी नाश वर्त्तमान है ॥ ४७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि चतुरधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०४ ॥

एकसौपांच का अध्याय।

संजय बोले कि, पुरुषोत्तम अर्जुन ने सुशर्मा के पीछे चलनेवाले उन राजाओं को तीक्ष्ण बाणों से प्रेतराज के पुर को पहुँचाया, इसके पीछे सुशर्मा ने अर्जुन को बाणों से घायल करके वासुदेवजीको सत्तर बाणों से और अर्जुन को नौ बाणों से घायल किया तब इन्द्र के पुत्र महारथी अर्जुन ने अपने बाणों से उनको रोककर सुशर्मा के शूरवीरों को यमलोक में भेजा, हे राजन्! जैसे कि युग के अन्त में काल से प्रेरित लोग होते हैं इसीप्रकार अर्जुन से घायल हुए वह महारथी युद्ध में भयभीत होकर कोई तो घोड़ों को त्यागकर कोई रथ कोई हाथियों को त्यागकर दशों दिशाओं में भागे, और कोई कोई शूर रथ, घोड़े और हाथी को ही लेकर बड़ी शीघ्रता से भागे, और पदाती लोग भी उस युद्ध में शस्त्रों को त्यागकर अनिच्छावान् होकर जहां तहां से भागे, उस समय सुशर्मा मन से हारकर त्रिगर्त के राजा और अन्य बहुत से उत्तम उत्तम राजाओं के रोकने से नहीं रुकसका, तब आपका पुत्र दुर्योधन सेनासमेत उन शूरवीरों को भागता हुआ देखकर युद्ध में भीष्मजी को आगे करके सब सेना के आगे बड़े बड़े उपायों समेत राजा त्रिगर्त के जीवन के लिये अर्जुन के सम्मुख गया हे राजन्! वह युद्ध में अनेक प्रकार के बाणों की वर्षा करता

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हुआ सब भाइयों समेत युद्ध में वर्त्तमान रहा और शेष सब मनुष्य भागगये, हे राजन् ! इसी प्रकार से पाण्डव लोग भी सब उपायों समेत अर्जुन के लिये कवच, शस्त्र धारण किये वहां गये जहां पर कि भीष्मजी नियत थे, यह सब वीर गाण्डीव धनुषधारी के युद्ध में पराक्रम को जानते और हाहाकार से उत्पन्न उत्साह को न रखनेवाले चारों ओर से भीष्मजी के सम्मुख गये, फिर तालध्वज भीष्मजी ने गुप्तग्रन्थी के बाणों से पाण्डवों की सेना को ढक दिया, हे राजन् ! इसके पीछे आकाश के मध्यवर्ती सूर्य के होने पर सब कौरव और पाण्डवों में एकत्र होकर युद्ध प्रारम्भ हुआ, सात्यकी वीर कृतवर्मा को पांच बाणों से घायल करके हजारों बाण छोड़ता हुआ युद्ध में नियत हुआ । इसी प्रकार राजा द्रुपद ने द्रोणाचार्यजी को तीक्ष्ण बाणों से घायल करके फिर सत्तर बाणों से घायल किया और पांच बाणों से उनके सारथी को व्यथित किया, फिर भीमसेन राजा बाह्लीक और पितामह को घायल करके ऐसी महागर्जना से गर्जा जैसे कि वन में सिंह गर्जता है, चित्रसेन के बहुत बाणों से घायल अभिमन्यु ने युद्ध में चित्रसेन को तीन बाणों से अत्यन्त घायल कर युद्ध में भिड़े हुए वह दोनों बड़े शरीरवाले ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि आकाश में बड़े घोर बुध और शनैश्चर शोभित होते हैं । शत्रुहन्ता अभिमन्यु नौ बाणों से सूतसमेत उसके चारों घोड़ों को मारकर बड़े वेग से गर्जा, इसके पीछे वह महारथी चित्रसेन मृतक घोड़ों के रथ से शीघ्र ही कूदकर दुर्मुख के रथ पर सवार हुआ, फिर शीघ्रता करनेवाले पराक्रमी द्रोणाचार्य ने द्रुपद को गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से घायल करके उसके सारथी को भी घायल किया, फिर सेना मुख पर पीड्यमान राजा द्रुपद पूर्व शत्रुता को स्मरण करके बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्ध से हट गया, फिर भीमसेन ने एक मुहूर्त में सब सेना के देखते हुए राजा बाह्लीक को घोड़े रथ और सारथी से रहित करदिया, तदनन्तर पुरुषोत्तम बाह्लीक सवारी से उतरकर व्याकुल होके महासन्देहयुक्त हुआ, और शीघ्र ही लक्ष्मण के रथ पर सवार होगया और सात्यकी ने कृतवर्मा को हटाकर बहुत से बाणों के द्वारा पितामह को पाया और तीक्ष्ण साठ बाणों से उनको घायल कर बड़े धनुष को कँपाता हुआ रथ में बैठा हुआ नाचता सा देखपड़ा, फिर पितामह ने सुनहरी बड़ी विचित्र वेगवान् नागकन्या के समान शुभ लोहे की बड़ी भारी शक्ति को उसके ऊपर फेंका । उस

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मृत्यु के समान अकस्मात् गिरती हुई शक्ति को अपने तेज से सात्यकी ने निष्फल कर दिया फिर वह शक्ति सात्यकी को न पाकर पृथ्वी पर गिरपड़ी इसके पीछे सुवर्ण के समान अपनी बरछी को सात्यकी ने बड़ी तीव्रता से पितामह के रथपर फेंका, उस सात्यकी की भुजा के वेग से वह शक्ति बड़ी तीव्रतासे उनके पास ऐसी गई जैसे कि मनुष्य के पास कालरात्रि आती है। हे राजन्! उस अकस्मात् गिरती हुई तीव्र शक्ति को भीष्मजी ने तीक्ष्ण क्षुरप्र बाणों से दो खण्ड करके पृथ्वी पर गेर दिया, फिर शत्रुसन्तापी गङ्गापुत्र भीष्म ने उस शक्ति को तोड़ नौ बाणों से बहुत हँसते हुए उसको छाती पर घायल किया। तदनन्तर रथ, हाथी और घोड़ोंसमेत सात्यकी की रक्षा के लिये पाण्डवों ने भीष्मजी को घेर लिया फिर युद्धाभिलाषी पाण्डव लोगों का और कौरवों का रोमहर्षण करनेवाला महाघोर युद्ध हुआ ॥ ३७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि पञ्चाधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०५ ॥

एकसौछह का अध्याय।

संजय बोले कि हे महाराज! जैसे कि वर्षाऋतु के आकाश में बादलों से ढके हुए सूर्य को देखते हैं इसीप्रकार युद्धमें क्रुद्धरूप पाण्डवों से घिरेहुए भीष्म को देखकर दुर्योधन उस दुश्शासन से बोला कि यह बड़ा धनुषधारी शूरों का मारनेवाला भीष्म चारों ओर से बड़े वीर पाण्डवों से घिरा हुआ है उसकी रक्षा तुम लोगों को करनी अवश्य है, क्योंकि वह हमारा पितामह भीष्म युद्ध में पाण्डवोंसमेत पाञ्चालों को मारेगा इस स्थानपर भीष्मजी की रक्षा करना ही मैं बड़ा काम मानता हूं, यह बड़ा धनुषधारी महाव्रत भीष्म हमारा बड़ाभारी रक्षक है सो तुम अपनी सब सेनासमेत उस कठिन युद्धकर्मी भीष्म की प्रीति से रक्षा करो इसप्रकार से बड़े भाई की आज्ञा को सुनकर आपके पुत्र दुश्शासन ने बड़ी सेनासमेत भीष्मजी को चारोंओर से मध्य में करके रक्षित किया, फिर सौबल के पुत्र शकुनीने बड़े स्वच्छ प्रासखड्ग, तोमरधारी शुभ्रवस्त्रों से शोभित अहंकारमें भरे बड़ेबलवान् ध्वजाधारी शिक्षित युद्ध में कुशल अनेक नरोत्तम वीरों के और लाखों घोड़े रथ हाथियों के सवारोंसमेत मिलकर, नकुल, सहदेव और धर्मराज नरोत्तम युधिष्ठिर को चारोंओर से घेरकर रोक लिया। और राजा दुर्योधन दश सहस्र घोड़े के सवारों का यूथ पाण्डवों के बड़े युद्ध में भेजा। हे राजन्! वह युद्ध में गरुड़ के समान शीघ्रगामी उन पहुँचनेवाले

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घुड़चढ़ों से घायल पृथ्वी के कँपानेवाले शब्दों को करते हुए वर्त्तमान हुए, उस समय घोड़ों के खुरों के ऐसे महाशब्द सुने गये जैसे कि पर्वत में जलते हुए बांसों के बड़े वन में शब्द होते हैं, उस भूमि में घोड़ों के उछलने से ऐसी धूल उड़ी जिससे कि सूर्य का रथ ढकगया, फिर उन शीघ्रगामी घोड़ों की सेना से पाण्डवों की सेना ऐसी व्याकुल हुई जैसे कि गिरते हुए बड़े शीघ्रगामी हंसों से तड़ाग व्यथित होता है, वहां घोड़ों के हींसने के शब्द से कुछ नहीं जाना गया, इसके पीछे नकुल, सहदेव ने युद्ध में अपने वेग से सवारों के बड़ेभारी वेगों को ऐसे रोका जैसे कि वर्षाऋतु में पूर्णमासी के दिन अत्यन्त उमगे हुए पूर्णसमुद्र के जलवेग को समुद्र का किनारा रोकता है इसके पीछे इन रथियों ने गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से घोड़ों के सवारों को काटा और इनके काटते ही वह सब मर मरकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े, जैसे कि पहाड़ी वन में हाथियों से हाथी गिरपड़ते हैं फिर इन्होंने दशों दिशाओं में घूमते हुए अत्यन्त तीक्ष्ण प्रास और गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से शिरों को काटा, और दुधारा खड्गों से मरे हुए घोड़ों के सवारों ने शिरों को ऐसे त्याग करदिया जैसे कि बड़ा वृक्ष फलों को अलग करदेता है। उस युद्ध में सवारोंसमेत घोड़ों का नाश होगया अर्थात् सब ओर को इधर उधर गिरे और गिराये हुए देखने में आये, फिर घायल घोड़े भयभीत और पीड़ित होकर ऐसे भागे, जैसे कि प्राणों को प्रिय समझनेवाले मृग सिंह को देखकर महाव्याकुलता से भागते हैं, हे राजन्! इसरीति से पाण्डव लोगों ने सब शत्रुओं को विजय करके शङ्खों को बजाया और भेरी दुन्दुभियों को भी बजवाया इसके पीछे राजा दुर्योधन अपनी सेना को पराजित देखकर महादुःखी हो राजा मद्र से कहनेलगा कि हे महाबाहो! यह नकुल सहदेव समेत पाण्डुका बड़ा पुत्र राजा युधिष्ठिर युद्ध में तुम्हारे देखते हुए हमारी बड़ी सेना को घायल करके भगाता है, उसको तुम ऐसे रोको जैसे कि समुद्र को किनारा रोकता है, सदैव आप असह्य और महाबली सुने जाते हो इस आपके पुत्र के वचन को सुनकर वह प्रतापवान् शल्य बहुत से रथोंसमेत वहां गया जहां कि राजा युधिष्ठिर था, वहां जाकर शल्य की सेना अकस्मात् जाकर गिरी, तब महारथी पाण्डव धर्मराज ने उस बड़ी सेनासमेत राजा मद्र के महावेग को रोककर बड़ी शीघ्रतापूर्वक सात बाणों से घायल किया, इसीप्रकार से सात ही सात बाणों से नकुल, सहदेव ने भी घायल किया, फिर शल्य ने भी उन सब

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को तीन-तीन बाणों से घायल करके बड़े तीक्ष्ण साठ बाणों से राजा युधिष्ठिर को घायल किया और भ्रान्तियुक्त होकर उन दोनों नकुल, सहदेव को भी दो दो बाणों से व्यथित किया। इसके अनन्तर शत्रुहन्ता महाबली भीमसेन राजा को युद्ध में देखकर और काल के मुख में वर्त्तमान के समान राजा मद्र के आये हुए रथ को देखकर बड़े वेग से उस युद्ध में राजा युधिष्ठिर के पास जा पहुँचा, उसके पीछे पश्चिम ओर में नियत होकर सूर्य के चलने पर बड़ा घोर भयानक युद्ध जारी हुआ ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि षडधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०६ ॥

एकसौसातका अध्याय।

संजय बोले कि आपके पिता भीष्मजी ने बड़े कोप से तीक्ष्णधारके उत्तम बाणों करके सेनासमेत पाण्डवों को ऐसे घायल किया कि भीमसेन को बारह बाणों से, सात्यकी को नौ बाणों से, नकुल को तीन बाणों से और सहदेव को सात बाणों से, युधिष्ठिर को बारह बाणों से भुजा और छातीपर घायल कर धृष्टद्युम्न को व्यथित करके बड़े वेग से गर्जना की, फिर नकुल ने बारह बाणों से, सात्यकी ने तीन बाणों से, धृष्टद्युम्न ने सत्तर बाणों से, भीमसेन ने सात बाणों से, युधिष्ठिर ने बारह बाणों से पितामह को घायल किया, फिर द्रोण ने सात्यकी को और भीमसेन को घायल करके प्रत्येक को पांच-पांच तीक्ष्ण बाणों से व्यथित किया और दोनों ने तीन तीन बाणों से उन ब्राह्मणोत्तम द्रोणाचार्य को ऐसा घायल किया जैसे कि चाबकों से बड़े हाथी को घायल करते हैं सौबेर कितव पूर्वी, पश्चिमी और उत्तरी मालवी, अविषाह, शूरसेन, शिवय और वशातय ने युद्ध में भीमसेन को त्याग नहीं किया, इसीप्रकार नानाप्रकार के शस्त्रों को हाथ में रखनेवाले अनेक देशों से आये हुए दूसरे राजा लोग पाण्डवों के सम्मुख वर्त्तमान हुए, इस रीति से पाण्डवों ने चारोंओर से पितामह को घेरलिया फिर अनेक रथों से घिरे हुए उन अजेय शत्रुओं के वनों को अग्नि के समान जलाने वाले पितामह ने बड़े बड़े शूरवीर क्षत्रियों को भस्म करदिया और गृध्रपक्षयुक्त सुन्दर सुनहरी पुङ्खवाले अनेक प्रकार के नाराच नाम बाणों से उस सेना को भी ढककर बड़े असिधारवाले बाणों से रथियों के समूहों को गिराया और रथों के समूहों को भी मुण्ड तालवनों के समान करदिया फिर उस महाबाहु ने रथ, हाथी, घोड़ों को भी सवारों से रहित करदिया उसके धनुष की प्रत्यञ्चा का

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शब्द इन्द्रवज्र के समान शब्दायमान था उसके सुनने से सब जीवमात्र कम्पायमान होते थे और हे राजन्! उन आपके पितामह के बाण निष्फल नहीं गिरते थे अर्थात् भीष्म के धनुष से निकले हुए बाण कवच को काटकर देह में प्रवेश कर जाते थे, हमने शीघ्रगामी घोड़ों के मृतक शूरवीरवाले रथों को और चंदेरी काशी और कोश देशियों के चौदह हजार महारथी शूरवीर कुलीन युद्ध में देह के त्यागनेवालों को मुख फेरनेवाला देखा और हजारों वीरों को सुनहरी ध्वजायुक्त हाथी, रथ, घोड़ों समेत भीष्मजी के हाथसे मरेहुए परलोक के निमित्त देखा इनके सिवाय हजारों रथों को ऐसा देखा कि जिनके पहिये आदि अनेक रथों के अङ्ग टूट गये थे, और कवचोंसमेत गिराये हुए रथोंसमेत सवार जिनके कि बाण कवच टूटे हुए थे उनको भी देखा इस युद्ध में पिता ने पुत्र को, पुत्र ने पिताको भी मारडाला और प्रारब्ध के बल से प्रेरित मित्र ने प्रिय मित्रको भी मारा। फिर पाण्डवोंकी दूसरी सेना के मनुष्य कवचको उतार शिर के बालों को फैलाते हुए सब ओर को देखपड़े तब पाण्डवों की गौओं के सामन पृथक् पृथक् चलायमान सेना को रथ कूबर के समान पीड्यमान देखकर श्रीकृष्णजी रथ को रोककर अर्जुन से बोले कि हे अर्जुन! यह वह समय वर्त्तमान हुआ है जो तेरा अभीष्ट है, हे नरोत्तम! जो तू मोह से अज्ञान नहीं है तो अब प्रहार कर! हे वीर, भाई, अर्जुन! पूर्व समय में विराटनगर के मध्य में उन राजाओं के मिलने में जो तुमने संजय के सम्मुख कहा था कि मैं दुर्योधन की सब सेनासमेत उन भीष्म द्रोणाचार्य को सब साथियोंसमेत मारूंगा जो मुझसे लड़ेंगे, हे शत्रुओं के विजय करनेवाले अर्जुन! तू अपने उस वचन को सत्य कर, क्षत्रियधर्म को स्मरण करके दुःख को दूर करके युद्ध कर इसप्रकार वासुदेवजी के वचनों को सुनकर अर्जुन बहुत नम्र और अधोमुख होकर निस्पृह के समान यह वचन बोला कि अवध्य वृद्ध गुरु लोगों को मारकर अन्त में नरक का देनेवाला राज्य हो वा वनवास में दुःख हो अथवा अन्य मेरा कोईसा प्रयोजन सिद्ध हो आप घोड़ों को तीव्र करके जहां भीष्म हैं वहां रथ को लेचलिये मैं आपके वचन को करूंगा, वहां कौरवों के दुर्जय पितामह भीष्मजी को गिराऊंगा यह सुनते ही माधवजी ने चांदी के समान श्वेत घोड़ों को अच्छे प्रकार से चलायमान किया और जिस ओर को सूर्य के समान दुःख से देखने के योग्य बड़े प्रतापवान् भीष्मजी थे वहां पहुँचे उसके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पीछे युधिष्ठिर की वह बड़ी सेना भी जो उस युद्ध में भीष्म के लिये तैयार थी अर्जुन को देखकर फिर लौट आई तदनन्तर सिंह के समान वारंवार गर्जना करते कौरवों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने अपने बाणों की वर्षा से शीघ्र ही अर्जुन के रथ को ढक दिया तब क्षणभर में ही उसका रथ घोड़े और सारथीसमेत भीष्म के बाणोंकी वर्षा से दिखाई नहीं दिया। इसके अनन्तर भ्रान्ति में भरेहुए शीघ्रता करनेवाले वासुदेवजी ने धैर्यता में नियत होकर, उन घोड़ों को जोकि भीष्मके बाणों से व्यथित थे अत्यन्त तीव्र किया और अर्जुन ने बादल के समान दिव्य धनुष को लेकर अपने तीक्ष्ण बाणों से भीष्मजी के धनुष को काटकर पृथ्वीपर गेरा फिर धनुष टूटे हुए आप के पिता ने निमिषमात्रमें ही दूसरे धनुष को तैयार किया और उस बादल के समान शब्दायमान धनुष को अपनी दोनों भुजाओं से खींचा, फिर अर्जुन ने उनके उस धनुष को भी काटा। शन्तनु के पुत्र भीष्म ने उसकी उस हस्तलाघवता की बड़ी प्रशंसा की कि हे महाबाहो,कुन्तीके पुत्र! बहुत अच्छा बहुत अच्छा इसप्रकार की वार्त्ता करके दूसरे उत्तम धनुषको लेकर बाणों को अर्जुनके रथपर फेंका वहां वासुदेवजी ने घोड़ों के चलाने में अपने बड़े बल को दिखाया। फिर भीष्म के बाणों से घायल वह दोनों नरोत्तम उनके बाणों को निष्फल करते मण्डलों को दिखाते हुए ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि सींगों के प्रहारों से छिन्नभिन्न चिह्नित किये हुए गो वृषभ अर्थात् बली बर्द होते हैं, फिर वासुदेवजी ने अर्जुन के मृदुयुद्ध को और पाण्डवों की सेनापर बड़ी तीव्रता से बाणों की वर्षा करते और दोनों सेनाओं के मध्यवर्त्ती सूर्य के समान तपाते और पाण्डवों के बड़े बड़े शूरवीरों को मारते हुये युधिष्ठिर की सेना में प्रलय मचाते भीष्मको देखकर, क्षमा न करनेवाले शत्रुहन्ता माधव वासुदेवजी अर्जुन के श्वेतघोड़ों को छोड़कर बड़े रथ से उतर हाथ में चाबुक लिये सिंहके समान वारंवार गर्जते चरणों से पृथ्वी को विदीर्ण करते क्रोध से रक्तनेत्र किये मारने के उत्सुक आपके शूरवीरों को भयभीत करते बड़े तेजस्वी जगत्कर्त्ता बड़े वेग से भीष्म के सम्मुख गये, हे राजन्! भीष्मजी के सम्मुख वर्त्तमान माधवजी को देखकर उस युद्धमें जहां तहां भयभीत लोग ऐसी ऐसी वार्त्ता करने लगे कि भीष्म मारागया मारागया पीताम्बरधारी नीलमणि के समान रंगवाले जनार्दनजी भीष्मकी ओर दौड़ते हुए ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि विद्युतरूप मालाधारी बादल होता है और जैसे कि समूह का स्वामी सिंह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उत्तम हाथीकी ओर दौड़ता है, उसी प्रकार यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी गर्जना करते तीव्रता से भीष्म के सम्मुख गये, युद्ध में आते हुए उन कमलदल-लोचन को देखकर भीष्म ने सावधानचित्त होकर बड़े धनुष को खींचकर बड़ी स्थिरचित्तता से उनको हाथ जोड़कर कहा हे पुण्डरीकाक्षजी! आप आइये आइये हे देवदेव! आपको नमस्कार है हे यादवेन्द्र! अब मुझको आप इस महायुद्ध में गिराओ, हे निष्पाप, श्रीकृष्णजी! युद्ध में आपके हाथ से मुझ मारे हुए का भी सब ओर से बड़ा कल्याण होता है, हे गोविन्दजी! अब मैं युद्ध में तीनों लोक से प्रतिष्ठा पाया गया हूं हे निष्पाप! मैं आपका निस्सन्देह दास हूं आप इच्छाके समान प्रहार करो, इसके अनन्तर पीछे पीछे जानेवाले अर्जुन ने केशवजी के पास जाकर अपनी दोनों भुजाओं से उन महाबाहुको दाबकर पकड़लिया, अर्जुन से पकड़े हुए कमललोचन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी इसको लेकर बड़ी शीघ्रता से चले, फिर शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले अर्जुन ने बड़े बल से किसीप्रकार करके दशवें ही चरणपर दोनों चरणों को पकड़ लिया, तदनन्तर पीड्यमान सखा अर्जुन उन क्रोध से व्याकुल सर्प के समान श्वास लेनेवाले श्रीकृष्णजी से यह वचन बोला हे महाबाहो, श्रीकृष्णजी! आप लौटिये और अपने उस वचन को और सत्य को न छोड़िये जो आपने कहा था कि हम नहीं लड़ेंगे क्योंकि हे माधव! जो तुम ऐसा करोगे तो संसार आपको मिथ्यावादी कहेगा यह सब काम मेरा है मैं पितामह को मारूँगा, हे केशव! मैं शस्त्रसत्यता और अपने उत्तम कर्म की शपथ खाता हूँ कि मैं शत्रुओं को मारकर जीतूँगा आप इसी समय इस महादुर्जय भीष्म को गिरा हुआ ऐसे देखोगे जैसे कि युग के अन्त प्रलय में दैवइच्छासे चन्द्रमा गिरता है यह सुनकर क्रोधभरे माधवजी अर्जुन से कुछ न बोलकर रथपर सवार हुए फिर शन्तनु के पुत्र भीष्म ने उन दोनों रथपर सवार नरोत्तमों पर ऐसे बाणों की वर्षा करी जैसे कि पर्वत पर बादल जल को बरसाते हैं, उन आपके पिता देवव्रत ने शूरवीर लोगों के प्राणों को ऐसे लिया जैसे कि शिशिरऋतु अर्थात् माघ फाल्गुन में सूर्य तेजों को आकर्षण करता है, और जैसे कि पाण्डवों ने कौरवों की सेना को छिन्नभिन्न किया उसीप्रकार आपके पिताने भी पाण्डवोंकी सेनाको अस्तव्यस्त कर दिया, मृतक और भागेहुए असाहसी व अचेत पाण्डवों की सेना युद्ध में अद्वितीय भीष्मके देखनेको भी ऐसे समर्थ नहीं हुई जैसे कि मध्याह्नवर्ती अपने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तेजसे तपानेवाले सूर्य को नहीं देखसक्के अर्थात् वह पाण्डवों के हज़ारों मनुष्य भीष्म से घायल होगये हे महाराज! भयसे दुःखी हुए पाण्डवों ने दृष्टिकी वीक्षा करी हे भरतवंशिन्! इस प्रकार से भगी हुई पाण्डवों की सेना ने ऐसे अपना रक्षक कोई नहीं पाया जैसे कि कीच में फँसी हुई गौ का कोई रक्षक नहीं होता है और युद्ध में वह निर्बल सेना बड़े बली के हाथ से चेंटियों के समान घायल हुई उस महारथी दुर्जय बाणरूपी किरणरखनेवाले राजाओं के तपानेवाले सूर्य की समान भीष्म के देखने को कोई समर्थ नहीं हुआ फिर सूर्य अस्ताचल को प्राप्त हुए तदनन्तर परिश्रम से थकी हुई सेनाओं के मन का विश्राम हुआ अर्थात् युद्ध समाप्त हुआ ॥ ८४ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सप्ताधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०७ ॥

एकसौ आठका अध्याय।

दशवेंदिनके युद्ध का प्रारम्भ ॥

संजय बोले कि, युद्ध करते हुए सूर्य के अस्त होने के समय भयकारी संध्या वर्त्तमानहुई और युद्ध करना सब ओर से बंद हुआ, इसकेपीछे राजा युधिष्ठिरने संध्या को देखकर और भीष्म के हाथ से घायल शस्त्र त्यागनेवाली भय से महाव्याकुल व शत्रुओं से घिरी भागने की इच्छा करनेवाली अपनी सेना को जान और युद्ध में क्रोधित पीड़ादेनेवाले महारथी भीष्म को देख सोमकों को साहसरहित पराजयरूप जानकर बड़ी चिन्तापूर्वक विश्राम को चाहा, अर्थात् अपनी सेना को विश्राम कराया इसी प्रकार आपकी भी सेना का विश्राम हुआ, हे कौरवोत्तम, धृतराष्ट्र! फिर युद्ध में घायलशरीरवाले महारथी वहां पर सेनाओं का विश्राम करके स्थित हुए और युद्ध में भीष्म के कर्म को शोचते उनके बाणों से अत्यन्त पीड्यमान पाण्डवों ने शान्ति को नहीं पाया और चिन्ता से व्याकुल ही रहे फिर भीष्म भी पाण्डवोंसमेत सृंजयों को विजय करके आपके पुत्रों से पूज्य और स्तुतिमान् होकर, चारों ओर से प्रसन्नरूप कौरवोंसमेत निवासस्थान में वर्त्तमान हुए तिस पीछे सब जीवमात्रों को प्रसन्न करनेवाली रात्रि वर्त्तमान हुई, उस घोर रात्रि के प्रारम्भ में दुर्जय पाण्डव सृंजय और वृष्णी लोग सलाह करने के लिये बैठे उन सावधान मन्त्र के निश्चय में पण्डित सब महाबलियों ने अपने कल्याण को विचार किया, इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने बहुत विलम्बतक विचारांश करके वासुदेवजी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को देखकर यह वचन कहा, कि हे श्रीकृष्णजी ! जैसे कि हाथी कमल के वनों को मर्द्दन करता है इसी प्रकार से मेरी सेना के मर्द्दन करनेवाले भय के उत्पन्न-कर्त्ता महात्मा भीष्म को देखो, कि इस अत्यन्त प्रबल अग्नि के समान सेनाओं के चाटनेवाले महात्मा के देखने को हम सब समर्थ नहीं होते हैं, जैसे कि बड़ा विष भरा तक्षक नाग होता है इसी प्रकार के यह युद्ध में क्रोधित महाते-जस्वी शस्त्रधारी भीष्म हैं, युद्ध में धनुष हाथ में लिये तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते क्रोधरूप यमराज और वज्रधारी इन्द्र को व पाशधारी वरुण और गदाधारी कुबेर को भी विजय करना संभव है परन्तु महायुद्ध में क्रोधसंयुक्त भीष्मजी का विजय करना महाकठिन और असंभव है, हे श्रीकृष्णजी ! मैं अपनी बुद्धि की अल्पज्ञता से युद्ध में ऐसी दशा के द्वारा भीष्म को पाकर शोकसमुद्र में डूबा हुआ हूँ हे अजेय ! मैं वन को जाऊँगा निश्चय करके मेरा कल्याण वन ही में वर्त्तमान है हे माधव ! मैं युद्ध को अच्छा नहीं समझता हूँ क्योंकि भीष्मजी सदैव हमारे शूरवीरों को मारते हैं, जैसे कि पतंगपक्षी बड़ी देदीप्यमान अग्नि की ओर को दौड़ता हुआ एक साथ भस्म होता है इसी प्रकार हम अग्निके समान भीष्मको भी देखते हैं कि जो इसकी ओर को गया वही भस्म हुआ हे श्रीकृष्णजी ! राज्य के निमित्त पराक्रम करनेवाला मैं नाश होनेमें ही हूँ और मेरे शूरवीर भाई भी शायकों से अत्यन्त पीड्यमान हैं, हे मधुसूदनजी ! वह मेरे भाई भायपपने की प्रीति से मेरे ही कारण राज्य से भ्रष्ट होकर वन को गये और मेरेही कारण से द्रौपदी भी महादुःखमें पड़ी, मैं जीवन को बहुत मानता हूँ वह जीवन अब दुःख से प्राप्त होने के योग्य है अब मैं बाकी रही हुई अवस्था से उत्तम धर्म को करूँगा, हे केशवजी ! जो मैं भाइयोंसमेत आपका कृपापात्र हूँ तो अपने धर्मकी अविरोधता से मेरे हित को करो, इस प्रकार के उसके विस्तारयुक्त वचनों को सुनकर बड़ी करुणा से श्रीकृष्णजी युधिष्ठिर को विश्वा-सित करके यह वचन बोले, हे धर्मपुत्र, सत्यसंकल्प ! तुम व्याकुलता को मत करो तेरे शूरवीर दुर्जयभाई शत्रुओं के मारनेवाले हैं, अर्जुन और भीमसेन वायु और अग्नि के समान तेजस्वी हैं और दोनों नकुल और सहदेव देवताओं के ईश्वर भगवान् इन्द्र के समान पराक्रमी हैं, हे पाण्डव ! तुम मुझको आज्ञा दो कि मैं भी तुम भाइयों की प्रीति से भीष्म के साथ लड़ूँगा हे राजन्, युधिष्ठिर ! जो तुम मुझको भी युद्ध में प्रवृत्त करोगे तो मैं भी उस महायुद्ध में सब कुछ करसक्ता

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हूं, जो अर्जुन नहीं चाहता है तो मैं पुरुषोत्तम भीष्म को बुलाकर धृतराष्ट्र के पुत्रों के देखते हुए ही मारूँगा, हे पाण्डव ! जो तू वीर भीष्म के मरनेपर ही विजय देखता है तो मैं एक ही रथके द्वारा कौरवों के वृद्ध पितामहको मारूँगा हे राजन् ! तुम युद्ध में महेन्द्र के समान मेरे पराक्रम को देखो मैं बड़े बड़े अस्त्रों को छोड़-कर उसको रथ से गिराऊँगा, क्योंकि जो पाण्डवों का शत्रु है वह मेरा भी शत्रु है जो तुम्हारे निमित्त धनआदि हैं वह मेरे हैं और जो मेरे हैं वह तुम्हारे हैं आप का भाई मेरा मित्र और सम्बन्धी होकर शिष्य भी है हे युधिष्ठिर ! मैं अर्जुन के निमित्त अपने मांस को भी काटकर देसक्ता हूं, और वह नरोत्तम अर्जुन भी मेरे निमित्त जीवन को त्याग करसक्ता है हे तात ! हमारा यह नियम है कि हम परस्पर के दुःख से छूटें, सो तुम मुझको युद्ध करने की आज्ञा दो पूर्व में जो अर्जुन ने प्रतिज्ञा करी है उसको पहले से चाहरहे हैं कि मैं सब लोक के सम्मुख गाङ्गेय भीष्म को मारूँगा उस बुद्धिमान् अर्जुन का यह वचन रक्षा करने के योग्य है, मुझको अर्जुन का प्रण पूरा करना योग्य है यह निस्सन्देह है कि वह शत्रुओं का विजय करनेवाला अर्जुन युद्ध में अवश्य भीष्म को मारेगा अथवा युद्ध में अच्छी रीति से प्रवृत्त होकर असंभव कठिन कर्मों को भी करेगा, यह अर्जुन युद्ध में क्रोधित होकर देवता और दैत्योंकोभी मारसक्ता है तो हे राजन् ! भीष्मका मारना इसको कितनी बड़ी बात है, निश्चय करके महापराक्रमी शन्तनु का पुत्र भीष्म विपरीतता और निर्बलता से थोड़ी आयुर्दाय रखनेवाला होकर करने के योग्य कर्म को नहीं जानता है युधिष्ठिर बोले हे महाराज, महाबाहो ! आपका यह सब कथन यथार्थ ही है निश्चय करके आपका वेग किसीके सहने के योग्य नहीं है, इसको अपने मन की इच्छा के अनुसार मैं अवश्य प्राप्त करूँगा जब कि आप सरीखे कृपानिधि हमारे पक्षपर खड़े हैं हे महाविजयस्वरूप, गोविन्दजी ! तुम सरीखे अपने नाथ के साथ होकर युद्ध में सब देवताओंसमेत इन्द्र को भी हम विजय करसक्ते हैं तो इन महारथी भीष्मजी का विजय करना कितनी बात है मैं आपको मिथ्यावादी करना योग्य नहीं समझता हूँ हे माधवजी ! आप युद्ध किये विना ही अपने स्वाभाविक बल पुरुषार्थ से अपने वचन के अनुसार हमारी सहायता करो, भीष्म ने मुझ से प्रण किया है कि युद्ध में सलाह करूँगा परन्तु तेरे अर्थ कभी न लड़ूँगा, मैं दुर्योधन के ही लिये लड़ूँगा इसमें सन्देह नहीं है कि वह भीष्मजी मुझको राज्य की सलाह के देनेवाले हैं इस कारण से हम स

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मिलकर आपको साथ लेकर उनके शरीर के मारने के निमित्त उस देवव्रत के पास चलें, हे जनार्द्दनजी! वह हमसे हमारे अभीष्ट सत्य सत्य वचनों को कहेंगे और जैसा वह कहेंगे वैसा ही हम युद्ध में करेंगे, वह दृढ़व्रत भीष्म हमारी विजय और कीर्तिका देनेवाला होगा क्योंकि पिता करके विहीन हम बालकों को उन्हीं ने सब प्रकार से भरण पोषण करके इतना बड़ा किया है हे माधवजी! जो मैं अपने पिता के भी पिता वृद्ध भीष्मपितामह को मारना चाहता हूँ ऐसे क्षत्रिय-धर्म को और क्षत्रियों की जीविका को धिक्कार है, संजय बोले कि, हे महाराज! फिर श्रीकृष्णजी कौरवनन्दन युधिष्ठिर से कहने लगे कि हे बड़ेज्ञानी राजेन्द्र! तेरा कहना मुझको अच्छा लगता है, शुभकर्मी देवताओं के बराबर व्रत रखनेवाला जो दृष्टि से भी दूसरे को भस्म करसक्ता है उस भीष्म के पास उसीसे उसके मारने का उपाय पूछने के निमित्त जाओ, वह तेरे पूछनेपर तुझसे सत्य ही सत्य कहेगा इससे हमसब मिल कर उन कौरवों के पितामह के पास पूछने के हेतु से चलें, हे भरतवंशिन्! हम वृद्ध भीष्म से मिलकर सलाह को पूंछें वह हम को जो सलाह देगा उसी के अनुसार हम शत्रुओं से युद्ध करेंगे, हे पाण्डु के बड़े भाई धृतराष्ट्र! वह वीर पाण्डव इस रीति से सलाह करके सब मिले हुए वासुदेवजीसमेत शस्त्रों से रहित होकर उस भीष्म के डेरों में प्रवेश करके उनको बड़ी नम्रतापूर्वक प्रणाम किया, हे राजन्! इस रीति से श्रीकृष्णसमेत पाण्डव लोग शिर से प्रणाम करते हुए भीष्मजी के समीप बैठनेके स्थानों में पहुँचे, तब कौरवोंके पितामह महाबाहु भीष्मजी श्रीकृष्णजी से बोले कि हे कृष्ण! आपका आना शुभदायक हो और हे अर्जुन! तेरा भी आना सफल हो, और युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव का भी आना मङ्गलकारी हो, यह कहकर कहा कि अब मैं तुम्हारी प्रीति का बढ़ानेवाला कौनसा तुम्हारा शिष्टाचार करूं मैं तुम्हारे दुःख से भी करने के योग्य हित को आत्मासे करने को उपस्थित हूं इस प्रकार के प्रीति-पूर्वक वारंवार वचन कहनेवाले गाङ्गेय भीष्मजी से महादुःखीचित्त युधिष्ठिर बड़ी प्रीति में डूबकर यह वचन बोला कि हे सर्वज्ञ! हम कैसे सबको विजय करें और कैसे राज्य को पावें, और किस रीति से प्रजालोगों का नाश न हो हे प्रभो! इसको हमसे कहिये और अपने भी मरण का उपाय हमको बताइये हे महावीर! हम युद्धमें कैसे आपको सहसकें हे हमसबके पितामह! आपके किसी सूक्ष्म दोष को भी हम नहीं जानते, तुम सदैव युद्ध में धनुषमण्डल के साथ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ही देखपड़ते हो हे महाबाहो! हम लोग आपको धनुष चढ़ाते, बाण लेते, संधानते और द्वितीय सूर्य के समान रथपर सवार होते हुए भी नहीं देखसक्के हैं हे शत्रुओं के वीरलोगों के मारनेवाले, हे रथ घोड़े मनुष्यों के मारनेवाले, हे भरतर्षभ! अब किस पुरुष की सामर्थ्य है जो आपको युद्ध में विजय कर सके आपने अपने बाणों की वर्षा करके युद्ध में प्रलय मचाकर मेरी बड़ी सेना का नाश किया है अब जैसी रीति से हम तुमको युद्ध में विजय करके राज्यको पावें और मेरी सेना बचे हे पितामह! वही आपको कहना योग्य है इसके अनन्तर पाण्डु के पिता भीष्मजी सब पाण्डवों से बोले, कि हे सर्वज्ञ, युधिष्ठिर! मेरे जीवते हुए युद्ध में जैसे कि विजय नहीं होती है उसको मैं तुझ से कहता हूं हे पाण्डवलोगो! युद्ध में मेरे विजय होने पर युद्ध के ही द्वारा तुम शत्रुओं को विजय करोगे जो युद्ध में विजय चाहते हो तो शीघ्र ही मुझपर प्रहार करो, हे कुन्ती के पुत्रलोगो! मैं तुमको आज्ञा देता हूँ तुम आनन्द से मेरे ऊपर प्रहार करो मैं इसरीति के कर्म को बहुत उत्तम मानता हूं और मुझ को तुम अच्छी रीति से जानते हो कि मेरे ही मरने पर शत्रुओं की सब सेना अल्पही काल में मारी जायगी इस हेतुसे तुम ऐसा कर्म करो, युधिष्ठिर बोले कि वह उपाय बतलाइये जिससे कि दण्ड हाथ में लिये मृत्युके समान युद्ध में क्रुद्धरूप आपको विजय करें, वज्रधारी इन्द्र, वरुण, कुबेर और यमराज भी विजय करने को योग्य हैं परन्तु आप युद्ध में देवेन्द्रसमेत देवता और असुरोंसे भी विजय करने के योग्य नहीं हैं, भीष्मजी बोले हे महाबाहो, पाण्डव! जो तू कहता है वह सत्य हीहै यथार्थमें मुझको इन्द्रसमेत देवता और असुर भी विजय करनेको समर्थ नहीं होसक्के, जो कि शस्त्रों का धारण करनेवाला युद्ध में कुशल उत्तम धनुष का खैंचनेवाला मैं हूं इसहेतु से यह सब महारथी मुझ शस्त्रों के त्यागनेवाले को मारें, शस्त्र त्यागनेवाले पृथ्वीपर पड़े कवच और ध्वजा से रहित भगे हुए भयभीत और शरण में आयेहुए व स्त्री के समान नाम रखनेवाले व्याकुल व एक पुत्रवाले से अथवा नीच मनुष्य के साथ युद्ध करना मैं उत्तम नहीं समझता हूं, हे राजेन्द्र! पूर्व विचार किये हुए मेरे इस संकल्प को सुनो कि मैं अमंगलरूप ध्वजा को देखकर कभी नहीं लड़ता हे राजन्! तेरी सेना में यह द्रुपद का बेटा महारथी युद्ध में क्रोधरूप शूरवीर युद्ध को जीतनेवाला शिखण्डी नाम है यह जैसे कि स्त्री हुआ और पीछे से पुरुष के चिह्न पाये इसका जैसा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कि वृत्तान्त है उसको तुम भी जानते हो, शूरवीर युद्ध में शस्त्रों से अलंकृत अर्जुन शिखण्डी को आगे करके विशिख नाम तीक्ष्ण बाणों से मेरे सम्मुख जो आवे तो धनुष बाण हाथ में लिये हुए भी उस अमंगली ध्वजावाले व पूर्व में स्त्रीरूप रखनेवाले पर मैं किसी दशा में भी प्रहार करना नहीं चाहता हूं, हे राजेन्द्र, युधिष्ठिर! उस सेना को पाकर शीघ्र ही पाण्डव अर्जुन मुझे चारों ओर बाणों से मारे, मैं सब लोकों में महानुभाव श्रीकृष्णजी और पाण्डव अर्जुन के सिवाय किसी को नहीं देखता हूं जो मुझ युद्ध में प्रवृत्त को विजय करसके, इस कारण यह शस्त्रधारण करनेवाला और उत्तम धनुषधारी अर्जुन किसी दूसरे को मेरे आगे नियत करके, मुझको मारे निश्चय करके इस रीति से तेरी विजय है हे सुन्दरव्रत, युधिष्ठिर! तुम इस मेरे वचन को प्रतिपालन करो और युद्ध में सम्मुख होनेवाले सब धृतराष्ट्र के पुत्रों को मारो, संजय बोले कि इन वार्त्तालापों के पीछे वह पाण्डव लोग सब बातों को जानकर भीष्मजी को दण्डवत् करके अपने डेरोंको गये, परलोक जानेको उत्सुक दीक्षा किये हुए गाङ्गेय भीष्मजी के इस प्रकार कहने पर दुःख से शोचग्रस्त अर्जुन बड़ी लज्जा से यह वचन बोला, हे माधवजी! मैं युद्ध में कुल के वृद्ध महाज्ञानी बुद्धिमान् कौरवों के पितामह भीष्मजी के साथ कैसे युद्ध करूँगा हे वासुदेवजी! बाल्यावस्था में खेलते हुए धूलिभरे देह से मैंने बड़े साहसी पितामह को धूलि में मिलाया, निश्चय करके हे श्रीकृष्णजी! मुझ बालक ने जिसकी बगल में चढ़कर अपने पिता महात्मा पाण्डु के पिता को तात कहा है, हे माधवजी! जिसने बाल्यावस्था में मुझको कहा था कि मैं तेरे पिता का तात हूं तेरा तात नहीं हूँ उसको मैं किस प्रकार से मारने के योग्य हूँ, वह अपनी इच्छा के अनुसार मेरी सेना को मारे परन्तु उस महात्मा के साथ नहीं लड़ूँगा मेरी विजय होय व मृत्यु हो हे श्रीकृष्णजी! चाहो आप मुझे किसी प्रकार से जानो, वासुदेवजी बोले कि हे विजय करनेवाले, अर्जुन! तुम पूर्वसमय में युद्ध के बीच भीष्म के मारने का प्रण करके क्षात्रियधर्म में नियत हुए हो सो तुम कैसे उसको नहीं मारोगे, हे अर्जुन! इस युद्ध में दुर्मद क्षात्रिय को रथ से गिराओ तुम युद्ध में गङ्गापुत्र को विना मारे संसार में विजय और कीर्त्ति को नहीं पाओगे, आगे के समय में देवताओं ने देखा था कि तुम यमलोक को जावोगे सो हे अर्जुन! वह यह बात है मिथ्या नहीं है, तेरे सिवाय आप वज्रधारी इन्द्र भी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इस महाबली मृत्यु के समान अजय भीष्म से लड़ने के लिये कोई समर्थ नहीं है, इससे तू स्थिर होकर भीष्म को मार और इस मेरे वचन को सुनकर जैसे कि पूर्वकाल में बड़े बुद्धिमान् बृहस्पतिजी ने इन्द्र से कहा था कि अपने मारनेवाले उस आततायी आनेवाले को मारे चाहे वह गुणों से भरा हुआ कुलका वृद्ध भी हो हे अर्जुन ! युद्ध करना, रक्षा करना, दूसरे के गुणों में दोष लगानेवाले का पूजन करना यह क्षत्रियों का सनातनधर्म चलाआया है, अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी ! शिखंडी भीष्मजी का अवश्य काल होगा क्योंकि भीष्मजी उस पाञ्चालदेशीय शिखण्डी को युद्ध में देखकर सदैव लौटजाते हैं, इससे हम शिखण्डी को उसके सम्मुख करके युक्तियों से उस गाङ्गेय भीष्म को युद्ध में अवश्य मारेंगे यह मेरा मत है, मैं अपने शायकों से अन्य बड़े बड़े धनुषधारियों को रोकूंगा और शिखण्डी बड़े युद्धकर्त्ता भीष्म के ही आगे युद्ध को करे, मैंने उन कौरवेन्द्र भीष्मजी के ही मुख से सुना है कि मैं शिखण्डी को नहीं मारूंगा निश्चय यह पूर्व समय में कन्या होकर पुरुष बना है, इसप्रकार से पाण्डवलोग अपने बांधवोंसमेत निश्चय को करके और महात्माओं का प्रतिष्ठापूर्वक स्तुति पूजन करके प्रसन्नचित्त अपने २ डेरोंको गये ॥ १०६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वण्यष्टोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १०८ ॥

एकसौनौ का अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि शिखण्डी युद्ध में किस रीति से गाङ्गेयजी को उल्लङ्घन करके कर्म को करता हुआ और भीष्मजी किस रीति से पाण्डवों को उल्लङ्घन करते भये हे संजय ! इसको मुझे समझाकर कहो संजय बोले कि प्रातःकाल सूर्योदय के समय भेरी, मृदंग, ढोल आदि बाजों के बजने और चारों ओर से दधिवर्ण शंखों के बजने पर वह सब पाण्डव शिखण्डी को आगे करके युद्धभूमि में गये, हे महाराज, राजन्, धृतराष्ट्र ! सब शत्रुओं के नाश करनेवाले व्यूह को करके सब सेनाओं के आगे शिखण्डी हुआ, इसके पीछे भीमसेन और अर्जुन उसके चक्र के रक्षक हुए और द्रौपदी के बेटे और पराक्रमी अभिमन्यु पीछे की ओर हुए, फिर सात्यकी चेकितान और उनके पीछे पाञ्चालदेशियों से रक्षित महारथी धृष्टद्युम्न उनका रक्षक हुआ इसके अनन्तर नकुल सहदेव समेत सबका प्रभु राजा युधिष्ठिर सिंहनादों को करता हुआ चला, उसके पीछे राजा विराट् अपनी सेना को साथ लेकर चला हे महाबाहो ! उसकेपीछे राजा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

द्रुपद चला, फिर पांचों भाई केकय और पराक्रमी धृष्टकेतु ने पाण्डवी सेना के जङ्घास्थान को रक्षित किया, इस रीति से पाण्डव लोग अपने बड़े व्यूह को रचकर और अपने जीवन की आशा को त्यागकर युद्धभूमि में आपकी सेना के सम्मुखआये हे महाराज! इसीप्रकार से कौरवलोग भी सब सेनाओं के आगे महारथी भीष्म को करके पाण्डवों के सम्मुख गये, वह अजेय भीष्म आपके शूरवीर पुत्रों से रक्षित थे उनके पीछे बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य और उनका महाबली पुत्र था, इसके पीछे हाथियोंकी सेनासमेत राजा भगदत्त और इसकी रक्षामें कृपाचार्य और कृतवर्मा थे, इसकेपीछे राजा काम्बोज सुदक्षिण जयत्सेन राजा मगध शकुनि और बृहद्बल थे, हे राजन्! इसीप्रकार सुशर्मा आदि अन्य बड़े धनुषधारी राजाओंने आपकी सेनाके जघनस्थान को रक्षितकिया, प्रत्येक दिनके वर्तमान होने पर शन्तनु के पुत्र भीष्मने युद्धके भीतर आसुर पैशाच और राक्षस व्यूहों को अलंकृत किया, हे भरतवंशिन्! उसके पीछे परस्पर में मारते हुए आपके पुत्रों का और पाण्डवों का यमराज के देशकी वृद्धि करने-वाला महाघोर युद्ध जारी हुआ अर्जुन आदि पाण्डव शिखण्डी को आगे करके नानाप्रकार के बाणोंकी वर्षा करतेहुए युद्ध में भीष्म के सम्मुख वर्तमान हुए, वहां आपके शूरवीर भीमसेन के बाणों से घायल रुधिर में डूबेहुए परलोकको सिधारे और महारथी सात्यकी, नकुल, और सहदेव ने आपकी सेनाको पाकर अपने पराक्रम से पीड्यमान किया हे राजन्! युद्ध में घायल वह आपके शूरवीर पाण्डवों की बड़ी सेना के रोकने को समर्थ नहीं हुए, फिर आपकी सेना चारों ओर से घायल दशो दिशाओं में पृथक् पृथक् होकर महारथियों के हाथसे अधिक व्याकुल होकर भागी, हे भरतर्षभ! पाण्डवों के तीक्ष्ण बाणों से घायल सृंजियोंसमेत आपके शूरवीरों ने कोई अपना रक्षक नहीं पाया, धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय! पराक्रमी भीष्म ने पाण्डवों के हाथ से पीड्यमान सेना को देखकर युद्ध में क्रोधरूप होकर जो जो किया उसको मुझसे कहो, वह शत्रुसन्तापी वीर सोमकों को मारता हुआ युद्ध में कैसे पाण्डवों के सम्मुख गया उसको भी हे निष्पाप! मुझसे वर्णन कर, संजय बोले कि हे महाराज! जो पाण्डवों से और सृंजियों से पीड़ित आपकी सेना को देखकर जो जो आपके पिताने किया उसको मैं कहता हूं, हे पाण्डु के बड़े भाई! वह अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूर पाण्डव आपके पुत्र की सेनाको मारते हुए सम्मुख वर्तमानहुए, तब

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भीष्मजी ने शत्रुओं के हाथ से पीड़ित मनुष्य, हाथी, घोड़ों के नाश को देख कर नहीं सहा और उस बड़े धनुषधारी अजेय ने अपने जीवन को त्याग करके वत्सदन्त अञ्जलिक सत नाम बाणों से पाण्डवों के ऊपर वर्षाकरी हे राजन्! उस शस्त्र उठानेवाले ने युक्ति से पाण्डवों के अत्यन्त प्रबल पांच महारथियों को शायक नाम बाणों से व नानाप्रकार के क्रोध से छोड़े हुए अस्त्रों से रोका, हे पुरुषोत्तम! इसके विशेष उन्होंने असंख्य हाथी घोड़े और रथसे रथियोंको भी गिराया, शत्रुओं के विजय करनेवाले घोड़े के सवारों को घोड़ों की पीठ से और हाथी के सवारों को हाथी की पीठ से और सम्मुख आनेवाले पदातियों को भी गिराया, फिर युद्ध में शीघ्रता करनेवाले महारथी अकेले भीष्म के सम्मुख पाण्डवलोग ऐसे हुए जैसे कि असुर लोग वज्रधारी इन्द्रके सम्मुख हुए थे, वहां इन्द्रवज्र के समान बाणों को छोड़ते हुए भीष्मजी सब दिशाओं में महाभयानक रूपको करते हुए देख पड़े और इनका धनुष भी इन्द्रधनुष के समान मण्डलरूप दृष्टिगोचर हुआ, हे राजन्! आपके पुत्रों ने युद्धमें उस कर्म को देखकर बड़े आश्चर्यमें होके पितामह की प्रशंसा करी, और पाण्डवों ने उदास होकर युद्ध में लड़ते हुए आपके शूर पिता को ऐसा देखा जैसे असुरलोगों ने विप्रचित्ती को देखा था, दशवें दिन के वर्त्तमान होने पर इस मृत्यु के समान भीष्म को शिखण्डी की रथवाली सेना ने नहीं रोका, जैसे कि अग्नि वन को जलाताहै उसीप्रकार शिखण्डी ने अपने तीक्ष्ण बाणोंसे सेना को भस्मकरके अपने तीन बाणों से उसकी छाती को घायल किया ४० जोकि कालपुरुष की उत्पन्नकी हुई मृत्यु और डाढ़में विष धारण करनेवाले सर्पकी समान क्रोधी महाबली भीष्म थे वह महाधनुर्धारी अपने को शिखण्डी से घायल देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्ध को न चाहकर हँसतेहुए यह वचन बोले कि तू इच्छा के समान युद्धकर चाहै न कर परन्तु मैं किसीप्रकार से भी तुझ से नहीं लड़ूँगा, क्योंकि निश्चय करके ईश्वर से उत्पन्न की हुई तू वही शिखण्डिनी है भीष्म के इस वचन को सुनकर क्रोधमें भरा हुआ शिखण्डी होठों को चबाता हुआ भीष्मजी से बोला कि हे महाबाहो! क्षत्रियों के नाश करनेवाले मैं तुझको जानता हूँ, और तेरा परशुरामजी के साथ युद्ध करना भी सुना और बहुत सा तेरा दिव्य प्रभाव सुना, हे नरोत्तम! अब मैं तेरे प्रभावको जानताहुआ भी पाण्डवोंके और अपने प्रयोजन को सिद्ध करने के निमित्त तुझसे लड़ूँगा, और युद्ध में संग्राम करके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अवश्य तुझको मारूँगा यह तेरे आगे सत्य २ शपथ करताहूं मेरे इस वचनको सुनकर जो तुझे करना उचित हो उसे अवश्य कर इच्छा के अनुसार चाहै युद्ध कर या न कर तू मेरे हाथ से जीवता न छूटेगा, हे युद्ध में विजय करनेवाले, भीष्म ! तुम इस लोक को अच्छी रीति से प्रसन्न करो, संजय बोले कि ऐसे २ वचनरूपी बाणों से अत्यन्त विदीर्ण हृदय करके झुकीहुई गाँठवाले पांचबाणों से युद्धभूमि में भीष्मजीको घायल किया, फिर महारथी अर्जुन ने उसके इन वचनोंको सुनकर यह बिचार किया कि अब यही समयहै ऐसा जानकर शिखराडीको प्रेरणाकरी ५० और कहा कि मैं शत्रुओंको बाणोंसे हटाताहुआ तेरे पीछे लडूँगा तुम अत्यन्त क्रोधित होकर उस भयानक बलरूपवाले भीष्म के सम्मुख जाओ, यह महाबली युद्ध में तेरे पीड़ा देने को समर्थ नहीं है इसहेतु से हे महाबाहो ! अब युक्तिपूर्वक भीष्म के सम्मुख जाओ हे शिखरिडन् ! जो तू भीष्मको विना मारेहुए युद्धसे जायगा तौ मेरी और तेरी दोनोंकी इसलोकमें हँसीहोगी, हे वीर ! जैसे इसलोक में हमारी तुम्हारी हँसी न होय वही तुमको युद्ध में उपायकरना योग्यहै, हे महाबलिन् ! मैं सब रथियों को रोकता हुआ युद्ध में तेरी सहायता करूँगा तुम अवश्य पितामह को विजय करो, मैं द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, दुर्योधन, चित्रसेन, विकर्ण, जयद्रथ, सिन्ध का राजा, बिन्द, अनुबिन्द और अवन्तिदेश के राजा, काम्बोज, सुदक्षिण, शूरभगदत्त, महाबली राजा मगध, सोमदत्ति, राक्षसों के राजा आर्ष्यशृङ्ग और त्रिगर्त्त इन सबको सब महारथियोंसमेत युद्धमें ऐसे रोकूंगा जैसे कि किनारा या समुद्रकी मर्यादा समुद्रको रोकते हैं मैं सब सेना से लड़ता हुआ महाबली कौरवों को हटाऊँगा तुम पितामह को विजय करो ॥ ५९ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि नवोत्तरशततमोऽध्यायः॥ १०९ ॥

एकसौदश का अध्याय ।

धृतराष्ट्र बोले कि युद्ध में क्रोधयुक्त पाञ्चालदेशीय शिखराडी किस रीतिसे उस धर्मात्मा सावधानव्रत गाङ्गेय भीष्मपितामह के सम्मुख दौड़ा १ पाराडवों की सेना में युद्ध के समय कौन कौन से शस्त्रधारी विजयाभिलाषी शीघ्रता करनेवाले महारथियों ने शिखराडी की रक्षा करी, और वह शन्तनु के पुत्र बड़े पराक्रमी भीष्म उस दशवें दिन में पाराडव और सृंजियों से कैसे २ युद्ध करनेवाले हुए, मैं युद्ध में शिखराडी को भीष्मजी के सम्मुख जातेहुए शान्ति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को नहीं पाता हूँ अर्थात् सह नहीं सक्ता हूँ चाहे इन भीष्मजी का रथ टूट गया वा खैंचते खैंचते धनुष के खण्ड भी होगये हों परन्तु तौभी शिखण्डी की सामर्थ्य न थी जो उनके सम्मुख जासके, संजय बोले कि हे भरतर्षभ! युद्धमें लड़ते और गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से शत्रुओं को मारने में इस भीष्म का न धनुष टूटा न रथ खण्डित हुआ हे राजन्! आपके पुत्रों के लाखों महारथी, और हज़ारों ही अलंकृत हाथी घोड़े पितामह को आगे करके युद्ध करने के लिये सम्मुख वर्तमान हुए, उस युद्ध में भी सत्यप्रतिज्ञ भीष्मजी ने अपने प्रण के अनुसार पाण्डवों की सेना का वारंवार नाश किया, फिर पाण्डवोंसमेत उन सब पाञ्चालदेशियों ने बाणों से बड़े बड़े शत्रुओं के मारनेवाले युद्ध में प्रवृत्त धनुषधारी भीष्म को क्षमा न किया, फिर दशवें दिन के वर्तमान होने पर शिखण्डी आदि हज़ारों शत्रुओं को सेना समेत बाणों से पृथक् पृथक् कर दिया १० हे राजन्! युद्ध में पाण्डव लोग बड़े धनुषधारी भीष्मजी के विजय करने को ऐसे नहीं समर्थ हुए जैसे कि पाशधारी यमराज के विजय करने को कोई समर्थ न हो, इसके पीछे सव्यसाची बाण फेंकनेवाला अर्थात् बायेंहाथसे भी बाणचलानेवाला सर्व संसारीधनका जीतनेवाला अजेय अर्जुन सब रथियों को भयभीत करता हुआ सम्मुख आया, वह अर्जुन सिंह के समान ऊँचे स्वरसे गर्जनाकरके प्रत्यञ्चा को वारंवार खैंचता और बाणोंकी वर्षा करताहुआ, युद्ध में काल के समान आकर विचरता हुआ, हे राजन्! आपके शूरवीर उसके शब्दसे ही भयभीत होकर बड़ी भयातुरता से ऐसे भागे जैसे कि सिंहके शब्दसे मृग भागते हैं, फिर विजय करनेवाले पाण्डवोंको और आपकी पीड्यमान सेनाको देखकर अत्यन्तदुःखी दुर्योधन भीष्मजी से बोला, हे तात! यह श्वेतघोड़ेवाला श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाला पाण्डव अर्जुन मेरे सब शूरवीरों को ऐसे भस्म किये डालता है जैसे अग्नि वन को भस्म करताहै, हे गाङ्गेय, भीष्मजी! पाण्डव के हाथसे सब प्रकार से छिन्न-भिन्न युद्धसे भागीहुई सेनाओं को देखो, जैसे कि वन में गाय चरानेवाला सब पशुओं के समूहों को पृथक् २ करके हाँकता है इसीप्रकार यह शत्रुसंतापी मेरी सेनाको हाँक २ कर छिन्न-भिन्न करता है, अर्जुन के बाणों से विदीर्ण जहाँ तहाँ से भागी हुई मेरी सेना को महादुर्जय भीमसेन भी वैसे ही भगाता है, और सात्यकी चेकितान व माद्री के पुत्र दोनों नकुल सहदेव और बड़ाबली अभिमन्यु यह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सब मेरी सेना को भगारहे हैं २० इसी प्रकार शूरवीर धृष्टद्युम्न और घटोत्कच राक्षस ने भी मेरी सेना को भगाया है, हे भरतर्षभ ! देवताओं के समान बलरखनेवाले आपके सिवाय इन महारथियों से घायल हुई सेनाका कहीं कोई आश्रय नहीं दिखाई देताहै हे पुरुषोत्तम ! आप समर्थ हैं इससे शीघ्रही इन महादुखियों के आश्रय हूजिये, हे राजन् ! इस प्रकार से कहे हुये आप के पिता देवव्रत भीष्मजी एक मुहूर्त्ततक शोचमें मग्न हो अपने निश्चय को करके, आपके पुत्र से मिलकर बोले कि हे राजन्, दुर्योधन ! तुम स्थिरबुद्धि से समझो, हे महाबलिन् ! मैंने पूर्वसमय में तुझ से वचनपूर्वक प्रण किया था कि दश हज़ार महात्मा क्षत्रियों को मारकर, युद्ध से पृथक् हूँगा, यह मेरा प्रतिदिन का कर्म है सो हे दुर्योधन ! मैंने अपने वचन के अनुसार उसको पूरा किया, और अब भी बड़े कर्म को करूँगा अर्थात् मैं मृतकहोकर शयन करूँगा अथवा पाण्डवों को मारूँगा हे राजन् ! अब मैं स्वामी के ऋण से निवृत्त होकर सेना के मुख पर मृतक होकर तेरे ऋणको चुकाऊँगा, यह कहकर क्षत्रियों को बाणोंसे आच्छादित करते हुए अजेय भीष्मने पाण्डवों की सेना को सम्मुख पाया ३० हे भरतर्षभ, धृतराष्ट्र ! उस सेना में नियत सर्प के समान क्रोधरूप गाङ्गेय भीष्मजी को पाण्डवों ने युद्धभूमि में आकर रोका, हे धृतराष्ट्र ! दशवें दिन अपनी सामर्थ्य को दिखाते हुये उस भीष्मपितामह ने लाखों को ही मारडाला, पाञ्चालदेशियों में जो श्रेष्ठ और महारथी राजकुमार थे उनके पंजों को ऐसे ऐंचलिया जैसे कि सूर्य अपनी किरणों से जल को खैंचता है, हे महाराज ! दशहज़ार शीघ्रगामी हाथियों को और इतने ही सवारों समेत घोड़ों को मारा पूरे एक लाख पदातियों के मरने पर भीष्मजी युद्ध में ऐसे क्रोधयुक्त हुए जैसे निर्धूम अग्नि होता है, पाण्डवों के शूरवीरों में से कोई भी इस सूर्यसमान संतप्त करनेवाले भीष्म के सम्मुख देखने को समर्थ नहीं हुआ, तब उस युद्ध में बड़े धनुषधारी से पीड्यमान पाण्डवों के वह शूरवीर महारथी संजय भीष्म के मारने के निमित्त सम्मुखगये, और जैसे कि बड़ा मेरु पर्वत बादलों समेत जाता है वैसे ही शन्तनु के पुत्र भीष्म भी अच्छे २ शूरवीरोंसमेत रक्षित होकर चले, फिर आपके पुत्रों ने बड़ी सेनासमेत भीष्मजीको चारों ओर से रक्षित किया और युद्ध जारी हुआ ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि दुर्योधनभीष्मसंवादे दशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ ११० ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एकसौग्यारह का अध्याय।

संजय बोले कि हे राजन् ! फिर अर्जुन युद्ध में भीष्म के पराक्रम को देख कर शिखण्डी से बोला कि तुम पितामह के सम्मुख होजाओ, अब तुम भीष्म जी से किसी प्रकार का भय मत करो मैं इन भीष्मजी को अपने उत्तम बाणों के द्वारा रथसे गिराऊँगा हे राजन् ! अर्जुन के ऐसे वचनको सुनकर वह शिखण्डी भीष्म के सम्मुख गया, और इसी प्रकार धृष्टद्युम्न और महारथी अभिमन्यु यह दोनों भी अर्जुन के वचनोंसे प्रसन्नचित्त होकर भीष्मजी के सम्मुख गये, विराट् और द्रुपद यह दोनों बृद्ध और शस्त्रों से अलंकृत राजा कुन्तिभोज यह तीनों आपके पुत्र के देखते हुए भीष्म के सम्मुख गये, और नकुल, सहदेव और पराक्रमी धर्मराज युधिष्ठिर और अन्य सब सेना के लोग भी उनके सम्मुख गये, उस समय नकुल और सहदेव दोनों अर्जुन के वचनों को सुनकर आपके पुत्र के देखतेहुये भीष्म के सम्मुख दौड़े, फिर आपके शूरवीर भी अपनी सामर्थ्य और साहस के द्वारा उन इकट्ठे हुए महाभारतियों के सम्मुख गये उनका वृत्तान्त मुझ से सुनो, हे महाराज ! भीष्म की रक्षा के निमित्त चित्रसेन तो चेकितान के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि व्याघ्र का बच्चा बैल के सम्मुख जाता है, हे राजन् ! भीष्म के समीप आये हुए शीघ्रता करनेवाले युद्ध में कुशल धृष्टद्युम्न को कृतवर्मा ने रोका १० और शीघ्रता करनेवाले सोमदत्त ने भीष्मजी के मारने की इच्छा रखनेवाले महाक्रोधित भीमसेन को रोका, इसी प्रकार भीष्मजी के जीवन के चाहनेवाले विकर्ण ने बहुत शायकों के फेंकनेवाले शूर नकुल को रोका, ऐसे ही युद्ध में अत्यन्त क्रोधी शारद्वत कृपाचार्य ने भीष्म के रथपर जाते हुए सहदेव को रोका १३ और बलवान् दुर्मुख उस भीष्म के मारने में प्रवृत्त भीमसेन के पुत्र घटोत्कच राक्षस के सम्मुख हुआ, और युद्ध में जाते हुए सात्यकी को आपके पुत्र ने रोका और भीष्म के रथपर जाते हुए अभिमन्यु को, राजा काम्बोज सुदक्षिण ने रोका और शत्रुओं के मारनेवाले बिराट् और द्रुपद दोनों वृद्धों को क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने रोका हे राजन् ! भीष्म के मारने को उत्सुक पाण्डु के बड़े पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर को द्रोणाचार्य ने और शिखण्डी को आगे करके युद्ध में बेगवान् भीष्म को चाहते दशों दिशाओं के प्रकाश करनेवाले अर्जुन को बड़े धनुषधारी दुश्शासन ने रोका और आपके अन्य शूरबीरों ने भीष्मके सम्मुख जाते

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हुए पाण्डवों के महारथियों को युद्ध में रोका २० इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी धृष्टद्युम्न अकेला ही वारंवार अपनी सेनाओं को इस रीति से पुकारता हुआ भीष्म के सम्मुख गया, कि यह कौरवनन्दन अर्जुन युद्ध में भीष्म के सम्मुख जाता है समीप आजाओ डरो मत भीष्म ही का नाश होगा तुम्हारा नहीं होगा, युद्ध में अर्जुन से लड़ने को इन्द्र भी साहस नहीं करसक्ता है हे वीरलोगो ! फिर वह निर्बल थोड़े जीवनवाला भीष्म युद्ध में क्या करसक्ता है, पाण्डवों के महारथी सेनापति के इस वचन को सुनकर वह सब अत्यन्त प्रसन्नमन होकर अर्जुन के रथ के समीप गये, पुरुषों में श्रेष्ठ अत्यन्त प्रसन्नचित्त आपके शूरवीरों ने बहुतसी सामर्थ्यों से युक्त बड़े पराक्रमियों के समान युद्ध में आनेवालों को रोका, फिर भीष्म के जीवन का चाहनेवाला महारथी दुश्शासन भय को त्यागकर अर्जुन के सम्मुख गया, इसी प्रकार शूरवीर पाण्डव लोग भी भीष्मजी के रथ के पास आपके महारथी पुत्रों के सम्मुख गये, हे राजन् ! वहाँ हमने अपूर्व रूप के आश्चर्य को देखा कि अर्जुन ने दुश्शासन के रथको पाकर उल्लङ्घन नहीं किया, जैसे कि मर्यादा व किनारा जल से व्याकुल समुद्र को रोकता है उसी प्रकार आपके पुत्र ने क्रोधयुक्त पाण्डव अर्जुन को रोका, वह दोनों रथियों में श्रेष्ठ दुर्जय पुरुष शोभा और प्रकाश से चन्द्रमा और सूर्य के समान विदित होते थे ३० इसी प्रकार वह दोनों क्रोधभरे परस्पर मारने के इच्छावान् युद्ध में ऐसे बढ़े जैसे कि पूर्व समय में यमराज और इन्द्र बढ़े थे, फिर दुश्शासन ने विशिख नाम तीन बाणों से अर्जुन को और बीस बाणों से वासुदेवजी को घायल किया, तदनन्तर क्रोधयुक्त अर्जुन ने श्रीकृष्णजी को पीड्यमान देखकर युद्धभूमि में नाराच नाम बाणों के एक सैकड़े से दुश्शासन को घायल किया उन बाणों ने उसके कवच को काटकर उसके रुधिर को पिया फिर महाक्रोधी दुश्शासन ने गुप्तग्रन्थीवाले तीन व पांच बाणों से अर्जुन को ललाटपर घायल किया उन ललाटपर नियत बाणों से वह अर्जुन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि अत्यन्त ऊँचे २ शिखरों से मेरु पर्वत शोभित होताहै फिर वह बड़ाधनुषधारी अर्जुन आपके धनुषधारी पुत्रसे अत्यन्त घायल होकर युद्ध में ऐसा शोभायुक्त हुआ जैसा कि फूला हुआ किंशुक वृक्ष होताहै इसके पीछे अर्जुनने उस क्रोधी दुश्शासन को ऐसा पीड़ित किया, जैसे कि पर्व के दिन अत्यन्त क्रोधयुक्त

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राहु पूर्णचन्द्रमा को दुःखित करता है हे राजन्! पराक्रमी अर्जुन से पीड्यमान आपके पुत्र ने, कङ्कपक्षवाले शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणों से अर्जुन को फिर पीड्यमान किया तब तो अर्जुन ने उसके धनुष को काटकर तीन बाणों से उसके रथ को खण्डित किया, उसके पीछे तीक्ष्ण बाणों से उसके शरीर को घायल किया फिर भीष्म के आगे नियत होकर उसने दूसरे धनुष को लेकर अर्जुन को पचीस २५ बाणों से भुजा और छातीपर घायल किया हे राजन्! फिर शत्रुसन्तापी क्रोधयुक्त अर्जुन ने उसके ऊपर यमराज के दण्ड के समान महाभयानक विशिख नाम बहुत से बाणों को चलाया तब आपके पुत्र ने अर्जुन के उन बाणों को बीच में ही काटा, ४२ वह आश्चर्य सा हुआ फिर आपके पुत्रने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे अर्जुनको व्यथित किया, इससे पीछे युद्ध में क्रोधभरे अर्जुन ने सुनहरी पुङ्खवाले व शिलापर घिसे हुए बाणों को धनुष पर चढ़ाकर युद्ध में फेंका, हे राजन्! वह बाण उस महात्मा के शरीर में ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि तड़ाग को पाकर हंस प्रवेश करजाते हैं, महात्मा पाण्डव के हाथ से पीड़ित आपका पुत्र युद्ध में अर्जुन को छोड़कर शीघ्र ही भीष्मजी के रथ के पास गया तब भीष्मजी उस अगाध जलके डूबेहुए को आधाररूप द्वीप होगये इसके पीछे हे राजन्! आपके शूरवीर पुत्र ने चैतन्य होकर फिर महातीव्रबाणों से अर्जुनको ऐसा ढकदिया जैसे कि बड़े शरीरवाले इन्द्र ने वृत्रासुर को आच्छादित किया था उसके घायल करने पर भी अर्जुन पीड्यमान नहीं हुआ ॥ ४८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वण्येकादशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १११ ॥

एकसौबारह का अध्याय।

संजय बोले कि युद्ध में शस्त्रों से अलंकृत भीष्मके सम्मुख जातेहुए सात्यकी को बड़े धनुषधारी आर्ष्यशृङ्ग ने युद्धभूमि में रोका, हे राजन्! फिर अत्यन्त क्रोधित और हँसते हुए सात्यकी ने नौ बाणों से राक्षस को घायल किया, इसी प्रकार अत्यन्त कोपयुक्त राक्षस ने भी वृष्णियों में श्रेष्ठ सात्यकी को पीड़ित किया, फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शत्रुहन्ता सात्यकी ने बाणों की वर्षा राक्षस पर करी, और राक्षस ने तीक्ष्ण विशिखों से उस सत्यपराक्रमी महाबाहु सात्यकी को घायल करके बड़े सिंहनाद को किया, फिर राक्षस के हाथ से अत्यन्त घायल और रोका हुआ महातेजस्वी सात्यकी भी हँस २ कर गर्जा,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इस पीछे क्रोधयुक्त भगदत्त ने अपने तीक्ष्ण बाणों से सात्यकी को ऐसा घायल किया जैसे कि अंकुशों से बड़े हाथी को घायल करते हैं, फिर रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने उस राक्षस को छोड़कर गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से राजा प्राग्ज्योतिष को घायल किया, और बड़े हस्तलाघवी राजा प्राग्ज्योतिष ने उस सात्यकी के बड़े धनुष को सौ धारवाले भल्ल से काटा, फिर उस शत्रुहन्ता ने दूसरे वेगवान् धनुष को लेकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से भगदत्त को घायल किया १० फिर इस अत्यन्त घायल होठों को चाबते बड़े धनुषधारी ने सुवर्ण और वैडूर्य मणि से अलंकृत यमराज के दण्ड के समान महाभयानक लोहे की दृढ़ शक्ति को फेंका हे राजन्! उसके हाथ से प्रेरित उस अकस्मात् गिरती हुई शक्ति को सात्यकी ने अपने बाणों से दो खण्ड करके पृथ्वी पर गेरा फिर आपके पुत्र ने शक्ति को टूटा हुआ देखकर बड़े रथों के समूहों से सात्यकी को घेरा फिर उस सात्यकी को घिरा हुआ देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन अपने भाइयों से बोला, कि हे कौरवो! अब ऐसा करो जिससे कि सात्यकी हमारे इन रथसमूहों से जीवता न लौटे, उसके मरने पर मैं पाण्डवों की बड़ी सेना को भी मृतकही मानता हूँ तब महारथियों ने कहा कि ऐसा ही होगा, यह कहकर भीष्म के ही आगे सात्यकी से युद्ध किया और महाबली राजा काम्बोज ने भीष्म की ओर जाते हुए युद्ध में प्रवृत्त अभिमन्यु को रोका, अभिमन्यु ने गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से राजा को घायल करके चौंसठ बाणों से फिर व्यथित किया, इसके अनन्तर राजा सुदक्षिण ने पाँच बाणों से घायल करके नौ बाणों से उसके सारथी को घायल किया २० वहाँ उन दोनों की सम्मुखता में बड़ाभारी युद्ध हुआ और शत्रुहन्ता शिखण्डी गाङ्गेयजी की ओर दौड़ा, और युद्ध में क्रोधयुक्त, महारथी दोनों विराट और द्रुपद उस सेना को हटाते हुए भीष्मकी ओर को दौड़े, तब महाक्रोधित महारथी अश्वत्थामा उनके सम्मुख गया तदनन्तर उसके साथ उन दोनों का बड़ा युद्ध जारी हुआ, फिर राजा विराटने उस उपाय करनेवाले और युद्धमें शोभा पानेवाले बड़े धनुषधारी अश्वत्थामाको दशभल्लों से घायल किया फिर द्रुपद ने तीक्ष्णधारवाले तीन बाणों से घायल किया फिर वह दोनों गुरुके पुत्रको सम्मुख पाकर प्रहार करनेलगे, तदनन्तर अश्वत्थामा ने उन भीष्मजी के ऊपर युद्ध में प्रवृत्त विराट और द्रुपद को अनेक बाणों से घायल किया २६ वहां हमने उन दोनों वृद्धों के बड़ेभारी कर्म को देखा कि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

युद्ध में अश्वत्थामा के महाघोर भयानक बाणों को रोका और कृपाचार्यजी उस जाते हुए सहदेव के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि वन में मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सम्मुख जाता है, वहां शीघ्र ही शूरवीर कृपाचार्य ने बड़े तीव्र सत्तर बाणों से सहदेव को घायल किया, फिर सहदेव ने उनके धनुष के खण्ड २ करके नौ बाणों से उनको घायल किया ३० भीष्म के जीवन को चाहते उस प्रसन्नचित्त और क्रोध में युक्त कृपाचार्य ने माद्रीनन्दन सहदेव को तीव्र दश बाणों से छाती के ऊपर घायल किया हे राजन्! इस प्रकार भीष्म के मारनेकी इच्छा से असह्य क्रोधभरे सहदेव ने कृपाचार्य को भी छातीपर घायल किया तब उन दोनों का महाघोर और भयानक युद्ध हुआ, इसके पीछे शत्रु-सन्तापी युद्ध में क्रोधित महाबली विकर्ण ने नकुल को सात बाणों से घायल किया तब आपके पुत्र से अत्यन्त घायल नकुल ने भी सतहत्तर शिलीमुख बाणों से विकर्ण को घायल किया, फिर उन शत्रुसन्तापी वीरों ने भीष्म के कारण परस्पर में ऐसे प्रहार किये जैसे कि गोशाला में दो गौ और वृषभ प्रहार करते हैं, भीष्म के कारण से पराक्रम करनेवाला दुर्मुख युद्ध में आपकी सेना को मारनेवाले और घूमते हुए घटोत्कच के सम्मुख गया ३७ फिर क्रोधयुक्त घटो-त्कचने गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से उस शत्रुसन्तापी दुर्मुख को छातीपर घायल किया, फिर गर्जनापूर्वक प्रसन्नचित्त दुर्मुख ने भी सुन्दर मुखवाले साठ बाणों से भीमसेन के पुत्र घटोत्कच को घायल किया, इसीप्रकार महारथी कृतवर्म्मा ने भीष्म के मारने की इच्छा रखनेवाले रथियों में श्रेष्ठ जातेहुए धृष्टद्युम्न को रोका ४० फिर कृतवर्मा ने भी पांच लोहे के तीक्ष्ण बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल करके पचास बाणों से शीघ्रही छाती में घायल किया, इसीप्रकार धृष्टद्युम्न ने तीक्ष्ण कङ्कपक्षवाले नौ बाणों से कृतवर्मा को घायल किया युद्ध में भीष्म के कारण उन दोनों का ऐसा कठिन युद्ध हुआ जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्र का हुआ था, इसीप्रकार भूरिश्रवा उस भीष्मकी ओर जाते महारथी भीमसेन के सम्मुख शीघ्रता से गया और तिष्ठ २ शब्द बोला, उसके पीछे सोमदत्तके पुत्र भूरिश्रवा ने युद्ध में तीक्ष्ण सुनहरी पुङ्खवाले नाराच बाण से भीमसेन को छाती में घायल किया प्रतापवान् भीमसेन उस छाती पर नियत हुए बाण से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्व समय में स्वामिकार्त्तिकजी की शक्ति से क्रौंचनाम पर्व्वत शोभायमान हुआ था, युद्ध में क्रोधयुक्त उन दोनों

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नरोत्तमों ने सूर्य्यके समान प्रकाशित और साफ़ किये हुये बाणों को परस्परमें फेंका, फिर भीष्मके मारने की इच्छा रखनेवाले भीमसेनने महारथी भूरिश्रवा को और भूरिश्रवाने भीमसेन को घायल किया, प्रहार पर प्रहार करने में कुशल वह दोनों युद्ध में संग्रामकर्त्ता हुए फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी ने बड़ी सेनासमेत भीष्म के सम्मुख जातेहुए कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर को रोका हे राजन्! द्रोणाचार्य्य के रथका शब्द बादल के समान था उसको सुनकर, ४९। ५० प्रभद्रकनाम राजकुमार बड़े कम्पायमान हुए और पाण्डवों की वह बड़ी बुद्धिमान् सेना द्रोणाचार्य्य से रोकी हुई चरण से एक पद भी चलानेवाली नहीं हुई और युद्ध में कुशल भीष्म के ऊपर कोपयुक्त चेकितान को आपके पुत्र चित्रसेन ने रोका पराक्रमी चित्रसेन भीष्मजी के लिये पराक्रम करनेवाला हुआ हे राजन्! उस चित्रसेन ने बड़ी सामर्थ्य से चेकितान से युद्ध किया इसीप्रकार चेकितान ने भी चित्रसेन को रोका, उस समय पर उन दोनों का युद्ध बहुत बड़ा हुआ और वहां पर रुके हुए अर्जुनने बहुतप्रकारसे, आपके पुत्रका मुख मोड़कर आपकी सेनाका मर्दन किया और दुश्शासनने भी बड़े पराक्रमसे यह निश्चय करके अर्जुनको रोका कि यह किसी प्रकारसे हमारे पितामह भीष्मजीको नहीं मारे हे भरतर्षभ! युद्ध में आपके पुत्रकी वह घायल हुई सेना उत्तम २ रथियोंसमेत जहां तहां अचेत होकर गिरी और भाग गई॥ ५७॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि द्वन्द्वयुद्धे द्वादशोत्तरशततमोऽध्यायः॥ ११२॥

एकसौ तेरहका अध्याय।

सञ्जय बोले कि फिर बड़े धनुषधारी मतवाले हाथी के समान पराक्रमी नरोत्तम महाबली द्रोणाचार्य भी महागजेन्द्र के हटानेवाले बड़े धनुष को लेकर सबको कँपाते सेना को घायल करते हुए पाण्डवी सेना को मँझाते संतप्त करतेहुए सब ओरसे चिह्नों को देखकर अपने पुत्र अश्वत्थामासे बोले। हे पुत्र! यह वह दिन है जिसमें युद्ध के बीच भीष्म को मारना चाहता महाबली अर्जुन बड़े बड़े उपायों को करेगा, क्योंकि मेरे बाण उछलते हैं और धनुष कंपायमान होता है और अस्त्र योगको प्राप्त होते हैं और मेरी मति क्रूर वर्त्तमान है दिशाओं में शान्ति से रहित भयकारी पशु पक्षी बोलते हैं और भरतवंशियों की सेना में गृध्र, नीच पक्षियों के साथ बैठे हैं। सूर्य प्रभा से रहित हैं और दिशा सब ओर से लाल हैं और पृथ्वी सब प्रकार से शब्दा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यमान और पीड़ित होकर काँपती है, कङ्क, गृध्र और बलाक बारम्बार बोलते हैं अशुभ भयानक शृगाल बड़े भय को प्रकट करते हुए बोलते हैं, सूर्यमण्डल में से बड़े उल्कापात होते हैं और एकबन्ध परिघ सूर्य को ढककर नियत हैं इसी प्रकार चन्द्रमा और सूर्य का भयकारी प्रदेश अर्थात् पारस नाम मण्डल राजाओं के शरीरों का नाश करनेवाला महाभय को उत्पन्न करता हुआ वर्त्तमान हुआ है । और राजा कुरु के मन्दिर में विराजमान देवता काँपते हँसते नाचते और रोवते हैं, ग्रहों ने सूर्य को दक्षिण होकर चिह्न से रहित करदिया और भगवान् चन्द्रमा नीचेमुख होकर वर्त्तमान हुए, राजाओं के शरीर शोभा से रहित दीख रहे हैं वह शस्त्रधारी अलंकृत राजालोग दुर्योधन की सेना में शोभायमान नहीं हैं, दोनों सेनाओं में चारोंओर को उसी पाञ्चजन्य शंख और गाण्डीव धनुष के शब्द सुने जाते हैं, निश्चय करके वीर अर्जुन युद्ध में दिव्य अस्त्रों को धारण करके युद्ध करनेवाले अन्य शूरवीरों को छोड़कर पितामह के सम्मुख जायगा, हे महाबाहो, अश्वत्थामन् ! भीष्म और अर्जुनकी सम्मुखता को शोचकर मेरे रोयें खड़े हुए जाते हैं और चित्त भी पीड्यमान होता है, वहां अर्जुन उस छली और पापात्मा शिखण्डी को आगे करके भीष्म के मारने को गया है, पूर्व समय में भीष्म ने कहा था कि मैं शिखण्डी को नहीं मारूंगा क्योंकि इसको ईश्वर ने पहले स्त्री किया था फिर प्रारब्ध से पुरुष होगया है, यह यज्ञसेन का पुत्र महाबली अशुभ ध्वजावाला है इस हेतु से गाङ्गेय भीष्मजी उस अमङ्गलरूप पर प्रहार नहीं करेंगे यह विचार कर मेरे चित्त में बड़ा खेद होता है युद्ध में प्रवृत्त चित्त क्रोधभरा शिखण्डी भी कौरवों के वृद्ध पितामह भीष्मजी के सम्मुख गया है । युधिष्ठिर को क्रोध और अर्जुन से सम्मुख हुआ भीष्म और यहां पर मेरा युद्ध सम्बन्धी कर्म का प्रारम्भ यह सब बातें निश्चय करके प्रजाओं के अकल्याण की करनेवाली हैं, पाण्डव अर्जुन साहसी पराक्रमी शूरवीर अस्त्र शस्त्रों का ज्ञाता बड़े तीक्ष्ण दूर गिरनेवाले बाणों का फेंकनेवाला और लक्ष्यभेदी अर्थात् लक्ष्य का जाननेवाला है, यह अर्जुन इन्द्रसमेत देवताओं से भी युद्ध में दुर्जय और अजेय है और पराक्रमी बुद्धिमान् दुःख रोगादि का जीतनेवाला शूरवीरों में श्रेष्ठ युद्ध में सदैव विजयी और भयकारी अस्त्रों का फेंकनेवाला है सावधानव्रत, पुत्र ! तुम उस अर्जुन के मार्ग को रोकते हुए शीघ्र जाओ, अब इस

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महाभयकारी युद्ध में इस बड़े नाश को देखो, शूरलोगों के कवच जो सुवर्ण से जटित और बड़े मङ्गलस्वरूप हैं वह सब गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से तोड़े जाते हैं और ध्वजा तोमर धनुष भी खंड खंड किये जाते हैं, और अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन के हाथ से साफ़ और तेजप्रास और सुवर्ण के समान उज्ज्वल शक्तियां और हाथियों की वैजयन्ती अर्थात् पताका टूटरही हैं। हे पुत्र! दूसरे के आश्रय से समय व्यतीत करनेवालों से प्राणों की रक्षा करने का यह समय नहीं है स्वर्ग को मुख्य करके यश और विजय के निमित्त तुम जाओ, यह वानरध्वज अर्जुन के रथ के द्वारा हाथी घोड़े और रथों से लहराती बड़ी भयकारी अति अगम्य युद्धरूपी नदी को तरता है, इस लोक में युधिष्ठिर ही में किया हुआ बड़ाभारी तप दान वा चित्त की शान्ति और ब्राह्मणों की रक्षा करना देख पड़ता है जिसके भाई अर्जुन वा महाबली भीमसेन वा माद्री के पुत्र नकुल, सहदेव और सबके नाथ वासुदेवजी वर्त्तमान हैं। उस दुर्बुद्धि जलकुक्कुट दुर्योधन के अभिमान से उत्पन्न यह तपरूप क्रोध भारतवंशियों की सेना को भस्म करडालता है, यह वासुदेवजी का आश्रय रखनेवाला अर्जुन दुर्योधनकी सब सेनाओं को सब रीति से छिन्न भिन्न करता विदितहो रहा है, यह सब सेना अर्जुन के हाथसे व्याकुल बड़े तरङ्गोंसे युक्त नानाप्रकारके जल जीवों से व्याकुल समुद्रके समान देखने में आती है, हाय हाय और कलकल शब्द सेना के मुखपर सुने जाते हैं तुम राजा द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न के सम्मुख जाओ मैं युधिष्ठिरके सम्मुख जाऊंगा। बड़े तेजस्वी राजा युधिष्ठिर के बड़ेव्यूह का मध्य सबओरको नियत अतिरथियों से समुद्रकी कुक्षि के समान कठिनता से पार उतरने के योग्य है, सात्यकी, अभिमन्यु, धृष्टद्युम्न, भीमसेन, नकुल, सहदेव इन सबने राजा युधिष्ठिरको चारोंओरसे रक्षित कियाहै, विष्णुके समान श्याम बड़े शालिवृक्ष के समान उन्नत दूसरे अर्जुन के समान यह शूरवीर सेनाके आगे जाताहै; इससे तुम बड़े धनुषको ले उत्तम अस्त्रोंको धारणकर राजा धृष्टद्युम्नके सम्मुख जाकर भीमसेन से लड़ो, कौनसा मनुष्य अपने प्यारे पुत्र को सदैव चिरंजीवी नहीं चाहता है मैं क्षत्रिय धर्म को देखकर उसके कारण से तुमको आज्ञा देताहूं कि यह भीष्म महायुद्धमें बड़ी सेनाको नाश करताहै हे पुत्र! यह भीमसेन युद्ध में यमराज और वरुण के समान है ॥ ४१ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि त्रयोदशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ ११३ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एकसौ चौदह का अध्याय।

संजय बोले कि उस महात्मा द्रोणाचार्य के इस वचन को सुनकर भगदत्त, कृपाचार्य, शल्य, कृतवर्मा, बिन्द, अनुबिन्द, अवन्तिदेश के राजा लोग वा सिन्धुका राजा जयद्रथ, चित्रसेन, विकर्ण, दुर्मर्षण आदि आपके इन दश शूरवीरों ने भीमसेन से युद्ध किया, वह राजा लोग नानाप्रकार के देशों में उत्पन्न होनेवाले बड़ी सेना समेत थे और भीष्म के बड़े यश को चाहनेवाले थे, उनमें से शल्य ने नौ बाणों से कृतवर्मा ने तीन बाणों से कृपाचार्य ने नौ बाणों से भीमसेन को घायल किया और चित्रसेन भगदत्त और विकर्ण ने, दश दश बाणों से जयद्रथने तीन बाणों से व्यथित किया, और अवन्तिदेश के राजा बिन्द अनुबिन्द ने पांच पांच बाणों से और दुर्मर्षण ने तीक्ष्णधार के बीस बाणों से भीमसेन को घायल किया, हे महाराज ! फिर उन सब पृथक् शोभायमान महाभारती धृतराष्ट्र के पुत्रों को, युद्ध में घायल करके शत्रुओं के मारनेवाले वीर पाण्डव भीमसेन ने सात बाण से शल्य को आठ से कृतवर्मा को घायल कर, कृपाचार्य के बाणसमेत धनुष को बीच में से काटकर फिर उस टूटे धनुषवाले को सात बाणों से घायल किया, वैसे ही अवन्तिदेश के राजा बिन्द अनुबिन्द को तीन तीन बाणों से और दुर्मर्षण को बीस बाणों से और चित्रसेन को पांच बाणों से घायल किया फिर विकर्ण को दश बाणों से जयद्रथ को पांच बाण से घायल कर फिर उसीको तीन तीक्ष्ण बाणों से व्यथित करके बड़े प्रसन्नचित्त होकर भीमसेन गर्जना करने लगे, तब रथियों में श्रेष्ठ क्रोधयुक्त कृपाचार्य ने दूसरे धनुष को लेकर तीक्ष्णधारवाले द्वादश बाणों से भीमसेन को घायल किया वह बारह बाणों से ऐसा घायल हुआ जैसे कि अंकुश से हाथी घायल होता है, इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेन ने, युद्ध में अनेक बाणों से कृपाचार्य को घायल करके तीन बाणों से जयद्रथ के घोड़े और सारथी को मृत्यु के लोक में भेजा। फिर उस महारथी ने मृतक घोड़ों के रथ से शीघ्र ही कूदकर, भीमसेन के ऊपर तीक्ष्णधारवाले बाणों को फेंका। हे राजन्, धृतराष्ट्र ! भीमसेन ने दो भल्लों से उस महात्मा जयद्रथ के धनुष को मध्य में से काटा, वह टूटे धनुष रथहीन शीघ्रता करनेवाला जयद्रथ जिसके घोड़े और सारथी मरगये थे, चित्रसेन के रथपर सवार हुआ वहां पाण्डव भीमसेन ने युद्ध में अपूर्व कर्म को किया अर्थात् उसने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सब लोगों के देखते बाणों से महारथियों को घायल करके जयद्रथ को विरथ किया, तब शल्य ने भीमसेन के पराक्रम को नहीं सहा और बड़े तीक्ष्ण बाणों को धनुष पर चढ़ाकर भीमसेन को घायल किया और तिष्ठ तिष्ठ वचन को उच्चारण किया। इसको देखकर पराक्रमी कृपाचार्य, कृतवर्मा, भगदत्त, और अवन्तिदेश के राजा बिन्द, अनुबिन्द, दुर्मर्षण, विकर्ण, पराक्रमी जयद्रथ, इन सब शत्रुविजयी लोगों ने भी शल्य को देखकर शीघ्र ही भीमसेन को घायल किया और उसने उन सबको पांच पांच बाणों से घायल किया २३ शल्य को सत्तर बाणों से और दश भल्लों से घायल किया फिर शल्य ने उस को नौ बाणों से घायल करके पांच बाणों से फिर व्यथित कर दिया और एक भल्ल से उसके सारथी को मर्मस्थल में घायल किया। इसके पीछे उस प्रतापी भीमसेन ने अपने विश्वक नाम सारथी को घायल देखकर, तीन बाणों से मद्र के राजा शल्य को भुजा और छाती पर घायल किया, इसी प्रकार सीधे चलनेवाले तीन तीन बाणों से अन्य बड़े बड़े धनुषधारियों को व्यथित करता हुआ सिंह के समान गर्जना की फिर उन सावधान बड़े बड़े धनुष-धारियों ने युद्ध में कुशल भीमसेन को तीक्ष्ण नोकवाले तीन तीन बाणों से मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल किया परन्तु वह अत्यन्त घायल बड़ा धनुष-धारी भीमसेन ऐसे पीड्यमान नहीं हुआ, जैसे कि जलधारा वर्षा करनेवाले बादलों से पर्वत पीड़ा नहीं पाता है फिर उस बड़े यशस्वी महारथी पाण्डव भीमसेन ने क्रोध में भरके शल्य राजा को तीन बाणों से अत्यन्त घायल करके युद्धभूमि में सौ शायकों से राजा प्राग्ज्योतिष को घायल किया। इसके पीछे इसी यशस्वी ने कृपाचार्य को बाणों से अत्यन्त घायल करके अपनी हस्तलाघवता से महात्मा कृतवर्मा के बाणसमेत धनुष को अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रों से काटा और इसीप्रकार से कृतवर्मा ने दूसरे धनुष को लेकर भीमसेन को दोनों भृकुटियों के मध्य में नाराच बाण से घायल किया फिर शत्रुसंतापी भीमसेन ने शल्य को नौ लोहे के बाणों से घायल करके तीन बाणों से भग-दत्त को आठ बाणों से कृतवर्मा को और दो दो बाणों से कृपाचार्य आदि रथियों को घायल किया। इन सबोंने भी इसको तीक्ष्णधार के बाणों से घायल किया, फिर महारथियों के सब शस्त्रों से पीड्यमान वह भीमसेन भी उनको तृण के समान कर दुःख से रहित प्रसन्नमुख होकर भ्रमण करने लगा। उन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सावधान रथियों में श्रेष्ठ लोगों ने भी भीमसेन के ऊपर हज़ारों तीक्ष्ण बाणों को चलाया। महावीर भगदत्त ने उस बुद्धिमान् के ऊपर बड़ी वेगवान् प्रकाशित सुनहरी दण्डवाली शक्ति को और राजा जयद्रथ ने तोमर को महाभुज ने पट्टिश को कृपाचार्य ने शतघ्नी को शल्य ने बाण को और अन्य बड़ेबड़े धनुषधारियों ने भीमसेन को लक्ष्य अर्थात् निशाना बनाकर पांच पांच शिलीमुख बाणों को बड़े पराक्रम से चलाया। तब वायुपुत्र भीमसेन ने तोमर को तो क्षुरप्र नाम बाण से दो खण्ड किये और तीन बाण से पट्टिश को तिल के कांड के समान काटा नौ बाणों से शतघ्नी को तोड़ राजा मद्र के चलाये हुए बाण को काटकर भगदत्त की चलाई हुई शक्ति को काट डाला इसी प्रकार युद्ध में प्रशंसनीय भीमसेन ने गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से अन्य भयानक बाणों को काटा अर्थात् प्रत्येक के खण्ड-खण्ड कर दिये और उन सब धनुषधारियों को तीन तीन बाणों से घायल किया इसके पीछे वहां घोर युद्ध के होने पर अर्जुन उस युद्ध में शत्रुओं को मारता शायकों से लड़ता महारथी भीमसेन को देखकर रथ पर बैठा हुआ युद्धभूमि में आया वहां उन दोनों महात्मा पाण्डवों को युद्ध में प्रवृत्त देखकर आप के शूरवीर पुरुषों ने वहां अपने विजय की आशा नहीं की फिर युद्ध में महारथियों से लड़ते हुए भीमसेन को देखकर भीष्म के मारने की इच्छा करनेवाले अर्जुन ने शिखण्डी को आगे करके उस युद्ध में आप के उन दश शूरों को पाया जो भीमसेन से युद्ध करने में नियत थे उनको अर्जुन ने भीमसेन की प्रसन्नता के लिये बाणों से घायल किया फिर राजा दुर्योधन ने अर्जुन और भीमसेन इन दोनों के मारने के निमित्त राजा सुशर्मा को आज्ञा करी कि हे सुशर्मा! तुम अपनी सेना समेत शीघ्र ही जाकर इन दोनों पाण्डव अर्जुन और भीमसेन को मारो फिर प्रस्थलाधिप राजा सुशर्मा ने उसके उस वचन को सुन युद्ध में जाके भीमसेन और अर्जुन दोनों धनुषधारियों को हज़ारों रथियों समेत चारों ओर से घेर लिया फिर अर्जुन से और शत्रुओं से युद्ध होना प्रारम्भ हुआ ॥ ५२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि चतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११४ ॥

एकसौपन्द्रह का अध्याय।

संजय बोले कि फिर अर्जुन ने युद्ध में उपाय करनेवाले महारथी शल्य

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से ढक कर सुशर्मा, कृपाचार्य, राजा प्राग्ज्योतिष, जयद्रथ राजा सिंध इन सबको तीन तीन बाणों से घायल किया, और चित्रसेन, विकर्ण, कृतवर्मा, दुर्मर्षण और अवन्तिदेश के महारथी राजा लोग इन सबको कङ्क और मोरपक्षवाले तीन तीन बाणों से घायल किया और युद्ध में अतिरथी जयद्रथ ने आपकी सेना को बाणों से पीड़ित करते हुए अर्जुन को शायकों से घायल करके चित्रसेन के रथ पर बैठ कर बड़ी तीव्रता से भीमसेन को घायल किया हे राजन् ! रथियों में श्रेष्ठ शल्य और कृपाचार्य ने मर्मभेदी बाणों से अर्जुन को अनेक रीति से घायल किया और चित्रसेन आदि आपके पुत्रों ने तीक्ष्ण धारवाले पांच पांच बाणों से अर्जुन और भीमसेन को घायल किया वहां उन भरतवंशियों में और रथियों में श्रेष्ठ दोनों पाण्डवों ने त्रिगर्तदेशियों की बड़ी सेना को पीड्यमान किया फिर सुशर्मा भी तीव्रगामी नौ बाणों से अर्जुन को घायल करके बड़ी सेना को भयभीत करता हुआ बड़े शब्द से गर्जा और अन्य शूरवीर रथियों ने भीमसेन और अर्जुन को सीधे चलनेवाले सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण धार के बाणों से घायल किया उन रथियों के मध्य में भरतवंशियों में श्रेष्ठ कुन्ती के पुत्र महारथी क्रीड़ा करते हुए ऐसे अपूर्व रूप से आये जैसे कि बैलों के मध्य में मांस की इच्छा रखने वाले मतवाले दो सिंह आते हैं उन दोनों वीरों ने युद्ध में शूरों के धनुषों को बहुत प्रकार से काटकर सैकड़ों मनुष्यों के शिरों को गिराया बहुत से रथ टूटे सैकड़ों घोड़े मारे गये और सवारों समेत हाथी पृथ्वी पर गिरे रथी और सवार भी जहां तहां नाश को प्राप्त चारों ओर से कँपते हुए दृष्टि आये मृतक हाथी, घोड़े, पदाती और अनेक प्रकार से टूटे हुए रथों से पृथ्वी सविस्तर सी होगई, हे राजन् ! अनेक प्रकार से टूटे हुए छत्र और गिराई हुई ध्वजा और खण्डित अंकुश, परशे, केयूर, बाजूबन्द, हार, कोमल मृगचर्म, मंडील, दुधारे खड्ग चामर वा व्यजनों से और जहां तहां कटी हुई राजाओं की चन्दन चर्चित भुजा और जंघाओं से भी पृथ्वी आच्छादित दीखती थी, वहां हमने युद्ध के बीच अर्जुन के अपूर्व पराक्रम को देखा कि उस महाबली ने उन सब शूरवीरों को बाणों से ढककर घायल कर दिया फिर आपका महाबली पुत्र भीमसेन और अर्जुन के उस पराक्रम को देखकर गाङ्गेय भीष्मजी के रथ के पास गया तब कृपाचार्य, कृतवर्मा, जयद्रथ, राजा सिंध और अवन्तिदेश के विन्द अनु-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिन्द नाम राजाओं ने युद्ध को नहीं त्यागा इसके पीछे बड़े धनुषधारी भीमसेन और महारथी अर्जुन युद्ध में कौरवों की महाभयकारी सेना की ओर दौड़े उसके पीछे राजाओं ने बड़ी शीघ्रता से मोर के समान चित्रित हज़ारों लाखों किन्तु असंख्यों बाणों को अर्जुन के रथ पर गिराया तब अर्जुन ने चारों ओर से उन महारथियों को बाणों के जाल से रोककर मृत्यु के लोकों को भेजा फिर क्रोधयुक्त युद्ध में क्रीड़ा करते महारथी शल्य ने गुप्तग्रन्थीवाले भल्लों से अर्जुन को छाती पर घायल किया तब अर्जुन ने उसके धनुष को तोड़ पांच बाणों से उसके हस्तत्राण को काटके तीक्ष्ण शायकों से उसके मर्मस्थलों को अत्यन्त घायल किया फिर क्रोधयुक्त राजा मद्र ने दूसरे बड़े दृढ़ धनुष को लेकर बाणों से अर्जुन को व्यथित किया तीन बाणों से अर्जुन को पांच बाणों से वासुदेवजी को नव बाणों से भीमसेन को भुजा और छाती पर घायल किया इसके पीछे महारथी द्रोणाचार्य और राजा मगध यह दोनों दुर्योधन की आज्ञा से उस स्थान पर पहुँचे जहां कि बड़े महारथी अर्जुन और भीमसेन ने कौरवी दुर्योधन की बड़ी सेना को मारा था फिर जयसेन ने भयकारी शस्त्र वाले भीमसेन को तीव्र आठ बाणों से घायल किया और भीमसेन ने उसको दश बाणों से घायल करके पांच बाणों से फिर घायल किया और एक भल्ल से उसके सारथी को रथ के बैठने के स्थान से गिरा दिया फिर वह राजा मगध सब सेना के देखते हुए चारों ओर को बहँके हुए घोड़ों के कारण से युद्ध से दूर चलागया द्रोणाचार्य ने समय पाकर तीक्ष्णधार वाले लोहे के शिलीमुख नाम पैंसठ बाणों से भीमसेन को घायल किया हे भरतवंशिन्! युद्ध में प्रशंसा पानेवाले भीमसेन ने पिता के समान गुरु को भी पैंसठ भल्लों से घायल किया, फिर अर्जुन ने बहुत से लोहे के बाणों से सुशर्मा को घायल करके उसकी उस भुजा को ऐसे अलग कर दिया जैसे कि वायु बादलों को अलग कर देता है उसके पीछे भीष्म और राजा कौशल्य, बृहद्बल यह सब अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर भीमसेन और अर्जुन के सम्मुख गये इस रीति से शूर पाण्डव और पर्षत का पुत्र धृष्टद्युम्न उस मृत्यु के समान भीष्म के सम्मुख गये और अत्यन्त प्रसन्नचित्त शिखण्डी भरतवंशियों के पितामह को पाकर और उससे निर्भर होकर सम्मुख हुआ और युधिष्ठिर आदि पाण्डव सब सृञ्जियों समेत शिखण्डी को आगे करके युद्ध में भीष्मजी से युद्ध करने लगे इसी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रकार आपके सब पुत्र भीष्मजी को आगे करके युद्ध में उन पाण्डवों से जिनका अग्रवर्ती शिखण्डी था युद्ध करने में प्रवृत्त हुए उसके पीछे वहां पर भीष्म की विजय के विषय में कौरवों का भयकारी युद्ध पाण्डवों के साथ जारी हुआ हे धृतराष्ट्र! तब भीष्मजी आपके पुत्रों की विजय के ग्लह अर्थात् चौपड़के दांव हुए वहां पर विजय वा पराजय के निमित्त द्यूत प्रारम्भ हुआ, फिर धृष्टद्युम्न ने सब सेना को आज्ञा करी कि हे श्रेष्ठ रथियो! निर्भय होकर भीष्म के सम्मुख चलो मन में किसी प्रकार का भी सन्देह मत करो तब पाण्डवों की सेना अपने सेनापति के वचन को सुनकर प्राणों के मोह को त्याग कर उस महायुद्ध में शीघ्र ही भीष्म के सम्मुख गई हे महाराज! रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने उस आई हुई बड़ी सेना को ऐसा रोका जैसे कि महासमुद्र को किनारा रोकता है ॥ ४७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि पञ्चदशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ ११५ ॥

एकसौसोलह का अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय! शन्तनु के पुत्र बड़े पराक्रमी भीष्मजी दशवें दिन पाण्डव और सृञ्जियों के साथ कैसे कैसे युद्ध करते हुए और कौरवों ने युद्ध में पाण्डवों को कैसे रोका हे संजय! तू युद्ध में शोभा पानेवाले भीष्मजी के महाभारी युद्ध को मुझ से वर्णन करके कह। संजय बोले कि हे भरतवंशिन्! कौरव लोगों ने पाण्डवों के साथ जैसे युद्ध को किया और जैसे युद्ध हुआ वह यथार्थ तुम से कहता हूं अर्जुन के बड़े अस्त्रों से आपके महारथी अत्यन्त क्रोधपूर्वक प्रतिदिन परलोक में भेजे गये और युद्ध को विजय करने वाले उस कौरवी भीष्म ने भी अपने किये हुए सत्यसंकल्प के अनुसार पाण्डवों की सेना का सदैव नाश किया हे शत्रुसंतापिन्, धृतराष्ट्र! कौरवों समेत भीष्म और धृष्टद्युम्न समेत अर्जुन इन दोनों युद्ध करनेवालों को अपने अपने विजय करने में सन्देह हुआ फिर उस दशवें दिन के युद्ध में भीष्म और अर्जुन की सम्मुखता में वारंवार बड़ी भयकारी प्रलय वर्त्तमान हुई, उस दिन में शत्रुसंतापी उत्तम अस्त्रों के ज्ञाता भीष्मजी ने हज़ारों बड़े बड़े शूरवीरों को मारा उन लोगों के नाम और गोत्र अज्ञातकल्प के समान थे अर्थात् नहीं मालूम से ही थे वह युद्ध में पीठ न मोड़नेवाले महाशूर भीष्मजी के हाथ से मारे गये इसके पीछे धर्मात्मा भीष्मजी ने दश दिन तक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पाण्डवी सेना को अच्छी रीति से संतप्त करके जीवन से वैराग्य पाया वह युद्ध में सम्मुख शीघ्र ही अपने मरने का इस रीति से विचार करनेवाला हुआ कि मैं युद्ध में बहुत से श्रेष्ठ मनुष्यों को नहीं मारूंगा हे महाराज! आप के पिता देवव्रत, महाबाहु, भीष्मजी चिन्ता करके पाण्डवों के सम्मुख होकर यह वचन बोला कि हे महाज्ञानिन्, सर्वशास्त्रज्ञ, पुत्र युधिष्ठिर! मेरे इस स्वर्ग के देनेवाले धर्मरूपी वचनों को सुन हे भरतवंशिन्, पुत्र! मैं इस शरीर से अत्यन्त प्रीतिरहित हूं और युद्ध में अनेकों जीवधारियों को मारते हुए मेरा समय व्यतीत हुआ इस हेतु से जो तू मेरा भला चाहता है तो तू अर्जुन को और इसी प्रकार पांचाल देशियों को और सृञ्जियों को आगे करके मेरे मारने का विचारपूर्वक उपाय कर सत्यदर्शी पाण्डव राजा युधिष्ठिर उनके इस अभिप्राय के मत को जानकर सृञ्जियों समेत युद्ध में भीष्मजी के सम्मुख गया हे राजन्! उसके पीछे धृष्टद्युम्न और पाण्डव युधिष्ठिर ने भीष्मजी के ऐसे वचनों को सुनकर सेना को आज्ञा करी कि चलकर युद्ध करो और युद्ध में सत्यसंकल्प एक ही रथ से विजय करनेवाले अर्जुन से रक्षित होकर तुम भीष्मजी को विजय करो निश्चय करके यह बड़ा धनुषधारी सेनापति धृष्टद्युम्न और भीमसेन भी युद्ध में तुम्हारी रक्षा करेंगे हे सृञ्जियो! अब युद्ध में तुमको भीष्म से किसी प्रकार का भय नहीं होगा निश्चय करके हम शिखण्डी को आगे करके भीष्म को विजय करेंगे वह क्रोध से मूर्च्छित पाण्डव दशवें दिन उसी प्रकार का नियम करके ब्रह्मलोक को उत्तम मानते हुए सब मिलकर चले और शिखण्डी को और पाण्डव अर्जुन को आगे करके भीष्म के गिराने के लिये बड़े उपायों में नियत हुए उसके पीछे आपके पुत्र की आज्ञा से नाना देशों के राजा लोग द्रोणाचार्य अश्वत्थामा और सेना समेत महाबली धनुषधारी दुःशासन सब अपने इष्टमित्र और बिरादरीवालों से युक्त इन सबों ने आकर युद्ध में नियत भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित किया इसके पीछे आपके शूरवीर पुत्र भीष्मजी को आगे करके उन पाण्डवों से लड़ने के लिये जिनका कि अग्रगामी शिखण्डी था युद्ध में प्रवृत्त हुए फिर वह वानरध्वज अर्जुन चंदेरी देश के और पाञ्चाल देश के लोगों के साथ शिखण्डी को आगे करके शन्तनु के पुत्र भीष्मजी के सम्मुख गया सात्यकी ने अश्वत्थामा को और धृष्टकेतु ने कौरवों को और अभिमन्यु ने मन्त्रियों समेत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उस दुर्योधन को युद्ध में सम्मुख होकर युद्ध किया और सेना समेत राजा विराट् ने वार्द्धक्षेम के पुत्र जयद्रथ से सेना समेत सम्मुखता करी और युधिष्ठिर ने बड़े धनुषधारी सेना समेत राजा मद्र को सम्मुख पाया और चारों ओर से रक्षित भीमसेन बड़ी सेना की ओर चला और मतवाला धृष्टद्युम्न अपने निज भाइयों और नातेदारों समेत उस अजेय सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ स्वाधीन न होनेवाले अश्वत्थामा के सम्मुख गया शत्रुओं का विजय करनेवाला सिंह की ध्वजा से युक्त राजकुमार बृहद्बल उस कर्णिकार वृक्ष की चिह्नधारी ध्वजा वाले अभिमन्यु के सम्मुख गया आपके सब राजा सेनाओं समेत शिखण्डी और पाण्डव अर्जुन के मारने के इच्छावान् युद्ध में अर्जुन के सम्मुख दौड़े उस समय उन भयानक सेनाओं समेत तुम्हारे पुत्रों के दौड़ने से पृथ्वी अच्छे प्रकार से कम्पायमान हुई हे भरतर्षभ ! भीष्मजी को युद्ध में देखकर आपके पुत्रों की और पाण्डवों की सेना परस्पर में बड़े बड़े पराक्रमों को करके लड़ी इसके पीछे उन अत्यन्त पीड्यमान परस्पर दौड़नेवालों का बड़ाभारी महाशब्द सब ओर को जारी हुआ और शंखदुन्दुभियों के शब्द वा हाथियों की चिंघाड़ अथवा सेना के मनुष्यों के सिंहनादों से महाभारी भय उत्पन्न हुआ सब राजाओं का चन्द्रमा और सूर्य के समान तेज वा शूरवीर लोगों के बाजूबंद और मुकुटप्रभा से रहित होगए, शस्त्ररूपी बिजली से युक्त धूल के बादल उत्पन्न हुए और धनुषों के भी भयकारी शब्द वर्तमान हुए, दोनों सेनाओं का आकाश शक्ति, पाश, दुधारे खड्ग और बाणों के समूहों से व्याप्त होकर प्रभा से रहित होगया उस बड़े भारी युद्ध में रथी, घोड़, हाथी ऐसे परस्पर में लड़े कि हाथी को हाथी ने पदाती को पदाती ने मारा, हे नरोत्तम ! वहां भीष्म के कारण पाण्डव और कौरवों का ऐसा महाभारी युद्ध हुआ जैसा कि पराये मांस के निमित्त दो बाज पक्षियों का युद्ध होता है उन विजयाभिलाषी शूरवीरों का भयानक युद्ध परस्पर में एक एक के मारने के निमित्त वर्त्तमान हुआ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि षोडशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ ११६ ॥

एकसौसत्रह का अध्याय ।

संजय बोले कि, हे महाराज ! पराक्रमी अभिमन्यु ने भीष्म के कारण बड़ी सेना से संयुक्त आपके पुत्र से युद्ध किया, तब क्रोधयुक्त दुर्योधन ने झुकी गांठवाले नव बाणों से अभिमन्यु को व्यथित करके तीन बाणों से फिर उसको

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घायल किया तब अत्यन्त कोपयुक्त अभिमन्यु ने मृत्यु के समान भयकारी शक्ति को दुर्योधन के रथ पर चलाया हे राजन्! आपके पुत्र महारथी ने उस अकस्मात् गिरती हुई भयकारी शक्ति को क्षुरप्र बाणों से दो खण्ड कर दिये फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अभिमन्यु ने उस टूट कर गिरी हुई शक्ति को देखकर दुर्योधन की भुजा और छाती को तीन बाणों से घायल कर दिया हे राजन्! वह भयकारी युद्ध अपूर्व रूप का चित्त का आनन्द देनेवाला सब राजाओं से पूजित हुआ, वह सुभद्रा का पुत्र और कौरवों में श्रेष्ठ दुर्योधन दोनों शूरवीर भीष्म के मारने वा अर्जुन के विजय के निमित्त युद्ध करनेवाले हुए शत्रुओं के तपाने वाले युद्ध में वेगवान् ब्राह्मणों में श्रेष्ठ अश्वत्थामा ने सात्यकी को नाराच नाम बाण से छाती पर घायल किया फिर बड़े बुद्धिमान् सात्यकी ने भी गुरु के पुत्र को नव बाणों से सब मर्मस्थलों में घायल किया तिस पीछे अश्वत्थामा ने सात्यकी को नव बाणों से छाती पर और तीस बाणों से भुजाओं पर घायल किया द्रोणाचार्य के पुत्र से अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी यशवान् सात्यकी ने अश्वत्थामा को तीन बाणों से घायल किया महारथी पौरव ने बड़े धनुषधारी धृष्टकेतु को बाणों से ढककर अत्यन्त घायल किया, इसी प्रकार महारथी धृष्टकेतु ने शीघ्रता से तेज धारवाले बाणों से पौरव को घायल किया फिर महारथी पौरव धृष्टकेतु के धनुष को काटकर महाघोर शब्द से गर्जा और तीव्र बाणोंसे घायल किया हे महाराज! उसने दूसरे धनुष को लेकर शिलीमुख नाम तीक्ष्ण बाणों से पौरव को व्यथित किया तब वहां उन दोनों बड़े धनुषधारी शोभायमान महारथियों ने बाणों की बड़ी वर्षा से परस्पर में घायल किया वह दोनों क्रोधयुक्त परस्पर में धनुष काटकर वा घोड़ों को मारकर विरथ हो खड्गप्रहारी युद्ध करने के लिये सम्मुख हुए हे राजन्! वह दोनों शूरवीर अत्यन्त स्वच्छ सूर्य चन्द्रमा से प्रकाशित खड्ग और उत्तम चित्रों से चित्रित ढालों को लेकर परस्पर में ऐसे सम्मुख गये जैसे कि महावन में सिंहनी के मिलाप में उपाय करनेवाले दो सिंह होते हैं परस्पर दिखलाने और चाहते हुए दोनों वीरों ने विचित्र दाहें बायें मण्डलों को किया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त पौरव बड़े खड्ग से धृष्टकेतु को शङ्ख नाम अङ्ग में घायल करके अर्थात् बाणों के नीचे छाती के ऊपर इधर उधर के हाड़ों में प्रहार करके 'तिष्ठ, तिष्ठ' यह शब्द कह राजा चन्देरी ने भी युद्ध में पौरव को तीक्ष्ण धारवाले बड़े खड्ग से जत्रुदेश

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नाम अङ्ग में अर्थात् जाबड़े में घायल किया हे शत्रुहन्तः! वह दोनों महा-युद्ध में परस्पर भिड़े हुए तीव्रता से परस्पर घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े उसके पीछे आपका पुत्र जितसेन युद्धभूमि में पौरव को अपने रथ पर सवार करके उसी रथ के द्वारा युद्धभूमि से दूर लेगया फिर माद्री का पुत्र प्रताप-वान् शूर पराक्रमी सहदेव युद्ध में धृष्टकेतु को दूर लेगया चित्रसेन ने सुशर्मा को बहुत से लोहे के बाणों से घायल करके फिर साठ बाण से और नौ बाणों से घायल किया तब उस क्रोधयुक्त ने भी उस चित्रसेन को झुकी-गांठवाले बाणों से घायल किया फिर उसने उसको घायल किया, हे राजन्! भीष्म के युद्ध में यश, कीर्त्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ाते हुए अभिमन्यु ने बृहद्बल नाम राजकुमार से युद्ध किया और अर्जुन के कारण से भीष्म की युद्धभूमि में पराक्रम करनेवाला हुआ और राजा कौशिल ने अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को पांच लोहे के बाणों से बेधकर फिर गुप्तग्रन्थीवाले बीस बाण से घायल किया और अभिमन्यु ने राजा कौशिल को आठ लोहे के बाणों से घायल और कम्पायमान करके उसके धनुष को भी काटा और कङ्कपक्षवाले तीस बाणों से भी घायल किया उस युद्ध में क्रोधयुक्त राज-कुमार बृहद्बल ने दूसरे धनुष को लेकर अभिमन्यु को बहुत से बाणों से घायल किया हे शत्रुओं के संतप्त करनेवाले! उन दोनों का युद्ध भीष्म के कारण ऐसा अच्छा हुआ जैसा कि देवता और असुरों के युद्ध में राजा बलि और इन्द्र का हुआ था भीमसेन रथों की सेना से लड़ता ऐसा शोभाय-मान हुआ जैसे कि वज्र को धारण करनेवाला इन्द्र उत्तम पर्वतों को फोड़ता हुआ शोभित होता है भीमसेन के हाथ से घायल पर्वतों के समान वह सब हाथी एक साथही पृथ्वी को शब्दायमान करते हुए भूमि पर गिरे पर्वत के समान टूटे हुए अञ्जन के समान वह हाथी पृथ्वी पर वर्त्तमान ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि टूटे हुए पहाड़ होते हैं बड़ी सेना से रक्षित बड़े धनुषधारी युधिष्ठिर ने युद्ध में सम्मुख आये हुए राजा मद्र को पीड्यमान किया फिर क्रोधयुक्त महारथी राजा मद्र ने भीष्म के कारण से धर्मपुत्र युधिष्ठिर को पीड्यमान किया राजा सिन्ध ने गुप्तग्रन्थीवाले नौ बाणों से विराट् को वेध कर तीस बाणों से घायल किया फिर वाहिनीपति विराट् ने राजा सिन्ध को तीक्ष्ण धारवाले तीस बाणों से छाती में घायल किया वह दोनों जड़ाऊ धनुष

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खड्ग वर्म ध्वजा शस्त्रवाले अपूर्वरूप विराट और जयद्रथ युद्ध में महाशोभायमान हुए द्रोणाचार्य ने अपूर्वयुद्ध के बीच धृष्टद्युम्न के साथ बढ़कर गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से महाप्रबल युद्ध किया इसके पीछे द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न के बड़े धनुष को काटकर पचास बाण से उसको बेधा फिर धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष को लेकर द्रोणाचार्य के देखते हुए शायकों को चलाया उस महारथी ने बाणों के प्रहार से ही उन बाणों को काटा फिर द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न के लिये पांच शायकों को चलाया इसके पीछे क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने यमदण्ड के समान गदा को द्रोणाचार्य के ऊपर फेंका और द्रोणाचार्य ने उस गिरनेवाली गदा को पचास बाणों से रोका हे राजन्! द्रोणाचार्य के धनुष से निकले हुए बाणों ने उस गदा को चूर्ण करके पृथ्वी पर गेरा शत्रुसन्तापी धृष्टद्युम्न ने गदा को टूटी हुई देखकर सब लोहमयी दृढ़ शक्ति को द्रोणाचार्य के ऊपर फेंका फिर द्रोणाचार्य ने भी उस बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्न को पीड़ित किया हे राजन्! इस प्रकार भीष्म के सम्मुख द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न का महाभयानकरूप युद्ध हुआ फिर तीक्ष्ण बाणों से सबको पीड़ित करता हुआ गाङ्गेय भीष्मजी को पाकर उनके सम्मुख ऐसा गया जैसे कि वन में अत्यन्त मतवाला हाथी मदोन्मत्त गजेन्द्र के सम्मुख होवे प्रतापवान् महाबली राजा भगदत्त तीन अङ्गों से मद चूनेवाले महामतवाले हाथी की सवारी से सम्मुख गया तब अर्जुन बड़े उपाय में नियत होकर उस गजेन्द्र ऐरावत के समान महाबली गिरते हुए हाथी के सम्मुख हुआ उसके पीछे प्रतापवान् भगदत्त ने बाणों की वर्षा से ढक दिया फिर अर्जुन ने चांदी के समान स्वच्छ लोहे के बाणों से उस आते हुए हाथी को बेधा हे महाराज! फिर अर्जुन ने शिखण्डी को भीष्म की ओर प्रेरित किया और कहा कि जाओ जाओ इसको मारो हे पाण्डु के ज्येष्ठभ्राता, धृतराष्ट्र! फिर राजा प्राग्ज्योतिष अर्जुन को छोड़ कर शीघ्रही द्रुपद के रथ के समीप गया इसके पीछे अर्जुन शिखण्डी को आगे करके शीघ्र ही भीष्म के सम्मुख गया और युद्ध जारी हुआ तदनन्तर आप के शूरवीर पुत्र पुकारते हुए बड़े वेग से अर्जुन के सम्मुख दौड़े वह आश्चर्य सा हुआ वहां अर्जुन ने आपके पुत्रों की नानाप्रकार की सेना को ऐसे छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि वायु आकाश में बादलों को छिन्न भिन्न कर देता है फिर उस सावधान शिखण्डी ने भरतवंशियों के पितामह भीष्म को पाकर अनेक बाणों से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ढक दिया उस रथरूप अग्निशाला और धनुषरूप ज्वाला वा खड्ग शक्तिरूप इन्धन वा बाणसमूहरूप प्रज्वलितरूपवाले भीष्म ने युद्ध में क्षत्रियों को भस्म कर दिया जैसे कि वन में वृद्धियुक्त बड़ी अग्नि वायु के साथ घूमती है उसी प्रकार दिव्य अस्त्रों को चलाते हुए भीष्मजी भी अग्नि की वर्षा करनेवाले हुये भीष्मजी ने अर्जुन के पीछे चलनेवाले सोमकों को मारकर सब सेना को भी रोका हे राजन्! भारी युद्ध में दिशा और विदिशाओं को शब्दायमान करते और सुनहरी पुङ्खवाले वा गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से रथी घोड़े और सवारों को गिराते हुए भीष्म ने रथ के समूहों को मुण्ड तालवनों के समान कर दिया सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ भीष्म ने युद्ध में रथ, हाथी और घोड़ों को सवारों से रहित किया हे राजन्! उसके धनुष प्रत्यञ्चा के वज्र के समान शब्द को सब ओर से सुन कर सब सेना अत्यन्त कम्पायमान हुई इसके पीछे वह बाण वारंवार सफल होकर गिरे और भीष्म के धनुष से निकले हुए बाण शरीरों में लग लग कर पार ही होगये हे राजन्! मैंने तीव्रगामी घोड़ों से युक्त और वायु के समान चलनेवाले रथों को विना सवारों के धरे हुए देखा चन्देरी काशी कोश देशियों के कुलीन महारथी शरीर के मोह को त्यागनेवाले महाप्रसिद्ध युद्ध से मुख न मोड़नेवाले अति शूर सुनहरी ध्वजावाले घोड़े रथ हाथियों समेत उस मृत्यु के समान भीष्म को युद्ध में पाकर परलोक को सिधारे हे राजन्! उस युद्ध में सोमकों का ऐसा कोई महारथी नहीं हुआ जो युद्धभूमि में भीष्म को पाकर जीवता हुआ जावे सब मनुष्यों ने भीष्मजी के पराक्रम को देखकर उन सब शूर वीरों को यमपुर को पहुँचा हुआ ही माना युद्ध में श्वेत घोड़ेवाले श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाले वीर अर्जुन और बड़े तेजस्वी पाञ्चाल देशीय शिखण्डी के सिवाय कोई महारथी उनके सम्मुख नहीं गया ॥ ८० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११७ ॥

एकसौअठारह का अध्याय।

संजय बोले कि हे पुरुषोत्तम, धृतराष्ट्र! शिखण्डी ने युद्ध में भीष्मजी को पाकर तीक्ष्णधारवाले दश भल्लों से छाती में घायल किया फिर तिरछी दृष्टि से भस्म करते हुए भीष्मजी ने क्रोधयुक्त नेत्रों से शिखण्डी को देखा हे राजन्! उसके स्त्रीपन को ध्यान करते हुए भीष्मजी ने सबके देखते हुए प्रहार नहीं किया और उस शिखण्डी ने उसको नहीं जाना इसके पीछे अर्जुन ने शिखण्डी से कहा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कि शीघ्र ही इन पितामह को सम्मुख चलकर मारो हे वीर ! मैंने मारने की ही इच्छा से तुझको आगे किया है कि तुम इस महारथी भीष्म को मारो मैं युधिष्ठिर की सेना भर में किसी और को ऐसा नहीं देखता हूँ जो तेरे सिवाय इस प्रबल युद्ध में भीष्मजी के सम्मुख युद्ध करने को समर्थ होवे हे पुरुषोत्तम! मैं यह सत्यही सत्य कहता हूं फिर अर्जुन से इस रीति से कहे हुए शिखण्डी ने शीघ्र ही नाना प्रकार के बाणों से पितामह को ढक दिया इसके पीछे आपके पिता देवव्रत भीष्मजी ने उन बाणों को तुच्छ समझकर क्रोधयुक्त होके युद्धभूमि में अर्जुन को शायकों से रोका इसी प्रकार उस महारथी अर्जुन ने सब सेना को अपने बाणों से परलोक में भेजा इस प्रकार बड़ी सेना समेत पाण्डवों ने भीष्म को ऐसे घेर लिया जैसे कि बादल सूर्य को घेर लेते हैं फिर चारों ओर से घिरे हुए भीष्मजी ने शूरवीरों को ऐसा भस्मीभूत किया जैसे कि कोपित अग्नि वन को भस्म कर देता है वहां हमने आपके पुत्र के पुरुषार्थ को देखा जो अर्जुन से युद्ध करके पितामह को रक्षित किया आपके धनुषधारी पुत्र दुःशासन के उस कर्म से युद्ध में सब लोगों को विश्वास हुआ कि इस अकेले ने ही अर्जुन से उसके सब साथी पाण्डवों समेत युद्ध किया और प्रत्यक्ष में उसको पाण्डव लोग युद्ध से नहीं हटा सके उस युद्ध में दुःशासन के हाथसे रथी विरथ हुए और बड़े धनुषधारी सवार और महाबली हाथी तीक्ष्ण बाणों से घायल होकर पृथ्वी पर गिरे और इसी प्रकार बाणों से पीड्यमान अन्य हाथी चारों दिशाओं में भागे जैसे कि अग्नि इन्धन को पाकर प्रकाशित प्रज्वलित होकर प्रत्यक्ष कोपयुक्त होती है उसी प्रकार पाण्डवों की सेना को जलाता हुआ आपका पुत्र भी ज्वलित अग्नि के समान होगया हे भरतवंशिन् ! पाण्डवों के किसी महारथी ने श्वेत घोड़ेवाले श्रीकृष्णमहाराज को सारथी बनाने वाले महारथी इन्द्र के पुत्र अर्जुन के सिवाय उस बड़े शोभायमान के विजय करने को साहस और उत्साह नहीं किया और न किसी रीति से सम्मुख जाने का विचार किया हे राजन् ! फिर वह विजयी अर्जुन युद्ध में उसको जीतकर सब सेना के देखते हुए भीष्मजी के सम्मुख गया और वह पराजय पाने वाला आपका पुत्र महामदोन्मत्त उन भीष्मजी की भुजाओं का आश्रय लेकर वारंवार साहस को करके फिर युद्ध करने लगा तब वह अर्जुन युद्ध में लड़ता हुआ महाशोभायमान हुआ हे राजन् ! फिर शिखण्डी ने युद्ध में

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वज्र के समान स्पर्शवाले विष भरे सर्प के समान बाणों से पितामह को घायल किया उन बाणों से आपके पिता कुछ भी पीड़ित नहीं हुए उस समय आश्चर्य करते हुए भीष्मजी ने उन बाणों को सह लिया जैसे प्यास से दुःखी मनुष्य जलकी धाराओं को चाहता है उसी प्रकार भीष्मजी ने शिखण्डी की बाणधाराओं को सहज ही में सह लिया फिर क्षत्रियों ने महात्मा पाण्डवों की सेनाओं के भस्म करनेवाले भीष्मजी को युद्ध में भयंकर देखा इसके पीछे आपका पुत्र सब सेनाओं से बोला कि युद्ध में सब ओर से अर्जुन के सम्मुख जाओ धर्म के जाननेवाले भीष्मजी युद्ध में तुम सबकी रक्षा करेंगे वह भय को अत्यन्त त्याग करके पाण्डवों के सम्मुख युद्ध करते हैं युद्ध में धृतराष्ट्र के सब पुत्रों के सुखरूप चित्त की रक्षा करते हुए भीष्मजी सुनहरी तालध्वजा समेत नियत हैं बड़े बड़े उपाय करनेवाले देवता लोग भी भीष्म के सम्मुख खड़े होने को समर्थ नहीं हैं तो मरणधर्मवाले पाण्डव उस महात्मा के सम्मुख होने को कैसे समर्थ हो सकते हैं इस निमित्त मेरे सब शूरवीर लोग जाकर युद्ध में अर्जुन को पाकर संग्राम करो अब युद्ध में चैतन्य होकर मैं तुम सब राजाओं समेत पाण्डव युधिष्ठिर से लड़ूंगा हे राजन्! आपके धनुषधारी पुत्र के इस वचन को सुनकर सब शूरवीर लोग अत्यन्त क्रोधयुक्त महाबली विदेह, कालिंग, दासेरकगण, निषाद, सौवीर, बाह्लीक, दरद और पश्चिमोत्तरीय राजा लोग मालव अभिषाह शूरसेन, शिवय, वशातय, शाल्व, शक, त्रिगर्त्त, केकयों समेत अम्बष्ट यह सब उस महायुद्ध में अर्जुन के सम्मुख दौड़े हे राजन्! जैसे कि पतङ्ग और शलभा अग्नि में गिरते हैं इसी प्रकार युद्ध में उस अद्वितीय अर्जुन की ओर को दौड़े फिर उस महाबली अर्जुन ने दिव्य अस्त्रों को विचारपूर्वक प्रयोग करके उन बड़े उत्तम दिव्य अस्त्रों और बाणों के उष्ण तेज से शीघ्र ही इन सब सेना समेत महारथियों को ऐसे भस्म किया जैसे कि अग्नि पतङ्गों को भस्म कर देता है उस महाबली अर्जुन का वह गाण्डीव धनुष हजारों बाणों को छोड़ता हुआ आकाश में प्रकाशमान देख पड़ा, वह बाणों से पीड्यमान राजा लोग जिन की बड़ी बड़ी ध्वजा टूट गई थीं एक साथ उस वानरध्वज अर्जुन के सम्मुख वर्त्तमान नहीं रहे अर्जुन के बाणों से घायल रथी लोग ध्वजाओं समेत और घोड़ों समेत अश्वारूढ़ वा हाथियों समेत हाथियों के सवार पृथ्वी पर गिरे इसके पीछे अर्जुन के हाथों के छूटे हुए बाणों

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

से और चारों ओर से राजाओं की भगी हुई सेनाओं से पृथ्वी व्याप्त होगई फिर अर्जुन ने सेना को भगाकर दुःशासन के ऊपर बहुत से बाणों की वर्षा करी वह लोहे के सब बाण आपके पुत्र दुःशासन को बेधकर पृथ्वी में ऐसे प्रवेश कर गये जैसे कि सर्प बामी में प्रवेश करता है तदनन्तर प्रभु अर्जुन ने उसके घोड़ों को मारकर सारथी को गिराया और बीस बाण से विविंशति को रथ से विरथ कर दिया और झुकी गाँठवाले पांच बाणों से अत्यन्त घायल भी किया इसी रीति से उस श्वेतघोड़ेवाले अर्जुन ने कृपाचार्य, कर्ण और शल्य को बहुत से लोहे के बाणों से बेधकर विरथ कर दिया हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! इस प्रकार वह सब कृपाचार्य और शल्य विरथ हुए और युद्ध में अर्जुन से पराजित दुश्शासन विकर्ण और विविंशति मुख को मोड़ गये हे भरतर्षभ! मध्याह्नकाल में अर्जुन महारथियों को विजय करके युद्ध में निर्धूम अग्नि के समान प्रकाशमान हुआ इसी प्रकार बाणों की वर्षा से अन्य राजाओं को वा महारथियों के मुखों को फिरवा के युद्ध में रुधिररूप जल रखनेवाली बड़ी नदी को जारी किया फिर पाण्डव और कौरवों की सेनाओं में बहुधा हाथी, घोड़े और रथों के समूह रथियों के हाथ से मारे गये हाथियों से रथ और पैदलों से घोड़े मारे गये और बीच में से कटे हुए हाथी, घोड़े, रथ और वीर सवारों के शरीर दिशाओं में गिरे हे राजन्! कुण्डल बाजूबन्द धारण करनेवालों से युद्धभूमि आच्छादित होगई और गिरे वा गिरते हुए महारथी राजकुमारों से वा रथों की नेमियों से कटे और मरे हुए हाथियों से भी वह युद्धभूमि ढक गई पैदल भी दौड़े और अश्वसवार जंगी घोड़ों समेत दौड़े वा हाथी घोड़े और रथों के शूरवीर चारों ओर से गिरे और वह रथ जिनके पहिये, जुए, ध्वजा, टूट गई थीं पृथ्वी पर पड़े हुए हाथी घोड़े और रथसमूहों के रुधिर से छिड़की हुई वा ढकी हुई वह युद्धभूमि ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि शरद् ऋतु का लाल बादल होता है फिर कुत्ते, कौवे, गिद्ध, भेड़िये, शृगाल और विपरीत रूप के पशु, पक्षी अपने भक्ष्य को पाकर शब्द करने लगे और सब दिशाओं में अनेक प्रकार की वायु चली राक्षसों के देखने और जीवों के शब्द करने पर सुनहरी रस्सी वा माला वा बहुमूल्य की पताका अकस्मात् हवा से चलायमान होकर दृष्टिगोचर हुई हजारों श्वेतछत्र वा बड़े बड़े रथ ध्वजाओं समेत टूटे हुए दिखाई पड़े और बाणों से पीड्यमान हाथी पताकाओं समेत चारों

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दिशाओं को चलेगये हे महाराज ! गदा, शक्ति और धनुष के धारण करने वाले क्षत्रियलोग चारों ओर से पृथ्वी पर पड़े हुए देखने में आये इसके पीछे भीष्मजी ने दिव्य अस्त्रों को प्रकट किया और सब धनुषधारियों के देखते हुए अर्जुन के सम्मुख दौड़े तब शस्त्रों से अलंकृत शिखण्डी उन भीष्मजी के सम्मुख पहुँचा इसको देखते ही भीष्मजी ने उस अग्नि के समान प्रकट किये हुए अस्त्र को खैंच लिया हे राजन् ! श्वेत घोड़े रखनेवाले मझले पाण्डव अर्जुन ने शीघ्र ही पितामह को मोहित करके आपकी सेना को मारा ॥ ६५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वण्यष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११८ ॥

एकसौउन्नीस का अध्याय।

संजय बोले कि हे भरतवंशिन् ! इस रीति से उन बहुत सी सेनाओं के तैयार होने पर युद्ध में मुख न मोड़नेवाले सब शूरवीर ब्रह्मलोक को उत्तम मानने वाले वर्तमान हुए, इस तुमुल युद्ध में सेना से सेना नहीं भिड़ी किन्तु इसरीति से लड़े कि रथी रथियों से, पदाती पदातियों से, घोड़े घोड़ों से, हाथी हाथियों के सवारोंसे युद्ध करनेवाले हुए हे राजन् ! उन्मत्त के समान युद्ध करनेवाली दोनों सेनाओं को बड़ा भयकारी दुःख वर्त्तमान हुआ अर्थात् सब प्रकार से मनुष्य और हाथियों के मरने पर उस भयकारी नाशरूप प्रलय में अनीति जारी हुई इसके पीछे शल्य, कृपाचार्य, चित्रसेन, दुःशासन, विकर्ण इन सब शूरों ने प्रकाशित रथों पर सवार होकर पाण्डवों की सेना को बहुत कम्पायमान किया हे राजन् ! युद्ध में महात्माओं के हाथ से घायल पाण्डवों की सेना अनेक प्रकार से ऐसे घूमी जैसे कि जल में वायु के कारण नौका घूमती है, जैसे कि माघ, फाल्गुन के समय में लोग गोभियों के मर्मों को करते हैं उसी प्रकार भीष्मजी पाण्डवों के मर्मों को काटते हैं महात्मा अर्जुन के हाथ से तुम्हारी सेना के बहुत से हाथी जो कि नवीन बादल के समान थे युद्ध में गिराये गये अर्जुन के हाथसे सेना के प्रधान लोग मर्दन कियेहुए देखने में आते हैं और वहां पर नाराच नाम बाणों से घायलहुए हज़ारों बड़े बड़े हाथी दुःख से महा भयानक शब्दों को करके गिरपड़े मृतक हुए महात्माओं के भूषणोंसे अलंकृत शरीरों से और कुण्डलधारी शिरों से ढकीहुई युद्धभूमि बड़ी शोभायमान हुई हे राजन् ! उत्तम वीरों के बड़े नाश होने पर युद्ध में भीष्म और पाण्डव अर्जुन को परस्पर में चढ़ाइयां होने पर वह आपके सब पुत्र जिनके कि आगे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सेना चलती थी युद्ध में पितामह को पराक्रम करनेवाला देखकर स्वर्ग को ही श्रेष्ठ स्थान मानकर युद्ध में मरण को चाहते हुए उस उत्तम वीरों के नाश में पाण्डवों के सम्मुख हुए हे महाराज! ब्रह्मलोक के लिये युद्ध में प्रवृत्त शूरवीर पाण्डव पूर्व समय में पुत्रसमेत आपके दियेहुए नाना प्रकार के कष्टों को स्मरण करते युद्ध में भय को त्याग करके अत्यन्त प्रसन्न के समान आपके पुत्र और शूरवीरों से लड़ते हैं फिर महारथी सेनापति ने अपनी सेना से कहा कि सब सृञ्जियोंसमेत सोमक लोग शीघ्र भीष्म के सम्मुख चलो वह सोमक और सृञ्जिय नाम क्षत्रिय सेनापति के वचन को सुनकर शस्त्रों की वर्षा से घायल हुए भीष्मजी के सम्मुख गये हे राजन्! इसके पीछे आपके पिता भीष्मजी महाघायल और क्रोध के वशीभूत होकर उन सृञ्जियों से युद्ध करनेलगे हे तात! पूर्वसमय में बुद्धिमान् परशुरामजी ने उस नेकनाम को अच्छे प्रकार से शिक्षा करी जोकि शत्रु की सेना के नाश करनेवाले और कौरवों के वृद्ध पितामह भीष्म ने उस शिक्षा को काम में लाकर शत्रुओं की सेना का नाश करते हुए प्रतिदिन पाण्डवों की दश हज़ार सेना को मारा। हे भरतर्षभ! उस दशवें दिन के वर्त्तमान होनेपर अकेले भीष्म ने युद्ध में मत्स्य और पाञ्चाल देशीय सेना में दश हज़ार हाथियों का यूथ मारकर सात महारथी मारे फिर पांच हज़ार रथियों को मारकर प्रबल युद्ध में मनुष्यों के चौदह हज़ार समूह को मारके हाथियों के बहुत हज़ार और घोड़ों के दश हज़ार यूथ पराक्रम के द्वारा आपके पिता के हाथ से मारे गये इसके पीछे सब राजाओं की सेना को इधर उधर करके विराट के प्यारे भाई शतानीक को रथ से गिराया हे राजन्! प्रतापवान् भीष्म ने शतानीक को मारकर हज़ारों राजाओं को भल्लों से मारडाला और जो कोई राजा पाण्डवों के वा अर्जुन के आगे पीछे चारों ओर को चलनेवाले थे वह राजा लोग भी भीष्म को पाकर यमलोक को सिधारे भीष्मजी ने इस रीति से बाणों के जालों से चारों ओर की दश दिशाओं को ढकदिया और आप पाण्डवों की सेना को उल्लङ्घन करके सेनामुख पर नियत हुआ वह उस दशवें दिन में बड़े कर्म को करके धनुष को हाथ में पकड़नेवाला दोनों सेनाओं के मध्य में नियत हुआ कोई राजा लोग युद्ध में उसके देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि ग्रीष्म ऋतु में आकाश स्थल संतप्त करते सूर्य को नहीं देखसक्ता और जैसे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कि इन्द्र ने युद्ध में दैत्यों की सेना को तपाया इसी प्रकार भीष्मजी ने पाण्डवों के शूरवीरों को भी संतप्त किया मधुदैत्य के मारनेवाले देवकी के पुत्र श्रीकृष्णजी इस प्रकार पराक्रम करनेवाले भीष्म को देखकर अपने मित्र अर्जुन से बोले कि यह शन्तनु का पुत्र भीष्म दोनों सेनाओं में नियत है। बड़े बलसे इसको मारकर तेरी विजय होगी तू बल से इसको वहां नियत कर जहां यह सेना घायल होती है हे समर्थ! भीष्म के बाण सहने को कोई साहस नहीं करता है इसके अनन्तर उस क्षण में प्रेरित वानरध्वज अर्जुन ने बाणों से भीष्म को ध्वजा रथ और घोड़ों समेत गुप्त करदिया फिर उस प्रतापी भीष्म ने भी पाण्डवों के चलाये हुए बाणसमूहों को अपने बाणों से अनेक प्रकार करके छिन्न भिन्न करदिया इसके पीछे राजा द्रुपद और पराक्रमी धृष्टकेतु पाण्डव भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव, चेकितान, पांचोभाई केकय, महाबाहु सात्यकी, अभिमन्यु, घटोत्कच, द्रौपदी के पांचो पुत्र, शिखण्डी, पराक्रमी राजा कुन्तिभोज, सुशर्मा, राजा विराट यह सब और अन्य बहुत से पाण्डवों के शूरवीर भीष्मजी के शायकों से पीड्यमान हुए अर्जुन के हाथ से पीड़ित शूरवीर शोकसमुद्र में डूबगये इसके पीछे बड़ी तीव्रता से शिखण्डी उत्तम धनुष को लेकर अर्जुन से रक्षा किया हुआ भीष्म के सम्मुख चला युद्ध के प्रकारों का ज्ञाता अजेय अर्जुन के सब साथियों को मारकर उनके सम्मुख चला सात्यकी, चेकितान, धृष्टद्युम्न, विराट द्रुपद माद्री के दोनों पुत्र यह सब दृढ़ धनुषयुक्त अर्जुन से रक्षित होकर युद्धभूमि में भीष्म के सम्मुख गये और अभिमन्यु वा द्रौपदी के पांचो पुत्र यह भी बड़े शस्त्रों के धारण करनेवाले युद्ध में भीष्म की ओर चले और दृढ़ धनुषधारी युद्ध में मुख न मोड़नेवाले बाणों से घायल उन सबने भी पितामह भीष्म को बाणों की बड़ी वर्षा से आच्छादित किया फिर प्रसन्नचित्त भीष्म ने उन बाणसमूहों को जिनको कि उत्तम राजाओं ने छोड़ा था काटकर पाण्डवों की सेना को मझाया क्रीड़ा करते हुए पितामह ने बाणों को निष्फल कर वारंवार आश्चर्ययुक्त होकर उसके स्त्रीपने को स्मरण करके बाणों को पांचालदेशीय शिखण्डी पर नहीं चलाया फिर उस महारथी ने द्रुपद की सेना में सात रथियों को मारा। इसके अनन्तर क्षणमात्र ही में उस अकेले की ओर दौड़ते हुए मत्स्य, पाञ्चाल और चंदेरी देश के क्षत्रियों का कलकला शब्द उत्पन्न हुआ हे शत्रुसंतापिन्! उन मनुष्यों ने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रथ के समूह और बाणों से उस युद्ध में शत्रु के तपानेवाले भागीरथी के पुत्र अकेले भीष्म को ऐसे ढक दिया जैसे कि बादल सूर्य को ढकदेते हैं इसके पीछे देव दानवों के समान दोनों के युद्ध में अर्जुन ने शिखण्डी को आगे करके भीष्म को मोहित किया ॥ ५३ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वण्येकोनविंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११९ ॥

एकसौबीस का अध्याय ।

संजय बोले कि इस प्रकार से उन सब पाण्डवों ने शिखण्डी को आगे करके और युद्ध में चारों ओर से भीष्मजी को घेर कर घायल किया बड़े भयानक शतघ्नी, परिघ, फरसे, मुद्गर, मुशल, प्रास, क्षेपणी, कनक पुङ्खवाले शरशक्ति, तोमर, कंपन, नाराच, वत्सदन्त, भुशुण्डी आदि अनेक शस्त्रों के द्वारा युद्ध में सब सृञ्जियों ने एकसाथ ही भीष्म को बहुत प्रकार से घायल किया तब वह भीष्म टूटे कवच बहुत शस्त्रों से पीड्यमान और मर्मस्थलों के घायल होने पर भी दुःखी नहीं हुए जिसके बाण और अस्त्रों से प्रकट होने वाली प्रकाशित अग्नि और रथ की चक्रधारा का शब्द वा पट्टिश आदि बड़े बड़े अस्त्रों का प्रकाश और जड़ाऊ धनुषवाले बड़े बड़े शूरवीरोंका नाशही बड़ा ईंधन था वह प्रलयाग्नि के समान शत्रुओं के सम्मुख हुआ और अवकाश पाकर रथों के समूहों में से बाहर निकलगया, फिर राजाओं के मध्य में वर्त्तमान होकर घूमता देख पड़ा इसके पीछे राजा पाञ्चाल और धृष्टकेतुको ध्यान न करके पाण्डवों की सेना के मध्यवर्त्ती होकर भीष्मजीने सात्यकी, भीमसेन, अर्जुन, द्रुपद, विराट, धृष्टद्युम्न इन छः महारथियों को बड़े भयकारी युद्ध में घायल करनेवाले उत्तम तीक्ष्ण बाणों से घायल किया फिर उन महारथियों ने उनके उन तीक्ष्ण बाणों को दूर करके बड़े वेग से दश दश बाणों के द्वारा भीष्मजी को पीड्यमान किया और महारथी शिखण्डी ने सुनहरी पुङ्खवाले शिला पर तीक्ष्ण किये बाणों को मारा वह बाण शीघ्र ही भीष्मजी के शरीर में प्रवेश करगये इसके पीछे क्रोधयुक्त अर्जुन ने शिखण्डी को आगे करके भीष्मजी के सम्मुख दौड़कर उनके धनुष को काटा फिर द्रोणाचार्य, कृतवर्मा, महारथी जयद्रथ, भूरिश्रवा, शल्य और भगदत्त भीष्म के धनुष को तोड़ना न सहकर बड़े क्रोधयुक्त होकर सातों मिलकर अर्जुन के सम्मुख गये वहां दिव्य अस्त्रों को दिखाते हुए पाण्डवों को शस्त्रों से ढकते उन सब क्रोधभरे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महारथी पुरुषों के ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि प्रलयकाल में उठेहुए समुद्र के शब्द होते हैं और अर्जुन के रथपर ऐसे कठिन शब्द हुए कि ले चलो पकड़ो घायल करो मारो हे राजन्! पाण्डवों के महारथी उस कठिन कठोर शब्द को सुनकर अर्जुन को चाहते हुए उन महारथियों के सम्मुख दौड़े सात्यकी, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, विराट, द्रुपद, नकुल, सहदेव, घटोत्कच राक्षस और अत्यन्त क्रोधयुक्त अभिमन्यु यह सातों महाक्रोध में ज्वलित होकर अपूर्व धनुषों को लिये उन महारथियों के सम्मुख दौड़े इन सब लोगों का युद्ध ऐसा महाघोर रोमहर्षण हुआ जैसा कि दैत्यों से और देवताओं से हुआ था फिर युद्ध में अर्जुन से रक्षित शिखण्डी ने उन टूटे धनुषवाले भीष्म को दश बाणों से बेधा और दश ही बाणों से सारथी को घायल किया और एक बाणसे उसकी ध्वजाको भी छेदडाला गाङ्गेय भीष्मजी बड़े वेगवान् दूसरे धनुष को लेकर युद्ध करनेलगे अर्जुन ने उनके उस धनुष को भी तीन तीक्ष्ण बाणों से काटा इसरीति से उस शत्रुसंतापी क्रोधभरे अर्जुन ने वारंवार लिये हुए भीष्म के धनुषों को काटा तब उन टूट धनुष अत्यन्त क्रोधयुक्त होठों को चाबतेहुए भीष्मजी ने पर्वतों को भी फाड़नेवाली घोर शक्तिको हाथ में लिया और बड़े क्रोधसे उस शक्तिको अर्जुन के रथपर फेंका उस वज्रके समान प्रकाशमान आतीहुई शक्तिको देखकर पाण्डुनन्दन अर्जुनने पांच तीक्ष्णभल्लों को हाथमें लिया और उनकी उस शक्ति को पांच बाणोंसे टुकड़े टुकड़े करदिया हे राजन्! अर्जुन ने भीष्म की भुजासे फेंकीहुई शक्ति को काटा फिर अर्जुनसे कटीहुई शक्ति रथ से ऐसे गिरपड़ी जैसे कि बादलों के समूहों से अलग होकर बिजली गिरती है—शत्रुओं के पुरोंके विजयकरनेवाले वीर भीष्म ने उसटूटीहुई शक्तिको देखकर युद्धमें चिन्ताकरी कि मैं अकेले धनुषसे सब पाण्डवों के मारने को कैसे समर्थ हूंगा दूसरे इन्हों के रक्षक महाबली श्रीकृष्णजी हैं इन दोनों कारणों से मैं पाण्डवों से नहीं लड़ूंगा प्रथम तो पाण्डवों के अवध्य होने से दूसरे शिखण्डी के स्त्रीपने से पूर्वसमय में मेरे प्रसन्नचित्त पिताने काली नाम माताको विवाहा उस समय मुझको वरदान दिया था कि तू अपनी इच्छा के अनुसार मरैगा और युद्धमें सबसे अवध्य होगा इस कारणसे मैं अपनी मृत्युको समयपर वर्त्तमान मानता हूं बड़े तेजस्वी भीष्मजी के इसप्रकारके निश्चय को जानकर आकाश में नियत ऋषियों ने और अष्ट वसुओं ने भीष्मजी से कहा हे तात!

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जो तुमने निश्चय किया वही हमको भी अभीष्ट है हे महाराज! तुम इसी को करो और युद्ध से अपने चित्त को हटाओ इस वचन के समाप्त होने पर चारोंओर से वह वायु प्रकट हुई जो कि आनन्दरूप त्रिविध प्रकार से सुगन्ध युक्त थी उस समय देवताओंकी भी दुन्दुभियां अच्छेप्रकारसे बजीं और भीष्मजी के ऊपर पुष्पों की वर्षा हुई, हे राजन्! व्यासमुनि के तेज से मेरे और महाबाहु भीष्म के सिवाय उन वार्तालाप करनेवालों के वचन को किसीने भी नहीं सुना तब सब लोक के प्यारे भीष्मजी को रथ से पृथक् होने पर भीष्म के चाहनेवाले सब देवताओं को बड़ा आश्चर्य हुआ इसके पीछे शन्तनु का पुत्र तेजस्वी भीष्म देवगणों के वचन को सुनकर अर्जुन के सम्मुख नहीं रहा जो कि सब पत्तों के तोड़नेवाले तीक्ष्ण बाणों से भी घायल था तो भी क्रोधयुक्त शिखण्डी भरतवंशियों के पितामह को तीक्ष्ण धार के नौ बाणों से छातीपर घायल किया वह कौरवों के पितामह भीष्मजी युद्ध में उस प्रहार से घायल होकर भी ऐसे कम्पायमान नहीं हुए जैसे कि भूकम्प होने पर पर्वत नहीं हिलता इसके पीछे गाण्डीव धनुष को खैंचनेवाले अर्जुन ने हँसकर गाङ्गेय भीष्मजी को क्षुद्रक नाम के पच्चीस बाणों से घायल किया फिर शीघ्रता करने वाले अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने जैसे भीष्म को सैकड़ों बाणों से सब अङ्ग और मर्मस्थलों पर घायल किया इसीप्रकार दूसरे शत्रुओं ने भी इनको अनेकप्रकार से घायल किया फिर महारथी भीष्म ने शीघ्र ही उनको अपने बाणों से घायल किया और उनके छोड़ेहुए बाणों को गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से जहां का तहां रोक दिया इसके पीछे महारथी शिखण्डी ने युद्ध में जिन बाणों को छोड़ा उन सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्णधारयुक्त बाणों ने उन भीष्मजी को पीड़ित नहीं किया इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन शिखण्डी को आगेकरके भीष्म के सम्मुख वर्त्तमान हुआ और उनके धनुष को काटा उसीप्रकार इनको दश बाणों से वेधकर एक बाण से उनकी ध्वजा को भी काटा और दश विशिखबाणों से उनके सारथी को अत्यन्त कम्पायमान किया फिर भीष्म ने दूसरे प्रबल धनुष को लेकर तैयार किया इस धनुष के भी अर्जुन ने तीन तीक्ष्ण भल्लों से तीन खण्ड किये इसीप्रकार से अर्जुन ने आधे ही निमिष में उस युद्धभूमि में हाथ में लियेहुए उनके अनेक धनुषों को काटा फिर शन्तनु के पुत्र भीष्म अर्जुन के सम्मुख वर्त्तमान नहीं हुए तब अर्जुन ने उनको क्षुद्रक नाम पच्चीस

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बाणों से घायल किया फिर वह अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी भीष्मजी दुश्शासन से बोले कि इस पाण्डवों के महारथी युद्ध में क्रोधरूप अर्जुन ने युद्ध के बीच हजारों बाणों से मुझको घायल किया है यह अर्जुन युद्ध में वज्रधारी इन्द्र से भी विजय करने के योग्य नहीं है और वीर, देवता, दानव, राक्षस भी सब मिलकर मेरे विजय करने को समर्थ नहीं हैं फिर पृथ्वी के नर महारथी क्या पदार्थ हैं इसरीति से इन दोनों के वार्त्तालाप होने पर अर्जुन ने शिखण्डीको आगेकरके भीष्मजीको तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे फिर घायल किया तब तो उस गाण्डीवधनुषधारी के तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त घायल और आश्चर्ययुक्त भीष्मजी दुश्शासन से कहनेलगे कि युद्ध में इन्द्रवज्र के समान अर्जुन के छोड़े हुए स्पर्श करनेवाले बाण सब सफलहुए हैं इससे विदित होता है कि ये बाण शिखण्डी के नहीं हैं बड़े दृढ़ और मर्मस्थलों के काटनेवाले पर्वतों को भेदनकरनेवाले बाण मुसलों के समान मुझको मारते हैं यह बाण किसी प्रकार से शिखण्डी के नहीं हैं ब्रह्मदण्ड केसमान स्पर्शवाले वा वज्र के समान तीक्ष्ण कष्ट से सहने के योग्य बाण मेरे प्राणों को पीड़ा देते हैं इससे यह शिखण्डी के बाण नहीं हैं यमदूतों के समान अप्रिय गदा और परिघ के समान स्पर्शवाले बाण मेरे प्राणों को निकालते हैं यह बाण शिखण्डी के नहीं हैं सर्पों के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त विषभरे चाटते हुए मेरे मर्मों में प्रवेश करते हैं इससे यह बाण शिखण्डी के नहीं हैं यह बाण अवश्य अर्जुन के हैं शिखण्डी के नहीं हैं क्योंकि यह बाण मेरे अङ्गों को ऐसे चूर्ण किये डालते हैं जैसे कि भाद्रपद के महीने में प्रचण्ड सूर्य अङ्गों को संतप्त करके चूर्णीभूत करते हैं विजयी गाण्डीव धनुषधारी वानरध्वज वीर अर्जुन के सिवाय अन्य पृथ्वी के सब राजा लोग भी मुझको व्यथित नहीं करसक्के हे भरतर्षभ ! इसप्रकार बोलते वा पाण्डवों को भस्म करना चाहते उन शन्तनु के पुत्र भीष्म ने अर्जुन के ऊपर शक्ति को छोड़ा इसको देखकर अर्जुन ने आपके सब कौरवी वीरों के देखते हुए इनकी शक्ति को विशिख नाम तीन बाणों से काटकर गिराया फिर दो बातों में से एक को चाहते गाङ्गेय भीष्मजी ने सुवर्णजटित ढाल और तलवार को मृत्यु के लिये वा विजय के निमित्त हाथ में पकड़ा तब अर्जुन ने उस रथ से नहीं उतरे हुए की उस ढाल को शायक नाम बाणों से सौ टुकड़े किया यह बड़ा आश्चर्य-सा हुआ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने अपनी सेनाओं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

का आज्ञा करी कि भीष्म के सम्मुख जाओ तुमको थोड़ा-सा भी भय न होगा यह सुनकर वह सेना चारों ओर से तोमर, प्राश, बाणसमूह, पट्टिश, सुन्दर खड्ग, तीक्ष्णनाराच, वत्सदन्त और भल्लों समेत उस अकेले के सम्मुख गये इसके पीछे पाण्डवों के महाभयकारी सिंहनाद जारी हुए इसी प्रकार भीष्म की विजय चाहनेवाले आपके पुत्र भी गर्जे और उस अकेले भीष्म के ओर पास वर्त्तमान होकर सिंहनाद करनेलगे हे राजेन्द्र! वहां दशवें दिन भीष्म और अर्जुन की सम्मुखता में आपके पुत्रोंका युद्ध अन्यलोगोंसे महाघोर-रूप हुआ परस्पर में मारती और लड़ती हुई सेना के भ्रमणचक्र एक मुहूर्त्त-पर्यन्त गङ्गा और समुद्र के गिर्दाब के समान हुए तब पृथ्वी अशुभरूपी और रुधिर से पूर्ण होगई उस समय अच्छा बुरा कुछ नहीं मालूम हुआ वह भीष्म उस दशवें दिन में दश हज़ार वीरों को मारकर मर्मस्थलों में महाघायल होने पर भी युद्ध में नियत रहे इसके पीछे उस सेनामुख पर नियत धनुषधारी अर्जुन ने कौरवी सेना के मध्य में से सेना को भगाया तब हम उस श्वेत घोड़े रखनेवाले कुन्ती के पुत्र अर्जुन से भयभीत वा तीक्ष्ण शस्त्रों से पीड्यमान होकर युद्ध से भगे सौवीर, कितव वा पूर्वी पश्चिमी और उत्तरीय राजा वा मा-लवदेशीय, अभीषाह, शूरसेन, शिवय वशातय, शाल्व आश्रय, त्रिगर्त्त, अम्बष्ट केकयों समेत इन सब बाणों से पीड़ित और घावों से दुःखी महात्माओं ने युद्ध में अर्जुन के साथ लड़ते हुए भीष्म को त्याग नहीं किया इसके पीछे बहुत से क्षत्रियों ने चारों ओर से उस अकेले को घेरकर और सब कौरवों को हटाकर बाणों की वर्षा से ढक दिया और गिराओ, पकड़ो, लड़ो, काटो, यह कठिन शब्द भीष्म के रथ के पास हुए और युद्ध में हज़ारों को मारकर उसके शरीर में दोऊ दल का भी अन्तर घावों से बाक़ी नहीं रहा ऐसी दशावाले अर्जुन के तीक्ष्ण नोकवाले बाणों से अत्यन्त घायल किये हुए आपके पिता भीष्म-जी कुछ सूर्य के शेष रहनेपर आपके पुत्रों के देखते हुए रथ परसे औंधे शिर होकर पृथ्वी पर गिरपड़े। हे भरतवंशिन्! रथ से भीष्मजी के गिरते ही राजाओं में और आकाश के देवताओं में हाय हाय आदि बहुत से शब्द होने लगे उस महात्मा पितामह को गिरते हुए देखकर भीष्म के साथ हम सबके भी हृदय फटगये वह महाबाहु इन्द्रध्वजा के समान ऊंचा और सब धनुषधा-रियों में ध्वजारूप भीष्म पृथ्वी को अच्छीरीति से कम्पायमान करता गिरा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उन बाणसमूहों से वेधित होनेपर भी भीष्मजी ने पृथ्वी को स्पर्श नहीं किया अर्थात् बाणशय्या ही के ऊपर रहे फिर उस बाणशय्या पर सोते हुए बड़े धनुषधारी पुरुषोत्तमरूप रथ से गिरे हुए भीष्मजी में दिव्यभाव प्रविष्ट हुआ बादल वर्षा करनेलगे पृथ्वी कम्पायमान हुई उस गिरते हुए ने भी दक्षिण दिशा में नियत सूर्य को देखा हे भरतर्षभ ! उस प्रतापी शूरवीर ने कालज्ञान को विचार कर सावधानी को पाया और अन्तरिक्ष में चारों ओर से यह दिव्य वचन सुने कि सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महात्मा पुरुषोत्तम भीष्म दक्षिणायन सूर्य वर्त्तमान रहनेपर किसी प्रकार से भी अपना शरीर नहीं त्यागेगा भीष्मजी इस वचन को सुनकर बोले कि मैं अभी नियत वर्त्तमान हूं। पृथ्वी पर गिरे हुए उत्तरायण को चाहते उन कौरवों के पितामह भीष्मजी ने प्राणों को धारण किया हिमाचल की पुत्री श्रीगङ्गाजी ने उनके अभिप्राय को जानकर महर्षि लोगों को हंसरूप करके उनके समीप भेजा इसके पीछे वह बहुत उड़ने वाले शीघ्रगामी हंस एकसाथ ही उस कौरवों के पितामह भीष्मजी के देखने को उस स्थानपर आये जहां नरोत्तम भीष्मपितामह शरशय्या पर सोते थे वहां आकर उन हंसरूप महर्षियों ने उस शरशय्या पर नियत हुए कौरव भीष्मजी को देखा और उनको दक्षिणायन सूर्य में पड़ा हुआ देखकर बड़ी परिक्रमा कर परस्पर में सलाह करके यह कहा कि भीष्म सरीखा महात्मा दक्षिणायन में कैसे जायगा ऐसा कहकर वह हंस दक्षिण की ओर को चले गये हे भरतर्षभ ! बड़े बुद्धिमान भीष्मजी अच्छी रीति से उनको देख विचार कर शोचपूर्वक बोले कि हे महर्षियो ! मैं किसीरीति से भी दक्षिणायन सूर्य में नहीं जाऊंगा यही मेरे मन में दृढ़ता है उत्तरायण सूर्य होने पर मैं अवश्य अपने उस स्थानपर जाऊंगा जोकि मेरा प्राचीन स्थानहै। हे हंसरूप महात्मा लोगो ! मैं आप लोगों से कहता हूं कि मैं उत्तरायण की इच्छा से प्राणों को धारण करूंगा क्योंकि अपने प्राणों का त्यागना मेरे ही स्वाधीन है इस हेतु से उत्तरायण सूर्य में प्राणत्याग करने की इच्छा से मैं तबतक अपने प्राणों को धारण करूंगा। उस महात्मा पिता ने जो मुझको अपनी इच्छा के अनुसार जब चाहें तब मरें यह जो वर प्रदान दिया है उसको मैं वैसे ही समझता हूं और वास्तव में भी वह यथार्थ है, इसकारण देहत्याग निश्चय होजाने पर भी अपने प्राणों को धारण करूंगा। उन हंसों से ऐसा कहकर शरशय्या पर शयन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करगये इस प्रकार उस बड़े पराक्रमी कौरवों के वृद्ध और प्रधान भीष्मजी के गिरने पर पाण्डवों ने और सृंजियों ने सिंहनाद किया हे राजन्! उन बड़े बलिष्ठ प्रतापवान् कौरवों के वृद्ध पितामह के आसन्न मृत्यु होने पर आपके पुत्रों ने कुछ करने के योग्य कर्म को नहीं माना उस समय कौरवों को बड़ा भारी मोह उत्पन्न हुआ उसके पीछे कृपाचार्य और दुर्योधन आदि सबलोग श्वासाओं को लेलेकर बड़ा रुदन करनेलगे और इसी व्याकुलता में बहुत विलम्बतक अचेत नियतहोकर महाशोचग्रस्ततासे युद्ध में चित्त नहीं लगाया। हृदय के ग्राह से पकड़े हुए अर्थात् शोच से ग्रसित होकर पाण्डवों के सम्मुख भी नहीं दौड़े जिनके कि बड़े बड़े शूरवीर मारेगये ऐसे हम लोगों ने दुर्योधन का नाश होना चित्त से विचार किया, अर्जुन से परास्त होकर हम लोगों ने करने के योग्य कर्म करने को भी नहीं जाना और परिघ के समान भुजाधारी सब शूरवीर पाण्डवों ने इस लोक में तो विजयरूपी कीर्ति को और परलोक में उत्तम गति को पाकर बड़े बड़े शंखों को बजाया हे राजन्! पाञ्चालों समेत सोमक लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिर हज़ारों बाजों के बजनेपर उस महाबली भीमसेन ने भुजदण्डों के कठिन शब्द किये अर्थात् दोनों खम्भ ठोंककर बड़ी गर्जना करी उस समर्थ गाङ्गेय भीष्मजी के आसन्न मृत्यु होने पर दोनों सेनाओं के शूरवीरों ने शस्त्रों को त्याग करके चारोंओर से बड़ा ध्यान किया कोई पुकारा कोई भागा कोई अचेत किसीने क्षत्रिय कुल की प्रशंसा करी किसीने भीष्मजी की प्रशंसा करी ऋषियों ने और पितरों ने भी महाव्रत भीष्मजी की प्रशंसा करी और भरतवंशियों के जो पूर्वके स्वर्गवासी पुरखालोग थे उन्होंने भी उनकी बड़ी प्रशंसा की पराक्रमी और बुद्धिमान् भीष्मजी महा उपनिषद्रूपी योग में वर्तमान होकर जप में प्रवृत्त उत्तरायण सूर्यकाल के इच्छावान् होकर नियत हुए॥ १२०॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि विंशत्युपरिशततमोऽध्यायः॥ १२०॥

एकसौइक्कीस का अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले कि, हे संजय! उन पराक्रमी देवता के समान गुरु पिता के निमित्त ब्रह्मचारी भीष्म से पृथक् होकर शूरवीर लोग किस दशा में होकर कौन काम करने लगे जब कि भीष्मजी ने दया करके शिखण्डी के ऊपर किसी शस्त्र का प्रहार नहीं किया तभी से मैं कौरवों को पाण्डवों के हाथ से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मृतकरूप मानता हूं हे संजय! अब इससे अधिक दूसरा कौन-सा दुःख होगा कि पिता को भी मृतक सुनकर मैं निर्बुद्धि जीता हूं हे तात! निश्चय करके मेरा हृदय लोहे से भी कठोर है जो अपने पिता भीष्मजी को भी सुन कर सौ टुकड़े नहीं होता हे सुन्दर व्रतधारिन्, संजय! यहां युद्धभूमि में विजयाभिलाषी कौरवोत्तम आसन्न मृत्यु भीष्मजी ने जो काम किया वह मुझसे कहो मैं युद्ध में मृतक देवव्रत भीष्म को वारंवार स्मरण करके अधैर्य होता हूं कि जो भीष्म पूर्व समय में परशुरामजी के भी दिव्य अस्त्रों से नहीं मारा गया वह द्रुपदके पुत्र पाञ्चालदेशीय शिखण्डी के हाथसे मारागया संजय बोले कि सायंकाल के समय धृतराष्ट्र के पुत्रों के व्याकुल करनेवाले पाञ्चाल देशियों को कौरवों के पितामह भीष्मजी ने आनन्द किया और बाणशय्या पर नियत पृथ्वी को विना स्पर्श किये शयन करनेवाले हुए रथ से भीष्म के गिरने और पृथ्वीतल से ऊपर पड़ने पर जीवों का हाय हाय शब्द अत्यन्तता से हुआ कौरवों के युद्ध की सीमा के वृक्षरूप महाविजयी भीष्म के गिरने पर दोनों सेनाओं के क्षत्रियों में महाभय उत्पन्न हुआ हे राजन्! शन्तनु के पुत्र भीष्म को टूटा कवच और ध्वजा से रहित देखकर चारों ओर से कौरव और पाण्डव वर्तमान हुए आकाश में अंधेरी छा गई सूर्य में अप्रकाशता आगई और पृथ्वी ऐसे शब्दों से शब्दायमान हुई कि यह ब्रह्मज्ञानियों में वा ब्रह्म के जानने वालों में श्रेष्ठ है जीवों ने उस सोते हुए पुरुषोत्तम के विषय में यह वचन कहा कि पूर्वसमय में इसी श्रेष्ठ पुरुष ने अपने पिता शन्तनु को कामाग्नि से पीड़ित जानकर अपने को ब्रह्मचारी किया और चारणों समेत ऋषियों ने उन बाणशय्या पर नियत कौरवों के पितामह भीष्मजी के आसन्न मृत्यु होने पर यह वचन कहा कि आपके पुत्रों ने कुछ करने के योग्य कर्म को नहीं जाना हे भरतर्षभ, धृतराष्ट्र! उन शोभा से रहित खिन्नस्वरूप लज्जायुक्त ईर्षा से भरे युद्ध में प्रवृत्त पाण्डवों ने विजय को पाकर सुवर्णजालों से अलंकृत बड़े बड़े शंखों को बजाया हे निष्पाप! बड़े आनन्द के हजारों बाजों के बजने पर हमने महाबली कुन्ती के पुत्र भीमसेन को बड़ी प्रसन्नतायुक्त क्रीड़ा करता हुआ देखा बड़े बली पाण्डव शत्रु को अपने वेग से मारकर महाप्रसन्न हुए तब कौरवों में महाकठिन मोह उत्पन्न हुआ इसीप्रकार भीष्मजी के मरने पर कर्ण और दुर्योधन ने भी वारंवार श्वास लिये सब हाय हायरूप हुआ अमर्यादा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वर्त्तमान हुई आपका पुत्र दुश्शासन भीष्मजी को गिरा हुआ देखकर बड़ी तीव्रता में नियत होकर द्रोणाचार्य की सेना में गया वह भाई का भेजा हुआ अपनी सेना से अलंकृत वीर दुश्शासन अपनी सेनाको विह्वल करताहुआ गया हे राजन्! कौरवों ने उस आये हुए दुश्शासन को देखकर चारोंओर से इस निमित्त घेर लिया कि देखिये यह क्या कहता है इसके पीछे दुश्शासन ने भीष्म जी के मरने का बृत्तान्त द्रोणाचार्यजी से कहा तब द्रोणाचार्य उसके अप्रिय-वचन को सुनकर शोक से अचेत होगये फिर उस प्रतापवान् द्रोणाचार्य ने सचेत होकर अपनी सेनाओं को और कौरवों ने भी लौटे हुए अपने कौरवी लोगों को देखकर अपनी प्रबल सेना को निषेध करदिया और शीघ्रगामी घोड़ों पर सवार अपने दूतों को इधर उधर भेजकर सबको निषेध करवा दिया फिर सब राजालोग अपने अपने कवचों को उतार उतार कर भीष्मजी के पास गये तदनन्तर लाखों शूरवीर युद्ध को विश्रामकरके उस महात्मा भीष्म के पास आकर ऐसे नियत हुए जैसे कि देवतालोग ब्रह्माजी के पास इकट्ठे होते हैं हे राजन्! इसके पीछे सबपाण्डवलोग भी कौरवों समेत उस शयन करते हुए भीष्मजी को पाकर दोनों हाथों से दण्डवत् करके नियत हुए इसके पीछे शन्तनु के पुत्र भीष्मजी सबकी यथायोग्य शिष्टाचारी करके अपने सम्मुख बैठे हुए पाण्डव और कौरवों से बोले हे महाभागो! तुम्हारा आगमन सफल हो और हे महारथीलोगो! तुम्हारा आगमन श्रेष्ठ हो हे देवताओं के समान पुरुष लोगो! मैं तुम्हारे देखने से बड़ा प्रसन्न होता हूं इन सब लोगों से ऐसा कहकर फिर शिर को लटकाये हुए कहने लगे कि मेरा शिर अत्यन्त लटकता है इससे मुझे तकिया दो यह सुनकर राजाओं ने बड़े उत्तम मृदुस्पर्शवाले तकिये लाकर दिये उन तकियों को पितामह ने नहीं चाहा और हँसकर राजाओं से कहा कि हे राजाओ! यह तकिये वीरों की शय्याओं पर शोभित नहीं होते हैं फिर सब लोक के महारथी प्रतापी पाण्डव अर्जुन को देखकर बोले कि हे महाबाहो, अर्जुन! मेराशिर लटकता है तू मुझको उचित तकिया देदे ॥ ३७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि एकविंशत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १२१ ॥

एकसौबाईस का अध्याय।

संजय बोले कि इस वचन को सुनते ही अर्जुन बड़े भारी धनुषको हाथ में

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लेके अश्रुपातयुक्त हो पितामह को दण्डवत् करके यह वचन बोला हे कौरवों में श्रेष्ठ, सब शस्त्रधारियों के शिरोमणि, महादुर्जय, पितामह! मैं आपका दास हूं आप मुझको जो आज्ञा दें वही मैं करूं भीष्मजी ने कहा हे तात! कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुन मेरा शिर लटकता है तू मुझको तकिया दे हे वीर! बहुत शीघ्र मेरे शयन के योग्य तकिया देदे हे अर्जुन! तूही समर्थ होगा तूही सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ होगा तूही क्षत्रियधर्म का जाननेवाला बुद्धिमान् सतोगुणयुक्त होगा यह सुनकर अर्जुन ने भी बहुत श्रेष्ठ कहकर उपाय और परिश्रम को अङ्गीकार किया और गाण्डीवधनुष को हाथ में लेकर गुप्तग्रन्थी वाले बाणों को अभिमन्त्रितकर भीष्मजी की प्रतिष्ठा करके तीक्ष्ण और वेग· युक्त तीन बाणों से उनके शिर को सीधा किया चित्त का प्रिय ज्ञातहोने पर धर्म्मात्मा और मुख्यता के जाननेवाले भरतर्षभ भीष्मजी इस कर्म को देखकर अर्जुन पर अत्यन्त प्रसन्न हुए और इस तकिये के देने से अर्जुनकी बड़ी प्रशंसा की। और सब भरतवंशियों के मध्य में इस श्रेष्ठ मित्रों की प्रीति के बढ़ानेवाले कुन्ती के पुत्र अर्जुन से बोले कि हे पाण्डव! तुमने शयन के समान मुझको तकिया दिया और जो कदाचित् विपरीत कर्म करते तो मैं अवश्य तुमको शाप देता हे महाबाहो! धर्मों में नियत शरशय्यापर वर्त्तमान क्षत्रिय को युद्धभूमि में निश्चय करके इसीरीति से शयन करना योग्य है इस रीति के वचन अर्जुन से कह कर और पास बैठे हुए राजकुमारों से बोले कि पाण्डव के लगाये हुए मेरे तकिये को देखो मैं इस शय्या पर तबतक शयन करूंगा जबतक कि सूर्य दक्षिण मार्ग से उत्तर मार्ग में अर्थात् दक्षिणायन से उत्तरायण होजायँगे जो राजा उससमय मुझको मिलेंगे वह मुझको देखेंगे तात्पर्य यहहै कि जब सूर्य कुबेर की दिशा को जायगा तब मैं अवश्य सात घोड़ों के उत्तम प्रकाशवान् रथपर चढ़कर अपने सुहृद् इष्टमित्रोंसमेत प्राणोंको त्यागूंगा हे राजालोगो! यहां मेरे निवासस्थान पर तुम खाई को खुदवाओ क्योंकि मैं इसरीति से हज़ारों बाणों से छिदे हुए शरीर से सूर्य की उपासना करूंगा और तुम सब लोग शत्रुता को त्यागकर युद्ध मत करो इसके अनन्तर हे राजन्! वहां सब भूषण और चिकित्सा के यन्त्रों से अलंकृत पण्डितों से स्तूयमान सर्व वैद्यलोग आनकर वर्त्तमान हुए गाङ्गेय भीष्मजी उनको देखकर आपके पुत्र से बोले कि इन वैद्यों को सत्कार करके दक्षिणापूर्वक तुम बिदा कर दो अब यहां मेरी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यह दशा होने पर मुझको वैद्यों से क्या प्रयोजन है। क्योंकि मैं क्षत्रियधर्म में श्रेष्ठ होकर परमगति को प्राप्त हूं हे राजाओ! मुझ बाणशय्या पर वर्त्तमान का यही धर्म है कि मैं इन्हीं बाणों समेत जलाया जाऊं उनके इस वचन को सुनकर आपके पुत्र दुर्योधन ने अपनी योग्यता के अनुसार उन वैद्यों को पारितोषिक देकर बिदा किया फिर नानादेश के राजाओं ने बड़े तेजस्वी भीष्मजी को अपने धर्म में दृढ़ देखकर बड़ा आश्चर्य किया इसके पीछे आप के पिता को तकिया देकर वह सब महारथी राजा वा पाण्डव और कौरव एक साथ ही शुभशय्या पर सोते हुए महात्मा भीष्म के पास जाकर दण्डवत्पूर्वक तीनपरिक्रमा कर सायङ्काल के समय सब वीर चारों ओर से ध्यान करते बड़े दुःखी रुधिर से भरे हुए अपने अपने डेरों में विश्राम करने के लिये गये और महाबली माधवजी उस प्रसन्नचित्त बैठे हुए महारथी भीष्मजी के गिरने पर प्रसन्न हृदय पाण्डवों के पास जाकर समय पाकर धर्मपुत्र युधिष्ठिर से कहने लगे। हे कौरव! तुम प्रारब्ध से विजय पाते हो और यह मनुष्यों से अवध्य सत्यप्रतिज्ञ महारथी भीष्म प्रारब्ध से गिराया गया अथवा देवताओं समेत सब शस्त्रों में पूर्ण तुझ नेत्र से मारनेवाले को पाकर घोरनेत्र से भस्म होगया यह सुनकर धर्मराज युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी को उत्तर दिया कि आपके प्रसन्न होने से विजय है और आपके ही अप्रसन्न होने से पराजय है हे भक्तभयहारिन्, श्रीकृष्णजी! आपही हमारे रक्षाके स्थान हो और उन लोगों को विजय का पाना कुछ आश्चर्य नहीं है जिनके हित करने में सदैव प्रवृत्त चित्त और युद्ध में सदैव रक्षक हो आपको सब प्रकार से प्राप्त होकर विजय का होना कुछ आश्चर्य नहीं है यह मेरा मत है इस रीति के युधिष्ठिर के वचनों को सुनकर श्रीकृष्णजी बड़ी मन्दमुसकान समेत बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ, युधिष्ठिर! यह कहना तुम्ही को योग्य है॥ ३३॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि द्वाविंशत्युत्तरिशततमोऽध्यायः॥ १२२॥

एकसौतेईस का अध्याय।

संजय बोले कि हे महाराज! रात्रि के व्यतीत होने पर सब राजा वा पाण्डव और धृतराष्ट्र के पुत्र पितामह के पास वर्त्तमान हुए क्षत्रीलोग उन कौरवोत्तम क्षत्रियों में श्रेष्ठ वीरशय्या पर सोते हुए वीर भीष्मजी को दण्डवत् करके उनके पास नियत हुए वहांपर हज़ारों कन्याओं ने जाकर चन्दन चूरा खील और

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सब प्रकार की मालाओं से भीष्मजी का पूजन किया वृद्धा स्त्री वा बाला स्त्री और देखनेवाले अन्य सावधान लोग भी उन भीष्मजी के समीप ऐसे गये जैसे कि सूर्य की उपासना को मनुष्य और स्त्री जाते हैं तालस्वर समेत ईश्वर का वर्णन करनेवाले बाजेगाजे समेत नाचनेवाले नट नागर और कारीगर लोग भी वृद्ध पितामह भीष्मजी के पास गये वह कौरव, पाण्डव युद्धों से निवृत्त हो शरीर के कवचादिकों को उतार सब शस्त्रों को त्याग एकसाथ मिले हुए उन दुर्जय शत्रुंजय देवव्रत भीष्मजी के पास आकर बैठगये और सब लोग पूर्व के समान अवस्था के क्रम से परस्पर में प्रीतिमान् थे, वह सैकड़ों राजाओं से व्याप्त भीष्मजी से शोभायमान भरतवंशियों की सभा ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि आकाश में सूर्यमण्डल शोभित होता है गङ्गाजी के पुत्र की उपासना करनेवाले राजाओं की वह सभा ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि देवताओं के ईश्वर ब्रह्माजी की उपासना करनेवाली देवसभा होती है हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! बाणों से पीड्यमान सर्प के समान श्वास लेते बाणों से पीड़ित शरीर और शस्त्रों के प्रहार से मूर्च्छावान् भीष्मजी उन राजाओं को देख कर धैर्य से पीड़ा को सहकर यह वचन बोले कि हमारे लिये जल को लाओ। इसके पीछे उन क्षत्रियों ने चारों ओर से छोटे बड़े भोजन पात्र और शीतलजल के घटादिक पात्रों को मँगाया भीष्मजी उसप्रकार से लाये हुए जल को देखकर बोले कि हे तात ! अब कोई मानुषी भोग मुझसे भोगा नहीं जाता मैं मनुष्यों से पृथक् बाणशय्या पर वर्त्तमान चन्द्रमा और सूर्य के लौटने की बाट देखता हुआ नियत हूं हे धृतराष्ट्र ! भीष्मजी इसप्रकार से कह कर अपने मुख से राजाओंकी निन्दा करते हुए फिर बोले कि मैं आज इनको देखा चाहता हूं इसके पीछे महाबाहु अर्जुन पितामह के समीप दण्डवत्पूर्वक आकर बड़ी नम्रता से झुका हुआ नियत हुआ और हाथ जोड़कर बोला कि मुझे क्या आज्ञा होती है ? फिर धर्मात्मा भीष्मजी बहुत प्रसन्न होके उस विनीत हाथ जोड़े हुए वर्त्तमान संसार के धनादि सम्पत्तियों के विजय करने वाले अर्जुन को अपने सम्मुख खड़ा हुआ देखकर बोले कि तेरे बाणों से भरा हुआ मेरा शरीर जलरहा है और मर्मस्थलों में बड़ी पीड़ा है मुख सूखा जाता है हे अर्जुन ! मुझ दुःख से पीड्यमान को जल पिलादे हे बड़े धनुषधारी ! तू ही बुद्धि के अनुसार जल देने को समर्थ है इतनी बात के सुनते ही

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उस पराक्रमी अर्जुन ने बहुत अच्छा ऐसा कहकर रथपर सवार हो बड़े पराक्रमी गाण्डीव धनुष को प्रत्यञ्चा युक्त करके बल से खैंचा उसकी प्रत्यञ्चा का और धनुष की टङ्कार का शब्द इन्द्रवज्र के समान था उस शब्द को सुनकर सब जीवधारी और राजालोग भयभीत होगये तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने रथ के द्वारा उस भरतर्षभ महाशस्त्रधारी सोते हुए भीष्मजी की परिक्रमा करके धनुष पर प्रकाशवान् अभिमन्त्रित बाण को चढ़ाकर मेघ अस्त्र से संयुक्त करके सब लोगों के देखते हुए भीष्मजी के दक्षिण ओर में पृथ्वी को बेधा उसके बेधते ही पृथ्वी में से निर्मल महा शुभ पवित्र जल की धारा ऊपर की ओर फव्वारे के समान निकली वह जल महाशीतल अमृत के समान दिव्य सुगन्धित और रस से भराहुआ था उस शीतल जल की धारा से अर्जुन ने कौरवों में श्रेष्ठ दिव्यकर्म और बलवाले भीष्मजी को तृप्त करदिया इसके पीछे इन्द्र के समान अर्जुन के उसकर्म से उन सब राजाओं को बड़ा आश्चर्य हुआ अर्जुन के इस अमानुषी कर्म और बल को देखकर कौरवलोग ऐसे महाकम्पायमान हुए जैसे कि शीत से कम्पायमान गौयें होती हैं राजा लोगों ने बड़े आश्चर्य से सब ओर को अपने अपने डुपट्टों को हिलाया और सब ओर से शंख दुन्दुभियों के कठिनशब्द हुए हे राजन्! उस जल से तृप्तहुए भीष्मजी सब शूरवीर राजाओं के सम्मुख बड़ी प्रशंसा करके अर्जुन से यह बचन बोले कि हे महाबाहो, हे कौरवनन्दन! यह तुझमें आश्चर्य की बात नहीं है हे महा तेजस्विन्! तुमको नारदजी ने प्राचीन ऋषि वर्णन किया है तुम वासुदेव जी के संग होकर बड़े बड़े कर्म करोगे जिस कर्म के करने को देवताओं समेत इन्द्र भी असमर्थ है हे अर्जुन! मुख्य वृत्तान्त के ज्ञाता लोगों ने तुझको सब क्षत्रिय कुलमात्र का धनुष जाना है तुम उत्तम धनुषधारियों में अद्वितीय हो और पृथ्वी के सब मनुष्यों में तुम अत्यन्त श्रेष्ठ हो इस संसार में मनुष्य सबसे उत्तम है पक्षियों में गरुड़ श्रेष्ठ है नदियों में समुद्र श्रेष्ठ है पशुओं में गौ उत्कृष्ट है प्रकाशवानों में सूर्य श्रेष्ठ है पर्वतों में हिमालय जातियों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है इसीप्रकार तुम धनुषधारियों में श्रेष्ठ हो धृतराष्ट्र के पुत्र ने मेरा कहना वा विदुरजी द्रोणाचार्य परशुरामजी और श्रीकृष्णजी का जो कहना और वारंवार संजय का भी कहना नहीं सुना निश्चय करके निर्बुद्धी और अचेतों के समान दुर्योधन उस कहने पर श्रद्धा नहीं करता है वह शास्त्र के विपरीत कर्म कर्त्ता

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भीमसेन के बल से हारा हुआ मरा हुआ बहुत काल तक सोवेगा कौरवों का राजा दुर्योधन उनके इस वचन को सुनकर चित्त से उदास होगया इसको उदास देखकर भीष्मजी ने कहा कि हे राजन् ! अब भी समझकर निरहंकारी होजाओ हे दुर्योधन ! तुमने यह देखा जैसे कि बुद्धिमान् अर्जुन ने शीतल अमृत के तुल्य सुगन्धियों से व्याप्त उत्तम जल की धारा उत्पन्न करी इसलोक में इसकर्म का करनेवाला दूसरा कोई मनुष्य नहीं है आग्नेय, वारुण, सौम्य, वैष्णव, ऐन्द्र, पाशुपति, पारमेष्ठ्य, प्राजापति, धाता, त्वष्टा, सविता के अस्त्र और सौरि इन सब अस्त्रों को भी इस नरलोक में अकेला अर्जुन ही जानता है वा देवकीनन्दन श्रीकृष्णजी जानते हैं इन दोनों महापुरुषों के सिवाय इस लोक में दूसरा कोई नहीं जानता है हे तात ! युद्ध में इन पाण्डवों को देवता और असुर भी जीतने को समर्थ नहीं हैं जिस महात्मा के यह अमानुषी कर्म हैं हे राजन् ! उस युद्ध में पराक्रमी शूरवीर युद्ध में शोभा पानेवाले अर्जुन के साथ सन्धि करने में विलम्ब मत करो हे कौरवोत्तम ! जबतक महाबाहु श्रीकृष्णजी अपने स्वाधीन हैं तबतक शूरवीर अर्जुन के साथ तुझको सन्धि करलेना योग्य है हे तात ! जबतक अर्जुन गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से तेरी सब सेना का नाश नहीं करे तबतक तुझको सन्धि करलेना अत्यन्त ही योग्य है हे राजन् ! जबतक युद्ध में मरने से शेष बचे हुए अपने निज बांधव लोग वा बहुत से राजालोग नियत हैं तबतक सन्धि होजाय और जबतक कि क्रोध से अग्निरूप नेत्र युधिष्ठिर इस तेरी सेना को भस्म नहीं करता है वा पाण्डव नकुल, सहदेव और भीमसेन सबओर से सेना का नाश नहीं करें तबतक वीर पाण्डवों के साथ तेरी प्रीति होना मुझको अभीष्ट हो हे तात ! मैं चाहताहूं कि यह महाप्रबल युद्ध मेरे ही मरणपर्यन्त रहै तू अवश्य पाण्डवों से सन्धि कर इस बात को तू मनसे समझकर अङ्गीकार कर हे तात ! यह मैंने तुझको समझाया है अगर तू समझैगा तो तेरी और कुल के लोगों की कुशल अवश्य होगी अहंकार को त्याग करके पाण्डवों से सन्धि कर अर्जुन के इतने ही करने को तू बहुत समझ भीष्म के ही मरणान्त से तुम्हारी और पाण्डवों की प्रीति हो यह बहुत श्रेष्ठ है इसी प्रीति में शेष बचे हुए क्षत्रिय बचजायँगे हे राजन् ! मेरे इस कहने पर प्रसन्न होके पाण्डवों के आधे राज्य को देदो और धर्मराज राजा युधिष्ठिर इन्द्रप्रस्थ को जायँ हे कौरवेन्द्र ! तू

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मित्रोंसे शत्रुता करनेवाला राजाओंमें नीच मत हो नहीं तो पापरूपी अपकीर्त्ति को पावेगा मेरेनाश होने से प्रजाओं को सुख हो और प्रीति रखनेवाले राजा लोग परस्पर में मिलें हे तात! पिता पुत्र से मामा भानजे से भाई भाई से आनन्द पूर्वक मिलें जो मोह से भरेहुए निर्बुद्धिता से समय के अनुसार मेरे कहे हुए वचन को नहीं मानेगा तो अन्त में महादुःखों को पावेगा और सबकी एकसी ही दशा है मैं इस बात को सत्यही सत्य कहता हूं गाङ्गेय भीष्मजी राजाओं के मध्य में बड़ी शुभचिन्तकता से कौरवों के राजा दुर्योधन को यह वचन सुना कर भालों से पीड़ित अङ्गों के दुःखों को सहकर मन बुद्धि को आत्मा में लय करके मौन होगये संजय बोले कि आपके पुत्र ने धर्म अर्थ से संयुक्त होकर प्रियकारी निर्दोष निरुपाधि वचनों को सुनकर ऐसे स्वीकार नहीं किया जैसे कि सन्निकट मरनेवाला पुरुष वैद्य की औषधि को नहीं अंगीकार करता है॥ ५६॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मोपदेशे त्रयोविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः॥ १२३॥

एकसौचौबीस का अध्याय।

संजय बोले कि हे महाराज! शन्तनु के पुत्र भीष्मजी के मौन होने पर वह सब राजा लोग फिर अपने अपने डेरों को गए पुरुषोत्तम कर्ण भीष्मजी को मृतक सुनकर कुछेक व्याकुलसा होकर बड़ी शीघ्रता से उनके पास गया वहां उसने जब उस महात्मा समर्थ शूरवीर जन्मशय्या पर वर्त्तमान स्वामिकार्त्तिक के समान शरशय्या पर नियत भीष्मजी को देखा तब अश्रुपातों से गद्गदकण्ठ होकर बड़ा तेजस्वी कर्ण उस निमीलिताक्ष से बोला हे महाबाहो, हे कौरवोत्तम, भीष्म! मैं राधा का पुत्र सदैव आपके नेत्रों के आगे रहने वाला हूं हे सर्वज्ञ! मैं आपका द्वेषी हूं इन बातों को सुनकर बड़े बलसे नेत्रों को खोलकर गाङ्गेय भीष्मजी ने अपने निवासस्थान को एकान्तरूप देख कर स्थान के रक्षकों को उठाकर जैसे कि पिता पुत्रपर स्नेह करता है उसी प्रकार से कर्ण को एक हाथ से छाती के द्वारा मिलकर बड़े धीरे धीरे यह वचन बोले कि हे मेरे द्वेषी आओ आओ तू मेरे साथ ईर्षा करता है जो तू मुझको नहीं मिलता तो निश्चय करके तेरा भला नहीं होता तू राधा का पुत्र नहीं है किन्तु कुन्ती का ही पुत्र है और पिता अधिरथी नहीं है तू सूर्य का पुत्र है यह भेद मुझको नारदजी ने बताया है और व्यासजी वा केशवजी से भी विदित हुआ इसमें किसी बात का भी सन्देह नहीं है और यह बात भी मैं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सत्य सत्य कहता हूं कि तेरे साथ मेरी किसी प्रकार की भी द्वेषता नहीं है मैंने तेरे तेज नष्ट होने के लिये कठोर वचन कहे थे हे सुन्दरव्रतवाले, कर्ण ! तू अकस्मात् सब पाण्डवों को मारेगा हे सूतनन्दन ! इसीकारण से राजा दुर्योधन ने तुमको वारंवार कहकर उद्युक्त किया है तू धर्म के यूप से उत्पन्न हुआ है इसहेतु से तेरी ऐसी बुद्धि है गुणवान् मनुष्यों की बुद्धि भी नीचों के संग से वा ईर्षा से द्वेष करनेवाली होजाती है इसी हेतु से कौरवों की सभा में बहुधा रूखे रूखे वचन सुनेगये मैं युद्ध में तेरे पराक्रम को पृथ्वीभर के भी शत्रुओं से असह्य जानता हूं और वेद ब्राह्मण की रक्षा करने में शूरता में और दानमें तेरी बड़ी दृढ़ता को जानता हूं मनुष्यमात्रों में तेरेसमान देवताओं के समान पराक्रमी कोई नहीं है मैंने कुल की द्वेषता के भय से सदैव कठोर वचन कहे बाण और अस्त्रों के चलाने में और हस्तलाघवता में वा अस्त्रबल में तू महात्मा श्रीकृष्णजी और अर्जुन के समान है हे कर्ण ! तुझ अकेले धनुषधारी ने काशीपुरी में जाकर कुरुराज की कन्या के निमित्त बड़े बड़े राजाओं का युद्ध में मर्द्दन किया इसी प्रकार पराक्रमी और दुःख से विजय होनेवाला कीर्तिमान् राजा जरासन्ध युद्ध में तेरे समान नहीं हुआ तुम वेद और ब्राह्मणों की रक्षाकरनेवाले अपने तेज बल से युद्ध करनेवाले देवगर्भ के समान युद्ध में मनुष्यों से अधिक हो अब वह मेरा क्रोध दूर हुआ जो पूर्व समय में मैंने तुझपर किया था दैवी बात को अर्थात् होनहार को कोई भी उपायों से उल्लङ्घन नहीं करसक्ता हे शत्रुहन्ता ! यह वीर पाण्डव तेरे सगे भाई हैं हे महाबाहो ! जो तू मेरा हित चाहता है तो उनसे मिलाप कर हे सूर्यनन्दन ! अब तू मेरे कहने से शत्रुता को त्यागकर जिससे कि पृथ्वी के सब राजा लोग निर्विघ्न हों कर्ण ने कहा हे महाबाहो, भीष्मजी ! मैं यह निस्संदेह सब प्रकार से जानता हूं कि मैं कुन्ती का पुत्र हूं सूत का पुत्र नहीं हूं परन्तु मुझे कुन्ती ने त्यागकरदिया। तब सूत ने मेरा पोषण किया इससे दुर्योधन के ऐश्वर्य को भोगकर उसको निष्फल करना मैं उचित नहीं समझता हूं जैसे कि वसुदेवजी के पुत्र श्रीकृष्ण पाण्डवों के निमित्त दृढ़व्रतवाले हैं उसी प्रकार मैंने भी धन, जन, पुत्र, स्त्री, परिवार और कीर्ति दुर्योधन के निमित्त विचार कर लिये हैं हे बड़ी दक्षिणावाले ! कौरवकुलक्षत्रिय में रोगादिकों से मरना योग्य नहीं समझता हूं मैंने दुर्योधन के आश्रय में होकर पाण्डवों को सदैव

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

क्रोधित किया है और होतव्यता है वह तो अवश्य ही होगी उसका मिटाने वाला कोई भी नहीं है कौनसा मनुष्य होनहार को उपायों के द्वारा लौटा सक्ता है हे पितामह! संसार के मनुष्यों के नाशकारी चिह्न आपलोगों ने देखे हैं और सभा में वर्णन किये हुए पाण्डव और वासुदेवजी सब प्रकार से मेरे जाने हुए हैं वह अन्य मनुष्य से अजेय हैं परन्तु उत्साहपूर्वक कहता हूं कि मैं उन पाण्डवों को विजय करूंगा यह मेरे चित्त का निश्चय है जोकि यह महाभयकारी शत्रुता त्याग करने के योग्य नहीं हैं इस कारण अपने धर्म में प्रसन्न चित्त होकर मैं अर्जुन से लड़ूंगा हे तात! युद्ध के निमित्त तुम्हीं निश्चय करके मुझको आज्ञा दो आपकी ही आज्ञा से मैं युद्ध करूं यही मैं चाहता हूं और जो मैंने निर्बुद्धिता व चपलता से अत्यंत बुरी बुरी विपरीत वार्त्ता करी आप उन मेरे कठोर वचनों को क्षमा करने के योग्य हैं भीष्मजी बोले कि जो यह अत्यन्त भय उत्पन्न करनेवाली शत्रुता त्याग करने के योग्य नहीं है तो हे कर्ण! मैं तुझको आज्ञा देता हूं कि स्वर्ग की इच्छा से तू युद्ध कर क्रोध अहंकार से रहित बल और साहस के अनुसार युद्ध में क्षमा करने वाला शक्ति और उत्साह के समान सतलोगों की वृत्ति करे मैं तुझको आज्ञा देता हूं और जो तू चाहता है उसको प्राप्त हो क्षत्रियधर्म से पराजय पानेवाले निस्संदेह उत्तम लोकों को पाते हैं अहंकाररहित बलिष्ठ अपनी सामर्थ्य के आश्रय में रहनेवाले को धर्मयुद्ध के सिवाय क्षत्रिय का कल्याण करनेवाला दूसरा कोई भी धर्म नहीं है अर्थात् बहुत कालतक सन्धि में बहुतसा उपाय किया परन्तु करने को समर्थ नहीं हुआ हे कर्ण! यह तुझसे सत्य ही सत्य कहता हूं संजय बोले कि गाङ्गेय भीष्मजी के इस प्रकार कहने पर राधा का पुत्र कर्ण दण्डवत्पूर्वक अत्यन्त स्तुतिकर रोता हुआ-सा अपने रथपर सवार होकर आपके पुत्र के पास आया॥ ३६॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि चतुर्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः॥ १२४॥

वेदाऽब्धिनन्दविधुसम्मितवैक्रमेब्दे, आषाढशुक्लदलकालतिथौ च भौमे।
किंचाऽर्गलाख्यनगरस्थबुधोग्रजन्मा कालीपदोहिविदधेखलुभारतार्थम्॥ १॥

समाप्तमिदं शुभम्भूयात्॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गोस्वामि तुलसीदास-कृत

रामायण आदि ग्रंथ

(१) **श्रीरामचरितमानस (असली और विशुद्ध)**—श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजी महाराज की हस्त-लिखित राजापुर और श्रीशूकरखेतवाली अति प्राचीन मूल पुस्तक के अनुसार पं० बंदीदीन पाठक द्वारा संशोधित। आजकल श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी की रामायण के जो पंडितों द्वारा संशोधित संस्करण बाज़ारों में बिकते हैं, उनसे साहित्य-प्रेमी और वैष्णव साधु-महात्मा लोग संतुष्ट नहीं हैं, क्योंकि उनमें शब्दों का संस्कृत-स्वरूप कर देने से काव्य का माधुर्य नष्ट-सा हो गया था। इस त्रुटि को दूर करने के लिये श्रीअयोध्यांतर्गत श्रीजानकी घाट-निवासी, निखिल-शास्त्र-निष्णात, महात्मा श्री १०८ पं० रामबल्लभाशरणजी महाराज की गद्दी में जो सर्वमान्य संशोधित पोथी थी, श्रीमहाराज की आज्ञा से उसी पोथी की नक़ल करके यह प्रति छापी गई है। इसे आप श्रीगोस्वामिजी के ही कर-सरोज का लेख समझिए। अति उत्तम कागज़ पर सुंदर मोटे टाइप से छपी है। मूल्य केवल ३) है।

(२) **तुलसीकृत रामायण मूल**—साधारण अक्षर, गमाश्वमेध सहित आठों कांड, सचित्र। यह रामायण नए प्रकार से तैयार कराई गई है। इसके आदि में श्रीगोस्वामि तुलसीदासजी का जीवनचरित्र, संकटमोचन, राम-बाराखड़ी, बजरंगबाण और रामायण-माहात्म्य दिया गया है। अंत में सब देवों की स्तुति और श्रीरामचंद्र और जानकीजी के १४ वर्ष तक वन में निवास करने का तिथिपत्र भी है। ऐसी उत्तम रामायण आज तक कहीं नहीं छपी। कागज़, छपाई, सफ़ाई अति उत्तम। पृष्ठ-संख्या ७४०; सुंदर जिल्द बँधी हुई पुस्तक का मूल्य केवल २॥) रक्खा गया है।

(३) **तुलसीकृत रामायण**—सातों कांड, सटीक। मैनपुरी-निवासी श्रीसुखदेवलालजी ने इसका भाषानुवाद ऐसी सरल भाषा में किया है कि थोड़ी-सी हिंदी जाननेवाला मनुष्य भी रामायण का अर्थ बड़ी आसानी से समझ सकता है। प्रत्येक चौपाई और दोहे का अर्थ आप अच्छी तरह समझ सकें, इसीलिये प्रत्येक चौपाई और दोहे के अंत में वही अंक लगाए गए हैं जोकि मूल कविता में हैं। पृष्ठ-संख्या १०२६; सजिल्द; मूल्य ४॥)

(४) **तुलसीकृत रामायण**—सटीक। लवकुश-कांड-सहित। इस रामायण का भाषानुवाद अयोध्या-निवासी महंत रामचरणदासजी ने अति सरल भाषा में कर सर्व-साधारण का बड़ा उपकार किया है। इसमें भगवान् रामचंद्र के चरित्र के अतिरिक्त आरंभ में श्रीगोस्वामि तुलसीदासजी का जीवन-चरित्र, बजरंगबाण, संकटमोचन, एकश्लोकी रामायण और एकश्लोकी भागवत और चतुश्श्लोकी भागवत तथा सप्तश्लोकी गीता एवं रामायण-माहात्म्य भी दिया गया है। अंत में लवकुशकांड, राम-वनबास-तिथिपत्र और सप्त देवताओं के स्तोत्र हैं। स्थान-स्थान पर पुराण, उपनिषद् आदि ग्रंथों से यथायोग्य समयानुकूल दृष्टांत भी दिए गए हैं, जिससे यह रामायण और भी उत्तम हो गई है। कागज़ भी अति उत्तम लगाया गया है। पुस्तक बंबई के खूब मोटे सुंदर अक्षरों में छापी गई है। इतना होने पर भी बड़े साइज़ के १५८० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल १०) रक्खा गया है।

(५) **तुलसीकृत रामायण**—सटीक, पत्राकार। महात्मा रामचरणदासजी-कृत भाषा-टीका-सहित। अनेक साधु-महात्माओं के अनुरोध करने पर यह रामायण हमारे यहाँ पत्राकार छापी गई है। ऐसी उत्तम रामायण आजतक कहीं नहीं छपी। आशा है, साधु-महात्मा एवं संत-महंत ऐसी उत्तम रामायण को देखकर अवश्य प्रसन्न होंगे। पृष्ठ-संख्या १४७२; मूल्य ५)

मिलने का पताः—

मैनेजर, नवलकिशोर-प्रेस बुकडिपो.

हज़रतगंज, लखनऊ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor